रणपिंगल.

प्रथम भाग.

रणछोडभाइ उदयरामे

रचीने

भुज,

कच्छ दरबारी मुद्रायन्त्रमां छपावी प्रसिद्ध कर्यो.

सवत् १९५९ सन १९०२

मार्गशीर्ष. डिसेम्बर.

मूल्य रुपिया २-८-०





પ્રસ્તાવના.

સર્વ વિદ્યાઓનુ મૂળ વેદ છે. એજ પ્રમાણે આ છંદ શાસ્ત્રનું કથન પણ વેદમા છે. ઋષિઓ તેને વેદનું અંગ માનેછે. અને તેના વિરાટ સ્વરૂપમા તે પાદ સ્થળે તેની ગણના કરેછે જેમકે,

(સ્રગ્વિણીવૃત્ત)

शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी.
श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं च कल्पः करौ
या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका
पादपद्मद्वयं छन्द आद्यैर्बुधैः .

વ્યાકરણ વેદનુ મુખ છે, જ્યોતિષ નેત્ર છે, નિરુક્ત કાન છે, કલ્પ હાથ છે, શિક્ષા નાક છે, અને છંદસ્, તે ચરણ કમળ છે, એમ પ્રાચીન વિદ્વાનોએ કહેલું છે, અને પાદ વિનાનો મનુષ્ય જેમ લંગડો ગણાયછે, તેમ વેદ પણ છંદ શાસ્ત્ર વિના પાંગળો મનાયછે, અને તેટલા માટે છંદોગબ્રાહ્મણમા અને વેદના સર્વાનુક્રમ સૂત્રમાં ભગવાન્ કાત્યાયન ઋષિયે લખ્યુ છે કે,—

योह वा अविदितार्षेयच्छन्दोदैवतविनियोगेन
मन्त्रेण याजयति वाऽध्यापयति वा स स्थाणुं
वर्च्छति गर्त्तं वा पद्यते वा प्रमीयते पापीयान्
भवति यातयामान्यस्य च्छंदांसि भवन्ति

જે કોઇ મનુષ્ય મંત્રના ઋષિ, છંદ, અને દેવતાદિ સ્વરૂપ જાણ્યા વિના વેદ મંત્રથી યજન કરેછે વા કરાવેછે, તેમનું અધ્યયન કરેછે, વા કરાવેછે. તે પાપિષ્ઠ થાયછે. વૃક્ષના થડની પેઠ સ્થાણુ (સ્થિર, અચળ) થાયછે, અંધકારવાળા ગર્ત્ત (કૂપ વા નરક)મા પડેછે, મરેછે અને તેના છંદો નષ્ટ થઇ જાયછે.

વળી તે કેટલું વધું ઉપયોગી છે તે દર્શાવવા માટે તેઓ લખેછે કે, (અનુષ્ટુભા યજતિ, બૃહત્યા ગાયતિ, ગાયત્ર્યા સ્તૌતિ

अर्थात्) अनुष्टुप् छंदवडे यजन करवुं. बृहति छंदवडे गान करवुं अने गायत्री छंदवडे स्तुति करवी इत्यादि.

धार्मिक दृष्टिये जोतां छंदोनुं गौरव अने माहात्म्य आटलुं बधुं छे तेथी ए शास्त्रनुं थोडुंक पण ज्ञान प्रत्येक मनुष्य माटे परमावश्यक छे एम मानवामां बाध नथी. आपणा ऋषिवरोए जेटला ग्रंथ निर्माण कर्या छे ते सवळा प्रायः छंदोबद्ध छे. वेद, स्मृति, पुराण, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, शिल्पशास्त्र, वैद्यक इत्यादि ग्रंथो छंदोबद्ध ज जोवामा आवेछे. तो जो छंदोगौरव एवडुं बधुं न होत तो आपणा महर्षिओए एने माटे आवडो बधो परिश्रम उठाव्यो होत नहि.

धार्मिक दृष्टिने एक बाजु राखी लौकिक नजरे जोवा जतां पण छंदोगौरवमा कशी न्यूनता नहि जोवामां आवे. छंदस् जेने आपणे हाल सामान्य कविताना नामथी ओळखिये छिये ते "बाह्य सत्यरूप जीवतरनी खरेखरी प्रतिमा छे"* एक महान् कवि ते द्वारा कोइपण वस्तु, सृष्टिसौंदर्य वा जनस्वभावनुं वर्णन करतां जे विचारो प्रकट करेछे ते, ते वेळा जे कारणथी उत्पन्न थया होयछे ते कारण नष्ट थइ गया पछी पण, आश्चर्य उपजावे तेवी रीते त्यांना त्यां, तेवीज एटले तेनी मूळस्थितिमां ज जडाया-रोपाया रेहेछे. जो कवितानुं अस्तित्व न होत अने तेनी खरी खूबी जन समाजना मनमां न रोपायली होत, तो रामायणादि महा काव्योनी प्रसादी जे हाल आपणे महत् प्रेमथी प्राशिये छिये ते पामवानो समय आवत नहि, अने वाल्मीकि, कालिदास, भवभूति, भारवि, पतञ्जली, शंकराचार्य अने बीजा महान् काव्य करनाराओनां नाम आपणा श्रवणपर पण आववा पामत नहि. परंतु स्थिति तेथी उलटी छे. मनुष्य मन प्राचीन काळथी

---

* Poetry is the very image of life in its external truth

कावता मगा दारायलु छे अने तने दैवी अने लौकिक शक्तिना उत्तेजक रूप आत्माने आनंद आपनार मानेछे अने तेटला माटे ए संबंधी ज्ञान आपनार शास्त्रने छंदःशास्त्र एटले चित्तने आनंद आपनार वर्णो गोठववाना नियमवाळु शास्त्र केहेछे.

छंद शास्त्रना मूळ योजक कोण अने ए क्यारे अने क्या योजायुं ए हजु स्पष्टपणे जाणवामां आव्युं नथी. आपणा महर्षियो तेने वेदनुं अंग मानेछे अने वेद रचना बहुधा छंदोमय छे तेथी ते वेदकाळथी पेहेलां हशे एम कल्पी शकायछे. प्राचीन ग्रंथोमा आ शास्त्रनी परंपरा जोवा जइये छिये तो तेना मुख्य आचार्य महादेव छे. तेमनी पासेथी देवताना पति इन्द्रदेव शीख्या छे इन्द्र पासेथी च्यवनमुनि शीख्या अने तेमनी पासेथी बृहस्पतिए, बृहस्पति पासेथी मांडव्यऋषिये छंदोज्ञान मेळव्युं छे. मांडव्य पासेथी सैतव ऋषिये अने सैतव पासेथी यास्क मुनिये अने तेमनी पासेथी पिंगलाचार्ये ए शास्त्रनुं अध्ययन कर्युं छे अने तेमनी पासेथी अन्याचार्योए ए ज्ञान प्राप्त कर्युं ए प्रमाण श्रीमान् रामानुजाचार्यना गुरु, छंदःसूत्रपरनी पोतानी यादव-प्रकाश नामनी टीकामा जणावेछे।[1]

आ उपरथी एटलुं तो नक्की थायछे के, पिंगलाचार्य पेहेलां-ना गमे ते छंदःशास्त्रकारो होय परंतु तेमना ग्रंथो पिंगल मुनिना ग्रंथ जेटला आ देशमा प्रवर्त्या नथी. लौकिक छंद अने वैदिक छंदनुं विवरण प्राचीन आचार्योमा जेवुं महर्षि पिंगले कर्युं छे तेवुं अन्याचार्ये कर्युं नथी. तेथी तेमने छंदशास्त्रना मूळ प्रवर्त्तक मान्या छे. पिंगलमुनि कोण हता, क्यारे अने

---

१ छन्दोज्ञानमिदं भवाद्भगवतो लेभे सुराणां पतिः
तस्माद् दुश्च्यवनस्ततः सुरगुरुर्माण्डव्यनामा ततः ।
माण्डव्यादपि सैतवस्तत ऋषिर्यास्कस्ततः पिङ्गलः
तस्येदं यशसा गुरोर्भुवि धृतं प्राप्यास्मदाद्यैः [illegible]

वश थइ गया अने तेमने छंद:शास्त्र शा माटे बनाववुं पड्युं ए संबंधमां एक दंतकथा चालेछे ते वांचनारने रमुज आपशे एम जाणी अत्र आपिये छिये.

शेषनागनुं बीजुं नाम पिंगलनाग छे. ए पिंगलनाग पोता पर केटली पृथ्वी रही छे ते जोवानी इच्छा थतां स्वरूपान्तरे ब्राह्मणनो वेश लइ सृष्टिपर तेनु सौंदर्य जोता जोता विचरवा लाग्या. आ वात गरुडना जाणवामां आवता तेमने तेमनी साथे, प्रसिद्ध वेर होतां तेने मारी खावानी इच्छाथी तेनी पूठ पकडी. ब्राह्मणना रूपमां नाग आगळ अने गरुड पाछळ, एम दोडवा लाग्या, गरुड छेक पासे आवी गयो अने ते तरत ज मारी खाशे-एवुं ज्यारे, तेने जणायुं त्यारे ते उभो रह्यो. अने मोतमांथी बचवा माटे कंइ उपाय सूझी आव्यो होय एम डोळ करी-गरुडने विनववा लाग्यो के, हे नागारि! हुं कवि छु, मारुं कौशल्य-जुओ. जे हुं एक वखत लखीश ते फरीने लखीश नहि लखाइ गयेल अंक फरी आपना जोवामां आवे तो मने सुखेथी खाइ जवो. गरुडने आ वात रुची तेथी तेम करवा तेणे पिंगलने सूचना करी. एटले ब्राह्मणना वेशमां रहेला पिंगलनाग एक अक्षरथी आरंभी छवीश अक्षर पर्यंतना प्रस्तारमां जेटला जेटला भेद थता हता ते सघळा लखतो जइ छेवट समुद्रना किनारा पासे ते जइ पोहोच्यो दरियो पासेछे अने ते मार्गे गरुडना पंजामांथी बची जवाशे एम तेने नक्की जणायाथी छेवटे एक वृत्त करी पाणीमां पेशी गयो ज्यां पेसतां नाग जे छेल्लुं वृत्त बोल्यो ते वृत्त एटला माटे भुजंगप्रयात नामे ओळखायछे.

केटलाएक एम केहेछे के, लौकिक छंद:शास्त्रना मूळप्रवर्त्तक पिंगलाचार्य केहेवायछे. एमना बीजां नाम पिंगलनाग, पिंगळमुनि छे. वळी केटलाक एम पण केहेछे के, वेदना महाभाष्यना रचनार पतंजलि हता, तेनु बीजुं नाम पिंगलाचार्य

हतुं. वळी केटलाएक एम पण केहेछे के, पिंगलनागना उपासक कोइ समर्थ छंदोज्ञान धरावनार ब्राह्मण हतो. तेणे शभु नामना पोताना गुरु पासथी ए शास्त्र शीखी पोताना उपास्य देवनी प्रशस्ति माटे छंदःशास्त्रने पिंगलनु नाम आप्युं छे, ने त्यारथी ते नाम जगत्मा प्रवर्त्युं छे. वळी केटलाक एम केहेछेके पिंगल ए नाम कल्पित छे. ए नामनो कोइ मनुष्य नथी थइ गयो, परंतु (पि=पिंड, ग=गुरु, ल=लघु.) गुरु अने लघुना पिंडनुं जेमा व्याख्यान छे एवो ए शब्दनो अर्थ थायछे. गमे तेम हो, तोपण ए पिंगलसूत्र पछी छंद शास्त्रपर जे जे ग्रंथो रचाया छे ते सघळा सामान्य रीते पिंगलनामे ओळखायछे तेथी एम तो कल्पना थायछे के ए नाम तेवा नामना कोइ छंदःशास्त्रकार परथी प्रवर्त्युं होय, वा सूत्र ग्रंथकार गूढार्थ दर्शक पिंगळ एवुं तेने नाम आप्युं होय अने तेथी तेनी प्रवृत्ति थइ होय एम मानी लेवामां कशुं बाधकारक नथी. तक्षक (ताक) वंशमां उत्पन्न थयेला नागराजने केटलाक पिंगळ तरीके मानेछे ए योग्य नथी. पिंगल अने नागराज ए भिन्न भिन्न होवा जोइये. पण नागकुळ अने ताककुळ एकज होय तो ए वंशमा उत्पन्न थयेल कोइ तेनो मूळ पुरुष ए नामे थयो होय ते पिंगलाचार्य होय एम संभवे खरुं.*

"गीर्वाणवाणीमा अने भाषामां पिंगलाचार्यआदि घणा आचार्यो अने कविओए छंद शास्त्र विषे घणा ग्रंथो रच्या छे, तो आ ग्रंथनी शी अगत्य हती, एम कोइ प्रश्न करे, तो तेना उत्तरमा मारे जणाववुं जोइये के, आपणी मातृभाषा सांप्रत का-

* ताक वंशना राजाओ काश्मिर, सिंध अने पंजाबपर-जुना वखतमां राज चलावी गया छे तेमा काश्मिरना राजाओ तो नागना पूजको पण हता तेथी पिंगलने ए वंशमां उत्पन्न थएल मानवामा आवे तो ए ग्रंथ ए देशमा पेहेला रचायो होय एम मानी शकाय.

ळमां गूजराती छे; एटले अन्य भाषामा रचायला ग्रंथो ए भाषा बोलनारने एक सरखा उपयोगी नथी. वळी गूर्जर गिरामां जे थोडा पण ग्रंथ रचाया छे, तेथी छंदःशास्त्रनुं आद्योपान्त यथा विधि ज्ञान थतुं नथी, तेम ज ते अपूर्ण होवाना कारणसर बहु उपयोगी थता नथी. अने प्राचीन आचार्योए जे सूत्रद्वारा संक्षेपमां जणाव्युं छे, ने जेमां ते पछीना विद्वानोये अनेक विध विवृत्ति करी वृद्धि करी छे, ते सघळुं एक ग्रंथ परथी जाणी शकाय एम न होवाथी छंदःशास्त्रना प्रवर्त्तक पिंगलाचार्यथी आरंभी आजसुधी थइ गयेला संस्कृत, प्राकृत अने व्रजभाषाना कविना उपलब्ध ग्रंथोपरथी छंदःशास्त्रसारला दोहनरूप एक ग्रंथ होय, तो आ शास्त्रना जिज्ञासुने बहु लाभ थाय, एवुं समजी आ छंदोग्रंथ लखवानो मने उत्साह थयो छे अने छंदःशास्त्रना ग्रंथोने पिंगल एवुं नाम आपवानो प्रथा पूर्वथी प्रचलित छे ते लोपवो मने योग्य न लागवाथी में पण आ ग्रंथने **रणपिंगल** एवुं नाम आपेल छे.

वेदकाळथी छंद अने गान पृथक् छे अने तेना नियमो पण भिन्न छे; तेथी आ छंदःशास्त्रमां केवळ छंदोज्ञान थवाना नियम आपेला छे, अने गान अथवा गीत, संगीत, पद्य इत्यादिक जूदा जूदा ताल अने लयथी थयेल छंदोनुं रूपान्तर छे, छता ते केम योजवा ए नियम अगत्यना होतां तेनो पृथक् ग्रंथ रचाय तो सारू एवी इच्छा राखुंछुं.

आ ग्रंथना मुख्य पांच भाग पाडवामां आव्या छे. प्रवेशक, वैदिकछंद, मात्रामेळजाति, वर्णमेळछंद अने त्रिविध प्रस्तारादि प्रक्रिया.

प्रवेशक प्रकरणमां छंदःशास्त्रोपयोगी सघळा प्रकारनी संज्ञाओ अने पारिभाषिक शब्दोनी बहु समत व्याख्याओ अने उदाहरण आप्यां छे.

वैदिक छंद प्रकरणमा चार वेदमां जे जे छंदो वपरायला छे तेमना बंधारणना नियमो, उदाहरण अने तेपर जोइती टीका वांचनारने बराबर समजाय ए माटे आपवामां आवेल छे. वैदिक छंदोनां जे उदाहरण आप्या छे तेनो गूजराती अर्थ पण ते साथे आपेल छे. आ भाग जूदो प्रसिद्ध करवामां आवशे

मात्रामेळ छंदोना समजाति, दंडक. अर्द्ध समजाति, शिखाजाति, आर्या, प्रचुर्णगीति अने विषम जाति, मात्रासमक, वैतालीय, अने गलितक एवा पेटाभेद पाडेला छे.

वर्णमेळ छंदना पेटा विभागमा क्रमे समवृत्त, दंडक, अर्द्ध समवृत्त, संकीर्ण, विषमवृत्त, संकीर्ण असंकीर्ण अने अनुष्टुप् वक्त्रादि भेद छे.

विदेशी छंदोनुं ज्ञान आपणने केटलीक वखत घणा संसर्गमां आव्याथी जाणवानुं मन थायछे तेथी दक्षिण भणीना केटलाक छंद आपणी गूजराती भाषामां प्रचलित थया छे तेनु माप अने उदाहरण केटलाक मराठी ग्रंथोना आधारे लइने दाखल करेलुं छे.

छेल्लो भाग प्रस्तारादि प्रकरणनो छे तेमां मात्रा, वर्ण अने तज्जन्य गणनो प्रस्तार शी रीते करवो तेनो पृथक् पृथक् गीतिओ, उदाहरणो अने कोष्टको तेमां आपवामां आव्यां छे, अने आर्या, दुहा तथा अनुष्टुप्नां प्रस्तारादि प्रकरण केटलाक प्राचीन पिंगलशास्त्रकारोए पृथक् पृथक् पाडेलां छे तेथी तेमने तेवांज रूपमां गणप्रस्तारना उदाहरणमां मूकवामा आव्यां छे.

मारी आ विषय सकलना प्राचीन छंदःशास्त्रकारोथी केटलेक अंशे भिन्न छे, एम जोतांवेंत वांचनारने जाणवामां आवशे; तेथी तेम करवानुं प्रयोजन अत्र जणाववानु ठीक पडशे एवु जाणी आपुंछुं.

छंद:प्रस्तारादि प्राचीन ग्रंथोमा प्रथम वैदिकछंद अने तेना पाछळ क्रमे गणछंद, मात्राछंद अने वर्णछंद अने प्रस्तारादि

क्रिया आपवामां आवेल छे. ते क्रममा गणछंद मात्राछंद (जाति) नो पेटाभेद होतां क्रमवार मात्राछंदोमां तेनी गणना करवी सारी लागवाथी में मात्रिकगण छंदने मात्रामेळ जातिना प्रकरणमां भेळवी दीधा छे, अने कया छंद पछी कया छंद अथवा जातिनुं माप अने उदाहरण मूकवां एवो खास नियम न होतां पाचमात्राथी आरंभी १२० मात्रा सुधीमां क्रमवार जे जूदा जूदा छंद अने जातिओ बनेछे अने जेनां नाम पूर्व छंद शास्त्र-कारोए नक्की करेल छे ते विषयवार आपेल छे तेथी कोइ पण संख्यानी मात्रा अथवा वर्णनो छंद बनाववानो विधि अथवा उदाहरण ग्रंथमा कये स्थळे छे ए तुरत ज मळी आवशे.

अमुक मात्राना छंदनुं ग्रंथांतरोमा कयुं नाम छे, अथवा ते नामना बीजा छंदोमां शो शो तफावत छे, ए पिंगळना अभ्यासीने जाणवुं अगत्यनुं होता घणाखरा प्रत्येक छंदनी नीचे फूट-नोटमां तेमनां नामो अने तेमना तफावतनां विवरण साथे तेना योजक अथवा ग्रंथनां नाम साथे आपवामां आवेल छे.

छंदःशास्त्र जेम सरल होय तेम लाभदायक छे. अने जेटलुं कठिन होय तेटलुं संशयात्मक थइ पडे, कारण के, जो छंदो-नियम कठिन होय अथवा तेमा गडबड होय तो तेथी ते विद्याना अनुरागियो अने अभ्यासियोने मुनझारो पडेछे माटे क्लिष्टता दूर करी, छंदोरचना सुलभ थाय अने ते साथे ग्रंथरचना पण उदाहरण टीका अने विवरणने लीधे अति विस्तारवाळी थइ न जाय, एवी संभाळ राखी प्रत्येक जाति, वृत्त अने छंदना नियम आपवामा में नीचे प्रमाणे गोठवण राखी छे.

प्रत्येक जाति अथवा छंदना नामनी जोडे ग्रंथान्तरोमा तेनां शां नाम छे, ते केटली मात्रा अथवा वर्णनो छे, ते जणाववामां आवेल छे. ते तळे तालना नियमसर ज्यां ज्यां तेना टुकडा

पाडेलानी जरुर जणाइछे अने जेने माटे पूर्वाचार्योना नक्की करेल नियमो मळी आव्या छे ते दाखल करेल छे. ते तळे जरुर जोग स्पष्टीकरण होयछे तो ते अपाया बाद, प्रत्येक छंदनी रचनानो नियम ते छंद अथवा जातिना एक पादने माटे आपेल छे अने ते आपतां नियम अने उदाहरण साथे आवी जाय अने ग्रंथनो वृथा विस्तार न थाय, तेनी संभाळ राखवामां आवी छे. प्रत्येक जाति अथवा छंदना नियम माटे उदाहरण रूपे आपवामां आवेल जात्यादिना प्रत्येक पद छदने लगती मात्रा अथवा वर्णना प्रस्तारजन्य केटलामा रूपने लगतां छे, तेनी संख्या प्रत्येक छदना प्रतिपादनी साथे लखवामां आवेल छे.

मात्रिक सम अने विषम मात्रिक, एम पृथक् पृथक् भेद पाडी ए वर्गना छदोनु कोइ पण पूर्वाचार्योए जूदुं वर्णन कर्युं नथी. ते अमे पिंगल शास्त्रना अभ्यासिओनी सुगमता माटे खास विस्तृत करी, क्रमवार आ ग्रंथमा दाखल करेल छे. तेम करवामां तदन्तर्गत आर्या अने वैतालीय छंदनुं ते ते नाम तळेना प्रकरणमा तेना भिन्न भिन्न जेटला भेद पडेछे, ते सहित विस्तार पूर्वक वर्णन करेल छे

वैदिक छन्दोने बाजुए मूकतां बाकीना वर्णमेल छंदोमांना घणाखरा लौकिक वर्णमेळ छंदो गणबद्ध छे. छदोरचनानो नियम आपता अमुक गण अमुक स्थळे लाववो, एम केहवामा इष्टगणनुं आखुं नाम आपवा जतां, नियम अने उदाहरण एक ज वृत्तमां आवी शके नहि, एटला माटे पिंगलादि आचार्योए पूर्वथी प्रणालिका पाडी छे, ते प्रमाणे ते ते गणना आद्याक्षरोने ज ते ते गण सूचववा माटे लक्षणमां आपवामां आवेल छे.

मात्रिकजाति प्रकरणमां जरुर जोग स्थळे टगणादि प्राचीन मात्रिक गणोनो उपयोग कर्यो छे अने ज्यां तेवी गणनानी जरुर नथी जणाइ. त्यां उदाहरणना उपर अने छंदना

नामनी नीचे केटली केटली मात्राना टुकडा लाववा तेनी संख्या मूकवामां आवेल छे. मात्रिक छंदमां अमुक ताल अमुक मात्राए लाववो अने ते लाववामां अमुक मात्रा तेनी साथे न आवी जाय एम केटलेक ठेकांणे खास जरुर जणायाथी लखवामां आवेल छे. आ विधि सर्वत्र योजायाथी सघळा प्रकारनी तालबद्ध छंदोरचना थाय तेम छे अने टगणादिथी नवा नियमे लक्षणो बांधी शकाय तेम छे; तेथी आ कार्य पूरुं थतां ज मात्रिक गणबद्ध नविन रचना करवानी में धारणा राखी छे.

कवित अने मनहरने घणा लोको एकज मानता आवेछे अने तेनी रचना बधा वर्णमेळ छंदने अनुसरीने करवामां आवेछे. आम करवामां तेओ केटले दरज्जे भूलावामां पडेछे, ते आ मथाळाना छंदतळे आपेला लांबा लेखथी वांचनारने स्पष्ट जाणवामां आवशे. अने कवितमां पण तालादि नियम जाळववा माटे केटली काळजी राखवानी अगत्यछे, ते पण स्पष्ट जणाइ रहेशे.

मात्रिक प्रकरणमां कोइ पण गूजराती पिंगळमां न आवेल एवा गलितक अने शिखाजातिना भेद अने वृत्त प्रकरणमां अर्द्धसम अने विषम वृत्तना संकीर्ण अने असंकीर्ण एवा छंदना जेटला छंदो थायछे तेनुं विगतवार वर्णन क्रमवार आपवामां आव्युं छे.

मात्रा प्रकरणमां एकथी आरंभी अनेक मात्रा पर्यतना छंदोना केटला भेद अथवा वृत्ति थइ शकेछे, ते तथा अमुक संख्यानी वृत्ति अथवा भेद क्रमवार केटला गुरु अथवा लघु वर्णनी थाय, ए तरत समजाय अने तेवो छंद रचवामां कविने सुगमता मळे; एटला माटे संख्या, प्रस्तार, सूची, नष्ट, उद्दिष्ट, मेरु, पताका, अने मर्कटी आदि प्रकरणो पाडी ते केम साधवा, अने तेनो उपयोग केम करवो, एनी रीति, उदाहरणो

अने ए माटे जोइतां कोष्टको विगेरे आ रणपिंगलना बीजा भागमां आपवामां आव्या छे.

जे छंदनुं नाम पिंगलमां न मळे, ते छंदने गाथा केहेवी एम पूर्वाचार्योनो आदेश छे ने ते श्रीमद्भागवतमां तेवा छंदो वापरी केटलेक अंशे प्राचीन कविओए जाळव्यो पण छे, तोपण प्रस्तार विधिये केटलाक नवीन छंद बनेछे तेमने ए प्रमाणे सामान्य गाथा नाम आपवानी अगत्य सर्व कवियोए गणी नथी. अने नवा छंदने नवां नाम आप्या छे, तेथी में पण मारा मनना वलणने वश थइ केटलाक छंदने रणशूर, खेंगारवृत्त, मनसुख इत्यादि मनगमतां नामो आपेल छे अने बाकीनां नामो पूर्वाचार्योए जे कल्पेलां छे ते ज स्वीकार्यां छे.

आ रणपिंगल तैयार करवामां जे जे संस्कृत, हिन्दी अने गूजराती ग्रंथोनो आशय लेवामां आव्यो छे ते ग्रंथो कया कया छे ए छंदःशास्त्रना अभ्यासीने जाणवानी अगत्य होता तेमनुं नामवार लिष्ट आ नीचे आपीये छिये.

रणपिंगल तैयार करवा माटे जोवामां आवेला ग्रंथोनी यादी.

१ यजुर्वेद, महीधरभाष्योपेत.
२ यजुर्वेद सर्वानुक्रमणिसूत्र. कात्यायन.
३ ऋग्वेद सायणभाष्योपेत.
४ वेदार्थयत्न मासिक.
५ सामवेद आर्चिक.
६ ऋग्वेद सर्वानुक्रमसूत्र शौनक.
७ अथर्ववेद सायणभाष्य.
८ अथर्ववेद सर्वानुक्रमसूत्र
९ सुवृत्ततिलक. प्रकाशेन्द्र पुत्र क्षेमेन्द्र
१० शब्दकल्पद्रुम.

११ वृत्तप्रदीप. जनार्दन
१२ वाग्वल्लभ दुःखभंजन.
१३ वृत्तरत्नाकर. केदारभट्ट.
१४ ,, ,, टीका हरिभास्कर. सं. १७३१.
१५ छंदोमंजरी. गंगादास पंडित.
१६ भावप्रदीपिका.
१७ छंदःशास्त्र. पिंगलाचार्य
१८ छंदोवृत्ति. भट्टहलायुध, सोमचंद्र सं. १३२९.
१९ वृत्तमौक्तिक. चन्द्रशेखर, लक्ष्मीनाथ. सं. १६७६.
२० छंद कामदुघावत्स. सुखानंद.
२१ प्राकृतपिंगलसूत्र } टीकाकार रामभट्ट पुत्र लक्ष्मीनाथ.
२२ पिंगलप्रदीपटीकोपेत. }
२३ नागपिंगल मार्गी.
२४ मंदारमरंदचंपू. } कृष्णकवि.
माधुर्यरंजनीव्याख्योपेत }
२५ छंदोवृत्तमुक्तावली. कृष्णकवि.
२६ श्रुतबोध. कालिदास.
२७ वाणीभूषण. मैथिल दामोदरमिश्र.
२८ वृत्तरत्नावली. गौडवंशज भट्टाचार्य शतावधान पुत्र.
२९ छंदोलता. वसंत.
३० भास्करीयसेतु भास्कर.
३१ नागराजपिंगल. पिंगलाचार्य.
३२ छंदकोश. रत्नशेखरसूरी.
३३ मागधी पिंगल टी चित्रसेन.
३४ ,, ,, मुनि सुंदर सूरी.
३५ चूडामणि नागराज पिंगलाचार्य.

३६ छंदोनुशासन. हेमचंद्र.
३७ हरिजशपिंगल(मारवाडी) हमीर कवि
३८ छंदःशतक. चंद्रकीर्त्तिसूरि शिष्य हरिकीर्त्तिसूरि.
३९ छंदतरंगिणी. प्रेमसिंह कवि.
४० छंदोबोध (भाषा) श्री हृषीकेश शास्त्री.
४१ चिन्तामणि पिंगल. चिन्तामणि.
४२ रूपप्रदीप. जयकृष्ण भवानीदास.
४३ छंदरत्नावली. साधु हरिरामदास निरंजनी.
४४ शृंगार पिंगल. कवि सिंहविरचित.
४५ प्रवीणसागर. } आ ग्रंथमां आवेला
४६ रामचंद्रिका. } सर्व छंद
४७ वृत्तसारावली.
४८ छंद प्रभाकर. बाबु जगन्नाथ प्रसाद.
४९ भाषा छंदोमञ्जरी. कवि पद्माकर पौत्र गदाधर.
५० लखपतजशसिंधु. कवि हमीरजी.
५१ भगवत्पिंगल. स्वर्गस्थ कवि छन्नडजी. सं० १८६५
५२ छंद शृंगार. कविमिश्र सेवक (भोजक) सं० १८९३
५३ काव्य सुधाकर. महंत जानकीप्रसाद.
५४ गणप्रस्तारप्रकाश. बाबा रामदास.
५५ छंदोमालिका. मिश्र केशवराम कवि.
५६ काव्य रसायन कवि देवदत्त.
५७ काव्यार्णव कवि संग्रामसिंह
५८ नामार्णव. राजा लक्ष्मीसिंह
५९ साहित्यानंद कवि गोपालकृष्ण.

आ सिवाय छंदःशास्त्रसरना बीजा जे ग्रंथोनां नाम अमने मळेलां पण प्रति मेळववामां नहि आवेली ते ग्रंथोनी टीप पण आपी छे; ते उपरथी छंदो विषाना उत्सुकोने शोध करवानो लाभ थशे. अने कोइ छंद नह्रो हशे तो आ ग्रंथ साथे तुलना करवा जतां तरी आवशे, अने ते जो अमने जणाववामां आवशे तो आभार साथे स्वीकारी द्वितीय संस्करणमां तेनो उपयोग करवामा आवशे.

आ छंदःशास्त्ररूपी समुद्र तरी न शकाय तेवो छे. तमां जेम जेम डुबकी मारवामां आवेछे; अने जेम जेम वधारे नीचे पोहोंचायछे तेम तेम अमुल्य रत्न डुबकी मारनार मेळववा पामे

छे प्रस्तार विधिथी अनेक विध छंदो बनेछे, अने तेमने सत्क-
वियो पोताने गमे तेवां नाम आपेछे, ए सर्वने आदर करवा
योग्य छे; केवळ पात्र मनुष्योने नवा छंद रची नवां नाम आ-
पवानो अधिकार छे बीजाओने नथी अधिकारी जन पण तेज
छे के जे छंदनां लक्षण सारी रीते समजेछे, पोते भणेछे अने
बीजाने भणावी शकेछे एक छंदने एक कवियें एक जातनुं
नाम आपी दीधुं होय तेज नाम ते पछीना बीजा कवियें
तेज छंदने वा बीजा छंदने न आपवुं, अथवा नामने बदलावी
बीजुं नाम न घुसाडवुं, एवी पूर्वनी प्रथा छे तेनो त्याग न क-
रवो. एम करवाथी नवा वांचनारने भ्रम उत्पन्न थायछे, अने
तेने पोताने कशा प्रकारनो लाभ थतो नथी.

वर्णवृत्त करतां मात्रिक जाति अथवा छंदनो विषय विशेष
विचारवा जेवो छे, एटला माटे मात्रिक छंदनी श्रेणीमां जो कोइ
चारे पदमा वर्णक्रम अने संज्ञा समान जोवामां आवे, तो
सत्कवियें तेने मात्रिक छंद न मानता जेटला वर्णनो ते छंद
होय तेटला वर्णना छंदना भेदमां ते आवी जतो होय तो ठीक
नहिकर तेने तेना इतर भेद तरीके गणवो जोइये.

आ सृष्टिमां जेटली भाषा प्रचलित छे, तेमनुं खरुं सौंदर्य
तेमनी कवितामां जोवामां आवेछे, ज्यां सुधी छंदोज्ञान यथा-
विधि थतुं नथी त्यां सुधी मातृभाषा पण सारी रीते जाणी
शकातो नथी. मातृभाषाथी अजाण मनुष्य बीजी विद्यानी खूबी,
शी रीते जाणी शके? मातृभाषानुं सौंदर्य वधारवा अथवा
एमां रहेलुं सौंदर्य जाणवा माटे प्रत्येक मनुष्ये छंदोज्ञान सुवि-
धिये मेळववुं जोइये.

शोधानां पुस्तकोनी टीप.

पुस्तकनुं नाम.	कर्त्तानुं नाम.	विशेषहकीकत.
१ छन्दःकल्पलता.	मथुरानाथ.	अलाहबादमां प्रकट थएल वायव्यप्रान्तनी खानगी लायब्रेरीना हस्तलिखित संस्कृत पुस्तकनी सूची जूओ. १२६
२ छन्दः कौस्तुभ	विद्याभूषण.	,,
३ छन्दःप्रकाश	शेषचिन्तामणि	एफ किलहोर्नकृत मध्यप्रान्तोनां हस्तलिखित संस्कृत पुस्तकोनी सूची ९४.
४ छन्दःश्लोक.		गुस्तव ओपर्टनी संस्कृत पुस्तकोनी सूची १८२८.
५ छन्दसंख्या.		जी बुलर साहेबनी मुंबइ इलाकानां पुस्तकोनी सूची ३. ६०.
६ छन्दःसंग्रह.		स. १८६४नी बाइब्लोथेटीकानी संस्कृत पुस्तकोनी सूची ९५
७ छन्दःसुधाकर.	कृष्णाराम	बनारस कोलेज लायब्रेरीनी सू. ३३
८ छन्दश्चूडामणि.	हेमचन्द्र	जुवो छन्द संग्रह. २११अ
९ छन्दस्.	भास्करराय.	जुवो छन्द प्रकाश. ९४
१० छन्दोगोविन्द.	गंगादास.	जुवो छन्द संग्रह. १९८ब
११ छन्दोदर्पण.	गोविन्द.	,, छन्द सुधाकर. ३३
१२ छन्दोदीपिका.	कृष्णाराम.	,, छन्दःकल्पलता. ६१६
१३ छन्दोनुक्रमणि.	सद्गुरुशिष्य.	सद्गुरुशिष्य सूची.
१४ छन्दोनुशासन.	वाग्भट.	किलहोर्नकृत मुंबइ इलाकानां संस्कृत पुस्तकोना रिपोर्ट.

१५ छन्दोमंजरी. — राजेन्द्रलालमित्रनी संस्कृत पुस्तको संबंधी नोटीस ८७७. ए. सी. बर्नेल टान्जोर लायब्रेरी सं. पु. सूची ३ ब.

१६ छन्दोमातंग स्वेतांबर.
१७ छन्दोमार्तण्ड.
१८ छन्दोमाला. करंगधर.
— वृत्तरत्नाकरादर्शमां आ ग्रंथोनां नाम छे.

१९ छन्दोऽम्बुधि. ओपर्टनी सूची. ५५१

२० छन्दोरत्न. हलायुध. „ ३१३१

२१ छन्दोरत्नाकर. जुर्वो छन्दःप्रकाश.२०१अ

२२ छन्दोरत्नावली. अमरचन्द्र. „ ओपर्ट सूची. ४५९२

२३ छन्दोलक्षण. „

२४ छन्दोलक्ष्यलक्षण. बर्नेल सूची. ५२. ब

२५ छन्दोलघुविवेक. बीकानेर महाराजाना पुस्तकालयमां.

२६ छन्दोलंकरण. सूची.

२७ छन्दोविचय. पीटरसन साहेबनी सूची. १८५

२८ छन्दोविचार बर्नेल सूची. ५२. ब

२९ छन्दोविचिति. पतंजलि. ओपर्ट सूची. १८२९.

३० छन्दोविलास. पेरीसनाएसमन्कनी सू. १२५ अ

३१ छन्दोविवेक. ओपर्ट सूची. ४६३७

३२ छन्दोवृत्तरत्न. सूची.

३३ छन्दोष्टादशक. रुपगोस्वामी. राजेन्द्रलालमि. नो. २१२५

३४ पिंगलार्या. ओपर्टसूची ३४२२

३५ पिंगलसार. हरिप्रसाद. राजेन्द्रलालमि. नो. २९१२

३६ वृत्तकल्पद्रुम. जयगोविंद. एफ. किल्हॉर्न सूची. ९४

३७ वृत्तकौतुक. विश्वनाथ. „ ३२६

३८	वृत्तकौमुदी.	जगद्गुरु.	अयोध्याप्रांत सूची.	१८
३९	वृत्तचंद्रिका.	रामदयालु.	,,	२-१८-३०
४०	वृत्तचंद्रोदय.	भास्कर.	किल्होर्न सूची. बनारस कोलेज पुस्तकालय.	३-३
४१	वृत्ततरंगिणी.		दिल्लीप्रान्तनां पुस्तकोनी सू. काशीनाथ कुन्ते.	
४२	वृत्तदर्पण.	गंगाधर.	अयोध्याप्रांत सं. पु. सू.	१९-५८
४३	वृत्तदीपव्याख्यान.		राइसकृत सूची.	२८
४४	वृत्तदीपिका	कृष्ण.	दक्षिण मुंबइ इलाकानी सू.	५०
४५	वृत्तद्युमणि.	यशवन्त.	ओफर्ट सूची.	१०३१
४६	वृत्तप्रत्यय.	शंकरदयालु	अ. प्रा. सं. पु. सू.	८,१०
४७	वृत्तप्रत्ययकौमुदी.	पिंगल.	काशी. कु. कृ. दि.ना पु. रि.	
४८	वृत्तप्रदीप.	जनार्दनविबुध.	बर्नेलसूची ५३. व भान्डारकर री.	
४९	वृत्तमणिकोश.	,,	,,	
५०	वृत्तमाणिक्यमाला.	सुसेन.	अयोध्या. सं. पु. सूची.	१०,१०
५१	वृत्तमाला.	वल्लभजी.	भाडारकरनो रीपोर्ट.	
५२	वृत्तमुक्तावली.	कृष्णाराम.	वायव्यप्रांन्त सं.पु सूची.	६१८
५३	,,	मल्लारी	किल्होर्न सूची.	९४
५४	वृत्तरामायण.		अयोध्या सं. पु. सूची.	१०
५५	वृत्तलक्षण	,,	ओफर्टसूची.	२५५२.
५६	वृत्तवार्तिक.	उमापति	,,	३२१८.
५७	वृत्तविनोद.	फतेहगिरि.	अयोध्याप्रान्त. सं. पु. सूची	१०
५८	वृत्तविवेचन.	दुर्गासहाय.	बनारस कोलेज पुस्तकालय सू.	३२.
५९	वृत्तशतक.	मार्तण्डवल्लभ.	प्रो. पीटरसन सूची.	२ १३१
६०	वृत्तसुधोदय.	मथुरानाथ.	वायव्यप्रान्त सं पु. सूची.	६०४
६१	वृत्तार्क.		राइससाहेबनी सूची.	२८.

प्रवेशक.

संज्ञाप्रकरण.

वेदनां छ अंग गणवामां आव्याछे; तेमांनुं एक अंग आ छंदःशास्त्र[1] छे; केटलाक तेना मूळ योजक पिंगलाचार्यना नामपरथी तेने पिंगल पण केहेछे. तेमां मनने आल्हाद आपे एवी छान्दस् वाणीना विविध प्रयोगो करवाना नियम आपवामां आवेला छे.

छंद बे प्रकारना छे, [2]वैदिक (अलौकिक) अने [3]लौकिक.

वेदमां वपरायला छंद वैदिक, अने लोकमां प्रवर्त्तता लौकिक छंदः केहेवायछे.

लौकिकछंदना २ बे भेद छे,

१ मात्रामेळ अने २ वर्णमेळ.

मात्रामेळ अथवा मात्रिक छंदनां बे पटां पडेछे,

१ मात्रिक गणबद्ध अने २ मात्राबद्ध.

---

१ छंद:=चदि आल्हादने, ते उपरथी तेने असुन् उणादि प्रत्यय लागतां च स्थाने छ थइ छंदःशब्द सिद्ध थायछे अने तेनो अर्थ आनंद उपजावनार-आल्हादकारक, एवो थायछे. अथवा छदि=आच्छादने, एटले, जे मापे करीने आच्छादित अथवा मर्यादामां रहेल ते, एवो अर्थ पण थाय.

२ आ प्रकरण नोखुं छपावानुं छे.

३ एकदेशे स्थिरा जाति र्वृत्तं गुरुलघुस्थिरम्,
आदौ तावद् गणच्छंदो मात्राच्छंदस्ततः परम्;
तृतीयमक्षरच्छंद छंदस्त्रेधातु लौकिकम् ॥
तेन प्राकृत लौकिक छंदोजात जातिरित्युच्यते.

मात्रिकगणबद्धने पद्य[1] केहेछे, अने मात्राबद्धने वृत्ति अथवा जाति केहेछे.

वर्णमेळथी जेनी रचना करवामां आवेछे एवा अक्षरबद्ध छंदनी अनेक वृत्तिओ थायछे, तेथी ते वृत्त केहेवायछे

जाति अने वृत्तना मुख्य त्रण भेद पडेछे.

१ सम, २ अर्धसम अने ३ विषम.

जेना चार चरण समान मापनां होय ते सम केहेवायछे. जेनुं पेहेलु तथा त्रीजुं चरण समान मापनुं होय ते अर्धसम केहेवायछे; अने जेना सर्व चरण विषम मापना होय ते विषम केहेवायछे.

समजाति अने वृत्तना बे भेद छे.

१ सामान्य सम अने २ दंडक.

प्रत्येक चरणमां ३२ मात्राथी वधारे मात्रावाळां जे जातिना चरण होय ते जातिदंडक अथवा मात्रिकदंडक गणायछे.

तेमज २६ अक्षरथी वधारे वर्णनां चरणवाळां वृत्त वर्णदंडक केहेवायछे.

विशेष समजुती माटे जुवो पृ. २२ मानुं छंदोवृक्ष.

---

३ अर्थ एक देशमा (भागमा) स्थिरता एटले नियमित लक्षण होय ते जाति केहेवाय जेमां गुरु लघु नियमित होय ते वृत्त केहेवाय. प्रथम गणछंद, बीजा मात्राछंद, अने त्रीजा वर्णछंद ए प्रमाणे लौकिकछंद त्रण प्रकारना छे. प्राकृत अने लौकिकछंदना समूहने जाति केहेछे.

१ पद्य गणानाम् भवेत् (वाग्वल्लभ)

- छंद
  - वैदिकछंद
  - लौकिकछंद
    - मात्रामेळजाति
      - पद्य
      - जाति
        - समजाति
          - समजाति
          - दंडक
        - अर्धसमजाति
        - विषमजाति
    - वर्णवृत्त
      - समवृत्त
        - समवृत्त
        - दंडक
      - अर्द्धसमवृत्त
      - विषमवृत्त

अ, आ इत्यादि स्वर अने ते सहित क, ख, आदि व्यंजनो ए वर्ण अथवा अक्षर केहवायछे. तेमना बे प्रकारछे. १ दिर्घ. अथवा गुरु अने २ ह्रस्व अथवा लघु. ए संक्षेपे बताववाने गुरुने माटे ग अने लघुने माटे ल मूकवामां आवेछे.

(दुहा)

बे अणु द्रुत केवायछे, बे द्रुत लघु लेखाय,
बे लघु ते गुरु जाणवो, त्रण लघु प्लुत भंखाय.
गुरु लघुने गल कवि कहे, गल रेखा आकार—
कुटिल फणाकारे (ऽ) गुरू, लघु छे (।) दंडाकार.

लघु वर्णनी एक मात्रा, अने गुरू वर्णनी बे मात्रा गणायछे. लघुनी मात्रा सूचववा माटे ।-चिन्ह अने गुरुनी बे मात्रा अथवा गुरु वर्ण सूचववा माटे ऽ आवुं वक्रचिन्ह मूकायछे.

शुद्ध जोडणीवाळा शब्दोमां ज्यां ह्रस्व इ, उ अथवा रू होय त्यां दीर्घ गणवा जेवुं होय अने ज्यां दीर्घ होय त्यां ह्रस्व गणवा जेवु होय तो ते अक्षर उपर — ˘ आवा चिन्ह अनुक्रमे मूकवामां आवेछे. जेमके जुवो रणपिगल पृ. १९.

जाति जयककरी जुगते करो.

उपर प्रमाणे छूट लेवी ए सशास्त्रनथी पण गूजराती भाषामां बोलाय तेवुं लखवानो परिचय पडी जवाथी एवी छूट लेवामां आवीछे; तथापि बनता सुधी तेम न थवा देवुं ए सारू छे.

मात्राने केटलाक कला पण केहेछे.

लघुवर्णनां पारिभाषिक अन्य नाम नीचे प्रमाणे छे:—

कनक, शंखलता, रवि, मेरु, दंड अने तेमना पर्याय; पुष्प, (कुसुम, फूल) रुप, रस, गंध, काहण, रेखा, कल्हार, शर (शल्य, बाण) अने तेमना पर्याय, एक मात्र इत्यादि.

गुरुवर्णनां नाम.

धवलकमल	वाजी	अलि	आहार	कुन्द	अच
शा[illegible]	अल	गगल	[illegible]	[illegible]	अजा
चक्र	गरुड	अखुल	समर	कुंजर	सेढो
सुर	कपोत	समीर	कील	कलीर	नाराच
शशी	कमल	नीर	संगल	केश	द्विमात्र
जलहर	वैकास	निंघट	मउड	कुंभका	चामर
अग	वरह	भासुर	माल	सिंगिकिरण	हार
वन	वल्लभ	सार	कुल	कुर्व	ताडका

आ, ई. ऊ, ॠ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः, आ स्वर अने तेमनी साथे संयुक्त थयेला व्यंजनो गुरुवर्ण केहेवायछे. ए सिवायना स्वर अने तेमनी साथे जोडायला व्यंजन लघु-वर्ण केहेवायछे.

गुरुवर्ण. आ, औ, गौ, गा, या, इत्यादि

लघुवर्ण अ, इ, उ, क, ख, गि, नि, इत्यादि.

लघुवर्ण जोडाक्षरनी पेहेलां आवेलो होय अने ते जो बोलतां थडकतो होय तो गुरु गणायछे.

जेमके " मध्य " आ शब्दमां जोडाक्षर " ध्य " छे तेनी पेहेलां " म " छे तेनो उच्चार करतां थडकेछे माटे म ए लघु छे छता गुरु गणाशे. पश्चिम, दक्षिण, भक्त, दस्र, ए शब्दोमां क्रमे प, द, भ, द ए लघु वर्ण छे ते गुरुवर्ण गणायछे.

गूजराती क्रियापदोमां अल्प यकारयुक्त भूतकाळनां रूप थायछे तेमां यकार लखवानो परिचय छे.

गळ्यो, मळ्यो, रळ्यो, भळ्यो, सळ्यो, हळ्यो, जळ्यो, आ शब्दोमांना जोडाक्षर क्योनी पेहेलांनो वर्ण उच्चार करतां थडकतो नथी माटे गुरु नहि गणाय.

कोइ कोइ स्थळे समपदनी अन्ते रहेलो लघुवर्ण गुरु गणायछे, तेमज कोइ कोइ स्थळे विषम पदनी अंते रहेलो लघु कचित गुरु[1] गणवामां आवेछे.

गुरुवर्ण होय अने तेनो उच्चार दीर्घ थतो न होय तो ते गुरु छतां लघु गणवो. जेम के "अरेरे कृष्ण" आ वाक्यमां "रे रे" ए दीर्घ वर्ण छे तेनो उच्चार लघु समान थायछे माटे तेमने लघु गणवा. तेमज डग मग आ चार मात्रा छे पण उच्चार करतां तेमांना ग हल बोलायछे माटे तेनी बे मात्रा गणवी.

सघळा मळीने ३४ व्यंजन छे, तेना फळ परत्वे नीचे जणावेला त्रण भेद पाडवामां आव्या छे. **शुभवर्ण, अशुभवर्ण** अने **दग्धवर्ण** अथवा **दग्धाक्षर**. क, ख, ग. घ, च, छ, ज, ड, द, ध. न, य, श, स, अने क्ष ए **शुभवर्ण** केहेवायछे. ङ, झ, ञ, ट, ठ, ढ, ण, त, थ. प, फ, ब, भ, म, र, ल, व, ष. अने ह, **अशुभवर्ण** केहेवायछे झ, ह, र, भ, अने ष, ए **दग्धवर्ण** केहेवायछे. केटलाक तेने शुभ मानेछे अने घ, ध, अने नने

---

१ संस्कृतमां नीचेनो नियम पण लागु पडेछे

क्यारेक संयुक्त जोडाक्षर 'ह्र अने प्र" नी पेहेलानो लघु वर्ण विकल्पे गुरु गणवामां आवेछे. जेमके **जयतिप्रदापित** ए शब्दमां प्रनी पेहेलानी **ति** विकल्पे गुरु गणायछे तेमज **मानसह्रदि** आमां ह्रनी पेहेलानो **स** पण विकल्पे गुरु गणायछे.

अशुभ मानेछे; अने ख, अने न, ने केटलाक दग्धाक्षर मानेछे, पण आ विषे घणा विद्वानोनी संमत्ति नथी.

दग्धवर्ण अथवा अशुभ वर्णने आरंभमां मूकी कोइ पण लौकिक छंदनी रचना करवी नहि एम कवियोनुं मानवुं छे. वैदिक छंदने ए अपवाद लागु पडतो नथी. वळी अशुभ वर्णने छंदना आद्य भागमां न चालते मूकवा; पण दग्ध वर्णनो कोइ पण छंदना आद्य भागमां उपयोग न करवो एम पण केटलाकनुं केहेवुं छे.

दग्धाक्षर दीर्घ होय अथवा तेनो प्रयोग मंगलवाचक शब्दमां अथवा कोइ देववाचक शब्दमां थयो होय तो ते अशुभ नथी गणातो. तेमज तेवा ज शब्दना गणमां ए अक्षर आवेलो होय ने ते गण जो कोइ छंदमां वर्ज्य गणातो होय तो ते पण ग्राह्य बनेछे, अर्थात् ए दोषथी मुक्त थायछे. जेमके.—

"रघुपति प्रजा प्रेमवश देखी,
सदयहृदय दुखी थया विशेखी॥"

उपरना रघुपति शब्दमां र दग्धाक्षर छे परंतु रामना वर्णन मां ए दोषमुक्त थायछे.

म्लेच्छ, चाण्डाल अने इतर कनिष्ट जातिनी कवितामां घ, र, भ, अने खनो दग्धाक्षर दोप रहेतो नथी.

ब्राह्मण अथवा द्विजना वर्णननी कवितामां न अने [illegible] वर्ण थी शिरु थता शब्दो प्रारंभमां आवे तो दोष गणातो नथी.

वैश्यना वर्णननी कविता होय तो तेना शब्दना आरंभमां ख, र, ध, वर्ण आववा देवा नहि.

रचवा धारेलो छंद कोइपण स्त्री संबंधी होय तो तेना आ-द्यमां ठ, झ, अने घ, थी शिरु थता शब्दनो प्रयोग करवोनहि,

दग्धाक्षरनो प्रयोग छंदना आद्य भागमां करवाथी नीचे प्रमाणे वर्ण परत्वे फळ थवानुं केटलाक कविवरो जणावेछे.

कविताना प्रारंभमां ह होय तो हानि करे, झ होय तो झगडो करावे; न होय तो घोर करावे, ख होय तो खलता करावे; भ होय तो भय उपजावे, ध होय तो धननी हानी करावे; अने र होय तो अहित करे.

वळी केटलाक कविवरो[1] मातृकाक्षरोनां शुभाशुभ फळ नीचे प्रमाणे थवानु कहेछे ऋ अने ऌ सिवायना सघळा स्वरो संपत्तिकारक छे, क, ख, ग, घ संपत्करेछे, ङ अपकीर्तिकर्त्ता छे, च सुख आपेछे, छ प्रेमनो वधारो करेछे. ज मित्रलाभ करावेछे; झ भय उपजावेछे; ञ मरण निपजावेछे, ट, ठ दुःख आपेछे; ड शोभामां वधारो करेछे, ढ शोभा घटाडेछे, ण श्रम करावेछे, त सुख आपेछे, थ झघडो करावेछे; द सुख आपेछे. ध अने न संतोष उपजावेछे, प सुख आपेछे; फ भय उपजावेछे, ब मरण निपजावेछे, भ क्लेश करावेछे, म दुःख आपेछे य लक्ष्मीनो वधारो करेछे, ल अने व व्यसनी बनावेछे: र दाह पेदा करेछे, श सुख आपेछे; ष ह खेद करावेछे, अने स सुख तथा क्ष समृद्धि आपेछे.

गण.

छंदःशास्त्रनो आ पारिभाषिक शब्द छे तेनो अक्षरार्थ "समूह" थायछे; परंतु प्रकृत प्रकरणमां मात्रा अथवा वर्णनो समूह एवे अर्थे ए वपरायछे, तेना भेद बे छे; मात्रिक गण, अने वर्ण गण.

---

[1] वृत्तरत्नाकरना टीकाकार नारायण प्रभृति

मात्राना समूहथी उत्पन्न थयेला गण मात्रिक गण केहेवायछे अने वर्ण समूहजन्य गणने वर्णगण केहेछे.

मात्रिकगण पांच छे अने वर्णगण आठ छे.

मात्रिकगणनां नामः—टगण, ठगण, डगण, ढगण अने णगण छे. केटलाक ए नामने बदले छगण, पगण, चगण, तगण अने दगण एवां नाम पण वापरेछे, कारण के ए नामथी जे गण केहेवायछे तेनो आद्याक्षर ते गणनी मात्रासंख्या सूचवेछे

गण बिम्ब

गणनु नाम	मात्रा संख्या	भेद
ट अथवा छ	६	१३
ठ अथवा प	५	८
ड अथवा च	४	५
ढ अथवा त	३	३
ण अथवा द	२	२

मात्रिकगणनां जूदां जूदां रूप थवाथी तेना भेद पाडवामां आवेछे. जे गण जेटली मात्रानो होय तेना मात्रा प्रस्तार विधिये जेटला भेद थता होय तेटला ते गणना रूप थायछे.

टगणादि गणना भेदजन्य रूपनु दर्शन नीचेना बिम्ब परथी स्पष्ट समजाशे.

टगणना १३ भेद अने तेना रूप.

१. SSS. २. IISS. ३. ISIS. ४. SIIS. ५. IIIIS. ६. ISSI ७. SISI. ८. IIISI. ९. SSII. १०. IISII. ११. ISIII १२. SIIII. १३. IIIIII.

ठगणना ८ भेद अने तेना रूप.

१. ISS. २. SIS. ३. IIIS. ४ SSI. ५. ISI. ६. ISII. ७. SIII. ८. IIIII.

डगणना ५ भेद अने तेनां रूप.

१. SS. २. IIS. ३. ISI. ४. SII ५. IIII.

ढ गणना ३ भेद अने तेनां रूप.

१. S. २. SI. ३ III.

ण गणना २ भेद अने तेनां रूप.

१. S. २. II.

केटलाक छंदःशास्त्रवेत्ता टगणादि गणनां भेदजन्य रूपनां नीचे जणाव्या प्रमाणे नाम आपे छे:—

टगण.

क्रमाङ्क	स्वरूप चिन्ह	नाम अने तेना पर्याय
१	SSS	शिव, हर, शंकर इत्यादि.
२	।।SS	शशि, इन्दु इत्यादि.
३	।S।S	दिनपति, सूर्य, रवि, इत्यादि.
४	S।।S	शक्र, इन्द्र, मघवा इत्यादि.
५	।।।।S	शेष इत्यादि.
६	।SS।	अहि, कृष्ण, हरि इत्यादि.
७	S।S।	सरोज, कमल, पद्म इत्यादि.
८	।।।S।	ब्रह्मा, धाता, विरंचि इत्यादि.
९	SS।।	कलि, किरण इत्यादि
१०	।।S।।	कमठ, कामठुं, बन्धु‡, चन्द्र इत्यादि.
११	।S।।।	ध्रुव,
१२	S।।।।	धर्म,
१३	।।।।।।	शालिवर, शाली, शालिकर, मालरो इत्यादि

‡ बन्धु, चंद्र नाम प्राकृत पिंगळनी एक टीकामां आप्या छे, तेमज प्राकृत पिंगल सूत्र पृ ८ मा चन्द्र नाम छे माटे बीजा रुपना शशि, इन्दु नाम छे तेना पर्याय चंद्र, बन्धु जे दशमा रुपना नाम छे ते साथे भेळवी देवां नहि.

पांचमात्राना गणने ठगण कहेछे. तेनां सघळां मळीने ८ रूप थायछे ते नीचे मुजब.—

ठगण.

क्रमाङ्क	स्वरुप	नाम अने तेना पर्याय
१	।ऽऽ	इन्द्रासन. इन्द्रगण, तारापति, ऐरावत, अहिक, हय, सुरेन्द्र, सुरनरेन्द्र, कुंजर, मेघ, गजवर, ग्रह, गज. वाजी, दंत, गगन, दंती, नरेन्द्र. वसंत, सुरगज, रद, वीर, धीर, मयक, किरण, वेयाल, केसरी, भ्रमर, इत्यादि.
२	ऽ।ऽ	अन्यसूर, सूर्य, वीर, वीर, विहग, पक्षी, बिडाल, सिंह, सुधा, केकी, मृगेन्द्र, अमृतवीणा, सर्प, यक्ष, गरूड, पक्षीन्द्र, पन्नगासन, जोहलक, विराट, सुपर्ण, अहि इ०.
३	।।।ऽ	चाप, धनुष इ०.
४	ऽऽ।	हीर, हारु, हीरु, नभ इ०.
५	।।ऽ।	शेखर, केसरी, सेहर, सेहरु, इ०.
६	।ऽ।।	कुसुम, कनक इ०
७	ऽ।।।	अहिगण, ऐरावत इत्यादि. केटलाक कुसुमना नामथी पण आने ओळखावेछे.
८	।।।।।	पापगण, पवनु, पवणो, बान इ०.

डगण. आ गण ४ मात्रानो छे, तेनां सघळां मळीने ५ रुप थायछे, ते नीचे प्रमाणे छे.

डगण.

क्रमाङ्क	स्वरूप	नाम अने तेना पर्याय
१	ऽऽ	कर्ण, कर्णिका, गुरुयुग, सुरतलता, रसिक, रसलग्न, लंबित, सुमति, सुरतनय, मनहरण, कुंतिजाया, कुन्तयलु, कुंतिपुत्र, लहलहित, आभरण, तरणियंदो, कर अने भुज वाचक सघळां नाम इत्यादि. केटलाक आने प्रहरणना नामथी ओळखावेछे.
२	।।ऽ	करतल, करयल, केटलाक कविना मत प्रमाणे हाथ, पाणि, कमल, हस्त, भुजा, हथियार, शृंगार, भुजदंड, बाहु, गजाभरण, वाहक, वज्र, रत्न, प्रहरण, अशनि, प्रहर. पौन, शारदूल, इ०.
३	।ऽ।	अश्व, पयोधर, पयोहर, पउहर, पयोधी, मनुजपति, भूपति, गजपति, सेनाअंग, वसुधापति, पवन, रज्जु, गोपाल, जलद, नायक, वसुधाधिप, चक्रवर्त्ती, चक्रपति, चक्राधीश, कुच, नर, राजा, मुरारि इ०. केटलाक करपाणि अने कमलनुं नाम पण आपेछे. केटलाक अश्वपति, सरोज, उरोज, स्तन, नरिन्द्र, नरेन्द्र, सुनायक, उन्नायक, उद्धत नायक, तुरगपति, वर्ष, फणी, गणपति अने भूप इ वसुचरण, वसुपद, चलण, वसुचर, तात, पितामह.
४	ऽ।।	दहन, बळभद्र, गंड, जंघायुगल, रति, चरनयुग, नेपुर गंजक, पाय, पय, पद, पाद, चरणयुगल, राक्षस, शशि अने रैनपति इ०.
५	।।।।	द्विजवर, विप्र, ऋषि, परमउपाय, शिखर, जाति, उमाति नल, रथ पदाति, गज, तुरग, पचशर इ०

ढगण. आ गण त्रण मात्रानो थायछे. तेनां सघळां मळीने ३ रूप बनेछे. ते नीचे प्रमाणेछे.

ढगण.

क्रमाङ्क	स्वरूप	नाम अने तेना पर्याय
१	।ऽ	रसवास, ध्वज, तोमर, चिन्ह, चिर, चिरालय, तंबूर, तुंवरु, चूडा, माला, पत्र, दाम, वसु, वास, तुर, तुरग, मूर, चूतमाला, ताम्बूलपत्र, रास, पवनवलय, वासव, केउर, केयूर, वसन, इ०.
२	ऽ।	परहताल, सुरपति, सुर, आनंद, समुद्र, सिंधु, तुरजवान, तूर्य, तूर, करताल, निर्वाण, नंद, छंद, सरि, पौन, ग्वाल, पवन इ०.
३	।।।	वलय, ताडव, सात्विकभाव, नारी, तिल्लहु, रस, मुनि, अने नारी, भाव रस तथा तांडवनां बीजां पर्यायिक नामो छे.

——— 0 ———

णगण. आ गण बे मात्रानो थायछे तेनां सघळां मळीने २ रूप थायछे ते नीचे प्रमाणे छे.

णगण.

क्रमाङ्क	स्वरुप	नाम अने तेना पर्याय
१	ऽ	मंजीर, नूपुर, नेउर, चामर, चमर, हार, वलय, कंकण, ताटंकादिअलंकार अने तेना पर्याय, कनक, कुंडल, आवली, रसना, रसनाभरण, मुग्ध, अहि, फणी, मानस, केयूर, केउर, बंक, वक्र, वक्त्र, वकंड, मुक्ताफळ, किरण, लोचन,मणि शूल, करि-वर, मत्त, रत्न अने तेना पर्याय, मणिना पर्याय, अलंकारना पर्याय, दीहा, दीह, किंशुक, कंचका, दीर्घ, भ्रू, शुक, तुंडक इ०
२	।।	परम, णवर, अतिप्रिय, परमप्रिय, सुप्रिय, निजप्रिय, द्विलघु इ०

———.0.———

मगण, यगण, रगण, सगण, तगण, भगण, अने नगण ए आठ प्रकारना वर्णगण छे. तेमनां बीजां नाम नीचे प्रमाणे छे.

म गणादि गण विम्ब.

गण	अक्षर	स्वरुप	नाम अने तेना पर्याय
मगण	म	S S S	मंदार, मयंक, मकरंद, मदनावतार इ०.
यगण	य	I S S	यशोधर, जयमत, जयत, इ०.
रगण	र	S I S	राजित, रयगण, रमण, रयकर इ०.
सगण	स	I I S	सहित, सबल, शिवकर, इ०.
तगण	त	S S I	तीर्थेश, त्रिभुवनपति, तरुण इ०.
जगण	ज	I S I	जयकर, जगपति इ०.
भगण	भ	S I I	भुजपति, भावंत, भावत, भीम इ०.
नगण	न	I I I	नयन, नरेन्द्रपति इ०.

छंद शुद्ध बने अने ते करनार तथा जेने माटे ते करवामा आव्यो होय तेने ते सुख आपनार नीवडे एटलामाटे पूर्वाचार्यो-ए उपर जणावेला मगणादि अष्टगणना स्वामि, फळ, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, वर्ण, वस्त्र, रंग, भूषण, कुळ, माता, पिता अने लोक जुदां जुदां कल्प्यां छे, ते आ साथे आपेला पत्रक परथी स्पष्ट समजाशे एटले गणवार पृथक पृथक अत्र आपवा-मां आव्यां नथी.

गण देवतादि बिंब.

गणनाम	मगण	यगण	रगण	सगण	तगण	जगण	भगण	नगण
रूप	ऽऽऽ	।ऽऽ	ऽ।ऽ	।।ऽ	ऽऽ।	।ऽ।	ऽ।।	।।।
देवता	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	व्योम	रवि	चंद्र	नाग
फल	श्री	संपत्ति	मृत्यु	भ्रमण	अर्थनाश	शोक	मंगल	सुख
मास	वैशाख	कार्तिक	ज्येष्ट	पौष	आषाढ	चैत्र	श्रावण	मार्गशीर्ष
पक्ष	शुक्ल	शुक्ल	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	शुक्ल	शुक्ल
तिथि	३	११	२	४	१	१२	५	१२
वार	रवि	मंगल	मंगल	भृगु	बुध	गुरु	भृगु	बुध
नक्षत्र	मघा	ज्येष्ठा	चित्रा	शत तारका	स्वाती	उतरा आषाढा	मूल	अनुराधा
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	[illegible]	शूद्र	शूद्र	वैश्य	क्षत्रिय	ब्राह्मण
वस्त्र	श्वेत	श्वेत	लाल	हरित	नील	श्याम	पीत	सुवर्ण
रंग	श्वेत	श्याम	लाल	धूम्र	श्वेत	श्याम	पीत	कनक
भूषण	श्वेत	रूपुं	लाल	सुवर्ण	लाल	मणि	चूनी	सुवर्ण
कुल	द्विज	क्षत्रिय	काळ	वायु	शूद्र	वैश्य	वैश्य	[illegible]
माता	सरस्वति	सरस्वति	जरा	जरा	धीषणा	धीषणा	धीषणा	सावित्री
पिता	पिंगल	समुद्र	मृत्यु	मृत्यु	यम	यम	यम	ब्रह्मा
लोक	सत्य	पाताल	संयमनी	व्योम	स्वर्ग	मृत्यु	अमरावती	स्वर्ग

गणनाम	मगण	यगण	रगण	सगण	तगण	जगण	भगण	नगण
दिशा	पूर्व	ईशान	उत्तर	वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य	दक्षिण	अग्नि
वाहन	काचबो	मोर-मगर	मेंढो	तुरग	बळद	हरण	समळो	हाथी,उं
नेत्र	३	३	१	२	२	१	३	३
रस	शृंगार	करुण	रौद्र	वीर	शान्त	भया-नक	हास्य	नवरसम अभंग
देश	मगध	मेरुगिरि	उज्जैन	कलिजर	उज्जैन	सोरठ	कालिन्दीनी	मागध
ऋषि	कश्यप	आत्रेय	अगारक	गौतम	वशिष्ठ	कौशिक	अगीरा	भृगु
स्थान	शीर्ष	नेत्र	कंठ	उर	हृदय	पेट	नाभी	गुह्यस्थान
भोग	तान्दुल	मिठाइ	लूनी	जळ	दाडम	मसूर	हरडे	इच्छित
शस्त्र	चक्र	त्रिशूल	बाण	पर्वत	बाणपीछ	गुर्ज	फरसी	खड्ग
मित्रामित्र	मित्र	दास	शत्रु	शत्रु	उदासीन	उदासी	भृत्य	मित्र
शुभाशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

विशेष. कोइ छंदोग्रंथमां म य भ न गणना ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शूद्र ए क्रमे वर्ण कहेला छे, अने शुक्ल, पीत, स्फटिक

०- पृष्ठ ३६ ना कोठामा गणनी माता अने पिताना आसनमा ज्या ० शून्य मूक्यु छे त्या एम समजवानु छे के, जे गणनु ए आसन छे ते गणना मात पिताना नाम कोइ ग्रथमा अमारा जोवामा आव्या नथी तेम छता नाम छपाइ गया छे ते खरां नथी

अने श्याम ए क्रमे रंग होवानुं कहेलुं छे. मगणनुं वाहन केटलाक गयंद गणेछे अने फळ स्थिरता जणावेछे. मागधी पिंगलमां रगणनो स्वामी मेघ होवानुं जणाव्युं छे. भगणनुं कुळ केटलाक इन्द्र होवानुं कहेछे अने तेनुं वाहन वाघ होवानुं लखेछे. केटलाक तगणनुं कुळ पवन मानेछे. जगणनुं वाहन केटलाक बिलाडी मानेछे.

(दुहो.) मन भय सुख देनार छे, जर सत दुख देनार;
अशुभ, न आणे प्रथममां, मनुज कवन कथनार.

एटले मगण नगण भगण अने यगणनो प्रयोग सुख आपनार छे. जगण, रगण सगण, तगणनो प्रयोग दुःख आपनार थायछे. माटे मनुजनी--मनुष्यनी--कविता करवावाळा तेमनो उपयोग आरंभमां करे नहि--अर्थात् ईश्वरना गुणगान इत्यादिमां तेनो बाध नथी.

मगण अने नगण मित्र गण छे, भगण अने यगण दासगण छे. जगण अने तगण उदासीन गण छे; रगण अने सगण शत्रु गण छे.

मित्रगणनी पाछळ मित्रगण आवे तो सिद्धिदायक मनायछे; मित्रनी पाछळ दासगण आवे तो जय करावेछे, मित्रगणनी पाछळ उदासीन गण आवे तो हानी करावेछे; अने मित्रगणनी पाछळ जो शत्रुगण आवे तो ते मित्रनो नाश करावेछे.

दासगणनी पाछळ मित्रगण आवे तो सिद्धि आपे, दासगण आवे तो हानी करावे, उदासीन गण आवे तो पीडा करावे, अने शत्रुगण आवे तो पराजय करावे.

उदासीन गणनी पाछळ मित्रगण आवे तो रचनारने अथवा जेना आख्यानमां ते मूक्यो होय तेने ते अल्प फळ आपेछे.

दासगण आवे तो दुःख आपेछे, उदासीन गण आवे तो कर्युं कार्य अफल थायछे, अने शत्रुगण आवे तो दुःख देवरावेछे.

शत्रुगणनी पाछळ मित्रगण आवे तो शून्य फल मळे, दास गण आवे तो प्रियनो नाश थाय, उदासीन गण आवे तो शंका उत्पन्न करावे, अने शत्रुगण आवे तो नाश करावेछे.

म्लेच्छादि अन्त्यजवर्ण विषेनी कविताना आरंभमां रगण, सगण, तगण अने जगण लेवा; द्विजनी कवितामा नगण अने सगण सिवायना गण वापरवा; वैश्य विषेनी कवितामा भगण अने सगण वर्ज्य छे; अने स्त्री विषेनी कविताना प्रारंभमां यगण अने मगण वर्ज्य छे, एम केटलाक केहेछे.

दग्धाक्षरोनी पेठे आ दोष मात्र लौकिक छंदोने लागु पडेछे; वैदिक छंदमा ए आवकर्त्ता नथी गणातो. तेमज मंगळवाचकशब्द अथवा देववाचकशब्दमां पण ए गणनो प्रयोग बाधकारक नथी. वळी आरंभ गण शुभ फळदाता मूकवामा आव्यो होय तो तेना पछीना गणनुं मित्र अमित्रपणुं जोवातुं नथी. केटलाक आर्याना गणोनुं प्रथक फळ वर्णवेछे ते पूर्वे जणाव्या सदृश छे, एटले अमे ते अत्र जूदुं जणाव्युं नथी.

संख्या विषे.

छंदमां एकादि संख्या जणाववा माटे इष्ट संख्यातुल्य जेनो अर्थ थतो होय अथवा जेनी संख्या इष्ट संख्या तुल्य ज होय तेवा शब्दो, कविताना मापमां मळता आवे तेवा ते संख्या माटे मूकवा प्रथा छे, तेथी ते सूचवनार शब्दोनो संग्रह आ नीचे आपियें छियें तेथी स्पष्ट समजाशे.

०	१	२	३	४	५
आकाश	शशी	नयन	शिखी	श्रुति	बाण
नभ	चद्रमा	युग्म	दहन	मुक्ति	भूत
गगन	शशभृत्	नेत्र	अग्नि	मोक्ष	शर
ख	आत्मा	पाद	अनल	फल	इन्द्रिय
शून्य	भू	द्वि	हुताशन	चत्वार	यज्ञ
अभ्र	नाक	सर्पजीभ	वन्हि	चरण	असु (प्राण)
वियत्	पृथिवी	युगल	पावक	चतुर्	गव्य
पूर्ण	धरा	ज[illegible]त	[illegible]गुण	पुरुषार्थ	पच
मख	मही	दस्र	नाडी	तुर्य	अक्षु
	कु	अश्वि	[illegible]	उपाय	पांच
	धरणि	चक्षु	त्रि	युग	सधि
	एक	द्वि-ज[illegible]	दोष	आश्रम	इषु
	गजमुख-दत	अश्विनौ	विक्रम	ब्रह्ममुख	प्राण
	[illegible]रथचक्र	यमल	लोक	विधिवदन	वर्म
	[illegible]	पक्ष	हरनयन	समुद्र	पाडव
	ध्रुव	कर	भुवन	वेद	हरवदन
		हस्त	गगाधर	वारिनिधि	तत्व
		भुज	गगापथ	अब्धि	पाप
		अयन	सध्या	व्यूह	क्लेश
		नदीतीर	राम	कृत	पचामृत
		ओष्ठ	ताप	सेनांग	नियम
		जानु	अर्चिस्	हरिभुज	कन्या
			शूल	वाणी	शास्त्र
			ग्राम	गोस्तन	कोष
			तिश्र	वर्ण	अनिल
			त्रय	याम	अग
			गुण, गायत्री	पशुपद	कल्पवृक्ष
			अग्निचरण	मचपद	महायज्ञ
			शक्ति		पल्लव

शून्यना कोठामां जणावेला शब्द अने बीजा तेवाज शून्य अर्थ सूचवता शब्दो शून्य दर्शाववा माटे मूकवामां आवेछे; तेमज एक १ दर्शाववा माटे शशी आदि शब्दो अने तेमना पर्याय वपरायछे. शशी शब्दना पर्याय नीचे प्रमाणे छे –

कवित.

अब्धि नवनीतक ए, अब्ज अमृतदीधिति,
अमृतसुत ने आप अमृताधार गणो;
अमृतसू इन्दु अने ओषधीश, उडुप छे,
उडुपति उडुराट एने, ऋक्षेश भणो;
कलानिधि कलापति कलाविनी, कलापूर्ण,
कलाभृत् कलावान्, कुमुदपति कहो;
कुमुदप्रियने कहो, कुमुदबांधव–बंधु,
कुमुदिनीपति एने, कुमुदेश तो लहो. १
कैरवी कौमुदीपति, ग्लौ चंद्र चद्रमा चांद,
छायानिधि, छायाभृत, छायामृगधर छे,
जैवातृक तमोघ्न ने, तमोनुद तमोपह,
तिमिररिपु अरिनुं नाम तमोहर छे;
ताराधिपति ने नाथ, तारापीड तिथिप्रणी,
तुहिनांशु दशवाजी, दाक्षायिणीपति छे,
द्विजपति, द्विजराज, नक्षत्रपति ने नाथ,
नक्षत्रप निशाकेतु, निशामणि वर्नी छे. २
निशीथिनी नाथ ए तो, पर्वधि पियूषनिधि,

કવિયો, પીયૂષ રુચિ પીયૂષ મહા ભણે;
પ્રાલેયાંશુ ભપાતા ને ભપતિ, મૃગાંક માસ્,
મૃગધર મૃગવિ પ્લુ, મૃગલાંછન ગણે;
રજનીપતિ ને નાથ, રાત્રિનાથ રાત્રિમણિ,
રાજરાજ રોહિણીશ, રોહિણીપતિ કહો;
લક્ષ્મીસહજ એ વિધુ, શશધર શશભૃત,
શર્વરીકાન્ત શશાંક, શશલાંછન લહો. ૩
શશબિન્દુ, શશી થાય, શિવશેખર શીતગુ,
શીતાંશુ શીતમયુખ, શીતમરિચી કહો;
શીતભાનુ, શીતરુક્ શ્રીસહોદર, શુભ્રાંશુ,
શુચિરોચી શ્વેતધામા, શ્વેતવાહન લહો;
શ્વેતરોચી શ્વેતવાજી, સિત દીધિતિ સિતાંશુ,
સિતરશ્મિ સુધાકર, સુધાધાર ગાયછે;
સુધાભૃતિ સુધાનિધિ, સુધાસૂતિ ને સુધાંગ,
સુધાંશુ ને સોમ હરિ, હરિણાંક થાયછે. ૪
હરિણ કલંક એને હર ચૂડામણી વદે,
હરશેખરનું નામ, હિમકર છે હવે;
હિમદ્યુતિ હિમરશ્મિ, હિમઅશ એક લેખી,
ક્ષમાકર ક્ષમાનાથ, યામિનીપતિ કવે;
શશીનાં આ નામ વધાં, એક સંખ્યા સૂચક છે,
તેમ પૃથ્વીનાં નામ એકમાં ગણાયછે;
માટે જ્યાં પ્રયોગ જેવો યોજવાનો હોય તેવો;
કવિ ઇચ્છા અનુસાર એકમાં યોજાયછે. ૫

६	७	८	९	१०	११	१२
षट्	मुनि	वसु	भक्ति	दश	रुद्र	रवि
शास्त्र	अग	आठ	नव	पंक्ति	शिव	द्वादश
गुहक	हय	इभ	खंड	दिसि	अगियार	बार
खट	वार	अष्ट	निधि	दिशा	हर	भानु
इति	सात	गज	ग्रह	आशा	भव	सूर्य
छ	द्वीप	दिग्गज	नंद	दिग्	शर्व	आदित्य
मार्खानापग	सरोवर	नाग	अंक	दाष	पशुपति	भग
षट्	सर	चागाग	संख्या	अवतार	स्थाणु	इन
रस	नग	सर्प	द्वार	रावणशिर	करण	खरांशु
ऋतु	अश्व	तनु	काणु	स्नान	कुरुसेना	चुवन
जख	लोक	अहि	व्याघ्रस्तन	कामदशा		साध्य-
दर्शन	तुरग	सुख	ऋचा	धूप		(देवगण)
चक्र	घोटक	सिद्धि	सुधाकुंड	रूपक		तरणि
रिपु	ऋषि	योग	नाथ			क
राग	पर्वत	हस्ति	रत्न			मास
अरि	ताल	द्विरद	धान्य			राशि
तर्क	पाताल	याम	अर्बुद			ऋक्ष
अंग	धातु	प्रहर				गृह
वेदांग	उपविष	करि				भवन
कृत्तिकातारा	चिरंजि	सात्विक-				संक्रान्ति
आततायी	मातृ	भाव				गुहबाहु
भ्रमरपद	राज्यांग	धरावर				भूपमंडळ
द्विजकर्म	तांडव	दिक्पाल				
छप्पयपद	नदी	शिवमूर्ति				
अयनमास	अग्निजि-	सिरात				
धातु	ह्वा	गंध				
गुहानन		मद				
		ब्रह्मकर्ण				

१३	१४	१५	१६	१७	१८
विश्व जगत् त्रयोदश तेर रामचद्र मलमास यक्ष जख	चौद रत्न मनु विद्या मह (७+७) इन्द्र चोकडी अभिनय	पदर तिथि घस्र पंचदश	सोळ षोडश नृप भूप कळा सस्कार	सत्तर अत्यष्टि	अष्टादश वनस्पति पुराण धृति भारतपर्व अढार उपद्विप
१९	**२०**	**२१**	**२२**	**२४**	**२५**
ओगणिश अतिधृति नवदश अकनंद ब्रहाब्ज विराट्मुख देववाद	नख अंगुल कोडी वसा वीस रावणभुज	एकवीश मूर्च्छना अनुस्मृति समित्	बावीश उपसर्ग	सिद्ध जिन तीर्थकर चोवीश अवतार	पासो तत्व पचीस पचविंश
२७	**३२**	**४९**	**१००**	**१०००**	**१००००**
भ नक्षत्र उडु ऋक्ष सत्तावीश	रद दन्त दात द्विज बत्रीश	वायु ओगणपचास	शत सो नरायुष कमलदल इन्द्रयज्ञ	दशशत सहस्र हजार गंगामुख शेषशीर्ष अर्जुनहस्त वेदशाखा इन्द्रनेत्र	लक्ष लाख

चरण अथवा पाद.

सामान्य रीते छंदना चोथा भागने पाद अथवा चरण केहेछे. लौकिक छंदना सामान्य रीते चार पाद अथवा चरण करवामां आवेछे. वैदिक छंदोमां ए नियम जेम जळवातो नथी तेम विषम जातिमां पण ते जळवातो नथी. तेवां वृत्तमां तेना चारथी वधारे के ओछा पाद अथवा चरण थइ शकेछे.

जेटली मात्रा अथवा जेटला वर्णनुं एक चरण बनाववानुं केहेवामां आव्युं होय ते तेनुं माप गणायछे.

विश्राम.

यति, विरति, विराम, अवराति, उपरति, विच्छेद, श्वसन, श्वाशी, भेद, भिदा, आश्वाथी, छेद आदि विश्रामना पर्याय छे. कविता कथतां विश्राम लेवो पडे ते क्यां आगळ लेवो तेनो निर्णय केटलांक वृत्तमां करेलो छे; वाकी तेनो घणो खरो आधार ते वृत्त बोलवानी ढब अने तेना राग उपर रेहेछे.

घणुं करीने पदने छेडे विश्राम आवेछे; अथवा तो मध्यमां आवेछे. पाद पूर्णार्थे ज अथवा एवो ज कोइ बीजो अक्षर आवे तो तेनो जे साथे संबंध होय तेनी साथे अंगभूत गणतां विश्राममां छूटो पाडी शकाय नहि.

यति आवतां शब्दना अक्षरो छूटा पडी जाय तो ते **यतिभंग** केहेवायछे.

शब्दनी विभक्ति छूटी पाडवामां पण यतिभंग थायछे.

छंदःशास्त्रमां कह्युंछे के—मध्यमां यति होय तेमां शब्दनो एक अक्षर आवी जाय तो यतिभंग केहेवाय, पण वधारे अक्षर आवे तो यतिभंग थाय नहि. जेम के —"कोलाहल"

एमां "कोला" आगळ यति आवतो होय तो यतिभंग नहि. "संवाहन" शब्दमां "संवा" आगळ यति आवे तो शब्दभंग थायछे, पण ए यतिभंग गणातो नथी. "उच्चारित" एमां उच्चा, रित एम यति पडी शके. "आल्हादक" एमां आल्हा, दक थायछे.

अनुप्रास अथवा यमक.

छंदना चरणना अन्त्याक्षरोने नियममां मूकी छंदने सुशोभित बनाववानी प्रथा जेवी प्राकृत भाषाछंदो माटे छे तेवी संस्कृत छंद माटे पूर्वाचार्योए आवश्यक गणी नथी. ए प्रथाने भाषाशास्त्रियो अनुप्रासना नामथी ओळखेछे; ने केहेछे के ए विना छंदोरचना नीरस थइ जायछे.

अर्थालंकारना १०८ भेद केटलाक साहित्यशास्त्रकारो माने छे, तेमांना **शब्दालंकारनो** एक भेद आ **अनुप्रासालंकार** छे. छदोलालित्यमां वधारो करवा माटे वर्णसाम्य लाववामां आवेछे; तेनुं नाम **अनुप्रास**. तेना मुख्य भेद ५ छे. १ **वृत्त्यनुप्रास**, २ **छेकानुप्रास**, ३ **लाटानुप्रास**, ४ **अन्त्यानुप्रास**, ५ **श्रुत्यनुप्रास**. केटलाक आ उपरांत **यमक** नामनो छट्टो भेद छे एम केहेछे; अने केटलाक आ सर्व भेदने सामान्य रीते **यमक** एवुं नाम आपेछे.

एकना एक वर्णनी जेमां अनुवृत्ति थती होय, अर्थात् जे छंदमां एकनो एक वर्ण घणी वार आवतो होय त्यां **वृत्त्यनुप्रास** थयेलो समजवो.

"मया करो दया निधि, जया गया जती वदे."

आमां **य** अक्षरनो एक करतां वधारे वार प्रयोग थयो छे माटे आ **वृत्त्यनुप्रास**[1] जाणवो.

---

[1] आने केटलाक गूर्जर कवियो "झड" एवुं नाम आपेछे

जे छंदमां एक करता वधारे वर्णनी आवृत्ति थएली होय त्या **छेकानुप्रास**[1] थएल जाणवो.

अमारी तमारी कुमारी तुकारी;
विचारी सुचारी विचारी न मारी.

आमां म र अने च अक्षरोनी एक करता वधारे वार आवृत्ति थएल छे माटे आने **छेकानुप्रास** जाणवो.

जे छंदमां आखा पदनी आवृत्ति थाय अने तेमनो शब्दार्थ जूदो जूदो एटले भिन्न होय ते **लाटानुप्रास** केहेवायछे.

"पतिपास जेने, नहि घाम चांदनी थाय;
पतिपास जेने नहि, घाम चांदनी थाय."

छंदना प्रत्येक चरणना अन्त्याक्षरो अमुक प्रकारना लावी अमुक स्थितिमां गोठववा एनुं नाम **अन्त्यानुप्रास** केहेवायछे. भाषा शास्त्रियो आने **तुकान्तना** नामथी ओळखेछे अने तेनी पद परत्वे जूदी जूदी स्थिति थायछे ते परथी तेना छ भेद पाडेछे.

१ **सर्वान्त्यतुकान्त.** २ **समान्त्य विषमान्त्यतुकान्त.**
३ **समान्त्यतुकान्त.** ४ **विषमान्त्यतुकान्त.**
५ **समविषमान्त्यतुकान्त.** ६ **भिन्नतुकान्त.**

जे छंदना चारे चरणना **तुकान्त** एटले अन्त्याक्षरो एक ज होय ते **सर्वान्त्यतुकान्त** केहेवायछे.

जेमके—पाच पर ल लखाय, जगण ते पर थाय,
चरण कल दशमांय, रतिकरी रचु त्यांय.

आमां दरेक चरणना अन्त्यमां य छे माटे ते **सर्वान्त्यतुकान्त.**

जे छंदना सम चरणान्त अक्षर समान होय तेमज विषम

[1] आने केटलाक गूर्जर कवियो "वर्णसगाई" केहेछे.

चरणान्त्य अक्षर समान होय ते समान्त्यविषमान्त्यतुकान्त केहवायछे.

जेमकेः—मा पड़ मुज आधार, चोसलां कोण चडावशे;
मूवा चड़ावण हार, जीवतां जातर आवशे.
(रासमाळा)

आमां बीजा अने चोथा चरणान्त्य अक्षर शे समान छे अने पेहेला तथा त्रीजा चरणान्त्य अक्षर र समान छे माटे समान्त्यविषमान्त्य तुकान्त.

जेना सम चरणना तुकान्त मळता होय अने विषम चरणना तुकान्त न मळता होय ते समान्त्य केहेवायछे.

जेमकेः—दश मात्रिका देख, वरणो मुनि भाळ;
जाति ज रुडा जाण, त्रण आठ छे ताल.

आमां बीजा तथा चोथा चरणना तुकान्त ळ ल समान माटे ए समान्त्य तुकान्त.

जे छंदना विषम चरणना तुकान्त एक सरखा होय अने सम चरणना तुकान्त असमान होय ते विषमान्त्यतुकान्त केहेवायछे.

जेमकेः—वाळु पाटण देश, जिसें पटोळां नीपजे,
सरखो सोरठ देश, लाखेणो मळे लोबडो.
(रासमाळा)

आमां पेहेला तथा त्रीजा चरणना तुकान्त श समान छे अने बीजा तथा चोथा चरणना तुकान्त असमान छे. माटे ए विषमान्त्य तुकान्त.

जे छंदना पेहेला चरणना तुकान्त बीजा चरणना तुकान्त सदृश अने त्रीजा चरणना तुकान्त चोथा चरणना तुकान्त सदृश होय ते समविषमान्त्य तुकान्त केहवायछे.

(मालिनी)

जेमके—मधुर वचनथी तो, भोळवाया जनो जे,
जन वश थयुं मिथ्या उपचारेथी को'जे;
मतलबी विशवासु, आश हैये भरेलां,
झटपट ठगी लेवा, ए खरेखात से'लां.

(गू० हितोपदेश)

आमा पेहेला तथा बीजा चरणना तुकान्त "जे" अने त्रीजा अने चोथा चरणना "लां" सरखा छे माटे ए **समविषमान्त्य.**

जेना कोइ पण चरणना तुकान्त एक बीजाने मळता न-आवता होय ते **भिन्नतुकान्त्य** केहेवायछे.

जेमके—शशि जता, प्रिय रम्य विभावरी,
थइ रखे जती अंध वियोगथी,
दिनरुपे सुभगा बनी रहे, ग्रही
कर प्रभाकरना मन मानीता.

(सरस्वतीचंद्र)

आमां चारे चरणना तुकान्त री, थी, ही, अने ता ए असमान छे माटे **भिन्नतुकान्त्य.**

आवा तुकान्तवाळी कविताने अंग्रजीमां "ब्लाङ्कवर्स" केहेछे. केटलाक आ भिन्नतुकान्त्यना नीचे जणावला त्रण भेद पाडेछे. **१ प्रतिपद भिन्नान्त्य २ पूर्वार्द्ध तुकान्त्य ३ उत्तरार्द्ध तुकान्त्य.**

जेना सघळा चरणोना तुकान्त एक सरखा न होय तेने **प्रतिपद भिन्नान्त्य** केहेछे.

जेमके:—आ एकपास उतरे शशो अस्त मार्गे
आ उगता रवितणा ज कुसुंबी पाद!

संसार आ अहि दशा–युग–अन्तराळे
बे तेजना उदय–अस्तथी बांधी राख्यो
(सरस्वतीचद्र)

जेना पूर्वार्द्धना चरणोना तुकान्त समान होय तेने पूर्वार्द्धतुकान्त केहेछे. जेमके:— वि० नाटक.

(अनुष्टुप) सिचतो माधवीने ने,
नचावे कुंदवेलीने;
स्नेह दाक्षिण्यथी,
कामी सरखो मने ए.

जेना उत्तरार्द्धना चरणोना तुकान्त समान होय तेने उत्तरार्द्धतुकान्त केहेछे. जेमके:—

(आभीर) बुद्धिकेरी वात, साक्षात जो लखाय;
बुद्धिवाळा जेह, करे प्रमाण ज तेह.
(पादशाही राजनीति)

आपणा प्राचीन गूर्जर, तेमज हिंदी कविवरोए भिन्नतुकान्त वाळा छंदो रचवा तरफ पोतानुं वलण राख्यु होय एम जणातु नथी; पण हालना केटलाक गूर्जर कवियो एनो उपयोग करवा लाग्या छे.

संस्कृत ग्रंथोमां षट्पदी अथवा अष्टपदीमां बब्बे पदना अन्त्याक्षरो समान लाववामां आव्या छे.

रागरागणीमां गाइ शकाय एवा छंदोनी रचनामां आ तुकान्तपर विशेष लक्ष देवानी अगत्य छे. तेमां पदान्त अथवा तुकान्त मळवा ज जोइए एटलुंज नहि परंतु स्वर पण एकना एकज मळवा जोइये. तेमां पण पदान्तनी पांच मात्राना स्वर जो मळता आवे तो ते उत्तम केहेवायछे.

संतोषी राजा नक्कि थाय नष्ट,
संतोषहीनो द्विज थाय नष्ट;
सलज्ज वेश्या पण थाय नष्ट,
कुलांगना निर्लज थाय नष्ट.

(गू० हितोपदेश)

जेना अन्तमां बे गुरु आवी पड्या होय त्या तुकान्तनी पांच मात्रा एक सरखी मळे तो उत्तम, चार मळे तो मध्यम, अने तेथी ओछी मळती आवे तो ते कनिष्ट गणायछे. जेमके:—

गीति—दूत मुख नृप छे माटे, दूत यवन पण न योग्य हणवाने;
शस्त्र उगामे तोपण, दूत प्रवर्त्ते न अन्य वदवाने.

(गूजराती हितोपदेश)

जेना पदना अन्तमां (।S, S।) आवा त्रण मात्राना वर्ण आवता होय तेवा पदना तुकान्तमां जो पांच मात्रा मळे तो उत्तम, त्रण मात्रा मळती आवे तो मध्यम, अने त्रणथी ओछी मळती आवे तो ते कनिष्ट केहेवायछे. जेमके ।S दृष्टान्त —

वण विखराये लडवु, जाळवणी बहु परस्पर करवी;
जे कइ निर्बळ सेना, व्यूहतणा मध्यमांय ते धरवी.

(सवैयो)

नियमित विषये दंडबळिकथी वर्णुकरी चाले सौ कोय,
परवश आ जग केरीमांहे साधु पुरष विरला को होय,
विकळ दुर्बळा व्याधिवाळा निर्धन एवा पतिनी पाम,
कुळनारी पण दडबळिकथी शरणे रहीने करे निवास.

(गूजराती हितोपदेश)

जेना पदान्तमां बे लघु आवता होय तेवा पदना तुकान्तमां चार मात्रा मळे तो ते उत्तम, बे मळे तो मध्यम अने तेथी ओछी मळती आवे तो ते कनिष्ट केहेवायछे. जेमके:—

इ.

उ.

ख.

घ.

च.

छ

ज.

द.

न

प.

फ.

भ.

म.

य.



श

—:०:—

रणपिंगल.

मात्रामेळजाति.

समजाति.

एकथी ते चार मात्रा सुधीनी जाति उपयोगमां आवे एम न होवाथी एवी रचना कोइ करतुं नथी.

याज्ञिक आदि छडना सामान्य नाम छंद प्रभाकर उपरथी लीधा छे

याज्ञिक. ५ मात्रानी ८ वृत्ति थायछे.

१ गमक. अंते लघु. त्रीजी मात्राए ताल.

कल ध्याण,		५†
पद आण;		५
रव अन्त,		५
धर सन्त.	१.	५
त्रय ताळ,		५
संभाळ;		४.
ते गमक,		७
कळ समक.	२.	८

पिंगलादर्श तथा गणप्रस्तारप्रकाशमा पाच लघुज आणवा कह्युं छे, पण तेम थवाथी वर्णवृत्त थइ जाय, माटे बीजाओए ते मत पाळ्युं नथी. जुवो पृ २३२ अंक ६२.

* मात्रामेळ जातिमा ज्या ताल आवेछे, ते अक्षरो पण जाडा मूक्या छे.

† प्रत्येक जातिना प्रत्येक चरणनी जोडे जे आकडा मूकेला छे, ते तेटली मात्राना एकदर जेटला रूप (वृत्ति) थायछे, ते माहेलुं तेटलामु रूप छे एम समजवुं. लघु.

रागी. ६ मात्रानी १३ वृत्ति थायछे

२ वाम. त्रीजी अने छठ्ठी मात्रा लघु आणवी. १,४ मात्राए ताल.

छ कल नाम, ८
जाति वाम; ७
त्रण छ हारों, ९ गुरू
कदि न धार. ३. ८

एक उपर, १२
४
ने श्रुति पर; . १२
२
नयन ताल, ९ वे ताल आवे.
चरण घाल. ४. ८

गुणप्रस्तारप्रकाशमा त्रण गुरु लाववा केहेछे पण ते जुयो वर्णछंदमां अ.

लौकिक. ७ मात्रानी २१ वृत्ति थायछे.

३ कान्ता, कन्ता. अन्ते ग ल. १, ५ मात्राए ताल

७
मुनि कल जांह, १३
कान्ता मांह; ९
गल धर अन्त, १३
तुं धीमन्त. ५. ९

एके ताल, ९
पांचे भाळ; ६
वे धर एम, १२
फावे जेम. ६. ९

४ वसुमति. १,५ मात्राए ताल.

वसुमति जात, १३
कुल कल सात; १३
प्रथमे शरे, ५
ताल तुँ करे. ७. ७

५ चटुल. ४+३.=७. १,५ मात्राए ताल.

कल श्रुति करो, ८
त्रण पछीं धरो, ८
चटुले घाल, १०
शशि शर ताल.८. १३

६ सुगति,सुगत, शुभगति. ४,३ मात्राए यति १,५ मात्राए ताल.

मुनि कल, गणो, ८
सुगति, भणो; ५
श्रुति यति, धरो, ८
चरमे ग, करो.९. ८ अन्ते.

वासव. ८ मात्रानी ३४ वृत्ति थायछे.

७ मधुभार, छवी, वसुकला. २+३ (न के ग ल)+ग ल=८
३,६ मात्राए ताल.

कल आठ मांह, १८
वे प्रथम ज्यांह; २०
पछीं त्रिकल धार, २१
ग ल उपर सार.१०. २१

रागी. ६ मात्रानी १३ वृत्ति थायछे.

२ वाम. त्रीजी अने छठ्ठी मात्रा लघु आणवी. १,४ मात्राए ताल.

छ कल नाम,	९
जाति वाम;	७
त्रण छ हारों,	९ गुरु
कदि न धार. ३.	८
एक उपर,	१२
ने श्रुति[४] पर;	१२
नयन[२] ताल,	९ बे ताल आवे
चरण घाल. ४.	८

गणप्रस्तारप्रकाशमां त्रण गुरु लाववा कहेछे पण ते जुयो वर्णछंदमां अ.

लौकिक. ७ मात्रानी २१ वृत्ति थायछे.

३ कान्ता, कन्ता. अन्ते ग ल. १, ५ मात्राए ताल.

मुनि[७] कल जांह,	१३
कान्ता मांह;	९
गल धर अन्त,	१३
तुं धीमन्त. ५.	९
एके ताल,	९
पांचे भाळ;	९
बे धर एम,	१२
फावे जेम. ६.	९

४ वसुमति. १,५ मात्राए ताल.

वसुमति जात,	१२
कुल कल सात;	१२
प्रथमे शर[५],	५
ताल तुं करे. ७.	७

५ चटुल. ४+३.=७. १,५ मात्राए ताल.

कल श्रुति[४] करो,	८
त्रण पछी धरो;	८
चटुले घाल;	१०
शशि[१] शर[५] ताल. ८.	१२

६ सुगति, सुगत, शुभगति. ४,३ मात्राए यति. १,५ मात्राए ताल.

मुनि[७] कल, गणो,	८
सुगति, भणो;	५
श्रुति[४] यति, धरो,	८
चरम† ग, करो. ९.	८ †अन्ते.

वासव. ८ मात्रानी ३४ वृत्ति थायछे.

७ मधुभार, छवी, वसुकला. २+३ (न के ग ल)+ग ल=८
३,६ मात्राए ताल.

कल आठ मांह,	१८
वे प्रथम ज्यांह;	२०
पछी त्रिकल धार,	२१
ग ल उपर सार. १०.	२१

त्रण छ पर ताल, २१
छवीं मांह घाल; १८
मधुभार एम; १८
रच आणी प्रेम. ११. १८

वसुकलज आम, २१
रच आणी हाम; १८
कर ईश गान, १८
मळशे ज मान. १२. १८

वाणीभूषणमां सगण+जगण=८ मात्रा आणवा कह्यु छे, पण तेम थवाथी तो वर्णवृत्त थइ जाय, माटे तेनो हेतु एक चोकलीओ+जगण आणवानो जणायछे, एम प्राकृतपिंगळसूत्रनी टीकामां लख्यु छे वळी प्रा. पिं. सूत्र, छं दशाब्ध, भगवतपिंगळ, इत्यादिमां तो मात्र आठ मात्रांज आणवा कह्यु छे. छंद.शृंगारमां ५ मात्रा+ग+ल आणवा कह्यु छे, वळी मधुभारनाज मापनी वाग्वल्लभे वसुकला जाति कही छे, अने चिंतामणि तथा भाषाछंदोमंजरी वाळाए एनेज छवी जाति कही छे.

छंदोवृत्तमुक्तावलीमां एम कह्यु छे केः—

"मुख जगण सार, वसुकलमुदार;
मधुभार वृत्त, मानय सुवृत्त"

आंक. ९ मात्रानी ५५ वृति थायछे.

८ चरण. (ट)६+(ढ) ३. एमां अन्ते सगण. १,७ मात्राए ताल

छ उपर त्रण विषे, २१
अंत सगण दीसे; २०
नव कळ पद धरो, २१
चरण जाति करो. १३. १६

ताल प्रथमें परे, २०
सात उपर करे; २०
एम ताल धरे, १९
चरण उपर खरे. १४. २१

९ गंग. मात्रा ९ अते बे गुरु. १, ६ मात्राए ताल.

नव मत्त आणो, ९
ते गंग जाणो; ४
गुरु बेज छेला, ९
कविए कहेला. १९ १९

आ छंद प्रभाकरमा नवी जाति कल्पी छे.

दैशिक. १० मात्रानी ८९ वृत्ति छे.

१० दीपक, दीप. ४+२+ज=१०. ३, ८ मात्राए ताल.

कल चार पर बेज* ९२
लघु धार पद तेज, ९२
पछी जगण धर छेह, ९९
दश कल दीपक एह. १६. ९९
३
गुण उपर धर ताल, ९९
८
वसु उपर वळी भाळ; ९९
ए दीप पण लाल! ९१
रट प्रभुगुण तुं बाल! १७. ९९

* "बेज—लघु" एम बीजा पदसाथे अन्वय करवो

छंद.शृंगार, भगवतपिंगळ अने पिंगळादर्शमा आ जातिनी नव मात्रा केहेछे ते भूल छे., नागराजपिंगळमां स, न, ग, ल एवु माप छे, पण ते वर्णमेळ थइ जायछे. जुवो पृ. २५९ अंक ३२८ . लखपत-

त्रण छ पर ताल, २१
छव्वी मांह घाल; १८
मधुभार एम; १८
रच आणी प्रेम. ११. १८

वसुकलज आम, २१
रच आणी हाम; १८
कर ईश गान, १८
मळशे ज मान. १२. १८

वाणीभूषणमां सगण+जगण=८ मात्रा आणवा कह्यु छे, पण तेम थवाथी तो वर्णवृत्त थइ जाय, माटे तेनो हेतु एक चोकलीओ+जगण आणवानो जणायछे, एम प्राकृतपिंगळसूत्रनी टीकामां लख्यु छे वळी प्रा. पि सूत्र, छंदशास्त्र, भगवतपिंगळ, इत्यादिमा तो मात्र आठ मात्राज आणवा कह्युं छे. छंद.शृंगारमां ५ मात्रा+ग+ल आणवा कह्यु छे, वळी मधुभारनाज मापनी वाग्वल्लभे वसुकला जाति कही छे; अने चिंतामणि तथा भाषाछंदोमंजरी वाळाए एनेज छवी जाति कही छे.

छंदोवृत्तमुक्तावलीमा एम कह्यु छे के:—

"मुख जगण सार, वसुकलसुदार;
मधुभार वृत्त, मानय सुवृत्त."

आंक. ९ मात्रानी ५५ वृति थायछे.

८ चरण. (ट)६+(ढ) ३. एमां अन्ते सगण. १,७ मात्राए त

छ उपर त्रण विषे, २१
अंत सगण दीसे; २०
नव कल पद धरो, २१
चरण जाति करो. १३. १६

ताल प्रथमें परे, २०
सात उपर करे; २०
एम ताल धरे, १९
चरण उपर खरे. १४. २१

९ गंग. मात्रा ९ अंते वे गुरु. १, ६ मात्राए ताल.

नव मत्त आणो, ९
ते गंग जाणो; ४
गुरु बेज छेला, ९
कविए कहेला. १९ १९

आ छंद प्रभाकरमां नवी जाति कल्पी छे

दैशिक. १० मात्रानी ८९ वृत्ति छे.

१० दीपक, दीप. ४+२+ज=१०. २, ८ मात्राए ता.

कल चार पर बेज * ९२
लघु धार पद तेज; ९२
पछी जगण धर छेह, ९९
दश कल दीपक एह. १६. ९९
३
गुण उपर धर ताल, ९९
८
वसु उपर वळी भाळ; ९९
ए दीप पण लाल! ९१
रट प्रभुगुण तुं बाल!. १७. ९९

* "बेज—लघु" एम बीजा पदसाथे अन्वय करवो

छंदशृंगार, भगवतपिंगळ अने पिंगळादर्शमां आ जातिनी नव मात्रा केहेछे ते भूल छे. नागराजपिंगळमां स, न, ग, ल. एवु माप छे, पण ते वर्णमेळ थइ जायछे. जुवो पृ २५९ अंक. ३३८. लखपत-

जशसिंधु, छंद.शास्त्र, वृत्तमौक्तिक अने वाणीभूषणमां ४+ल+ल+ज, एवु माप छे. भाषाछंदोमंजरीमां छेल्लो लघु लाववा केहेछे. वाग्वल्लभमा ४, ६ ए यति कही छे.

छंद प्रभाकरमा आ जातिनु नाम "दीप" लख्यु छे, अने तेमां प्रथम एक चोकलिया पछी अंतमां (। । । S ।) एवी छ मात्रा लाववा कह्युं छे.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां आनु माप आ प्रमाणे छे — गुरु अंतवाळो एक चोकलियो+गुरु अंतवाळो एक पचकलगण+1 लघु=1० मात्रा.

११ रुडा. मात्रा १० तेना अक्षर ७.३,८ मात्राए ताल.

दशमात्रिका देख, ३९
वरणो मुनि पेख; ३९
जातिज रुडा भाळ, ४१
त्रण आठ छे ताल. १८. ३९

१२ रतिकरी. (५+१+ज)=१० मात्रा. १,६ मात्राए ताल.

पांच पर ल रखाय, ५४
जगण ते पर थाय; ५०
चरण कल दश मांय, ५५
रतिकरी रचुँ त्यांय. १९. ५०
ताल प्रथम गणाय, ५४
छ उपर अवर थाय; ५५
एम ठीक रखाय, ४९
बे सरस पदमांय. २०. ५४

रौद्र. ११ मात्रानी १४४ वृत्ति थायछे.

१३ आभीर,आहीर. (७+ज)११ मात्रा. १,५,९ मात्राए ?

कुल कल कर अगियार, ८९
१अंते जगण चरमां निरधार; ८९

आभीर आहीर नाम, ८०
जाति रच शुभ आम. २१. ८१
छे शशि शर पर ताल, ८८
वळी नव पर ठीक भाळ; ८९
ए रीतनी शुभ चाल, ८१
आभीरमां रच ताल. २२. ८०

एमां अंते गुरु लघु लाववा कवि दलपतराम केहेछे, छंद.शास्त्र, श्रीधर-पिंगल, गौड पिंगल, लखपन जशसिंधु, छंद प्रभाकर अने चारणीभूषणमां अंते जगण लाववा कह्युं छे जे पेहेली सात मात्रा छे, त्यां ड ढ गण होय तो ठीक. बीजा प्राकृत पिंगल लखनाराओए पण ४ मात्राए यति पाळी छे छंदोवृत्तमुक्तावलीमां यति कही नथी, तेम अंते जगण लाववा पण नियम बांध्यो नथी, पण तेना उदाहरणमां जगण आवेछे.

१४ रसीक. ४+७=११. तेमां अंते त्रणलघु.-१,५,९, मात्राए ताल.

शिव कल रसिके गमतो, ११२
छे श्रुति, हय पर विरति; १४२
चरमे कवि! लघु त्रि धर, १४१
ताल भू शर नव उपर. २३. १४२

आदित्य. १२ मात्रानी २३३ वृत्ति थायछे.

१५ अचला. ६+६ तेमां छेल्ला बे लघु. १,५,९ मात्राए ताल.

छकल उपर, कर पट कल, २३३
अचला रच, तुं निर्मल; १९४
रवि कलमां, लल सिम धर, २२९
तालो शशि, शर नव पर. २४. २३४

१६ तुरग. चच्चारे यति, यतिमां जगण आणवो नहि.

४+४+४=१२. १,५,९ मात्राए ताल.

चोकल, त्रण यति, धरजो, ८८
रवि कल, पदमां, करजो; ६८
प्रति यति, तालजे, आवे; २६
तुरगे, जगण न, लावे. २५. ३१

१७ तोमर. मात्रा १२ तेमां अंते गुरु लघु. ३,६,१० मात्राए ताल

मात्रा बधी छे बार, ९३
तुं जाति तोमर धार; १२७
अंते धरी ग ल भाळ, १२७
त्रण षट दिशाए ताल. २६. ९७

अक्षरमेळ प्रकरणमां तोमर वृत्त छे, पण छंदप्रभाकर, तुलसीकृत रामायण, खुशवुकुमारी, वगेरे ग्रंथोमां मात्रामेळ तोमर जाति होवा आहि दाखल करी छे.

१८ अनुफल. ८+४=१२. १,९,९ मात्राए ताल.

बार कला सौ, आवत, १४८
यति आठे ठिक, लावत; १६७
ताल अनुफले प्रथमज, २११
चारे चारे, पळो तज. २७. २००

मृदुगति. ५+७=१२. १,७ मात्राए ताल.

आणिये कला रविज, ११७
शर हये, धरी यतिज; ११८

१ ७
शशि मुनि, करी सुताल, ११८
मृदुगति, सुजाति माळ.२८. ११८

चाम जातिथी वमणी आ जाति छे, ३,६,९,१२मी मात्रा लघु आणवी.

भागवत- १३ मात्रानी ३७७ वृत्ति थायछे.

२० मूळचंद्र. ७,६ यति. अंते जगण. १,४,८,११ मात्राए ताल.

७
तेर कल मुनि, पर विराम, २३२
जगण अन्ते, पद तमाम; २१५
१ ४ ८ ११
शशि श्रुति वसु, शिव सु ताल, २२८
ए मूळचंद्र, जाति माळ.२९. १९०

२१ चंद्रमणि. मात्रा १३. लघु गुरुनो नियम नथी. १,५,९ मात्राए ताल.

चरण चरण प्रति मात्रिका, ८९
आवे तेर प्रमाण जो; ७७
चन्द्रमणिमां ताल तो, ५९
१ ५ ९
भू शर भक्ति जाणजो. ३० ५९

भाषाछंदोमंजरीमां आ जाति छे, पण ते द्विदल जेवी जणायछे.

२२ अवलंबक. मात्रा १३. १,४,९ मात्राए यति.

१, ५, ९ मात्राए ताल.

४ ४ ५
श्रुति श्रुति, कल पर, शर करो, १४४
१३
जख कल, प्रतिपद, कवि! धरो; १४४
५
प्रथमे, शर नव, ताल छे, ८६
अवलंबकनी, चाल छे. ३१. ६६

२३ जलतरण. ९,९, यति अंते ग ल, यतिमां जगण न आणवो

१,६,११ मात्राए ताल.

तेर कल, जलतरण, मांह, २३२
शर शरे, विरति छे, जांह;१७३
शशि पडे, ने शिवे ताल, १६०
यति विषे, जगण नव घाल.३२. २२८

२४ वरवीर. ८,५, यति. १,९,९ मात्राए ताल.

यति आठे शर, राखजो, ७८
तेर कला पद, नांखजो; ८०
वरवीर जाति, चाल छे, ६०
शशि शर नव, पर ताल छे. ३३.८९

पिंगळादर्शमां आ जाति १२ मात्रामां राखी छे, ते भूल छे.

मानव--१४ मात्रानी ३१० वृत्ति थायछे

२५ हाकली, हाकल, कालिक, हाकलिका. मात्रा १४

१,५,९,१३ मात्राए ताल.

द्विज* स भ मां ठीक गण जाणो, ८१ *चार लघु.
त्रण ते धरी रवि कल आणो; ८६
अन्त गुरु धरी चौद करो, १६९
हाकली जाति सु नाम धरो. ३४.१६९
ताल प्रथमपर एक करी, १७७
श्रुति श्रुति चडती योज धरी; १९७

एक बीजे शिव वर्ण खरा, १६९
त्रण चारे दश वर्ण नख्या. ३९. १६७

विप्र (चार लघु), सगण के भगण ए त्रण पैकी जे ठीक जणाय तेवो डगण रची बार मात्रा आणवी+ग एमा कर्ण एटले बे गुरुनो डगण आवे तोपण अमने हरकत जणाती नथी. छंदोलतामां १०+४ मात्रामां अते सगण लाववा केहेछे, वृत्तमौक्तिक, वाणीभूषण तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमा १४ मात्रा (विप्र+स+भ गमे ते थइने) +ग, एम मात्रानोज मेळ कह्यो छे मागधी नागपिंगळमा स, भ के विप्रगण थइ १२+ग, पेहेला बीजा चरण (पूर्वार्द्ध) मा अक्षर ११, त्रीजा चोथा चरण (उत्तरार्ध्ध)मा अक्षर १० लाववा केहेछे श्रीधर पिंगलमां भ+भ+४+ग रामचंद्रिका काव्यमा हाकलिका नाम छे अने तेमा सगण, भगण अने विप्रगण+गुरु लावेछे, अक्षर-११,११,१२,१२ छे.

छंद प्रभाकरमा पेहेल[illegible] रणमा १० अक्षर लाववा क[illegible] यम कह्यो छे.

चिंतामणीमा पेहेला त्रीजा [illegible] ११ अक्षर, अने चोथा चरणमा १४ मात्रा आणवा कह्युछे.

छंद शृंगारनी एक लिखित प्रतिमा "हालक" नाम छे, ते लिखितदोष हशे एम जणायछे. तेमा १२+ग=१४ मात्रा अने ११, १०, ११, १० एम अक्षर छे.

छंद कामदुघावत्समा त्रण डगण+ग अने ११, १० अक्षर आणवो कह्यु छे.

छंदशास्त्रमां वृत्तमौक्तिकना जेवुज पेहेला बे चरणनुं माप कह्युं छे, पण त्रीजा चोथामां डगण पैकी स के भ अने अते गुरु आणी १० अक्षर लाववा कह्यु छे, पण वाणीभूषण इत्यादिमा अक्षरनो ए नियम मान्यो नथी, एटले आ मात्रामेळनी जातिमा अक्षरमेळनो नियम मानवो अमने उचित लागतो नथी.

२६ गजल. ४+३+४+ग+ल=१४ मात्रा.

१, ५, ८, १२ मात्राए ताल.

त्रण पर बे ड गण पर ताल, ३६९ गुरु लघु
१ ५ ८
शशि शर आठ बारे ताल; २४६
कुल कल चौद चरणे थाय, २८०
गजल ज जाति सरस गणाय. २६. ३६९

२७ कज्जल, कदली. १४ मात्रा. अन्ते जगण, वा तगण.

१, ५, ९, १२ मात्राए ताल.

प्रति पद कुल कल चौद धार, ३२२
अन्त जगण वा तगण सार; ३५९
१ ५ ९ १२
भू शर निधि रवि ताल आण; ३२१
कज्जल, कदली जाति जाण. २७. ३००

२८ मधुमत्त. मात्रा १४. १, ४, ७, १०, १३ मात्राए ताल.

सकल कला चौद तो करो, ११९
प्रथम उपर त्रण त्रणे धरो; १४४
पांच ताल सर्व आणजो, ११७
मधुमत्त जाति जाणजो. २८. ११६

२९ सुलक्षणी, सुलक्षण, ७+७=१४ मात्रा.

प्रत्येक ७ मात्रामा अंते गल १,५,८, १२ मात्राए ताल

कर कल सात, ते पर सात, २३१
कुल कल चौद, छे प्रख्यात; २४६
५
प्रति यति आदि, शर छे ताळ, २८०
सुलक्षणीज, जाति रसाळ

मात्रा चौद करो चरणे; १११

'छंदार्णव' सुरुपी वरणे, १७२

१ ५ ९ १३
भू शर भक्ति यत्न परे, १२८

चारे चढती ताल खरे. ४०. १६२

३१ सखी. मात्रा १४. तेमां अंते म वा यगण १,७,११ मात्राए ताळि.

कळ चौद सखीनी जेमां, १०

कर अन्त म वा य तु तेमां; ६६

७ ११
घर ताळ ऋषि मुनि रुद्रे. ६६

रच जाति भली सुभद्रे. ४१. १०

आ जाति "वनजारा"ना रागनी देशीमां गवाय छे.

३२ उघोर. मात्रा १४. तेमां अन्ते ग, ल. १,५,८,१०,१२ मात्राए ताळि.

कळ कुळ चौद पदमां आण, २८०

गुरु लघु अन्त उपर जाण, २२७

१ ५ ८
शशि त्रण शरे वसु दश तालि, २६४

१२
रवि पर उघोरे संभाळ! ४२. २४१

३३ चंपक. ८,६ यति. अंते ग, ग. १,५,९,१३ मात्राए ताळि.

चौद विषे गुरु, बे छेले, २५

१ ५ १३
ताळ भूॅ शर नवं, जख मेळे; ८८

आठ छये यति, बे आणो. २६

चंपक जाति, ते जाणो. ४३. ४

३४ मालती. ९, ९ यति. ३, १० मात्राए ताल.

कल चौद, पदमां आणजो, १०७
यति शरे, नवमे जाणजो; १०९
ए जाति, जाणो मालती, ९३
त्रण दशे, तालो चालती. ४४. ९२

३५ कलना. ४+४+४+२=१४. १,५,९,१३ मात्राए ताल.

त्रण चोकलिया गण ठिक धर, ५८१
ते पर बे कल छूटो कर; ४०२
चौद बने कल कलनामां, ८०
ताल शशि शर नव जखमां. ४५. २२४

३६ मनमोहन. १४ मात्रा, तेमां छेल्लो नगण. ३, १० मात्राए ताल.

कर कला चौद चरण चरण, ९९२
धर प्रतिपदे अंते नगण; ४७४
त्रण दश परे तालो सरस, ४७४
मनमोहन जाति ए सुरस. ४६. ४९७

गणप्रस्तारप्रकाशमा आनुं नाम मोहन अथवा मनमोहन आप्युंछे अने तेनुं माप २+५+२+५(तेमां अन्ते नगण)=१४ मात्रा एम आप्यु छे.

३७ वज्रचंद्र. ६,८ यति. प्रथम नगण ने अन्ते जगण.

१,५,९,१२ मात्राए ताल.

छ पर वसु, कल चौद जाण, ३१४
प्रथम नगण, अन्ते 'ज' आण, ३०१
शशि शर नव, बारे ज ताल; ३०१
नियम वजरचंद्रेज चाल. ४७. ३०१

३८ किञ्जल्क. गुरु लघुनो नियम नथी १,५,९,१३ मात्राए ताल

कल चरणे चौद थायछे, ११९
प्रथम कले पे'लो ताल छे; ११९
४ ४
श्रुति श्रुति चडती वळी करें, १२२
किञ्जल्क थाय एम खरे. ४८. १६१

३९ हंसीगति, कपिला. ६+८=१४. एक पछी चच्चारे चडती
१,५,९,१३ मात्राए ताल

६ ८
षड पर वसु कल दे पूरी, ३४
हंसीगतिनी ए रूढी, ९
चौद कला कुल तो भाळो, २१
प्रथम चच्चारे छे ताळो. ४९. ९

तैथिक-१५ मात्रानी ९८७ वृत्ति थायछे.

४० जयकरी. मात्रा १५, तेमां अंते ल, ग.
१, ५, ९, १३ मात्राए ताल

चरण चरणमां पंदर कला, ३०१
लघु गुरु अंते आवे भला; १४९
जाति जयकरी जुगते करो, २२९
१ ५ १३
शशि शर नव जख ताळो धरो. ५०. १७८

छंद शृंगार अने पिंगलादर्शमा अंते गुरुज आणवा कयु छे अने गणप्रस्तारप्रकाशमा ६+६+३=१५ मात्रा आणवा कयुछे अने तेना पेहेला रुपमां बे मगण अने लघु गुरु छे तथा छेल्लामा १५ लघु छे.

४१ पाइत्त. मात्रा १५. तेमां ७,८ यति. अंते सगण.
१, ५, ९, १३ मात्राए ताल

१५ ७ ८
तिथि कलमांहि मुनि वसु करो, २१४

अंते एक, सगण ठीक धरो; ३६१

भू पर ताल, पछी श्रुति श्रुति, ३१३

पाइक्तनी, गणो शुभ गति. ५१. ३०१

५२. चोपाइ, चतुष्पदी. ६+४+४(तेमां अंते गुरु होय)+ल =१५ मात्रा. १, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

छ पर ङगण बे पछी लघु धार, ५८९

तिथि कुल कलमां छेवट हारं; ५३४ [गुरु लघु]

चतुष्पदी चोपाइ भाळ, ३९०

शशि शर नव जख उपर ताल. ५२. ५५५

यागुवळभमां ज करी अने चोपाइ एकज लखेछे, १५ मात्रामां अन्ते लघु नागराजपिंगळमा ६+४+४+ल, ए प्रमाणे छे, पण रूपदीप पिंगळम ८+७ तेमां अंते ग, ल, छे. गणप्रस्तारप्रकाशमा अन्ते ज, त, र, के स, लावचा केहेछे अने तेनु छेल्लु रूप सर्व लघुनु आप्यु छे.

४३ वस्तु. ४+४+४+३=१५. १,५.९,१३ मात्राए ताल.

त्रण चोकलपर त्रण कल धरो, ३७४

एवी पंदर कुल कल करो; ३६१

एक उपर चचारे ताल, ३८९

वस्तु जाति विषे संभाळ. ५३. ३९९

आनी अंते "जी" उमेरवाथी राग 'सामेरी" थाय, एम "प्राचीन काव्य-माळा"ना रसिकवल्लभादि प्रथमा पृष्ठ पेहेले लख्यु छे

४४ गोपाल. १०,५ यति. १,५,९,१३ मात्राए ताल.

दशने पांच उपर, विश्राम, ४५५

एकंदर पंदर, कल आम; ५८५

एक उपर श्रुति श्रुति, पर ताल, ६०९

ए जाति रूडी, गोपाल. ५४. ३७८

छंदप्रभाकर आ जातिमां ७,८ विराम अने अन्ते जगण आणवानुं लखी तेनुं बीजुं नाम भुजगिनी होवानुं पण केहछे

संस्कारी-१६ मात्रानी १,५९७ वृत्तिथायछे.

४५ चरणाकुल. ८,८ यति, तेमां अंते ग, ग.

१,५,९,१३ मात्राए ताल.

प्रतिपद मात्रा, सोळ ज जाणो, १४९
अंते तेमां, बे गुरु आणो; १४५
१ ५ १३
ताल शशी शर, नैव जख लावो, २२४
चरणाकुल बहु, बेश बनावो. ५५. १७५

पिंगलादर्शमा छेवटे बे गुरु अथवा अंते यगण आणवा कह्युं छे, कवीश्वर दलपतराम "अंते एक गुरु होय तो नमे" एम लखेछे, पण तेम करवाथी पादाकुलक थइ जायछे

४६ अडल, डारिल, चोपाइकुलक. मात्रा १६.

१, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

चरण चरणमां मात्रा सोळे, १२
गुरु लघु को नहि जेमां तोले, २६
ताल अडलमां प्रथम उपर धर, १५७५
५ १३
पछी शर नव जख उपर ठोक कर. ५६. १५४२

डारिल, बियाखरी[1]. १६ मात्रा. १,५,९,१३ मात्राए ताल.

गुरु लघु नियम न कुल कल सोळज, १२२०
डारिल जाति पण गण एमज; ११९०
ताल प्रथम पर एमां आवे, ३३
पछी चच्चारे चडतो लावे. ५७ ५७

[1] मागधीछंदःशतक.

चोपाइकुलक. मात्रा १६. १, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

सोळ कळा प्रति पदमां आवे, ८०
लघु गुरुनो कंइ नियम न लावे; २२५
भाषा चोपइकुलक कहेछे, २२१
प्रथमे श्रुति श्रुति ताल रहेछे. ५८. १७५

४७ भिन्ना. मात्रा १६. तेमां अंते ल. १,५,९,१३ मात्राए ताल.

भिन्नामांहि सोळ कला कर, ११३२
तेमां अंते लघु आणी धर; १०४२
शशि पर ताल धरी पछी ते पर, ११५७
चच्चारे चडती कर कविवर! ५९. १५३०

४८ घातक. ४+४+४+४=१६ मात्रा, तेना अक्षर १२.

१, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

चारे चोकल गणो सरस धर, १४९६
अक्षर तेमां द्वादश कुल कर; १५१२
षोडश कल शशि पछी चच्चारे, ८८
ताल सरस धर घातक ज्यारे. ६०. १७७

४९. पंझटिका, पद्धरी, पाधरी, पद्धडी, पज्झटिका, प्रझटिका.

४+४+४+ज=१६. ३, ६, ११, १४ मात्राए ताल.

त्रण डगण उपरे जगण धार, ९१९
कल सोळ पद्धरी चरण चार; ९१६
गुण शास्त्र रुद्र रत्ने सुताल, ७७२
कविराज! पंझटिका तुं भाळ. ६१. ७७२

वाग्वल्लभमां नवमी मात्रा गुरु लाववा कहेछे, तेमज अंते जगण के लघु लाववानो ना कहेछे, पण नागपिंगळ, प्राकृतपिंगळसूत्र, वाणीभूषण अने

छंदोवृत्तमुक्तावलीमा अंते जगण लाववा केहेछे, माटे तेनु मत स्वीकारवा योग्य नथी वळी छंदोवृत्तमुक्तावलीमा तो आदि डगणमा जगण आणवोज नहि, एवो खास नियम आप्यो छे, अने तेनु नाम प्रज्झटिका आप्युं छे. वळी छंद प्रभाकरमां पद्धटिका, प्रज्वलय के प्रज्वालिया, एवां बीजा नाम आप्या छे, अने विशेषमा लखेछे-आनाज वमणा मापवाळाने भिखारीदासे लीलावती छंद मान्यो छे मागवी पिंगळछंदोग्रंथमा प्रज्झटिका नाम छे

५० पादाकुलक, पायाकुलक. ४+४+४+४=१६ मात्रा,

तेमा अंते ग (चरणमां यमक आवे) १,५,९,१३ मात्राए ताल

चार चरणमां गुरु छेवट छे, ४४४
सोळ कळानो एवो पटछे; ३८१ [समूह.
पायाकुलक यमकथी शोभे, ८९
१ ५ १३
भू शर नव जख तालज थोभे. ६२. १७७

"मात्रासमक" प्रकरणमा लखेला [१]चर्पट, [२]विश्लोक, [३]नवासिका, [४] चित्रा अने [५] उपचित्राना मापमाथी गमे ते चार चरण रचवामां आवे तो तेनु नाम "पादाकुलक" केहेवायछे, एम वृत्तरत्नाकरनी नारायण-भट्टी टीकामा जणाव्युं छे; छंदोवृत्तमुक्तावलीमा चार चोकलिया तेमा अंते गुरु, एम सोळ मात्रा आवे-एटले अंत्य गुरुवाळा अरिल्लने पादाकुलक कह्यो छे, वाग्वल्लभ अने छंदःशास्त्रमा आनु नाम पादाकुल्लकज छे वृत्तमौक्तिक, छंद-शास्त्र, वाग्वल्लभ, अने लखपतजससिंधुमा गुरुलघुनो नियम नथी, एम केहेछे, तेमज "छेल्ले गुरु जोइये" एम पण नियम करता नथी, पण छंद शास्त्र (पिंगळ) ना नियम प्रमाणे ज्या विशेष नियम न होय त्या पादान्ते गुरु आणवो एम जणावी गया छे प्राकृतपिंगळसूत्रमा गुरुलघुनो नियम कह्यो नथी, एटले सोळ मात्रा बधा गुरु के बधा लघुनी नहि, पण गुरुलघु मिश्रित लाववी, एम कह्युं छे वाणीभूषणमा कह्यु छे के —

"अक्षर गुरु लघु नियम विरहितं, भुजगराज पिंगल परिभाणितम्
भवति सु गुम्फित षोडश कलकं, वाणीभूषण पादाकुलकम्."

गणप्रस्तारप्रकाशमां आठ आठ मात्राना प्रति यतिए प्रास मेळव्या छे, एनुं पेहेलुं रूप त्रण कर्ण ने एक भगणनु थायछे अने छेल्लु रूप त्रण विप्र ने भगणनु थायछे.

ताले प्रथमे पछीँ श्रुति उपर, ११९९
अलिला, अनिलामां लावी घर. ६७. ९९७

१ छंदोलतामां आ नाम छे. मागधी छंदःशतकमां एने "विआधरी" केहेछे

महासंस्कारी-२७ मात्रानी २,५८४ वृत्ति थायछे.

५६ महच्चंद्र. ८,९ यति, अंते मगण. १,५,९,१२,१६ मात्राए ताल.

पदमां सत्तर, कुल कला आणो, १३३
आठे यति ने, वळीँ नवे जाणो; ११९
शशि शर नव रवि, नृप महच्चंद्र, १४४
ताल धरो ठीक, कवि खरे वंदे. ६८ १३९

५७ राम ९,८ यति. अंते यगण. १,६,१२,१४ मात्राए ताल.

दश सात मात्रा, राम विषे छे, २३८
नव आठ एवी, विरति दिसेछे; ३२७
यगण विरतिये, द्यो पछीँ तालो, २४१
प्रथम षट आशा, मनुपर घालो. ३३०

छंद प्रभाकरमां नवो कल्प्यो छे.

पौराणिक-२८ मात्रानी ४,१८१ वृत्ति थायछे.

५८ माली. ४+४+४+४+२=१८मात्रा. १,५,९,१३,१७मात्राए ताल

चार डगण पर बे कल लावेछे, १७७
अष्टादश कल एम ज आवेछे; १७४
प्रथम पछी च्चार चढे तालो, १४९
रचना माली जाति विषे भाळो. ७०. १४६

५९ पद्धतिका. नवमी दशमी मात्रा थइने एक गुरु, तेमज अंते पण गुरु.
कहिं पण जगण न आणवो. १,५,९,१३,१७मात्राए ताल.

अष्टादश कल पाद विषे करजो, ११६१

गुरु नव दश मळीने अंते धरजो; १०२१
पद्धतिकानी मांह जगण न धरो, १५१२
एक उपर च्चारे ताल करो. ७१. ९९९

६० रण*. मात्रा १८. ९,९ यति, तेमां अंते स. १,५,१०,१५ मात्राए ताल.

१०+८
दश वसु कल कुल, रण जाति ए छे, ३५७
नव नवपर यति, तेमां रहेछे; २५४
१ ५ १० १५
शशि बाण पंक्ति, तिथि ताल तेमां, ३२७
स्वर गुणि! पीलुनो, गाओज एमा. ७२. २४६

* आ जाति अमारा नामथी नवी बनावी दाखल करेली छे.

६१ राजीवगण†. ९,९ यति, मात्रा १८. ३,७,१०,१४,१७ मात्राए ताल.

कल सकल पुराण, पदमां आणवी, ७३३
नव नव उपर यति, बे तो जाणवी; ६६५
७ १० १४
त्रण मुनि दिशि रत्न, सतरे ताल छे. ७३३
राजीवगणनीज, रूडी चाल छे. ७३. ६४३

† छंद प्रभाकर आने "माली" पण केहेछे, पण अंक ५८ मा "माली" जाति आथी जूदाज लक्षणवाळी छे.

६२ परिचरिता. ८, १० यति. तेमां छेल्ला बे लघु.

४+८+५+३+ल+ल १,५,९,१३,१७ मात्राए ताल

बे चोकलपर, पांच त्रण कला कर, ३१३५
कुल कल अढार, बे ल चरम तुं धर; ३१२६
१ ४ ४ ८
शशि पछी श्रुति श्रुति, ताल वसु दश विरति, ४१२६
परिचरिता कवि! रचनो धरी सुमति. ७४. ३४१९

महापौराणिक-१९ मात्रानी ६, ७६५ वृत्ति थायछे.

६३ बोधक. १०,९ यति. १, ६, ११, १६ मात्राए ताल.

कल ओगणीश तो, चरणे रचाशे, ५३९

दश ने वळी नवे, यति ठीक थाशे; १३९

भूपरे पछी शरे, चंडता ने ताळो, ५४९

जाति बोधक तसे, कवि! एम भाळो. ७५. ९४९

अगियार अक्षरमा रूप २९३ मे आहीवृत्त छे, तेने रागे अथवा "मदालसा अने ऋतध्वज" पृष्ट १२ मे "प्रार्थिये आदित्य सुर शुभकारी" ए रागे गवाशे.

६४ मोहनी* मात्रा १९. अंते गुरु लघु. १,५,९,१३,१७मी मात्राए ताल.

ओगणि मात्रातणां चरण श्रुति आण; ४०६२

तेने मोहनी जाति चतुर जन! जाण; ४११४

प्रथम पछी चच्चारे उपर धरे ताल, ४०९७

अंतविषे गुरु लघु विचारी घाल. ७६. २७१९

* आ जाति प्रवीणसागर लेहेर ५३ मी प्रमाणे नवी बांधी छे.

६५ पीयूषवर्द्ध, आनंदवर्द्धन. १०, ९ यति. अंते ल ग.
१, ८, १५ मात्राए ताल.

ओगणिश कल आण, प्रतिपदमांह तो, १९६२

प्रथम पछी वसु तिथि, एना ताल तो; १०२१

जाति पीयूषवर्द्ध, रचना आम छे, ११८०

ने अवर आनंदवर्द्धन नाम छे. ७७. १४०१

छंदःप्रभाकरमा पीयूषवर्ष अने आनदवर्धक एवां नाम छे.

६६ नरहरि. मात्रा १९. १४,५ यति. तेमां अंते न ग.
२, ७, ११, १५,१८ मात्राए ताल.

मनु शरे यति ओगणीस, कल करो, २२७०

पण तेमां नगण ग अंते, ठीक धरो; २०५२

त्रण पछी चच्चारे ताले शर खरी; १९७९

ए जाति तो कवि! जाणो नरहरि. ७८. २०३०

महादैशिक-२०मात्रानी १०,९४६ वृत्ति थायछे.

६७ दीपकी. (दीपक—मात्रा १०थी बमणी).

३, ८, १३, १८ मात्राए ताल.

प्रति चरणनी मांह कल सकळ विश आण, ६७१८
ए दीपकी जाति छे एम कवि! जाण; ६१९३
तर्जो वे पछी ताल त्रीजी उपर धार, ६१९४
मळी शर शरे सारी कर सकळ मळी चार. ७९. ६७१८

गणप्रस्तार प्रकारमा आनु माप चार वार गण (टगणनु ।।ऽ आवुं रूप) आणवा कह्यु छे. अने तेनु नाम दीपक आप्यु छे.

६८ योग. १२, ८ यति=२० मात्रा, तेमां अंते यगण.

१,७,१३,१९ मात्राए ताल.

बार अने आठ कळा, वीश धरोने, १०४६
चरण अंत एक यगण, मांह करोने; ११९४
एक पछी खट खट पर, ताल सुधारो, १२११
योग जाति एह कवि! आप विचारो. ८०. ११८४

आ जाति काफीना जिल्लाना स्वरमा (इंद्रसभाने रागे) गवायछे.

६९ नंदी. १२, ८ यति=२० मात्रा, तेमां अंते बे गुरु.

४, ५, ९, १३, १७ मात्राए ताल.

वीश कळामां बे गुरु, अंते आवे, १४८
बार आठ प्रति पद, विरति सुहावे; १६६४
ताल प्रथम पछी चडती, चारे आणो, ८८
आ नंदी जाति ए, रीति जाणो. ८१. १

७० हंसगति. ११,९ यति=२० मात्रा. १,५,९,१३,१७मात्राए ताल.

अगियारे ने नवे, विरति आवेछे, ४२६

ए रीते कवि वीश, कला लावेछे; १११
१ ४ ५
भूपर नेश्रुति क्रमे, धरो शर तालो, ११२२
हंसगतिनी जाति, भली ए भाळो. ८२. १४८

७१ मत्ता, विनिहरण. ४+४+४+४+४=२० मात्रा. तेमां जगण कोइ ठेकाणे आणवो नाहि, अन्ते एक गुरु आणवो.

१, ५, ९, १३, १७ मात्राए ताल.

पांच डगणमां अंते तो गुरु आवे, ९९९
करजो कुल कल वीश जगण वण भावे; १९२९
एक उपर पछी चारे चढता तालो, ४१०
५
विनिहरणे मत्तामां शर तो घालो. ८३. ३८२

त्रैलोक--२१ मात्रानी १७,७११ वृत्ति थायछे.

७२ चंद्रायन, चांद्रायन. ११, १० यति=२१ मात्रा

१, ५, ९, १३, १७ मात्राए ताल.

प्रतिपदमां अगियार, अने यति दश विषे, ६३२९
वधी मळी वीश एक, कला तेमां दिसे; २७५१
छे चांद्रायन ताल प्लवंगम ढाळनी, २७३७
चंद्रायन पण कहे, रुडेरी चालनी. ८४. २७२४

छंदप्रभाकरमां ११ मात्रा जगणात अने १० मात्रा रगणांत लाववानुं कह्युं छे, पण बीजा पिंगळकारोए तेम कह्युं नथी, तेथी अमे पण ते मत पाळ्युं नथी.

७३ रासा. १२,९ यति. १,५,९,१३,१८ मात्राए ताल.

चरण चरणमां रचजो, कल एकवीशे, १४३२
बारे अने वळी नवे, यति ठीक दीसे; १४३६
१ ५ १३ ५
शशि शर नव जख अढार, शर ताल थाशे, १५०८
वसंततिलके रासा, कवि राग गाशे. ८५. १३७५

७४ प्लवंगम. ११,१० यति.‡ (आदि गुरुनो) †ट+५+४+ज+ग =२१ मात्रा. १, ५, ९, १३, १७ मात्राए ताल.

आदि गुरुनी छ कल, असु पछी जाणजो, ३७७४
चार उपर करी जगण, गुरु पछी आणजो; ३८०३-
भू पर चडती ताल, चतुर शर सौ करो, ४१०४
एह प्लवंगम नाम शिवे यति तो धरो. ८६. ३७४०

‡ छंद प्रभाकरमां ८,१३ मात्राए यति कही छे

† हर (SSS), शक (SIIS), कमळ (SISI) कलि (SSII) के धर्म (SIIII) टगग ए पांच आदि गुरुवाळा टगण (छ मात्रा) पैकीनो कोइ पण लाववो.

चिंतामणीमा ११, १० यति कही छे, बीजा पिंगळकारो तेम केहेता नथी, वाग्वल्लभ तथा मनहरपिंगळमा आदि गुरु आणवानु लख्युं नथी, पण वाणीभूषणमां लख्यु छे, छद शास्त्र, वृत्तमौक्तिक अने नागपिंगळमां मात्रा ६ (तेमा आदि गुरु) +५+४+ज+ग लाववा कह्यु छे आनेज मळती पण यति रहित आभाणक के अहाणऊ जाति मागधी 'छंद शतक" मा कही छे छंदोवृत्तमुक्तावलीमा प्रथम गुरु पछी चार चोकलिया ते उपर लघुगुरु आणवा कह्यु छे उपरना माप सिवाय गणप्रस्तार प्रकाशमां आनुं बीजी रीते ड+ड+ढ+ठ+ठ=२१ मात्रा एवु माप आप्यु छे, अने २१ मात्रानुं सामान्यनाम प्लवंगम आप्यु छे तेना रुपातरमा शिरखंडी छद कह्यो छे, पण २१ मात्रा सिवाय तेनु विशेष लक्षण कइ बताव्यु नथी माटे अमे तेने दाखल कर्यो नथी.

महारौद्र--२२ मात्रानी २८,६५७ वृत्ति थायछे.

७५ महीदीप. १२,१० यति=२२ मात्रा, तेमां अंते बे गुरु. १ ७, १३, १९ मात्राए ताल.

चरण चरणमांह बधी, बावीश कल जामे, ३६३९
अंतमांह जुगल गुरु, रवि दशे विरामे; २४३४

ताल एक सात तेर, ओगणीश ठामे, २०९१
जाति तो बने रसाल, महीदीप नामे. ८७. १८९८

आ जाति राग खमायचो जिल्ला अने जंगलामां पण गवायछे.

७६ लीला. ११,११ यति, अंते गुरु. १,५,९,१२,१६,२०मात्राए ताल.

बाविश कुल कल थाय, चरण चरणमांह तो, ६७०९
तेमां कर गुरु एक, छेवट छे ज्यांह तो; ४८७६
शिव शिवमां यति थाय, जाति लीलाविषे, ४२६२
शशि शर नव रवि सोळ, विशपर तालो दिशे. ८८. ९११३

७७ रास. ८,८,६ यति=२२ मात्रा. १,५,९,१३,१७,२१ मात्राए ताल

आठ कलापर, आठ धरी पड, अंत करो, ७९२१
बावीश कळमां, अंतविषे तो, सगण धरो; ९५०५
एक पछी श्रुति, श्रुति चडती शर, ताल दिशे, ७९७६
रासनी रचना, एम करो प्रति, चरणविषे. ८९. १०४९२

७८ राधिका. १३,९ यति=२२. ३,७,११,१६,१९ मात्राए ताल.

बाविश कळमां यति तेर, अंते नव ठामे, ३०२८
त्रण पर चच्चारे ताळ, चडी शर जामे; २९६६
ए जाति राधिका छंदप्रभाकर के' छे, २९७८
गातां गुणिजन ते राह, लावणी ले छे. ९० ७८४

आ जाति लावणीमां गवायछे, अने घणुं करी तेमां अंते बे गुरु आवेछे.

७९ बिहारी. २२ मात्रा ८,६,८ यति. ३,९,१९,२१ मात्राए ताल

कल आठ छने, आठ करो, बावी विचारी, २७२८
कल योग थकी, बे विशेष, थाय बिहारी; २८८२
करो त्रण पछी खट, खटथी ताल, चार आणजो, ५९१९

ए गजल राह, तो गवार्तो, जाति जाणजो. ९१. ६४७६

८० श्रीमती. १२,१० यति. ६+६+५+५=२२ मात्रा.

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल.

छकल उपर छकला कर, शर शर कल त्यां धर, २१८३७

एम कळा बावीश धर, रचना सरसज कर; २७६४०

बार अने दश स्थाने, विरति रचवा मच, २०६९७

श्रीमतीमां शशिपर ने, तालो श्रुति श्रुति रच. ९२. २७१४०

८१ वारि. १३, ९ यति. १,५,९,१४,१८, मात्राए ताल.

प्रति पदमां बावीश तो, कुल कळ गायछे, ६५४१८

तेरे अने नवे खरे, यति ठीक थायछे; ६४६०

शशि शर नव मनुना पछी, पुराण ताल छे, ५४९०

वारि जातिनी ए रूडी, मधूरी चाल छे. ९३. ४८६९

८२ एला. ६+५+६+५=२२. ११,११ यति. प्रति यतिमां

१, ४, ७, १० मात्राए ताल

छ पर पांच थाय छे, छपर शर मुकायछे, ६६५०

एम बीश बे कला, यति शिवे रखायछे; ५६६२

एक चार सात दश, ताल यति धारजो, ४९०८

एह एला नामनी, जाति छे विचारजो. ९४. ५४२६

रौद्रार्क--२३ मात्रानी ४६,३६८ वृत्ति थायछे.

गणप्रस्तारप्रकाशमा २३ मात्रानु सामान्य नाम निश्चल आप्युछे.

८३ मृगांक. १२,११ यति=२३ मात्रा, तेमां अंते ग-ल.

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल.

तेवीश कलनुं पद छे, बार शिवे यति आण, २५६३०

ताल एक सात तेर, ओगणीश ठामे, २०९१

जाति तो बने रसाल, महीदीप नामे. ८७. १८९८

आ जाति राग खमाचनी जिल्ला अने जंगलामां पण गवायछे.

७६ लीला. ११,११ यति, अंते गुरु. १,५,९,१३,१६,२० मात्राए ताल

बाविश कुल कल थाय, चरण चरणमांह तो, ६७०९

तेमां कर गुरु एक, छेवट छे ज्यांह तो; ४८७६

११ ११

शिव शिवमां यति थाय, जाति लीलाविषे, ४२६२

१ ५ १२

शशि शर नव रवि सोळ, विशपर तालो दिशे. ८८. ९११३

७७ रास. ८,८,६ यति=२२ मात्रा. १,५,९,१३,१७,२१ मात्राए ताल

५

आठ कलापर, आठ धरी पड, अंत करो, ७९२१

बावीश कळमां, अंतविषे तो, सगण धरो; ९५०९

४ ४ ५

एक पछी श्रुति, श्रुति चडती शर, ताल दिशे, ७९७६

रासनी रचना, एम करो प्रति, चरणविषे. ८९. १०४९२

७८ राधिका. १३,९ यति=२२. ३,७,११,१५,१९ मात्राए ताल.

बाविश कळमां यति तेर, अने नव ठामे, ३०२८

५

त्रण पर चचारे ताळ, चडी शर जामे; २९६६

ए जाति राधिका छंदप्रभाकर के' छे, २९७८

गातां गुणिजन ते राह, लावणी ले छे. ९० ७८४

आ जाति लावणीमां गवायछे, अने घणुं करी तेमां अंते बे गुरु आवेछे

७९ विहारी. २२ मात्रा ८,६,८ यति. ३,९,१५,२१ मात्राए ताल.

कल आठ छने, आठ करो, बावी विचारी, २७२८

६८

कल योग थकी, बे विशेष, थाय विहारी; २८८३

करी त्रण पछी खट, खटथी ताल, चार आणजो, ५५१५

ए गजल राह, तो गवातों, जाति जाणजो. ९१. १४७६

८० श्रीमती. १२,१० यति. ६+६+५+५=२२ मात्रा.

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल.

छकल उपर छकला कर, शर शर कल त्यां धर, २१८३७
एम कळा बावीश धर, रचना सरसज कर; २७६४०
बार अने दश स्थाने, विरति रचवा मच, २०६९७
श्रीमतीमां शशिपर ने, ताले श्रुति श्रुति रच. ९२. २७१४०

८१ वारि. १३, ९ यति. १,९,९,१४,१८, मात्राए ताल.

प्रति पदमां बावीश तो, कुल कळ गायछे, ६५४८
तेरे अने नवे खरे, यति ठीक थायछे; ६४६०
शशि शर नव मनुना पछी, पुराण ताल छे, ५४९०
वारि जातिनी ए रूडी, मधूरी चाल छे. ९३. ४८६९

८२ एला. ६+५+६+५=२२. ११,११ यति. प्रति यतिमां

१, ४, ७, १० मात्राए ताल

छ पर पांच थाय छे, छपर शर मुकायछे, ६६५०
एम वीश बे कला, यति शिवे रखायछे; ५६६२
एक चार सात दश, ताल यति धारजो, ४९०८
एह एला नामनी, जाति छे विचारजो. ९४. ५४२६

रौद्राक--२३ मात्रानी ४६,३६८ वृत्ति थायछे.

गणप्रस्तारप्रकाशमा २३ मात्रानु सामान्य नाम निश्चल आप्युछे.

८३ मृगांक. १२,११ यति=२३ मात्रा, तेमां अते ग-ल.

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल.

तेवीश कलनुं पद छे, बार शिवे यति आण, २५५३०

अंते गुरु लघु एमां, मृगांक जाति जाण; १८४९६
एक उपर पछी चडती, चच्चारे छे ताल, १७७९२
प्रतिपदमांहे एमज, षड तालो संभाळ. ९५. १८२३७

८४ उपमान. १३,१० यति. १,५,९,१२,१६,२० मात्राए ताल.

कल कर कुल तेवीश जख, ने दश पर यति छे, १७०२९
शशि शर नव रवि सोल चोश, पर तालनी गति छे; १६०५९
ए रचना उपमाननी, कथतां ठीक शोभे, ४८७१
गावा कविवर तणुं अति, पूरूं मन लोभे. ९६. ४४६५

छंदःप्रभाकरमां आ जातिमां अंते बे गुरू लाववा कह्युं छे पण तेवा नियमनी आना पछीनी अंक ८५ वाळी द्रढपदा जाति छे, एटले ए मत ग्राह्य नथी.

८५ द्रढपदा, दृढपट. १३,१० यति=२३ मात्रा. तेमां अंते बे गुरु. १,५,९,१४,१८,२२ मात्राए ताल.

त्रेवीश कुल कल चरणमां, जख दश यति जाणो, ६५३१
प्रतिपद केरा अंतमां, बे गुरु ठीक आणो; ५८३८
प्रतियतिमां पेले अने, चडती चच्चारे, ६७०
द्रढपटमांहे ताल तो, कवि-मंडै कुल धारे. ९७. ६४४८

* रूपदीपमां दृटपट, मौडापिंगळमां दिढपटि अने बीजां पिंगळोमां द्रढपदा, त्रिटपद, वगेरे नामो छे.

८६ निश्रेणी. १३, १० यति=२३ मात्रा, प्रतियतिमां अंते गुरु. १,५,९,१४,१८,२२ मात्राए ताल.

त्रेविश मात्रा थायछे, प्रति पदनी मांहे, २२६६
विरति तेरे प्रथम छे, बीजी दश ज्यांहे; ४२९३
प्रति यतिअंते गुरु करो, बेमां बे धारी, ११५
द्रढपट पेठे ताल ते, निश्रेणी सारी. ९८. ६०

८७ हीर, हीरक, बालिका. ३(धर्म) [1]टगण+र=२३ मात्रा.

त्रणे टगणमां यमक जोडये. १,४,७,१०,१३,१६,१९,२२.मात्राए ताल.

धर्म टगण, धार तुं त्रण, अंत रगण आणजे, १०५४७
आदि उपर, ताळ तुँ कर, त्री त्रण पर, जाणजे; १०५४७
त्रेविश कल, आण सकल, एम अचल, नेमथी, १०५४७
हीर हीरक, जाकि निरख, एम परख, प्रेमथी.९९.१०,५४७

[1] वृत्तमौक्तिक, प्राकृतपिंगळ तथा वाणीभूषणमा आदि गुरु अने चार लघु (ऽ।।।।) वाळो त्रण धर्म टगण+रगण आणवा कह्युछे, अने उदाहरण पण तेज प्रमाणे छे. वृत्तमौक्तिकमा आ प्रमाणे उदाहरण छे:—

"आदि गयुत, वेद लयुत, नाग रचित, षट्कलं,
वन्हि गदित, लोक विदित, मत्यकथित, मध्यलं;"

पण भाषा छंदोमंजरी, वाग्वल्लभ, (भाषा)छंदार्णव, छंदोलता, भाषा छंद.शृंगार अने चिंतामणीमा त्रण टकार आणवा कह्यु छे, पण टगणना १३ भेद पैकी धर्म टगणज (ऽ।।।।) आवे, एवो नियम राख्यो नथी, तेम तेमनां उदाहरणमा पण पाळ्यो नथी.

छंदोवृत्तमुक्तावलीमां कर्युं छे के, प्रत्येक धर्मटगणे यति आवे तो हीर जाति अने यति न आवे तो सुहीर जाति केहेवाय, धर्म टगण न मूकतां शाली नामना त्रण टगण [।।।।।।] मूकी अंते रगण आवे तो लघुहीरक जाति केहेवाय, अने ब्रह्म नामना त्रण टगण (।।।ऽ।) मूकी अंते रगण आणे तो परिवृत्तहीरक जाति केहेवायछे

छंद प्रभाकर त्रण यमक सहित आदि गुरु अने अंते रगण आणी कुल २३ मात्रा लाववानु केहेछे गणप्रस्तारप्रकाशमा पेहेला मगण वग-रना त्रण टगण आणवा कह्यु छे

अवतारी--२४ मात्रानी ७५,०२५ वृत्ति थायछे.

८८ काव्य. वास्तुक (प्राकृत पिंगळसूत्र प्रमाणे). ११,१३यति=
२४ मात्रा १, ५, ९, १३, १७, २१.मात्राए ताल.
६+१२ (ड+४+ज के द्विजगण)+६.

आदि छ कल करो उपर, रुद्रि कल त्रण गणमां कर, ९६९३६

अंते गुरू लघु एमां, मृगांक जाति जाण; १८४९५
एक उपर पछी चडती, चच्चारे छे ताल, १७७९२
प्रतिपदमांहे एमज, षड तालो संभाळ. ९५. १८२३७

८४ उपमान. १३,१० यति. १,५,९,१२,१६,२० मात्राए ताल.

कल कर कुल तेवीश जख, ने दश पर यति छे, १७०२९
शशि शर नव रवि सोल वीश, पर तालनी गति छे; १६०५९
ए रचना उपमाननी, कथतां ठीक शोभे, ४८७१
गावा कविवर तणुं अति, पूरूं मन लोभे. ९६. ४४६९

छंदःप्रभाकरमां आ जातिमां अंते बे गुरू लाववा कह्युं छे. पण तेवा नियमने आना पछीनी अंक ८५ वाळी द्रढपटा जाति छे, एटले ए मंत ग्राह्य नथी.

८५ द्रढपटा, दटपट. १३,१० यति=२३ मात्रा. तेमां अंते बे गुरु.

१,५,९,१४,१८,२२ मात्राए ताल.

त्रेवीश कुल कल चरणमां, जख दश यति जाणो, ६९३१
प्रतिपद केरा अंतमां, बे गुरु ठीक आणो; ५८३८
प्रतियतिमां पे'ले अने, चडती चच्चारे, ६७०
द्रढपटमांहे ताल तो, कवि सर्व कुल धारे. ९७. ६४४८

* रूपदीपमा दटपट, मोडपिंगळमां दिढपटि अने बीजां पिंगळोमां द्रढपदा, त्रिटपद, वगेरे नामो छे.

८६ निश्रेणी. १३, १० यति=२३ मात्रा, प्रति यतिमां अंते गुरु.

१,५,९,१४,१८,२२ मात्राए ताल.

त्रेविश मात्रा थायछे, प्रति पदनी मांहे, २२६६
विरति तेरे प्रथम छे, बीजी दश ज्यांहे; ४२९३
प्रति यति अंते गुरु करो, बेमां बे धारी, ११९
द्रढपट पेठे ताल ते, निश्रेणी सारी. ९८. ६०

८७ हीर, हीरक, वालिका. ३(धर्म) ट्गण+र=२३ मात्रा.

त्रणे ट्गणमां यमक जोइये. १,४,७,१०,१३,१६,१९,२२ मात्राए ताल

धर्म ट्गण, धार तुं त्रण, अंत रगण आणजे, १०९४७
आदि उपर, ताळ तुं कर, त्री त्रण पर, जाणजे; १०९४७
त्रेविश कल, आण सकल, एम अचल, नेमथी, १०९४७
हीर हीरक, जाणि निरख, एम परख, प्रेमथी.९९.१०,९४७

वृत्तमौक्तिक, प्रागपिंगळ तथा-वाणीभूषणमा आदि गुरु अने चार लघु (ऽ।।।।) वाळा त्रण धर्म ट्गण+रगण आणवा कह्युं छे, अने उदाहरण पण तेज प्रमाणे छे. वृत्तमौक्तिकमां आ प्रमाणे उदाहरण छे—

"आदि गयुत, वेद लयुत, नाग रचित, षट्कलं,
वन्हि गदित, लोक विदित, मत्यकथित, मध्यलं;"

पण भाषा छंदोमंजरी, वाग्वल्लभ, (भाषा)छंदार्णव, छंदोलता, भाषा छंदःशृंगार अने चिंतामणीमां त्रण ट्कार आणवा कह्यु छे, पण ट्गणना १३ भेद पैकी धर्म ट्गणज (ऽ।।।।) आवे, एवो नियम बांध्यो नथी, तेम तेमना उदाहरणमा पण पाळ्यो नथी.

छंदोवृत्तमुक्तावलीमां कर्युं छे के, प्रत्येक धर्मट्गणे यति आवे तो हीर जाति-अने यति न आवे तो सुहीर जाति केहेवाय, धर्म ट्गण न मूकतां शाली नामना त्रण ट्गण [।।।।।।] मूकी अंते रगण आवे तो लघुहीरक जाति केहेवाय, अने ब्रह्म नामना त्रण ट्गण (।।।ऽ।) मूकी अंते रगण आणे तो परिवृत्तहीरक जाति केहेवायछे.

छंदःप्रभाकर त्रण यमक सहित आदि गुरु अने अंते रगण आणी कुल २३ मात्रा लाववानु केहेछे गणप्रस्तारप्रकाशमा पेहेला मगण वग-रना त्रण ट्गण आणवा कह्यु छे

अवतारी--२४ मात्रानी ७५,०२५ वृत्ति थायछे.

८८ काव्य. वास्तूक (प्राकृत पिंगळसूत्र प्रमाणे). ११,१३यति=
२४ मात्रा १, ५, ९, १३, १७, २१,मात्राए ताल.
६+१२ (४+४+ज के द्विजगण)+६.

आदि छ कल करो उपर, रवि कल त्रण गणमां कर, १६९३

तेमां त्रीजो जगण, अगर द्विज गण लावी धर; ५०५१६
पछी छ धरी चोवीश, चतुर कवि जन कल लावे, १०८१२
काव्ये यति अगियार, त्रयोदश क्रमथी आवे. १००. ३७४६
प्रथम उपर धर ताल, पछी श्रुति चडती करजे, २१४६०
सकल मळीने ताल, वर्ने षड स्थम पद धरजे; २८१९६
लावणी साखी राग, समानज वदता भाळ्या, ३७१९
रोळ छपय समान, वळी ठिक वदता चाल्या. १०१. ३७४५

छंदःशास्त्रमा कयुंछे के—वच्चेनी वार मात्राना त्रण चोकलियामां स, ज, के विप्रगण, एमांना गमे ते त्रण डगण आवे, पण जगण आदवाथी सारु देखातुं नथी.

* वृत्तमौक्तिकमां लखेछे के—वचली बार मात्रीना त्रण गण आणवा. तेमां छेलो गण विप्र (।।।।) अथवा जगण आणवो, एवीज रीते मागधं नागपिंगळ तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमां पण लख्युं छे. छंद शास्त्रमां वचल वार मात्रामां स,ज के विप्रगणमांथी गमे ते लाववा, एम लखेछे, प उपरना वे ग्रंथोमा एवी बंधी करी नथी, माटे अमे पण ते पाळी नथी; केमके छंद शास्त्रनाकर्त्ता केहेछे के "छप्पयमां प्रथम एक काव्य अने ते उपर उल्लाल करवो" तो काव्यना बधा नियम एना अभिप्राय प्रमाणे एमा पण लागु पडी गया एटले स,ज के विप्रगणमांथी गमे ते, बार मात्रामा आववो जोइये, ते सिवाय वीजा आवे नहि पण छप्पयनु उदाहरण एमा आप्यु छे, तेमा "सुंदर भूपित' एवा शब्द भगणना आवी जायछे एटले तेनो नियम जे स,ज के विप्रगण लाववानो ते तेणे पोते पण पाळ नथी. छंद शृंगारमां ६+१२+६=२४ ए रीते मात्रा लाववा केहेछे.

छंद कामदुघावत्समां ६+४+४+विप्र के ज+२+४=२४ लाववा केहे भाषा छंदोमंजरी, छंद प्रभाकर तथा छंदःप्रदीपमां ६+८+१० यति ला केहेछे.

छंदोवृत्तमुक्तावलीमां चोवीश मात्रा आणवानुं कही, प्रथम ११ म दोहाना लक्षणयुक्त आणवा केहेछे, तेमज १४ मी मात्रा लघु आणी, [illegible] आणवा केहछे, ते पछी वे चोकलिया [तेमां पेहेलो जगण सिवाय

+१ मात्रा [बने लघु किंवा एक गुरु] एम चोवीश मात्रा चरणमा लाववानु केहेछे. वळी चौदमी मात्राए विराम न आवे तो चपला काव्य नाम आपेछे.

९६ लघुमार्थी बब्बे लघु घटाडता अकेक गुरु वधे, ए क्रमे नीचे प्रमाणे काव्यना ४५ भेद थायछे.

चडतो अंक.	नागपिंगल प्रमाणे भेद.	लघु	गुरु.	
१	शक्र	९६	०	शूद्रा जाति
२	शंभु	९४	१	
३	सूर-सूर्य	९२	२	
४	गंड	९०	३	
५	स्कंध	८८	४	
६	विजय	८६	५	
७	दर्प	८४	६	
८	तालाक, तारांक], ताटंक*	८२	७	
९	समर	८०	८	
१०	सिंह	७८	९	
११	शेष, शीर्ष	७६	१०	
१२	उत्तेज	७४	११	
१३	प्रतिपक्ष, फणीरक्ष, अरि.	७२	१२	
१४	परिधर्म, प्रतिधर्म]	७०	१३	
१५	मराल	६८	१४	
१६	मृगेन्द्र	६६	१५	
१७	दंड	६४	१६	
१८	मर्कट	६२	१७	
१९	मदन	६०	१८	
२०	महाराष्ट्र, मरहट्ट	५८	१९	
२१	वसंत	५६	२०	
२२	कंठ	५४	२१	
२३	मयूर, मोर	५२	२२	

] वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां ए नाम छे.

*प्राकृत पिंगल सूत्रकार रविकर ए नाम आपेछे.

२४	बंध	५०	२३
२५	भ्रमर*	४८	२४ वैश्याजाति
२६	बीजो महाराष्ट्र	४६	२५
२७	बलभद्र	४४	२६
२८	राजा	४२	२७ क्षत्रियाजाति
२९	वलित	४०	२८
३०	राम	३८	२९
३१	मन्थान	३६	३०
३२	बली	३४	३१
३३	मोह	३२	३२ ब्राह्मणीजाति
३४	सहस्त्र नेत्र.	३०	३३
३५	बाल.	२८	३४
३६	दप्त.	२६	३५
३७	शरभ.	२४	३६
३८	दंभ.	२२	३७
३९	अह, दिवस.	२०	३८
४०	उदंभ.	१८	३९
४१	वलितांक.	१६	४०
४२	तुरंग.	१४	४१
४३	हरिण.	१२	४२
४४	अंध.	१०	४३
४५	भ्रंग.	८	४४

*केटलाक "मित्र" नाम पण आपेछे, एम प्रा पिं सूत्रना टिप्पणमां लख्लुं

काव्य अने षट्पदीना दोष विषे.

१ पददुष्ट एटले व्याकरण रीतिए अशुद्ध होय तो काव्य पंगु केहेव

२ मात्रा ओछी होयतो खज केहेवाय.

३ मात्रा अधिक होयतो—वातुल केहेवाय

४ जेमा रकार के लकार न आवे—ते बधिर केहेवाय.

५ जेमां कोइ अलंकार आवे नहि ते—अंध केहेवाय.

६ छंदोभग एटले मात्रानो क्रम होय ते टूटे तो—मूक केहेवाय.

૭ અર્થહીન હોય તે–દુર્બલ કેહેવાય.

૮ જેમા કર્ણકઠોર અક્ષરં આવે તે–કૈકર કેહેવાય.

૯ ઓજ, પ્રાસાદ, શ્લેષ, આદિથી હીન હોય તો તે કાણ (કાણોં) કેહેવાય.

ઉપર લખેલા દોષો કાવ્યજાતિ અને ષટ્પદી જે તેનાજ ઉપરથી થાયછે, તેનાં પ્રસંગમાં નાગપિંગળ અને વૃત્તમૌક્તિક આદિમા જણાવ્યા છે, પરંતુ સામાન્ય રીતે સર્વ પ્રકારની કવિતાને પણ તે લાગુ પડેછે

કાવ્યજાતિમાં ૩૨ લઘુ સુધીના ભેદ હોય તે બ્રાહ્મણી જાતિ કેહેવાય, ૪૦ લઘુ સુધીના ક્ષત્રિયાજાતિ કેહેવાય, ૪૮ લઘુ સુધીના વૈશ્યાજાતિ અને તે ઉપરાંતના શૂદ્રાજાતિ કેહેવાય.

૮૯ રોલા, રોડા. ૧૧,૧૩ યતિ= ૨૪ માત્રા.

૧,૫,૯,૧૩,૧૭,૨૧ માત્રાએ તાલ.

૪+૪+૪+૪+૪+૪=૨૪, તેમાં અંતે ગુરુ (ચિ.પિ.)

ચોકલિયા ગણ છ કર, રચી ગુરુ અન્તે એમાં, ૧૨૧૧
આગિયારે યતિ આણ, પછી તેરે છે જેમાં; ૧૬૭
પ્રથમ ઉપર છે તાલ, પછી ચચ્ચારે આવે, ૧૬૭
રોલા, રોડામાંહિ, કલા કવિ ચોવીશ લાવે. ૧૦૨.૭૮૯૭

૧૧ ગુરુ ને ૨ લઘુના ચરણવાળી કુન્દ જાતિ થાય, તેના બધા મળીને ૪૪ ગુરુ તથા ૮ લઘુ થઇને ૯૬ માત્રા થાય, તેમાથી એકેક ગુરુ ઓછો થાય તથા બબ્બે લઘુ વધે, એ ક્રમથી કર્ણાગલ આદિ ૧૧ ભેદ થાય એમ વાગ્વલ્લભ અને માગધી નાગપિંગળમા જણાવેછે મ, ત, ર, મ, ગ, એમ લાવવા લખપતજસસિંધુ તથા ગૌડપિંગળમાં કેહેછે, તે તેર અક્ષરના અતિજગતિ છંદમાં ૧૬૧મો વસ્તુ નામે ભેદ થાય, પણ જો તેને અક્ષરમેળ ઠરાવવામા આવે તો પછી તેના ભેદ થઇ શકે નહિ. મનહરપિંગળમાં ૬+૪+૪+૪+૪+૨=૨૮ માત્રા લાવવા કેહેછે. પણ વાગ્વલ્લભ, છંદશાસ્ત્ર અને વૃત્તમૌક્તિકમાં, કશા નિયમ વિનાની માત્ર ૨૪ માત્રાજ લાવવાનુ કેહેછે, અને માગધી નાગપિંગળ અંતે ગુરુ લાવવા કેહેછે

છંદપ્રભાકર કેહેછે કે–"કોઇ કોઇ કવિયોનું મત એમ છે કે, એના

अतमां बे गुरु जोइये." पण ते मत सर्वमान्य न होवाथी ते पोतेज केहेछे. वळी एज ग्रंथमां कह्युं छे के "एनुं बीजुं नाम काव्य पण छे. जे रोलाना चारे चरणोमां ११मी मात्रा लघु होय ते रोला 'काव्य' केहेवायछे. कुंड- लियामां एनो प्रयोग थवो जोइये, कोइ कोइ कविए काव्यनी यति ६,८ अने १० उपर मानी छे."

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां इच्छानुसार गुरु लघु लाववानुं कह्युं छे, वळी तेमांज ११ गुरु तथा २ लघु लाववाथी शुद्धरोला थाय, एम पण कह्युंछे.

प्रत्येक चरणमां ११ गुरु अने २ लघु आवे तो उपर लख्या प्रमाणे शुद्धरोला थाय, पण यति न पाळिये तो १२ गुरु प्रत्येक चरणमां गणी अकेको गुरु घटाडी बब्बे लघु वधारी प्रस्तार करतां १२ भेद थाय, एम नारायणभट्टीमां जणावी नीचे प्रमाणे भेद लखेछे:—

क्रम.	भेद-नाम.	गुरु.	लघु.
१	कुंद.	११	२
२	करताल	१०	४
३	मेघ.	९	६
४	तालक.	८	८
५	काल.	७	१०
६	रुद्र.	६	१२
७	कोकिल.	५	१४
८	कमल.	४	१६
९	इंद्र.	३	१८
१०	शंभु.	२	२०
		१	२२

४	तालङ्क.	१०	७६	९६
५	कालरुद्र.	९	७८	९६
६	कोकिल.	८	८०	९६
७	कमल.	७	८२	९६
८	चंद्र,इन्दु.	६	८४	९६
९	शंभु.	५	८६	९६
१०	चामर.	४	८८	९६
११	गणेश.	३	९०	९६
१२	शेप+	२	९२	९६
१३	सहस्राक्ष.	१	९४	९६

+प्राकृतपिंगळसूत्रमा १२ मु सहस्राक्ष अने १३ मुं शेष एम नाम आप्यां छे.

आर्णाभूपणमा ११मी मात्राए यति लाववा कह्युं छे सांगवी पिंगळसूत्रमा तेमज बीजा केटलाक पिंगळमा 'अंते गुरु आववोज' एवो प्रतिबंध नथी, अने तेवा उदाहरणो पण मळी आवेछे कृष्णभट्ट कृत छंदोरत्नावलीमां बारे यति जणावी, लखे छे के, अगियारे यति आणवा केटलाक केहेछे, पण तेम करवाथी काव्यजाति साथे मळी जायछे

९० रसावली, रोडक, चतुष्पदी, अर्कच्छाया. ११, १३ यति.

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल.

चोविशे कुल कल करो, रसावळी के रोडकमा, १८८४१
अगियारे यति थाय, वळी तेरे छे तुकमां, १७८७८
चतुष्पदी मळॅ सर्व, रचो रोलाना ताले, १६८
अर्कच्छायामांह, सरस कविवर संभाले. १०२. ४०९३

वाग्वल्लभादि केटलाक ग्रथमां काव्य, रोला अने अर्कच्छायाने एकज मानेला छे, पण उपर प्रमाणे लक्षण भिन्न मळवाथी अमे तेने जुदा पाड्याछे

९१ गुप्त. १४, १० यति=२४ मात्रा तेमां आद्यंते नगण.

१, ५, ९, १३, १५, १९, २३ मात्राए ताल.

प्रथम नगण धर प्रति पदमां, चरमे धरी नगण, ६१११८
यति धर चौद अने दशमां, कुल कल चोविश गण; ६७८६०
शशि शर नव जख तिथि ओगणी, तालज त्रेविशपर, ६६८९६
सरसज गुप्त बने जाति, कोइ रचे कविवर. १०४ ६६६८९

९२ शोभना. १४, १० यति=२४मात्रा, तेमां अंतेजगण, छंद प्रभाकर प्रमाणे,

१, ८, १५, २२ मात्राए ताल

चौद कलने दश उपर यति, जगण छेवट आण, ४२१७३
एम चोविश कलतणी आ, शोभना कवि जाण; ४०६७३
प्रथम पर वळी सात साते, ताल सुंदर सार, ४०६४५
ढाळ रागे गाय तो ते, थाय छे सुखकार. १०५. ४०६२६

९३ रूपमाळा. छंदःप्रभाकर प्रमाणे. १४, १० यति=२४ मात्रा, तेमां अंते गल.

१, ८, १५, २२ मात्राए ताल

चौद ने दश बे विरामे, वीशने कल चार, ४०६३६
शोभना सम ठाठ छे पण, जगण जरूर न धार; ४६१८४
अंतमां गुरु ने लघु तो, रूपमाळा थाय, २९१९३
एकपर पछी सात चडतां, ताल एम रचाय. १०६. ४०७८८

९४ दिक्पाल. १२, १२ यति=२४ मात्रा, तेमां अंते बे गुरु.

३, ९, १५, २१ मात्राए ताल.

चोवीश कला पूरी, दर चरणमांहि आणो; ६५४१
यति थाय कला बारे, दिक्पाल जाति जाणो; ~~५५७८~~ ५५८५
त्रण पछी भक्ति ताळो, तिथि एकवीश माथे, ५५६१
वेतोनां राह बोलो, ए जाति गाइ साथे. १०७. ५१८५.

रेखता के नज्रीरना वेतोनी रीते आ जाति गवाय छे.

१५. दंडी. मात्रा २४ तेना अक्षर १८

गग ललल गग ललल गग ललल

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल

बे गुरु उपर मूको लघु कल चारे सरसज, ६५४७३
एवी ठीक रचना तुं त्रिपट करीने पद सज; ६५४७३
एवा वरणज अष्टादश कर चोवीश कलज, ६५४७३
भूने श्रुति श्रुति ताले चडतोज दंडी महि धज. १०८.६५४७३

वाग्वल्लभमा लखेछे के आ प्रमाणे आ जाति अक्षरमेळ वृत्त थइ जायछे, तेथी जो तेमा गणना करवी होय तो छेल्लो सगण आणवो, अने तेनु नाम दंड आपवुं

१६ लीला. १२,१२ यति, ६+६+४+४+४=२४ मात्रा.

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल

छ कल प्रथम रच चारू, ते पर पछीथी छ कला, २१३१[illegible]
तेपर चोकलिया त्रण, रूडा गण रच तुँ भला; २७२२८
रविपर यति कल चोविश, लीला रचना करजे, २०४७३
शशिपर पछी श्रुति श्रुतिपर, ताले चडती धरजे. १०९. २०५२८

आश्चा छंदोमजरी अने छंद प्रभाकरमा, ७,७,७,३ यति कही छे, विशेषमां छंद प्रभाकर अंते सगण लाववा केहेछे, पण ते मत बीजा पिंगळकारो मान्य करता नथी वळी एज ग्रथकारे आना अर्द्धने पण लीला जाति कही छे.

महावतारी-२५ मात्रानां १,२१,३९३ वृत्ति थायछे.

१७ खांग, गयणंग, गगनागन, नगनांग. १२,१३ मात्राए यति

६+४+४+४+४+ल+ग=२५ मात्रा. तेना २० अक्षर,

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल

छ कल उपर चोकल गण, चार रुडाज रचायछे. २५१६७५

विश अक्षर, प्रथमे ने, चडतॉ चतुर पर तालछे, २८४५५
                    १३
यति द्वादश वळॉ जखपर, गगनांगणनी चालछे ११०. २०५०२

चिंतामणी केहेछे के आदि छ कल, अंते रगण, अक्षर २० अने बारे विश्राम आणवो. भाषा छंदोमंजरी १६,९ यति केहेछे, ते बराबर लागतु नथी वृत्तमौक्तिकमां प्रथम ६ मात्रा लाववा केहेछे, ते पछीनो नियम कइ जणाव्यो नथी मागधी नागपिंगळमां प्रथम चार मात्रा अंते ल ग, मात्रा वधी २५, तेना अक्षर वीश, १२, १३ यति (पाठांतरे १६, ९ यति) कही छे

रागुवल्लभमां १२,१३, यति, मात्रा २५, अंते रगण आणवा कह्युंछे, मनहरपिंगळमां प्रथम विप्रगण, तेना अंते रगण, मात्रा २५, अने तेना अक्षर २० केहेछे. लखपतजशसिंधुमां अंते गुरु कह्यो छे

मारवाडी हरिजशपिंगळमां अंते गुरु अने वीश अक्षर अवश्य लाववा कह्युंछे छंदसारमां वीश अक्षरना २५ मात्रा लाववा केहेछे, अने तेमां पदर लघु तथा पांच गुरु लाववा एम केहेछे वाणीभूषणमां अंते लघु गुरु न केहेता रगण आणवानु कह्यु छे, अने वीश अक्षर आणवानी फरज बतावी नथी. प्राकृतपिंगळसूत्रकार प्रथम चोकलियो अने अंते गुरु लाववा केहेछे.

छंद प्रभाकरमां गगनानङ्ग नाम आप्यु छे, अने तेमां १६, ९ यति तथा अंते रगण लाववा कह्यु छे, वळी तेमां कह्यु छे के–"कोइ कोइ १२,१३ यति माने छे अने तेज ग्रंथकार विशेष नियम बतावेछे के– प्रत्येक पदमां पांच गुरु अने पदर लघुथी वत्ता ओछा गुरु लघु न होवा जोइए

९.८ मुक्तामणि. १३, १२ यति=२५ मात्रा. तेमां अंते बे गुरु.

३, ७, ११, १४, १८, २२ मात्राए ताल

कल तेर उपर पछॉ बार, यति रुडेरा राजे, ८४७

छे सकळ कळा पच्चीश, कहॉ मुक्तामणि काजे; ११७१२

    ७   ११   १४   ४
त्रण मुनि शिव मनुए ताल, पछॉ श्रुति चडती आवे, ६५६६

दरेक प्रति स्पष्ट ठिक ताल, रचिने कविवर लावे. १११. १५८७९

९९ मदनांतक मात्रा २९. तेना अक्षर २० अंते ग.

प्रथम एक चोकलियो वचे गमे तेवा गुरु

१, ५, ९, १२, १६, २१, २४ मात्राए ताल

थाय कला प्रतिपद पचिश परिपूर्ण मदनांतके, २७०५१
करजो वर्णो सकल वीश ज्यम पद विषे थइ शके ३६५५१९
प्रतिपद प्रथम ङगण धरी चरमे गुरु आणजो, २००६२
पछी वचवचमां गमे त्यम गुरु लघु करी जाणजो. ११२. ~~१३४२०~~ ४२२१९८२

‡ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा आ जाति छे

१०० सुगीतिका. १५, १० यति=२५ मात्रा. आद्यंते लघु

२, ५, ९, १२, १६, १९, २३ मात्राए ताल

सुगीतिकामां आदि लघु कल, चरण चरणे आण, ५७२२८
पचीश कल धर चरण चरणे, प्रभाकर§ परमाण, ७१८२९
द्विनीय ऊपर अनुक्रमे जो, ताल त्रणपर चार, ७३०७५
धरेज कविजन चरण चरणे, सात सौ निरधार. ११३. ६६०५१

§ छंद.प्रभाकर अने छंदार्णव प्रमाणे

महा भागवत-२६ मात्रानी १,९६,४१८ वृत्ति थायछे.

१०१ शंकर, चावर. १६,१० यति=२६ मात्रा, तेमां अंते गुरु लघु.

३, ६, १०, १३, १७, २०, २४ मात्राए ताल.

कल सकल छव्विश चरण चरणे, छे गुरु लघु छेह, १०६८६३
यति सोळ ने दश माहीं आणो, जाति शंकर एह; १०६३९४
चावर कविजन अवर कहेछे, छे त्रीजी पर ताल, १०६४८५
त्रण चार चडते ताल कविवर, सात तुं संभाळ. ११४. ७९०८०

१०२ विष्णुपद. १६, १० यति=२६ मात्रा, तेमां अंते गुरु.

१, ५, ९, १३, १७ २१, २५ मात्राए ताल

सोळ उपर वळी दशे विरति छे, छेलो गुरु धरो, ३५९४२

एकंदर कळ छव्विश एवी, भाव धरीज करो; ५३३७७
एक उपर चच्चारे चडती, सात धरो तालो, ७१५४
विष्णुपद सोहाती जाति, गुणिजन मन वालो.११५. २७०६८

१०३ लघुझूलणा. ७,७,७,५ यति=२६ मात्रा. अंते ग,ल.

३, ६, १०, १३, १७, २०, २४ मात्राए ताल.

मुनि सतने, मुनि पंच यति, चरमे गुरु, लघु मान, १९७७५८
ए रीत कुल, छव्वीश कल, प्रति पदविषे, परमाण; ११०३२०
त्रण चारना, क्रमथी चडे, त्रीजी थकी, तो ताल, ७७७३७
छे जाति ए, लघुझूलणा, कवि सरस ते, संभाळ.११६. ८१३०५

छंद.प्रभाकर आने "झूलना (प्रथम)" एवु नाम आपेछे.

१०४ गीता. १४, १२ यति=२६ मात्रा अंते गुरु लघु.

३, ६, १०, १३, १७, २०, २४ मात्राए ताल.

मनु भानु विरति धारि गुरु, लघु अंतमां तुं आण, ७८०८०
छव्वीश कल त्यां सकल तुं, प्रति चरणमांहे जाण; ८१३७५
त्रीजी पछी त्रण चार पर तो, सात छे शुभ ताल, १०६७७०
ते जाति गीता थाय छे, कविराज! तुं संभाळ.११७. ७८६८८

१०५. गीतिका। १४, १२ यति=२६ मात्रा. अंते लघु गुरु.

१, ४, ८, ११, १५, १८, २२, २५ मात्राए ताल.

१०६ कामरूप. ९,७,१० यति=२६ मात्रा. तेमां अंते गुरु लघु‡.

३, ६, १०, १३, १७, २०, २४ मात्राए ताल

नव सात दशपर, विरति लावी, अंत गुरु लघु आण, ११७४४२
छव्वीश कलनी, जाति एवी, कामरूप प्रमाण; १०६३७२
त्रीजी उपर धरो, ताल त्रण ने, चार चडतो चाल, ८९०६२
प्रभुतणी प्रीति, पामवाने, भजनमां मन घाल. ११९. १०८९४२

‡छंद प्रभाकर प्रमाणे

नाक्षत्रिक-२७ मात्रानां ३,१७,८११ वृत्ति थायछे.

१०७ आत्रेय. १०,१०,७ यति=२७ मात्रा, तेमां अंते लघु गुरु.

१, ६, ११, १६, २१, २६ मात्राए ताल

कल सतावीशमा, लघु गुरू अंत छे, एक झडमां, ९४६३७
प्रथमपर ताल पछी, पांच चडती धरो, ठीक पदमां; ९५१६३
दश पछी दश अने, सातपर यति करो, स्थान त्रणमां, ९६७१३
जाति आत्रेय तो, ठीक गणो जेय तो, कुशल जनमां. १२०. ११२३४७

१०८. शुभगीता× १५, १२ यति=२७ मात्रा, तेमां अंते रगण‡

२, ५, ९, १२, १६, १९, २३, २६ मात्राए ताल

यति धरी पंदर रवि१२ पर, रगण अंते आणजो, ५०२८५
धरी कला सत्ताविशज कुल, शुभगीता ते जाणजो; ५०४६३
द्वितीय पर दइ ताल त्रण ने, चार पछी चडती करी, ७२७६१
भलीज जाति प्रभाकरे× भणी, हरिगीते गाजो खरी. १२१. ५०२५१

× छंद प्रभाकर. ‡ छंदार्णव अन्ते गुरु ज आणवा केहेछे

१०९ अतिगीता. (छंदार्णव प्रमाणे) २७ मात्रा, तेमां अंते लघु.

१, ४, ८, ११, १५, १८, २२, २५ मात्राए ताल

बीश ने स्वर७ मात्रिकामा लघु करजे अंत अंत, १५४६५७

ए प्रमाणे चरण चारे रची हवे बुद्धिवंत; १५०४९७
पे'लीने त्रण चार चडते आठ आठज ताल घाल, १६२१७६
आण अतिगीता विषे रचना रुडेरी एह चाल. १२२. १५१४५५

११० सरसि.† १६, ११ यति=२७ मात्रा. तेमां अंते गुरु लघु.*
१, ५, ९, १३ १७, २१, २५ मात्राए ताल

रचिये सत्ताविश कलकेरी, सरसी जाति सार, १२४१७८
सोळ अने अगियारे यति छे, अंते गुरु लघु धार; १८५८७४
प्रथम पछी चच्चारे चडती, ताल चतुर संभाळ, १४६२५१
सकल मळीने एवी कविजन, सात सरस धर ताल.१२३. १९३६०६

† भाषा छंदोमंजरी. * छंद प्रभाकर प्रमाणे

यौगिक-२८ मात्रानी ५,१४,२२९ वृत्ति थायछे.

१११ सारसमाला‡ ७ड(४+४+४+४+४+४+४)=२८ मात्रा.
१, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल.

सात डगण संयुत तो अठ्ठाविश कल सर्वे लावो, ८४१६
भक्ति रसे भरपूर रहीने श्री प्रभु ने मन भावो; ५३३०२
एक पछी चच्चारे चडती तालो सातज धरजो, १६८१४२
छंदलतानी एवी रीते सारसमाला करजो. १२४. १२८१६२

‡ छंदोलता प्रमाणे.

११२ हरिगीत. ५+६+५+५+५+ ग =२८ मात्रा.
३, ६, १०, १३, १७, २०, २४, २७ मात्राए ताल.

कल पांच उपर टगण करी पछी ठगण त्रण ठीक आणजो, १२१३७७
हरिगीतमां गुरु एक अन्ते एम अंतर जाणजो; १०६३९४
कुल कला अठ्ठावीशमां त्रण उपर पेलो ताल छे, ८१२७२
पछी त्रणे श्रुतिना क्रमवडे वण जगण कल वस ताल छे.१२५.१२०९७७

छंदार्णवमा प्रारभमा बे लघु मात्रा लाववा केहेछे पण वाणीभूषणमा प्रारभमा इंद्रासन गण (ISS) वर्ज्य करीने पाच मात्रा लाववा कह्युछे, तो कुसुमगण (ISII) लाववाने हरकत नथी एम समजायछे, पण ते मत उचित नथी

छंदोवृत्तमुक्तावलीमा उपरनु माप आपी यतिविषे कइ लख्यु नथी

छंदोवृत्तमुक्तावलीमा हरिगीतना मापमाथी अतनो गुरु कमी करता बाकी २६ मात्रानो अनुहरिगीत थायछे, एम कह्यु छे विशेषमा तेमा लख्यु छे के अनुहरिगीतना मापमा आरंभे बे मात्रा वधारवाथी (२८ मात्रानी) मंद्रगति जाति थायछे, अने ते (अनुहरिगीत) मा ज बे मात्रा घटवार्थी (२४ मात्रानी) लघुहरिगीत जाति थायछे.

१६,१२ यति=२८ मात्रा तेमा अन्ते रगण अथवा गुरु आणवा कही तेनु नाम हरिगीत आपवानु जे पिंगळमा होय ते बराबर नथी एम उपरना नियमथी जणाशे

११३ गिया, †गीता, *गीयक, † हरिगीता, गियामालती, वेताल, वैतालिक, *गीतक. ९,७,१२ यति§=२८ मात्रा, तेमा अंते गुरु.

३, ६, १०, १३, १७, २०, २४, २७ मात्राए ताल

गण चार चोकल, बार तेपर रगण के गुरु राखजो, १०९९६५
नव सात द्वादश, विरति जेमां, ताल हरिगीतनी सजो; ११७४२९
वेताल, गीया, हरिगीता वळी, गियामालती भाखजो, १०५८३८
गीतक कहे मरु देशमां ए, वात गोखी राखजो. १२६. ७७७३८

† रूपदीपमा "कर चार चौगुन धार, सख्या वहुरी वारहीं लीजिये" एम जणावी अन्ते रगण लाववा केहेछे

‡ सारंगधी छंद.शतकना ए बने नाम छे *मारवाडमा ए नाम आपेछे

§ वृत्तमौक्तिकना कर्त्ताना पिताए पिंगळविवृत्तिमा १४, १४ यति बीजा कवियोनी सम्मतिये राखेली छे छंद प्रभाकरमा हरिगीतिका जाति छे, तेमा १६,१२ यति= २८ मात्रा अन्ते रगण अथवा लघु गुरु लाववा केहेछे अमने मळेल ग्रथोमा आवी कोइ जाति नथी

११४ हरगीत. ५+६+५+५+३+ ग, ग=२८ मात्रा.

१, ६, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल

अट्ठाविश कळ प्रतिपदमांहे सकल सरस सट आवे, ७३६५७

कल पांच उपर एक टगण करी पछीथी ठगण बे लावे; २५८५५
पछी त्रण कलपर बे गुरु धरवा हरगीत रचवा काजे, २७६१
प्रथम उपर पछी चर्डी श्रुति श्रुतिये मुनि ताल बधा राजे. १२७. २०६०

११५. चोपाया. १६, १२ यति=२८ मात्रा, तेमां अंते गुरु.
१, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल.

अठाविश कल सौ मळी आणो, चरमे गुरु शशि धरजो, १८८२३०
प्रथम विरतीमां चार कलाना, चार रुडा गण करजो; १७४६८३
प्रथम उपर पछी चच्चारे मुनि, ताल पदे न विसरजो, १७५५४५
चोपायामां सोळे बारे, बे यति एम उचरजो. १२८. १७४५२७

पादना आरंभमां जगण, नगण न लाववा चित्रसेन टीकावाळा नागपिंगळमां कह्युं छे; आ जाति बे चरणनी पण कोइ बोले छे, मारवाडमां एने ककुभा कहे छे, तेनो अर्थ दिशा थायछे, अने दिशा चार छे, माटे चोपाया. आ जातिना रागने माटे प्राचीन काव्यमाळा ग्रंथ ३जामां राजसूय यज्ञ पृ. ६ मां "राग रामग्री–चोपायानी देशी" एम लख्युं छे.

११६. ककुभा. (भाषा छंदोमंजरी प्रमाणे) १६, १२ यति=२८ मात्रा
१. ५, ९. १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल.

सकल कला अठाविश आणो, चरण चरणमां जोई, २७२०६
प्रथम विरति तो सोळे आवे, बीजी बारे सोई; १३
पे'ली कलपर ताल धरी पछी, चडती चारे चारे, ३७४५
जाति ककुभा एम बने छे, कविजन एम उचारे. १२९. ५५८५५

११७ पैडि १३, १५, यति=२८मात्रा, तेमां अंते रगण.
१. ५. ९, १२, १६ २०, २४, २७ मात्राए ताल

अठाविश कल तो खरे, प्रति चरण चरणमां आणजो, ९२४
प्रथम विरति छे तेरनो, वळी बीजो पनरे जाणजो; ८६१
रगणज अंते राखतां, ठिक पैडि जाति थायछे. ७५१

१ ५ ९ १२
शशि शर नव रवि सोळ विश, चोविश सत्ताविश तालछे.१३० १०५६०१

११८ सारसी. ९+७+७+५=२८ मात्रा.

३, ६, १०, १३, १७, २०, २४, २७ मात्राए ताल.

नव सातपर धरी सातपर वळी पांच मात्रा आणजो, ७९११४
अट्ठाविशे छे चरण एवुं सारसीमां जाणजो; ६७७९१
धरी त्रण उपरनो ताल पछी त्रण चार क्रमथी तो धरो, ९००२९
तजी जगण जुगते आठ एवा ताल पदमां तो करो. १३१ ८८६६५

११९ सार. १६,१२ यति=२८ मात्रा, तेमां अंते बे गुरु.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल

सोळे बारे विरति आणी, अट्ठाविश कल मूको, ६४१३५
 ४ ४
प्रथम पछी श्रुति श्रुतिनी उपर, ताल कदि नव चूको, ५४२०१
एकंदर गणतां ते थाशे, ताल बधा मळी साते, ५३१६३
अन्ते बे गुरु कोइ कहे छे, सार ज जाति आ ते.१३२. ६९३१

आ जातिमा अन्ते बे गुरु छे, तेथी मराठी चालनी साकीने रागे ते बराबर गवायछे

१२० श्रीबन्धु. ७,७,७,७ यति=२८ मात्रा, तेमां अंते गुरु.

३, ६, १०, १३, १७, २०, २४, २७ मात्राए ताल.

मुनि मात्रनी, यति चार तो, अंते गुरु, एकज धरो, १५२७६२
श्रीबन्धुमां, प्रति चरणमां, विश आठ कल, कुल तो करो; ११८४१५
त्रीजी थकी, त्रण चार क्रम, करी आठ धर, ठीक ताल तुं, ११८७०३
श्रीबन्धुए, दीन बन्धु रट, कलिकालनो, धरी ख्याल तुं.१३३. १०७९५७

महायौगिक-२९ मात्रानी ८,३२,०४० वृत्ति थायछे.

१२१ महाराष्ट्र, मरहट्टा. १०,८,११ यति, तेमां अंते ग, ल.

६+४+४+४+४+४+ग+ल=२९ मात्रा. ३,७,११,१५,१९,२३,२७ मात्राए ताल.

तुं प्रथम छ कल कर पांच डगण धर, ते पर गुरु लघु मेल; ५०७३१८

मात्रा ओगणत्रिश, पदमां तुं धरिश, एवो आणी मेळ; ३२१९०३
दश वसु यति धारे, पछी अगियारे, एम विरति त्रण थाय, ५०३८१७
धर त्रण पर तालज, श्रुति श्रुति पर सज मरहट्ठा के'वाय. १३४. ३२८७३१

प्राकृतपिंगळसूत्र, वाणीभूषण, छंद कामदुघावत्स, चिंतामणी, इत्यादिमां उपर प्रमाणे माप छे, पिंगळादर्शमा एनी ३० मात्रा लखी छे, ते भूल जणाय छे छंदोवृत्तमुक्तावलीमा सात चोकलिया [तेमां अंत्य चोकलियो अल गुरुवाळो) +ल=२९ मात्रा आणवा कह्यु छे.

महातैथिक ३० मात्रानी १३,४६,२६९ वृत्ति थायछे.

१२२ ताटंक. १६, १४ यति=३० मात्रा.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल

त्रीशे त्रीशे मात्रा दीशे, प्रति पद मांहे बहु सारी, १३०७४३
सोळे चौदे यति बे आणो, सारी रीते संभारी; ५६
प्रथम उपर पछी चारे चारे, ताळो धारेछे जारी, ३४
ताटंके तो एवी ताळो, भाळो आठे शुभकारी. १३५. १२१३९४

छंदःप्रभाकरमा अते मगण लाववानुं कह्यु छे

१२३ चोपैया, चतुष्पदी, चतुरपद. १०, ८, १२ यति.=३० मात्रा. यमक आणवी. ४+४+४+४+४+४+स+ग=३० मात्रा.

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७ मात्राए ताल

षट चोकल पर धर, सगण तुं कविवर! तेपर गुरु धरजेजी, १८९१५०
कल त्रीश करो पूरी, बहुज मधुरी, चौपैया करजेजी; १२१९४५
दश आठे यति करो, बारे पछी धरो, एम विरति त्रण आवे, १८९१२१
दे ताल त्रीजीपर, श्रुति चडती धर, चौपैयामां भावे. १३६. ३१६५

पादना आदिमा जगण नगण न लाववा चित्रसेनटीकावाळा नागपिंगळना कह्युंछे छंदोवृत्तमुक्तावलीमां विश्रम स्थाने जगण न लाववा कह्युंछे, छंद. शास्त्र अने छंद.प्रभाकरमां ७ चोकालिया(तेमां अंते स)+ग=३० मात्रा आणवा कह्युंछे.

वळी १०, ८ मात्राए प्राग लाव्या विनानी पण चौपैया जाति मागवी छंद:गतकमा कही छे.

१२४ चूडामणि. १२, १८ यति=३० मात्रा.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल

चरण चरणमां मळीने, सकल कला त्रीश तो गणी करजो, ३५४६६५
बारे अने पुराणे, विरति बे गोठवी सरस धरजो; ४७५०२०
रचना बे गीतिनी, गणिने आणो नियम बधा धारी, ६४४५८
ते जातिने कं' छे, चूडामणि शोभती सरस भारी. १३७. १५९४००

१२५ साटक. १८, १२ यति=३० मात्रा, तेमां १८ मात्राना १२ अक्षर अने १२ मात्राना ७ अक्षर तेमां अन्ते गुरु.

१, ५, ९, १२, १५, १९, २४, २९ मात्राए ताल

आणो त्रीश कला प्रति पदविषे, अक्षरे ओगणीशे, ८३०८७
मात्रा अढार बार अक्षरतणी, एक विराम दीशे, ८३०९२
बीजो बार कल थइ वर्ण साते, योजी यति आणजो. २१४४९४
तेने साटक जाति शार्दूलसटा, रागे रुडी जाणजो. १३८. २१५४२६

आ जाति शार्दूलविक्रीडित वृत्तना रागे बोलाय छे. एटले तेना ताल ते प्रमाणे समजवा. तेना जे ४२ भेद थाय छे, ते कोइ मागवी पिंगळने आधारे लखेला छे, ए उपरथी एम धारणा थाय छे के ३० मात्रा साथे पूरेपूरा १९ अक्षर आणवा एवो नियम नथी, अने ते अभिप्राय अमने पण उचित लागेछे

मागधी नाग पिंगलना साटकना ४४ गुरु तथा ३२ लघुमाथी बब्बे लघु वधारता तथा अकेक गुरु घटाडता नीचे प्रमाणे ४२ भेद लखेछे —

१ सालूरो.	२ बसो.	३ दमाणो.
४ धीरो.	५ राहंसो.	६ चंदाणो.
७ कंतो.	८ सोमंतो	९ सव्वंगो.
१० भद्दगो.	११ चंगो.	१२ मारगो.

13 भावो.	14 विभावो.	15 सूरंगो.
16 मारो.	17 सुमारो.	18 धम्मंगो.
19 धीरो.	20 सधीरो.	21 कासारो.
22 अलखो.	23 लखो.	24 रासारो.
25 आणंदो.	26 मंदो.	27 सावीणो.
28 पछन्नो.	29 छन्नो.	30 भाविणो.
31 सारंसो.	32 कंसो.	33 हेरंबो.
34 वीरो.	35 सवीरो.	36 सेरंबो.
37 मोलंका.	38 चारो.	39 संचारो.
40 भारो.	41 विभारो.	42 संभारो.

अंक ४ अने १९से "धीरो" नाम मळी जायछे परतु आ नाम सुधारी शकवा वीजी प्रति न मळ्याथी तेम चलाववुं पड्युं छे.

अश्वावतारी--३१ मात्रानी २१,७८,३०९ वृत्ति थायछे

१२६ सवैयो, वीरछं. १६,१५ यति=३१ मात्रा, तेमां अंते गुरु,ल

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल

एकत्रिश मात्रा सौ मळीने, चरण चरणमां रचजो आप, ८८०८

सोळ अने तिथिये यति आणी, अन्ते गुरु लघु तेमां माप; ८९६३

प्रथम उपर पछी श्रुति श्रुति चडती, प्रतिपद मांहे ताल रखाय, ११५८९

एज सवैयो एकत्रीशो, कविजन रचिने मन हरखाय. १३९,१२९८९

आ जाति आशावरी रागमा गवायछे प्राचीन काव्यमाला द्रौपदीहरण पृ.

षोडश ने पंद्र पर दर अड, विरति रति धरी कविवर कर; १०२५१६१३
ताल सवैया समान धानज, डा पण धरी कर यमक अपार, १३४३१८६
रुचिकर रविरुचि मात्रा जाति, वर्नो जाती ते एज प्रकार. १४०.
११५२४६६

१२८ सपादी. १६, १५ यति=३१ मात्रा. (वाग्वल्लभ प्रमाणे)

१, ५, ९, १३, १७, २१, २३, २६, २८ मात्राए ताल

कुल मळीने कल एकत्रीश तो, प्रतिपदमां आणजो धारी, ५६१२०
सोळ अने पंद्र मात्राए, विरति रुडी लावजो सारी, ५५७७६
एकवी पछी बे त्रण बे चडती, रविरुचि केरी ताळो आणो, २७५०४
ए रचनाथी थाय सपादी, जाणीनी जाति छे जाणो. १४१. ४६५१६

छंदार्णवमां आने रूपसवैया कहेलछे, एना बीजा यतिमा पुष्पिताग्रानो राग छे

लाक्षणिक–३२ मात्रानी ३५,२४,५७८ वृत्ति थायछे

१२९ बत्रीशा सवैया. १६, १६ यति=३२ मात्रा, अने बे गुरु.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

बत्रिश मात्रा बधी मळीने, चरण चरणमां रचजो सारी, १४८५८७
सोळे सोळे यति आणीने, करजो पदरचना शुभकारी; ३८४५३०
बने सवैया बत्रीशा ठिक, जेमां बे गुरु छेल्ला आणो, ४७३५८
एक पछी च्चारे चडती, ताळतणी जुगती ठिक जाणो. १४२ ३७१३२५

१३० केतकी (सवैया) ४+४+४+४+४+४+४+ग ग,=३२मात्रा.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

चोकलिया गण सात रचीने, उपर बे गुरु आणो धारी, ५३३०२
सोळे सोळे यति राखीने, पद रचना करजो कवि सारी; ३७३५६४
ताळ सवैया बत्रीशा सम, चारे पादे सरखा आवे, १२२३८४
एम सवैयो रचजो केतकी, जे कविजनना मनमां भावे १४३ १४६६१५

१३१ रेखता ९,९,८,६ यति=३२ मात्रा तेमां अन्ते लघु, गुरु

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१, मात्राए ताल

राम सरस प्रतिपद, सकल कल रद रद,
अन्त लघु गुरु, प्रति झडमां, १३२१७९३
नव उपर नव कर, पछी वसु खट पर,
एम विरति धर, प्रति पदमां; १३३९३९०
त्रण पर धर प्रथम, चचार उपर सम,
ताल वसु सुगम, एम नकी, १०२१५४८
ए रेखता जाति, रसिक गणाती,
कवि टोंक गान सु, राग थकी. १४४. ८३४०

१३२ दंडकला. १०,८,१४ यति[†]=३२ मात्रा. तेमां छेल्लो गुरु

४+४+४+४+३+४+४+गा=३२ ३,७,११,१५,१९,२३,२७,३१ मात्राए ताल

प्रथम चोकल गण, चार प्रथम भण,
पछी पट कल कर ते उपरे, १०२८३०३
बे चोकलिया कर, ते पर गुरु धर,
एम कला बत्रीश खरे; ८५३७६३
दशने पछी आठे, चिद्या ठाठे.
त्रण यति एवा एम सजे, ८११६५२६
त्रण पछी चचारे, वसु कुल ताले,
दंडकला जाति निपजे. १४५. ८५०२७७

† मनहरपिंगलमा १८, १४ यति लखेछे, पण ते बराबर नथी छंद प्रभाकरमा अंते सगण लाववानु कह्यु छे, अने कोइ कोइ, अंतमां एक गुरु मानेछे छंदोवृत्तमुक्तावलीमां आनु नाम दंडकल आपी त्रिगपम जणावेछे के, आना मापमाथी आरभनी बे मात्रा ओछी करवाथी "लघुदंड

कल" जाति थायछे. अने तेज रीते पद्मावती आदिया पण चरणना आरं-
भनी बे मात्रा ओछी करवाथी "लघुपद्मावती" आदि नाम पडेछे

१३३ लीलावती. † ७ डगण+स=३२ मात्रा. १८, १४ विराम.

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्राए ताल.

करीं सात डगण दर चरण चरणमां, ११०४६९८
पछीं ते पर तो सगण करो,
अष्टादश ऊपर पछींथी चौदे,
धीरज धरीने विरति धरो, ११७४५७५
त्रीजी पर प्रथमज पछीं चच्चार
ताल बधा मळीं आठ गणो.
कल बत्रीश केरी एवी जाति,
लीलावती बहु ठीक भणो. १४६

† वृत्तमौक्तिक, छंदःशास्त्र अने मागधी
छदार्णवमां अंते सगण लाववा केहेले छंदोवृत्तमुक्ता.
आणवा कह्यु छे, पण तेना उदाहरणमां अंते सगण आण-
आठ डगण आणवानु कही अंते गुरु के सगण कंइ आणवा

१३४. त्रिभंगी. १०, ८, ८, ६ यति ८ डगण
तेमां अंते ग. आठे डगणमां जगण न आणवो.
अनुप्रास, ३, ७, ११, १५, १९ २३, २७, ३१ मात्राए ताल

३२
लीलावती ताले, कल रद वाले,
बहु संभाले, कविजन खरो, ११५७१४६
अन्ते गुरु एमां, जगण न जेमां,
४
श्रुति यति तेमां, प्रास करो; ८६७०४
८
यति दशने आठे, वसुना ठाठे,
रसने साथे, बेस भरो, ८३८६५४

ए जाति त्रिभंगी, रचि बहु रंगी,
अधिक उमंगी, ठीक ठरो. १४७. ८५७०४६

‡ छंदोवृत्तमुक्तावलीमां १०, १६, ६ यति कही छे दलपतराम कविए अंते बे गुरु लाववा लख्युं छे, तेनुं प्रमाण मळतुं नथी. छंदःशृंगारमां पण अंते एक गुरु छे. चित्रसेन टीका, नागराज पिंगळ, छंदशास्त्र तथा वाग्वल्लभमां आ जातिना उदाहरणमां पण एकज गुरु मूक्यो छे तथापि नियममां गुरु लाववो एम जणाव्युं नथी मागधी नागपिंगळमां छेल्लो सगण लाववानुं कह्युं छे, वळी ते विशेष एम पण जणावे छे के "सम के विषम पदमां जगण आवे तेनी चिंता नहि" लखपतजससिंधुमां पण एमज छे छंदःप्रभाकर केहेछे के "कोइ कोइ कविए आ जातिने अन्ते लघु वर्ण पण राख्यो छे, पण श्रेष्ठ कवियोए तो गुरुज राख्यो छे अने ते रुचिकर पण लागे छे." चित्रसेन टीकामां लखेछे के, यातिने अंते जगण आवे नहि
त्रिभंगी जाति दैत्यकुळमांथी प्रसिद्ध थइ छे, एम केहेवायछे

६० गुरु अने ८ लघुनुं पेहेलुं रूप गणतां (मूळ रूप राखतां) अक्केको गुरु घटी, बब्बे लघु वधतां त्रिभंगीना मुग्धादि ६१ भेद थायछे. ते नीचे प्रमाणेः—

क्रम.	भेदनाम.	लघु.	गुरु.
१	मुग्धा.	८	६०
२	नंदा.	१०	५९
३	रोहिनि	१२	५८
४	रामा	१४	५७
५	कलसा.	१६	५६
६	छंदा	१८	५५
७	मंदा	२०	५४
८	संखिनी.	२२	५३
९	हेरबा	२४	५२
१०	रत्नि	२६	५१
११	लंका.	२८	५०

१२	तर्का	३०	४९
१३	कामिनि	३२	४८
१४	कटा	३४	४७
१५	पाल्का	३६	४६
१६	रोहा	३८	४५
१७	लोहा	४०	४४
१८	सकरा	४२	४३
१९	पामा	४४	४२
२०	आमा	४६	४१
२१	मोहा	४८	४०
२२	परमा	५०	३९
२३	ससुता	५२	३८
२४	कपालिनी	५४	३७
२५	पारा	५६	३६
२६	सारा	५८	३५
२७	सभरा	६०	३४
२८	हारा	६२	३३
२९	सारा	६४	३२
३०	अत्र	६६	३१
३१	पाधा	६८	३०
३२	पद्मा	७०	२९
३३	पार्गेड	७२	२८
३४	पालीनी	७४	२७
३५	परिभगा	७६	२६
३६	माथा मंथा, त्रि मे	७८	२५
३७	नाथा	८०	२४
३८	अमा	८२	२३
३९	अमल	८४	२२
४०	अनग	८६	२१
४१	वेला	[illegible]	[illegible]

४२	वाला	९०	१९
४३	वालिनि.	९२	१८
४४	विंवा	९४	१७
४५	माला	९६	१६
४६	दुर्गा	९८	१५
४७	रेख	१००	१४
४८	चित्रनी	१०२	१३
४९	वेगा	१०४	१२
५०	चारा	१०६	११
५१	काला	१०८	१०
५२	हसी.	११०	९
५३	कमनि	११२	८
५४	सुभकुम्मारि.	११४	७
५५	कलहंस	११६	६
५६	दोसा	११८	५
५७	वोसा	१२०	४
५८	मवरु.	१२२	३
५९	सारा	१२४	२
६०	सीआ	१२६	१
६१	हंस	१२८	०

अंक २६, २९ अन ५९ मे "सारा" नाम एनुए आवेछे पण ते फेरववा बीजी प्रतिनो आधार न मळी शकवाथी एमज चलाव्यु छे

३८ प्रेमावती, पोमावती १६, १६ यति=३२ मात्रा, तेमां अन्ते बे गुरु.

१, ५, ९. १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

सोळे सोळे बे यति बोले, एम कला कुल बत्रिश लावे,
तेमां चरण चरणनी मांहे. बे गुरु अक्षर अन्ते आवे;
प्रथम पछी चच्चारे ताले. चाले वसु कुल हारे हारे,
ए रीते रचना करवाथी, प्रेमावती, पोमावती धारे. १४८.

छंद. प्रभाकरमा आवा मापने पद्मावतीनी यति गुर्वा तेनी साथे भेळवी

छेले, वळी तेनु बीजु नाम कमळावती पण आपेले, पण तेवी जाति जलहरण नामे जुदी छे पद्मावतीनु माप नीचे प्रमाणे सबळ मनथी प्रति पादन कर्युछे, तेज योग्य छे

१३६ पद्मावती, पउमावती [†] १०, ८, १४ यति=३२ मात्रा.

४+४+४+४+४+४+४+स=३२ मात्रा.

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्राए ताल

गण चोकल केरा, रचजो साते,
सगण सरस ते पर धरजो १२२०८४६
८ १४
दश वसु ने रसे, विरति प्रयसे,
बत्रिश कल करता करजो, १०१८०३८
४
त्रीजी कल उपर, पछी श्रुति श्रुति पर,
८
ताल सकळ मळी वसु रचजो. १३३६४७६
पद्मावती माती, ठिक वर्णी जाति, ८८ [illegible]
कविजन रचवाने मचजो. १४९ १-२२१-२२१

[†] मागधी छंद शतकमा ए नामछे

प्राकृतपिंगळसूत्रकार, अने वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीना टीकाकार, आठ गण चोकलिया लाववानु कही(जगण)सिवायना बाकीना चारमाथी गमे ते लाववानु कहेछे तेमणे छेडे सगण आणवा खास नियम बताव्यो नथी पण तेमणे आपेला उदाहरणमा ते जोवामा आवेछे छंद शास्त्रमा आठ जगण पैकी पयोधर (जगण) नामनु रूप न लाववु एम कह्यु छे

१३७ कामकला. १६, १६ यति=३२ मात्रा. तेमां अंते गुरु।

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५ २९ मात्राए ताल

सोळे सोळे यति सजो सारा,
कुल कल बत्रिश पूरण करजो, १२०५७६८
तेमा कविवर प्रति पदमांहे,
एक गुरु ठिक अन्ते धरजो, ८८५३८६

प्रथम उपर पछी चारे चडती,
वसु कुल तालो पदमां गणजो; ९१३१९३
कामकला ए जाति सारी,
ए रीते आदरथी भणजो. १९०. ९५३४३७

1 छंदार्णवमा अन्ते बे गुरु केहेछे पण तेम करवाथी ते प्रेमावती थइ जायछे. चिंतामणी पिंगळ अन्ते सगण आणवा केहेछे ते उचित छे.

१३८. दुर्मिला, दुमिलिया, दुमिला १०, ८, १४ यति=३२ मात्रा
३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१. मात्राए ताल. आठ सगण

गण चोकलिया ठिक, आठ रची वर्यो,
बत्रिश मात्रा तो करजो; ८५२७७७
दश आठ अने वळी, चौद उपर यति,
एम तमे त्रण ठिक धरजो; १२९२९९८
तजी बे मात्रा पछी, श्रुति श्रुति उपर,
आठ करी कुल ताल खरे; ९७५२०४
दुमिला दुर्मिला, दुमिलिया वळी,
नाम धरे कृति एम करे. १९१. ९१८८५८

छंद-शास्त्र, नागपिंगळ, मनहरपिंगळ अने लखपत जशसिंधुमा १०, ८, १४ यति केहेछे, पण अन्ते गुरु विषे कइ कहेलु नथी, तो पण तेमना दृष्टांतमा ते छे. छंदोवृत्तमुक्तावलीमां १६ मात्राए यति कही छे वळी विशेषमा जणाव्यु छे के "केटलाक अंते सगण लाववा केहेछे. छंद प्रभाकर अन्ते सगण पछी बे गुरु लाववानु कही, टीकामा जणावेल छे के" श्रीखारीदासे (छंदार्णवना) उदाहरणमां पेहेला बे पादमां अन्ते बे गुरु अने पछीना बे पादमां अन्ते सगण राख्यो छे, पण ते सर्व सम्मत नथी तेमज ते (छंद.जाति) ग्रंथथी पण विरुद्ध छे श्रीमद भट्ट ह्लायद्धे अन्तना गुरु लघु विषे विशेष कइ कह्युं नथी

१३९ जलहरणां†, कमलावती§, धरा‡. १०,८,८,६ यति=३२ मात्रा.

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्राए ताळ.

कुल कल बत्रीशे, पूरी दीशे;
प्रति पद विषे, एम भणी, ८५६५२१
दशपर कल वसु धर, वसु कल तेपर,
रस कल वळी कर, विरति तणी; १३४५२८२
तजी वे पछी धारे, चारे चारे,
हारे हारे, वसु तालो, ३१७८२१
तो जलहरण अने, कमलावतीनी,
जुगती वाळी छे माळो. १९२. ७९२९

† चिंतामणिमा आ जातिनुं माप जलहरण प्रमाणे लख्युंछे, ते भूल छे.
§ चित्रसेनटीका–मागधी पिंगळ. ‡ भाषाछंदोमंजरी.

१४० दंडक १८, १४ यति. कोई १०, ८, १४ यति करेछे.

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्राए ताल.

कर वर्धो मळीने कल, बात्रिश पूरी,
चरण चरणमां ठीक धरी, ६०३३२९
यति एक अढारे, बीजो चौदे,
एम प्रति पदमांह करी, ९७११५४
तजी वे कल पछीथी, श्रुति श्रुति उपर,
ताल चडे वसु सुधी जाती,
ए दंडक नामे, कविता कामे,
आवे उपयोगी जाति. १९२. ४६५२१

छंदोवृत्तमुक्तावलीमां ४+४+४+८+६+४+४+ग=३२ मात्रा लखवा कह्युं छे. पण १३२ अंकनी दंडकला जाति एज मापनी थाय छे वळी वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा उपर मुजब गण पाडीने तेनु नाम दंडकाहल आप्युंछे

१४१ जलहरण. १०, ८, ८, ६ यति=३२ मात्रा, तेमां वधा लघु, अन्ते एक गुरु. ३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्राए ताल.

द्विगवर जळ निधि कर, चरण चरण पर,
पछी तुं सगण धर, प्रतिपदमां, १३४६२६८
रद्र कळ कर वधी मळी, सरस सरस वळी,
नरस नरस तजी, दूर झडमां; १३४६२६८
दश कळ पर यति धर, वसु वसु पर कर.
पछी धर रस पर, ठीक यति तो, १३४६२६८
ठीक जनहरण जरूर, जळहरण ज सुर,
बन नाहि कदी क्रूर, धरी प्रीति तो. १४४. १३४६२६८

શુદ્ધધ્વનિ માંહે, દશ વસુ જ્યાંહે।
૧૪
મનુ કલ ત્યાંહે વિરતિ દિશે. ૧૯૫. ૧૧૭૪૮૫૭

છંદ.પ્રભાકર કેહેછે કે, ત્રિભંગીને વીરરસના વર્ણનમા કોઇ કોઇ કવિ શુદ્ધધ્વનિ કેહેછે, પણ તેમાં જગણનો નિષેધ કર્યો નથી

† કર્ણ (SS) બે ગુરુ દ્વિજવર (।।।।) ચાર લઘુ

૧૪૩ મદકરણ. ૧૦, ૧૨, ૧૦ યતિ. (ય+ય+ટ+ટ+ઠ+ઠ)=૩૨માત્રા.

૨, ૭, ૧૧, ૧૫, ૧૯, ૨૩, ૨૭, ૩૧ માત્રાએ તાલ

ધરો આદિમાં બે, તારાપતિ ગણ તે પર,
બે ટ ઠ ગણ ધરજો, ૧૨૯૨૫૩૨
૧૦
દિશા બાર લાવો, યતિ વળી દશ પર ત્રીજો,
ધરી ગણન કરજો. ૧૨૪૬૬૮૫
૮ ૮
બીજે સાત તાળો, પછીથી ચડના શ્રુતિ શ્રુતિ,
૬
ષટ તાલન રચજો, ૧૨૨૧૮૩૨
કળા થાય પૂરી, બત્રીશ એવી જાતિ,
મદકરણ સમજજો. ૧૯૬. ૧૩૧૭૯૯૫

આ જાતિ વાગ્વલ્લભમાથી લીધી છે

† ।SS ઇન્દ્રાસન ગણ [પાંચ માત્રાનુ પેહેલુ રૂપ—યગણ]

૧૪૪ માગધી સવૈયો. આઠ ડ [ચોકળિયા] ગણ. લઘુ ગુરુનો નિયમ નથી.

૧, ૫, ૯, ૧૩, ૧૭ ૨૧, ૨૫, ૨૯ માત્રાએ તાલ

ચોકળિયા ગણ આઠ રચીને
કુલ બત્રિશ કલ પૂરી કરજો, ૮૯૮૮૭૨
ગુરુ લઘુનો તો નિયમ કશો નહિ
એમ ચતુર કવિજન ચિત ધરજો; ૧૩૪૩૨૭૯
પેલે પછી ચચારે તાળો
ભાળો કુલ વસુ પ્રતિપદ માંહે, ૫૦૩

एम बने मागधी सवैया

जरुर विरतिनो नियम न जांहे. १९७. ४६६३७८

आ जाति गुर्जरी रागे गवायछे, अने ते जयदेवकृत अष्टपदीमां प्रसिद्ध छे

१४५ समान सवैयो ‡, सुगत सवैयो †.

१६, १६ यति=३२ मात्रा, तेमां अन्ते भगण.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

बत्रिश कल तुं सकल मळीने,

चरण चरणमां रच निर्बाधक, २३२६९७३

सोळे सोळे यति बे अंते

एक भगण रचनानुं साधक; २२४९२०६

प्रथम उपर पछी चारे चारे,

ताल तरत तुं देजे लागट, २२०२८१६

एम समान सवैयो रचवा,

लाव् लशार कादि कँइ ना घट. १९८. २५४९६५१

‡ भाषाछंदोमंजरी. † ए नाम छंदोलतांमां छे.

अंते भगण लाववा छंद प्रभाकरमा कह्युं छे

१४६. खरारि (छंदःप्रभाकर.)८, ६, ८, १० यति=३२ मा

३, ९, १५, २१, २५, ३१, मात्राए ताल.

प्रति चरण चरण, सारो दंत,

कल खरारिमां, धरो पाद आदरो, ६८८४६७

छे आठ छ ए, आठ दशो,

एम चार तो, यति मापथी धरो; ६८७३११

बे मूको कला, त्रीजो परे,

ताल धरो रे! नव पंदरे करो, ६८४७२७

पछी एकवीश, ने पचीश,

एकत्रीश पर, ठिक ताळ नो भरो. १९९. ७०५१७१

मात्रा दण्डक.

३२ मात्रानी ५७,०२,८८७ वृत्ति थायछे.

" छंदःप्रभाकर, छंदार्णव, आदि ग्रंथोमा बत्रीश मात्रा पछीनी जातिने "दडक मात्रा जाति" कही छे.

४७. रंगिक्ता. १७,१६ यति=३३ मात्रा, तेमां अंते लघु गुरु.

१, ५, ९, १३, १८, २२, २६, ३० मात्राए ताल.

सत्तर ने कल सोळे विरति रच,
लघु गुरु लावी छेवट चरणे,
तेत्रीश लाव कला कुल खंतमा,
रची प्रति चरणे कविवर वरणे;
प्रथम पछी श्रुति श्रुतिने अंतरे,
आवे ताल चतुर प्रति यतिमां,
एवी रचना जो ठीक थाय तो,
रंगिक्ता खपशे कवि मतिमां. १६०.

३४ मात्रानी ९२,२७,४६५ वृत्ति थायछे.

४८. (अपरा) सपाखी. मात्रा ३४ तेना अक्षर २२.

गणनो नियम नहि १ ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९, ३३ मात्राए ताल.

बाविश अक्षर धरीने दे मध्ये चोत्रीश रचो कल तो सर्वे,
जाति अपरा सपाखी ए तो वखाणी बागवलभे विना गर्वे;
एक उपर छे ताल प्रथमनो ने चच्चारे चडता तो चाले,
वधा मळी छत्रीश धर तालो प्रतिपादे नाडीथी शुभ म्हाले १६१.

३६ मात्रानी १,४९,३०,३५२ वृत्ति थायछे.

१४९ कानर. ८,+१०,+१२, यति+२=३६ मात्रा.

१, ६, ११, १६, २१, २६, ३१ मात्राए ताल.

पांतरिश सकल, कल प्रति चरण मांह,
ठिक थायछे एम कवि! जाणजो,
आठ दश बार, पर विरति तो सरस,
ने रगण वळी ते उपर, आणजो;
प्रथम पर ताल, पछी चडे शर उपर,
ठिक एम सौ सात तो, ताल छे,
एह आ जाति, कानरतणी सरस,
तो शोभती ठणकती, चाल छे. १६२.

३७ मात्रानी ३,९०,८८,१६९ वृत्ति थायछे.

१५० झूलणा, आंदोलिता, झुल्लणा, झुल्लन.

१०, १०, १०, ७ यति=३७ मात्रा, तेमां अंते एक गुरु

१, ६, ११, १६, २१ २६, ३१, ३६ मात्राए ताल.

दश दशे ने दशे, विरति साते वसे,
एम त्रिश सात कल, सकल आवे,
सुकवि को होय ने, जे जरुर जोय ते,
अंतमा एक गुरु, आप लावे,
प्रथम पे'ली पछी, पांच पांचे चडे,
सकल मळी आठ छे, ताल जाते,
एज आंदोलिता, झूलणा जाणजो,
गाय छे सिन्धुमां, ने प्रभाते. १६३.

कहु नथी, तेम तेना उदाहरणमा पण एवो नियम कइ पाळ्यो नथी छंदो-वृत्तमुक्तावलीमा सात पचकलिया+२मात्रा आणवा कही, प्रत्येक पचकल छूटी राखवानु जणावेछे वळी एज ग्रथमा कह्यु छे के—"झूलणानाज चरणमां अंत्य लघु अने उपात्य गुरु आवीने ३८ मात्रा थाय तो **उपझूलणा** जाति बनेछे. अने झूलणाना मापमां अते बे मात्रा (उदाहरणमा १ गुरु छे) वधीने ३९ मात्रा थाय तो **खुझुलन** थायछे, अने झूलणाना मापमा अते त्रण मात्रा (उदाहरणमा त्रणे लघु आण्या छे) वधे अर्थात् ४० मात्रा थाय तो **अति झुलन** थायछे"

१५१ कडखा. १०,१०,१०,७ यति=३७ मात्रा, तेमां अन्ते बे गुरु.

१, ६, ११, १६, २१, २६, ३१, ३६ मात्राए ताल

प्रथम दश ते पछी, दश उपर आणजो,
ते पछी वळी दशे, विरति जाणो,
एम साडत्रिशे, कल वधी आणतां,
अन्तमां बे गुरु, अचुक आणो,
ताल प्रथमे धरी, पांच पांचे चडी,
आठ तो एम कुल, ताल आवे,
झूलणा रागथी, थाय कडखा गळी,
सिन्धु रागे भली, भात भावे. १६४.

१५२ हंसाल. २०,१७ यति=३७ मात्रा, तेमां अन्ते बे गुरु.

(भाषा छंदो मजरी प्रमाणे) (ताल कडखा प्रमाणे)

सकल कल चरणमा साडत्रीशे करी,
ते विषे अन्तमां कर्ण आणो,
वीश सत्तर विषे विरति बे आणतां,
थाय हंसाल ठिक एम जाणो;
प्रथम पर ताल ने पांच पांचे पछी,
तालनी जाळ तो जोड़ गूंथो,

दश दशे सतर पर विरति कवि को कहे,

पण तमे तेम जाति न चूंथो १६५.

प्राकृत-पिंगळ सूत्रमां १०, १०, १७ यति कही छे. अने अन्ते एक ते गुरु आणवा कंइ कह्युं नथी. तेमज तेना उदाहरणमां पण ए नियम पाळ्यो नथी. छंदःप्रभाकरमां २०, १७ यति अने अन्ते एक गुरु आणवा कह्युं छे.

१५३ करखा. ८, १२, ८, ९ यति=३७ मात्रा. ताल कडखा प्रमाणे

(भाषा-छंदोमंजरी प्रमाणे)

आठ पर प्रथम, पछी बार पर यति करी,

आठ पर आणी, नव उपर करजे,

एम यति चार, कल त्रीश ने सातमां,

प्रति पदे थाय, उर एम धरजे;

एक पछी पांच, पर ताल चडता रची,

सकल मळी आठ, ठिक ताल राजे,

थायछे सरस, करखा भली भातनी,

प्रभु तणा गुण, ते मांह गाजे. १६६.

छंद प्रभाकरमा अन्ते यगण आणवा कह्युंछे, पण ते सर्व सम्म छंदःशृंगारमां २०, १७ यति, तेमां अंते गुरुछे. चिंतामणीमा १०, १० १७ यति कही छे

३८ मात्रानी ६,३२,४५,९८६ वृत्ति थायछे.

१५४. राजचंद्र. ६,८,१०,१४ यति=३८ मात्रा.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९, ३३, ३७ मात्राए ताल
१०

प्रथम छ पर, पछी आठ दशे, यति ठिक आणीने

छेल्ली यति चौदे लावो,

मात्रा ए, रीते प्रतिपद, ठिक कविवर वरणे,

एक उपर, पछीं श्रुति चडता, कवि! ताल धरो दृग,
चालिश कुल ए रीत करो,
जाति ए, राजचन्द्र पद, ते रचवा मचवा,
अतिशय अंग उमंग धरो. १६७.

४० मात्रानी १६,५५,८०,१४१ वृत्ति थायछे.

२६८. मदनहरा, मदनहर, मदनगृह, मदनहरण, मदनदीपन.
१०,८,१४,८ यति=४० मात्रा. तेमां आदि बे लघु,
अंते गुरु, अने वच्चमां छत्रीस मात्राना नव चोकलिया
आणवा तेमां पयोधर=जगण न लाववो. यमक आणवी.

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१, ३५ ३९ मात्राए ताल.

लघु बे रोकडिया, नव चोकलिया,
तेपर गुरु गरवो आवे, पद शोभावे;
कुल मळीं कळ चालिश, प्रतिपद भाळीश,
मध्य जगण जो नव लावे, अड तो भावे,
दश वसु मनु वसुए, विरति करो वळी,
त्रण चच्चारे ताल धरो, पद एम करो;
वळी मदनहरणने, मदनहरा कहीं,
मदनगृहा ए मदनहरज, रचीं चित्त ठरो. १६८.

छंदार्णवमा त्रिभंगी उपर आठ कल लाववा केहेछे चिंतामणीमा ६+(८ चोकलिया)+ग एम माप कह्युं छे छंदोवृत्तमुक्तावलीमा कह्युं छे के प्रभावतीना प्रत्येक चरणमा (अंत्य सगणवाळी) आठ मात्रा वधे तो मदनगृह अथवा मदनदीपन जाति थायछे छंद प्रभाकरमां दर्शाव्युं छे के, क्यां क्यां आ जातिमा ३२, ८ उपर यति कही छे ते अशुद्ध जाणवी; पण एम पोतानो अभिप्राय शाथी थयो छे, ते जणाव्युं नथी. वाणीभूषणमां प्रथम छ मात्रा लाववा केहेछे, एटले गमे तेवी बे मात्रा उपर एक जगण लावतां प्रारंभमां

बे लघु अथवा एक गुरु आणी झकाय एम अभिप्राय छे. छंद रत्नावली मारी पासे एक प्रति संवत् १८५३ नी सालनी छे तेमा "तिहि बिच रन जगन न" इत्यादि छे. तेने बदले पिंगलादर्शना कर्त्ता हीराचंदना हस्ताक्षरनी लखेली एक प्रति मारी पासे छे तेमा तेणे "तिहि बिच रन जगरन" एम अशुद्ध पाठ लख्यो छे. अने ते उपरथी तेवो अर्थ करी वच्चे रगण ने जगण न लाववा हीराचंदे लक्षण बांध्यु छे, ते भूल उपरना कारणथी थइ जणायछे.

१५६ हिंदोल १०,१०,१०,१० यति=४० मात्रा. तेमां अंते लघु गुरु

१, ६, ११, १६, २१, २६, ३१, ३६ मात्राए ताल

दशनों पर दश करो, ते उपर दश धरो,
सात कल वळी भरो, उपर ध्वजा आणजो; । लघु गुरु.
एम चालीश कल, थायछे ठिक सकल,
जाति हिंदोलमां, जरुर करीं जाणजो;
दशनों पछीं दश अने, दशनों पर दश बने,
श्रुति कथी कविजने, विरति एवी खरे;
प्रथम पछीं पांच ने, पांच चडता बने,
आठ कुल ताल ते, कविजनो ठिक धरे. १६९.

१५७ सुभगा, उद्धता, उद्धतचाली. १०,१०,१०,१० यति=४० मात्रा. तेमां अन्ते ग ल. ३,८,१३,१८,२३,२८,३३,३८ मात्राए ताल

दश कल प्रथम सार, दश ते उपर धार,
वळी दश त्रीजी वार, दश ते परे धार;
कल सकल चालीश, यति चार भाळीश,
दश उपर लावीश, प्रतिपद विषे सार;
तजीं बे त्रीजे ताल, त्यां प्रथम संभाळ,
चडी पांचनी चाल, कुल आठ भाळीज,
छे सुभग ए जाति, उद्धत भली भाति,

ते थकीज विख्याति. ए उधतचाली ज. १७०.

† छंद-सार तथा चिंतामणी प्रमाणे ‡ भाषा-छंदोमंजरी प्रमाणे. छंद-प्रभाकरमा उद्धत नाम आपी तेना अतमा गुरु लघु आणवा कह्यु छे पण केटलाक पिंगलकार गुरु लघुविषे केहेता नथी एज ग्रथकार शुभगने उद्धतथी जूदी पाडी तेने अते गुरु लघुने बदले तगण आणवा केहेछे

१५८ दीपमाळा. (दीपकथी चोगणो.) (छंदार्णव प्रमाणे.)

१२, १०, १०, ८ यति=४० मात्रा.

३, ८, १३, १८, २३, २८, ३३, ३८ मात्राए ताल

छे यति प्रथम बारने, दश उपर धार ने,
ते उपर दश धरी, आठ पर आण,
ए रीत रचवी चरण, चाळीं मात्रा सकळ,
दीपमाळा रुडी, जाति कवि जाण;
छे त्रण उपर ताल ने, पांच चडते वळी,
आण प्रति चरणमा, आठ धरीं ठाठ,
जागी प्रभाते करो, राग परभातथी,
ईश गुण गाननो, प्रेमथी पाठ. १७१.

१५९ विजया. (छंदार्णव प्र.) १०, १०, १०, १० यति=४० मात्रा.

१, ६, ११, १६, २१, २६, ३१, ३६ मात्राए ताल

दश उपर दश करी, ते परे दश धरी.
आणजो दश फरी, विरति रुडा रची,
एम यति चार तो, प्रति चरण धारजो.
चाळीं मात्रा बधी, चरण मध्ये मची,
एक उपर पछी, ताल तत्त्वे चडी,
आठ प्रति चरणमां, आणजो प्रेमथी,
सो उपर साठनो, मात्रिका ठाठ तो,

जाति द्विजया विषे, लावजो नेमथी. १७२.

छंदःप्रभाकर केहेछे के "चरणने अंते रगण आणवाथी कर्णमधुर लागे-छे," तेम स्वाभाविक रीते कवितामां पण तेम घणीक वार थइज जाय छे, पण कोइ कविए एवो नियम कर्यो नथी, तेथी अमे पण ते ग्रहण कर्यो नथी.

४६ मात्रानी २,९७,१२,१८,०७३ वृत्ति थायछे.

१६० मत्तचंचरीक. (वाग्वल्लभ प्रमाणे)

१०, १०, १०, १०, ६ यति=४६ मात्रा.

१, ६, ११, १६, २१, २६, ३१ ३६, ४१ मात्राए ताल.

दशनी पर दश करी, ते उपर दश धरी,
लावजो दश फरी, रस विषे यति करी, प्रति पदमां;
एम यति पांच छे, दर चरण मांज छे,
तेह संभाळीने, आणजो भाळीने, दर झडमां;
मत्तचंचरीक तो, एम बनॉ जाति तो,
वर्धां कला कुल मळी, थाय छेतालीशे, चरण विषे;
प्रथम पर एक तो, ताल मूकायछे,
पांच चडते पछी, नव सकल ताल तो, चरण दॉशे. १७३.

१६१ हरिप्रिया. भाषाछंदोमंजरी प्रमाणे. २४, २२ यति=४६ मात्रा. एक उपर पछी छए छए चडते ताल.

छेतालिस सकल कला विरति मांह बेज भला,
चोवीशपर एक थाय बीजो बावीशे;
ताल प्रथम एक कले सात तेर उपर पछी,
ओगणीश उपर ते दोडी जतो दीशे;
पचीश पर फरी रखाय एकत्रिशे दोडी जाय,
साडत्रीशे उपर थाय पछी चुवालीशे;

एम सकल आठ ताल चरण चरण मांह घाल,
हरिप्रिया बनेज वेश जोड़ चित्त हींशे. १७४.

१६२ चंचरी. १२+१२+१२+१० यति=४६ मात्रा.

१,७,१३,१९,२५,३१,३७,४३ मात्राए ताल.

वार उपर वार धार, तेज उपर वार सार,
दश कला पछी उचार, एम विरति सोई,
छेतालिस चरण मांह, एम कला लाव ज्याह,
विरति चार कह्या तेम, आण पदे जोई;
ताल प्रथम उपर धार, पड पडे चडावीं चाल,
आठ सकल चरण घाल, नियम चित्त आणी,
एम चंचरीज थाय, जाति ए रुडी जणाय,
मांह प्रभु गुण गवाय, नकां धूळधाणी. १७५.

५६ मात्रानी ३,६,८,४३,८२,९६,१६२ वृत्ति थायछे.

१६३ मधुरा. ७,७,७,७,७,७,७,७ यति=५६ मात्रा, बनता सुधी नगण आवे. यतिये यतिये बनी शके तेटली यमक आणवी.

१, ८, १५, २२, २९, ३६, ४३, ५१ मात्राए ताल

सात कलना, आठ यति कर, एम कुल कल, छप्पनज धर,
चरण चरणे, नगण वरणे, बनीं शके तो, पूरती कर;
ताल प्रथमे, तुरत दइ दे, मुनि मुनि पछीं, चडतीं करी दे,
सात एमज, ताल चरणे, सरस हरखे, गणतीं करी धर,
प्रति विरतिमा, यमक लावे, ठिकज भावे, तुक सुहावे,
जाति मधुरा, भाति भाति, बहु विभाती. ख्यातिवाळी;
अशरण शरण, बळीं सुखकरण, जे दुख हरण, जग सुख भरण.
तारण करण, दूर कर मरण, तेज प्रभु भज, हृदय वाळी. १७६.

१२० मात्रानी

८,६७,००,०७३,९,८,१,०,७,८,६,८,६१,८०,६१,०

वृत्ति थायछे

१६४. चतुष्पदी (वडी) १०,८,१२ यति तेमां अन्ते

एवां चार चरण=१२० मात्रानुं एक

न्हानी चोपदींना चार चरण प्रमाणे २८ ताल प्रति चर

कर चोकलिया गण, सात वळी ते, पर गुरु एकज धर

ए उपर एवी, त्रण झड करीने, एक चरण उचरजे;

चोपदीं न्हानींना, चार चरण सम, प्रतिपद ताल रखाशे,

कुल अठ्ठाविश तो, एवा तालो, पद पदमांह रचाशे,

दशपर वळी आठे, रविने माथे, ए क्रम साथे यति छे,

ते सकल मळीने, बारज आवे, प्रति पद कविनी मति छे;

जो चौपदीं न्हानी, चार करे तो, एक चरण बनी जाशे,

त्रिश कलना टुकडा, चार गण्येथी, सोने वीश कल थाशे;

जे आवी लांबी, जाति सारी, चतुष्पदी केवाशे,

खुब खांत धरीने, एमां कवि को, प्रभुना गुण जो गाशे;

मति विमलज थाशे, ज्ञान प्रकाशे, हरि एथी हरखाशे,

मन चोख्खुं राखी, नीति दाखी, प्रभुजनमां परखाशे;

तुज भवनी भावट, भगवत भजतां, भट लइ भागी जाशे,

छे सत्य प्रभु आ, जगमां एकज, एम तने समजाशे;

तो पळथी आडां, अवळां वलखां, को काळे नहि खाशे,

को पाशे बांध्यो, नहि बंधातां, लीधो नहि लेवाशे. १७७.

अर्द्धसमजाति.

समजातिमां चारे पद सरखा आवेछे, पण अर्द्धसममा मात्र अर्द्धां पद एटले पेहेला अने त्रीजा (विषम) चरणोना अने बीजा तथा चोथा (सम)चरणोनां लक्षण सरखा होयछे, ते माटे ते अर्द्धसमजाति केहेवायछे

पेहेलु विषम पद अने बीजु सम पद, ए बे मळीने जेटली मात्रा थाय, तेनु प्रथम दल केहेवायछे, तेमज त्रीजु विषम पद अने चोथु सम पद मळीने तेटलीज मात्रानु बीजु दल केहेवायछे.

१ नृगण, सुगण. { विषम पदमा ५+५=१० मात्रा, १, ६ मात्राए ताल. / सम पदमा ४+३= ७ मात्रा १, ६ मात्राए ताल

बे ठकल विषममां, ड ढ धरो समे;
सुगण नृगण जाति, रचजो तमे. १
प्रथम षट पर धरो, ताल विषमे;
ए रीते आणजो, ताल ज समे. २

वाग्वल्लभ प्रमाणे

२. नंदक, वडवा, बरवा, बरवै { विषम पदमां १२ मात्रा. / बरवा, बरवय, बैर. } सम पदमां ७ मात्रा.

प्रति दल अन्ते ग, लं १, ५, ९, १३, १७ मात्राए ताल

विषमे भानु सममां, कल मुनि आण,
तेमा प्रति दल अन्ते, गुरु लघु जाण. ३
प्रथमे श्रुति श्रुति प्रति दल, ताली थाय;
नंदक-वडवा-बरवै, एम रचाय. ४

छंदोलतामा बरवय नाम छे, वळी तेज ग्रंथमा कह्यु छे के केटलाक आने आपाढ पण केहेछे. छंद.प्रभाकरमा अन्ते जगण आणवानुं केहेछे, अने तेनु नाम ध्रुव आपेछे, पण अमे ध्रुवजाति आनाथी जूदी बतावी छे छंदोबोधमा बैर अथवा बानद नाम आप्यु छे, अने तेमा जगण के गुरु

लघुविषे कंइ न लखतां प्रति दलमां १२+७=१९ मात्रा आणवानुज कह्यु छे.

भाषा छंदोमंजरीमा बरवैया नाम आपी तेमां १२, ७नी यतिथी १९ मात्रा लाववा कह्युं छे, अने जगण किंवा गुरु लघु लाववा नियम आप्यो नथी, पण तेना उदाहरणमां जगण छे. वाग्वल्लभ आदि ग्रंथोमां अंते गुरु लघु आणवा कह्यु छे; माटे अमने पण ते अभिप्राय योग्य जणायो छे.

३ मोहिनी, ध्रुव, ध्रुवा. { विषम पदमां १२ मात्रा. / सम पदमां ७ मात्रा. } १,५,९,१३, १७मात्राए ताल

विषमे रवि कल, मुनि कल-, सममां धरो;
मोहिनी ने ध्रुव द्विपदी, एमज करो. ५
भूपर पछीं चच्चारे, चडता ताल;
प्रति पद मांहे कविवर! तुं संभाळ. ६

छंदःप्रभाकरमां मोहिनीमां अंते सगण लाववानु कह्यु छे, अने भाषा-छंदोमंजरी आदि ग्रंथोमा सगणविषे कइ कह्यु नथी, माटे अमे पण ते मत ग्रहण कर्यु नथी. छंदार्णवमा ध्रुव नाम छे

वाग्वल्लभमां मोहिनी. १३,१० मात्राए यतिथी नीचे प्रमाणे छेः—

त्रयोदश कला भवेयुर्यदि चरणे विषमे ।
फणिपतिरिति निगदति भवति मोहिनी दश समे ॥

पण ए माप ग्रहण करवाने बीजु प्रमाण मळी आव्युं नथी.

४ बरवेद. { विषम पदमां १२ मात्रा; १,५,९ मात्राए ताल. / सम पदमां ७ मात्रा. १,५ मात्राए ताल. }

प्रत्येक दलमां अन्ते लघु.

विषमे द्वादश कल रच, सममां सात;
सममां अन्ते लघु तो, धर साक्षात.
एक उपर पछीं चारे, चडता ताल;
बरवेदविषे रचीं प्रति, पद संभाळ.

छंदःशृंगार प्रमाणे बरवेद नाम छे, पण भाषा छंदोमंजरीमां एने बरवै कहेछे.

५ बर्वरा. { ४+४+४=१२मात्रा विषम पदमां / ४+ग+ल=७मात्रा सम पदमां. } १, ५, ९, १३, १७मात्राए ताल.

चोकलिया गण त्रण कर, विषमे आप;
सममां चार उपर गुरु, लघुनु माप. ९.
प्रथम पछी उच्चारे, प्रति पद ताल;
बर्वर जातिमांहि, कवि! संभाळ. १०.

६ निशानी { विषम=पेहेले त्रीजे पदे १३ मात्रा / सम=बीजे चोथे पदे १० मात्रा } प्रतिपदमा १,५,९ मात्राए ताल.

विषम पदे कल तेर ने, सममां दश पूरी,
भू शर भक्ति तालथी, निशानी मधुरी. ११

भगवतपिंगळमां अने भाषाछंदोमंजरीमां निशानी अर्द्धसमजातिमां छे.
नि.श्रेणी मात्रा २३ तेमा १३,१० यतिवाळी समजात अंक ८६ पृष्ठ ३०मे छे

७ बिरया { विषम पदमां ४+४+४+४=१६ मात्रा / सम पदमां ४+ग+ल = ७ मात्रा } वागवक्रम प्रमाणे

प्रत्येक दलमा १, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल

चोकलिया गण चार विषम पद, आवे ज्यांह;
चार उपर गुरु लघु छे सममां, बिरयामांह. १२

८ दोहा, दुहा, द्विपथा, दोहरा. { १,३ विषममा ६+४(जगण विना)+ल+२=१३ मात्रा, / २,४ सममां ६+४ (अंत्य गुरुवाळी) +ल=११ मात्रा }

प्रतिपदमा १, ५, ९, मात्राए ताल.

छ कल उपर कल चार धर, तेमां जगण न छेक,
तेपर त्रण विषमे वधे, समे वधे कल एक १३
विषम पदे रच तेर कल, सम पदमां अगियार,
लघु कल धर अगियारमी, दोहा चरणे चार १४

दोहाना विषम चरणोमां क्याय जगण न आववो जोइये, अतमां सगण रगण अथवा नगण अवश्य राखवो; अने सम चरणोना अतमां जगण अथवा तगण आणवो जोइये, अर्थात् अंते गुरु लघु आणवा जोइये. तेम न थवाथी कर्णमधुर थतुं नथी. अने तेज कारणथी दोहाना २१ भेद केटलाक ग्रथकारोए स्वीकार्या छे, अने छेल्ला श्वान नामना २१मा भेदमां वे गुरु कायम राख्या छे, ते उचित छे

साहित्य सुधानिधिमां रत्नाकरे दोहानु लक्षण नीचे प्रमाणे जणाव्युं छे—

१, ३ विषम पदमा ८+३+२=१३ मात्रा

२, ४ सम पदमा ८+ऽ। (ताल)=११ मात्रा

पण एवु लक्षण बांधतां तेने विशेषमां नीचेना नियमो बांधवा पड्या छे—

१ आठ मात्राओमः आरंभनी त्रण मात्राओ पछी वे गुरु न आववा जोइये

२ दोहाना विषम चरणो (पंहेली त्रीजी तुक) मां आठ मात्रा पछी त्रण मात्रा आणवानी छे, तेमा ।ऽ वाळु रुप न आववु जोइये

पण अमे उपर जे दोहानु छ कल जूदी पाडवानु लक्षण बांध्यु छे, तेथी त्रण मात्रा पछी वे गुरु न लाववानो नियम पोतानी मेळेज नीकळी आवेछे. कारण के वे गुरु आणता सात मात्रा थइ जाय

वळी अगियारमी मात्रा लघु आणवा खास नियम छे, एटले आठ मात्रा पछी ।ऽ आवु रुप न आणवु, ए वात स्वत सिद्ध थइ जायछे

उपरना नियमोने अनुसरीने एक दोहरामा चार लघु अक्षर तो अवश्य आणवाज जोइये, केमके प्रति चरणमा अगियारमी मात्रा लघु आणवानो खास नियम कर्यो छे, माटे आखा दोहरानी ४८ मात्रा थाय, तेमां चार लघु अक्षरनी चार मात्रा बाद करता ४४ मात्रा रही, तेना गुरु करिये तो २२ थाय, एटले २२गुरु अने ४लघुनु पेहेलु रुप गणता, अकेको गुरु घटाडी बब्बे लघु वधारता, छेवट ४४लघु अने २गुरु थइने ४६अक्षरनु एकवीसमु रुप थायछे

जूदा जूदा पिगळना ग्रथोमा दोहाना आ एकवीश रुपना नाम जूदा जूदां जोवामा आवेछे, ते नीचे विगत आपी छे, तेपरथी जणाइ आवशे.

वळी केटलाएक २१ ने बदले २३ रुप आपेछे, पण प्रत्येक दोहरामा उपरना माप प्रमाणे बे गुरु आव्या वगर मधुरता रेहेती नथी, एटले ए अभिप्राय अमने उचित लागतो नथी

नांचे दोहराना नाम बताव्या छे, तेमा चार लघुथी आरंभीने बार लघु सुधीनी द्विपथा [दोहरा] ने **विप्रा** अथवा **ब्राह्मणी** केहेछे, तेर लघुथी आरंभीने बावीस लघु सुधीनीने **क्षत्रिया** केहेछे, २३ लघुथी आरंभीने ३२ लघु सुधीनीने **वैश्या** केहेछे, अने त्यार पछीनी **शूद्रा** केहेवायछे

जे दोहाना विषम (१ला, ३जा) चरणोमा जगण आवे ते अंतक, दुष्ट के चांडाळ केहेवायछे मुख्य दोष प्राचीन कवियोए जनकाव्यमा मान्यो छे, परतु देव अथवा मगळवाचक काव्यमा तेनो दोष मान्यो नथी

दोहराना भेद.

प्राकृतपिंगळसूत्र प्रमाणे. नागराजपिंगळ प्र.

क्रम	संस्कृत नाम	प्राकृत नाम	नाम	गुरु,	लघु,	वर्ण
१	भ्रमर	भमरु	हंस	२२	४	२६
२	भ्रामर	भामर.	गयंद, हथिया	२१	६	२७
३	शरभ.	शरहु	वाराह	२०	८	२८
४	श्येन.	सेणु.	पहु	१९	१०	२९
५	मण्डूक	मुण्डूअ.	पिंगल	१८	१२	३०
६	मर्कट	मक्कडु.	तरल.	१७	१४	३१
७	करभ	करहु	तमाल	१६	१६	३२
८	नरः	णरु.	मायर	१५	१८	३३
९	मराल, रसाल हंस	मआलु	मदओ.	१४	२०	३४
१०	मदकल, गयद, मदगवः	मअगलु, मयअधु	मेर	१३	२२	३५
११	पयोधर, जलधर	पयोहरु	मरु.	१२	२४	३६
१२	चल, बल, चचल	चलु	कुंजर	११	२६	३७
१३	वानर.	वाणरु	हरि	१०	२८	३८
१४	त्रिकल	तिण्णिअलु	शुकराल	९	३०	३९
१५	कच्छप	कच्छ.	परिहण.	८	३२	४०
१६	मत्स्य.	मच्छ.	चारण.	७	३४	४१

१७	शार्दूलः	सदूल	अहि	६	३६	४२
१८	अहिवर'	अहिवर.	पवण.	५	३८	४३
१९	व्याघ्र ,व्याल'	वग्घ.	वद्धय	४	४०	४४
२०	विडाल'	विराडउ.	धण.	३	४२	४५
२१	श्वा,सुनक',श्वान'	सुणह	आणद, हर्ष	२	४४	४६
२२	उदुम्बर',उन्दुर'	उन्दुरु,उदर	अकुल.	१	४६	४७
२३	सर्प'	साप	०	०	४८	४८

हीराचद कृत पिंगळादर्शमां अंक चोथे सेन, अने हरिजश पिंगलमां सिचाण नाम छे. चिंतामणी कृत छंदोलतामा अंक १९मे बग्ग नाम छे: अने छंदोमंजरीमा एज अंकमा व्याल नाम छे

साहित्य सुधानिधिना भाग २ जाना अंक १० मामां २२ गुरु अने ४ लघु एम २६ अक्षरथी आरंभीने अकेक गुरु घटाडता तथा बब्बे लघु वधारतां २ गुरु ने ४४ लघु, एम ४६ अक्षर पर्यंतना अनुक्रमे नीचे प्रमाणे २१ भेद आप्या छे:-

(१) हंस, (२) मोर, (३) पिक, (४) कीर, (५) कलहंस, (६) कपोत, (७) चातृक, (८) चकवा, (९) चकोर, (१०) गरुड, (११) गीध, (१२) राजहंस, (१३) कलकंठ, (१४) चटक, (१५) सेन, (१६) क्रौंच, (१७) लेवा, (१८) टिटिभ, (१९) रायमुन, (२०) हारिल, अने (२१) खंजन

चित्रसेन टीकावाळा मागधी पिंगळछंदोग्रंथमां दोहाना २२ भेद नीचे प्रमाणे आपेछे:-

(१) भवंह, (२) भावरु, (३) सीह, (४) सचाण, (५) अमरठउ, (६) मक्कडउ, (७) हरु, (८) मुरारी, (९) मयगल, (१०)पउहर,(११)चउराणण, (१२) तिणयण, (१३) सख, (१४) मच्छ (१५) सदूल, (१६) अहिवर, (१७) वरक, (१८) विराडल, (१९) सुनहड, (२०) उदर, (२१) सप्पह अने (२२) दीस. वळी तेज ग्रंथकार पाठांतरे नीचे प्रमाणे बीजा नामो आपेछे:-

(१) हंसु, (२) वराहु, (३) गयदु, (४) पहु, (५) पिंगलु, (६) तरलु, (७) तमाल, (८) सायरु, (९) सुंदरु, (१०) मेरु, (११) नरु, (१२) कुंजरु, (१३) हरि, (१४) झुकुलाल, (१५) दमणौ, (१६) सहुओ, (१७) अहि, (१८) पवणु. (१९) घणु, (२०) वज्जू, (२१) आणंदु, अने (२२) आमुलो.

९. सोरठा, सौराष्ट्री, सौराष्ट्र, पूर्वीदुहो. { १, ३ विषम पदमां ११ मात्रा. २, ४ सम पदमां १३ मात्रा.
१, ३ पदनो प्रास मेळवेछे.

दुहाथी उलटा पद, बाकीना नियम अने ताल दुहा प्रमाणे, एम प्राकृतपिंगळसूत्र अने वाणीभूषण इत्यादिमा कह्यु छे

विषम पदे अगियार, सम पदमां रच तेर कल,
दुहा नियम सौ धार, पद उलटावी सोरठे. १५

नागराज पिंगळमां एने चारणी दुहो केहेछे, छंदःशास्त्रमां ट+ड+ल,+ट+ढ+भ; एम अर्द्धमां लाववा केहेछे, पण ते नियम सर्वग्राह्य नथी जणातो. दोहाना सर्व नियमो पाळवाना छे, माटे सोरठाना सम चरणोमां जगणनो प्रयोग न ज थवो जोइये.

१० दोहडिका. { १,२ पदे १३ मात्रा ३,४ पदे ११ मात्रा } ताल दोहाना प्रति पद प्रमाणे.

पेले बीजे तेर कल, त्रीजे चोथे शिव कल;
पद अंते लघु आण, दोहडिका ते जाण. १६

११ दोही. { १, ३ विषम पदमां १५ मात्रा. २, ४ सम पदमां ११ मात्रा. } दलनेअते लघु विषममा चोपाइ अने समपदमां दुहा प्रमाणे ताल

विषमे तिथि कल शिव समविषे, दोही जाति विचार;
विषमे छे चोपाई ताल, समे दुहो निरधार. १७

(छंदःप्रभाकर प्रमाणे)

१२ हरिपद. { १,३ विषम पदमां १६ मात्रा २,४ सम पदमां ११ मात्रा } प्रत्येक दलनी अते ग, ल

तेमां १, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल.

विषम पदे कल सोळज आवे, सममां रुद्र सुहाय;
एक उपर पछी चारे चडती, हरिपद ताल कहाय. १८

छंदोलता अने वाग्वल्लभ सममा १२मात्रा आणवा केहेछे, पण ते मत ग्राह्य नथी

१३ ललित, ललितपद, मालविका. { १, ३ विषम पदमां १६ मात्रा / २, ४ सम पदमां १२ मात्रा }

(चिंतामणी प्रमाणे)

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल

विषम पदे कल सोळ सुहावे, सममां बार कहावे;
प्रथमे पछी चचारे ताले, ललित-ललितपद आवे. १९

छंदोवृत्तमुक्तावलीमां आवा मापवाळी जातिने द्विपदी कही छे, पण द्विपदी आथी भिन्न लक्षणवाळी जूदी छे छंदोलतामां मालविका नाम अने पहेली १६ मात्राना ४ डगण आणवा कह्यु छे, वाग्वल्लभमां ललितपद नाम छे.

१४ लयद्विपदी, महादोहा. ४+४+४+४+४+४+४=२८मात्रा.

प्रत्येक दलमां १, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्राए ताल

चोकलिया गण मुनि प्रति दलमां प्रथमे तालज धरजो;
चारे चडता लयद्विपदीमां महादुहामां करजो. २०

१५ उलाला, उल्लास, उल्लाल. ४+४+४+३+६+४+३=२८

मात्रा, एवा बे दल १५, १३, यति ३, ७, ११ मात्राए विषम पदमां ताल अने १, ५, ९ मात्राए समपदमां ताल.

त्रण चोकलिया पर त्रण कला, छ चार पछी त्रण कल करो;
उल्लाल, उलासामांहे तो, यति पंदर तेरे धरो. २१
त्रण सात पछी अगियार पर, विषम पदे तो ताल छे;
सममां शशि[१] शर[५] नव पर धरो, अगियारे उल्लाल छे. २२

भाषा-छंदोमंजरी अने तेना आधारे छंद प्रभाकरमां तेर तेर मात्रा चरण एवां चार पद लाववा लख्युंछे, ते भूल छे वळी छंद प्रदीपमां १३, १४, १३ मात्राथी कुल ५४ मात्रा लाववा कहेछे, अने १०, ३, ४, ३ मात्राए यति होवा जणावे छे, पण ते अभिप्राय उचित नथी.

मागधी पिंगल छंदोग्रथ जेनी चित्रसेने टीका करी छे तेमां उल्लालयना २६ भेद आपेछे. ते प्रथम रूप (SSS, SS

ISS, SSS, SIS=२८ मात्रा) ने मगण+यगण+मगण+रगणनु गणेछे, एटले ने पदना मळीने उल्लालयना २६ गुरु अने ४ लघुथी आरंभीने अेकेक गुरु घटाडतां तथा बब्बे लघु वधारतां नीचे प्रमाणे २६ भेद जणावेछे. —

क्रम.	भेद-नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	रुद्द.	२६	४	३०
२	कुकम.	२५	६	३१
३	कणय.	२४	८	३२
४	मयरंद.	२३	१०	३३
५	मालाहर.	२२	१२	३४
६	जलहरह.	२१	१४	३५
७	कंत.	२०	१६	३६
८	कणउ.	१९	१८	३७
९	मणरग.	१८	२०	३८
१०	अवर.	१७	२२	३९
११	भवरह	१६	२४	४०
१२	मछह.	१५	२६	४१
१३	वरुण	१४	२८	४२
१४	पारिजात.	१३	३०	४३
१५	मंदार	१२	३२	४४
१६	सवर.	११	३४	४५
१७	धणुहर.	१०	३६	४६
१८	कुसुम.	९	३८	४७
१९	करंज	८	४०	४८
२०	मणि.	७	४२	४९

(ISS, SSS, SIS=२८ मात्रा) बे मगण+यगण+मगण+रगणनुं गणेछे, एटले बे पदना मळीने उल्लालयना २६ गुरु अने ४ लघुथी आरंभीने अकेक गुरु घटाडता तथा बब्बे लघु वधारतां नीचे प्रमाणे २६ भेद जणावेछे.—

क्रम.	भेद-नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	रुद्द.	२६	४	३०
२	कुकम.	२५	६	३१
३	कणय.	२४	८	३२
४	मयरद्द.	२३	१०	३३
५	मालाहर.	२२	१२	३४
[illegible]	[illegible]	२१	१४	३५

प्रथम उपर पछीँ श्रुति श्रुति चडता तालो मुने [illegible] ३६

द्विपदी एम रचीने रसिक जनोनां हृदयज हरजो. २४

१७ कर्पूरद्विपदी. २+२+४+२+२+ल+२,

+२+४+२+२+ल+ल+ल=२८.

१, ५, ९, १३, १६, २०, २४, २७ मात्राए ताल.

कल बे बे श्रुति बे बे लघु, बे बे पर श्रुति तो तुं धर;

बे बे ते पर तो त्रण लघु, कर्पूरद्विपदीमांह कर. २५

यति तिथि पर ने तेरे थशे, पण जणवे नहि कोइ जण;

प्रथमे पछीँ श्रुति तालज चडे, प्रति यतिमां ए रीत गण. २६

कर्पूरद्विपदीने मागधी लोको उल्लाल केहेछे, अने तेनी रचना मेळवतां पण मळती आवेछे, मात्र तेमां छेल्ली त्रण मात्रा छे, तेने बदले आमां त्रणे लघु आणवानुं कह्यु छे कर्पूरद्विपदीना छेल्ला त्रण लघुमांथी एक घटाडता २७ मात्रानी कुंकुम नामनी द्विपदी थायछे एम मागधी नागांपगळना टिप्पणमां कह्यं छे

त्रीश कलानां बे दल छे पण, चार पदे बोलाया छे;
चतुर्वचा वळी कोइ कहेछे, चतुष्पथा चौयाला छे. २६

छंदोलतामा अन्ते गुरु लाववा केहेछे छंदरत्नावलीमा पण ४गणे=१६ मात्राए यति अने अन्ते गुरु लाववानु कह्यु छे वाग्वल्लभमा चतुष्पथा नाम छे, प्राकृतपिंगळसूत्रमा चौयाला नाम छे, अने छंदोवृत्तमुक्तावलीमा चतुर्वचन ए नाम छे

२५ बेसर { १, ३ पदमा १६ मात्रा / २, ४ पदमा १५ मात्रा. } छंद शतक प्रमाणे.

१,५,९,१३,१७,२१,२५,२९ मात्राए ताल.

विषम चरण छे सोळज कलनां, बेसर कल पंदर सम पदे,
प्रथम उपर चच्चार ताळो, प्रति दलमां कवि आठज वदे. २७

२६ घत्ता, ध्वाता. प्रत्येक दलमां १०,८,१३ यति=३१ मात्रा.

७ ङ+३ल=३१ ३,७,११,१५,१९,२३,२७,३१ मात्राए ताल.

मुनि चोकल गण पर, त्रण लघु ठोक धर, दश वसु जख पर छे विरति,
घत्तामां त्रण पर, पछी श्रुति चडता, ताल वसु दे तुँ वरी रति. २८

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा ध्वाता नाम छे, घत्ताने कोइ ध्रूत्ला पण केहे छे छंदोवृत्तमुक्तावलीमा घत्ता नाम आप्यु छे मारी पासे संवत् १८२३नु लखेलु पिंगळ छंदोग्रंथ नामनु मागधी पिंगळ छे तेमा पण घत्ता नाम छे. वाग्वल्लभ, प्राकृतपिंगळसूत्र, अने वाणीभूषणमा ७ चोकलिया+३ लघु=३१ मात्रानु घत्तानुं प्रत्येक दल आणवा कह्यु छे, अने यति पाळवा ते ग्रंथोमा जणाव्यु नथी. पण छंद प्रभाकरमा घत्ता नाम अने तेमा १८, १३ यति=३१ मात्रा अने तेमा छेल्लो न गण आणवा नियम कर्यो छे वळी वाणीभूषण अने प्राकृतपिंगळसूत्रना उदाहरणोमा १०, ८,१३ यति जोवामा आवेछे

त्रीश कलानां बे दल छे पण, चार पदे बोलायां छे;
चतुर्वचा वळी कोइ कहेछे, चतुष्पथा चौयाला छे. २६

छंदोल्तामा अन्ते गुरु लाववा कहेछे छंदरत्नावलीमा पण ४गण=१६ मात्राए यति अने अन्ते गुरु लाववानु कह्यु छे वाग्वल्लभमां चतुष्पथा नाम छे, प्राकृतपिंगलसूत्रमा चौयाला नाम छे, अने छंदोवृत्तमुक्तावलीमा चतुर्वचन ए नाम छे

२५ वेसर { १, ३ पदमां १६ मात्रा / २, ४ पदमा १५ मात्रा } छंद शतक प्रमाणे.

१,५,९,१३,१७,२१,२५,२९ मात्राए ताल

विषम चरण छे सोळज कलनां, वेसर कल पंदर सम पदे;
प्रथम उपर चच्चारे ताळो, प्रति दलमां कवि आठज वदे. २७

२६ घत्ता, ध्वाता. प्रत्येक दलमां १०,८,१३ यति=३१ मात्रा

७ ड+३ल=३१ ३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्राए ताल.

ढळने अने सममा त्रण मात्रा छोडी दळने चार चार चडता ताल देवाथी गवाइ शकायछे

३० उल्लन, फुल्लणा. १०, १०, १७=३७ मात्रानुं प्रत्येक दल.

तेमा १, ६, ११, १६, २१, २६, ३१, ३६ मात्राए ताल.

दशनी पर दश वळी, सत्तरे यति धरी,
साडत्रीश कलतणुं दलज करजो,
एक पछीं शर शरे, ताल दलमां ठरे,
फुल्लणा उल्लनज नाम धरजो. ४३

झूल्लना १९ अक्षरनु वृत्तछे, ते नाम उपर झूलणाने बदले फुल्लणा वंचायु हशे, तेथी भूल थयेली जणायछे. चिंतामणीमा झूल्लना एवु नाम राख्यु छे अने वे दल्मा १०, १०, १७ विराम कर्या छे. एने करखा पण कहे छे. सुपदीपापिंगळ तथा भाषाछंदोमजरीमा १०, १०, १०, ७ यति केहेछे

३१ गंधाना, गंधानक, १, ३ पदमां २० मात्रा तेना १७ अक्षर; २, ४ पदमां २४ मात्रा तेना १८ अक्षर.

यति के गणनो नियम नथी, यमक घणी आवे प्रत्येक दलमा एक पछी चार मात्राए चडता ताल.

वीश कल सतरज वर्ण विषम पदमांहे,
चोवीश कल दशअष्ट वरण सममां छे आंहे,
प्रथमे ताल पछीथी ठोक श्रुति श्रुति धरजो,
गंधानक कदी वदत अपर गंधाना भणजो. ४४ [माप

गंधानामा विषम पादे १७ तथा सम पादे १८ अक्षर अने प्रत्येकमां वच्चे यमक आणवा वाणीभूषणमा तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमा दर्शाव्यु छे, पण मात्रानो कइ नियम बताव्यो नथी

३२ चूडामणि. पेहेला दलमां १३, ११; १३, ११=४८ मात्रा. आखो दुहो बीजा दलमा १२, १८; १२, १५,=५७ मात्रा. आखी आर्या.

ताल दुहा तथा आर्या प्रमाणे

३७ घत्तानंद, घातोनंद. प्रत्येक दलमां ११, ७, १३ यति. ६+४+४+४+५+४+४=३१ मात्रा. तेमां अंते त्रण लघु. प्रति यतिमां १, ५, ९, १, ५, अने १, ५, ९, १२ मात्राए ताल.

छ पर डगण त्रण वार, पांच तुं धार,
ड द्वयमहिं नगण चरम+ धर, अंते
घत्तानंद हर मुनि, जख यति थाय,
चारे सुताल विरति कर. ३९

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां घातोनंद नाम छे, अने ६+४ ४+४+५+६+ ल+ल=३१ मात्रा एक दलमां आणवा कह्युं छे छंद प्रभाकर त्यादिमां आनुं नाम घत्तानंद आप्युं छे, पण ते घ ने घना सळतापणाने लीधे भूल थयेली होय एम समजायछे

३८. हरिणी. १, ३ पदमां १५ अने २, ४ पदमां १६ मात्रा; विषममां १, ५, ९, १३ ने सममां ३, ७, ११, १५ मात्राए ताल

तिथि कळ पेला त्रीजा पदे, सममां तो सोळ सदाय वदे;
हरिणी नामे जाति खरी, ते अर्द्धसमे कविये उचरी. ४०
विषमे ताल प्रथम पर धरो, पछी चारे चडता आप करो,
सममां त्रीजे तालज थशे, पछी चारे चडता चाली जशे. ४१

भाषाछंदोमंजरीमांथी आ जाति लीधी छे.

३९ मनोरमा. १८, १९, यति=३७ मात्रा. प्रत्येक दलमां विषममां ३, ७, ११, १५ तथा सममां ४, ८, १२, १६ मात्राए ताल

विषमे कल सकल अढार प्रमाणो,
ओगणीश कला सममां वळी आणो,
विषमे रे त्रण तजी सममां तालो,
चार मनोरमामां चडता चालो. ४२

आ जाति भाषा-छंदोमंजरीमां छे परंतु तेना सम चरणोमां जे १९ मात्रानी योजना करी छे, ते पसंद करवा योग्य नथी, विषममां बे मात्रा छोडी-

दळने अने सममा त्रण मात्रा छोटी दइने चार चार चडता ताल देवाथी गवाड शकायछे

३० उल्लन, फुल्लणा. १०, १०, १७=३७ मात्रानुं प्रत्येक दल.

तेमा १, ६, ११, १६, २१, २६, ३१, ३६ मात्राए ताल.

दशनों पर दश वळी, सत्तरे यति धरी,
साडत्रीश कलतणुं दलज करजो,
एक पछी शर शरे, ताल दलमां ठरे,
फुल्लणा उल्लनज नाम धरजो. ४३

झूलना १९ अक्षरनु वृत्तछे, ते नाम उपर झूलणाने वदले फुल्लणा नचायु हशे, तेथी भूल थयेली जणायछे. चिंतामणीमा झूलना एवु नाम राख्यु छे अने वे दलमा १०, १०, १७ विराम कह्यो छे. एने करखा पण कहे छे रूपदीपपिंगळ तथा भाषाछंदोमंजरीमा १०, १०, १०, ७ यति केहेछे.

३१ गंधाना, गंधानक, १, ३ पदमां २० मात्रा तेना १७ अक्षर; २, ४ पदमां २४ मात्रा तेना १८ अक्षर.

यति के गणनो नियम नथी, यमक घणी आवे प्रत्येक दलमा एक पछी चार मात्राए चडता ताल.

वीश कल सतरज वर्ण विषम पदमांहे,
चोवीश कल दशअट वरण समसां छे जांहे;
प्रथमे ताल पछीथी ठोक श्रुति श्रुति धरजो,
गंधानक कदी वदत अपर गंधाना भणजो. ४४ [माप

गंधानामा विषम पादे १७ तथा सम पादे १८ अक्षर अने प्रत्येकमा वच्चे यमक आणवा वाणीभूषणमा तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमा दर्शाव्यु छे, पण मात्रानो कइ नियम बताव्यो नथी

३२ चूडाणा. पेहेला दलमां १३, ११; १३, ११=४८ मात्रा. आखो दुहो बीजा दलमां १२, १८, १२, १५,=५७ मात्रा. आखी आर्या.

ताल दुहा तथा आर्या प्रमाणे

आदि दलमां दोहरो, आखो आवी जाय,
चूडामणी अथवा भले, चूडाणामां थाय,
बीजा दलनी मांहे, आखी आर्या नियम सहित थाशे;
अडतालिश सत्तावन, कलनां बे दल बनी जाशे. ४५

छंदार्णवमां आ जातिनु बीजुं नाम चूडामणी बताव्यु छे पण सम जातिमा बे गीतिनी चूडामणी जाति पृष्ट ४९ अंक १२४मे छे, माटे एकनु एक नाम राखवाथी गुचवारो थाय तेथी ए नाम अमे राख्युं नथी.

३३. खंजा, खंजिका. ३६ ल+१ रगण=४१ मात्रानुं प्रत्येक दल.
१,५,९,१३,१७,२१,२५,२९,३३,३७,४० मात्राए ताल.

छतरिश लघु कल चरण चरण प्रति,
पछी थकी उपर तुं शशि रगणज सज प्रति पद खंजिके;
प्रथम उपर पछी श्रुति श्रुति चडी चडी,
सकल मळी तुं दश पछी त्रण पर ठिक द्वय दल ताल दे. ४६

वर्णमेळना विषम वृत्तना प्रकरणमां ३० लघु+१ गुरु सममां, अने २८ लघु+१ गुरु विषममा एवा मापनु आ नामनु वृत्त छे. मनहरपिंगळमां ५+५+५+५+५+५+६+र=४१ मात्रा लाववा कह्यु छे पिंगळादर्शमां पण एज प्रमाणे लीधु छे

३४माला. ३६ ल+१ रगण+ग ग (कर्ण)=४५ मात्रानुं पेहेलुं दल
आर्याना उत्तरार्द्ध प्रमाणे १२+१५=२७ मात्रानुं बीजुं दल.
पेहेला दलमां १,५,९,१३,१७,२१,२५,२९,३३,३७,४०,४४ अने बीजा दलमां १,५,९,१२,१७,२२,२६ मात्राए ताल.

छतरिश लघु कल प्रथम दल तुं धर रगणपर करण
श्रुति श्रुति चडीज र उपर द्विआवर्ता ताले;
बीजुं दल आर्याना, उत्तर दल सरखुं धर माले. ४७

शिखा जाति.

वृत्तरत्नाकर तथा छंदःशास्त्र उपरथी शिखा अने तेना अंगभूत छंदो बे दलना सिद्ध थायछे; पण छंदःप्रभाकरमां तेना चार चरण योज्या छे, ते संस्कृत ग्रंथोथी विरुद्ध छे.

शिखामां एक दल सर्व लघुनुं तो बीजुं सर्व गुरुनुं आवे एम छंदःसूत्रमां जणाव्युं छे.

(दुहो) रद[३२] लघु कलनुं एक दल, अवरविषे गुरु सोळ;
तेने कविजन एम के', शिखा नामथी बोल. ४८

शिखातणा बे भेद छे, कविता करवा काम;
सौम्यशिखा ज्योतिःशिखा, एवां एनां नाम. ४९

वाग्वल्लभ तथा छंदरत्नावलीमा २८ लघु+१ गुरु=३० मात्राना बे दळ आणवा कह्युं छे. पण ते अभिप्राय सर्वमान्य नथी.

गुरुना लघु अने लघुना गुरु, एम प्रस्तार करतां आना अनेक भेदो थायछे.

३८ ज्योतिःशिखा { पूर्वार्द्धमां ३२ लघु=३२ मात्रा / उत्तरार्द्धमां १६ गुरु=३२मात्रा } आठे अक्षरे यति.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

लघु कल दश[६] पड, प्रथम विरति धर,
द्वितीय प्रथम सम, रद[३२] कल कुल कर;
आठे आठे, थोभी कीजे,
सोळे गुरु, अर्द्ध बीजे. ५०

छंदःप्रभाकर वगेरेमा यति कही नथी.

आना उलटानेज सौम्याशिखा के अनंगक्रीडा केहे छे. छंदःप्रभाकरमा अनंगक्रीडा अने ज्योतिःशिखाने तथा छंदार्णवमां अनुष्टुप (श्लोक), गंधा, घनाक्षरी वगेरेने मुक्तकमां गण्या छे. ते मुक्तकनी व्याख्यामां

जणावेछे के, जे वृत्तमा क्याक गुरु लघु अने क्याक मात्र अक्षरोनी सख्यानो ज नियम होयछे, ते मुक्तक केहेवायछे

३६ सौम्याशिखा, अनंगक्रीडा. { पूर्वार्द्धमां १६ गुरु=३२ मात्रा / उत्तरार्द्धमां ३२लघु=३२मात्रा } आठ अक्षरे यति.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

पे'ले अर्द्ध, गुरु सोळे,
आठे आठे, थोभी बोले;
द्वितीय दलनी कल, बधी मळी ३२ रद कर,
पडे दश कल पर, विरति तरत धर. ९१

अनंगक्रीडामां स्रग्वलक्ष पेहेला दलमा आठ मगण एटले चोवीश गुरु अने बीजा दलमा आठ नगण एटले चोवीश लघु आणवा केहेछे

३७ चूलिका. { पूर्वार्द्धमां २७ ल+ग=२९ मात्रा. / उत्तरार्द्धमां २९ ल+ग=३१ मात्रा. }

पेहेला दलमा १, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २८ अने बीजा दलमा १, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

प्रथम दल सकल लघु कल बीशपर
मुनिवर धरी गुरु शशी करी;
लघु कल सकल मळी बीशपर नव
धरी द्वितीय दलपर शशी गुरु धरो. ९२

छंद शास्त्रमा जणाव्यु छे के—"केटलाक पूर्वार्द्धनी पेठे २७ लघु+१ गुरुना अने दल आणवानुं केहेछे" पण तेम थवाथी अतिरुचिरामां मळी जायछे. एटले अमे उपरनु लक्षण बांध्यु छे.

शिखाना उपर जे त्रण भेद बताव्या छे, ते उपरांत केटलाक बीजा ग्रंथकारो नीचे प्रमाणे विशेष भेद बतावेछे

३८ अतिरुचिरा. २७ ल+१ ग=२९ मात्रा प्रत्येक दलमां

८, ८, ७, ६ यति १, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २८ मात्राए ताल.

प्रथम द्वितीय दल, लघु कल बीशपर,

७
मुनि धरि +चरम, ग धर धाँरा; +अन्ते.
८ ८ ७
वसु पछीँ वसुपर, मुनिवरनीँ उपर,
६
रसपर विरति, अतिरुचिरा. ९२

शिखा { ४+४+४+४+४+४+ज=२८ मात्रानुं पेहेलुं दळ,
४+४+४+४+४+४+४+ज=३२ मात्रानुं बीजुं.

पेहेला दलमा १, ५, ९, १३, १७, २१, २५ अने बीजा दलमा
१,५,९,१३,१७,२१,२५,२९ मात्राए ताल.

६
कविवर! षट चोकल कर प्रथम दले पछीँ जगण धर एक;
४
पछीँ जो बीजे सात ड उपर जगणनो शिखाविषे छे विवेक. ९४

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीटीकामा शिखानु ए प्रमाणे माप छे

शिखित. २८ल+१ग=३० मात्रानुं प्रत्येक दल.

१,५,९,१३,१७,२१,२५,२९ मात्राए ताल.

२८
शशि पर वसु कल कुल कल लघु धर
१
पछीँ शशि गुरु धर प्रति दलमां;
४ ८
षटकर प्रथमपर पछीँ श्रुति श्रुति चड़ ... ताल
शिखित तुं रच कविवर! पलमां. ९५

अशिखा, { २४ ल+१ज=२८ मात्रा पूर्वार्द्धमां } एकपर चच्चारे
नाकि. { २८ल+१ज=३२मात्रा उत्तरार्द्धमां } चडना ताल.

६
षोगपर श्रुति कल सकल तुं लघु धर
उपर जगण कर सदाय,
७ ८
षोशपर वसु कल सकल लघु तुं कर
उपर जगण धर तुं अशिख रचाय ९६

छन्दःसुक्तावली तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमा आनु नाम शिखा छे.
वा...क्रममा नाकि नाम आप्यु छे

२ (अपर)शिखा { २८ल+१ग—३० मात्रा पेहेला दलम
३०ल+१ग—३२ मात्रा बीजा दलम

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल

विशपर वसु[८] कल लघु कर तुँ प्रथम
दलनीं [१]चरम धवल कमलीं छे;
विशपर दश लघु कल कुल कर शशीं[१]
गुरु चरमनीं उपर द्वितीय दल छे. ५

आथी उलटुं ते खंजा. [१]अंन्ते [१]गुरु

४३ (अपरा)खंजा (शिखा); { ३० ल+१ ग=३२ मात्रा पेहेला दलमां
२८ ल+१ ग=३० मात्रा बीजा दलमां

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

प्रथम दल तुं धर विशपर दश कल
सकल कल तुं लघु धर गुरु चरमे;
द्वितीय दल सकल लघु कल विश वसु[८]
चरमीं उपर शशीं[१] गुरु ज रमे. ५९

[१] अन्ते खंजाथी उलटु ते शिखा

४४ अतिशिखा, गुणित. ३० ल+१गुरु=३२मात्रानु प्रत्येक दल.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल

प्रथम द्वितीय दल सकल लघु कल तुँ
त्रीश कल पर शशीं[१] गुरु धर तुँ तिखा;
प्रथम उपर पछीं श्रुति[४] श्रुति[४] चडीं कल
टकरी धरीं तुँ रच सरस अतिशिखा. ९९

आर्या प्रकरण.

आर्यानो प्रयोग विशेषे करीने संस्कृत, मागधी अने मराठी भाषामां जोवामां आवेछे, व्रजभाषामा बहु ओछो छे. हवणां गूजराती भाषामां कांइक विशेष प्रचार थवा मांड्यो छे.

आर्यागण

आर्या (गाहा) प्रकरणमा चच्चार मात्राना पांच गण आवेछे, तेएवी रीते के मगण (SSS)मांथी एक गुरु ओछो करी बाकीना बे गुरु (SS)नी चार मात्रा गणायछे, तेने कर्ण अथवा मगण केहेछे. नगणमां एक लघु वधतां चार मात्रा थाय छे, तेने (||||) विप्रगण केहेछे. अने बाकीना चच्चार मात्राना स,ज अने भ, ए त्रण मूळ गण छे, ते लेवायछे. तेथी आर्याना नीचे प्रमाणे पांच गण थायछेः—

१ SS कर्ण (मगण.)
२ ||S सगण.
३ |S| जगण.
४ S|| भगण.
५ |||| विप्र (नगण)

आर्यानुं सामान्य माप.

प्रथम दलमां—७ चोकलिया गण+१ गुरु=३० मात्रा;

बीजा दलमां—५ चोकलिया गण+१ लघु+१ चोकलियो+१ गुरु=२७ मात्रा.

पूर्वार्द्ध (प्रथम दल)मां चच्चार मात्रानो एक एवा सात गण अने एक गुरु आवेछे तथा उत्तरार्द्ध (बीजा दल)मां पांच

चोकलिया गण+१ लघु+एक चोकल गण+१ गुरु आवे छे. अर्थात् बीजादलमां छठ्ठा गणने स्थाने मात्र एक लघु आणवो तथा बंने दलमां १ला, ३जा, ५मा, अने ७मा एटले विषम स्थानोमां जगण आणवोज नहि. आर्यानां पूर्वार्द्धमां छठ्ठा गणने स्थाने विप्र (न गण) अथवा जगण ज जोइये; जो विप्रगण होय तो तेना प्रथम अक्षरे विराम आवे, तेमज जो सातमो गण विप्र होय तो छठ्ठा गणना छेल्ला अक्षरे यति आवे, पछी ते छठ्ठो गण जगण होय तोपण चिंता नहि. तेमज उत्तरार्द्धमां पांचमो न (विप्र)गण होय तो चोथा गणना छेल्ला अक्षरे यति आवे. आ उपरथी एम समजवानुं छे के-गाथानी पेठे १२ अने १८ तेमज १२ अने १५ मात्राए पद छूटां पडता नथी, पण उपर कह्या प्रमाणे ज्यां ज्यां विराम कह्या छे, त्यां त्यां पदनी समाप्ति थाय छे, अने बीजा पदनो प्रारंभ थाय छे. छठ्ठो अने सातमो बंने गण न (विप्र)गण आवे तो प्रथम विराम मुख्य समजी त्यां आगळ पदनी समाप्ति समजवी, अने बीजो विराम गौण समजवो.

पिंगळाचार्यना मत प्रमाणे पण आर्यानां पूर्वार्द्ध अने उत्तरार्द्ध एवा बेदल केहेवामां आवेछे, पण पाद ठरावबामां आवतां नथी.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां कह्युं छे के – "जे आर्यामां एकज जगण होय ते कुलीना (कुळवती), बे जगण होय तो कुलटा (अथवा बीजा ग्रंथोना मत प्रमाणे घरूणी, संगृहिणी अथवा अभिसारिका केहेवाय,) बेथी वधारे जगण आवे तो वेश्या अथवा वारांगना केहेवाय अने एके जगण न आवे तो रंडा अथवा विधवा केहेवाय." केमके जगणनुं नाम नायक पाडेलुं छे, तेथी नायक अथवा धणी विनानी ते विधवा.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीका प्रमाणे गाहा बोलवानी रीति नीचे प्रमाणे छे:—

पेहेलुं पाद हंसनी पेठे धीमेथी बोलवुं,
बीजुं पाद सिंहविक्रमनी पेठे उद्धतपणे बोलवुं,
त्रीजुं पाद गजगतिनी पेठे ललितपणे उच्चारवुं, अने
चोथुं पाद सर्पनी गतिनी पेठे डोलतुं गावुं.

छंदोमंजरीना टीकाकार जीवानंद विद्यासागर भट्टाचार्य केहेछे के— "केटलाकनो एवो अभिप्राय छे के, १२, १८ अने १२, १५ मात्राए पाद गणी यति राखवामां आवी छे." पण आ मत बराबर नथी, कारण के आ प्रमाणे पाद पाडी उपरना बधा नियम लागु करवामां आवे तो ते जूदो भेद थाय छे, अने ते पथ्या केहेवायछे, एटले तेने आर्या कही शकाय नहि.

विप्रादि आर्यानां नाम.

विप्रा ... १३ लघु सुधीनी.
क्षत्रिया. . १३ थी २१ लघु सुधीनी.
वैश्या... . २१ थी २७ लघु सुधीनी.
शूद्रा.... . २७ थी ५३ लघु सुधीनी.

आर्या (गाथा) देश.

विप्रा . जाजनगर. (काशी मणी छे)
क्षत्रिया . . . अयोध्या.
वैश्या . ... महाराष्ट्र.
शूद्रा . कर्णाटक.

उपर प्रमाणे चार जातिनो आर्याना चार देश लखपत-

जशासिंधु तथा पिंगळछंदोग्रंथ इत्यादिमां कह्या छे, पण नागराज-पिंगळमा अयोध्याने बदले पूर्वदेश अने महाराष्ट्रने बदले महुरा एवां नाम आप्यां छे.

पद्मिनीआदि चार जातिनी आर्या.

जेमां प्रथम कर्ण गण होय ते पद्मिनी.

जेमां आदि सगण होय ते चित्रिणी.

जेमां आदि भगण होय ते हस्तिनी.

जेमां प्रथम विप्रगण होय ते शंखिनी.

आर्यानी अवस्था.

जेमां कर्ण गण बहु ते बाळा.

जेमां विप्रगण बहु ते मुग्धा.

जेमां भगण बहु ते प्रौढा.

जेमां सगण बहु ते वृद्धा केहेवाय.

पण पिंगळछंदोग्रंथ (चित्रसेनटीकावाळा)मां तथा बीजां केटलांक पिंगळोमां विप्राने बाळा, क्षत्रियाने प्रौढा, वैश्याने अर्द्धवयसी अने शूद्राने वृद्धा केहेछे.

उत्पत्ति.

गाथानुं कुळ छंद, पिता वेद, माता सरस्वती अने जन्म श्रवण नक्षत्रमां छे.

आर्यानां वर्ण, वस्त्रादिक.

जाति.	वर्ण.	वस्त्र.	आभरण.	तिलक.
विप्रा,	गौर,	श्वेत,	मोती,	श्वेत.
क्षत्रिया,	रक्त,	रक्त,	सोनुं,	लाल.
वैश्या,	पीत,	पीत,	रूपु,	पीळुं.

शूद्रा, श्याम, कृष्ण, पीतळ, श्याम.

पिंगळ छंदोग्रंथ (चित्रसेनटीकावाळा)मा शूद्रानु आभरण कळाइ जणाव्युं छे.

गाथानी मात्रानो पिंड.

गाथानी कुल ९७ मात्रा छे. तेमां पूर्वार्द्धमां चार मात्राना ७ गण अने उत्तरार्द्धमां चार मात्राना ६ गण एटले १३ गण चार मात्राना छे, तेना १३ अंश+ते सिवाय वळी पूर्वार्द्ध अने उत्तरार्द्धमां अंते अक्केक गुरु होय छे, ते एक गुरुनी बे मात्रा तेना २ अंश+छठ्ठा गणने स्थाने उत्तरार्द्धमां एक लघु आवेछे, तेनी एक मात्रानो १ अंश=१३+२+१=१६ अंश एकंदर गाथाना गणायछे.

तोल.

(पिंगळ छंदोग्रंथ प्रमाणे)

चार कला = १ पल,

१४ पल+१ कल (लघु)=१ गाथा.

अनुस्वार विचार.

कवि उत्तइनीकृत भगवतपिंगळमां कह्युं छे के—"जे अनुस्वार वगरनी गाहा (आर्या) ते आंधळी, एक अनुस्वारवाळी काणी (एक आंखवाळी), बे अनुस्वार वाळी ते बे आंखवाळी (सुनयनी), अने बहु अनुस्वारवाळी ते बहु आंखवाळी (मनोहरा) बनेछे."

कमळ्या आदि २६ जातिनी गाथा केहेवायछे. क्षत्रिया गाथा ते स्वभाव गाथा केहेवायछे, अने पद्मादि विशेष गाथा केहेवायछे.

अशासिंधु तथा पिंगळछंदोग्रंथ इत्यादिमां कह्या छे, पण नागराज-पिंगळमां अयोध्याने बदले पूर्वदेश अने महाराष्ट्रने बदले महुरा एवां नाम आप्यां छे.

पद्मिनीआदि चार जातिनी आर्या.

जेमां प्रथम कर्ण गण होय ते पद्मिनी.
जेमां आदि सगण होय ते चित्रिणी.
जेमां आदि भगण होय ते हस्तिनी.
जेमां प्रथम विप्रगण होय ते शंखिनी.

आर्यानी अवस्था.

जेमां कर्ण गण बहु ते बाळा.
जेमां विप्रगण बहु ते मुग्धा.
जेमां भगण बहु ते प्रौढा.
जेमां सगण बहु ते वृद्धा केहेवाय.

पण पिंगळछंदोग्रंथ (चित्रसेनटीकावाळा)मां तथा बीजां केटलांक पिंगळोमां विप्राने बाळा, क्षत्रियाने प्रौढा, वैश्याने अर्द्धवयसी अने शूद्राने वृद्धा केहेछे.

उत्पत्ति.

गाथानुं कुळ छंद, पिता वेद, माता सरस्वती अने जन्म श्रवण नक्षत्रमां छे.

आर्यानां वर्ण, वस्त्रादिक.

जाति.	वर्ण.	वस्त्र.	आभरण.	तिलक.
विप्रा,	गौर,	श्वेत,	मोती,	श्वेत.
क्षत्रिया,	रक्त,	रक्त,	सोनुं,	लाल.
वैश्या,	पीत,	पीत,	रूपुं,	पीळुं.

शूद्रा, श्याम, कृष्ण, पीतळ, श्याम.

पिंगळ छंदोग्रंथ (चित्रसेनटीकावाळा)मा शूद्रानु आभरण कळाइ जणाव्युं छे

गाथानी मात्रानो पिंड.

गाथानी कुळ ५७ मात्रा छे. तेमां पूर्वार्द्धमां चार मात्राना ७ गण अने उत्तरार्द्धमां चार मात्राना ६ गण एटले १३ गण चार मात्राना छे, तेना १३ अंश+ते सिवाय वळी पूर्वार्द्ध अने उत्तरार्द्धमां अंते अक्केक गुरु होय छे, ते एक गुरुनी बे मात्रा तेना २ अंश+छठ्ठा गणने स्थाने उत्तरार्द्धमां एक लघु आवेछे, तेनी एक मात्रानो १ अंश=१३+२+१=१६ अंश एकंदर गाथाना गणायछे.

तोल.

(पिंगळ छंदोग्रथ प्रमाणे)

चार कला = १ पल,

१४ पल+१ कल (लघु)=१ गाथा.

अनुस्वार विचार.

कवि उल्हइजीकृत भगवनपिगळमां कह्युं छे के—"जे अनुस्वार वगरनी गाहा (आर्या) ते आंधळी, एक अनुस्वारवाळी काणी (एक आंखवाळी), बे अनुस्वार वाळी ते बे आंखवाळी (सुनयनी), अने बहु अनुस्वार वाळी ते बहु आंखवाळी (मनोहरा) बनेछे."

कमळा आदि २६ जातिनी गाथा केहवायछे, क्षत्रिया गाथा ते स्वभाव गाथा केहवायछे, अने पथ्यादि विशेष गाथा केहवायछे.

४९. आर्या-गाथा, गाहा।

१. ४+४+४+४+४+ज के विप्रगण+४+ग=३०.

२. ४+४+४+४+४+ल+४+ग=२७.

प्रथम दलमा १,५,९,१३,१७,२१,२५,२९ मात्राए ताल
द्वितीय दलमा १,५,९,१३,१७,२२,२६,मात्राए ताल.

पांच डगण पर छट्टो द्विजवर अथवा ज,गण धरो पदमां,
तेपर एक डगण करो, अंते ग करो प्रथम दलयां. ६०
बीजुं दल एमज पण, छट्ठे लघु मात्र एक तो धरवो;
विषम गणे प्रति दलमां अवश्य, जगण नहि कदि करवो. ६१
छट्ठो जो द्विजवर तो प्रथमाक्षर पछीज, विरति, पद करजो;
रस मुनि वे गण द्विज तो, रसनी प्रण अंत पद धरजो. ६२
बीजा दलमां पंचम द्विजवर तो त्यां थकीज, पद गणजो;
अवर प्रकार बने तो अन्ते, यति पद सहज भणजो. ६३

१ मागधी छंद शतक आदिमा आ नाम छे

केदारकविनो संस्कृत भाषामां रचेलो "वृत्तरत्नाकर" नामे ग्रंथ छे, जेनापर "भावप्रदीपिका" नामनी टीका जनार्दने करी छे, तेमां लखेछे के-जेमां विषम अक्षरवाळां पाद (जेवांके ८,१०, ७,९ अक्षरनां अथवा ३,६ पादनां) होय ते गाथा केहेवायछे. जेके मंगल, गीतिका, चेटक, विपद्गिति, ध्रुवक, चर्च्चरी, पद्धतिका, कालिका, बोल्लितका, द्विपदी, उत्साह, चत्वरी, पदुलिका, द्विपथ, आदि केटलाक एवा छंदोनो एमां संग्रह थायछे माटे ए सर्व संग्रहिणी केहेवायछे.

"वृत्तरत्नाकर" अने तेनी नारायणभट्टे करेली टीकामां केहे छे के, "त्रण, छ, के दश अथवा तेथी अधिक जेमां चरण

आवे तेने, अने प्रत्येक चरणमां न्यूनाधिक अने नियम वगरना गुरु लघु जेमां आवे तेने गाथा केहेछे.

छंदःशास्त्रमां एम केहेछे के—प्रस्तार प्रमाणे छंदना जे भेद थायछे, तेमांथी प्राचीन मुनियो अने ग्रंथकारो जे प्रसिद्ध छंदोनां नाम कही गया छे तथा ते सिवाय प्रस्तारनी रीतिथी नवा थइ शके ते वर्ज्य करतां बाकी जे नवा छंद जोवामां आवे ते गाथा केहेवाय.

वळी संस्कृतमां रचाय तो आर्या अने प्राकृतमा रचाय तो गाथा केहेवायछे. अने केटलाक मागधी ग्रंथोमां तेनुं नीचे प्रमाणेज माप होयछे:—

गाथा.

१, ३ पादमां १२ मात्रा.
२जा पादमां १८ मात्रा.
४था पादमां १५ मात्रा.

गाथाना माप करतां विशेष नियम थवाथी आर्यादि भेद थायछे. एम केटलाकनुं मत छे.

आर्याना भेद नीचे प्रमाणे छेः—

	भेद.	लघु	गुरु	वर्ण
१	लक्ष्मी, लच्छी.	३	२७	३०
२	ऋद्धि.	५	२६	३१
३	बुद्धि.	७	२५	३२
४	लज्जा.	९	२४	३३
५	विद्या, विज्जा.	११	२३	३४
६	क्षमा, खमाय.	१३	२२	३५
७	वैदेही, देही, अदेही,	१५	२१	३६

४९. आर्या-गाथा, गाहा॥

१. ४+४+४+४+४+ज के विप्रगण+४+ग=३०.
२. ४+४+४+४+४+ल+४+ग=२७.

प्रथम दलमां १,५,९,१३,१७,२१,२५,२९ मात्राए ताल
द्वितिय दलमा १,५,९,१३,१७,२२,२६,मात्राए ताल

पांच डगण पर छट्ठो द्विजवर अथवा ज,गण धरो पदमां,
तेपर एक डगण करो, अंते ग करो प्रथम दलमां. ६०

बीजुं दल एमज पण, छट्ठे लघु मात्र एक तो धरवो;
विषम गणे प्रति दलमां अवश्य, जगण नहि कदि करवो. ६१

छट्ठो जो द्विजवर तो प्रथमाक्षर पछी ज, विरति, पद करजो;
रस[६] मुनि[७] बे गण द्विज तो, रसनी[६] पण अंत पद धरजो. ६२

बीजा दलमां पंचम द्विजवर तो त्यां थकीज, पद गणजो;
अवर प्रकार बने तो अन्ते, यति पद सहज भणजो. ६३

॥ मागधी छंद शतक आदिमां आ नाम छे

केदारकविनो संस्कृत भाषामां रचेलो "वृत्तरत्नाकर" नामे ग्रंथ छे, जेनापर "भावप्रदीपिका" नामनी टीका जनार्दने करी छे, तेमां लखेछे के-जेना विषम अक्षरवाळां पाद (जेवांके ८,१०, ७,९ अक्षरनां अथवा ३,६ पादनां) होय ते गाथा केहेवायछे जेमके मंगल, गीतिका, फेट्टक, विपद्गीति, ध्रुवक, चर्चरी, पद्धतिका, कालिका, वेल्हितका, द्विपदी, उत्साह, चत्वरी, पदुलिका, द्विपथ, आदि केटलाक एवा छंदोनो एमा संग्रह थायछे माटे ए सर्व संग्रहिणी केहेवायछे.

"वृत्तरत्नाकर" अने तेनी नारायणभट्ट करेली टीकामां कहे छे के, "त्रण, छ, के दश अथवा तेथी अधिक जेमां चरण

आवे तेने, अने प्रत्येक चरणमां न्यूनाधिक अने नियम वगरना गुरु लघु जेमां आवे तेने गाथा केहेछे.

छंद.शास्त्रमां एम केहेछे के– प्रस्तार प्रमाणे छंदना जे भेद थायछे, तेमांथी प्राचीन मुनियो अने ग्रंथकारो जे प्रसिद्ध छंदोनां नाम कही गया छे तथा ते सिवाय प्रस्तारनी रीतिथी नवा थइ शके ते वर्ज्य करतां बाकी जे नवा छंद जोवामां आवे ते गाथा केहेवाय.

वळी संस्कृतमां रचाय तो आर्या अने प्राकृतमा रचाय तो गाथा केहेवायछे. अने केटलाक मागधी ग्रंथोमां तेनुं नीचे प्रमाणेज माप होयछे:—

गाथा.

१, ३ पादमां १२ मात्रा.

२जा पादमां १८ मात्रा.

४था पादमां १५ मात्रा.

गाथाना माप करतां विशेष नियम थवाथी आर्यादि भेद थायछे. एम केटलाकनुं मत छे.

आर्याना भेद नीचे प्रमाणे छेः—

	भेद.	लघु	गुरु	वर्ण
१	लक्ष्मी, लच्छी.	३	२७	३०
२	ऋद्धि.	५	२६	३१
३	बुद्धि.	७	२५	३२
४	लज्जा.	९	२४	३३
५	विद्या, विज्जा.	११	२३	३४
६	क्षमा, खमाय.	१३	२२	३५
७	वैदेही, देही, अदेही, देवी, देहीया.	१५	२१	३६

८	गौरी, गोरी.	१७	२०	३७
९	धात्री, धाइ, रात्री, राया.	१९	१९	३८
१०	चूर्णी, जुह्ना, पूर्णी.	२१	१८	३९
११	छाया.	२३	१७	४०
१२	कान्ति, कन्ति.	२५	१६	४१
१३	महामाया, महामईया.	२७	१५	४२
१४	कीर्त्ति, कीत्ती.	२९	१४	४३
१५	सिद्धि, सिद्धा, मुद्दा.	३१	१३	४४
१६	मानी, मानिनी, मनोरमा, मन्ना.	३३	१२	४५
१७	रामा.	३५	११	४६
१८	गाहिनी.	३७	१०	४७
१९	विश्वा, विभा.	३९	९	४८
२०	वासिता, सीया.	४१	८	४९
२१	शोभा.	४३	७	५०
२२	हरिणी.	४५	६	५१
२३	चक्री, चक्की.	४७	५	५२
२४	सारसी, रंसी.	४९	४	५३
२५	कुररीय.	५१	३	५४
२६	सिंही.	५३	२	५५
२७	हंसी.	५५	१	५६

पिंगळ छंदोग्रंथ (चित्रसेनटीकावाळा)मां अंक ७मे देहीया, अंक ९मे राया, अंक १५मे मुद्दा, १६मे मन्ना, १८मे रोहिणी, १९मे विभा, २०मे सीया, २३मे चक्की, अने २६मे हंसी

जणावी तेणे एकंदर २६ भेद बताव्या छे.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा अंक १०मे पूर्णा नाम आप्युं छे.

वृत्तमौक्तिकमां २४मी "हंसी" अने २५मी "सारसी" गणी कुल पचीश भेद लख्या छे अने ते सर्वेनां उदाहरण "उदाहरण मंजरी" नामना ग्रंथमां आप्यां छे.

"छंद प्रभाकर"मां कह्युं छे के—"एक गुरुनी आर्या बनी शके नहि" एटले तेणे २७ने बदले २६ भेद उपर प्रमाणे कवि चंद्रशेखरना मत प्रमाणे गुरु लघुना क्रमथी आप्या छे, परंतु वच्चे १८मो "गाहिनी" नामे भेद आप्यो नथी अने अंक ७मे देवी नाम आप्युं छे.

नागपिंगळमां गाहाना २६ भेद आप्या छे तेनां नाम—

१कमला, २लुल्लिया, ३लीला, ४जुह्ना, ५रंभाय, ६मागधी, ७ लच्छी, ८ विज्जू, ९ माला, १० हंसी, ११ शशिलेहा, १२ जाह्नवी, १३ मुग्धा, १४ काली, १५ कुमारी, १६ मेहा, १७ सिद्धि, १८ रिद्धि, १९ कुम्भिणी, २० धरणी, २१ जरकणी, २२वीणा, २३वंभी, २४गंधर्वी, २५मंजरी अने २६ गौरी.

शंभू अथवा स्वयंभू कृत छंदोग्रंथ प्रमाणे आर्यानां २६ नाम.

१ विमला.	२. सरसा.
३ मदना.	४ रत्ना.
५ संतोषा.	६ मालती.
७ चम्पका.	८ कनका.
९ रूपा.	१० तम्बा.
११ वरला. वारला.	१२ गर्भांग

ए पांच भेदोमांना प्रत्येकना नीचे प्रमाणे १६ भेद थायछे,

१ पथ्या.	९ मुख विपुला
२ पथ्या चपला.	१० मुखविपुला चपला
३ पथ्या मुखचपला.	११ मुखविपुला मुखचपला.
४ पथ्या जघनचपला.	१२ मुखविपुला जघनचपला
५ विपुला.	१३ जघनविपुला.
६ विपुला चपला.	१४ जघनविपुला चपला.
७ विपुला मुखचपला.	१५ जघनविपुला मुखचपला
८ विपुला जघनचपला.	१६ जघनविपुला जघनचपला.

(छंद प्रभाकरमां आ १६ नामो केटलाक फेरफार साथे बतावेलां छे.)

प्रथम लखेला मुख्य पांच भेद साथे आ सोळ भेदनुं संमिलन थतां एकंदर ८० भेद थायछे. वळी कोइ कवि केहेछे के सूक्ष्म रीतिना मिश्रणथी एना २००० भेद थइ शके.

४६ पथ्या.

(विराम वर्ज्य करीने बधा नियम आर्या प्रमाणे एटले चचार मात्राना त्रण गण अर्थात् बार मात्राए विराम आवे)

४+४+४. ४+४+ज के विप्र+४+ग=३०

४+४+४. ४+४+१लघु+४+ग=२७

त्रीजा गणनी अन्ते, अथवा कल बार ज्यो पूरी थातां;
पथ्यामां यति करजो, आर्या नियमे अवर गातां. ६४

पथ्या आदिना आगिक नियम साथे आर्याना नियम पण लागु पडेछे, माटे एने पथ्याआर्या इत्यादि नाम पण आपवामां आवेछे

13 सारंगा.	१४ लक्ष्मी.
१५ चन्द्रानना.	१६ सिद्धिकरा.
१७ विप्रा.	१८ मोहकरा.
१९ मदोत्कटा.	२० मदजनना.
२१ प्रथुलश्रोणी.	२२ गजगमना.
२३ दीर्घकेशी.	२४ कदम्बा.
२५ रंगदा.	२६ रत्नगर्भा.

आखी आर्यामां १३ लघु आवे तो ते विप्रा केहेवायछे, २१ लघु आवे तो ते क्षत्रिया केहेवायछे, २७ लघु आवे तो वैश्या केहेवायछे, अने ते उपरांत आवे तो ते शूद्रा केहेवायछे. अर्थात् अंक १थी ६ सुधीनी विप्रा, ७ थी १० सुधीनी क्षत्रिया, ११ थी १३ सुधीनी वैश्या, अने १४ थी २७ सुधीनी शूद्रा जाति केहेवायछे

आर्यांना मुख्य पांच भेद नीचे प्रमाणे छे, तेनी मात्रा आदिनुं कोष्टक.

क्रम	नाम.	मात्रा पूर्वार्द्ध	मात्रा उत्तरार्द्ध	मात्रा कुल	बीजां नाम	अर्द्धसम के विषम
१	आर्या.	३०	२७	५७	गाहा, गाथा	विषम.
२	गीति.	३०	३०	६०	उग्गाहा उद्गाथा	अर्द्धसम.
३	उपगीति.	२७	२७	५४	गाहू	अर्द्धसम
४	उद्गीति.	२७	३०	५७	विगाहा, विगाथा.	विषम.
५	आर्यागीति.	३२	३२	६४	स्कधक, खधा, साहिनी	अर्द्धसम.

ए पांच भेदोमांना अन्योन्यना नीचे प्रमाणे १६ भेद थायछे,

१ पथ्या.	९ मुख विपुला.
२ पथ्या चपला.	१० मुखविपुला चपला.
३ पथ्या मुखचपला	११ मुखविपुला मुखचपला.
४ पथ्या जघनचपला.	१२ मुखविपुला जघनचपला
५ विपुला.	१३ जघनविपुला.
६ विपुला चपला.	१४ जघनविपुला चपला.
७ विपुला मुखचपला.	१५ जघनविपुला मुखचपला.
८ विपुला जघनचपला.	१६ जघनविपुला जघनचपला.

(छंद प्रभाकरमां आ १६ नामो केटलाक फेरफार साथे बतावेलां छे.)

प्रथम लखेला मुख्य पांच भेद साथे आ सोळ भेदनुं संमिलन थतां एकंदर ८० भेद थायछे. वळी कोइ कवि केहेछे के सूक्ष्म रीतिना मिश्रणथी एना २००० भेद थइ शके.

४६ पथ्या.

(विराम वर्ज्य करीने बधा नियम आर्या प्रमाणे एटले चच्चार मात्राना त्रण गण अर्थात् बार मात्राए विराम आवे)

४+४+४. ४+४+ज के विप्र+४+ग=३०

४+४+४. ४+४+१लघु+४+ग=२७

त्रीजा गणनी अन्ते, अथवा कळ बार दो पूरी थातां;
पूर्वार्द्धमां यति करजो, आर्या नियमे अवर गातां ६४

पथ्या आदिना आगिक नियम साथे आर्याना नियम पण लागु पडेछे, माटे एने पथ्याआर्या इत्यादि नाम पण आपवामां आवेछे.

प्रमाणे एटले बीजु दल ४+ज+४+ज+४+ल+४+गु=२७.

जघनचपला प्रथम दल, आर्या सम तो अगत्य करी आवे;
चपला समान बीजुं, सदाय तो सुकवि मन भावे. ७१

छंदोयोवमा पूर्वार्द्ध मुखचपला प्रमाणे लाववा कह्यु छे, पण ते स
ग्राह्य नथी.

५४ उभय (महा) चपला.

जेना बने दलमा चपलानो नियम पाळवामा आवे ते

१. ४+ज+४+ज+४+ज के वि०+४+गु=३०.

२. ४+ज+४+ज+४+ल+४+गु=२७.

चपला समान जेनां, दलो बने ते उभयजचपला छे;
चपला महा वळी ते, कवि कहेछे खरे आ छे. ७२

एक पथ्या त्रण विपुला थइने चार थाय अने वळी ते चार
भेद साथे त्रण प्रकारनी चपला मिश्र थता तेना बार भेद थाय
छे, ए रीते एक आर्याना सोळ भेद थायछे ते नीचे प्रमाणे.

५५ (१) पथ्यार्या.

आर्या सम पथ्यार्या, पण बारे पद गणाय विषमे तें
बीजे अढार थाता, चोथे पंदर कलाए तो. ७

५६ (२) आदि विपुलार्या.

आदि दले त्रीजा गणकेरो, शब्दज पूरो थतां यति छे;
आदि विपुला आर्या, रचजो एम कविनी मति छे. ७४

आ उदाहरणमां त्रीजो गण जे बार मात्राए गण ए शब्द
ण आगळ पूरो थाय छे. ते शब्दनी छठ्ठी विभक्तिनो प्रत्यय रे
छे ते चोथा गणना अक्षरथी विपुल=विस्ताराय छे ने ते ठेकाणे य
आवेछे.

५७ (३) अन्त (जघन) विपुलार्या.

अन्तज दळना त्रीजा, गणनो शब्दज जहां पूरो करशे;
त्यां यति कवि **अन्त विपुला**, आर्यामां खचित धरशे. ७५

अन्त एटले बीजा दळमां "विपुला" शब्दे त्रीजा गणनी बार मात्रा 'पु' आगळ पूरी थतां **ला** अक्षर चोथा गणनो छतां विपुला ए शब्द पूरो थवामां त्रीजा गणने विपुल करवामां एटले विस्तारवामां खपी जायछे अने **विपुला** शब्दने छेडे यति आवेछे.

५८ (४) उभय विपुलार्या.

उभय दळोतणा त्रीजा, गणना शब्द ज्यां पूरा मानो;
ते **उभय विपुला आर्या**, छे एमज तमे जाणो. ७६

उभय एटले पेहेला तथा बीजा दळमां त्रीजा गण उपरांत यति विपुलायछे एटले विस्तारायछे, जेमके, पेहेला दळमां त्रीजा शब्दना **त्री** आगळ बार मात्रा पूरी थतां त्यां यति जोइये तेने बदले जा भकनां, **त्रीजा** ए शब्द चोथा गणनी बे मात्रा लइने पूरो थायछे अने त्यां यति विपुल थायछे; तेमज बीजा दळमां आर्या ए शब्दनी छेवटे यति विस्तार पामेछे.

५९ (५) मुखचपला पथ्यार्या.

पूर्वार्द्धमांह् आवे, सदाय चपलातणा नियम ज्यारे,
मुखचपला पथ्यार्या, वारे पथ्याविरति धारे. ७७

६० (६) मुखचपला आदिविपुला आर्या.

मुखमा जणाय चपलातणाज, नियमो सदा समाया छे;
यति विपुला आदिनो, मुखचपलादिविपुलार्या छे. ७

६१ (७) मुखचपलान्तविपुलार्या.

पूर्वार्द्धमांह धारी, अबाध चपलातणा नियम दीजे;
मुखचपलान्त विपुलार्यामां, विपुला विरति बीजे.

६२ (८) मुखचपलोभय विपुलार्या.

चपलातणा नियम सकल, तो धरो ठिक करी प्रथम दलमां
मुखचपलोभय विपुलार्यामां, विपुला यति द्विदलमां. ८

६३ (९) जघनचपला पथ्यार्या.

जघनजे चपला पथ्या, आर्यामा यति अणाय पथ्याना;
बीजा दले नियम तो, अणाय सर्वेय चपलाना.

६४ (१०) जघनचपलादि विपुलार्या.

जघनचपलादि विपुलार्यामां, विपुलातणी विरति पे'ले;
चपलातणा नियम तो, जणाय जोतां दले छेले.

६५ (११) जघनचपलान्त विपुलार्या.

जघनचपलान्त विपुला, आर्यामां विपुल विरति बीजे,
चपलातणो कवि! अचूक, उत्तर पदे नियम कीजे.

६६ (१२) जघनचपलोभयविपुलार्या.

जघनचपलोभयविपुलार्यामांह, विरति विपुला द्विदले;
चपलातणा नियम सकल, तो बीजे दल झटपट पळे.

६७ (१३) महाचपलापथ्यार्या.

पथ्या यति द्विदलमां, पळे द्विदल नियमज चपलाना तो,
पथ्या महाज चपला, गणाय आर्या सरस आ तो.

६८ (१४) महाचपलादि विपुलार्या.

आदि विपुलाज आर्या, महाज चपला नियम धारी. ८६

६९ (१५) महा चपलान्तविपुलार्या.

द्विदल चपला सुनियमज, महाज चपला सुअन्त विपुलार्मा;
उत्तर दले विपुलातणी, विरति आणजो आमां. ८७

७० (१६) महाचपलोभय विपुलार्या.

द्विदल चपला नियमज विपुला, यति त्यां धरो द्विदलमां तो;
आर्या महाजचपलामहाविपुला, बने आ तो. ८८

गीति.

७१ गीति, उद्गाथा, उग्गाहा

१. ४+४+४+४+४+ज अथवा विप्र+४+ग=३०.

२. ४+४+४+४+४+ज अथवा विप्र+४+ग=३०.

पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध आर्याना पूर्वार्द्ध प्रमाणे

आर्याना पे'ला दल, समान नियमो रचो दले बे तो;
तो पछी जरूर जाणो, उद्गाथा-गीति छे खरे ए तो. ८९

उद्गाथानेज केटलाक पिंगळकारो "आर्यागीति" केहेछे, एम प्राकृतपिंगळसूत्रनी लक्ष्मीनाथभट्टे करेली प्रदीप नामनी टीकामां कह्युं छे.

उग्गाहा (गीति)नी ६० मात्रा थायछे, तेना गण पाडतां. सात गण अने छेल्ला बे गुरु थशे. ते सात गणना गाहा प्रस्तारनी रीति प्रमाणे १२,८०० रूप पूर्वार्द्धनां थाय, अने तेटलांज उत्तरार्द्धनां थाय, माटे ते बनेनो परस्पर गुणाकार करतां कुल रूप १६;३८,४०,००० थायछे.

७२ (१) पथ्या गीति.

पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध पथ्या आर्याना पूर्वार्द्ध प्रमाणे

पथ्या पूर्व दले ज्यम, त्रीश कळा रवि[१२] अढार यति आवे;
पथ्या गीति विषे तो, तेवां बे दळ विवेकी कवि लावे. ९०

७३ (२) आदिविपुला गीति.

पूर्वार्द्धनी यति आदि विपुला आर्याना पूर्वार्द्ध प्रमाणे

आदि दले यति विपुलानी, ने गीतितणा नियम बेमां;
आदिविपुला गीति, रचवा काजे प्रकार ए जेमां. ९१

७४ (३) अन्तविपुला गीति.

उत्तरार्द्धनी यति अन्त विपुला प्रमाणे.

अन्तविपुला गीति, रचतां गीतितणा नियम द्विदले;
अन्त दले यति विपुलाकेरी, जेमां खरे खरीज्ञ पळे. ९२

७५ (४) उभय विपुला गीति.

पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्धनी यति विपुलाआर्याना पूर्वार्द्ध प्रमाणे.

उभयविपुला गीतिमांहे, द्विदले यति विपुलानी छे;
नियम रचायज गीतिकेरा, जाणे सदाय ज्ञानी छे. ९३

७६ (५) मुखचपला पथ्या गीति.

प्रथम दलमां मुखचपलाना नियम एटले बीजा तथा चोथा गणने स्थाने जगण आवे अने पथ्यागीति प्रमाणे बारे अने अढारे यति आवे

मुखदलनों मांहे नियमो, बधाय चपलातणा खराज पळे;
मुखचपला पथ्या गीति, रचतां पथ्यातणी विरति द्विदले. ९४

७७ (६) मुखचपला आदिविपुला गीति.

प्रथम दलमा मुखचपलाना नियम तथा आदिविपुलानी यति आवे.

मुख दल विषेज चपलातणा, नियम यति धराय विपुलानी;
ए गीति मुखचपला, आदि विपुला गणायछे ज्ञानी! ९५

७८ (७) मुखचपला अन्तविपुलागीति.

प्रथम दलमा चपलानो नियम, अने द्वितीय दलमां विपुलानी यति.

अन्तविपुलाजगीति, गणायछे ते मुखचपला सारी;
अन्त दळे याति विपुलानी, ने मुख दल नि'म चपला धारी. ९६

७९ (८) मुखचपला उभयविपुलागीति.

प्रथम दलमा चपलानो नियम अने बने दलमा विपुलानी यति.

द्विदले यति विपुलातणीज, मुखदळे नि'म चपला थाशे;
मुखचपला उभय विपुला, गीति तो रचाइ ठिक जाशे ९७

८० (९) जघनचपलापथ्यागीति.

जघन एटले बीजा दलमा चपलाना नियम अने बेमां पथ्यानी यति

अन्तदळे चपला नि'म, पथ्या गीतितणी विरति धारी;
जघनचपलाज पथ्या, रचाय गीति सदाय ते सारी. ९८

८१ (१०) जघनचपला आदिविपुलागीति.

बीजा दलमां चपलाना नियम अने पेहेला दलमा विपुलानी यति.

चपला नि'म उत्तर दलमा, याति आदि दळ विपुला धरजो;
जघन चपलाज गीति, विपुलआदि खरेखरी करजो. ९९

८२ (११) जघनचपलाअन्तविपुलागीति.

बीजा दलमा चपला प्रमाणे नियम अने विपुला प्रमाणे यति.

जघनजचपलागीति, अन्तविपुला सदाय रचवी तो;
अन्त दळमांह चपलातणो, नियम ने यति विपुलानी तो. १००

८३ (१२) जघनचपलाउभयविपुलागीति.

बीजा दलमा चपला प्रमाणे नियम अने बन्ने दलमा विपुला प्रमाणे यति

जघनचपलाउभयविपुलामा, विपुलातणी विरति द्विदले;
अन्त दळमांह चपलातणो, नियम ए गीति विषेज पळे. १०१

प्रथम दले सत्तावीश, बीजे त्रिश कल गणी आणो;
आर्या विलोम उद्गीति, एज विगाथा-विगाह पण जाणो. १२३

नारायणभट्टी प्रमाणे आर्यानी विलोम एटले उलटु छे, माटे एना ८,१९,२०,००० एटले आर्या जेटलाज रूप थाय छे.

१०६ (१) पथ्या उद्गीति.

१२ १५ १२ १८
रवि तिथि प्रथम दले ने, रवि अष्टादश बीजे आवे;
पथ्याउद्गीतिमां एवी पथ्या समी विरति लावे. १२४

१०७ (२) आदिविपुलाउद्गीति.

विपुलायति आदि दलमां, ने उद्गीति नियम आणो,
आदिविपुला नामे, ए उद्गीति तमे खरी जाणो. १२५

१०८ (३) अन्तविपुला उद्गीति.

अन्त दले विपुला यति, उदगीतिमांय तो आवे;
अन्त विपुला उद्गीतिने, नामे कविजन मन भावे. १२६

१०९ (४) उभयविपुला उद्गीति.

उभय दले विरति विपुलानो, आवे सदा जेमां;
उभय विपुला उद्गीति, तो एवी जणायछे एमां. १२७

११० (५) मुखचपला पथ्या उद्गीति.

पथ्या यति द्विदलमां, मुखेज चपला धरो ज्यारे;
मुखचपला पथ्या ते, उद्गीति तो गणो तमे त्यारे. १२८

१११ (६) मुखचपला आदिविपुला उद्गीति.

चपला अणाय मुखमांह, ठीक विपुला यति आवे;
मुखचपलादि विपुला, उद्गीति नामनेज शोभावे. १२९

११२ (७) मुखचपला अन्तविपुला उद्गीति.

मुख दलनी मांह चपला, विराम विपुलातणो छेले;

मुखचपला अन्तविपुला, उद्गीति रचाय ए मेळे. १३०

११३ (८) मुखचपला उभयविपुला उद्गीति.

चपला धरो मुखे विपुला, विरति बे दळे धरजो;
मुखचपला उभयविपुला, उद्गीति नियम धरी करजो. १३१

११४ (९) जघनचपला पथ्या उद्गीति.

अन्त दळे चपला नि'म, पथ्याना ल्यो यति उतारी;
जघनचपलाज पथ्या, रचाय उद्गीति तो सदा सारी. १३२

११५ (१०) जघनचपला आदिविपुला उद्गीति.

जघनचपलादिविपुलामां, यति विपुलातणी पे'ले;
चपलातणा नियम तो, जणाय उद्गीतिने विषे छेले. १३३

११६ (११) जघनचपला अन्तविपुला उद्गीति.

जघनज चपला उद्गीति, अन्त विपुला सदा मानी;
अन्त दळ मांह चपलातणो, नियमने विरति विपुलानी. १३४

११७ (१२) जघनचपला उभयविपुला उद्गीति.

जघनचपला उभय विपुलामां, विपुला विरति द्विदळे;
अन्त दळमांह चपलातणो, नियम उद्गीति विषेज पळे. १३५

११८ (१३) महाचपला पथ्या उद्गीति.

पथ्या यति द्विदळमां, पळे द्विदळ नियम चपलानो;
पथ्या महाजचपला, रचाय उद्गीति सदाय ए जाणो. १३६

११९ (१४) महाचपला आदिविपुला उद्गीति.

चपला रचो द्विदळमांह, ने विपुला विरति पे'ले;
उद्गीति महाज चपला, रचाय आदि विपुला सरस मेळे. १३७

१२० (१५) उभय(महा)चपला अन्तविपुला उद्गीति.

चपला करो द्विदलमां, यति-विपुला- तणी- छेले;
अन्तविपुला उभयजचपला, रचो उद्गीति सरस मेळे. १३८

१२१ (१६) महाचपला उभयविपुला उद्गीति.

द्विदल-चपला नियमज विपुला, विरति तो धरो बेमां;
उभय विपुला महा चपल, तो बने उद्गीति सरस एमां. १३९

आर्या गीति.

१२२ आर्या गीति.

गीतिना प्रति दलमां अंते एक गुरु वधे अने बीजुं बधुं गीति प्रमाणे आवे ते आर्यागीति केहेवायछे. मंदार-मरंदचंपूनो कर्त्ता, पिंगलाचार्य अने तेना मतावलंबी अग्नि-पुराणवाळो तेमज केटलाक बीजा ग्रंथकारना मत प्रमाणे आर्याना पूर्वार्द्धमांज एक गुरु वधारवा केहेछे.

४+४+४+४+४+ज के विप्र+४+गु+गु=३२ नुं प्रत्येक दल

आठ डगण-प्रति दलमां, अथवा गीतिदलपर गुरु शशि आणोजी;
तो ते आर्या गीति, गीतिकेरा नियमथकी जाणोजी. १४०

गीतिना मूळ लक्षणमां बने दलमां अंते एक गुरु होयछे, अने आर्या गीतिमां उपर प्रमाणे बीजो गुरु लाववा कह्यु, तेथी बे गुरु थया पण तेने बदले पेहेला बे लघु अने अंते एक गुरु पण आवी शके. एम "छंद गाब", मा कह्यु छे. "पिंगळादर्शमां" बतावेलु आर्यागीतिनुं लक्षण "छंद सूत्र" आदि प्रधान ग्रंथोथी विरुद्ध थायछे.

आमां गीतिनां बंने दल उपर एक गुरु वधारवो, एम कह्युं छे. एटले छेल्ला बे गुरु तेना तेज रेहेतां बाकीना आठ गणना रूप गीति प्रमाणेज १६,३८,४०,००० आगळ कह्या प्रमाणे थाय छे.

१२३ (१) पथ्या आर्यागीति.

पथ्यासम रवि वीशे, प्रति दलमां विरति बे वनी आवेछे;
पथ्या आर्यागीति, एम कहीने कविजन बोलावेछे. १४१

१२४ (२) आदिविपुला आर्यागीति.

आदि दलमां विरति विपुलानो, कवता कदापि जो आवे तो;
ते आर्यागीतिने, आदिविपुला कदाय ए दावे तो. १४२

१२५ (३) अन्तविपुला आर्यागीति.

अन्त दले कदि आवे, विपुलाकेरो विराम ठिक करीने जो;
तो अन्तविपुला आर्यागीति, तें सदाय कवि! केहेजो. १४३

१२६ (४) उभयविपुला आर्यागीति.

उभय दल विषे जो लावो, यति विपुलातणी ठिकज धारी जो;
तो उभय विपुला आर्यागीति, ते गणाय सुखकारी जो. १४४

१२७ (५) मुखचपलापथ्या आर्यागीति.

चपलातणो नि'म मुखे, विराम पथ्यातणो रचो दल मांहे;
तो मुखचपला पथ्या, आर्यागीति वने सरस पल मांहे. १४५

१२८ (६) मुखचपला आदिविपुला आर्यागीति.

मुखदल विषेज चपलातणा, नियम ने यति विपुलानी आणो,
मुखचपलादि विपुला, आर्यागीति खरी तमे तो जाणो. १४६

१२९ (७) मुखचपला अन्तविपुला आर्यागीति.

चपलातणो नि'म मुखे, विराम विपुलातणो दले छेले छे,
मुखचपला अन्तविपुला, आर्यागीति एमज बनावेछे. १४७

१३० (८) मुखचपला उभयविपुला आर्यागीति.

उभय दलमांह विपुलातणो, विरतिने नि'म चपलानो मुखमां;
मुखचपला उभयविपुला, आर्यागीति तो रचोने सुखमां. १४८

१३१ (९) जघनचपलापथ्यार्यागीति.

जघनज चपला पथ्या, आर्यागीति विचारी कहुं त्यम करजो;
अन्त दलमांह चपला, विराम पथ्यातणा द्विदलमां धरजो. १४९

१३२ (१०) जघनचपला आदिविपुला आर्यागीति.

जघनजचपला आदिविपुला, आर्यागीति बने ठिक तो छे,
छेला दलेज चपला, विराम आदि विषे विपुलानो छे. १५०

१३३ (११) जघनचपला अन्तविपुला आर्यागीति.

जघनजचपला अन्ते, विपुला आर्यागीति रचो तो तेमां;
अन्ते रचाय चपलातणा, नियमने विरति विपुला जेमां. १५१

१३४ (१२) जघनचपलाउभयविपुला आर्यागीति.

जघनजचपला उभयविपुला, आर्यागीति विषे छे सारा;
द्विदले विराम विपुलातणा, जघनमां धरोज चपला धारा. १५२

१३५ (१३) महाचपलापथ्यार्यागीति.

द्विदले रचाय चपला, अने द्विदलमां विराम पथ्याना तो;
पथ्या महाजचपला, गणाय आर्यागीति खरी छे आ तो. १५३

१३६ (१४) महाचपला आदिविपुला आर्यागीति.

आदि दलमांह विपुलातणो, विरति बे दल चपला नि'म रीति;
आदिविपुला सहित तो, महाज चपलो रचाय आर्यागीति.

१३७ (१५) महाचपला अन्तविपुला आर्यागीति.

द्विदले रचाय चपला, यति विपुला जघन विषे छे स्थिति
अन्तविपुला महाज चपला, सहित तो रचाय आर्यागीति.

१३८ (१६) महाचपला उभयविपुला आर्यागीति.

द्विदले धराय चपलातणा, नियमने यति विपुलाना धारी;
उभयविपुला महाज चपलाज, आर्या गीति बनेछे सारी

प्रचूर्णगीति.

१३९ गाहो.

प्रथम दल ४+४+४, ४+४+ज अथवा विप्र+२=१२+१४=२६

द्वितीय दल ४+४+४, ४+४+ल + ४ + २ =१२+१५=२७

बारे चौदे यति धरो, प्रथम रचो छव्विस कलनो;

आर्या उत्तर दल करो, गाहो रचजो यति रविनो. १५७

"नागराज पिंगळ" प्रमाणे, मागधी छंद शतकमां एनी ५४ मात्रा कही छे.

१४० प्रमदागीति.

प्र० ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९

द्वि० ४+४+४, ४+४+ज अथवा विप्र+४+२=१२+१८=३०

मुखदल कल ओगणत्रिश, उत्तर त्रिश गीतिनो नि'म धारी;

बेमां विराम बारे, ए प्रमदागीति तो घणी सारी. १५८

१४१ चंद्रिकागीति.

प्र० ४+४+४, ४+४+ल +४+२=१२+१५=२७.

द्वि० ४+४+४, ४+४+ज अ० वि०+४+४=१२+२०=३२.

प्रथम दले सत्ताविश, बीजे बत्रिश कल आणो;

बेमा यति बारे करो, चंद्रिकागीति तो सरस ते जाणो. १५९

१४२ विगीति.

१. ४+४+४, ४+४+ल +४+४=१२+१७=२९.

२. ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र +४+४=१२+२०=३२.

बार सतरनु मुखदल, बार वीशतणु अवर दल आवे,

यति पण ए विच्छेदे, आर्या नियमे विगीति एवी का'वे. १६०

१४३ मंजुगीति.

मुखदल. ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९

उत्तरदल. ४+४+४, ४+४+ल+४+२=१२+१५=२७

मुखदल बार सतरनुं, आर्या उत्तर दल अवर आणो;
बारे यति बे दलमां, ए मंजुगीति तो जाणो. १६१

१४४ अनुगीति (मंजुगीतिनुं विलोम.)

पेहेलुं दल. ४+४+४, ४+४+ल +४+२=१२+१५=२७.

बीजुं दल. ४+४+४, ४+४+ल +४+४=१२+१७=२९.

आर्याउत्तर दलसम, मुखदल सत्ताविशनुँ करजो;
बे कल बीजे वधती, यती बारे अनुगीति विषे धरजो. १६२

१४५ चारु गीति.

पेहेलुं दल. ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९.

बीजुं दल. ४+४+४, ४+४+ल +४+४=१२+१७=२९.

आर्या अपर दले बे, चडती कल सरस धारी आणो;
बारे विराम बेमा, तेने चारुगीति ठिक जाणो. १६३

१४६ सुगीति (चंद्रिका गीतिनुं विलोम.)

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अ०विप्र+४+४=१२+२०=३२

द्वि० ४+४+४, ४+४+ल +४+२=१२+१५=२७

गीतिपर के वधतां, प्रथम दले कल बधी मळी बत्रिश छे तो;
उत्तर दल आर्यानुं, बेमां रवि[१२] यति सुगीते तो. १६४

१४७ . प्रगीति.

मुख दल गीति बीजे, आर्या उत्तर दलपर कल बे छे;
बारे विराम बेमां, प्रगीति तेने कविजन के'छे. १६५

१४८ संगीति*

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अथवा विप्र+४+४=१२+२०=३२
द्वि० ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९
गीतिपर कल बे वधु, मुख दलमां ने प्रगीति सम छेलुं छे,
बारे विरति बन्नेमां, ए लक्षण संगीति करु छे. १६६

*छंदोलतामां संगीतिनुं माप३०–२९ तथा परिगीतिनु २९–३०दर्शाव्युछे

१४९. ललितागीति, गाहिनी, गाहिणी, गाथिनी.

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+२=१२+१८=३०.
द्वि० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+४=१२+२०=३२.
पथ्या गीति सम सौ, उत्तर दलमां पण कल बे वधती;
ललिता गीति गाहिनी, गाथिनीनी पण गणाय एमां गणती. १६७

गाहिनीनी बासठ मात्रा थायछे, पूर्वार्द्धना सात गणनां १२,८०० रूप थाय, तेने उत्तरार्द्धना आठ गणना ५१,२०० रूपथी गुणतां ६५,५३,६०,००० रूप थायछे.

१५० *सिंहिनी, वल्लरीगीति, वल्गुगीति[1].

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+४=१२+२०=३२.
द्वि० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+२=१२+१८=३०.
गीतिपर कल बे वधु, प्रथम दले यति [१२] रवि वंशिपर तो धरजो;
उत्तर दल गीतिसम, वल्लरी सिंहिनि गीति विषे करजो. १६८

* भाषाछंदोमंजरीमां एनुं नाम साहिनी राख्युं छे. तथा छंदोदीपिकामां पण तेज नाम राख्युं छे. १ चित्रसेन कृत टीकावाळा.

१४३ मंजुगीति.

मुखदल. ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९.

उत्तरदल. ४+४+४, ४+४+ल+४+२=१२+१५=२७.

मुखदल बार सतरनुं, आर्या उत्तर दल अवर आणो;
बारे यति बे दलमां, ए मंजुगीति तो जाणो. १६१

१४४ अनुगीति (मंजुगीतिनुं विलोम.)

पेहेलुं दल. ४+४+४, ४+४+ल+४+२=१२+१५=२७.

बीजुं दल. ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९.

आर्याउत्तर दलसम, मुखदल सत्ताविशनुँ करजो;
बे कल बीजे वधती, यती बारे अनुगीति विषे धरजो. १६२

१४५ चारु गीति.

पेहेलुं दल. ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९.

बीजुं दल. ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९.

आर्या अपर दले बे, चडती कल सरस धारी आणो;
बारे विराम बेमां, तेने चारुगीति ठिक जाणो. १६३

१४६ सुगीति (चंद्रिका गीतिनुं विलोम.)

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अ०विप्र+४+४=१२+२०=३२

द्वि० ४+४+४, ४+४+ल +४+२=१२+१५=२७

गीतिपर बे वधतां, प्रथम दले कल वधी मळी बत्रिश छे तो,
उत्तर दल आर्यानुं, बेमां रवि(१२) यति सुगीते तो. १६४

१४७ . प्रगीति.

मुख दल गीति बीजे, आर्या उत्तर दलपर कल बे छे;
बारे विराम बेमां, प्रगीति तेने कविजन के'छे. १६५

१४८ संगीति*

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अथवा विप्र+४+४=१२+२०=३२
द्वि० ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९
गीतिपर कल बे वधु, मुख दलमां ने प्रगीति सम छेलुं छे;
बारे विरति बधामां, ए लक्षण संगीति केरुं छे. १६६

*छंदोलतामां संगीतिनुं माप३०–२९ तथा परिगीतिनु २९–३०दर्शाव्युछे.

१४९ ललितागीति, गाहिनी, गाहिणी, गाथिनी.

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+२=१२+१८=३०.
द्वि० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+४=१२+२०=३२.
पथ्या गीति सम सौ, उत्तर दलमां पण कल बे वधती;
ललिता गीति गाहिनी, गाथिनीनी पण गणाय एमा गणती. १६७

गाहिनीनी बासठ मात्रा थायछे, पूर्वार्द्धना सात गणनां १२,८०० रूप थाय, तेने उत्तरार्द्धना आठ गणनां ५१,२०० रूपथी गुणतां ६५,५३,६०,००० रूप थायछे.

१५० *सिंहिनी, वल्लरीगीति, वल्गुगीति[1].

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+४=१२+२०=३२.
द्वि० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+२=१२+१८=३०.
गीतिपर कल बे वधु, प्रथम दले यति[1] रवि[१२] वीशपर तो धरजो;
उत्तर दल गीतिसम, वल्लरी सिंहिनि गीति विषे करजो. १६८

* भाषाछंदोमंजरीमां एनुं नाम साहिनी राख्युं छे. तथा छंदो दीपिकामां पण तेज नाम राख्युं छे. १ चित्रसेन कृत टीकावाळा

मागधी पिंगळमां तथा पिंगळछंदोग्रंथमां "गाहिणि" नाम आप्युं छे. ने तेना नीचे प्रमाणे भेद कर्या छेः—

१	रंगा	२८ ल + १ गु.=३०
२	भंगाः	२८ ल + २ गु.=३२
३	रोहिणि	२८ ल + ३ गु.=३४
४	रामा	२८ ल + ४ गु.=३६

प्रमदागीति आदि लइने उपर प्रमाणे ११ भेद गीतिना थया, तथा आर्याना पथ्यादि १६ भेद जे प्रथम कह्या छे, तेनु परस्पर संमिलन थवाथी १६×११=१७६ भेद थायछे.

वळी उपर जे (१) गीति, (२) उपगीति, (३) उद्गीति, (४) आर्यागीति, ए गीतिना चार भेद कह्याछे, तेनी साथे पथ्यादि १६ भेदनुं संमिलन थतां ४×१६=६४ रूप थायछे, आ ६४ रूपमां उपर लखेला १७६ भेद मेळवतां २४० जातना गीतिना प्रकार थायछे, आमां वळी शुद्ध आर्याना १६ भेद थायछे ते मेळविये तो २४०+१६=२५६ भेद थायछे.

मुख दल गीति वीजे, आर्या उत्तर दलपर कल बे छे;
वारे विराम बेमां, प्रगीति तेने कविजन के'छे. १६५

१४८ संगीति*

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अथवा विप्र+४+४=१२+२०=३२
द्वि० ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+१७=२९

गीतिपर कल बे वधु, मुख दलमां ने प्रगीति सम छेलुं छे;
वारे विरति वधामा, ए लक्षण संगीति केरुं छे. १६६

*छंदोलतामां संगीतिनुं माप३०–२९ तथा परिगीतिनु २९–३०दर्शाव्युछे.

१४९. ललितागीति, गाहिनी, गाहिणी, गाथिनी.

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+२=१२+१८=३०.
द्वि० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+४=१२+२०=३२.

पथ्या गीति सम सौ, उत्तर दलमां पण कल बे वधती;
ललिता गीति गाहिनी, गाथिनीनी पण गणाय एमीं गणती. १६७

गाहिनीनी बासठ मात्रा थायछे, पूर्वार्द्धना सात गणनां १२,८००
रूप थाय, तेने उत्तरार्द्धना आठ गणनां ५१,२०० रूपथी गुणतां
६५,५३,६०,००० रूप थायछे.

१५० *सिंहिनी, वल्लरीगीति, वल्गुगीति[1]. ४६

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+४=१२+२ ४७
द्वि० ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+२=१[illegible] ३२ ४८

गीतिपर कल बे वधु, प्रथम दले यति र[illegible]
उत्तर दल गीतिसम, वल्लरी सिंहि[illegible]

[1] [illegible]रनो नद लख्यो छे
[illegible]राय गभट्टीमा आ नाम नथी तेने बदले
पण कुम्भने कलगनो अर्थ एकज छे माटे

* भाषाछंदोमंजरीमां एनुं [illegible]
दीपिकामां पण तेज नाम.

मागधी पिंगळमां तथा पिंगळछंदोग्रंथमां "गाहिणि" नाम आप्युं छे ने तेना नीचे प्रमाणे भेद कर्या छेः—

१	रंगा	२८ ल + १ गु.=३०
२	भंगा	२८ ल + २ गु.=३२
३	रोहिणि	२८ ल + ३ गु.=३४
४	रामा	२८ ल + ४ गु.=३६

प्रमदागीति आदि लइने उपर प्रमाणे ११ भेद गीतिना थया, तथा आर्याना पथ्यादि १६ भेद जे प्रथम कह्या छे, तेनुं परस्पर संमिलन थवाथी १६×११=१७६ भेद थायछे.

वळी उपर जे (१) गीति, (२) उपगीति, (३) उद्गीति, (४) आर्यागीति, ए गीतिना चार भेद कह्याछे, तेनी साथे पथ्यादि १६ भेदनुं संमिलन थतां ४×१६=६४ रूप थायछे, आ ६४ रूपमां उपर लखेला १७६ भेद मेळवतां २४० जातना गीतिना प्रकार थायछे; आमां वळी शुद्ध आर्याना १६ भेद थायछे ते मेळवीये तो २४०+१६=२५६ भेद थायछे.

१८१ कंदका, स्कंधक, [१]खंधा, [२]खंधान, [३]खंधो.

प्र० प्र० ४+४+४, ४+४+४+४+४=१२+२०=३२
द्वि० ४+ ० ४+४+४, ४+४+४+४+४=१२=२०=३२

गीतिपर के वर्ण, वसु कर, प्रतिदल बारे वीशे विरति धरीने तो;
उत्तर दल आर्यानुं, वळी, कोइ कहे कंदका खरे एने तो. १६९

[१३] ए प्रमाणे यति अने ३१ मात्रानुं एक
१४७.

प्र० ४+४+४, ४+४+ज अथवा ग छे.
द्वि० ४+४+४, ४+४+ल+४+४=१२+.

स्कंधक–खंधनना भेद.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां स्कंधकना बधा नियम आर्या प्रमाणे अने बंने दलमां ३२+३२=६४ मात्रा आणवानु केहेता तेनुंज बीजुं नाम आर्यागीति आप्यु छे

२८ गुरु अने ८ लघुने आरंभीने एकेक गुरु घटाडवाथी अने बबे लघु वधारवाथी एना २८ भेद नीचे प्रमाणे थाय छेः—

	नाम.	गुरु.	लघु.	अक्षर.
१	नंद*	२८	८	३६
२	भद्र.	२७	१०	३७
३	शेष.	२६	१२	३८
४	सारंग.	२५	१४	३९
५	शिव.	२४	१६	४०
६	ब्रह्मा,ब्रह्म.(वृ.र.ना.भट्टी प्रमाणे)	२३	१८	४१
७	चारण[१], वामण[२].(१वृ.र. २वा.व)	२२	२०	४२
८	वरुण.	२१	२२	४३
९	नील.	२०	२४	४४
१०	निशंक§	१९	२६	४५
११	मदन.	१८	२८	४६
१२	ताल,ताल्लांक,तालंक.	१७	३०	४७
१३	शेखर.	१६	३२	४८

* वृत्तमौक्तिकमां ३०गु+४ल=३४ अक्षरनो नंद लख्यो छे.

§ मागधी नागपिंगळ. वृ र नी नारायणभट्टीमा आ नाम नथी तेने बदले २७ कुम्भ पछी कलश वधार्यु छे पण कुम्भने कलशनो अर्थ एकज छे माटे असे ते दाखल कर्यो नथी.

વિષમજાતિ.

જેનાં ચારે પાદની માત્રા અથવા લક્ષણ ભિન્ન ભિન્ન હોય અથવા જેનાં સમેસમ અને વિષમે વિષમ પાદ મળતાં ન હોય, સમે-સમ મળે પણ વિષમે વિષમ ન મળતાં હોય અથવા જેનાં વિષમે-વિષમ પાદ મળે પણ સમેસમ ન મળે અથવા ચાર કરતાં વિશેષ પાદ જેમાં હોય અર્થાત્ જે જાતિ માત્રાના સમ કે અર્દ્ધસમમાં ન હોય તે **વિષમ** જાણવી.

૧ રસિકા, ઉત્કષ્ટા, ઉત્કચ્છા, સુલલિત, છ પાદ-માત્રા ૬૬ બે વિપ્ર+લ+લ+લ=૧૧ માત્રા. એવાં છ પાદ, (વૃત્તમૌક્તિક પ્ર.)

પ્રતિ ચરણ કલ હર કર,
સકલ કલ પણ લઘુ ધર,
યતિ નિ'મ ચરણ મહિં નહિ,
સકલ પદ પ્રડ રચ અહિં,
સુલલિત કહીં હૃદય ધર,
રસિક અપર વળી ઉચ્ચર. ૧૭૦

છંદ શાસ્ત્રમાં ૧૧ માત્રાનું એક પદ એવા છ પાદ લાવવા કેહેછે. વાગ્વલ્લભમા **રસિકા** તથા **સુલલિત**મા સર્વ લઘુ લાવવા કેહેછે; **વૃત્તરત્નાકરની નારાયણભટ્ટી ટીકામાં ઉત્કષ્ટા** નામ આપી બે ચોકલ+ ૧ ત્રિકલ (૪+૪+૩)=૧૧ માત્રા આણવા કહ્યું છે. એટલે વિપ્રગણજ આવે એવો અભિપ્રાય નથી.-વળી તેના આઠ ભેદ કલ્પ્યા છે. તે જો સર્વ લઘુ આણવાનું લક્ષણ માન્ય રાખિયે તો થઇ શકે નહિ. આ જાતિમાં છએ ચરણમાં મળીને

१४	शर.	१५	३४	४९
१५	गगन.	१४	३६	५०
१६	शरभ.	१३	३८	५१
१७	विमति.	१२	४०	५२
१८	क्षीर.	११	४२	५३
१९	नगर, †नम्र. (वा. वल्लभ)	१०	४४	५४
२०	नर.	९	४६	५५
२१	स्निग्ध.	८	४८	५६
२२	स्नेह, स्नेहन.	७	५०	५७
२३	मदकल‡	६	५२	५८
२४	भूपाल,भूप,लोभ.(वृ र.नारायणभट्टी)	५	५४	५९
२५	शुद्ध, सिद्ध.	४	५६	६०
२६	सरित.	३	५८	६१
२७	कुंभ, कलश.	२	६०	६२
२८	शशी,शशधर.(वृ.र.नारायणभट्टी)	१	६२	६३

† वृत्तमौक्तिक प्रमाणे

‡ वृत्तमौक्तिकमा **लुमकल** लख्युं छे १ मागधी नागपिंगलमा **सुर** छे उमेडजीकृत भगवत् पिंगळमां **चोसर गाहामां** प्रत्येक चरणमा सोळ सोळ मात्राना चार गण लावी अते गुरु अक्षर लाववानु केहेछे पण तेणेज तेनु उदाहरण पेहेलु आप्यु छे तेमा बे गुरु अते लाववाथी बराबर बंध बेसतु नथी. तेमज गाहा ए विषम जाति प्रसिद्ध छे छतां उपरनु माप स्वीकारवाथी ते सम जाति थइ जाय वळी चरणाकुल प्रमाणे ते ताल इ०मा भळी जायछे माटे अमे तेने गाहाना भेद तरीके जूदो पाडवो उचित धार्यो नथी.

विषमजाति.

जेनां चारे पादनी मात्रा अथवा लक्षण भिन्न भिन्न होय अथवा जेना समे सम अने विषमे विषम पाद मळतां न होय; समेसम मळे पण विषमे विषम न मळतां होय अथवा जेनां विषमेविषम पाद मळे पण समेसम न मळे अथवा चार करतां विशेष पाद जेमां होय अर्थात् जे जाति मात्राना सम के अर्द्धसममां न होय ते विषम जाणवी.

१ रसिका, उत्कृष्टा, उक्कच्छा, सुललित, छ पाद-मात्रा ६६ बे विप्र+ल+ल+ल=११ मात्रा. एवां छ पाद, (वृत्तमौक्तिक प्र ?)

प्रति चरण कल हर कर,
सकल कल पण लघु धर.
यति नि'म चरण महिं नहि,
सकल पद षड रच अहिं,
सुललित कहीं हृदय धर,
रसिक अपर वळी उच्चर. १७०

छंदःशास्त्रमां ११ मात्रानुं एक पद एवा छ पाद लाववा केहेछे. वाग्वल्लभमां रसिका तथा सुललितमा सर्व लघु लाववा केहेछे; वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा उत्कृष्टा नाम आपी बे चोकल+ १ त्रिकल (४+४+३)=११ मात्रा आणवा कह्युं छे. एटले विप्रगणज आवे एवो अभिप्राय नथी.-वळी तेना आठ भेद कल्प्या छे. ते जो सर्व लघु आणवानुं लक्षण मान्य राखिये तो थइ शके नहि. आ जातिमां छए चरणमां मळीने

५. ताल प्रथम पर धरो,

६. चोरे चडती करो. १७१

३ **अतुला**—पाद ५ मात्रा ९४—यतिनो नियम नथी.

१. ८+ ८ = १६

२. ८+ ८ = १६

३. ८+ ८ = १६

४. ८+ ८ = १६

५. १६+१४ = ३०

१. एक चरणमां, सोळ कला कर,
२. नियम विरतिनो, जेमां नव धर,
३. चार चरण रच, एवां सुखकर,
४. त्रीश कलानी, झड कर ते पर,
५. तेमां सोळे चौदे यति कर, **अतुला** जाति पांच चरण १७२

४ **हीरामणि**—पाद ४ मात्रा १०८

१. ६+४+ल+२, ६+४+ल=२४ } एक दुहो.
२. ६+४+ल+२, ६+४+ल=२४ }
३. ४+४+४,+४+४+ज अ० विप्र+४+२=३०
४. ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+२=३०

तेर अने अगियार वळी, तेर अने अगियार,
ए क्रमकेरो दोहरो, प्रथम चरण निरधार;
वार अढारज क्रम पर, वार अढारज पछीथकी जाणो,
एम अवर पद गीति, **हीरामणिमां** हृदय धरी आणो. १७३

रंडा, रुण्डा, रड्डा, रड्ढा. नवपदी पाद ९ मात्रा १६६.

१ ३+४+४+ज के विप्र=१५

६६ मात्रा लघु थायछे. एटले सर्व लघुनो प्रथम भेद लोहांगिनी छे. चचार गुरु वधारतां तेने बदले आठ आठ लघु घटाडी तेणे नीचे प्रमाणे आठ भेद आप्या छे.

	प्रा.पिं.सूत्र.	वृत्तरत्नाकर ना टी तथा वाग्वल्लभ.	प्रा पिं सूत्र. वृत्तमौक्तिक.		वृ ना भ वाग्वल्लभ	
			लघु	गुरु.	लघु	गुरु
१	लोहांगिणी, लोहांगी	लोहांगिनी	६६	०	६६	०
२	हंसिनी	हंसी	६४	१	५८	४*
३	रेखा		६२	२	५०	८
४	तालंकिणी	तालंकी	६०	३	४२	१२
५	कंपिणी	कंपी	५८	४	३४	१६
६	गंभीरा		५६	५	२६	२०
७	काली		५४	६	१८	२४
८	कालरुद्राणी		५२	७	१०	२८

प्राकृतपिंगळसूत्रमां उक्कच्छा नाम आप्यु छे तेणे प्रथम भेद ६६ लघु अने शुन्य गुरुनो गणी पछी बब्बे लघु घटाडता अकेको गुरु वधारी उपर कहेला ८ भेद बताव्या छे मनहर पिंगळमां छ पाचे यति कही छे प्राकृत-पिंगळसूत्रमा यति विषे काइ लख्युज नथी. छंदःशास्त्रना दृष्टान्तमां पाच तुकमां आ प्रमाणे यति मळेछे, पण छठीमा तुटेछे, तेथी अमे यति पाळवी उचित मानीनथी

२ कंछा—कच्छी.

४+४+३=११ एवां छ पाद

१. बे चोकलिया आण,
२. ते पर त्रण कल जाण,
३. छ पाद एम रचाय,
४. कंछा कच्छी थाय,

५. ताल प्रथम पर धरो,

६. चोरें चडती करो. १७१

३ अतुला—पाद ५ मात्रा ९४–यतिनो नियम नथी.

१. ८+ ८ = १६

२. ८+ ८ = १६

३. ८+ ८ = १६

४. ८+ ८ = १६

५. १६+१४ = ३०

१. एक चरणमां, सोळ कला कर,

२. नियम विरतिनो, जेमां नव धर,

३. चार चरण रच, एवां सुखकर,

४. त्रीश कलानी, झड कर ते पर,

५. तेमां सोळे चौदे यति कर, अतुलां जाति पाच चरण. १७२

४ हीरामणि—पाद ४ मात्रा १०८

१. ६+४+ल+२, ६+४+ल=२४ }

२. ६+४+ल+२, ६+४+ल=२४ } एक दुहो.

३. ४+४+४,+४+४+ज अ० विप्र+४+२=३०

४. ४+४+४, ४+४+ज अ० विप्र+४+२=३०

तेर अने अगियार वळीं, तेर अने अगियार,

एं क्रमकेरो दोहरो, प्रथम चरण निरधार;

वार अढारज क्रम पर, बार अढारज पंछीथकी जाणो,

एम अवर पद गीति, हीरामणिमां हृदय धरी आणो. १७

५ रंडा, रुण्डा, रड्डा, रड्ढा. नवपदी पाद ९ मात्रा १६६.

२ ४+४+४ (विप्र) =१२
३ ३+४+४+२+२लघु=१५
४ ४+४+३ लघु=११
५ ३+४+४+२+२लघु=१५
६ ६+४+ल+२ =१३
७ ६+४+ल =११
८ ६+४+ल+२ =१३
९ ६+४+ल =११

} एक दुहो.

१ त्रिकल श्रुति श्रुति ज निकर द्विजवर,
२ बे चोकल पर द्विज धर,
३ त्रि कल श्रुति श्रुति द्विकल द्विलघु कर;
४ श्रुति श्रुति पर त्रण ल धर,
५ त्रि कल श्रुति श्रुति द्विकल द्विलघु धर;
६ छ पर चार पर लघु द्विकल,
७ छ पर चार पर बाण*; *एक लघु
८ षट कल पर श्रुति ध्वज धरी,
९ छ पर चार स्व आण. १७४

छंदःशास्त्रमां प्रथम पादमां ३ठ+२ड+ज लाववा केहे
बीजा पादमां २ड+१भ लाववा केहेछे.
त्रीजा अने पांचमामां ठ+२ड लाववा केहेछे.
चोथा पादमां ठ+२ड अने ते पर एक दुहो
लाववा केहेछे.

प्राकृत पिंगळसूत्रमां कह्युं छे के—त्रीजा अने चोथा चरणमां प्रथमनो चोकलियो एवो लाववो के जेमां पेहेली बे मात्रा छूटी आवे, अर्थात् बीजी अने त्रीजी भळे एवो गण न मूकवो. अने त्रीजा तथा पांचमा पादमां ३+३डगण मात्र लाववा केहेछे. विशेषमां ते आ जातिनु नाम वस्तु केहेछे. वाग्वल्लभमांज मात्र ८,७ यति आणवा कह्यु छे, बीजा ग्रंथकारो तेम केहेता नथी. वळी विषममां १५ अने सममां ११ मात्रा आणवा केहेछे, अने तेमां छेल्ली मात्रा लघु लाववा जणावेछे, बीजी विगत आपी नथी.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा त्रीजा अने पांचमा चरणने अते भगण आणवा कह्युं छे, ते, उपर जे माप बताव्युं छे, तेमां छेल्ला बे लघु पेहेलांनी बे मात्रानो गुरु आववाथी थइ शके, वळी बीजामां छेल्लो विप्रगणज लाववो जोइये एवो नियम नथी.

रंडाना सात भेद प्राकृतपिंगळसूत्र, वृत्तरत्नाकरनी नारायण भट्टी टीका, वृत्तमौक्तिक, अने छंद शास्त्रमां आप्या छे. तेमा मात्रानी संख्यानो क्रम छे तेने अनुसरीने असे नीचे प्रमाणे गोठव्या छे.

१. करभी, नवपदी, उष्ट्री, कलभी (१०९ मात्रा).
२. नंदा (११२)
३. चारुसेना, चारुसेनी, चारुणी, वल्लुचा, वस्तु (११५).
४. राजसेना (११६).
५. भद्रा, भद्रिका (११७)
६. तालंकिनी (११९)
७. मोहिनी (१२७).

प्रागवीछंद शतक एज सात प्रकार, वस्तु जातिना नीचेने क्रमे गणावेछे. ते उपरथी रंडानु ए पण एक नाम होय एम कल्पना थायछे.

१. करही (१११). २. पंद्रा (११२). ३. मोहिणिय (११३). ४. चारुसेण (११४). ५. सुसभद्द (११५). ६. राय(इ)सेण (११६). ७. ताडंकिणी (११७).

पिंगळछंदोग्रंथ चित्रसेन टीकावाळामां चोथुं नाम चारणीया आप्युं छे ने तेणे पण उपरना ७ भेद बहुआना गणाव्या छे.

६ (१) करभी नवपदी, उप्फी, कलभी. मात्रा १०९.

१. ६+४+ल+२ =१३
२. ६+४+ल =११
३. ६+४+ल+२ =१३
४. ६+४+ल =११
५. ६+४+ल+२ =१३
६. ६+४+ल+२ =१३
७. ६+४+ल =११
८. ६+४+ल+२ =१३
९. ६+४+ल =११

१. छपर डगण[४] पर लघु द्विकल[२],
२. विषम चरणमां थाय,
३. छ चार पर लघु कल समे,
४. दुहा समान रचाय,
५. पछीं पंचम पद तेरनुं,
६. ते पण दो'रा मेळनुं,
७. पछी दुहो रच त्यांय,
८. नव पद सो[१०९] नव कलतणां,
९. कलभी-उप्फीमांय. १७५

वृत्तमौक्तिकमां कलभी नाम आपी, माप अमे उपर बांध्युं छे तेवुं आप्युं छे. प्राकृतपिंगळसूत्रमां प्रथमनां चार पाद १३, ११, १३, ११ नां आणवा कही विशेष विगत जणावी नथी. तेम तेमां दृष्टांत पण नथी.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां कलभी नाम आप्युं छे अने १, ३, ५ आ पादमां १४ मात्रा लाववा जणाव्युं छे. पण तेम करवाथी नंदाना माप साथे ते मळी जायछे.

मागधी छंद शतकमां आनुं नाम करही आपी तेनी मात्रा १११ गणावी छे अने तेने वस्तुना सात प्रकार पैकी पेहेलो गण्यो छे.

७ (२) नंदा–णंदा (माग०छंद श०) मात्रा ११२.

१. ६+४+४ =१४
२. ६+४+ल =११
३. ६+४+४ =१४
४. ६+४+ल =११
५. ६+४+४ =१४
६. ६+४+ल+२=१३
७. ६+४+ल =११
८. ६+४+ल+२=१३
९. ६+४+ल =११

(६–९) एक दुहो

१. छ पर डगण बे विषम पदे,
२. छ चार लघु सम थाय,
३. ए रीते पद पांच रची,
४. दुहो एक रचाय,
५. सौ कल मो ने बार थशे;

६. नंदा रचना थायछे,
७. बीजो भेद गणाय;
८. कवि प्रभुगुण तेमां कवी,
९. मनमांहे हरखाय. १७६

चारुसेनी (वृ. र. ना. भ.) चारुणी (मा. छं. शा.)

८. (३) चारुसेना (वत्थुवा=वस्तु जाति) मात्रा ११५

१. ६+४+४+ल =१५
२. ६+४+ल =११
३. ६+४+४+ल =१५
४. ६+४+ल =११
५. ६+४+४+ल =१५
६. ६+४+ल+२ =१३
७. ६+४+ल =११
८. ६+४+ल+२ =१३
९. ६+४+ल =११

(६–९) एक दुहो.

१. तिथि[१५] कल विषमे आण अनुप,
२ समसा धर अगियार;
३. विषम बधी चोपाई रूप,
४. सम पद दोहो धार.
५. ते पर दोहा केरुँ स्वरूप,
६. सो ने पंदर कल धरी;
७. खड्डुं करो कविराय!
८ चारुसेना चारुणी,
९ वत्थुवा नेह वढाय. १७७

९ (४) **राजसेना.** मात्रा ११६.

१. ६+४+४+ल=१५
२. ६+४+२ =१२ †
३. ६+४+४+ल=१५
४. ६+४+ल =११
५. ६+४+४+ल=१५
६. ६+४+ल+२ =१३
७. ६+४+ल =११
८. ६+४+ल+२=१३
९. ६+४+ल =११

(६–९: एक दुहो.)

१. छ पर डगण[४] बे ने लघु आण,
२. विषमपदे चोपाई;
३. छ चार बेनुं वीजु जाण,
४. चोथे छ युग[४] लकार[।];
५. पाच पूरां रच एवां पाद,
६. ते पर दोहो एक करो,
७. सोने कल रच सोळ,
८. **राजसेन** रचना करो,
९. कविवर[1] वाणी बोल. १७८

† भाषा छंदोमंजरीमा ११ मात्रा लाववा केहेछे पण प्राकृतपिंगळसूत्र, वृत्तरत्नाकरना नारायणभट्टी टीका इत्यादिमां १२ मात्रा लाववा कह्यु छे माटे अम्रे ते माप राख्यु छे नहिकर **चारुसेना**थी जूदु न पडे

१० (५) **भद्रा–भाद्रिका.** मात्रा ११७

१. ६+४+४+ल=१५

२. ६+४+२ =१२
३. ६+४+४+ल=१५
४. ६+४+२ =१२
५. ६+४+४+ल=१५
६. ६+४+ल+२=१३
७. ६+४+ल =११
८. ६+४+ल+२=१३
९. ६+४+ल =११

(६ थी ९ : एक दुहो.)

१. भद्रा, भाद्रिका नव हार,
२. विषम पदे चोपाई;
३. छ चार बे थइ सममां बार,
४. पांच रचो पद भाई;
५. सुसभद्र वळीं को छे कथनार,
६. ते पर रचजो दोहरो,
७. पद नव रचवा काज;
८. सो ने सत्तर कल करो,
९. सौ मळीने कविराज! १७९.

मागवी छंद शतकमा तथा बीजामा सुसभद्र नाम आप्यु छे छंद शतकमां सौ मात्रा ११६ गणी छे पग ते बधारे प्रमाणग्रथोथी जूदुं पडेछे.

११ (६) तालंकिनी–मात्रा ११९.

१ ४+४+४+४=१६
२ ६+४+२ =१२
३ ४+४+४+४=१६
४ ६+४+ल =११
५ ४+४+४+४=१६

६ ६+४+ल+२=१३
७ ६+४+ल =११
८ ६+४+ल+२=१३ दुहो.
९ ६+४+ल =११

१. तालंकिनी रचवा काजे,
२. सोळ रचो कल विषमे;
३. छ चार बे कल बीजे राजे,
४. शिव कल चोथे थाय,
५. छ चार लघुनी विगत विराजे,
६. एम पांच पद आणीने,
७. सो पर वीशकमएक, १००+(२०-१)=११९
८. कुल कला आणो कवि!
९. धारी वचन विवेक. १८०

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां जणावेछे के, सम चरण (बीजा चोथा)मां बार बार अथवा अगियार अगियार मात्रा आणवी.

१२८. (७) मोहिनीरंडा. मात्रा १२७.

१. ४+४+४+४+३=१९
२. ६+४+ल =११
३. ४+४+४+४+३=१९
४. ६+४+ल =११
५. ४+४+४+४+३=१९
६. ६+४+ल+२ =१३
७. ६+४+ल =११ दोहरो.
८. ६+४+ल+२ =१३
९. ६+४+ल =११

१. त्रण कल पे'लां चोकलिया गण चार,
२. विषम पदे निरधार,
३. छ चार लघुनी शिव कल सममां सार,
४. पाच पदो सुखकार,
५. ते पर रचना दुहातणी भंडार,
६. सो सत्ताविश कुल कला,
७. मोहिनीरंडा मांय,
८. §मोहनी जाति मन धरी, § पृ-२३ अंक ६४ जुवो.
९. कर एवी रचनाय. १८१

मागधी छंद-शतकमां ११३ मात्रा गणी तेने त्रीजो भेद मान्यो छे पण ते प्रमाणग्रंथोथी जूदु पडेछे वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीका तथा प्राकृतपिंगळसूत्रने आधारे अमे उपरनु माप बांध्युं छे वृत्तमौक्तिकमां (१, ३, ५) विषमपादमां नव बीजामा दश तथा चोथामां अगियार अने उपर एक दुहो एम बधी ९६ मात्रा आणवा कह्यु छे पण तेने बीजो आधार मळ्यो नथी एटले ए मत ग्राह्य नथी

१३. कुंडलिया तोटक. मात्रा ११२.

१.	६+४+ल+२ =१३	एक दुहो तेनी चोंथी तुकना छेला शब्दोनी कुंडली पांचमी तुकमां वाळवी.
२.	६+४+ल =११	
३.	६+४+ल+२=१३	
४.	६+४+ल =११	
५.	स+स+स+स =१६	एक तोटक.
६.	स+स+स+स =१६	
७.	स+स+स+स =१६	
८.	स+स+स+स =१६	

१. तेर अने अगियारनां,
२. चरण रचीने चार;

३. एम करीने दोहरो,
४. ते पर तोटक धार.
५. धर तोटक ते पर प्रेम धरी,
६. उल्टी तुक चोथी दुहानी करी;
७. रच तोटक कुंडलिया सरखा,
८. कविता करो एम पछी हरखा. १८२

आ कुंडलियोतोटक प्रवीणसागरमा छे आवी रीते बीजी कोइ पण मात्रामेळ जातिने वर्णमेळ साथे मेळवी आवा छंदो रची शकाय अने ते कर्त्तानी धून उपर छे

२४. चंद्रावली, चंद्राली. मात्रा ११८.

१. ८+४+गु+गु,=१६
२. ६+४+ल =११
३. ८+४+गु+गु,=१६
४. ६+४+ल =११
५. ८+४+गु+गु=१६
६. ८+४+गु+गु=१६ एक चरणाकुळ
७. ८+४+गु+गु=१६ पृ. १६ अं. ४५ जुवो.
८. ८+४+गु+गु=१६

१ चंद्रावळीमां के चंद्राली,
२ वसु पर यति पछी चार;
३. ते पर बे गुरु अन्ते आणी,
४. छ चार ने लघु धार.
५. छ चार ने लघु धार दुहानी,
६. वे अड पछी कुडळी करवानी;

१. त्रण कल पे'लां चोकलिया गण चार
२. विषम पदे निरधार,
३. छ चार लघुनी शिव कल सममा सा
४. पांच पदो सुखकार,
५. ते पर रचना दुहातणी भंडार,
६. सो सत्ताविश कुल कला,
७. मोहिनीरंडा मांय,
८. §मोहनी जाति मन धरी, § पृ-२३ अंक ६४ जुवो.
९. कर एवी रचनाय. १८१

मागधी छंद शतकमा ११३ मात्रा गणी तेने त्रीजो भेद मान्यो छे पण ते प्रमाणग्रंथोथी जूदु पडेछे वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीका तथा प्राकृतपिंगळसूत्रने आधारे असे उपरनु माप वांध्युं छे वृत्तमौक्तिकमा (१, ३, ५) विषमपादमां नव बीजामा दश तथा चोथामां आगियार अने उपर एक दुहो एम बधी ९६ मात्रा आणवा कह्यु छे पण तेने बीजो आधार मळ्यो नथी एटले ए मत ग्राह्य नथी

१३. कुंडलिया तोटक. मात्रा ११२.

१. ६+४+३+२=१३ ⎫
२. ६+४+ल =११ ⎪ एक दुहो तेनी चो-
३. ६+४+ल+२=१३ ⎬ थी तुकना छेला शब्दो
४. ६+४+ल =११ ⎭ नी कुंडली पांचमी तुक मां वाळवी.

५. स+स+स+स =१६ ⎫
६. स+स+स+स =१६ ⎬ एक तोटक.
७. स+स+स+स =१६ ⎪
८. स+स+स+स =१६ ⎭

१. तेर अने आगियारनां,
२. चरण रचीने चार:

३. एम करीने दोहरो,

४. ते पर तोटक धार.

५. धर तोटक ते पर प्रेम धरी,

६. उल्टी तुक चोथीँ दुहानीँ करी;

७. रच तोटक कुंडलिया सरखा,

८. कविता करोँ एम पछी हरखा. १८२

आ कुंडलियोतोटक प्रवीणसागरमां छे. आवी रीते बीजी कोड पण मात्रामेळ जातिने वर्णमेळ साथे मेळवी आवा छंदो रची शकाय अने हे कर्त्तानी भून उपर छे

१४. चंद्रावली, चंद्राली. मात्रा ११८.

१. ८+४+गु+गु,=१६

२. ६+४+ल =११

३. ८+४+गु+गु,=१६

४. ६+४+ल =११

५. ८+४+गु+गु=१६

६ ८+४+गु+गु=१६ एक चरणाकुल

७ ८+४+गु+गु=१६ पृ.१६ अं.४५ जुवो.

८. ८+४+गु+गु=१६

१. चंद्रावलीमां के चंद्राली,

२. वसु पर यति पछीँ चार,

३. ते पर बे गुरु अन्ते आणी,

४ छ चार ने लघु धार,

५ छ चार ने लघु धार दुहानी,

६ बे अड-पछीँ कुडळीँ करवानी;

७. पछी चरणाकुलनी श्रुति आली,
८, चंद्रावलीमां के चंद्राली. १८३

गूजरातीमा हाल जे चंद्रावला नाम केहेवायछे ते अशुद्ध छे. छंद कामदुघावत्समा एनु नाम चंद्रावली लख्यु छे चंद्र+आली अथवा आवली एटले चद्राली अथवा चद्रावली नाम आप्यु छे तेमां कुडली वाळवानु अथवा प्रथम चरण जेवुज छेलुं एटले आठमुं चरण लाववुं एवो नियम कर्यो नथी.

१९ चंद्रायणा. मात्रा १२८.

१. ६+४+ल+२=१३
२. ६+४+ल =११
३. ६+४+ल+२=१३ } एक दुहो.
४. ६+४+ल =११

५थी८. रगण अथवा ठगणनी २० मात्रानां चार चरण

१. प्रथम दुहो करो एकने,
२. *चंद्राना पछी धार;
३. रगण चार रचुं तो ठिकज,
४. वा पछी वीश कल सार;
५. वा पछी वीश कल ठगण चारे करो,
६. दोहरा अन्त पद कुंडलीमां धरो;
७. आदिना बोल ते अन्त देजो फरी,
८. जाति चद्रायणे प्रथम दुहो करी. १८४

*जगता छदना पेटामां १२ अक्षर (४ रगण) नु चंदाना, चंदायणा आदि नामनुं वृत्त छे ते.

१६. अमृतध्वनि. पाद ६ मात्रा १४४.

८+८+८=२४
८+८+८=२४ } घणी यमकं
८+८+८=२४
८+८+८=२४

प्रथम द्विदल रच दोहरो, अमृतध्वनिनी मांह;
चार चरण चोवीशनां, रचीं कर झड पड जांह;
रचीं कर ए झड, प्रथम फरीथी धर; त्रण त्रण यति कर;
वसु कल प्रति यति, अतिय यमकवर्ती, दर झडें झट धर;
ताल प्रथम पर, श्रुति चडती धर, श्रुति पदमां त्यम;
कदि तुं वण शक, कुंडली नियमक, अन्त रच प्रथम. १८९

वीर रसनुं वर्णन करवामां आ जाति विशेष योग्य गणायछे. गौड पिंगळमा केहेछे के, प्रथम दुहो लावीने उपर आठ आठ विरामनी २४ कलवाळां चार पाद आणवां.

चिन्तामणिमां पण एमज केहेछे, लखपतजशसिन्धुमां केहेछे के, आठ आठ मात्राए विश्राम आवे एवा २४मात्रानां छ पाद, कुंडळीवाळी घणा अनुप्राससहित आवे ते अमृतध्वनि.

छंदःकामदुधावत्समां त्रण दुहानी आ जाति बनेछे एम केहेछे.

१७. कुंडली, कुंडलिया चरण ६, मात्रा १४४.

१. ६+४+१+२, ६+४+१=२४ } एक दुहो १३, ११ यति.
२. ६+४+१+२, ६+४+१=२४

३. ६+४+४+४+४+२ =२४
४. ६+४+४+४+४+२ =२४ } एक काव्य ११, १३ यति.
५ ६+४+४+४+४+२ =२४
६. ६+४+४+४+४+२ =२४

१. कुंडलिये कर छ कळ पर, इगण-जगणवण-जाण,
२. समे एक त्रण विषममा, एम दुहा पद आण,
३. एम दुहा पद आण, काव्य झड प्रथनज करतां,—
४. छ पर चोकल चार, उपर वळी कल बे धरता;
५. छ पर चोकला चार, एज पद फरी वळी करिये,
६. दुहा आदिना शब्द, अन्त धरवा कुंडलिये. १८६

वाणीभूषण अने प्राकृत पिंगळसूत्रमां दोहराना चार चरण गणी कुल आठ चरण मानेछे.

काव्यमां ६+१२ (४+४+४)+६ तेमा १२ मात्रा पैकी छेलुं गण विप्र के जगण आणवानो नियम छे; पण कुंडलियामां तो छप्पय जातिनी पेठे मागधी नागपिंगळना उदाहरणमां त्रण चोकलिमां छेल्लो विप्र के जगण आण्यो नथी. वृत्तमौक्तिकमां त्रीजो सगण उदाहरणमां जोवामां आवेछे, पण काव्यना नियममां त्रीजो विप्र के जगण लाववा तेणे लख्युं छतां कुंडलियामां ते नियम पोते पाळ्यो नथी. छंदः शास्त्रमां तो त्रण गणमां स ज के विप्र गण काव्यमां आणवानो नियम कर्यो छे ते प्रमाणे तेणे कुंडलियाना पोताना उदाहरणनां त्रीजो सगण आण्यो छे. रूपदीप तथा लखपत पिंगळ अने वाणीभूषणनां दुहा उपर रोला जाति लाववानुं केहेछे. आ सर्व उपर विचार करीने कुंडलियाने माटे असे उपर प्रमाणे नियम (छन्दनयने अनुसरतो) कर्यो छे ते हाल सुधी व्रजभाषामां अने गूजरातीमां चालेला नियमने अनुसरतो पण छे. काव्यनी बीजी झडनी प्रथम यति फरीने पाछी त्रीजो झडनी प्रथम यतिमां आणवी एवो नियम छतां पत्रकोडेथी पाळवामां आवतो नथी. "लखपतजशसिंधु"-मां पाळ्यो छतां केटलाक कुंडलियामां तेम कर्युं नथी माटे ते विकल्पे राखवो ठीक छे.

प्राकृत पिंगळसूत्रनी टीकामां पशुपतिना मत प्रमाणे कुंडलियानुं माप एम लखेछे के, प्रथम दुहो, पछी सोरठो अने ते पछी एक काव्य जाति एम कुल १९२ मात्रा आणवी.

कुंडलियामा दोहराना अन्तनो लाटानुप्रास काव्यना प्रारंभमां मूकवो अने काव्यने अन्ते दोहराना प्रारंभनो लाटानुप्रास मूकवो एम छंदोवृत्तमुक्तावलिमां कह्यु छे.

नागपिंगळ, प्राकृत पिंगळसूत्र, तथा वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां २+४+४+४+४+४+२=२४ एम गण आवे त्यारे षट्पदी केहेछे, अने प्रारंभमां छ मात्रा आवे (६+४+४+४+४+२=२४) तेने षट्पदी अथवा वस्तु एवुं नाम आपेछे.

५ मी अने ६ ट्ठी तुक उल्लालानी छे, तेनी प्रथमनी चार मात्रामां त्रीजी मात्राए ताल आणवो एम नियम छे, तेनो अर्थ एटलोज छे के, चार मात्रामांथी प्रारंभनी बे मात्रा छूटी पाडवी, एटले २+२=४ मात्रा आणवी. मतलब के, बीजी अने त्रीजी मात्रा एकठी आणवी नहि.

१८ षट्पदी–छप्पय. मात्रा १९२

१. ६+१२ (४+४+४) +४+२=२४
२. ६+१२ (४+४+४) +४+२=२४
३. ६+१२ (४+४+४) +४+२=२४
४. ६+१२ (४+४+४) +४+२=२४
} एक काव्य ११, १३ यति.

५. ४+४+४+३, ६+४+३ =२८
६. ४+४+४+३, ६+४+३ =२८
} एक उल्लालो १५, १३ यति.

१. छप्पय-षट्पदी थाय, कला चोवीश कुल करजो,
२. छ कल पर ४ गण चार, ते पछी बे कल धरजो;

३. एवी रीते काव्य, एक बदलीने आणो;

४. अगियारे यति जरुर, तेर पर पछीथी जाणो;

५. त्रण चोकलिया पर त्रण कला, छ चार पछी त्रण कल करो;

६. ए रीति उल्लाले एक करों, यति पंदर तेरे धरो. १८७

जे षट्पदीमां ४८ लघु होय ते विप्राजाति, तेनुं फळ सिद्धि छे, ७९ लघुवाळी क्षत्रिया केहेवाय, तेनुं फळ वृत्ति (उपजीविका) छे; ९६ लघुवाळी वैश्या केहेवायछे, तेनुं फळ धन छे; अने तेथी उपरांत लघुवाळी शूद्रा केहेवायछे, तेनुं फळ मरण छे. आ प्रमाणे टिप्पण "चित्रसेन टीकावाळा मागधी पिंगळमां" दर्शाव्युं छे. वळी एक मतांतर एम छे के, अ क वर्गवाळी विप्रा केहेवाय, च ट वर्गवाळी क्षत्रिया केहेवाय; त प वर्गनी वैश्या अने अवर्गनी शूद्रा केहेवाय.

संस्कृत वृत्तमौक्तिकमां पण ६+१२ (४+४+४)+४+२ एवी रीते चोवीश मात्रा लाववा जणावतां केहेछे के, काव्यजातिमां १२ मात्राना चोकलिया त्रण गण लावतां छेलो विप्र (।।।।) अथवा जगण (।ऽ।) आणवो जोइए, एम आदेश कर्यो छे ते षट्पदी संबंधमां पाळवानो नथी.

षट्पदीना ७१ भेद करवामां प्रथम रूप १२ लघु अने ७० गुरुनुं अजय नामनुं योज्युं छे, तेनुं कारण एम जणायछे के, ६+१२ (४+४+४) छ कल उपर बार मात्राना त्रण चोकलिया लाववाना छे तेमां त्रीजो चोकलियो सगण (।।ऽ) अथवा जगण (।ऽ।) लावतां प्रत्येक चरणमां बे लघु नियमित आववा जोइये. ए गणत्री प्रमाणे चार पादनी आठ लघु मात्रा थाय, ते उपरांत, उल्लालनी प्रत्येक यतिमां छेली त्रण त्रण मात्रा आणवानी छे, एटले तेमा एकेको लघु आवेछे, ए हिसाबे बे दलनी चार लघु मात्रा थाय ते (८+४) आठमां उमेरतां प्रथम रूपमां १२ लघु मात्रा आवेछे.

एटले पेहेला रूपमां १२ लघु+७० गुरु (१४०) थइने कुल १५२ मात्रा थायछे. तेमां अकेक गुरु घटाडतां अने ते बदले बबे लघु वधारतां सर्व लघु अक्षर आवी जाय त्यांसुधी एकंदर ७१ भेद थायछे. आ उपरथी एटलुं सिद्ध थायछे के, बार मात्राना त्रण गणमां त्रीजो गण स अथवा जगण लाववानो अभिप्राय भेद पाडनारे अगत्यनो गण्यो छे.

षट्पदीभेद प्राकृतपिंगळसूत्र प्रमाणे.

छप्पय.

अजअ विजअ बलि कण्ण, वीर वेआल विहण्णउ,
मक्कलु हरि हर बंभ, इदु चंदणु सुसुहंकरु,
साण सीह सद्दूल, कुंम कोइल खरु कुजरु,
मअण मच्छ तालक, सेस सारंग पओहरु,
ता कुंद कमलु वारण सरंहु, जंगम जुइअट्ठवि लहइ,
सरु सुसरु समरु सारसु सरअ, छप्पअ णाम पिंगल कहइ. १
मेरु मअरु मअ सिद्धि, बुद्धि करअलु कमलाअरु,
धवल मणउ धुअ कणउ, किसणु रंजणु मेहाअरु,
गिह्म गरुड ससि सूर, सह्ल णवरंग मणोहरु,
गअणु रअणु णरु हीरु, भमरु सेहरु कुसुमाअरु,
ता दिप्पु सम्ब वसु सद्द मुणि, णाअराअ पिंगलु कहइ,
छप्पअ णाम एहत्तरिहिं, णाअराअ पत्थरि लहइ. २

अंक	प्रा पिं.सूत्र प्रमाणे नाम	लघु	गुरु	प्राकृत नाम
१	अजय.	१२	७०	अजअ.
२	विजय.	१४	६९	विजअ.
३	बलि, बलि.†	१६	६८	बलि.

† छंद.प्रभाकर प्रमाणे छ० र० ना० भ०

४	कर्ण, वर्ण. (वृ. र. ना.)	१८	६७	कण्ण.
५	वीर.	२०	६६	वीर.
६	वेताल.	२२	६५	वेआल.
७	वृहन्नल, विहंकर.	२४	६४	विहण्णउ.
८	मर्कट.	२६	६३	मक्कलु.
९	हरि.	२८	६२	हरि.
१०	हर.	३०	६१	हर.
११	ब्रह्मा, ब्रह्म. (छ प्र वृ.र.ना.)	३२	६०	बंभ.
१२	इन्दु.	३४	५९	इन्दु.
१३	चन्दन.	३६	५८	चंदणु.
१४	शुभंकर.	३८	५७	सुहकरु.
१५	†श्वान, कुक्कुर.	४०	५६	साण.

† वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीमा शाल नाम छे

१६	सिंह.	४२	५५	सीह.
१७	शार्दूल.	४४	५४	सद्दूल.
१८	कूर्म, कमठ, कच्छ (छ प्र)	४६	५३	काछव, कुंम.
१९	कोकिल.	४८	५२	कोइल.
२०	खर.	५०	५१	खरु.
२१	कुंजर.	५२	५०	कुंजरु.
२२	मदन.	५४	४९	मअण.
२३	मीन, मत्स्य	५६	४८	मच्छ.
२४	तालांक, तारंग, ताटक	५८	४७	तारंग, तालंक.
२५	शेष.	६०	४६	सेस
२६	सारङ्ग.	६२	४५	सारंग.
२७	पयोधर.	६४	४४	पओहरु.

२८	कुंद.	६६	४३	कुंद.
२९	कमल.	६८	४२	कमलु.
३०	वारण.[1]	७०	४१	वारण.

१ वृत्तरत्नाकर नारायणभट्टीमां आने कारण केहेछे ते कदाच भूल होय.

३१	शरभ, शलभ (छ. प्र)	७२	४०	सरहु.
३२	जंगम, अजंगम.	७४	३९	जंगम.
३३	द्युतीष्टम्.	७६	३८	जुइअट्ठ.
३४	दाता, वील. (हिंदी पिंगळ)	७८	३७	
३५	शर.	८०	३६	सरु.
३६	सुशर.	८२	३५	सुसरु.
३७	समर.	८४	३४	समरु.
३८	सारस.	८६	३३	सारसु.
३९	शारद, सरस.	८८	३२	सरअ.
४०	मेरु.	९०	३१	मेरु.
४१	मदकर.	९२	३०	मअरु.
४२	मद.	९४	२९	मअ.
४३	सिद्धि.	९६	२८	सिद्धि.
४४	बुद्धि.	९८	२७	बुद्धि.
४५	करतल, कलकल.	१००	२६	करअलु.
४६	कमलाकर.	१०२	२५	कमलाअरु.
४७	धवल.	१०४	२४	धवल.
४८	मन.	१०६	२३	मणउ.
४९	ध्वज,ध्रुव.	१०८	२२	धुज्ज, धुअ.
५०	कनक,वलय,करकंकन.	११०	२१	कणउ.
५१	कृष्ण.	११२	२०	किसणु.

५२	रंजन.	११४	१९	रंजणु.
५३	मेघकर, मेघाकर.	११६	१८	मेहाअरु.
५४	ग्रीष्म.	११८	१७	गिह्म.
५५	गरुड.	१२०	१६	गरुड.
५६	शशि.	१२२	१५	ससि.
५७	सूर्य.	१२४	१४	सूर.
५८	शल्य.	१२६	१३	सल्ल.
५९	नवरंग.	१२८	१२	णवरंग.
६०	मनोहर.	१३०	११	मणोहरु.
६१	गगन.	१३२	१०	गअणु.
६२	रत्न.	१३४	९	रअणु.
६३	नर.	१३६	८	णरु.
६४	हीर.	१३८	७	हीरु.
६५	भ्रमर.	१४०	६	भमरु.
६६	शेखर.	१४२	५	सेहरु.
६७	कुसुमाकर.	१४४	४	कुसुमाअरु.
६८	दीप, दीपक.	१४६	३	दीपु.
६९	शंख.	१४८	२	संख.
७०	वसु.	१५०	१	वसु.
७१	शब्द	१५२	०	सद्द.

काव्य जातिना भेद ४५ }
उल्लालयना भेद २६ } मळीने ७१ भेद छप्पयना थया.

जूदा जूदा पिंगळकारोए पोतपोतानी कवितामां गोठवो आवे एवो क्रम लीधो छे, अने नाम पण केटलाक नविन कल्प्यां छे; तेथी तेना अंकना क्रममां फेरफार थइ जतां, तेमां केटला लघु गुरु थाय ए क्रम पण बदलाइ जायछे, माटे अमे उपर जे क्रम आप्यो छे तेज ग्राह्य छे. भिन्न भिन्न पिंगळमांथी नीचेना भेद अहिं जणाव्या छे, ते उपरथी फेरफार केवो थइ जायछे ते बतावबाने अमे नीचे विगत आपिये छिये.

चिन्तामणी पिंगळ प्रमाणे छप्पय नाम भेद.

छप्पय

अजय विजय बलि करन, वीर वेताल बिहकर;
१ २ ३ ४ ५ ६ ७

मरकट हरि हर ब्रह्म, इंद्र चंदन रु शुभंकर;
८ ९ १० ११ १२ १३ १४

श्वान सिंह सार्दूल, कूर्म कोकिल खर कुंजर;
१५ १६ १७ १८ १९ २० २१

मदन मच्छ तारंग, सेस सारंग पयोहर;
२२ २३ २४ २५ २६ २७

कहि कुंद कमळ वारन सरभ, जंगम जुजिठिल अरु बिलहु;
२८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४

सर सुसर समर सारस सरह, छपय छंद अनुक्रमि लहु. १
३५ ३६ ३७ ३८ ३९

मेरु मकर मद सिद्धि, बुद्धि करतल कमलाकर;
४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६

धवलौ मन धुज कनक, कृष्ण रंजन बहुरो धरि;
४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२

मेधंकरि भनि ग्रीष्म, गरुड शशि सूर बखानिय;
५३ ५४ ५५ ५६ ५७

तालंक साल संभणु ललु, मथरमति सुहविच्छरण;
६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५
वेयाण वंस बंभाणवर, जोवण पुणगुण नवगहण. २
६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१

अनुक्रम टूटेछे ते बतावबाने षट्पदीना ७१ भेद नीचे जणाव्या छे.

छंदःप्रभाकर.	नारायण-भट्टीप्रमाणे		गुरु	लघु	मा. छंदोग्रथ चि त्रसेनटीकापाठ.	उरग चूडामणि
१ अजय	अजय	७०		१२	अजय	अजय
२ विजय	विजय	६९		१४	विजय	विजय
३ बल	वलि	६८		१६	बलवंत	बलिवत
४ कर्न	वर्ण	६७		१८	वीर	वीर
५ वीर	वीर	६६		२०	वेयाल	वेयाल
६ बेताल	वेताल	५६		२२	विहकर	विहगम
७ विहकर	वृहन्नल	६४		२४	मक्कड	मंकड
८ मर्कट	मर्कट	६३		२६	हरि	हरि
९ हरि	हरि	६२		२८	हर	हरु
१० हर	हर	६१		३०	बम	बम
११ ब्रह्म	ब्रह्म	६०		३२	इद	इद
१२ इंद्र	इन्दु	५९		३४	चदाण	चदाण
१३ चदन	चदन	५८		३६	सुहकर	सुहगम
१४ शुभकर	शुभकर	५७		३८	रखण	रखण
१५ श्वान	शाल	५६		४०	मयण	मयण
१६ सिह	सिंह	५५		४२	गुण	गुण
१७ शार्दूल	शार्दूल	५४		४४	निलय	निलय
१८ कच्छ	कूर्म	५३		४६	तार	तार
१९ कोकिल	कोकिल	५२		४८	ताराह	

२१	कुंजर	कुंजर	५०	५२	अमल	अमल
२२	मदन	मदन	४९	५४	विमल	विमल
२३	मत्स्य	मत्स्य	४८	५६	मणहरण	मणहरण
२४	तादंक	सारंग	४७	५८	मोह	मोह
२५	शेष	शेष	४६	६०	मोहणह	मोहण
२६	सारंग	सारस	४५	६२	विहडण	आडंबर
२७	पयोधर	पयोधर	४४	६४	कासीर	कासीर
२८	कमल	कुन्द	४३	६६	चग	चग
२९	कुंद	कमल	४२	६८	वसु	वसु
३०	वारण	कारण	४१	७०	चगधर	चगधर
३१	शलभ	शरभ	४०	७२	राडगुणह	रायगुणह
३२	भवन	जगम	३९	७४	ससिविच्छर	शशिविच्छरण
३३	अजंगम	सर	३८	७६	वंसाणसिद्धि	वसम्पासिद्धि
३४	सर	सुशर	३७	७८	वालिमडलह	वालिमडलह
३५	सरस	समर	३६	८०	कित्तिविमल	कित्तिविमल
३६	समर	सारस	३५	८२	अमय	अमय
३७	सारस	सरस	३४	८४	समय	सुमय
३८	मेरु	मेरु	३३	८६	रसराय	रसराय
३९	मकर	सकल	३२	८८	राज	राज
४०	अलि	मृग	३१	९०	आकार	आकार
४१	सिद्धि	सिद्ध	३०	९२	कलकय	अलकय
४२	बुद्धि	बुद्धि	२९	९४	कलि	कालिंदी
४३	करतल	कलकल	२८	९६	सवल	कलि
४४	कमलाकार	कमलाकर	२७	९८	कालवि	सवल
४५	धवल	धवल	२६	१००	जाल	जाल
४६	मलय	मृतक	२५	१०२	माल	माला
४७	ध्रुव	ध्रुव	२४	१०४	करकण	करकंकि

१२	अमोह.	५९	३८	९७
१३	अकोह.	५८	४०	९८
१४	अकाम.	५७	४२	९९
१५	अहंकार.	५६	४४	१००
१६	अद्रोह.	५५	४६	१०१
१७	अतिंद्रिय.	५४	४८	१०२
१८	अद्वैत.	५३	५०	१०३
१९	अपार.	५२	५२	१०४
२०	अधार.	५१	५४	१०५
२१	अधिष्टा.	५०	५६	१०६
२२	अनास्त्रै.	४९	५८	१०७
२३	अप्रमेय.	४८	६०	१०८
२४	अप्रमाद.	४७	६२	१०९
२५	अद्भूत.	४६	६४	११०
२६	अलख.	४५	६६	१११
२७	अनत्र.	४४	६८	११२
२८	अकल.	४३	७०	११३
२९	अखल.	४२	७२	११४
३०	अमर	४१	७४	११५
३१	अजर.	४०	७६	११६
३२	अछल.	३९	७८	११७
३३	अमल.	३८	८०	११८
३४	अचल.	३७	८२	११९
३५	अतन.	३६	८४	१२०
३६	सत्य.	३५	८६	१२१

३७	शांत.	३४	८८	१२२
३८	सिद्धि.	३३	९०	१२३
३९	मीत.	३२	९२	१२४
४०	सुरभ.	३१	९४	१२५
४१	सूर.	३०	९६	१२६
४२	शेष.	२९	९८	१२७
४३	शल.	२८	१००	१२८
४४	शोभ.	२७	१०२	१२९
४५	सौम	२६	१०४	१३०
४६	शम्भु.	२५	१०६	१३१
४७	कपिल.	२४	१०८	१३२
४८	काम.	२३	११०	१३३
४९	कृष्ण.	२२	११२	१३४
५०	कीर.	२१	११४	१३५
५१	कुशल.	२०	११६	१३६
५२	कूधर.	१९	११८	१३७
५३	केशव.	१८	१२०	१३८
५४	कैटभहा.	१७	१२२	१३९
५५	कोल.	१६	१२४	१४०
५६	कौशल.	१५	१२६	१४१
५७	कंसहा.	१४	१२८	१४२
५८	वनमाली.	१३	१३०	१४३
५९	वामन.	१२	१३२	१४४
६०	विष्णु.	११	१३४	१४५
६१	वीरहा.	१०	१३६	१४६

६२	बुध.	९	१३८	१४७
६३	बूझा.	८	१४०	१४८
६४	वेद्गमा.	७	१४२	१४९
६५	वैदपत.	६	१४४	१५०
६६	बांधा.	५	१४६	१५१
६७	बौध.	४	१४८	१५२
६८	वंशीधर.	३	१५०	१५३
६९	मंजु.	२	१५२	१५४
७०	मनोहर.	१	१५४	१५५
७१	माधव.	०	१५६	१५६

उपर ७१ भेद बताव्या ते उपरांत गणप्रस्तारप्रकाशमां छप्पय संबंधी नीचे प्रमाणे विस्तार जणाव्यो छेः—

छप्पयनी रचना करवामां रोला आदि पांच वस्तू भेदनी उपर चार प्रकारना उल्लाल तथा हंस (दोहरानो प्रथम भेद) नो चडावो करवामां आववाथी छ पाद रचाइ ५×५=२५ भेद विशेष जणाव्या छे, ते समजवा माटे पांच वस्तूभेद किया[2] अने ते प्रत्येकना केटला भेद थायछे ते जाणवानी अगत्य छे. ए भेद नीचे प्रमाणे छेः—

१	रोलावस्तू.	४	मोहनवस्तू.
२	आनंदवस्तू.	५	मंगळवस्तू.
३	रायवस्तू.		

(१) रोलावस्तू. (वत्थू-वास्तूक)

६+४+ल, ६+४+ल+गु=२४.

आवा चार चरणनी रोलावस्तू जाति थायछे. अने तेने काव्य

जाति मानेछे, पण तेमां तफावत छे. जुवो पृ. ३१ अने ३९.

रोलावस्तूनुं प्रथम रूप रचतां सर्व गुरु करवाने प्रत्येक चरणमां बे लघु आवेछे ते तो कायम राखवा पडेछे, माटे आखी जातिमां ए हिसाबे ८ लघु अने ४४ गुरु थइ ५२ वर्ण थायछे ते समजाववाने नीचे बिम्ब आपिये छिये.

१	SSS	SS	I	SSS	SS	IS
२	SSS	SS	I	SSS	SS	IS
३	SSS	SS	I	SSS	SS	IS
४	SSS	SS	I	SSS	SS	IS

४४ गुरुमांथी अकेको गुरु घटाडी तेने बदले बबे लघु वधारतां तेना कुल भेद ४९ थायछे अने छेलुं रूप ९६ लघुनुं थायछे. ए भेद नीचे प्रमाणे छेः—

क्रम.	भेद-नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	कमठ.	४४	८	५२
२	मीन.	४३	१०	५३
३	वराह.	४२	१२	५४
४	कृष्ण.	४१	१४	५५
५	नरसिंह.	४०	१६	५६
६	वलि. (बलि?)	३९	१८	५७
७	वामन.	३८	२०	५८
८	गिरिधर.	३७	२२	५९
९	विधि.	३६	२४	६०
१०	विष्णु.	३५	२६	६१

११	वीर.	३४	२८	६२
१२	हरि.	३३	३०	६३
१३	मोहन.	३२	३२	६४
१४	भामन.	३१	३४	६५
१५	माधव.	३०	३६	६६
१६	शिव.	२९	३८	६७
१७	शशि.	२८	४०	६८
१८	सूर.	२७	४२	६९
१९	धराधर.	२६	४४	७०
२०	वनमाली.	२५	४६	७१
२१	श्याम.	२४	४८	७२
२२	राम.	२३	५०	७३
२३	वैकुंठ.	२२	५२	७४
२४	देव.	२१	५४	७५
२५	द्विज.	२०	५६	७६
२६	कवि.	१९	५८	७७
२७	शाली.	१८	६०	७८
२८	यज्ञ.	१७	६२	७९
२९	बोध.	१६	६४	८०
३०	बलदेव.	१५	६६	८१
३१	दत्त.	१४	६८	८२
३२	व्यास.	१३	७०	८३
३३	कपिल.	१२	७२	८४
३४	ऋषभ.	११	७४	८५

३५	शेष.	१०	७६	८६
३६	हंस.	९	७८	८७
३७	सनकादि.	८	८०	८८
३८	नारायण.	७	८२	८९
३९	हयग्रीव.	६	८४	९०
४०	धन्वंतर.	५	८६	९१
४१	कल्कि.	४	८८	९२
४२	गुरु.	३	९०	९३
४३	शनि.	२	९२	९४
४४	यम.	१	९४	९५
४५	इंद्र.	०	९६	९६

(२) आनंदवस्तु.

प्रथम.	६+४+३,	६+४=२३
द्वितीय.	६+४+३,	६+४=२३
तृतीय.	६+२+३,	३+६+२=२२
चतुर्थ.	६+२+३,	३+६+२=२२
		९०

१,५,९ मात्राए ताळ.

वस्तू आ आनंदमां, छ चार कल त्रण धर,
छ चार आणी ते परे, बे पद त्रेविश कर,
षड बे ने त्रण आण, त्रण पर छ पर द्वि उचर,
त्रीजे चोथे एम, कला कुल बाविश कर. १८८

ए रीते कुल ९० मात्रानी आ जाति बनेछे, तेमां छ मात्रा लघु राखवानी फरज होतां एनुं सर्व गुरुनुं प्रथम बिम्ब रचवाने ६ लघु

४२	सैफ.	१	८८	८९
४३	सांग.	०	९०.	९०

३ रायवस्तु.

प्र. ६+२+३, ३+२+५=२१
द्वि. ६+२+३, ३+२+५=२१
तृ. ६+२+३, ३+२+५=२१
च. ६+२+३, ३+२+५=२१
८४

पृ. २६ अं. ७४ प्लवंगमनी चाल.

१,५,९,१३,१७मात्राए ताल.

छ पर कला बे करी, उपर त्रण कल करो;
ते पछी त्रण बे पांच, विगतनी कुल धरो;
रायवस्तूनां चरण, प्लवंगम चालनां;
शिव दश यतिनां थाय, प्लवंगम तालनां. १८९

आ वस्तूमां १२ लघु राखवानी आवश्यकता होतां प्रथम रूपमां १२ लघु अने ३६ गुरु थइ ४८ वर्ण थायछे, तेनु बिम्ब नीचे प्रमाणे:—

१	SSS	S	IS	IS	S	ISS
२	SSS	S	IS	IS	S	ISS
३	SSS	S	IS	IS	S	ISS
४	SSS	S	IS	IS	S	ISS

नीचे प्रमाणे थायछे.-

अंक.	भेदनाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण
१	गिरि.	३६	१२	४८
२	तरु.	३५	१४	४९
३	नद.	३४	१६	५०
४	नर.	३३	१८	५१
५	नग.	३२	२०	५२
६	नाग.	३१	२२	५३
७	नीर.	३०	२४	५४
८	नार.	२९	२६	५५
९	निरै.	२८	२८	५६
१०	नून.	२७	३०	५७
११	नेम.	२६	३२	५८
१२	नैन.	२५	३४	५९
१३	नाक.	२४	३६	६०
१४	नौल.	२३	३८	६१
१५	नन्द.	२२	४०	६२
१६	नाम.	२१	४२	६३
१७	हर.	२०	४४	६४
१८	हार.	१९	४६	६५
१९	हिरण्य.	१८	४८	६६
२०	हीर.	१७	५०	६७
२१	हुल्स.	१६	५२	६८
२२	हृक.	१५	५४	६९
२३	हेम.	१४	५६	७०

२४	होम.	१३	५८	७१
२५	हौज.	१२	६०	७२
२६	हंस.	११	६२	७३
२७	हांसि.	१०	६४	७४
२८	कापिल.	९	६६	७५
२९	काम.	८	६८	७६
३०	किरण.	७	७०	७७
३१	कीर.	६	७२	७८
३२	कुशल.	५	७४	७९
३३	कूर.	४	७६	८०
३४	केर.	३	७८	८१
३५	कैर.	२	८०	८२
३६	कोक.	१	८२	८३
३७	कौम(मु?)दी.	०	८४	८४

४ मोहनवस्तू.

प्रथम.	६+२,	६+२=१६	चरणाकुलनी चाल. पृष्ट १६ अंक ४५.
द्वितीय.	६+२,	६+२=१६	
तृतीय.	६+२,	६+२=१६	
चतुर्थ.	६+२,	६+२=१६	
		६४	

१,५,९,१३, मात्राए ताल.

छ कल उपर बे, कल यति त्यां धर,
आठ कला ए, रीते वळी कर;
चरणाकुलनी, चाल चलावो,
मोहनवस्तू, एम बनावो. १९०

मोहनवस्तूमां कोइ लघुनी आवश्यकता नथी, तथी ३२ गुरुना प्रथम रूपनुं बिम्ब नीचे प्रमाणे थायछे:—

१	SSS	S	SSS	S
२	SSS	S	SSS	S
३	SSS	S	SSS	S
४	SSS	S	SSS	S

उपर प्रमाणे ३२ गुरुमाथी अकेको गुरु घटाडता, अने तेने बदले बबे लघु वधारतां सर्व (६४) लघुनुं रूप थता सुधी तेना ३३ भेद नीचे प्रमाणे थायछे:—

क्रम.	नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	घट.	३२	०	३२
२	पट.	३१	२	३३
३	दल.	३०	४	३४
४	फल.	२९	६	३५
५	फूल.	२८	८	३६
६	मूर.	२७	१०	३७
७	सत.	२६	१२	३८
८	रज.	२५	१४	३९
९	तम.	२४	१६	४०
१०	तेज.	२३	१८	४१
११	तरन.	२२	२०	४२
१२	तूर.	२१	२२	४३
१३	तन.	२०	२४	४४

१४	मन.	१९	२६	४५
१५	धन.	१८	२८	४६
१६	घन.	१७	३०	४७
१७	मोर.	१६	३२	४८
१८	नाग.	१५	३४	४९
१९	नग.	१४	३६	५०
२०	वन.	१३	३८	५१
२१	जन.	१२	४०	५२
२२	तर.	११	४२	५३
२३	पिक.	१०	४४	५४
२४	सारस.	९	४६	५५
२५	शुक.	८	४८	५६
२६	रस.	७	५०	५७
२७	कल.	६	५२	५८
२८	वल.	५	५४	५९
२९	पद्म.	४	५६	६०
३०	पव.	३	५८	६१
३१	पावन.	२	६०	६२
३२	सरस.	१	६२	६३
३३	सरभ.	०	६४	६४

(५) मंगलवस्तु.

प्रथम. ६+२+३, ६+२+३=२२

द्वितीय. ६+२+३, ६+२+३=२२

तृतीय. ६+२+३, ६+२+३=२२

चतुर्थ. ६+२+३, ६+२+३=२२

छ वे ऋण धरायछे, छ वे ऋण करायछे,
शिव कला यति करी, बावीशे रखायछे;
एला सम चाल्थी, चार चरण थायछे;
मंगलवस्तु भली, एम तो रचायछे. १०२

मंगलवस्तुमां आठ लघु राखवानी आवश्यकता होता बाकी ४० गुरुनुं आदि बिम्ब नीचे प्रमाणे थायछे:—

१	SSS	S	IS	SSS	S	IS
२	SSS	S	IS	SSS	S	IS
३	SSS	S	IS	SSS	S	IS
४	SSS	S	IS	SSS	S	IS

४० गुरुमांथी अकेको घटाडतां अने तेनी बन्ने लघु मात्रा वधारता ८८ लघु वर्ण थता सुधी तेनां ४१ रूप थायछे, तेना नामो गणप्रस्तारप्रकाशमा आप्या नथी. तेथी अमे मंगलगृहना नामो पडी शके तेवां पाडी नवां कल्प्यां छे:—

मंगलवस्तूना ४१ भेद.

क्रम.	नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	तक.	४०	८	४८
२	ऋणांतक.	३९	१०	४९
३	खोल्मुक.	३८	१२	५०
४	अगारक	३७	१४	५१
५	गगनोल्मुक.	३६	१६	५२
६	रक्तांग.	३५	१८	५३
७	लोहितांग.	३४	२०	५४

१४	मन.	१९	२६	४५
१५	धन.	१८	२८	४६
१६	घन.	१७	३०	४७
१७	मोर.	१६	३२	४८
१८	नाग.	१५	३४	४९
१९	नग.	१४	३६	५०
२०	वन.	१३	३८	५१
२१	जन.	१२	४०	५२
२२	तर.	११	४२	५३
२३	पिक.	१०	४४	५४
२४	सारस.	९	४६	५५
२५	शुक.	८	४८	५६
१९	भूसुत.	२२	४४	६६
२०	लोहित.	२१	४६	६७
२१	क्षितिसुत.	२०	४८	६८
२२	धरासुत.	१९	५०	६९
२३	महीसुत.	१८	५२	७०
२४	नवदीधिति.	१७	५४	७१
२५	भूमिपुत्र.	१६	५६	७२
२६	धरापुत्र.	१५	५८	७३
२७	भूमिनंदन.	१४	६०	७४
२८	पिंगललोचन.	१३	६२	७५
२९	धरासूनु.	१२	६४	७६
३०	भौम.	११	६६	७७
३१	महाकाय.	१०	६८	७८

छ वे त्रण धरायछे, छ वे त्रण करायछे;
शिव कला यति करी, बार्वीशे रखायछे;
एल सम चालमी, चार चरण थायछे,
मंगलवस्तू भली, एम तो रचायछे. १९१

मंगलवस्तूमां आठ लघु राखवानी आवश्यकता होता बाकी ४० गुरुनुं आदि बिम्ब नीचे प्रमाणे थायछे:—

१	SSS	S	IS	SSS	S	IS
२	SSS	S	IS	SSS	S	IS
३	SSS	S	IS	SSS	S	IS
४	SSS	S	IS	SSS	S	IS

ज्ञातिना उल्लाल नीचे प्रमाणे वपरावामां आवेछे:—

(१) रस. सर्व मात्रा ५६.
(२) रंग. ,, ,, ५६.
(३) काम. ,, ,, ६०.
(४) श्याम. ,, ,, ५२.

(१) रसउल्लाल. (मात्रा ५६)

प्रथम दल. २+६+२+३, २+३+५+३+२=२८
द्वितीय दल. २+६+२+३, २+३+५+३+२=२८

१, ७, ९, अने १, ५, ९, १३ मात्राए ताल

बे षट बेपर त्रण धरो, बे त्रणपर शर त्रण बे करो,
रसउल्लाला दल रची, यति तेर अने तिथिपर धरो. १९

आमां आठ लघु आणवानी आवश्यकता छे, तथी तेटला

१४	मन.		१९	२६	४५
१५	धन.		१८	२८	४६
१६	घन.		१७	३०	४७
१७	मोर.		१६	३२	४८
१८	नाग.		१५	३४	४९
१९	नग.		१४	३६	५०
२०	वन.		१३	३८	५१
२१	जन.		१२	४०	५२
२२	तर.		११	४२	५३
२३	पिक.		१०	४४	५४
२४	सारस.		९	४६	५५
२५	शुक.		८	४८	५६
३	कमठ.	,,	२२	५५२	६६०
४	नरहरि.	,,	२१	१४	३५
५	बलि.	,,	२०	१६	३६
६	वामन.	,,	१९	१८	३७
७	हंस.	,,	१८	२०	३८
८	ऋषभ.	,,	१७	२२	३९
९	हयग्रीव.	,,	१६	२४	४०
१०	पृथु.	,,	१५	२६	४१
११	हरि.	,,	१४	२८	४२
१२	परशुधर.	,,	१३	३०	४३
१३	राम.	,,	१२	३२	४४
१४	कृष्ण.	,,	११	३४	४५
१५	कल्कि.	,,	१०	३६	४६

छ वे त्रण धरायछे, छ वें त्रण करायछे,

[११] शिव कला यति करी, वावींशे रखायछे,

एवा सम चाल्यी, चार चरण थायछे,

मंगलवस्तू भली, एम तो रचायछे. १९१

मंगलवस्तूमा आठ लघु राखवानी आवश्यकता होता बाकी ४० गुरुनुं आदि बिम्ब नीचे प्रमाणे थायछे –

१	SSS	S	IS	SSS	S	IS
२	SSS	S	IS	SSS	S	IS
३	SSS	S	IS	SSS	S	IS
४	SSS	S	IS	SSS	S	IS

(२) रंगउल्लाल. (मात्रा १६.)

प्र० द० २+३+५+२+२, २+६+२+३=२८

द्वि० द० २+३+५+२+२, २+६+२+३=२८

विषम पदमा ३,७,११ अने सममा १,९,९मात्राए ताल.

वे त्रण [५] शर त्रणपर त्रे कला, वे पट [६] वे त्रण आणजो,

[१५] तिथि तेरतणा यतिनो तमे, रंगउल्लालो जाणजो. १९३

रसउल्लाल प्रमाणे १६ मात्रानी आ जाति थायछे, तेथी तेनु आदि बिम्ब अने तेना भेद पण एज प्रमाणे थायछे माटे अहि फरीने जणाववानी अगत्य नथी.

(३) कामउल्लाल. (मात्रा ६०.)

प्रथम दल. २+२+६+२+३, २+३+९+३+२=३०.

१४	मन.		१९	२६	४५
१५	धन.		१८	२८	४६
१६	घन.		१७	३०	४७
१७	मोर.		१६	३२	४८
१८	नाग.		१५	३४	४९
१९	नग.		१४	३६	५०
२०	वन.		१३	३८	५१
२१	जन.		१२	४०	५२
२२	तर.		११	४२	५३
२३	पिक.		१०	४४	५४
२४	सारस.		९	४६	५५
२५	शुक.		८	४८	५६
३	कमठ.	,,	२२	[illegible]	[illegible]
४	नरहरि.	,,	२१	१४	३५
५	बालि.	,,	२०	१६	३६
६	वामन.	,,	१९	१८	३७
७	हंस.	,,	१८	२०	३८
८	ऋषभ.	,,	१७	२२	३९
९	हयग्रीव.	,,	१६	२४	४०
१०	पृथु.	,,	१५	२६	४१
११	हरि.	,,	१४	२८	४२
१२	पर्शुधर.	,,	१३	३०	४३
१३	राम.	,,	१२	३२	४४
१४	कृष्ण.	,,	११	३४	४५
१५	कल्कि.	,,	१०	३६	४६

छ वे त्रण वरायछे, छ वं त्रण करायछे;
११
शिव कला यति करी, बावीशे रखायछे;
एला सम चाल्यी, चार चरण थायछे;
मंगलवस्तु भली, एम तो रचायछे. १९१

मंगलवस्तुमां आठ लघु राखवानी आवश्यकता होता बाकी ४० गुरुनुं आदि बिम्ब नीचे प्रमाणे थायछे:—

१	SSS	S	IS	SSS	S	IS
२	SSS	S	IS	SSS	S	IS
३	SSS	S	IS	SSS	S	IS
४	SSS	S	IS	SSS	S	IS

(२) रंगउल्लाल. (मात्रा ५६.)

प्र० द० २+३+३+२+२, २+६+२+३=२८
द्वि० द० २+३+३+२+२, २+६+२+३=२८

विषम पदमां ३,७,११ अने सममां १,५,९मात्राए ताल.

५ ६
वे त्रण शर त्रणपर त्रे कला, त्रे पट वे त्रण आणजो;
१५
तिथि तरतणा यतिनो तमे, रंगउल्लाले जाणजो. १९३

रसउल्लाल प्रमाणे ५६ मात्रानी आ जाति थायछे, तेथी तेनुं आदि बिम्ब अने तेना भेद पण एज प्रमाणे थायछे माटे अहिं फरीने जणाववानी अगत्य नथी.

(३) कामउल्लाल. (मात्रा ६०.)

प्रथम दल. २+२+६+२+३, २+३+५+३+२=३०.

छड वे त्रण पर बे कला, त्रण शर त्रण वे थायछे;
तेरे यति प्रति दल विषे, श्यामउल्लालामांय छे. १९५

एमां आठ लघु राखी बाकीना २२ गुरुनुं आदि चक्र नीचे प्रमाणे थायछे:—

प्र. द.	SSS	S	IS	S	IS	ISS	IS	S
द्वि. द.	SSS	S	IS	S	IS	ISS	IS	S

बावीश गुरुमांथी अकेको घटाडी तेना लघु करतां १२लघुनुं छेल्लुं रूप थतां, एना एकंदर २३ भेद नीचे प्रमाणे थायछे.

क्रम.	नाम.		गुरु.	लघु	वर्ण
१	मीन श्यामउल्लाल.		२२	८	३०
२	वराह.	,,	२१	१०	३१
३	कमठ.	,,	२०	१२	३२
४	नरहरि.	,,	१९	१४	३३
५	बलि.	,,	१८	१६	३४
६	वामन.	,,	१७	१८	३५
७	हंस.	,,	१६	२०	३६
८	ऋषभ.	,,	१५	२२	३७
९	हयग्रीव.	,,	१४	२४	३८
१०	पृथु.	,,	१३	२६	३९
११	हरि.	,,	१२	२८	४०
१२	पर्शुधर.	,,	११	३०	४१
१३	राम.	,,	१०	३२	४२
१४	कृष्ण.	,,	९	३४	४३

१५	कल्कि श्यामउल्लाल.		८	३६	४४
१६	व्यास.	,,	७	३८	४५
१७	मनु.	,,	६	४०	४६
१८	दत्त.	,,	५	४२	४७
१९	कपिल.	,,	४	४४	४८
२०	सनकादिक.	,,	३	४६	४९
२१	बौद्ध.	,,	२	४८	५०
२२	जगदीश.	,,	१	५०	५१
२३	धन्वंतर.	,,	०	५२	५२

रसउल्लाल २५, रंगउल्लाल २५, कामउल्लाल २० अने श्यामउल्लाल २३ भेद आ सर्वे भेदनां नाम एनाएज गणवामां आव्या छे, माटे तेनी ओलख रेहेवा जे प्रकारना उल्लालना नाम ते होय ते प्रकारनु नाम ते भेदना नाम साथे उमेरवु, जेमके मीन रसउल्लाल, मीन रंगउल्लाल, मीन कामउल्लाल, मीन श्यामउल्लाल.

उपरना चार उल्लाल उपरांत पांचमो हंस नामनो दुहानो भेद पांच प्रकारनी रोलावस्तु उपर चडावीने छप्पय करवामां आवेछे, आ हंसनुं माप असार भ्रमर नामना दुहाना पेहेला भेद प्रमाणे छे. (जुवो पृष्ट ७७ मे भेद १ लो)

(५) हंस दोहरो.

२२गुरु+४लघु=२६ वर्ण, तेनी ४८मात्रा. १,५,९मात्राए ताल.

हंसा दोहा मांह तो, गुरु बावी' जाण;
दोहा नी'मो नाखिने, चार भेरु आण. १लघु. १९६

दुहाना २३ भेद पृष्ट ७७ मे आप्या छे, तेमां पेहेलो भ्रमर-हंस जणाव्यो छे, तेना २२ गुरु अने ४ लघु थई २६ वर्ण थायछे, वळी गणप्रस्तारप्रकाशमां दुहाना २१ भेद जणाव्या छे, तेनी टीप पृ. ७८ मे आपीछे ते जुवो.

उपर प्रमाणे पांच प्रकारनी वस्तू उपर हंस सुद्धांत पांच प्रकारनी उल्लाला जाति चडावतां तेना मिश्रणथी छप्पयना (५×५)=२५ भेद विशेषमां नीचे प्रमाणे थायछे:—

क्रम	मिश्रण भेद	कयी वस्तू	मात्रा	उल्लाल जातिनो कयो भेद	मात्रा	सर्व मात्रा.
१	रोलाहंस	रोला.	९६	हस	४८	१४४
२	रोलारस	रोला.	९६	रस	५६	१५२
३	रोलारंग	रोला	९६	रग.	५६	१५२
४	रोलाकाम	रोला	९६	काम	६०	१५६
५	रोलाश्याम	रोला	९६	श्याम.	५२	१४८
६	आनंदहंस.	आनंद.	९०	हस.	४८	१३८
७	आनंदरस	आनंद	९०	रस.	५६	१४६
८	आनंदरंग	आनंद	९०	रंग.	५६	१४६
९	आनंदकाम	आनंद	९०	काम	६०	१५०
१०	आनंदश्याम.	आनंद	९०	श्याम	५२	१४२
११	राजहंस	राज	८४	हंस	४८	१३२
१२	राजरस	राज.	८४	रस	५६	१४०
१३	राजरंग	राज	८४	रग.	५६	१४०
१४	राजकाम	राज	८४	काम	६०	१४४
१५	राजश्याम.	राज	८८	श्याम	५२	१३६
१६	मोहनहंस.	मोहन.	६४	हस	४८	११२
१७	मोहनरस	मोहन	६४	रस	५६	१२०
१८	मोहनरंग.	मोहन	६४	रग	५६	१२०
१९	मोहनकाम	मोहन.	६४	काम.	६०	१२४
२०	मोहनश्याम	मोहन.	६४	श्याम	५२	११६
२१	मंगलहंस.	मंगल	८८	हस.	४८	१३६
२२	मंगलरस.	मंगल.	८८	रस.	५६	१४४
२३	मंगलरंग	मंगल	८८	रग	५६	१४४
२४	मंगलकाम	मंगल	८८	काम	६०	१४८
२५	मंगलश्याम	मंगल.	८८	श्याम.	५२	१४०

पिंगळ छंदोग्रंथमां नीचे प्रमाणेना त्रण छप्पय उपरना करता भिन्न होतां, अहि दाखल कर्या छे छप्पयनी सामान्य मात्रा १५२ थायछे, ते करता आं त्रण प्रकारना छप्पयमां मात्रानो पण फेर छे

१९ रयण छप्पय. मात्रा १२०

सोळ मात्रा, तेमा चार गुरु ने ८ लघु–ते आठमा अन्ते त्रण लघु एवां चार चरण उपर एक उल्लालो

१ प्रति पादे कल सोळ सोळ कर,
२ तेमां चार गुरु कर कविवर।
३ आठ लघुमां §चरमे त्रण ।ग्व, §अते।।१ लघु
४ एक उलालो ते पर कवि। कव,
५ कल एम वधी मळी सो अने, उपर वीश गणी आणजे;
६ तें रयण छपयनी जाति छे, पिंगळमाह प्रमाणजे. १९७

मात्रा १५२नो रयण नामनो एक भेद थायछे(पृ० १५० अ० ६२ पृ० १५६ अ० ४९) पण आमा मात्रा १२० होता अहि दाखल कर्यो छे

२० रासाउल्लाल छप्पय. कुल मात्रा. १४०

(१) १२+९=२१		
(२) १२+९=२१		रासा
(३) १२+९=२१		पृ. २६ अं. ७३
(४) १२+९=२१		
(५) ४+४+४+३, ६+४+३=२८		उल्लाल.
(६) ४+४+४+३, ६+४+३=२८		पृ. ६० अं. १९

रचजो एकज रासो, कल एकवीसे;
बारे अने नव कले, विश्राम दीसें;
उल्लाल एक धरजो, ठिक माप लावो,
तिथि ने तेरे विरति, सारी दिपावो.

कुल कल रचजो कवि! भावथी, सो ने चालिश सौ मळी;
रासाउल्लाल ज छप्पय ए, षटपद जातिमां भळी. १९८

२१ गयवंध छप्पय. मात्रा १४६.

(१) १३+१०=२३
(२) १३+१०=२३
(३) १४+८ =२२
(४) १४+८ =२२
(५) ४+४+४+३, ६+४+३=२८
(६) ४+४+४+३, ६+४+३=२८

त्रेवीश कुल कल प्रथममां, बीजे पण एवी;
बाविश कल त्रीजे अने, चोथे गणो लेवी;
ते पर आणो उल्लालो, षट पद करवा;
सो ने छेतालीश करो, कुल कल भरवा,
ए जाति वनेछे शोभती, त्रण जेनामां भाति छे;
गयबंध नामनी मागधी, षटपदकेरी जाति छे. १९९

२२ कुंडलिनी, कुंडलिणी, (आर्याकुंडलिनी) मात्रा १५३

४+४+४=१२, ४+४+४(वि. के ज.)+४+२=३० } एक
४+४+४=१२, ४+४+१+४+२=२७ } आर्या

{ ४+४+३, १+४+४+४=२४
{ आर्यानां छेला चरणनो ऊथलो.
१. ४+४+३,१+४+४+४ =२४ } एक रोला.
१. ४+४+३,१+४+४+४ =२४
१. ४+४+३,१+४+४+४ =२४

१. धरोने प्रथमज आर्या, अंत पदनी कुंडली फरी करजो;
२ तेम थतां रोळापद, सरखुं आवे त्यमज धरजो;

३. सरखुं आवे त्यमज, तमे पछीं रोला रचजो,
४. तेमां कळ चोवीश, नियमसर रचवा मचजो;
५. आदि रचेला बोल, उचारो अन्ते फरीने;
६. रचजो कुंडलिनीज, प्रथममां आर्या धरीने. २००

छदोलनामा कुंडलिनी नाम कुंडलियानु आप्यु छे अने तेनु बीजु नाम साग छे, एम कह्यु छे ते ग्राह्य नथी.

आर्या प्रकरणमां मुख्य पाच भेद गण्या छे; तेमांथी आर्या उपर रोलाजाति आणवाथी उपर बताव्या प्रमाणे आर्या कुंडलिनी थइ. एज रीते नीचेना कोष्टकमां बताव्या प्रमाणे बधी मळीने पाच प्रकारनी कुंडलिनी थायछे.—

क्रम.	नाम.	आर्या प्रकार	मात्रा	जाति	मात्रा	कुल मात्रा
१	आर्या कुंडलिनी	आर्या	५७	रोला	९६	१५३
२	गीति कुंडलिनी.	गीति	६०	रोला	९६	१५६
३	उपगीति कुंडलिनी	उपगीति	५४	रोला	९६	१५०
४	उद्गीति कुंडलिनी.	उद्गीति	५७	रोला	९६	१५३
५	आर्यागीति कुंडलिनी	आर्यागीति	६४	रोला	९६	१६०

उपरना कोष्टकने अनुसरीने प्रचूर्ण गीति जेटला प्रकारनी पृष्ट. १२३ मेथी जणावी छे, ते उपर रोला चडाववाथी तेटला भेदनी कुंडलिनी थइ शकेछे.

गणप्रस्तारप्रकाश नामना ग्रंथमा श्रीबावा रामदासजिये उपर पांच प्रकारना मुख्य भेद जणाव्या छे. तेने बदले सिहिनी एक नाम वधारीने ते छ प्रकार जणावेछे पण ए मुख्य भेद नथी,

माटे अमे तेनो समावेश प्रचूर्ण गीतिमां पृष्ट १२९, अंक. १९७ मां कर्यो छे, तेना उपर रोला चडाववाथी सिंहिनी (वल्लरी-वल्गुगीति) कुंडलिनी थइ शकेछे.

तेज प्रमाणे ललितागीति-गाहिनी उपर रोला चडाववाथी गाहिनी कुंडलिनी थायछे, तेमां प्रथम गाहिनीना बे दल अने ते उपर रोलानां चार चरण चडाववामां आवेछे. ए रीतिए एनुं आदि रूप रचवा गाहिनीना प्रथम दलमां छठ्ठे स्थाने जगण अने बीजा दलमां जगणने बदले विप्रगण लेइ ते उपर रोलानी ११ मी मात्रा लघु राखी बाकीनी सर्व गुरु राखतां तेनुं स्वरूप नीचे प्रमाणे बनेछे:—

पाद	१	२	३	४	५	६	७	८	लघु	गुरु	वर्ण	मात्रा
१	SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S	२	१४	१६	३०
२	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	SS	४	१४	१८	३२
३	SSS	SS	I	SSS	SS	IS			२	११	१३	२४
४	SSS	SS	I	SSS	SS	IS			२	११	१३	२४
५	SSS	SS	I	SSS	SS	IS			२	११	१३	२४
६	SSS	SS	I	SSS	SS	IS			२	११	१३	२४
								कुल.	१४	७२	८६	१५८

पाद.	१	२	३	४	५	६	७	८	लघु.	गुरु	वर्ण.	मात्रा
१	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।ऽ।	।।।।	ऽ	२६	२	२८	३०
२	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	ऽऽ	२८	२	३०	३२
३	।।।।।।	।।।।	।	।।।।।।	।।।।	।।।			२४	०	२४	२४
४	।।।।।।	।।।।	।	।।।।।।	।।।।	।।।			२४	०	२४	२४
५	।।।।।।	।।।।	।	।।।।।।	।।।।	।।।			२४	०	२४	२४
६	।।।।।।	।।।।	।	।।।।।।	।।।।	।।।			२४	०	२४	२४
								कुल.	१५०	४	१५४	१५८

गीतिने छठ्ठे स्थाने जगण अथवा विप्रगण लाववानो नियम होतां उपरना कोष्टकमां पेहेला पादमा जगण मूक्यो छे. अने बीजा पादमां विप्रगण राख्यो छे. ते मात्र भेद जणाववाने अर्थे छे. बन्ने स्थाने जगण के विप्रगण राखियें तोपण बाध नथी.

गाहिनीनी अन्ते गुरु आवेछे, तेथी बंने दलमां आठमे स्थाने गुरु राख्यो छे, अने बीजा दलमा बे मात्रा छेवटमां उमेरवानो नियम छे, ते मात्रा गुरु गणी छे. तेथी उपरना चक्रमा १९० लघु ४ गुरु थइ १९४ वर्ण अने तेनी १९८ मात्रा थायछे.

उपर आदि अने अन्तनां रूप जणाव्यां ते प्रमाणे अनुक्रमे एकथी ते ६९ सुधी रूप बनेछे, तेनो कोठो गणप्रस्तारप्रकाश उपरथी अमे नीचे आपियें छियें:—

क्रम.	भेद-नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	भद्रा.	७२	१४	८६
२	सुभद्रा.	७१	१६	८७

३	विभद्रा.	७०	१८	८८
४	जैता.	६९	२०	८९
५	विजैता.	६८	२२	९०
६	सुजैता.	६७	२४	९१
७	अजैता.	६६	२६	९२
८	प्रमथा.	६५	२८	९३
९	सुमथा.	६४	३०	९४
१०	सुगता.	६३	३२	९५
११	अगता.	६२	३४	९६
१२	भगता.	६१	३६	९७
१३	विभगता.	६०	३८	९८
१४	सुभगता.	५९	४०	९९
१५	अनन्ता.	५८	४२	१००
१६	विनन्ता.	५७	४४	१०१
१७	सुनन्ता.	५६	४६	१०२
१८	मंजुल.	५५	४८	१०३
१९	मनोहर.	५४	५०	१०४
२०	मनोरस.	५३	५२	१०५
२१	धीर.	५२	५४	१०६
२२	सुधीर.	५१	५६	१०७
२३	अधीर.	५०	५८	१०८
२४	विधीर.	४९	६०	१०९
२५	सुधा.	४८	६२	११०
२६	वसुधा.	४७	६४	१११
२७	प्रकृति.	४६	६६	११२
२८	विकृति.	४५	६८	११४

२९	सुकृति.	४४	७०	११४
३०	अकृति.	४३	७२	११५
३१	कारन.	४२	७४	११६
३२	करन.	४१	७६	११७
३३	अकरन.	४०	७८	११८
३४	विकरन.	३९	८०	११९
३५	सुकरन.	३८	८२	१२०
३६	परम.	३७	८४	१२१
३७	पवित्र.	३६	८६	१२२
३८	सुचित्र.	३५	८८	१२३
३९	विचित्र.	३४	९०	१२४
४०	चरित्र.	३३	९२	१२५
४१	अचित्र.	३२	९४	१२६
४२	मित्र.	३१	९६	१२७
४३	अमित्र.	३०	९८	१२८
४४	ईश्वर.	२९	१००	१२९
४५	अक्र.	२८	१०२	१३०
४६	अचल.	२७	१०४	१३१
४७	अलख.	२६	१०६	१३२
४८	अखिल.	२५	१०८	१३३
४९	अच्युत.	२४	११०	१३४
५०	अनंत.	२३	११२	१३५
५१	अद्वैत.	२२	११४	१३६
५२	अशोष.	२१	११६	१३७
५३	अनल.	२०	११८	१३८
५४	अमर.	१९	१२०	१३९

५५	पूरन.	१८	१२२	१४०
५६	पावस.	१७	१२४	१४१
५७	परा.	१६	१२६	१४२
५८	पुरुष.	१५	१२८	१४३
५९	पारधी.	१४	१३०	१४४
६०	पुरषोत्तम.	१३	१३२	१४५
६१	पद्मास्त.	१२	१३४	१४६
६२	प्रभु.	११	१३६	१४७
६३	विभु.	१०	१३८	१४८
६४	ब्रह्म.	९	१४०	१४९
६५	विरुज.	८	१४२	१५०
६६	विष्णु.	७	१४४	१५१
६७	बोध.	६	१४६	१५२
६८	वामन.	५	१४८	१५३
६९	वलि.	४	१५०	१५४

उपर जे नाम आप्यां छे ते बीजा कोइ पिंगळमां जोवामां आवतां नथी तेथी ग्रंथकर्त्ताए पोते कल्पेलां जणायछे, एज प्रमाणे पांच प्रकारनी आर्या जातिना जेटला भेद थायछे तथा अमे प्रचूर्ण गीति जणावी छे तेओना नियम उपर आधार राखीने प्रत्येकना उपरनी रीतिने अनुसरीने भेद करवा होय तो थइ शकेछे अने तेनां नाम आपणे जेवां पाडवां होय तेवां पडी शकेछे.

खरु जोतां तो अमे पृष्ट. १२५मे गाहिनीनां ६५,५३,६०,००० रूप थायछे एम जणाव्युं छे ते प्रमाणे पण भेद थइ शकेछे.

चूडाणा कुंडलिनी.

पृष्ट ८९ अंक ३२ चूडाणा अर्द्धसममां छे, ते दुहा उपर आर्या चडाववाथी थायछे एम लख्युं छे. दुहामां तेना सर्व भेदनो समावेश थइ जायछे, अने आर्यामा तेना जेटलाप्रकारना भेद थायछे तेनो पण समावेश थइ जायछे. तेम छतां गण-प्रस्तारप्रकाशमां चूडाणाने बदले चूडामणि नाम आपी तेनी कुंडली बनाववानो प्रकार जणाव्यो छे. पण चूडामणिनां चारे चरण गीतिना नियम प्रमाणेज थायछे. माटे अमे ते जातिने अळगी राखी चूडाणा उपर कुंडली करवानी रीति उपरना ग्रंथ उपरथी जणाविये छिये.

दोहा, सोरठा (उपदोहा) अथवा **पंचा** उपर **गाहा** (आर्या), **विगाहा**, **उद्गीति**, **उग्गाहा** (गीति), **गाहू** (उपगीति), **सिंहिनी** अने **गाहिनी** चडाववाथी ३×६=१८ भेद चूडाणाना थायछे. अने तेमां दोहानी छेल्ली तूकनी कुंडली गाहा आदिना प्रथम पादमां वाळवाथी तेना मिश्रणनी कुंडलिनीना १८ भेद थायछे, तेमां ओछामां ओछी १०० मात्रा अने वत्तामां वत्ती ११० मात्रा आवेछे.

पंचा जातिनी बनावट विषे नीचे प्रमाणे विवेचन करवामा आवेछे:—

२३ पंचा.

पूर्वार्द्ध ६+४+२, ६+२+गु+ल=२३
उत्तरार्द्ध ६+४+२; ६+२+गु+ल=२३

प्रथम त्रीजा पदमाहे, षट चोकल बे आण;
समसा षट बे तालनी, पंचा जाति जाण. २०१

एनुं पेहेलुं रूप नीचे प्रमाणे थायछे:—

SSS	SS	S	SSS	S	SI
SSS	SS	S	SSS	S	SI

एना प्रथम रूपमां २२ गुरु अने २ लघु मळीने २४ वर्ण थायछे, तेमां बीजा अने चोथा चरणमां ताल(SI)गुरु लघु लाववानां होतां बे गुरु अंतना रूपमां कायम रेहेवाथी एना नीचे प्रमाणे २१ भेद थायछे:—

क्रम.	नाम.	गुरु.	लघु.
१	माला.	२२	२
२	बाला.	२१	४
३	वेनी.	२०	६
४	ज्वाला.	१९	८
५	योगी.	१८	१०
६	गंगा.	१७	१२
७	तारा.	१६	१४
८	तरुणी.	१५	१६
९	धरन.	१४	१८
१०	शोभा.	१३	२०
११	सिंधुर.	१२	२२
१२	रंग.	११	२४
१३	धरधर.	१०	२६
१४	गौरी.	९	२८
१५	गणपती.	८	३०

१६	शम्भू.	७	३२	३९
१७	धाता.	६	३४	४०
१८	काम.	५	३६	४१
१९	चुरी.	४	३८	४२
२०	चौसर.	३	४०	४३
२१	हार.	२	४२	४४

चूडाणा कुंडलिनीना १८ भेद थायछे एम उपर जणाववामा आव्यु छे ते भेदप्रदर्शक कोष्टक नीचे प्रमाणे छे —

संख्या	चूडाणा कुंडलिनीना भेद.	छन्द.	कला.	छन्द.	कला.	कुल
१	चूडाणा दोहा गाहा कुंडलिनी	दोहा	४८	गाहा	५७	१०५
२	,, उपदोहा गाहा ,	उपदोहा	४८	गाहा	५७	१०५
३	,, पचा गाहा ,,	पचा	४६	गाहा	५७	१०३
४	,, दोहा विगाहा ,	दोहा	४८	विगाहा	५७	१०५
५	,, उपदोहा विगाहा ,,	उपदोहा	४८	विगाहा	५७	१०५
६	,, पचा विगाहा ,,	पचा	४६	विगाहा	५७	१०३
७	,, दोहा उगाहा ,,	दोहा	४८	उगाहा	६०	१०८
८	,, उपदोहा उगाहा ,	उपदोहा	४८	उगाहा	६०	१०८
९	,, पंचा उगाहा ,,	पचा	४६	उगाहा	६०	१०६
१०	,, दोहा गाहु ,,	दोहा	४८	गाहु	५४	१०२
११	,, उपदोहा गाहु ,,	उपदोहा	४८	गाहु	५४	१०२
१२	,, पचा गाहु ,,	पचा	४६	गाहु	५४	१००
१३	,, दोहा सिंहिनी ,,	दोहा	४८	सिंहिनी	६२	११०
१४	,, उपदोहा सिंहिनी ,,	उपदोहा	४८	सिंहिनी	६२	११०
१५	,, पचा सिंहिनी ,	पचा	४६	सिंहिनी	६२	१०८
१६	,, दोहा गाहिनी ,,	दोहा	४८	गाहिनी	६२	११०
१७	,, उपदोहा गाहिनी ,,	उपदोहा	४८	गाहिनी	६२	११०
१८	,, पचा गाहिनी ,	पचा	४६	गाहिनी	६२	१०८

९४ चुडाणापंचाउपगीति(गाह) कुंडलिनी. मात्रा १००

पंचा { ६+४+२, ६+२+गु+ल,=२३ मात्रा
६+४+२, ६+२+गु+ल,=२३ मात्रा

उपगीति { ४+४+४, ४+४+ल+४+गु,=२७ मात्रा
४+४+४, ४+४+ल+४+गु,=२७ मात्रा

प्रथम त्रिजा पदमांहि, षट-चोकल ई आण,
समसा पट बे ताले, पंचा जाति जाण;
पंचा जाति जाणो, ते पर उपगीति तो आणो,
चूडाणा कुंडलिनी, पंचाउपगीति कवि जाणो. २०२

चूडाणा पंचाउपगीति (गाह) कुंडलिनीनुं प्रथम रूप.

पंचा	SSS	SS	S	SSS	S	SI		
	SSS	SS	S	SSS	S	SI		
गाह	SS	SS	SS	SS	SS	I	SS	S
	SS	SS	SS	SS	SS	I	SS	S

४८ गुरु + ४ लघु =५२ वर्णनी मात्रा १००.

चूडाणापंचाउपगीति(गाह)कुंडलिनीनुं अंत्य रूप.

पंचा	IIIIII	IIII	II	IIIIII	II	SI		
	IIIIII	IIII	II	IIIIII	II	SI		
गाह	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	I	IIII	S
	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	I	IIII	S

४ गुरु + ९२ लघु =९६ वर्णनी मात्रा १००.

उपरना बे बिम्ब उपरथी जणाशे के प्रथम रूपमां ४८ गुरु अने ४ लघुनी आवश्यकता छे. तेमांथी प्रत्येक गुरुने बदले बबे लघु वधारतां छेल्ला रूपमां ४ गुरु अने ९२ लघु थायछे, ए रीते एना ४५ भेद बनी शकेछे. अने तेनां जे नाम आपवां होय ते आपी शकायछे:—

२८ चूडाणादोहाउपगीति (गाह्) कुंडलिनी मात्रा १०२.

दोहा	६+४+लग, ६+२+ऽ।	=२४	पृ.७९-अं.८
	६+४+लग, ६+२+ऽ।	=२४	
गाह्	४+४+४+४+४+लघु+४+गुरु=२७		पृ.११४ अं.८८
	४+४+४+४+४+लघु+४+गुरु=२७		

नियम ध्यानमां धरी करी, रचो दोहरो एक,
ते पर उपगीति धरी, कविजन! करो विवेक:
कविजन! करो विवेके, दोहाउपगीति ए नामे;
चूडाणा कुंडलिनी, आवे कवितातणे कामे. २०२

चूडाणादोहाउपगीति (गाह्) कुंडलिनीनुं प्रथम रूप.

दोहा	ऽऽऽ	ऽऽ	।ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ।		
	ऽऽऽ	ऽऽ	।ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ।		
गाह्	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	।	ऽऽ	ऽ
	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	।	ऽऽ	ऽ

४८ गुरु + ६ लघु =५४ वर्णनी मात्रा १०२.

चूडाणादोहाउपगीति (गाह्) कुंडलिनीनुं अंत्य रूप.

दोहा	।।।।।।	।।।।	।।।	।।।।।।	।।	ऽ।		
	।।।।।।	।।।।	।।।	।।।।।।	।।	ऽ।		
गाह्	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।	।।।।	ऽ
	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।	।।।।	ऽ

४ गुरु + ९४ लघु =९८ वर्णनी मात्रा १०२.

उपर प्रमाणे प्रथम रूपमां ४८ गुरु अने ६ लघु आवेछे, तेमांथी अकेको गुरु घटाडी, तेने बदले बबे लघु वधारतां, छेवट रूप चार गुरु अने ९४ लघुनुं थायछे. अने तेना भेद ४५ बनेछे.

२६. चूडाणापंचागाहा (आर्या) कुंडलिनी. मात्रा १०३.

पंचा.	६+४+२, ६+२+ ऽ।	=२३	पृ. १८९
	६+४+२, ६+२+ ऽ।	=२३	अं. २३
गाहा.	४+४+४+४+४+ज के विप्र+४+२=३०		पृ. १००
	४+४+४+४+४+ लघु +४+२	=२७	अं. ४५

पंचा एकज आणी, ते पर गाहा धार,
चूडाणाकुंडलिनी, एवी छे सुखकार;
एवी छे सुखकारी, पंचागाहा तणे भले नामे;
कविजन कविता करवा, जोडेछे आपने कामे. २०४

चूडाणापंचागाहा (आर्या) कुंडलिनी प्रथम रुप.

पंचा.	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ।		
	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ।		
गाहा.	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	।ऽ।	ऽऽ	ऽ
जयुक्त.	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	।	ऽऽ	ऽ

४९ गुरु+५ लघु=५४ वर्णनी मात्रा १०३.

चूडाणा पंचा गाहा (आर्या) कुंडलिनी अत्य रुप

पंचा.	।।।।।।	।।।।	।।	।।।।।।	।।	ऽ।		
	।।।।।।	।।।।	।।	।।।।।।	।।	ऽ।		
गाहा.	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।ऽ।	।।।।	ऽ
जयुक्त	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।	।।।।	ऽ

५ गुरु+९३ लघु=९८ वर्णनी मात्रा १०३

उपरना बिम्ब उपरथी जणाय छे के प्रथम रूपमां ४९ गुरु अने पांच लघु आवेछे, तेमांथी अकेको गुरु घटाडी बबे लघु वधारतां तेना कुल ४५ भेद थाय छे. अने छेवटनुं रूप ५ गुरु अने ९३ लघुनुं बनेछे.

२७ चूडाणा उपदोहा विगाहा (उद्गीति) कुंडलिनी मात्रा १०९

उपदोहा	६+२+३, ६+४+ल+ग, =२४	पृ. ७९	
(सोरठो)	६+२+३, ६+४+ल+ग, =२४	अं. ९	
विगाहा	४+४+४ +४+४+ल+४+ग =२७	पृ. ११७	
	४+४+४+४+४+ज के विप्र+४+ग=३०	अं. १०९	

उपदोहो रत्न एक, जेने कहे छे सोरठो,
तेपर राखी टेक, राख विगाहा शोभती;
राख विगाहारूडी, जे उद्गीतितणे नामे;
उपदोहाविगाहा, चूडाणाकुंडलिनी बने आमे. २०९

उपदोहो एज सोरठो छे, पण दोहाना सर्व नियम उपदोहामां दाखल करिये तो नवमे लघु अने ते उपर गुरु करवामां बाध आवे छे, ते नियम रामदासे पाळ्यो नथी, ते नीचेना बिम्ब उपरथी जणाइ आवेछे, तेमां तेणे नवमी अने बारमी मात्राने स्थाने लघु राखेला जणायछे, पण ते बराबर नथी. ज्यां त्यां बिम्ब गोठवती वेळाए विषम मात्राना कोठामां प्रथम लघु मात्रा मूकी पछीथी गुरु मूकेल छे, तेनुं कारण एज के प्रस्तार बताववाने लघु प्रथम मूकवो जोइए.

चूडाणाउपदोहाविगाहा (उद्गीति) कुंडलिनी प्रथम रुप मात्रा १०९.

उपदोहा.	SSS	S	IS	IS	S	SSS	S		
	SSS	S	IS	IS	S	SSS	S		
विगाहा.	SS	SS	SS	SS	SS	I	SS	S	
	SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S	ज

४९ गुरु+७ लघु=५६ वर्ण.

चूडाणाउपदोहात्रिगाहा (उद्गीति) कुंडलिनी अंत्य रूप.

मात्रा १०५

उपदोहा	|||||	||	|||	|||	||	|||		||		३ गुरु+९९ लघु=१०२
त्रिगाहा	||||	||||	||||	||||	||||	।	||||	ऽ	जयुक्त
	||||	||||	||||	||||	||||	।ऽ।	||||	ऽ	

उपरना बिम्ब उपरथी जणायछे के प्रथम रूपमां ४९ गुरु अने ७ लघु आवेछे, तेमांथी अकेको गुरु घटाडी बबे लघु वधारतां तेना कुल ४७ भेद थायछे; अने छेलुं रूप ३ गुरु अने ९४ लघनं बनेछे.

२८ चूडाणापंचागीति (उग्गाहा) कुंडलिनी मात्रा १०६

पंचा { ६+४+२, ६+२+गल =२२ } पृ. १८९
{ ६+४+२, ६+२+गल =२२ } अं. २२

उग्गाहा { ४+४+४+४+४+ज+४+ग=३० } पृ. १११
{ ४+४+४+४+४+ज+४+ग=३० } अं. ७१

पंचा प्रथम रचीने, तेपर धर कविराय!
उग्गाहा तुं एकज, जे गीति केवाय;
जे गीति केवाती, ते धरवाथी बने सरस जाति;
पंचाउग्गाहानी, चूडाणाकुंडलिनि बहु भाती. २०६

चूडाणापंचाउग्गाहाकुंडलिनीनुं प्रथम रूप. मात्रा १०६

पंचा	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ।			गुरु ५०+६ लघु=५६ वर्ण.
	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ।			
उग्गाहा	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	।ऽ।	ऽऽ	ऽ	
	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	।ऽ।	ऽऽ	ऽ	

चूडाणा पंचा कुंडलिनीनुं अंत्य रूप.

६ गुरु+९४ लघु=१०० वर्ण,

पंचा.	IIIIII	IIII	II	IIIIII	II	SI		
	IIIIII	IIII	II	IIIIII	II	SI		
उग्गाहा.	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	S
	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	S

उपरना बिम्ब उपरथी जणायछे के, प्रथम रूपमां ५० गुरु अने ६ लघु आवेछे, तेमांथी अकेको गुरु घटाडी बब्बे लघु वधारतां तेना कुल भेद ४९ थायछे, अने छेलुं रूप ६ गुरु अने ९४ लघुनुं बनेछे.

२९ चूडाणापंचासिंहिनीकुंडलिनी. मात्रा १०८.

पंचा { ६+४+२+६+२+ ग ल. =२२ ; ६+४+२+६+२+ ग ल. =२२ } पृ. १८९ अं. २२

सिंहिनी { ४+४+४, ४+४+ज के विप्र+४+४=३२ ; ४+४+४, ४+४+ज के विप्र+४+२=३० } पृ. १२९ अं. १५०

प्रथमे पंचा आणी, तेपर सिंहिनी थाय;
वल्लरी गीति सिंहिनी, ए नामे के'वाय;
ए नामे के'वायज, चूडाणाकुंडलिनी बहु रीतिनी;
पंचा सिंहिनी शोभित, कविवर केरी अतिशय प्रीतिनी. २०७

चूडाणापंचासिंहिनीकुंडलिनीनुं प्रथम रूप. मात्रा १०८

५० गुरु+ ८ लघु =५८ वर्ण

पंचा.	SSS	SS	S	SSS	S	SI			
	SSS	SS	S	SSS	S	SI			
सिंहिनी.	SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	SS	ज
	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	S	विप्र

चूडाणापंचासिंहिनीकुंडलिनीनुं अंत्य रूप. मात्रा १०८

पंचा	IIIIII	IIII	II	IIIIII	II	SI	६ गुरु+९६ लघु=१०२ वर्ण.		
	IIIIII	IIII	II	IIIIII	II	SI			
सिंहिनी	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	SS	ज.
	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	S.	विप्र

उपरना विम्ब उपरथी जणायछे के, प्रथम रूपमां ५० गुरु अने ८ लघु आवेछे, तेमांथी अकेको गुरु घटाडी, बबे लघु वधारतां, तेना कुल ४९ भेद थायछे, अने छेलुं रूप ६ गुरु अने ९६ लघुनुं बनेछे.

३० चूडाणादोहागाहिनीकुंडलिनी. मात्रा ११०

दोहा { ६+४ (जगण विना)+ल+२, ६+४ (अंत्य गुरु वाळी)+ल.
पृ ७५-अं.८ { ६+४ (,,)+ल+२, ६+४(,,)+ल.

विप्रयुक्त { ४+४+४,४+४+ विप्र (IIII) +४+S=३० } पृ. १४९ अं. १२९
गाहिनी { ४+४+४,४+४+ विप्र (IIII) +४+४=३२ }

प्रथम स्थान पर रचकवि, दुहो सामटो आप;
तेपर ललिता गीति जे, गाहिनीं नामे थाप,
गाहिनीं नामे थापी, चूडाणाकुंडलिनीं कही देजो;
तेने दोहागाहिनीं, एवा नामथी कविवर! ठिकके हेजो. २०८

चूडाणादोहागाहिनीकुडलिनी प्रथम रूप. मात्रा ११०

दोहा	SSS	SS	IS	SSS	S	SI	४९ गुरु+१२ लघु ६१ वर्ण.	
	SSS	SS	IS	SSS	S	SI		
गाहिनी	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	S
	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	SS

चूडाणादोहागाहिनी कुंडलिनी अंत्य रूप. मात्रा ११०

दोहा	।।।।।	।।।।	।।।	।।।।।	।।	ऽ।		
	।।।।।	।।।।	।।।	।।।।।	।।	ऽ।		
गाहिनी	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	ऽ
	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	ऽऽ

५ गुरु+१०० लघु १०५ वर्ण.

उपरना बिम्ब उपरथी जणायछे के, प्रथम रूपमां ४९ गुरु अने १२ लघु आवेछे, तेमाथी अकेको गुरु घटाडी, बबे लघु वधारतां, तेना कुल ४५ भेद थायछे, अने छेल्लु रूप, ५ गुरु अने १०० लघुनुं बनेछे.

३१ चूडाणाउपदोहागीति (उग्गाहा) कुंडलिनी. मात्रा. १०८

उपदोहा { ६+२+गल (ताल), ६+४+ल+गु=२४ } पृ. ७९
{ ६+२+गल (ताल), ६+४+ल+गु=२४ } अं-९

विप्रयुक्त उग्गाहा { ४+४+४+४+४+विप्र+४+ऽ =३० } पृ. १२१
{ ४+४+४+४+४+विप्र+४+ऽ =३० } अं-७१

१०८

'प्रथम रचो कविराय! उपदोहो के सोरठो,
तेपर पछीथी रचाय, उग्गाहा के गीति तो,
उग्गाहा के गीति, चूडाणाकुंडळिनी ज करवाने,
उपदोहाउग्गाहा, एवुं नामज अति रुडुं धरवाने. २०९.

चूडाणाउपदोहाउग्गाहाकुंडलिनी प्रथम रूप. मात्रा १०८

उपदोहा	ऽऽऽ	ऽ	।ऽ	।ऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	
	ऽऽऽ	ऽ	।ऽ	।ऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	
उग्गाहा	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	।।।।	ऽऽ	ऽ
	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	।।।।	ऽऽ	ऽ

४८ गुरु+१२ लघु=६० वर्ण.

१४	सरसी.	३५	३८	७३
१५	सुखदा.	३४	४०	७४
१६	गिरिधर.	३३	४२	७५
१७	गिरिवर.	३२	४४	७६
१८	गिरिजा.	३१	४६	७७
१९	गजमुख.	३०	४८	७८
२०	गोविंद.	२९	५०	७९
२१	शंभू.	२८	५२	८०
२२	शारद.	२७	५४	८१
२३	शशिभा.	२६	५६	८२
२४	सूरज.	२५	५८	८३
२५	शिवदा.	२४	६०	८४
२६	शुभदा.	२३	६२	८५
२७	धाता.	२२	६४	८६
२८	धैरज्ञ	२१	६६	८७
२९	धवला.	२०	६८	८८
३०	धनदा.	१९	७०	८९
३१	धावन.	१८	७२	९०
३२	धूवर.	१७	७४	९१
३३	धूसर.	१६	७६	९२
३४	धूपत.	१५	७८	९३
३५	धात्री.	१४	८०	९४
३६	माधव.	१३	८२	९५
३७	मोहन.	१२	८४	९६

३८	मंजुल.	११	८६	९७
३९	मोषद.	१०	८८	९८
४०	मथुरा.	९	९०	९९
४१	मांडव.	८	९२	१००
४२	नंदन.	७	९४	१०१
४३	नरहरि.	६	९६	१०२
४४	नारद.	५	९८	१०३
४५	नरपति.	४	१००	१०४
४६	नागपति.	३	१०२	१०५
४७	नाकपति.	२	१०४	१०६

३२ उल्लास. मात्रा १९२.

१. ४+४+४+२+गु=१६
२. ४+४+४+२+गु=१६
३. ४+४+४+२+गु=१६
४. ४+४+४+२+गु=१६

} एक पादाकुलक (ताल तेज प्रमाणे) जुओ पृष्ट १८ अंक ५०.

५. २+४+४, ४+४, ४+४, ४+गु=३२
६. २+४+४, ४+४, ४+४, ४+गु=३२
७. २+४+४, ४+४, ४+४, ४+गु=३२
८. २+४+४, ४+४, ४+४, ४+गु=३२

} एक त्रिभंगी, ताल तेज प्रमाणे जुओ पृष्ट ५२ अंक १३४.

त्रण चोकलिया पर वे कल ने,
ते पर छेलो गुरु ठिक धर ने;
एवा च्यार चरण कवि! करजे,
ते पर एक त्रिभंगी धरजे;

कवि! त्रिभंगी धरजे, ए पद करजे, पे'ले दरजे, उलटावी,
वसु चोकलिया कर, दश वसु वसु पर, ने पट पर धर, यति लावी।

गुरु तेमा करवो, छेलो धरवो, छंद उचरवो, लोभावी,
उल्लास वखाणुं, सो ने वाणुं, कुल कल आणु, शोभावी २१०

विषमपद जाति.

गणप्रस्तारप्रकाशमां विषमपद छंद(जाति)नी रचना एम जणावी छे के, चोवीश मात्राथी प्रारंभ करीने इच्छापूर्वक मात्राना आवा छंद बनी शके छे. तेमां जेटली मात्राना छंद रचवा होय तेना अर्द्ध विरामनी मात्रानो एक टेक बांधवो, अने पांच चरणनो एक छंद पूरो गणी अन्ते पाछो तेनो तेज टेक मूकवो. तथा पांचे चरणना अथवा तेम न बनी शके तो बच्चे चरणना अनुप्रास टेकना अनुप्रास साथे मेळववा:—

३३ चोवीश मात्रानी विषमपद जाति.

(वर्णु करीने) १४+१०=२४ मात्राना पांच चरण.
४+३+४+३=१४ मात्रानो टेक १, ५, ८, १२मात्राए ताल.
३+४+३+४=१४ मात्रा तेमां १, ४; ८, ११मात्राए ताल.
अने ३+४+३=१० मात्रा तेमां १, ४, ८; मात्राए ताल.
३+४+३+४, ३+४+३=२४ मात्रानां पांच चरण.

प्रथमे टेक एकज आण—
चौद कलनुं थाय छे ठिक, ते तणुंज प्रमाण;
चौद ने दश एम एमां, विरति जूदी जाण;
त्यार पछि चोवीश कलनां, चरण रच तु वाण; ५
प्रास पांचे आण मळता, जाण पण न दवाण;
विषम पदनो छंद चोवीश, कलतणो सुख खाण.
प्रथमे टेक एकज आण. २११

३४ छव्वीश मात्रानी विषमपद जाति

चौद मात्रानो टेक.

१६+१०ना यतिथी छव्वीश मात्रानां पांच चरण करवां.

४+३+४+३ =१४मात्रानी टेक. १, ५, ८, १२ मात्राए ताल.
२+३+४+३+४=१६ मात्रा,तेमां ३, ६, १० १३ मात्राए ताल.
३+४+३ =१० मात्रा तेमां १, ४, ८ मात्राए ताल.
२+३+४+३+४, ३+४+३=२६ मात्रा, एवां पांच चरण.

टेके चौद कल वधी थाय,—
कल सोळ ने दश विरति वाळां, पाद पांच रचाय;
कुल कला छव्वीश थाय चरणे, एम रच कविराय!
त्रण पछी त्रणने चार चडता, ताल क्रमथी अणाय;
रचि पांच तुक ए रीतिथी पण, टेक पछिथी गणाय;
कल छव्वीशनो विषमपद ए, छंद कविवर गाय.
टेके चौद कल वधी थाय. २१२

३५. सत्तावीश मात्रानी विषमपद जाति.

४+३+४+३=१४ मात्रानो टेक, तेमां १,५,८,१२ मात्राए ताल.

(४+४+४+४=)१६+(४+४+३=)११=२७ एवां पांच चरण, तेमां अनुक्रमे १,५,९,१३ अने १,५,९ मात्राए ताल.

दशने चार कलनो टेक,—

सोळ शिवे[११] धरि विरति चरणे, सत्तावीश कल नेक;
एक शरे[५] नव तेरे तालो, एक शरे[५] नव ठेक;
सत्तावीश विषम पद छंदे, एम विवेक जणाय;

आवी रचना रचवामांहे, जो कवि धरिने टेक;
गाय प्रभुना गुण मन राखी, पद ते पामे एक.
दशने चार कलनो टेक. २१३

३६ अठ्ठावीश मात्रानी विषमपद जाति.

३+४+३+४=१४ मात्रानो टेक. तेमां १,४,८,११ मात्राए ताल.
३+४+३+४,३+४+३+४=२८ मात्रा. एवां पांच पद.
१४, १४ मात्राए यति. प्रति यतिमां १, ४, ८, ११ मात्राए ताल.

टेकमां कल चौद आणो,- टेक.
त्रण अने कल चार लावी, त्रण अने कल चार जाणो;
एक चारे आठ रुद्रे, एम तालो तो प्रमाणो;
टेकनी पछी पांच पूरां, पाद आणे प्रविण शाणो,
वीशनी पर आठ कलनी, विषम जाति तो वखाणो,
चतुर! ए तो पारखी ल्यो, जेम चरुमां एक दाणो.
टेकमां कल चौद आणो. २१४

३७ एकत्रीश मात्रानी विषमपद जाति.

४+४+४+३=१५ मात्रानो टेक, तेमां १,५,९,१३ मात्राए ताल.
(४+४+४+४)=१६, +(४+४+४+३=)१५=३१ मात्रा, एवां पांच चरण तेमां ताल टेक प्रमाणे.

(क्याक चे चोकलनी अष्ट कलने बदले ३+५ नी अष्टकल ताल तूटे नहि एम आवे तो पण नभे.)

पंदर कलनो टेकज थाय,—
४ + ४ + ८ + ३ ३ + ५ + ७
चार चतुर ने चार पछी त्रण, वा त्रण पर शर सात रखाय;
सोळ कलाना चतुर डगण रचॉ, ते पर पंदर एम धराय;
एक पछी चच्चारे चडता, कवितामांहे ताल रचाय;

तो सारी ए विषम कविता, एकत्रिश कलतणी गणाय;
एमां हरिना गुण गवातां, अन्त समयमां थाशे सा'य. †
पंदर कलनो टेकज थाय. २१५

† आनो राग एकत्रीशा सवैया (पृ.५० अ १२६) ने मळतो छे.

प्रचूर्ण मात्रामेळजाति

मात्रासमक.

आ सोळ सोळ मात्राना पदनी जाति छे, तेमां भिन्न भिन्न लक्षण आवेछे, तेमज, सम मात्रा तेनी पछीनी मात्रा साथे न भेळववा खास नियम छे.

१ अचलधृति. (छंदःशास्त्र प्रमाणे गीत्यार्या.)

१, २, ३, ४ पादमां ८+८ एवा १६ लघु=१६ मात्रा.
एवां चार पाद. १,५,९,१३ मात्राए ताल.

चरण चरण धर दश षड लघु कल, (१५)
वसु वसु पर यति द्विपदतणुं ज दल; (८ ८)
प्रथम पर §टकर पछी चढ श्रुति श्रुति, (४ ४) §ताल
सरस सरस रच द्विदल अचलधृति. २१६

अचलधृतिमां १६ लघुवाळां चार चरण आणवा लख्युं छे, एटले ते अक्षरमेळ वृत्त थइ जायछे, पण आ प्रकरणमां सोळ सोळ मात्रानी नीचे जणाव्या प्रमाणे जाति आवेछे, तेमां ए सोळ मात्रानी आवृत्ति बतावबाने जाणे अधिकारसूत्र होय, एम गणी प्रारंभमां दाखल करवामां आवी छे. एने गीत्यार्या पण केहेछे, आ उपरथी ३२ मात्रानां बे दल करिये तोपण थाय.

२. चर्पट. चारे पादमां सोळ सोळ मात्रा नियमसर आवे, पण नवमी मात्रा लघु आणवी, अने छेल्लो अक्षर गुरु आणवो.

१, ५, ९, १३ मात्राए ताल,

सोळ कला, लघु नवमी आणो,
चर्पटमां गुरु *चरमे जाणो, *अंते
एक उपर ने श्रुतिये चडता,
ताल रचो ठिक क्रमथी पडता. २१७

मात्रासमकना प्रत्येक चरणमा चचार मात्राना चार गण आवेछे, अने तेमानी सममात्रा तेनी पछीनी मात्रा साथे मळे नहि एवो खास नियम छे, माटे पेहेला स्थानमां चार मात्रानां पांच रूप पैकी जगणवाळुं रूप (बीजी त्रीजी मात्रा एकठी थायछे माटे) बाद करतां बाकीनां चार रूप (SS, ||S, S||, ||||) काम लागेछे, ते गण्यां; बीजा स्थानमां उपर लख्या चार गणो पैकी विप्रगण पण काम लागतो नथी, कारण के ते विश्लोकमां लाववानो खास नियम छे—ते लाववाथी विश्लोक थइ जाय—माटे बीजा स्थानमां त्रण रूप (SS,||S,S||) काममा आवेछे, त्रीजा स्थानमा-नवमी मात्रा लघु आणवानी छे माटे पेहेलो लघु आवे एवा स, ज अने विप्रगण पैकी मात्र एक सगणज काम लागेछे, कारण के ज के विप्रगणनुं वासिकामां विधान करेलुं छे, माटे त्रीजा स्थाननुं रूप एकज; चोथा स्थानने अते गुरु लाववानो छे, माटे तेवां अत्य गुरुनां रूप (SS,||S) बेज छे, तेथी चोथा स्थाननां बे रूप बने; एटले एकंदर ४×३×१×२=२४×२४ =५७६ पूर्वार्द्धनां, तेने उत्तरार्द्धनां तेटलांज रूपे गुणवाथी ५७६× ५७६=३,३१,७७६ सवा मळीने रूप थायछे.

३ विश्लोक. प्रत्येक पादमां १६ मात्रा, तेमां चार मात्रा पछी जगण अथवा द्विप्रगण आणवो; बीजी नियमसर आवे. पिंगलाचार्य पांचमी ने आठमी मात्रा लघु आणवा केहेछे. बाकी चारे चरणमां गमे तेम लाववुं. ते पण उपरना मत साथे मळतुंज छे. १, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

प्रति पद विषे कला कल लावे,
श्रुति कल पछी ज के द्विज आवे;
विश्लोक नियम एमज भाळो,
आदि पछीथी चडता श्रुति तालो. २१८

आ रूपसंख्या नीचे प्रमाणे थायछे:—

एमां पेहेले स्थाने जगण सिवायना चार गण आवेछे, माटे तेनां ४ रूप; बीजे स्थाने विप्र के जगण आणवा खास नियम छे, माटे तेनां बे रूप; त्रीजा स्थानमां कर्ण के भगणज आवेछे, केमके जगण, सगण के विप्र ए त्रण गण आववाथी नवासिका के चित्रानुं पाद बनेछे, माटे त्रीजा स्थानना रूप बेज; अने चोथा स्थानमां अंते गुरु लाववानो सामान्य नियम होतां तेनां पण रूप बेज, तेथी ४×२×२×२=३२×३२=१०२४×१०२४=१०,४८,५७६ रूप बधा मळीने थायछे.

४. नवासिका, वानवासिका. आठ मात्रा पछी जगण अथवा विप्रगण, बाकी गमे तेम मात्रा आवे. पिंगळाचार्य केहेछे के, नवमी ने बारमी मात्रा प्रत्येक पादमां लघु आणवी, (एनो अर्थ पण एज थायछे, केमके, नवमी ने बारमी मात्राए लघु, जगण अथवा विप्र

आठ कला पछी चरण चरणमां,

द्विजवर वा §जलधर धर गणमां; §जगण (ISI)

ए छे जाति–नवासिका तो,

ताल प्रथम ने श्रुति चडी गा तो. २१९

एनी रूप संख्या नीचे प्रमाणे थायछे:–

प्रथम स्थाननां उपर जणाव्या प्रमाणे जगण बाद करतां बाकीनां ४ रूप थायछे, तथा बीजा स्थानना पांच रूपमाथी जगण अने विप्रगण बाद थायछे, कारण के जगणथी छठ्ठी ने सातमी मात्रा एकठी थायछे, अने विप्रगण मूकवाथी विश्लोकमां अतिव्याप्ति थायछे, एटले ते वर्ज्य करतां बाकीनां त्रण रूप थायछे; त्रीजा स्थानमां मात्र जगण के विप्रगणज आवेछे, माटे तेनां बे रूप, अने चोथामां कर्ण के सगण आवे एटले ४×३×२×२=४८×४८= २३०४ रूप पूर्वार्द्धनां, अने तेटलांज उत्तरार्द्धनां, माटे २३०४× २३०४=५३,०८,४१६ रूप वधा मळीने थायछे.

५. चित्रा. पांचमी, आठमी ने नवमी मात्रा लघु, बाकी गमे तेम आवे.=१६ मात्रा. १,५,९,१३ मात्राए ताल.

सोळ सकल कल धर दर झडमां,

शर वसु नव कल कर लघु पदमां;

ताल प्रथम पर पछी श्रुति चडता,

चित्रा विषे सरस तो पडता. २२०

एनां रूप ४×२×३×२=४८×४८=२३०४ पूर्वार्द्धनां, तेटलांज उत्तरार्द्धनां एटले २३०४×२३०४=५३,०८,४१६ थायछे. प्रथम स्थानमां पूर्वोक्त चार रूप थाय, बीजा स्थानमां

पांचमी ने आठमी मात्रा लघु लाववानी छे तेथी मात्र जगण ने विप्रगणज आवी शके, माटे तेना बे रूप; त्रीजा स्थानमां नवमी मात्रा लघु आणवानी छे, माटे सगण, जगण ने विप्रगण एवां त्रण रूप थायछे; अने चोथा स्थानमां अंते गुरु आणवानो छे माटे पूर्वोक्त कर्ण अने सगण एम बे रूप थायछे.

६. (१) उपचित्रा. चारे पादमां नवमी ने दशमी मात्रा भेळी आवे, अर्थात् तेना गुरु आणवा, बाकी गमे तेम आवे.

१,५,९,१३ मात्राए ताल

सोळ कला वर्षो आण प्रति पदे,
नव दश भेगी आण झटपटे;
उपचित्रानी रीति ए छे,
बीजा बे वर्णो नोखा के'छे. २२१

ानुं लक्षण "छंद प्रभाकरमा" आठ मात्रा+गुरु+छ मात्रा (अत्य-गुरुवाळी) एम आपेछे, आमा वधा पादोमां अथवा एक के तेथी वधारे पादोमां जगण जोइये, एम केहेछे (पृ ४५)

पेहेला स्थानना चार (SS,IIS,SII,IIII) रूप,×बीजा स्थानना त्रण (SS,IIS,SII)×त्रीजा स्थानना बे (SS,SII) रूप,× चोथा स्थाननां बे(SS,IIS) =४८×४८=२३०४ पूर्वार्द्धना×तेटलाज उत्तरार्द्धनां=५३,०८,४१६ बधा मळीने रूप थाय

७. (२) उपचित्रा. चारे पादमां आठ मात्रा पछी भगण ने बे गुरु आवे. १, ५, ९, १३ मात्राए ताल.

सोळ कला प्रति पादज आवे,
SII
आठ कला पछी भो गण लावे;
SS
ते पर कर्ण करायज छेले,
उपचित्रा बांधो कर मेळे.

जनार्दन वृत्तरत्नाकरनी टीकामा पाठांतर जणावेछे के "अष्टभ्यो भाद्गावुपचित्रा. इति क्वचित् पाठः"

आठ मात्रा पछी भगण आवे अने ते पछी बे गुरु आवे तो "उपचित्रा" थाय (एवो क्यांक पाठ छे.)

एनी रूपसंख्या आ प्रमाणे थाय.–

४×३×१×१=१२×१२=१४४ एटलां रूप पूर्वार्द्धनां×१४४ उत्तरार्द्धनां=२०,७३६ बधां मळीने बीजी उपचित्रानां रूप थाय.

८. (३) उपचित्रा. चारे पादमा आठ मात्रा पछी भगण आवे, बाकी गमे तेम १,५,९,१३ मात्राए ताल.

सकळ मळी कल सोळज करजो,
बसु कल पछीथी भो गण धरजो,
ते पर चार कला छुट सजजो,
एमज उपचित्रा ठिक रचजो. २२३

जनार्दन वृत्तरत्नाकरनी टीकामां जणावेछे के "अष्टाभ्यो ग्लावुपचित्रा मतान्तरमेतत्."

आठ मात्रा पछी एक गुरु आवे अने ते पछी बे लघु आवे तो "उपचित्रा" थाय (एवुं पण केटलाकनुं मत छे.)

एनी रूपसंख्या आ प्रमाणे थायः–

४×३×१×२=२४×२४=५७६ एटलां रूप पूर्वार्द्धनां×५७६ उत्तरार्द्धनां=३,३१,७७६ बधां मळीने त्रीजी उपचित्रानां रूप थाय.

मदारमरदन्नघूमा पण एमज केहेछे

९. पादाकुलक. उपरनी पांच जातिमांथी गमे तेना पादथी मिश्रण होय ते. आना ७९ भेद थायछे. १,५,९,१३ मात्राए ताल

चर्पट नवासिका चिश्लोके	चिश्लोकनु पद
चित्रानां पद भळाय जो के;	नवासिकानु पद
उपचित्रा मिश्रण तो करजो,	चर्पटनु पद
पादाकुलक नामज धरजो. २२४	उपचित्रानुं (२) पद

भाषा छंदोमजरीमा पेहेलु ने त्रीजुपाद मात्रासमक प्रमाणे, अने बीजुं ने चोथु सोळ मात्रानु लावचा केहेछे

वैतालीय अथवा अपरवक्त्र प्रकरण.

प्रथम. ६+र (ऽ।ऽ)+ल+ग=१४

द्वितीय. ८+र (ऽ।ऽ)+ल+ग=१६

तृतीय. ६+र (ऽ।ऽ)+ल+ग=१४

चतुर्थ. ८+र (ऽ।ऽ)+ल+ग=१६

ऽ।ऽ ।ऽ
छ कल विषममां र वास छे,
८ ऽ।ऽ ।ऽ
वसु पर सममां तो र वास छे;
विषमे कल चौद तो गमे,
वैतालीयमां सोळ तो समे. १. २२५

सम कल न पराश्रिता करो,
सममां तो लघु सर्व ना धरो;
एज नियम पाळजो वधे,
वैतालीय सौ एम तो सधे. २. २२६

वैतालीयनी रूपसंख्या नीचे प्रमाणे थायछे:—

वैतालीयना विषम चरणमा प्रथम छ मात्रा लाववानी छे, तेनां रूप १३ थायछे, ते पैकी ३जुं, ६ठुं, ७मुं, ८मु अने ११मुं रूप विरोधी आवेछे, केमके तेमां सम मात्रा-एटले २,४,६ ठी मात्रा-पोतानी पछीनी मात्रासाथे मळी जायछे, माटे ते पांच रूप वर्ज्य करतां बाकीना (१) SSS, (२) ।।SS, (४) S।।S, (५) ।।।।S, (९) SS।।, (१०) ।।S।।, (१२) S।।।।, (१३) ।।।।।।, ए प्रमाणे आठ रूप रहेछे.

एज प्रमाणे सम चरणमां प्रथम आठ मात्रा लाववानी छे, तेनां रूप ३४ थायछे, तेमां बाधकारक २१ रूप वर्ज्य करतां, बाकी १३ रूप रहेछे, ते १३ने विषम चरणनां ८ रूप साथे गुणतां १३×८=१०४ रूप पूर्वार्द्धना थायछे; तटलांज उत्तरार्द्धनां थतां १०४×१०४=१०,८१६ रूप बधां मळीने वैतालीयनां थायछे.

वळी एज प्रमाणे गणत्री करतां औपच्छंदसिक अने आपा-

२. औपच्छंदसिक.

पे० ६+र (SIS)+य (ISS)=१६.
बी० ८+र (SIS)+य (ISS)=१८.
त्री० ६+र (SIS)+य (ISS)=१६.
चो० ८+र (SIS)+य (ISS)=१८.
} बाकीनो नियम वैतालीय प्रमाणे.

विषमे षड ने दिशा समे तो,
र य धर ते पर सौ पदे क्रमे तो;
कल सोळ गणायछे अयुग्मे,
औपच्छन्दसिके पुराण युग्मे. २२७

३ आपातलिका, आपाताली[1] १,५,९,१३ मात्राए ताल.

पे० ६+भ (SII)+S+S=१४
बी० ८+भ (SII)+S+S=१६
त्री० ६+भ (SII)+S+S=१४
चो० ८+भ (SII)+S+S=१६
} बाकीनो नियम वैतालीय प्रमाणे.

विषम षड आठ समे छे,
तेपर भ ग बे ठीक गमेछे;
चौद विषम थाय कला ते,
सोळ समे आपातलिका ते. २२८

१ मदारमरदचम्पू प्रमाणे

४ दक्षिणांतिका.

पे० ६+र (SIS)+ल+ग=१४
बी० ८+र (SIS)+ल+ग=१६
त्री० ६+र (SIS)+ल+ग=१४
चो० ८+र (SIS)+ल+ग=१६
} वैतालीय प्रमाणे

आमां बीजी मात्रा त्रीजी भेगी अवश्य लाववी एटले पेहेलो अक्षर लघु ने बीजो अक्षर गुरु आववाथी तेम थशे ४,६,८मी मात्रा पोतानी पछीनी मात्रा साथे भेगी मेळववी नहि.

समे दिशा सूर्य वास छे, रगण.
कला छ विषमे तो धराय छे,
पछी रगण वास अंतिके,
रचाय रचना दक्षिणांतिके. २२९

"भाषाछंदोमजरीमा" पेहेला त्रीजामा १४ अने बीजा चोथामा १६ मात्रा लाववा केहेछे, पण तेनो बीजो आधार नथी

दक्षिणांतिकानी रूपसंख्या आ प्रमाणे थायछे

एना चारे पादमां बीजी अने त्रीजी मात्रा भळी आवे एवां रूप लाववानां छे, माटे त्रीजुं (।ऽ।ऽ), अने अगियारमुं (।ऽ।।।) एवां बेज रूप मात्र काममा आवेछे, तेथी विषम चरणना बेज रूप थाय, अने सम चरणमां त्रीजु (।ऽ।ऽऽ). ११ मु (।ऽ।।ऽ), २४ मु (।ऽ।ऽ।।), अने ३२ मुं (।ऽ।।।।), ए रीते चार रूप काममां लागछे, तेथी २×४=८ रूप पूर्वार्द्धना, अने तेटलाज रूप उत्तरार्द्धनां थतां ८×८=६४ रूप बधा मळीने थायछे.

५ उदीच्यवृत्ति. १, ३. मां ६+र+ल+ग =१४.
२, ४. मां ८+र+ल+ग =१६.

वैतालीय प्रमाणे पादनी रचना करवी. पण पेहेला ने त्रीजा पादमां बीजी त्रीजी मात्रा दक्षिणान्तिका प्रमाणे एकठी आवे, ने बीजा चोथा पादमां ए नियम लागु नथी, एटलो दक्षिणान्तिका करतां आमां फेर छे.

अयुग्म पादे सदा भले,
बीजी त्रीजी नो कला मळे,

उदिच्यवृत्ति विषे दिशे,
जुओ दक्षिणांतिका विषे. २३०

उदीच्यवृत्तिनी रूप संख्या नीचे प्रमाणे थायछे:-

एनां विषम चरणमां बीजी अने त्रीजी मात्रा एकठी आणवानी होतां दक्षिणांतिका प्रमाणे त्रीजुं (।ऽ।ऽ), अने अगियारमुं (।ऽ।।।) ए बे रूपज काममां आवेछे, अने सम चरणोमां वैतालीय प्रमाणे १३ रूप काममां आवेछे; एटले २×१३=२६ रूप पूर्वार्द्धनां थाय, अने तेटलांज उत्तरार्द्धनां थतां २६×२६=६७६ रूप एकंदर थायछे.

६ प्राच्यवृत्ति.

वैतालीय प्रमाणे सर्व रचना करवी, पण बीजाने चोथा पादनी चोथी मात्रा छूटी न राखतां पांचमी साथे भळेली आणवी-एटले चोथीने पांचमी मात्रानो एकज गुरु अक्षर आणवो.

वैतालीय नियमो सदा
प्राच्यवृत्तिमां आणजो तदा
श्रुति[४] शर[५] भेगी समे करो
गुरु तमे भले ठाम ते धरो. २३१

प्राच्यवृत्तिनी रूपसंख्या काहाडवा माटे एना विषम चरणमां वैतालीयमां बतावेलां ८ रूप काममां लागेछे, अने सम चरणमां चोथी अने पांचमी मात्रा एकठी आणवानी होतां (।ऽऽ।ऽ) ६ ठुं, (।।।ऽ।ऽ) ८ मुं, अने (ऽ।ऽ।।।) २८ मुं, (।।।ऽ।।।) २९ मुं, एवां चार रूप काममां लागेछे, माटे ८×४ =३२ रूप पूर्वार्द्धनां थाय, अने तेटलांज उत्तरार्द्धनां थतां ३२×३२=१०२४ रूप बधां मळीने प्राच्यवृत्तिनां थायछे.

७ प्रवृत्तक. १, ३ पादमां उदीच्यवृत्ति प्रमाणे. (२–३ भेगी विषमे)
२, ४ पादमां प्राच्यवृत्ति प्रमाणे. (४–५ भेगी समे)

समे चार पांच तो मळे,
बीजो त्रीजो ते विषमे भळे;
बधा अवर वाकीना खरे,
नियम तेज प्रवृत्तके करे. २३२

प्रवृत्तकनी संख्या विषे:—

एनां विषम चरणनां रूप उदीच्यवृत्ति प्रमाणे बे थायछे, अने समनां रूप प्राच्यवृत्ति प्रमाणे चार थायछे, माटे २×४=८ रूप पूर्वार्द्धनां थयां; अने तेटलांज उत्तरार्द्धनां थाय, माटे ८×८=६४ रूप बधां मळीने थायछे.

८ अपरांतिका. प्रवृत्तकना सम पाद प्रमाणे चारे पाद आणवां.
८ (तेमां ४,५. भेगी) +र+ल+ग=१६ मात्रा, एवां चारे पाद.

आठ उपरे सूर्य वास छे,
कल बधी मळी सोळ पाद छे,
चार पांच तो एकठी दिसे,
नियम एज अपरांतिका विषे. २३३

प्रवृत्तकनां समचरण प्रमाणे एना चारे चरण थायछे, तेथी ४×४=१६ रूप पूर्वार्द्धना, अने तेटलाज उत्तरार्द्धना थता १६×१६=२५६ रूप बधा मळीने थायछे.

९ चारुहासिनी. प्रवृत्तकना विषम पाद प्रमाणे चारे पाद आणवां.
एटले, ६ (तेमा २,३ भेगी) +र+ल+ग=१४.

छ उपरे सूर्य वास तो,
भळे बीजी त्रीजी साथ तो;

वळी नियम चारुवाहिनी,
मनोहरति चारुहासिनी. २३४

प्रवृत्तकनां विषम चरण प्रमाणे चारुहासिनीनां चार चरण थायछे, माटे २×२=४ पूर्वार्द्धना, अने तेटलाज उत्तरार्द्धनां थता ४×४=१६ रूप वधां मळीने एना थायछे.

गलितक प्रकरण.

आ प्रकरण मुख्यत्वे करीने छंदःशास्त्र, वृत्तमौक्तिक, अने छंदोलतामांथी लीधुं छे. घणा ग्रंथोमां आ विषय प्रसिद्ध नथी अने तेनां लक्षण पण अपूर्ण जेवां मळी आव्यां छे. अमे बनतो शोध करीने लभ्य लक्षणो आपी चलाव्युं छे.

१. संगलितक.

४+४+५=१३ मात्रानां चार चरण. १,५,९ मात्राए ताल.

४ ४
डगण डगण पछी पांच छे,
संगलितक ते नाम छे;
५
एक उपर शर नव परे,
एम त्रणे तालो धरे. २३५

२. सुंदरगलितक, सुगलितक. (आ नाम छंदोलतामां छे.)

५+५+ल+ग=१३. १,५,९ मात्राए ताल.

५ ५
शर शर कल पदमां करो,
लघु गुरु पछी ते पर धरो;
१ ५
शशि शर नव पर ताल छे,
सुंदरगलितक चाल छे. २३६

३ भूषणगलितक. ५+५+३(ऽ।)+३=१६.

३, ७, ११, १५ मात्राए ताल.

कल पांच परे फरी पांच धरे,
सुर[ऽ।] ते पर ने वळी अग्नि[३] करे;
भण भूषण नाम गलितक रे,
धर ताल त्रणे मुनि[७] शिव[११] परे. २३७

आ गलितक छंदःशास्त्र तथा वृत्तमौक्तिकमां छे.

४ मुखगलितक. ६+३+३+३+३+ग=२० मात्रा.

३,७,११,१५,१९, मात्राए ताल.

कल छ उपर धार कला त्रण त्रण त्रण तो,
वळी त्रण पर हार[ऽ] विबुधवर! धर फरतो;
त्रण पर धर ताल पछी श्रुति[४] श्रुति[४] चडतो,
मुखगलितक एम रचाय सरस पडतो. २३८

५ गलितक. ५+५+४+४+ल+ग=२१.

१,५,९,१३,१७ मात्राए ताल.

पांच उपर वळी पांच डगण[४] बे वार छे,
तेपर लघुज रखाय उपर वळी हार[ऽ] छे;
शशि[१]पर प्रथमज ताल चडे ज्यां चार छे,
गलितक रचवा काज घणोज विचार छे. २३९

छंदःशास्त्र तथा वृत्तमौक्तिकमां उपरनुं माप छे. छंदोलतामां

ठ(५)+ड(४)=९ मात्रा आणवानुं कह्युं छे, तेने बीजो आधार न होतां ते ग्राह्य नथी.

६ विलंबितगलितक. ६+ज+४+ज+४(तेमां अंते गुरु)=२२

२,८,१३,१९ मात्राए ताल.

धरा छपर पयोधर श्रुति कलनो वधारो,
पछीथी जगण मूको वे कल गुरुन सारो;
द्वितीय वसु जरवे पछी ताल ओगणिश तो,
विलंबित गलितक सरस बने सुगम तो. २४०

उपर प्रमाणे माप वृत्तमौक्तिकमां छे, पण छंदःशास्त्रमां नीचे प्रमाणे छे. ६+४+४+४+४(तेमां अंते गुरु)=२२. छंदोलतामां आ गलितकनुं माप ८+४+ज+४+ज+ग=२६ आप्युं छे, पण तेमा समजफेरथी गुरु जूदो राखवा कह्युं होय एम जणायछे, केमके गुरु अंतवाळो डगण आणवो एम कहेलुं छे.

७ लंबितगलितक.§ ४+४+४+४+४+ग=२२ मात्रा. (तेमा जगण नहि.) १,५,९,१३,१७,२१ मात्राए ताल.

चोकलिया गण पांच उपर गुरु तो धरजो,
लंबितगलितक मांहे जगण न कांहि करजो;
एक उपर छे ताल पछी चारे चडशे,
आरतों रागे गाता ठीक मझा पडशे. २४१

§ छंद शास्त्र तथा वृत्तमौक्तिकमां लंबिता एटलुज नाम छे, अने गलितक प्रकरणमां होता लंबितगलितक नाम राखवानु ठीक छे.

वृत्तमौक्तिकमा "विषम स्थानमा जगण न लाववो" एटलु ज लक्षण बांध्युं छे, पण तेना उदाहरणमा तमाम स्थानमा जगण आवतो नथी

८ विगलितक. ६+६+४+४+६=२२

१,४,८,११,१६,१८,२२ मात्राए ताल.

सकल कल त्रेवीश कर पदमांह ठिक जाणी,
ठगण बे पर डगण बे वळी बाण कल आणी;
प्रथम पछीं त्रण चार चढता ताल शुध आवे,
विगलितक नामनी सुशोभित जाति सुहावे. २४२

छंदशास्त्र तथा वृत्तमौक्तिकमा उपरनुं माप छे, छंदोलतामा ड (५)+ ठ (५)=१०-मात्रा आणवा कह्यु छे, पण तेने बीजो आधार न होना ते ग्राह्य नथी.

९. ललितगलितक. ४+६+४+६+४+ग=२४ मात्रा.

३,७,११,१५,१९,२३ मात्राए ताल

कल चार उपर शर धरी पछी कल चार करो.
वळी पांच उपर कल चार करी गुरु एक धरो,
त्रण कलपर झट धरीं ताल पछी चच्चार चडो,
ललितागलितक पद एम कला चोवीश घडो. २४३

आ गलितकनुं केटलाक ग्रंथोमां ललिता एवुं नाम आप्युंछे, पण ललितगलितक नाम राखवुं उचित छे.

१० विषमितगलितक जाति.

१,२. पदमां ६+४+६+४+(कमल) गलगल =२४

३,४. पदमां ६+६+६+४+(सूर्य) गलग =२४

ठ ड उपर ठ ड कर ते उपर कमल चडाव एक,
प्रथम ने द्वितिय पद चोविश कुल कलनो विवेक;
त्रीजे वळी चोथे त्रण ठपर ड सूर्य चोविशे,
विषमितज गलितक रचना एमज ठिक तो दिशे. २४४

११ समगलितक. ४+५+५+४+४+लग=२५ मात्रा.
१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्राए ताल.

चार उपर धरि शर शर पर बे चोकल जाणजो,
चरमे ल ग धरि प्रतिपद पाचिस कल कवि! आणजो;
ए समगलितक चरण चतुर कवि रचवा काज तो,
रचना करी त्यम रचीने रीझवे राजसमाज तो. २४५

१२ समगलितक (बीजुं). १, ३ पदे ४+३=७ मात्रा;
२, ४ पदे ६+३+३+३+३+५+ग=२५ मात्रा.

विषम ड ढ पद,
समे छ पर चार वार ढ धरि ठ उपर गुरु करवो;
पचिस कल वद,
समगलितक एक अपर सरस जातिनो उचरवो. २४६

१३ समगलितक (त्रीजुं). १,३. ६+३+३+३+३+५+ग=२५
(छं.शा.वृ.मौ.प्र.) २,४. ४+३=७
१,५,९,१३,१७,२१ मात्राए ताल.

विषम पद छ कल पर त्रण त्रण त्रण त्रण ठ धराय छे,

गुरु ते उपर;

पच्चिश कुल कल विपरित समगलितके थायछे,

समे ड ढ धर. २४७

बीजा समगलितकथी आ उलटुं छे.

१४ विक्षिप्तिकगलितक. ५+४+५+४+५+ग=२५ मात्रा.

१,५,९,१४,१८,२२ मात्राए ताल.

ढड पर ढड धर उपर शर, कल गुरु चरमे* करवो,

विक्षिप्तिकगलितक चरण, कविवर करशे गरवो;

पच्चिश कुल कल प्रतिपदे, गणोने विगते धरवो,

तेर प्रथम कल धरि दुहे, रवि कल पछी उचरवो. २४८

*अंते. आ गलितकमां प्रथम तेर कलनी दुहानी रचना अने ताल पण ते प्रमाणे, बाकीनी बार कलना प्रारंभने प्रथम अक्षरे ताल, पछी चच्चार चडते आवेछे. वृत्तमौक्तिकमां विक्षिप्तिका नाम आप्युं छे.

१५ मुग्धगलितक.

६ डगण (४+ज+४+ज+४+ज)+ग=२६ मात्रा.

१,५,९,१३,१७,२१,२५ मात्राए ताल.

ड ज चार वार आणी गुरु धरो चरममां फरी,

ए रीतिथी कला कुल करो वीशपर षट आदरी;

मुग्धज गलितक चरण रचीज ज्यम रागमां गमे,

ईश्वर कथा कथो आ गलितक विषे नमी तमे. २४९

१६. उद्गालितक. ६+ज+४+ज+४+ज+४=३० मात्रा.

त्रीजी मात्राए, पछी चच्चारे चडता ताल.

छ कल उपर पयोधर धरी ड ते पर करी फरी पयोधर,

ते उपर कल चार ने ज ड वळी धरो ते परे कवीश्वर!

एम छ कल परे ज ड त्रण करतां कल त्रीश कुल थाय सरखी,

उद्गालितक करो गणतरी करी मनविषे सदाय हरखी. २५०

छंदोलतामां ड+ड+ड+ड+ग=१८ मात्रा करवा केहेछे, पण छंदःशास्त्र अने वृत्तमौक्तिकमा अमे उपर बताव्युं ते प्रमाणे माप छे. मुग्धमालागलितक करतां आमा बे चोकलिया ओछा छे.

१७ मुग्धमालागलितक. ६+ज+४+ज+४+ज+४+ज+४=३८

१,५,७,११,१५,१९,२३,२७,३१,३५ मात्राए ताल.

त्रीश आठे, ज मुग्धमाला विषे कला कुल समायछे ने रचाय सारी,

विगत करो, कला छ प्रथमे धरी तमे चार वार ज ड गण पदे उचारी;

मन दृढथी, सदाय हरिगुण गवाय नित्ये भमाय नहि तो जणाय रुडुं,

माटे तुं, खमाय तेवी खमी पीडा पण प्रभु भजन कर तजीज कूडुं. २५१

बरोबर रागथी गवाय माटे पेहेली छ मात्रा पूरी थता बे मात्रा बोलाय एटलो राग लवाववो, अर्थात् त्या विराम लेवो.

રણપિંગળ.

વર્ણમેળછંદ.

સમવૃત્ત.

૧ ઉક્તાછંદ. ૨ ભેદ છે. એક વર્ણ. કેટલામોભેદ.—

૧ શ્રી. ૧ ગુરુ. ૧

ગી, શ્રી.

ગણપ્રસ્તારપ્રકાશમાં આનું નામ **શૂલધર** આપીને તેને **માત્રા-મેળમાં** ગણેલો છે, અને **માત્રામેળની** રીતિ પ્રમાણે તેનુ બીજુ રૂપ બે લઘુનું કરી બતાવ્યુ છે, પણ તેમ કરવું યોગ્ય નથી.

૨ સ્નુ. ૧ લઘુ. ૨

લુ, સ્નુ.

ગણપ્રસ્તારપ્રકાશમા આનુ નામ **અચળ** આપીને **માત્રામેળમાં** ગણ્યો છે

૨ અત્યુક્તાછંદ. ૪ ભેદ છે. બે વર્ણ.

ગણપ્રસ્તારપ્રકાશમા ચારમાત્રાના રૂપ બે ગુરુથી શિરુકરીને તેનુ સામાન્ય નામ **બ્રહ્મા** આપ્યુ છે

૩ કામા, સ્ત્રી, કામ. ગ, ગ. ૧

ગા ગા, કામા.

૪ મહી. લ. ગ. ૨

લ ગી, મહી.

ગણપ્રસ્તારપ્રકાશમા આવા રૂપનુ નામ **વાસવ** આપ્યુ છે, અને તેની માત્રામેળમાં ગણના કરી છે

છંદોલતામા આનુ નામ "રતિ" રાખ્યુ છે, કારણ કે તે જણાવેછે કે, **મહિદ્**

माप ग,ल राखवु सूत्रथी विरुद्ध छे. आ विचार अनुचित छे, केमके घणुंकरीने वृत्तना नाम एवा पाडेला होयछे के, ते पोताना मापनी कवितारचनामा आवी शके रतिमा "ति"-हृस्व छे,तो ए शब्दना बे लघु थायछे,तेज प्रमाणे महिना पण बे लघु थायछे, एटले बे शब्द सरखा मापना होतां, जो रति नाम ग्रहण करिये तो महि नाम ग्रहण करवाने हरकत नथी. महि शब्दमां "ही" दीर्घ पण थायछे, तेथी ए शब्दमां प्रथम लघु अने बीजो गुरु वर्ण आवतां मही नाम वधारे बधबेसतु छे. रतिमां "ति" आगळ विसर्ग होतां सस्कृतमां ते दीर्घ गणी शकाय.

५ सारु, चारु, शानु, सार, सारस, ग, ल. ३

गा लु, चारु.

गणप्रस्तारप्रकाशमां आवुं नाम ताल आपीने तेने मात्रामेळमां गणेलो छे, अने तेमां त्रण मात्रानु सामान्य नाम वज्र राख्यु छे.

६ मधु ल, ल. ४

ल लु, मधु.

३ मध्या, मध्यमाछंद. ८भेद छे, त्रण वर्ण.

७ नारी, ताणी, ताली, माली, सीसा.[१] १ मगण. १

मा नारी.

१ मागधी पिंगलछंदोग्रथमा सीसा नाम आप्यु छे.

८ शशी, वलाका, वृत्ति.[१] १ यगण. २

शशी यी.

१ नाट्यशास्त्रमां आ नाम छे.

९ मृगी,[१] प्रिया,[२] विद्युत.[३] १ रगण. ३

री मृगी.

१ छंदोलता पण आ नाम दर्शावेछे

२ छंदोलतामां मध्याना भेदमा मृगी अने प्रिया एम भेद जुदा पाड्या छे तेम मृगेन्द्र जे छठ्ठो भेद छे, ते लख्यो नथी. एम आठ भेद

गणावी केहेछे के, सूत्रकार आवी रीतें दर्शावेछे.

३ नाट्यशास्त्र प्रमाणे

१० रमण, रमणी, रमुना, रजनी,[1] १ सगण. ४

सगणी, रमणी.

१ नाट्यशास्त्र प्रमाणे.

११ पंचाल, पांचालि, कामावतार. १ तगण. ५

ता घाल, पंचाल.

१२ मृगेन्दु, नरेन्दु, मृगेन्द्र, नरेन्द्र. १ जगण. ६

ज थाय, कवाय;

मृगेन्द्र, नरेन्द्र.

१३ मंदरि, मंदर, मंदरा, १ भगण. ७

भू धर, मंदर.

१४ हरिणी, कमलि, कमल. १ नगण. ८

नगणों, हरिणों.

गणप्रस्तारप्रकाशमा मात्रामेळमा आनु नाम तांडवं आप्युं छे

४ प्रतिष्ठाछंद. १६ भेद. चार वर्ण.

१५ कन्या, कीर्णा, तीर्णा.[1] तिन्ना.[2] म, ग. १

मा गा कन्या.

१ एक रगणनुं नाम नागराज पिंगळमा तीर्णा लख्युं छे, ए बराबर नथी, केमके तेनु नाम चार अक्षरमा छे

२ छंदःप्रभाकर प्रमाणे.

१६ क्रीडा[1] य, ग. २

य गा क्रीडा.

१ भीखारीदासजिये आना बमणा के चोगणाने शुद्धगा वृत्त मान्युं छे. (जुओ छंदःप्रभाकर टीका पृष्ठ १३०)

१७ नंद. र, ग. ३

नंद रा गा.

१८ दोला, रामा, राम, विमला, भ्रमरी[1]. स, ग. ४

स ग दोला.

१ नाट्यशास्त्र प्रमाणे.

१९ धरा[1], विजया[2]. त, ग. ५

ता गा धरा.

१ छंदोलतामां आ मापना छंदनु नाम सती छे.
२ नाट्यशास्त्र प्रमाणे

२० कला, नगानिका, कुमारिका, नगा[1], नगणिका, नगी, नगान्निका[2], जया, निर्गला, नगालिका, लग्गणिय[3]. ज, ग. ६

ज गा कला.

१ छंदोलता प्रमाणे २ नाट्यशास्त्र प्रमाणे.
३ लग्गणिय (लग्ना) नाम मागधी पिंगळछंदोग्रंथमां छे.

२१ वला, समुहो. भ, ग. ७

भा ग वला.

२२ सती, तरणीजा. न, ग. ८

न गि सती.

२३ मुग्ध, गोपाल. म, ल. ९

मा ला मुग्ध.

२४ वारि, कर्त्, मुद्रा. य, ल. १०

य ला वारि.

२५ धारि, धारा, धारी, धारिया[1]. र, ल. ११

रा ल धारि.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रंथ प्रमाणे.

२६ कारु, वीरु, वीर.　　　　स, ल. १२

स ल कारु.

२७ तावुरि, कृष्ण.　　　　त, ल. १३

त्ले तावुरि.

२८ रज्जु, बुद्धि.　　　　ज, ल. १४

ज ले रज्जु.

२९ निशि, अनृजु.　　　　भ, ल. १५

भी ल निशि.

३० पटु, हरि.　　　　न, ल. १६

न ल पटु.

५ सुप्रतिष्ठा छंद. ३२ भेद. पांच वर्ण.

३१ वाला, संमोहासार,[१] संमोहा, विद्युतभ्रान्ता. }　　म, ग, ग.　१

मा गा गे वाला.

१ नाट्यशास्त्र प्रमाणे

३२ नाली.　　　　य, ग, ग.　२

य गा गे नाली.

३३ सूरिणी.　　　　र, ग, ग.　३

सूरिणी र गे.

३४ प्रगुण, चतुर्वंशा, धनपंक्ति.[१]　　स, ग, ग.　४

प्रगुणे स्गा गा.

१ नाट्यशास्त्र प्रमाणे

३५ हारीन, लोल, हारी, वहारी, हारा, हारीतबंधा, फारीआ.[१] }　त, ग, ग.　५

हारीत त ग्गे. लोलें त गा गा.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रंथमां आ नाम आप्युं छे.

३६ कंठी, विलास, यशोदा.[1] ज, ग, ग. ६

ज गं ग कंठी.

१ आ नाम छंद.प्रभाकरवाळाए नवु पाडेलु छे, एम ते पोते लखेछे, पण आगळ तेना उपलां वे नाम छे, ते तेमना जाणवामां नहि होय, तेथ "यशोदा" नाम तेमणे उपजावी काढ्यु हशे.

३७ हंस, पंक्ति, अक्षरपंक्ति, फारी, भूतलमान्या.[1] भ, ग, ग. ७

हंस भ गा गे.

१ नाट्यशास्त्र प्रमाणे.

३८ कललि, सुतसंगक.[1] न, ग, ग. ८

कललि न ग्गे.

१ गणप्रस्तारप्रकाशमां आने सात मात्रानु त्रीजुं रूप बताव्युं छे

३९ हासिका. म, ल, ग. ९

म्ला गे हासिका.

४० नरी. य, ल, ग. १०

य ला गे नरी.

४१ वैनस, खंजा.[1] र, ल, ग. ११

रै ल गा धरो, वैनसे करो. (वैनसेलगा).

१ नागराज पिंगळमा खजा नाम लख्यु छे

४२ प्रिया, रमा.[1] स, ल, ग. १२

स ल ग प्रिया

१ छंदोलतामां रमा केहेछे

४३ कणिका. त, ल, ग. १३

त्ला गे कणिका.

४४ शिला. ज, ल, ग. १४

ज ला ग शिला

४५ मंडल. भ, ल, ग १५

मंडल भ्ल गे.

४६ सुलू, करता, कलमुखी.[1] न, ल, ग. १६

न ल ग सुलू.

1 नाट्यशास्त्र प्रमाणे.

४७ कुम्भारि. म, ग, ल. १७

मा ग्ले कुम्भारि

४८ भ्रू. य. ग, ल. १८

य गु ले भ्रू ज.

४९ -ही. र, ग, ल. १९

-ही र गी लेयी.

५० पालि. स, ग, ल. २०

स ग ले पालि.

५१ किंजल्कि. त, ग, ल. २१

किजल्कि ता ग्ल.

५२ वार्द्धि. ज, ग, ल. २२

ज गा ल वार्द्धि.

५३ विद्. भ, ग, ल. २३

विद् भ गा ला यॉ.

५४ पांशु, वाकि. न, ग, ल. २४

न ग ल पांशु.

५५ मालिन. म, ल, ल. २५

म्ला ले मालिन.

५६ वरीय. य, ल, ल. २६

वरीये यल ल.

५७ कल्कि. र, ल, ल. २७

कल्कि री ल ल.

५८ जतु, नायक. स, ल, ल. २८

स लि ले जतु.

५९ छिद्र. त, ल, ल. २९

छिद्रे त ल ल.

६० क्षुप, हर. ज, ल, ल. ३०

ज ला ल क्षुप.

६१ क्षुत, त्रिष्णु, पंचा, पंच.§ भ, ल, ल. ३१

भू ल ल क्षुत.

§ मागधी पिंगळछंदोग्रंथ

६२ हलि, जनमि, झमक, जमकाणा, जमक, यमक, आत्मक. } न, ल, ल. ३२

न ल ल हलि.

६ गायत्री छंद. ६४ भेद छे. ६ वर्ण.

६३ विद्युल्लेखा, शेषा, शेषराज, शेष.† म, म. १

मा मे विद्युल्लेखा.

† शेष नाम प्राकृत पिंगळसूत्रमा छे.

६४ पंथा. य, म. २

य मे पंथा थाशे.

६५ करेणू. र, म. ३

छे करेणू रा मे.

६६ अभिख्या. स, म. ४

अभिख्या सा मा थी.

सगणे माभिख्या.

(मगण म अभिख्या)

६७ बभ्रू. त, म. ५

ता मा थकी बभ्रू.

६८ कञ्जा. ज, म. ६

ज मा थकी कञ्जा.

६९ सिन्धुरया. भ, म. ७

सिन्धुरया भा मे.

७० गुणवती, शशिभृता. न, म. ८

गुणवती ना मे.

७१ तंत्री. म, य. ९

मा ये थाय तंत्री.

७२ सोमराजी, शंखधारी, अर्द्धभुजंगी, हरिशंखाणा, शंखनारी, सोमराज. } य, य. १०

य ये सोमराजी.

गणप्रस्तारप्रकाशमा १० मात्रानु सामान्य नाम सोमराजी राख्युं छे. तेना उदाहरणमा आज प्रमाणे बे यगण आवे छे

मागधी पिंगळछंदोग्रथमा " हरशखाण " नाम आप्यु छे

७३ पिकाली. र, य. ११

रा य थी पिकाली.

७४ कमनी. स, य. १२

कमनी स यी थी.

७५ तनुमध्या, चौरस (छंद प्रभाकर.) त, य. १३

ता ये तनुमध्या.

७६ अरजस्का. ज, य. १४

ज ये अरजस्का.

७७ इति, कामलता. भ, य. १५

छे इति भ ये थी.

७८ शशिवदना,[1] शशिमुखी, चोरसा,[2] चउवंशा,[3] चउरंसा,[4] चंडरसा, ससिा, चतुरवर्णा, चतुरंशा,[5] मदरशीर्षा,[6] चतुरंस.[7] न, य. १६

शशिवदना न्ये, शशिमुखी ना ये.

१ छंदःप्रभाकरमां आनुं पादाकुलक एवुं नाम पण जणावे छे, पृष्ट. १३३. २ भगवत पिंगळमां. ३ मनहर पिंगळ अने छंदःशृंगारमां. ४ नागराज पिंगळमां. ५ पृथीराजरासा तथ प्राकृतपिंगळसूत्रमां ए नाम छे. ६ नाट्यशास्त्र प्रमाणे ७ छंदोवृत्तमुक्तावलिमांथी. आ रूप गणप्रस्तारप्रकाशम मात्रामेळमां गण्युं छे.

७९ अवोढा. म, र. १

थाया ऽवोढा म रे.

(थाय अवोढा म रे)

८० कच्छपी. य, र. १

य रे थी कच्छपी.

८१ विमोहा, विजोहा, विज्जोहा[1], अर्द्ध-कामामोहिनी, सग्विणी, रसावली, चंद्रमाला, विज्जोदा[2], वियोधा, जोहा. } र, र. १९

छे विमोहा र रे.

१ छंदोक्तमुक्तावलि तथा गणप्रस्तारप्रकाश प्रमाणे
२ छंद-प्रभाकर पृष्ठ १३४

८२ मृदुकीला. स, र. २०

मृदुकीला स रे.

८३ स्थाली, खंडा. त, र. २१

स्थाली त रा थकी.

८४ वलीमुखी.[†] वाणी. ज, र. २२

ज रे वलीमुखी.

[†] छंदोलता आनु नाम नगानिका केहेछे, पण अक्षर चारमा ज ग ना मापथी नगानिका छे, माटे ते मानवा जोग नथी

८५ शुनक. भ, र. २३

शुनक भू र थी.

नाट्यशास्त्रमा आने शालिनी नाम आपेछे, पण शालिनी अक्षर ११मां प्रसिद्ध छे, माटे ते वात मान्य नथी

८६ निरसिका, गिरा[1] न, र. २४

निरसिका न रे. न र गिराविषे.

१ नाट्यशास्त्र प्रमाणे.

८७ निस्का, सोमकुल, वीर्या[2]. म, स. २५

निस्का मा स थकी.

२ नाट्यशास्त्र प्रमाणे

८८ मशगा. य, स. २६

य सा थी मशगा.

८९ कर्मदा, तिल. र, स. २७

कर्मदा र स थी.

९० तिलका, अर्द्धतोटक, झील,[1] तिल्लना, दंडलय, तिल्ल, ध्वज, डिल्ल,[2] खंडलया,[3] डिल्ला,[4] वनिता,[5] तिल्ला.[6] स, स. २८

तिलका स स थी.

१ छंद शृंगार. २–३ नागराज पिंगल.
४ छंदःसार. ५ छंदोलता.
६ छंदः प्रभाकर पृष्ठ. १३५
खंडलया नाम मागधी पिंगलछंदोग्रथमा पण छे

९१ वसुमती, कमला.§ त, स. २

ता से वसुमती.

§ गणप्रस्तारप्रकाश.

९२ कुही. अपरभा†. ज, स. २

ज से कर कुही.

† गणप्रस्तारप्रकाश.

९३ सौरभि. भ, स. २

सौरभि भ स थी.

९४ सरि. न, स. २

सरि न स थकी.

९५ साहूति. म, त. २

मा ती थी साहूति.

९६ बिन्दु. य, त. ३१

यतीथी छे बिन्दु

९७ मन्त्रिका. र, त. ३५

मंत्रिका रा ता थीं.

९८ ढुण्ढि. स, त. ३६

स त थी तो ढुण्ढि.

९९ मन्थान, मंथाणा, मंथाण, मन्थानक. त, त. ३७

तं ता थीं मन्थान. मन्थानके ता त.

१०० क्षमापालि. ज, त. ३८

ज ता क्षमापालि.

१०१ राढि. भ, त. ३९

भा त थकी राढि.

१०२ अनिभृत. न, त. ४०

अनिभृते ना त.

१०३ मङ्कुर. म, ज. ४१

छे मंकुर मू ज.

१०४ वृत्तहारि. य, ज. ४२

य जे वृत्तहारि.

१०५ धारिका (छंदोलता), आर्भव. र, ज ४३

धारिका र जा थीं.

१०६ मधुमारक. स, ज. ४४

मधुमारके स्ज.

१०७ हाटकशालि, मंथान, शशिराट.[१] त, ज. ४५

त्जा हाटकशालि.

१ छंदोलता.

१०८ वसंत[1]-मालतिका, मालती, मानवक, *मनोहर, [I]मानव. } ज, ज. ४

वसंत ज जा थी.

मनोहर जा ज.

ज्ज मालती थाय.

१ छंदोलता २ मा. पि छ ग्रथ चि टी * छंदोवृत्तमुक्तावलिमांथी.

I मागधी पिंगलछंदोग्रंथ

छंद प्रभाकरमा घणा मते आ वृत्तनु माप उपर प्रमाणेज छे, पण कोइ कोइ पिंगळकार, त य, अने ज यथी आनु माप बनावेछे, पण तेवा मापना बीजां वृत्तो आ पिंगळमा दाखल छे

१०९ पाकलि.

पाकलि भ जा थी.

११० पुटमर्दि, करहंचा.

न ज पुटमर्दि.

१११ कंसारि.

कंसारि मा भ थी.

११२ सोमश्रुति.

य भे सोमश्रुति.

११३ सोपधि.

रो भ थी सोपधि.

११४ शह्लद्युति.

स भ शह्लद्युति.

११५ इन्धा.

इन्धा त भा थकी.

११६ सावद्ु.

ज भार्थी सावद्ध.

११७ नन्दि, दुमन्दर (छंन्दार्णव प्रमाणे.) भ, भ. ५५

नन्दि भ भी थकी.

११८ अयमित. न, भ. ५६

अयमिते न भ.

११९ प्रोथा. म, न. ५७

छे प्रोथा म न थी.

१२० अर्ति. य, न. ५८

य ले अर्ति कर.

१२१ प्रतरि. र, न. ५९

री न थी प्रतरि.

१२२ विससि स, न. ६०

स न थी विससि.

१२३ अतिकलि. त, न. ६१

ती ने अतिकलि.

१२४ सुदायि. ज, न. ६२

सुदायि ज न थी

१२५ अनति. भ, न. ६३

भी न थी अनति.

१२६ दमनक, उपचलि, दमन मदनक, मदन, [1]नदकल. } न, न ६४

न न दमनक.

१ छंदोलता प्रमाणे.

७ उष्णिक छंद. १२८ भेद थायछे. सात वर्ण.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा कह्युं छे के "सात अक्षरना छंदमा बे अने पांचे यति थाय" एम केटला एकनु मत्त छे.

१२७ शीर्षा, शिषा, शिष्र्या[1], शीर्षरूपक, शीर्षक, लक्ष्मी, [2]मेघाइ, [3]मुक्तागुम्फ. } म, म, ग. १

मा मा गा थी छे शीर्षा.

१ छंदप्रभाकर. २ गणप्रस्तारप्रकाश ३ छंदोवृत्तमुक्तावलि.

१२८ प्रहाण. य, म, ग. २

प्रहाणे या मा गा छे.

१२९ सैरवी. र, म, ग. ३

सैरवीमां रा मा गा.

१३० शम्बूक. स, म, ग. ४

स म गा छे शम्बूके.

१३१ निम्नाशया. त, म, ग. ५

निम्नाशया ता मा गे.

१३२ सुमोहिता. ज, म, ग. ६

सुमोहिता जा मा गे.

१३३ अधीरा. भ, म, ग. ७

थाय अधीरा भ्मा गे.

१३४ होला. न, म, ग. ८

न म ग थी होला छे.

१३५ इभभ्रान्ता. म, य, ग. ९

मा या गे इभभ्रान्ता.

१३६ अभीक. य, य, ग. १०

अभीके य या गा छे.

१३७ अहिंसा. र, य, ग. ११

रा य गे अहिंसा छे.

१३८ रसधारि. स, य, ग. १२

रसधारि सा या गे.

१३९ वेधा, भक्ति.[1] त, य, ग. १३

वेधा रच ता या गे.

१ छंद प्रभाकरवाळे मूळनुं वेधा नाम न जाणवाथी आ भक्ति नाम नवु कल्प्युं छे

१४० पद्मा. ज, य, ग. १४

ज या ग थकी पद्मा.

१४१ किणपा. भ, य, ग. १५

थाय किणपा भ्या गे.

१४२ सुरि. न, य, ग. १६

सुरि न य गा थी छे.

१४३ किर्मीर. म, र, ग. १७

किर्मीरे छे म रा गा.

१४४ वयस्य, जयमंगल (प्रवीणसागरमा). य, र, ग. १८

वयस्ये या र गा छे.

१४५ भूरिधामा. र, र, ग. १९

भूरिधामा र रा गे.

१४६ हंसमाला. स, र, ग. २०

स र गे हंसमाला.

१४७ भीमार्जन. त, र, ग. २१

भीमार्जने त रा गा.

१४८ पुरोहिता. ज, र, ग. २२

पुरोहिता ज रा गे.

१४९ होडपदा. भ, र, ग. २३

होडपदा भ रा गे.

१५० खरकरा. न, र, ग. २४

खरकरा न रा गे.

१५१ मदलेखा. म, स, ग. २५

मा सा गे, मदलेखा.

आ वृत्तमां केटलाएक ३, ४ यति मानेछे. वळी कोइ आना बमणाने मौला वृत्त केहेछे.

१५२ महनीया. य, स, ग. २६

य सा गे महनीया.

१५३ शरगीति. र, स, ग. २७

रा स गे शरगीति.

१५४ करभित्, रैरंग (पिं. छं. ग्रं.). स, स, ग. २८

करभिद्धि स गा थी.

१५५ स्थूला. त, स, ग. २९

स्थूला रच तसागे.

१५६ कुमारललिता[1], ललत[2], अविराम, रायपति. } ज, स, ग. ३०

कुमारललिता तो,

ज सा ग थकी थातो.

१ वे पांचे यति लाववा कोइ केहेछे. छंदप्रभाकर आदि ग्रंथोमा यति कही नथी. आठ अक्षरमां आ नामनुं वृत्त अक २९८ मे छे.

२ गणप्रसारप्रकाशमां

१५७ रुचिर. म, स, ग. ३१

भा स ग रुचिरे छे.

१५८ दति, करह. न, स, ग. ३२

दति-करह ना सगे.

१५९ हिन्दीर, सालका(गणप्रतारप्रकाश). म, त, ग. ३३

हिन्दीरे मा ता ग छे.

१६० उपिक. य, त, ग. ३४

य ता गा, छे उपिके.

पिंगलछन्द सूत्र प्रमाणे ३, ४ यति

१६१ मृष्टपादा. र, त, ग. ३५

मृष्टपादा रा त गे.

१६२ मायाविनी. स, त, ग. ३६

स त गे मायाविनी.

१६३ राजराजी, भिन्ना. त, त, ग. ३७

भिन्ना त ता गा थकी,
छे राजराजी नकी.

१६४ कुठारिका. ज, त, ग. ३८

कुठारिका जा त गे.

१६५ कल्पमुखी, लीला.[1] भ, त, ग. ३९

कल्पमुखी भी त गे.

१ छंद प्रभाकरमा आ नामछे.

१६६ परभृत. न, त, ग. ४०

परभृते ना त गा.

१६७ महोन्मुखी. म, ज, ग. ४१

मा जी गे महोन्मुखी.

१६८ महोद्धता, कुमारिका.[1] य, ज, ग. ४२

थ जा गे महोद्धता.

१गणप्रस्तारप्रकाश

१६९ चामर, समानिका,[1] समाना,[2] वाणी.[3] } र, ज, ग. ४३

छे समानी रा ज गे.

१ छंदोवृत्तमुक्तावली २ भगवतपिंगळ अने कामदुघावत्स.
३ एक मागधी पिंगळ.

१७० कठोद्धता. स, ज, ग. ४४

स ज गे कठोद्धता.

१७१ पूर्णा. त, ज, ग. ४५

पूर्णा त ज गा थकी.

१७२ वहिर्वलि. ज, ज, ग. ४६

वहिर्वलि जा ज गे.

१७३ उन्दरि. भ, ज, ग. ४७

उन्दरि भजा गथी.

१७४ पुराटि. न, ज, ग. ४८

पुराटि नजा गथी.

१७५ वर्कारिता, सुभग, खग्गा,[1] खंगा, खंजा, खंडका.[2] } म, भ, ग. ४९

मा भा गे वर्कारिता.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रथ. २ गणप्रस्तारप्रकाश.

१७६ केशवती. य, भ, ग. ५०

य भा गे केशवती.

१७७ सौरकान्ता. र, भ, ग. ५१

सौरकान्ता र भ गे.

१७८ अधिकारी. स, भ, ग. ५२

अधिकारी स भ गे.

१७९ निर्बाधिका, चूडामणि. त, भ, ग. ५३

निर्बाधिका त भ गे.

१८० महोधिका ज, भ, ग. ५४

महोधिका ज भ गे.

१८१ मौरलिक, कलिता, कलका.[1] भ, भ, ग ५५

मौरलिके भ भ गा.

[1] गणप्रस्तारप्रकाश

१८२ स्वनकरी. न, भ, ग. ५६

स्वनकरी न भ गे.

१८३ नवसरा, मदलेखा.[1] म, न, ग. ५७

मा ना गे नवसरा.

[1] गणप्रस्तार प्रकाश.

१८४ चिररुचि. य, न, ग. ५८

य ना गे चिररुचि.

१८५ वहुलया. र, न, ग. ५९

रा न गे वहुलया.

१८६ यमनक. स, न, ग. ६०

स न गा यमनकें.

१८७ हीर. त, न, ग. ६१

छे हीर त न गथी.

१८८ स्विदा. ज, न, ग. ६२

स्त्रिदा रच ज न गे.

१८९ उलपा. भ, न, ग. ६३

भा न ग थी उलपा.

१९० मधुमती, मधुमत, वास्तुमती.[1] न, न, ग. ६४

न न ग मधुमती.

छंदोलता वि एस आप्टेनी डिक्षनेरीमां पांच वेये यति कही छे

१९१ नीहारी. म, म, ल. ६५

नीहारी मा मा ला थी.

१९२ कंसासारि. य, म, ल. ६६

य मा ले कंसासारि.

१९३ खर्विणी. र, म, ल. ६७

खर्विणी रा मा ले थी.

१९४ गृहिणी. स, म, ल. ६८

गृहिणी सा मा ले थी.

१९५ वार्द्धिष्णु, शूर. त, म, ल. ६९.

ता मा ल थी वार्द्धिष्णु.

१९६. श्रोणी. ज, म, ल. ७०.

ज मा ल थी श्रोणी ज.

१९७ व्याहारि. भ, म, ल, ७१

भा म ल थी व्याहारि.

१९८ किशलय. न, म, ल. ७२

किशलये ना मा ल.

१९९ देवल. म, य, ल. ७३

म्या ला देवले थाय.

२०० नार्दि. य, य, ल. ७४

य या ला थकी नार्दि.

२०१ अनासादि र, य, ल. ७५

रा य ले अनासादि.

२०२ अलालापि. म, य, ल. ७६

स य ले अलालापि.

२०३ गुञ्जा. त, य, ल. ७७

गुञ्जा त य ले थाय.

२०४ ऋचा. ज, य, ल. ७८

ऋचा ज य ले थाय.

२०५ नन्दथु. भ, य, ल. ७९

नन्दथु भ या ले थी.

२०६ अनु. न, य, ल. ८०

अनु न य ला थीज.

२०७ अम्मेथी. म, र, ल. ८१

अम्मेथी मो र ले थी.

२०८ मयूरी. य, र, ल. ८२

मयूरी या र ले थी.

२०९ सामिका. र, र, ल. ८३

सामिका रा र ले थी.

२१० प्रोञ्छिता. स, र, ल. ८४

स र ले प्रोञ्छिता ज.

२११ वृन्दा. त, र, ल. ८५

वृन्दा विधि त रा ल.

२१२ भर्तार्दि, स्वरूप, सरूप.[1] ज, र, ल. ८६

भर्तार्दि जा र ला थी

[1] सरूप नाम मागधी पिंगळछंदोग्रंथनी चित्रसेन टीकामां छे.

२१३ मीनपदी. भ, र, ल. ८७

मीनपदी भ रा ल.

२१४ मणिमुखी. न, र, ल. ८८

मणिमुखी न रा ल.

२१५ मौलिस्रक्. म, स, ल. ८९

मौलिस्रक् म स ला थी.

२१६ परभानु. य, स, ल. ९०

य सा लै परभानु.

२१७ मेथिका. र, स, ल. ९१

मेथिका र स ले थी.

२१८ गोधि. स, स, ल. ९२

स स ले कर गोधि.

२१९ सरलांघ्रि. त, स, ल. ९३

ता सा ल सरलांघ्रि.

२२० विरोहि. ज, स, ल. ९४

ज सा ल थी विरोहि.

२२१ वरजापि. भ, स, ल. ९५

भा स ल वरजापि.

२२२ अहरि, करहंतृ, कलहंस, करहन्ता, करहंज,[1] करहंच,[2] करहंची,[3] करहंस, करहंत. वच्छ. — न, स, ल. ९६

अहरि नसलेथीं.

१ छंदोवृत्तमुक्तावलि २ छंद प्रभाकर ३ गणप्रस्तारप्रकाशमां
आने ८ मात्रानु २१मु रूप गणी तेनु नाम वच्छ आप्यु छे

२२३ सम्पाक. म, त, ल. ९७

सम्पाके मातालघु.

२२४ पद्धरि. य, त, ल. ९८

यतालेथी पद्धरि.

२२५ गूर्णिका. र, त, ल. ९९

गूर्णिका राताल्थीं.

२२६ काही. स, त, ल. १००

सतले काही कर.

२२७ कायोद्धता. त, त, ल. १०१

कायोद्धता तातल.

२२८ खर्परि. ज, त, ल. १०२

जतालथी खर्परि.

२२९ शंतनु, लीला. भ, त, ल. १०३

शन्तनुमा भातल.

"छंदार्णवमां" अंते गुरु कह्यो छे, ते भूल छे.

२३० मुरजिका. न, त, ल. १०४

मुरजिका नातल.

२३१ कालस्वी म, ज, ल. १०५

कालस्वी मजालथीं

२३२ उपोहा. य, ज, ल. १०६

उपोहा यजालघु.

२३३ कार्पिका. र, ज, ल. १०७

कार्पिका र जा लघु.

२३४ मुहुरा. स, ज, ल. १०८

मुहुरा स जों लघु.

२३५ दोपा. त, ज, ल. १०९

दोषा रच ता ज ल.

२३६ उपोदरि. ज, ज, ल. ११०

उपोदरि जो ज ल.

२३७ जासरि. भ, ज, ल. १११

जासरि भ जे ल थीं.

२३८ वासकि, सुवासक,[1] सुवासा,[2] सवासानि, सुवास, रासा, सवासन.[3] } न, ज, ल. ११२

न ज ल थीं वासकि.

१ गणप्रस्तारप्रकाश. २ छंदोवृत्तमुक्तावलि, ३ छंद.प्रभाकर.

२३९ भूरिमधु. म, भ, ल. ११३

मा भाले भूरिमधु.

२४० भूरिवसु. य, भ, ल. ११४

य भा ले भूरिवसु.

२४१ हर्षिणी. र, भ, ल. ११५

हर्षिणीमां र भ ल.

२४२ लोलतनु. स, भ, ल. ११६

स भ ले लोलतनु.

२४३ क्रोडान्तिक. त, भ, ल. ११७

क्रोडांतिके त भ ल.

२४४ स्तरधि. ज, भ, ल. ११८

ज भा ल थी स्तरधि.

२४५ पौरसरि. भ, भ, ल. ११९

भा भ ल पौरसरि.

२४६ वीरवट्ट. न, भ, ल. १२०

न भ ल वीरवट्ट.

२४७ अमति. म, न, ल. १२१

मा ना ले थी अमति.

२४८ अहति. य, न, ल. १२२

य ना ले थी अहति.

२४९ वरशशि. र, न, ल. १२३

रा न ले वरशशि.

२५० धनधरि. स, न, ल १२४

स न ले धनधरि.

२५१ मुपकि. त, न, ल. १२५

ता ना लघु मुपकि.

२५२ कुरदि. ज, न, ल. १२६

ज ना लघु कुरदि.

२५३ कोशि. भ, न, ल. १२७

कोशि कर भ न ल.

२५४ अचट्ट, सुमत (ग. प्र. प्र.). न, न, ल. १२८

अचट्ट न न लघु,

८ अनुष्टुप्छंद. २५६ भेद थायछे. आठवर्ण.

२५५ विद्युन्माला, विद्युल्लेखा, वीजुमाला, [1]ब्रंदामाला, मौक्तिकतिलक, विज्जुमाला, विद्रुनमाला, [2]सोमकान्त, [3]सोमकान्त, [3] सोमकंतो, [3] सोमकंतो, [3] महाणी, सोमक. } म, म, ग, ग.[1]

मा मा गा गे, विद्युन्माला.

१ गणप्रस्तारप्रकाश २ सुनिसुदरपिंगलमांथी. गणप्रस्तारप्रकाशमां आने १६ मात्रानु पेहेलुं रुप गण्यु छे, अने तेमा अर्धे यति कही छे. विद्युन्माला, राग झींझोटी तालचतुश्र जाति त्रिपुट. संगीतानुसार छंदोमजरी प्रमाणे.

३ मागधी "छंद शतक" प्रमाणे चारे चारे विश्राम.

२५६ अनिर्भार.

स म गा गा ऽनिर्भारे छे.

२५७ इन्द्रफला, इन्द्रवला, दंडलिया.

इन्द्रफला भा मा गा गे.

२५८ गोपावेदी.

न म ग गे गोपावेदी.

२५९ भूमधारी.

वने भूमधारी य्या ग्गे.

२६० मौलिमालिका.

मौलिमालिका र्यो गा गे

२६१ युगधारि.

युगधारि सा या गा गे

२६२ विराजिकरा. ज, य, ग, ग. १४

विराजिकरा ज्या गा गे.

२६३ वात्या. म, य, ग, ग. १५

भा य ग ग थी छे वात्या.

२६४ पाञ्चालांघ्रि, पञ्चास्यांघ्रि, वस्तु.[1] न, य, ग, ग. १६

न य ग ग पांचालांघ्रि.

१ छंदोलता

२६५ श्लोक म, र, ग, ग. १७

मा रा गी गा धरो श्लोके.

२६६ कुलाधारी, शुद्धगा. य, र, ग, ग १८

कुलाधारी यरी गी गे.

प्रवीणसागर लेहेर ७१ मीए "चिन्तामणी" नामनो छद छे, ते आथी अपभ्रंश थयो होय एम जणायछे ए फारसी गझलनी रीते गवायछे

२६७ परिधारा. स. र, ग, ग. २०

परिधारा स रा गा गे.

२६८ यशस्करी. ज, र, ग, ग २२

यशस्करी ज री गा गे.

२६९ कुररिका. न, र, ग, ग. २४

कुररिका न रा गा गे.

२७० मनोला. य, स. ग, ग. २६

मनोला य स गा गे थी.

२७१ रमणियशिखा, पञ्चशिखा स, स, ग, ग. २७

रमणीयशिखाए तो,

स स गा ग धराशे तो.

२७२ भांगी. ज, स, ग, ग. ३०

ज सा ग ग थकी भांगी.

२७३ रुद्गाली. न, स, ग, ग. ३२

न स ग गर्थी रुद्गाली.

२७४ पारान्तचारी. य, त, ग, ग. ३४

य त ग्गे पारान्तचारी.

२७५ कौंचमार. स, त, ग, ग. ३६

स त गा गा कौंचमारे.

२७६ कराली, कामताका, केतुमाला. त, त, ग, ग. ३७

ता ता ग गा थी कराली.

२७७ वारिशाला, वितान, त्रितान. ज, त, ग, ग. ३८

ज ते ग गे वारिशाला.

छंदःप्रभाकरमा विताननना गण स, भ, ग, ग कह्या छे, पण तेना मापनो अतिमोहा ५२ मा छंदनो छे, एटले ए अभिप्राय ग्राह्य नथी. वली वाग्वल्लभ तथा भाराछशोमजरोमा पण विताननना गण ज, त, ग, ग. छे.

२७८ वान्तभार. न, त, ग, ग. ४०

न त ग गा वान्तभारे.

२७९ सिंहलेखा. र, ज, ग, ग. ४१

रा ज गी ग सिंहलेखा.

२८० दिग्गीश. स, ज, ग, ग. ४४

स ज गा ग छे दिग्गीशे.

२८१ सारावनदा. त, ज, ग, ग. ४५

सारावनदा त जा ग्गो.

२८२ कृष्णगतिका. भ, ज, ग, ग. ४७

कृष्णगतिका भ ज्या गे.

२८३ प्रतिसीरा, खंजा,‡ खंज.* म, भ, ग, ग. ४९

भो भे गी गे प्रतिसीरा.

‡ एक मराठी पिंगळ, जेना उपर चित्रसेननी टीका छे, तेमां खंजानी SS-SS-।।S-।S प्रमाणे मात्रा करी मात्रामां दाखल कर्यो छे, पण बीजा पिंगळोमांथी उपरनुं माप थता, तथा आज प्रमाणेथी ते वर्णमेळनो सिद्ध थता अहिं दाखल कर्यो छे.

* गगनसार प्रकाश.

२८४ अतिमोहा. स, भ, ग, ग, ५२

स भ गा गे अतिमोहा.

२८५ चतुरीहा. ज, भ, ग, ग. ५४

ज भे ग गे चतुरीहा.

२८६ चित्रपदा, चित्रपद. भ, भ, ग, ग. ५५

चित्रपदा भ भ गा गे.

२८७ हृतमुखी. न, भ, ग, ग ५६

हृतमुखी न भ गी गे.

२८८ हंसरुत[1], हंसपदी[2]. म, न, ग, ग. ५७

म्नागे हंसरुत धारो.

१ छंदोमंजरीमां हंसरुत नाम छे. २ छंदोल्ना

२८९ संध्या, बोधा (गण. प्र. प्र.). त, न, ग, ग. ६१

संध्या त न ग य आवे.

२९० तुंगा, तुंग, तुरंग (छंद प्रभाकर). न, न, ग, ग ६४

न न ग ग कर तुंग.

२९१ विहावा. य, य, ल, ग. ७१

विहावा य या ला गथी.

२९२ हेमरूप. र, र, ल, ग. ८३

हेमरूपे र रा ल गी.

२९३ शल्लकप्लुत. स, र, ल, ग. ८४

स ल गा शल्लकप्लुते.

२९४ नाराचिका, नाराच, आणंद, आनन्दरूपक. } त, र, ल, ग. ८५

नाराचिका त रा ल गे.

२९५ प्रमाणिका, प्रमाणी[1], पावाणी, अर्द्धनाराच, सामाणी, प्रवाणिका, नगस्वरूपिणी, लघुनाराच[2]. } ज, र, ल, ग. ८६

प्रमाणिका ज रा ल गे.

१ मदारमरंदचंपूनी टीकामा केहेछे के, कोइ प्रमाणी एवु नाम पण आपेछे.
२ नानक गुरुनी कवितामा नराज एवु नाम आपेछे
राग परज ताल जलद दादरो (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

२९६ नराची, नाराची. भ, र, ल, ग. ८७

भा र ल गा नराचीमां.

कोइ पिंगळकार आ वृत्तने लघुनाराच केहेछे पण ते अयोग्य छे

२९७ उपलिनी, कृतवती. न, र, ल, ग. ८८

उपलिनी न रे ल गे.

२९८ कलिला, करिला. स, स, ल, ग. ८९

कलिला स स ला ग थी.

२९९ कुमारललिता[1], कुमारिका[2]. ज, स, ल, ग ९४

ज सा ल ग पदे धरो,
कुमारललिता करो.

१ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकाना २९८ टिप्पणमां लख छे के,

कुमार ललिता ज्सौ गौ इति सूत्रं क्वचित् पण जस ग मापवाळु भांर्गि वृत्त २७२मे अंके जुदु छे जसग एवा मापनुं कुमारललिता नामनु वृत्त अंक १५६मे उष्णिकनु ३०मु रूप छे   २ गणप्रस्तारप्रकाश

३०० लसदसु, कमल[1], पद्म, कमला[2]   न, स, ल, ग. ९९

लसदसु नसा लगे.

१ मनहरपिंगळमां कमला छे पण वृत्तिनो २५८मो भेद कमला थाय छे वळी छंदोवृत्तमुक्तावलिमां पण कमल नाम नांकेलुं छे माटे कमल खरुं छे

२ मागधी पिंगळछंदोग्रंथ.

३०१ सरधा.   स, त, ल, ग. १००

सरधा सा ता ल ग थी.

३०२ वितान.   ज, त, ल, ग. १०२

वितान जा ता ल ग थी.

३०३ माणवक, माणवकक्रीड, माणवकक्रीडित, पायक, नरक्रीड, मानवक्रीडा, सुरक्रीडा,[1] माणव.   भ, त, ल, ग. १०३

भू त ल गा, माणवके.

चार परे, छेद टके

राग सारग, ताल जलद दादरो (संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे.) मंदारमरंदचंपूमां पण " माणवक " नुं माप तथा यति आ प्रमाणे आप्या छे.

१ गणप्रस्तारप्रकाश.

३०४ माण्डवक.   न, त, ल, ग. १०४

न त ल गा माण्डवके.

३०५ हठिनी.   म, ज, ल, ग १०५

मो जा ला ग थी हठिनी.

३०६ अद्धरा, उद्धरा.   र, ज, ल, ग. १०७

अद्धरा र जा ल ग थी.

३०७ विद्या, उध्या. त, ज, ल, ग. १०९

विद्या त ज ला ग थकी.

३०८ अरालि. ज, ज, ल, ग. ११०

अरालि ज जा ल ग थी.

३०९ अवनि. न, ज, ल, ग. ११२

अवनि न जा ल ग थी.

३१० कुरुचरी. र, भ, ल, ग. ११९

रा भ लागे कुरुचरी.

३११ गजगति. ४, ४ वर्णे यति. न, भ, ल, ग. १२०

नभलगे, गजगति,
चतुर पें, धर यति.

३१२ शिखिलिखिता, हंसकृत. म, न, ल, ग. १२१

मना ला गे शिखिलिखिता.

३१३ ईडा, ईला. त, न, ल, ग. १२३

ईडा त न ल ग थकी.

३१४ अरि. भ, न, ल, ग. १२७

भा न ल ग अरि विषे.

३१५ हरिपद, हतपद. न, न, ल, ग. १२८

हरिपद न न ल गे.

३१६ नागारि. स, य, ग, ल. १४०

स य गा लथी नागारि.

३१७ लक्ष्मी. र, र ग, ल. १४७

रा र गा ला थी लक्ष्मी ज.

३१८ वलीकेन्दु. स, र, ग, ल. १४८

स र गा ले वलीकेन्दु.

३१९ अमानिका. ज, र, ग, ल. १५०

अमानिका ज रा गा ल.

३२० नववद्रा, मालती. न, र, ग, ल. १५२

नववद्रा न रा गा ल.

३२१ हरित् न, स, ग, ल. १६०

हरित न स गा ला थौ.

३२२ किष्कु. त, त, ग, ल १६९

ता ता ग ले थाय किष्कु.

३२३ मल्लिका, समानिका[1] मालिका, मदनमल्लिका. } र, ज, ग, ल. १७१ चार वर्ण यति.

मल्लिका र, जा ग ले थौ.

३२४ ताणी. (मा. पिं. छं ग्र) म, भ, ग, ल. १७७

ताणी मा भा ग ल थीज.

राग दिव्य हींडोल जाति एक ताल मध्य क.ळ तिश्र (संगीत छंदो मंजरी प्रमाणे)

1 वळी मदार मरंद चपूमा पण नाम तथा यति आ प्रमाणे छे

३२५ अनृतनर्म, नृतनर्म (छंद प्रभाकर) स, भ, ग, ल. १८०

नृतनर्म स भ गा ल.

३२६ अमरान्दि, हनुमन्त. त, भ, ग, ल. १८१

ता भा ग ले अमरान्दि.

३२७ कुलचारि. ज, भ, ग, ल. १८२

ज भा ग ले कुलचारि.

३२८ दीपका. म, न, ग, ल. १८४

दीपका स न ग ले थाँ.

३२९ करांजि. ज, न, ग, ल. १९०

करांजि ज न ग ले थाँ.

३३० वृन्त. स, म, ल, ल. १९६

स म ला लाँ वृन्ते कर.

३३१ शाखोटकि. ज, म, ल, ल. १९८

ज मा ल ले शाखोटकि.

३३२ पञ्जरि. भ, म, ल, ल. १९९

भू म ल ले थी पंजरि.

३३३ अप्रीता, प्रीता, अतिप्रीता, अलिप्रीता. } न, म, ल, ल. २००

न म ल ले ऽप्रीता रच.

३३४ मन्थरि. म, य, ल, ल. २०१

मा या ला ल थी मन्थरि.

३३५ वातुलि. य, य, ल, ल. २०२

य या ला ल थी वातुलि.

३३६ रामा. (छंद-प्रभाकर) त, य, ल, ल २०५

रामा त य ला ले रच.

३३७ भाषा, भासा, संभाषा, संभासा. } य, र, ल, ल. २१०

रचो भाषा य रा ल ल.

३३८ विपुला. (छंदःप्रभाकर.) भ, र, ल, ल. २१३

छे विपुला भ रा ल ल.

३३९ पाकलि. न, र, ल, ल. २१६

न र ल ले थॉ पाकलि.

३४० अमना, अमनसु.　　स, स, ल, ल. २२०

अमना स स ला ल थॉ.

३४१ आकतनु.　　ज, त, ल, ल. २३०

ज ता ल ले आकतनु.

३४२ अखेट.　　र, ज, ल, ल. २३६

र ज्ल ले अखेट रच्.

३४३ अतिजनि.　　म, भ, ल, ल. २४१

मो भा ला ले अनिजनि.

३४४ सृतमधु.　　स, भ, ल, ल. २४४

स भ ला ले सृतमधु.

३४५ मरु.　　ज, भ, ल, ल. २४६

ज भा ल ले रच् मरु.

३४६ चयन.　　य, न, ल ल. २५०

य ना ला ल थॉ चयन.

३४७ कुशक.　　र, न, ल, ल. २५१

रा न ला लथॉ कुशक.

३४८ निरुद, निरद　　स, न, ल, ल. २५२

स न ला लथॉ निरुद्.

३४९ सन्धुक　　त, न, ल, ल. २५३

सन्धुक त न ल ल थॉ.

३५० क्षर, क्षुर.　　ज, न, ल, ल. २५४

ज ना ल ल क्षुर धर.

३५१ वेपि, वेशि.　　भ, न, ल, ल. २५६

वेपि भ न ल ल थकी.

३५२ कृतयु, कृशयु, नरहरी.[1] न, न, ल, ल. २५६

न न ल ल थी कृतयु.

1 गणप्रस्तारप्रकाश.

९ बृहतिछंद. ५१२भेद थायछे. नव वर्ण

३५३ रूपामाली, रूपमाला, रूपमाली, रूपा. म, म, म. १

रूपामाली मांहे मा मा मा.

३५४ मेघालोक. य, म, म. २

य मो मा आवे मेघालोके.

३५५ स्निग्धा[1], मणिमध्या. ५, ४ यति. भ, म, म. ७

भो म म आणो, स्निग्धा जाणो.

1 मंदारमरंदचम्पू

३५६ मायासारी. न, य, म. १६

नि य म थकी मायासारी.

३५७ खेलाढ्य. म, स, म. २१

मा सा मा रचजो खेलाढ्ये.

३५८ उदरश्रि, उदरस्तक, उदरास्तक[1]. स, स, म. २८

उदरश्रि स सो मे थाशे.

1 आ मापनो छंद नागराजपिंगळमां विस्चा करीने लख्यो छे, पण ते भूल छे, केमके ३६७मे अंके ५६मो भेद ए नामनो छे.

३५९ वैसारू, वैसार. त, स, म. २९

जाणो त स म थी वैसारू.

३६० निर्विन्ध्या, निर्वन्ध्या. ज, स, म, ३०

ज सा म करता निर्विन्ध्या.

३६१ कर्मिष्ठा, किर्मिष्ठा. भ, स, म. ३१

भू स म रचतां कर्मिष्ठा.

३६२ धृतहाला. म, भ, म. ४९

मा भा मा थी धृतहाला छे.

३६३ कलह. स, भ, म. ५०

कलहे सा भ म आवे छे.

३६४ अयनपताका. म, न, म. ५७

मा ना मा ऽयनपताका छे.

३६५ रंभा. त, न, म. ६१

रंभा त न म थकी थाशे.

३६६ भुजगशिशुभृता-वृता-सृता-युता ⎫ ७, २ यति
अहिशिशु[1] भुजगशशिभृता, ⎬ न, न, म. ६४
भुजगशिशुसुता, ज्ञकता. ⎭

भुजगशिशुभृता, नन्मे.

१ गणप्रस्तार प्रकाश

२ आ नाम वृतरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां आप्युं छे पाठांतरने लीधे भिन्न भिन्न नामो थया छे

३६७ विशल्य, य, य, य. ७३

विशल्ये य कारो त्रणे छे.

३६८ बिम्ब, बिम्बा, ललित तिलका. ⎫ न, स, य. ९६
बिम्बा, पंक, पंका.[1] ⎭

न स य धर बिम्बमां तु.

१ मराठी पिंगळ छंदोग्रंथ

३६९ अर्धक्षामा. म, त, य. ९७

अर्धक्षामा मा त य आण्ये.

३७० सम्बुद्धि. स, त, य. १००

स त ये सम्बुद्धि बनेछे.

३७१ शम्बरधारी. भ, त, य. १०३.

शम्बरधारी भ त ये छे.

३७२ महर्षि ज, ज, य. ११०.

महर्षि ज जा य थकी छे.

३७३ शरलीढा. न, ज, य. ११२

न ज य थकी शरलीढा.

३७४ कांसीक. म, न, य. १२१.

कांसीके म न य करोजी.

३७५ सुगन्धि. स, न, य. १२४

स न ये थी रच सुगंधि.

३७६ कामा. त, न, य. १२५

कामा त न य करवाथी.

३७७ भौरिक, महालक्ष्मीका, महालक्ष्मी, महालक्षी. } र, र, र. १४७

भौरिके रा र रा थायछे.

३७८ निभालिता. स, त, र. १६४

स त रे थाशे निभालिता.

३७९ चारुहासिनी. ज, न, र. १६६

ज ता र थी चारुहासिनी.

भाषा छंदोमंजरीमा मात्रामेळमा छे ८, ६=१४.

३८० भुजंगसंगता. ३, ६ यति. स, ज, र. १७०

स ज रे, भुजंगसंगता.

३८१ रवोन्मुखी. त, ज, र. १७३

तो जा र रवोन्मुखी विषे.

३८२ अवनिजा. ज, ज, र. १७४

वने ऽवनिजा ज जा र थी.

३८३ प्रवाहिका. भ, ज, र. १७५

भो ज र थकी प्रवाहिका.

३८४ हलोद्गता. न, ज, र. १७६

न ज र थकी हलोद्गता.

३८५ मधुमल्ली. स, भ, र. १८०

मधुमल्ली स भ रे बने

३८६ सहेलिका. ज, भ, र. १८२

सहेलिका रच जा भ रे.

३८७ मदनोद्धरा. भ, भ, र. १८३

भू भ र थी मदनोद्धरा.

३८८ करशया. न, भ, र १८४

करशया न भरे करो.

३८९ भद्रिका. र, न, र. १८७

भद्रिका र न र थी बने.

३९० शशिकरी. स, न, र. १८८

स न रे शशिकरी बने.

३९१ अर्थ. न, न, र. १९२

न न र चरण अर्थमा.

नागपिंगळ, चित्रसेनटीका अने पिंगळ छंदोग्रंथ

३९२ मणिबंध, मणिमध्य. ५,४ यति* भ, म, स. १९९

तुं मणिबंधे, भा म स दे.

पांच श्रुतिये, तुं यति दे.

संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे आ वृत्त श्रीरंजनी रागमां गवायछे ताल चतुश्र जाति प्रतिध्रुव छे

* छंद. प्रभाकरमां यति कह्यो नथी, पण श्रुतबोधनी टीका अने छंदरत्नावलीमां प्रथम पांच वर्णे अने त्यार पछी चार वर्णे यति कह्यो छे.

३९३ मुखला, सारंगिका, सारंग, [1]रंगीका, [2]सारंगिक, सारंगिय, सारवक, [3]मथना. } न, य, स. २०८

न य स बनावे मुखला.

१ मनहरपिंगळ २ छंद.प्रभाकरमां मात्रामेळमां छे. ३ गणप्रस्तारप्रकाश.

३९४ निषध. भ, र, स. २१९

भू र स थायछे निषधे.

३९५ रत्नकरा, [1]रत्नका. म, स, स. २१७

थाशे रत्नकरा म स से.

१गणप्रस्तारप्रकाशमांथी.

३९६ अर्द्धकला. स, स, स. २२०

स स से रच अर्द्धकला.

३९७ रञ्जक. भ, स, स. २२३

भा स स धर रञ्जक मां.

३९८ वीरा, अवीरा, पापिन्ता, पवित्रा, पाइत्ता, प्रथिता, प्राप्ति, पायत्त, पायत्तारु, [1] पादाताली. [2] } म, भ, स. २४१

वीरामां मा भ स धरजो.

१ मागधीपिंगळछंदोग्रंथ २ गणप्रस्तारप्रकाश

३९९ अनवीरा. स, भ, स. २४४

अनवीरा स भ स थकी.

४०० प्रियतिलका. भ, भ, स. २४७

भू भ स थी प्रियतिलका.

४०१ हलमुखी, हरमुख, हलनमुख.[1] र, न, स. २९१

रा न से, कर हलमुखी,

छे त्रणे, पट पर यति.

१ गणप्रस्तारप्रकाश

४०२ आकेकर, पद्मावती (छंदसार (भाषा) त, न, स. २९३

आकेकर कर त न से

४०३ धौनिक. भ, न, स. २९५

धौनिक रच भ न स थी.

४०४ मदनक, रतिपद, कमला, कम्बलया[1], दुहणा[2]. } न, न, स. २९६

मदनक न न स थकी.

१ मागधीपिंगळ छंदोग्रंथ २ गणप्रस्तारप्रकाश

४०५ वल्गा. त, त, त. २९३

वल्गा विषे ता त ता धार.

४०६ कीटमाला. स, ज, त. ३००

स ज ते थाँ कीटमालाज.

४०७ मसृण. न, न, त. ३२०

मसृण न न त थी थाय.

४०८ लीला. न, य, ज. ३३६

न य ज थाँ लीला रचाय.

४०९ वारिधियान. स, त, ज. ३६१

भा त ज थी वारिधियान.

४१० तोमर. स, ज, ज. ३६५

स ज जे थी तोमर थाय.

छन्दोमंजरीमां श्री गजाधरे मात्रामेळमा दाखल करेल छे.

४११ कुहू. ज, ज, ज. ३६६

कुहू कर जा ज ज थी तुं.

४१२ भैरव. न, ज, ज. ३६८

न ज ज थी भैरव थाय.

गणप्रस्तारप्रकाशमां आने ११ मात्रानो ८१ मो भेद गण्यो छे ते वर्णवृत्त थइ जायछे माटे अहिं दाखल कर्यो छे

४१३ कठिनास्थि, अहीरि. भ, न, ज. ३८३

भा न ज कर कठिनास्थि.

४१४ विकचवती. न, य, भ. ४००

विकचवतीमां ना य भ.

४१५ वन्दारु. म, स, भ. ४०९

वन्दारु मस भे थी रच.

४१६ दधि, उदधि, शुभोदर.[1] भ, भ, भ. ४३९

छे दधिमां त्रण भू गण.

[1] गणप्रस्तारप्रकाश

४१७ स्फुटघटिता. न, य, न. ४६४

स्फुटघटितामां नयन.

४१८ चुलक, कुमुद. न, न, न. ५१२

त्रण न गणथी चुलक.

१० पंक्तिछंद. १०२४ भेद थायछे. दश वर्ण.

४१९ पद्मावर्त्त. म, म, म, ग. १

मा मा मा गा आवे पद्मावर्त्त.

४२० शेफाळी. य, म, म, ग. २

य मा मा गा थी थाशे शेफाली.

४२१ धूम्राळी. य, य, म, ग. १०

य या मा ग थी थाशे धूम्राली.

४२२ नीरोहा. स, र, म, ग. २०

स र मा गे बनेछे नीरोहा.

४२३ वीरान्ता. ज, स, म, ग. ३०

ज सा म ग थकी वीरान्ता छे.

४२४ निर्मेधा. न, त, म, ग. ४०

न त म गे थाय निर्मेधा तो.

४२५ मध्याधार. म, भ, म, ग. ४९

मो भो मा गो धर मध्याधार.

४२६ वंशारोपी. य. भ, म, ग ५०

य भा मा गा थकी वंशारोपी.

४२७ विन्दु, बन्धूक. भ, भ, म, ग. ५५

विन्दु विषे भ भ मा गा आणो.

गणप्रस्तारप्रकाशमा बन्धूक नाम आपी तेनु रूप ८७मुं दर्शाव्युं छे, ते ५५मुं जोडये

४२८ कूल. त, न, म, ग ६१

छे कूल न न म गा आण्याथी.

४२९ घोषातुरा, सकृद्घोषा. य, म, य, ग. ६६

यथा या गा बोधातुरामां छे.

४३० सुराक्षी. न, य, य, ग. ८०

न य य ग आणो सुराक्षीमां.

४३१ कलापान्तरिता. य, स, य, ग. ९०

कलापान्तरिता यसे या गे.

४३२ द्वारवहा, भारवहा. र, त, य, ग. ९१

रा त यो गा द्वारवहा वृत्ते.

४३३ विशदच्छाय, [1]कलगीत. ९, ९ यति. स, त, य, ग. १००

विशदच्छाये, स त यो गा छे.

१ आ नाम तथा यति "मंदारमरद चंपू" माछे

४३४ इन्द्र, ऐन्द्री. ज, ज, य, ग. ११०

ज जा य ग थी रच ऐन्द्री तो.

४३५ हीराङ्गी, प्रणव.[1] ९, ९ यति. म, न, य, ग. १२१

हीराङ्गी रच, म न योगे थी,

पांचे बे यति, धर छोगेथी.

१ गणप्रस्तार प्रकाशमां आनु "प्रणव" एवुं नाम आप्युं छे

४३६ हेमहास, वाला, बाला. र, र, र, ग. १४७

हेमहासे रचो रा र रा गो.

४३७ आन्दोलिका. ९, ९ यति. त, त, र, ग. १६९

आन्दोलिका छे, त ता र गा थी.

४३८ मयूरसारिणी, शिखिसारिणी. र, ज, र, ग. १७१

छे मयूरसारिणी र जा र गे.

पादान्तेयति

४३९ सुखेला. स, ज, र, ग. १७२

स ज रा ग थायछे सुखेला.

४४० नमेरु. त,ज,र,ग. १७३

ता जा र ग थी रचो नमेरु.

४४१ गणदेहा. स,म,स,ग. १९६

गणदेहामां सा म स गा छे.

४४२ चंपकमाला, चंपामाली, रुक्मवती, रुक्मावती, रूपवती, सौभाग्यवती,[२] पंचकमाला. भ,म,स,ग. १९९ (*पादान्ते यति. केटलाक केहेछे.)

भू म स गा थी, चंपकमाला.

राग छाया, ताल चतुश्र जाति त्रीताल (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

चंपामाली नाम गणप्रस्तारप्रकाशमां छे

* श्रुतबोध, छंदरत्नावलि तथा मंदारमरंद चंपूमां ५, ५ यति कह्यो छे पण छंद शास्त्र तथा प्राकृतपिंगल सूत्रमां पाळ्यो नथी.

२ छंदोबोधमां कोइना केहेवाथी

४४३ नरगा. न,य,स,ग. २०८

न य स ग आणो नरगामां.

४४४ प्रसरा. ३, ७ यति. म,स,स,ग. २१७

वर्णछे, प्रसरा म स स गे,

त्रीजे छे, यति सात प्रसंगे.

४४५ केर. र,स,स,ग. २१९

केरमां करजो र स स गा.

४४६ उदित, कीर्त्ति.[१] स,स,स,ग. २२०

उदिते रचजो स स सं गा.

१ छंद प्रभाकरना कर्त्ता ए नाम नवु गणेछे, पण ते वृत्त प्रथमथीज बीजा ग्रंथोमां छे

४४७ मत्ता, माना. ४, ६ यति. म,भ,स,ग. २४१

मत्तामांहे, धर यभसागा,
चारे छट्ठे, यति कवि! गागा.

राग कालिंगडा, ताल चतुश्र जाति त्रीताल (संगीतानुसार छंदोमंजरी)
गणप्रस्तारप्रकारा पिंगळमा आता नाम छे

४४८ वलधारी. स,भ,स,ग. २४४

वलधारी कर सभ संगे.

४४९ अचलपंक्ति, वालिका. र,न,स,ग. २५१

रा न सा ग थी अचलपंक्ति.

४५० असितधारा. स,न,स,ग. २५२

स न संग थी असितधारा.

४५१ उन्नाल. त,न,स,ग. २५३

उन्नाल तनसग थकी छे.

४५२ निरंतिक. ज,न,स,ग. २५४

निरंतिक रच जनसंगे.

४५३ उपधाय्या. भ,न,स,ग. २५५

भा न स ग थकी उपधाय्या.

४५४ तनिमा, वाणी (मा. पिं. छं ग्रं.) न,न,स,ग. २५६

न न स ग कर तनिमामा.

४५५ विशालान्तिक. त,त,त,ग. २९३

ता ता त गा छे विशालान्तिके.

४५६ विशालप्रभ. ज,त,त,ग. २९४

जताततगा छे विशालप्रभे.

४५७ चरपद. न,त,त,ग. २९६

चरपदे नातनागा धरो.

४५८ उपसंकुला. स,ज,त,ग. ३००

उपसंकुला सजाताग थी.

४५९ खेटक. भ,ज,त,ग. ३०३

भा ज त ग धारजे खेटके.

४६० वर्हातुरा. त,भ,त,ग ३०९

वर्हातुरा रच ता भा त गे.

४६१ नीराञ्जलि. त,न,त,ग ३१७

नीराञ्जलि रच ता ना त गे.

४६२ दीपकमाला. भ,म,ज,ग. ३२७

दीपकमालामां भ मा ज गा.

४६३ कर्णपालिका, कामदा,[1] मरालिका.[2]

५, ५, यति र,य,ज,ग. ३३१

रा य जा ग थी, कर्णपालिका

१ संगीतानुसार छंदोमंजरीमां आ नाम छे तेमां राग केदारो, ताल चतुश्र जाति त्रीताल जणावे छे.

२ आ नाम तथा यति "मदारमरदचंपूमां" छे

४६४ सराविका. ज,र,ज,ग ३४२

जराजगा थकी सराविका.

४६५ मनोरमा. ६, ४ यति[1] न,र,ज,ग. ३४४

न र ज गा थकी, मनोरमा.

१ मंदारमरदचंपू प्रमाणे

४६६ विराट, शुद्धविराट म,स,ज,ग. ३४५

पादन्ते यति

मा सा जा ग थकी विराट छे.

४६७ अक्षरावली[1], लालिनी. र,स,ज,ग. ३४७

रा स जा ग थी अक्षरावली.

१ मंदारमरंदचंपू प्रमाणे

४६८ सहजा. स,स,ज,ग. ३४८

सहजा स स जा ग थी बने.

४६९ अहिला. त,स,ज,ग. ३४९

के'वाय अहिला त सा ज गे.

४७० कुप्य. भ,स,ज,ग. ३५१

कुप्य रच कवि भ सा ज गे.

४७१ अनुचायिता. न,स,ज,ग. ३५२

न्सः ज ग अनुचायिता विषे.

४७२ वर्मिता. र,ज,ज,ग. ३५३

वर्मिता रचाय र जा ज गे.

४७३ संयुता, संहतिका, संयुगा, संयुत, [1]संजुत्ती, संयुक्ता, संगतिका, संजुक्ता, गीतक, संजुता, [2]कमला. स,ज,ज,ग. ३६१ ५, ५ यति.

स ज जा ग थी, यति पांचमे.

रच संयुता, शुभ ए क्रमे.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रंथ. २ आ नाम तथा यति मंदारमरंदचम्पूमा छे

४७४ उपस्थिता. २, ८ यति केटलाकने मते. त,ज,ज,ग. ३६९

ता जा, ज ग थाय उपस्थिता.

४७५ जरा. ज,ज,ज,ग. ३६६

जरा रच वृत्त ज जा ज गे.

४७६ भिन्नपद. भ,भ,ज,ग. २७५

भिन्नपदे रच भ भा ज गा.

४७७ बडिशभेदिनी. न,भ,ज,ग. २७६

नभजगे बडिशभेदिनी.

४७८ पणव[1]. ५, ५ यति.[2] म,न,ज,ग. २७७

मा ना जा ग थी, पणवे करो.

पांचे ने शर, यति तो धरो.

१ छंद शास्त्रमा आ वृत्तनु माप मनयग लख्युं छे, पण तेवु अ० ४६५ मे हीरागी छे छंदोबोध तथा छंद प्रभाकरमा पण एनुं माप मनयग छे.

२ मंदारमरंदचम्पू तथा वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीमा आ प्रमाणे यति लख्यो छे

४७९ चितिभृत. न,न,ज,ग. २८४

चितिभृत रच ननाजगे.

४८० पावक, पंक्ति (मा. पि. छं. ग्रं.). भ,म,भ,ग. २९१

पावकमां आणो भामभगा.

४८१ सुषमा, छाया, [1]सुषुमा. त,य,भ,ग. २९७

तायाभग थी थाशे सुषमा.

१ गौड पिंगळ

४८२ फलिनी, चारुमुखी (छंदोलता). न,य,भ,ग. ४००

नयभग थी थाशे फलिनी.

४८३ सुरयानवती. स,स,भ,ग. ४१२

सुरयानवती सोसभगे.

४८४ विरल, कटिका. म,स,भ,ग. ४१५

थाय विरल मा भा स भ गा.

४८५ छलितक. न,त,भ,ग. ४२४

छलितके आण् ना त भ गा.

४८६ मत्तादपदा. स,ज,भ,ग. ४२८

स ज भा ग छे मत्तादपदा.

४८७ वारवती. स,भ,भ,ग. ४३६

स भ भा गे रच् वारवती.

४८८ परिचारवती. त,भ,भ,ग. ४३७

ता भा भ गे परिचारवती.

४८९ काण्डमुखी. ज,भ,भ,ग. ४३८

ज भा भ गे कर् काण्डमुखी.

४९० विश्वमुखी,सारवती,सारस्वती. भ,भ,भ,ग. ४३९

भा भ भ गे रच् विश्वमुखी.

४९१ शरत. न,भ,भ,ग. ४४०

शरतमां कर् ना भ भ गा.

४९२ इन्दुमुखी, चन्द्रमुखी (कंदोलता). त,न,भ,ग. ४४५

इन्दुमुखीं त न भो ग वडे.

४९३ गहना. भ,न,भ,ग. ४४७

भा न भ ग थकी छे गहना.

४९४ फलधर. न,न,भ,ग. ४४८

फलधर रच् ना न भ गे.

४९५ धमनिका. स,ज,न,ग. ४९२

स ज ना ग थीज धमनिका.

४९६ मृगतिलका, अमृतगति,[१] त्वरितगति, अमृततिलका,[२] कुलटा,[३] सुधागत.[४] | न,ज,न,ग. ४९६ ५,५ यति.

मृगतिलका, न ज न ग थी.

१ छंदोवृत्तमुक्तावलिमा अमृतगति नाम छे, गण मळेछे, पण तेमां यति कही नथी २ वाणीभूषण ३ मंदारमरन्दचम्पू प्रमाणे
४ "सुधागत" नाम गणप्रस्तारप्रकाशमा छे

४९७ हंसी, हंसपद.[१] ४, ६ यति.[२] म,भ,न,ग. ४९७

हंसी माहे, रच म भ न गा.

१छंदोलता. राग यदुकुल कावोची ताल मिश्रगारगी पञ्चक स छं मं.
२ श्रुतबोध अने मंदारमरन्दचम्पूमा आज प्रमाणे यति छे

हंसिनी नाम छंदोवृत्तमुक्तावलिमा छे अने यति आ प्रमाणे ज कही छे; अने मंदाक्रांताथी छेल्ला सात अक्षर ओछा एटलु माप आवु छे.

४९८ कृतमणिता, मणिता. भ,न,न,ग. ५११

भा न न ग थी कृतमणिता.

४९९ मकरमुखी. न,न,न,ग. ५१२

न न न ग थी मकरमुखी.

५०० महिमाव्रसायि. स,भ,र,ल. ६९२

स भ रा ले महिमाव्रसायि.

५०१ कामचारि. त,भ,र,ल. ६९३

ता भा र ले रच कामचारि.

५०२ नेमधारि. ज,भ,र,ल. ६९४

ज भा र ले रच नेमधारि.

५०३ हीरलंबि. भ,भ,र,ल. ६९५

भा भ र ले कर हीरलंबि.

५०४ वनिताविनोदि. न,भ,र,ल. ६९६

न भ र ले वनिताविनोदि.

५०५ विरेकि. र,न,र,ल. ६९९

रा न रा ल थकी छे विरेकि.

५०६ कुक्कपादि. न,र,स,ल. ७२८

न र स ले बने कुक्कपादि.

५०७ लुलित. स,स,स,ल. ७३२

लुलिते स स सा ल रचाय.

५०८ सारस. (गणप्रस्त.रप्रकाश). न,स,स,ल. ७३६

न स रा ल थी सारस थाय.

५०९ रसभूम. स,ज,स,ल. ७४८

स ज सा ल धार रसभूम.

५१० चारुचारण. र,न,स,ल. ७६३

चारुचारण र न स ला थी.

५११ सरोज. (गणप्रस्तारप्रकाश.) स,न,स,ल. ७६५.

स न सा ल थी रच सरोज.

५१२ सरसमुखी. त,न,स,ल. ७६६

ता ना स ल सरसमुखीज.

५१३ ऋत. न,न,स,ल. ७६८

ऋत रच न न स ल थीज.

५१४ कीलाल. भ,स,त,ल. ७७१

भा स त ला कीलाले आणज.

५१५ खौरलि. न,य,त,ल. ७८४

न य त ल आण्येथी खौरलि.

५१६ कामनिभा. म,स,त,ल. ७९३

जाणो कामनिभा भा सा त ल.

५१७ विस्रंसि. न,स,त,ल. ८००

न स त ल वर्णा विस्रंसि न.

५१८ नीरनिधि. न,त,न,ल. १०००

न त न ले थाय नीरनिधि.

५१९ कनकवलि. न,न,न,ल. १०२४

न न न ल थी कनकवलि.

११ त्रिष्टुपछंद. २०४८ भेद छे. वर्ण ११.

५२० माला[1], मालती, भारती, हीमाली[2], मारती. } म,म,म,ग,ग. १

मामामा गा गा आवे माला माहे.

गणप्रस्तारप्रकाशमा आने २२मात्राना सामान्य नाम क्रमन्दनु पेहेलु रूप गण्यु छे

१ छंदोवृत्तमुक्तावलिमा आ नाम छे २ गणप्रस्तारप्रकाशमाथी

५२१ आराधिनी. त,म,म,ग,ग. ५

आराधिनी मांहे तामामा गा गा.

५२२ अमालीन. य,य,म,ग,ग. १०

अमालीनमां छे यायामा गा गा.

५२३ मेघध्वनिपूर. त,य,म,ग,ग. १३

मेघध्वनिपूरे तायामा गा गा.

५२४ उद्धतिकरी. भ,य,म,ग,ग. १५

उद्धतिकरीमां भायामा गा गा.

५२५ अपयोत्रा. स,र,म,ग,ग. २०

अश्वघोषा विषे सारीमा गं गा.

५२६ अंतर्वनिता. म,स,म,ग,ग. २५

छे अंतर्वनिता मा सीमा गं गे.

५२७ प्रफुल्लकदली. ज,स,म,ग,ग. ३०

प्रफुल्लकदली जा सा गा गा गे.

५२८ लक्षणलीला. भ,त,म,ग,ग. ३९

लक्षणलीला भ ता मा गा गे थी.

५२९ कूलिका, कूलचारिणी. र,ज,म,ग,ग. ४३

कूलिका रचाय रा जा मा गा गे.

५३० विलुलितमञ्जरी. न,ज,म,ग,ग. ४८

विलुलितमंजरी ना ज्मा गा गे.

५३१ भूरिघटक. म,न,म,ग,ग. ५७

छे भूरिघटक मा ना मा गा गे.

५३२ कलितकमलमाला. न,न,म,ग,ग. ६४

कलितकमलमाला मां छावो,

ननमगग धरीने शोभावो.

५३३ मालतीमाला. य,य,य,ग,ग. ७४

य या या ग गे मालतीमाला छे.

५३४ वल्लवीविलास. र,य,य,ग,ग. ७५

वल्लवी विलासे र या या गा गा.

५३५ विकसितपद्मावली न,य,य,ग,ग. ८०

विकसितपद्मावली जो जाणो,

नययगगा एम एमां आणो.

५३६ अमोघमालिका. ज,र,य,ग,ग. ८६

अमोघमालिका जरायगागे.

५३७ ललितागमन. स,स,य,ग,ग ९२.

ललितागमने ससा या गा गा.

५३८ संस्तशोभासार. स,त,य,ग,ग. १००

सतयगा गा संस्तशोभासारे.

५३९ ललिताल्वाल. स,ज,य,ग,ग. १०८

ललिताल्वाल्ल सजा या गागे

५४० वार्त्ताहारी. न,ज,य,ग,ग. ११२

नजयगगे कर वार्त्ताहारी.

५४१ उदितदिनेश. स,भ,य,ग,ग. ११६

सभया उदितदिनेशे गागा.

१ वाग्वल्लभमा भ ने बदले न केहेछे पण स न य ग ग एवु रुप नीचे ५४३ मे अंके छे

५४२ कडार. य,न,य,ग,ग. १२२

कडारे य नय ग गा आवेछे.

५४३ सौधांघ्रि. स,न,य,ग,ग. १२४

स न या ग ग थकाँ सौधांघ्रि छे.

५४४ जालपाद. स,म,र,ग,ग. १३२

स म रो गी गा छे जालपादे तो.

५४५ दारदेहा, दारुदेहा. र,र,र,ग,ग. १४७

दारदेहा बने रार रागागे.

५४६ शिखंडित. ज,स,र,ग,ग. १५८

शिखंडित विषे जा स रा गा गा.

५२५ अपयोधा. स,र,म,ग,ग. २०

अपयोधा विषे सा री मा गं गा.

५२६ अंतर्वनिता. म,स,म,ग,ग. २१

छे अंतर्वनिता मा सी मा गं गे.

५२७ प्रफुल्लकदली. ज,स,म,ग,ग. ३०

प्रफुल्लकदली जा सा मा गा गे.

५२८ लक्षणलीला. भ,त,म,ग,ग. ३९

लक्षणलीला भ ता मा गा गे थी.

५२९ कूलिका, कूलचारिणी. र,ज,म,ग,ग. ४३

कूलिका रचाय रा जा मा गा गे.

५३० विलुलितमञ्जरी. न,ज,म,ग,ग. ४८

विलुलितमंजरी ना ज्मा गा गे.

५३१ भूरिघटक. म,न,म,ग,ग. ५७

छे भूरिघटक मा ना मा गा गे.

५३२ कलितकमलमाला. न,न,म,ग,ग. ६४

कलितकमलमाला मां लावो,

न न म ग ग धरीने शोभावो.

५३३ मालतीमाला. य,य,य,ग,ग. ७४

य या या ग गे मालतीमाला छे.

५३४ वल्लवीविलास. र,य,य,ग,ग ७५

वल्लवी विलासे र या या गा गा.

५३५ विकसितपद्मावली. न,य,य,ग,ग. ८०,

विकसितपद्मावली जो जाणो,

न य य ग गा एम एमां आणो.

५३६ अमोघमालिका. ज,र,य,ग,ग. ८६

अमोघमालिका जरा या गा गे.

५३७ ललितागमन. स,स,य,ग,ग. ९२.

ललितागमने ससा या गा गा.

५३८ संस्तशोभासार. स,न,य,ग,ग. १००

सनयगा गा सस्तशोभासारे.

५३९ ललितालवाल. स,ज,य,ग,ग. १०८

ललितालवाल स जा या गा गे.

५४० वार्त्ताहारी. न,ज,य,ग,ग. ११२

न ज य ग गे कर वार्त्ताहारी.

५४१ उदितदिनेश. स,भ,य,ग,ग. ११६

स भ या उदितदिनेशे गा गा.

१ वाग्वल्लभमां भ ने बदले न केहेछे पण स न य ग ग एवुं रूप नीचे ५४३ मे अके छे

५४२ कडार. य,न,य,ग,ग. १२२

कडारे य न य ग गा आवेछे.

५४३ सौधांघ्रि स,न,य,ग,ग. १२४

स न या ग ग थकी सौधांघ्रि छे.

५४४ जालपाद. स,भ,र,ग,ग. १३२

स भ रो गी गा छे जालपादे तो.

५४५ दारदेहा, दारुदेहा. र,र,र,ग,ग. १४७

दारदेहा बने रा र रा गा गे.

५४६ शिखंडित. ज,स,र,ग,ग. १५८

शिखंडित विषे जा स रा गा गा.

५४७ सुधाधारा. र,न,र,ग,ग. १८७

रा न रा ग ग थकी सुधाधारा.

५४८ कुपुरुषजनिता. न,न,र,ग,ग. १९२

कुपुरुषजनिता न ना र्गा गे.

५४९ कन्दविनोद. भ,म,स,ग,ग. १९९

कन्दविनोदे भो म स गी गा छे.

५५० विलम्बितमध्या. म,स,स,ग,ग. २१७

मा सा सा ग्ग विलम्बितमध्या मां.

५५१ विष्टम्भ. स,स,स,ग,ग. २२०

स स सा ग ग आण विष्टम्भे तुं.

५५२ क्रोशितकुशला. भ,स,स,ग,ग. २२३

क्रोशितकुशला भ स सा गा गे.

५५३ उपहितचण्डी. स,भ,स,ग,ग. २४४

स भ स ग्गा उपहितचण्डीमां.

५५४ श्रितकमला. भ,भ,स,ग,ग. २४७

भू भ्स ग गे श्रितकमला थाशे.

५५५ रथपद, वृत्ता, सुकृति, सुमनक[1], नन्दा[2], वृन्ता[3]. न,न,स,ग,ग. २५६ ४, ७ यति[4].

रथपद, रच न न सा गा गे.

यति धर, श्रुति पर तुं रागे.

१ गणप्रस्तारप्रकाशमाथी. २ मंदारमरंदचम्पूमां ए नाम छे

३ छंदःप्रभाकर. ४ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीका.

५५६ सुमेरुः य,र,त,ग,ग. २७५

सुमेरुनां रच्यो या रा त गी गा.

छंदःप्रभाकरना कर्त्ताए आने १९ मात्रानी जाति मानीने तेमां अंते यगण लाववानो नियम कर्यो छे तो ते चूकथी **सुमेरुवृत्तने** सुमेरु जाति मानी लीधी होय एम सहज-अनुमान थायछे

५५७ उपस्थित, शिखण्डित (शब्दकल्पद्रुममां) ज,स,त,ग,ग. २८६

उपस्थित विषे जा सा त गी गा.

५५८ शालिनी, मालिनी. ४,७ यति. म,त,त,ग,ग. २८९

मा ता ता गा, गा धरो शालिनीमां.

४,७ यति मंदारमरंदचंपू, शब्दकल्पद्रुम, तथा छंदोवृत्तमुक्तावलिमां कही छे. राग केदार ताल चतुश्र जाति उच्छव, विलंबकाळ (संगीतानुसारछंदोमंजरी). मालिनी नाम गणप्रस्तारप्रकाशमा छे.

५५९ प्राकारबंध, ब्राह्मी, विध्यंक्रमाला, गंभीर[1]. } त,त,त,ग,ग. २९३

प्राकारबंधे त ता ता ग गा छे.

[1] चित्रसेन टीकावाळा पिंगळ छंदोग्रंथमां गंभीर नाम छे

५६० विहारिणी, भासिनी. स,ज,त,ग,ग. ३००

रचवा विहारिणी-भासिनीमा;

स ज ता ग गा धरो पाद सीमा.

५६१. वातोर्मी. ४,७ यति. म,भ,त,ग,ग. ३०५

वातोर्मीमां, रच मा भा त गी गा.

मंदारमरंदचंपूमा ४,७ यति कही छे.

शालिनी अने वातोर्मीना मिश्रणथी १४ जातिना उपजातियो थायछे जोडाक्षरो आवेछे त्यां आ शोभेछे एम सुवृत्ततिलकमां लख्युं छे.

५६२ ईहामृगी. ४,७ यति. त,भ,त,ग,ग. ३०९

ईहामृगी, रच ता भा त गी गे.

५६३ धीरा. (भाषाछंदोमंजरी) न,भ,त,ग,ग. ३१२

न भ त ग ग थी धीरा बनेछे.

५६४ परिमलललित. न,न,त,ग,ग. ३२०

परिमलललिते पूर्ण प्रीते,

न न त ग ग करो ठीक रीते.

५६५ विलासिनी. (पादांते यति) ज,र,ज,ग,ग. ३४२

विलासिनी रचो ज रा ज गा गे.

५६६ विश्वविराट, मदान्धा.[1] म,स,ज,ग,ग. ३४५

आणो विश्वविराट मांह प्रीते,

मा सा जा ग ग माप तो सुरीते.

१ छंदोलता

५६७ विमला. स,स,ज,ग,ग. ३४८

विमला रचवा स सा ज गी गा.

५६८ सरोजवनिका. ज,स,ज,ग,ग. ३५०

सरोजवनिका ज सा ज गी गे.

५६९ अमन्दपाद. भ,स,ज,ग,ग. ३५१

भू स्ज ग ग अमन्दपादमां छे.

५७० पंचशाखी. न,स,ज,ग,ग. ३५२

न स ज ग ग थाय पंचशाखी.

५७१ इन्द्रवज्रा. ५,६ यति. त,त,ज,ग,ग. ३५७

ता ता ज गा गे, कर इन्द्रवज्रा.

छंद शास्त्रमा पादान्ते यति केहेछे श्रुतबोधमां पांचमे यति छे मंदारमरंदचम्पूमां ५, ६ ए यति केहेछे. रागिणी नटभैरवी, ताल खंडषष्ठी-थकी गवायछे. (संगीतानुसारछंदोमंजरी)

५७२ उपेन्द्रवज्रा. ५, ६ यति ज,त,ज,ग,ग. ३५८

उपेन्द्रवज्रा, ज त जा ग गे थी.

मंदारमरंदचम्पूमां ५, ६ यति केहेछे, छंद शास्त्रमा पादान्ते यति

फरेछे श्रुतबोधमां पांचमे यति छे, तेम बोलवामां पण वपरायछे

वामन शिवराम आप्टेना कोषमां इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्रा बन्नेमां पांच छ ए यति कही छे, परनु छंदोवृत्तमुक्तावलिमां बन्नेमां यति कही नथी.

५७३ *उपजाति[1], उपेन्द्रमाला[2], आख्यानकी.

ता ता ज गी गा कदि पाद थाशे,
ज ता ज गी गा वळी तो रचाशे;
ए मिश्रणे तो उपजाति जाणो,
त्रिष्टुपमांथी कवि! जोइ आणो.

* जुओ १२ अक्षरना मायावृत्त उपरनी आ विषेनी टीप

१ संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे राग सिंधुरो कानरो, ताल संकीर्ण जाति हंसनाद

२ आ नाम मंदारमरंदचम्पूमां आप्यु छे

आ स्थाने नीचे लखेला नाम पिंगळोमां मळी आवेछे, अने ते इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्राना मिश्रणथी थयेला छे

इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्रा मळी १४ भेद थायछे तेना उदाहरण अने प्रस्तार नीचे प्रमाणे छे, तेमां गुरुनी जग्याए इन्द्रवज्रा अने लघुनी जग्याए उपेन्द्रवज्रा जाणवा —

SSSS चारे चरण इन्द्रवज्रानां.

१ ।SSS कीर्त्ति. १ उपेन्द्रवज्रा, २ इन्द्रवज्रा,
ज,त,ज,ग,ग. त,त,ज,ग,ग.
३ इन्द्रवज्रा, ४ इन्द्रवज्रा.
त,त,ज,ग,ग. त,त,ज,ग,ग.

२ S।SS वाणी. १ इन्द्रवज्रा, २ उपेन्द्रवज्रा
३ इन्द्रवज्रा, ४ इन्द्रवज्रा.

-- आना १४ भेदना उदाहरण छंद प्रभाकर पृष्ठ १५९--६१ मे छे

वाग्वल्लभमां कीर्त्ति नाम नथी तेथी वाणीथी प्रारंभ थतां क्रम फरी जायछे एना १२ मे अंके वृद्धि छे अने १४ मे अंके प्रमृणी छे.

३	।।SS माला.	१ उपेन्द्रवज्रा,	२ उपेन्द्रवज्रा,
		३ इन्द्रवज्रा,	४ इन्द्रवज्रा.
४	SS।S शाला.	१ इन्द्र ,,	२ इन्द्र ,,
		३ उपेन्द्र ,,	४ इन्द्र ,,
५	।S।S हंसी.	१ उपेन्द्र ,,	२ इन्द्र ,,
		३ उपेन्द्र ,,	४ इन्द्र ,,
६	S।।S माया.	१ इन्द्र ,,	२ उपेन्द्र ,,
		३ उपेन्द्र ,,	४ इन्द्र ,,
७	।।।S जाया.	१ उपेन्द्र ,,	२ उपेन्द्र ,,
		३ उपेन्द्र ,,	४ इन्द्र ,,
८	SSS। बाला.	१ इन्द्र ,,	२ इन्द्र ,,
		३ इन्द्र ,,	४ उपेन्द्र ,,
९	।SS। आर्द्रा.	१ उपेन्द्र ,,	२ इन्द्र ,,
		३ इन्द्र ,,	४ उपेन्द्र ,,
१०	S।S। भद्रा.	१ इन्द्र ,,	२ उपेन्द्र
		३ इन्द्र ,,	४ उपेन्द्र ,,
११	।।S। प्रेमा.	१ उपेन्द्र ,,	२ उपेन्द्र ,,
		३ इन्द्र ,,	४ उपेन्द्र ,,
१२	SS।। रामा.‡	१ इन्द्र ,,	२ इन्द्र ,,
		३ उपेन्द्र ,,	४ उपेन्द्र ,,
१३	।S।। ऋद्धि.§	१ उपेन्द्र ,,	२ इन्द्र ,,
		३ उपेन्द्र ,,	४ उपेन्द्र ,,

‡ गणप्रस्तारप्रकाशमां पावन.

§ गणप्रस्तारप्रकाशमां बुद्धि.

१४ ऽ।।। सिद्धि.† १ इन्द्र ,, २ उपेन्द्र ,,
३ उपेन्द्र ,, ४ उपेन्द्र ,,

।।।। उपेन्द्रवज्रानां चारे पाद.

† प्राकृत पिंगलसूत्रना कर्त्ता बुद्धि नाम आपेछे तथा गणप्रस्तार प्रकाशना ऋद्धि छे.

आ उपरथी जणायछे के, जो बेज वृत्तनु मिश्रण थाय तो तेना मात्र १४ भेद थाय, पण बे करता वधारे एटले त्रण के चार वृत्तनुं मिश्रण थाय तो तेना घणा भेद थायछे.

गुरु अने लघु एवा बेज चिन्ह छे, माटे बे वृत्तना मिश्रणना भेदनो प्रस्तार आहिं जणाव्या प्रमाणे थइ शकेछे, पण बे उपरांतनु चिन्ह जणाववानु साधन नथी तेथी तेनो प्रस्तार थइ शकतो नथी पण त्रण वृत्तना मिश्रणनुं उपजाति वृत करता बे पद तो एकना आवे अने अकेकुं बीजानु आवे त्यारे चार पाद थाय तेनी चालवणी करता चार मुख्य भेद किया किया मिश्रणथी थाय ते नीचे बतावबामा आव्यु छे.

पादांग.	१ भेद	२ भेद.	३ भेद.	४ भेद.
१	इ.	उ.	उ.	इ.
२	इ.	इ.	वं.	वं.
३	उ.	इ.	इ.	उ.
४	वं.	वं.	इ.	इ.

उपर प्रमाणेनुं मिश्रण जोवामा आवेछे, पण एम करवु उचित नथी एम बार अक्षरना अंक ६९६ना माया वृत्तनी टीप जोवाथी जणाशे एटले आ ठेकाणे ए विषे विस्तार कर्यो नथी.

६७४ पद्दुपट्टिका. स,ज,ज,ग,ग. ३६४.

पट्टुपट्टिका स ज जा ग गे थी.

उपस्थिता. ६, ९, यति. त,ज,ज,ग,ग. ३६९

ता जा ज ग गा थी, उपस्थिता छे.

श्रुतकीर्त्ति, अनवसिता, माणिक्यमाला.[1] } न,य,भ,ग,ग. ४०० ९,६ यति.

न य भ ग गा, लावो श्रुतकीर्त्ति.

1. आ नाम मंदारमरंदचंपूमा छे, वळी तेमा ५,६ उपर यति लखी छे.

५७७ वर्णवलाका. स,स,भ,ग,ग. ४१२

स स भा ग ग थी वर्णवलाका.

५७८ अमितशिखंडी. स,स,भ,ग,ग. ४१५

छे अमितशिखंडी स्सा भ गी गे.

५७९ माधो (गणप्रस्तारप्रकाश) स,भ,भ,ग,ग. ४३६

स भ भा गा ग थवो रच माधो.

५८० नीलसरूपी[1], नागसरूपी, दोधक, बन्धु, बधा. } भ,भ,भ,ग,ग. ४३९

भो भ भ गा ग थी नीलसरूपी,

दोधक बन्धु ज नागसरूपी;

पादान्ते यति होवानु छंद गावमा लखेले. श्रुतबोधनी टीकामा ७,४ ए यति कही छे. छंदोवृत्तनुक्रमणिकामां आमा कहेला गणोवाळु नीलसरोरुह वृत्त छे तेमा यति पाळी नथी. बधा नाम मागधी छंद रत्नमां छे. मागधी पिंगळ छंदोग्रथमा पाठांतरे अन्ते बे लघु आणवा पण मत जणाय छे.

संगीतानुसार छंदोमंजरीप्रमाणे राग दरबारी कानडो, ताल चतुर जाति त्रिताल, मात्रा १६ विलम्बकाळ

५८१ रोधक न,भ,भ,ग,ग. ४४०

५८२ स्वागता[1], स्वगता[2], सगता[3], स्वागत. } र,न,भ,ग,ग. ४४३

स्वागता रच र ना भ ग गे थी.

१ मंदारमरंदचंपू, पिंगळछंद सूत्र अने वृत्तदर्पणमा पादान्ते यति कही छे.
२ संगीतानुसारछंदोमंजरी प्रमाणे राग छाया, ताल चतुश्र जाति तेताला, मात्रा १६, मध्य काळ ३ गणप्रस्तारप्रकाश प्रमाणे.

५८३ कुपुरुषजनिता. न,न,भ,ग,ग. ४४८

कुपुरुषजनिता न न भ ग्गा.

५८४ मदनमाला. न,र,न,ग,ग. ४७२

न र न गा ग थी मदनमाला.

५८५ उदितविजोहा. त,त,न,ग,ग. ४८५

ता ता न गी गे उदितविजोहा.

५८६ अनुकूला, सांद्रपदा. भ,त,न,ग,ग. ४८७

भू त न गा गे कर अनुकूला.

राग शंकरा, ताल चतुश्र जाति तेताला, मात्रा १६ मध्यकाळ (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

५८७ श्री, मौक्तिकमाला[1], कुड्मलदन्ती[2] } भ,त,न,ग,ग. ४८७ ५,६, यति.

भू त न गा गा, शॅर छ यति श्री

मौक्तिकमाला, रच तुं मतिथी.

अनुकूला प्रमाणे शंकरा रागथी गवायछे तेमा यति कही नथी, अने आमा ५, ६ यति छे एटलोज फेर छे

१ मंदारमरंदचंपूमा ५ ने ७ यति कही छे, पण ५, ६ जोइये
२ पिंगळ छंद सूत्रमा आ नाम छे अने ५, ६ यति कही छे.

५८८ मात्रा. (वाग्वल्लभ.) म,त,न,ग,ग. ५०५

मात्रा मांह म न न ग ग आणो.

५८९ सुवृत्ति. स,न,न,ग,ग. १०८

सननागगथी रच सुवृत्ति.

छंदार्णवमां आनु माप ननसगग आप्यु छे. छंदःप्रभाकरमां पण आ मापवाळा वृत्तने चृत्ता अथवा वृन्ता वृत्त कह्युं छे अने ए मापवाळा अंक ५५५ मे रूप २५६ जे नाम आप्या छे तेथी छंदार्णवमां आपेलुं माप भूलवाळुं जणायछे.

५९० भुजंगी,[1] कर्ण, सेहेल.[2] ६, ९ यति. य,य,य,ल,ग. ५८६

भुजंगीज कर्णे, ययायालगी.

१ वाग्वल्लभ पृष्ट ५०मे तथा छंदःप्रभाकर पृष्ट १६८मे आ नाम छे.

२ प्रवीणसागर लेहेर १२मीमा आ नाम छे.

५९१ जवनशालिनी. न,र,य,ल,ग. ६००

जवनशालिनी नरायालगे.

५९२ प्रस्मरकरा. (वाग्वल्लभ.) न,स,य,ल,ग. ६०८

प्रस्मरकरा नसायालगे.

५९३ गल्लक. (वाग्वल्लभ.) न,न,य,ल,ग. ६४०

ननयलग करजे गल्लके.

५९४ प्रपातावतार. य,य,र,ल,ग. ६५०

प्रपातावतारे यायरालगी.

५९५ गह्वर. र,र,र,ल,ग. ६५९

गह्वरे आणवा राररालगी.

५९६ वारयात्रिक. भ,र,र,ल,ग. ६६३

भाररलागछे वारयात्रिके.

५९७ ललित, भाविनी, कनकमंजरी, भामिनी, इन्दिरा, शुद्धकामदा,[1] विबुधवंदिता, राजहंसी.[2] } न,र,र,ल,ग. ६६४ ६, ९ यति.

ललित थायछे, ना र रा ल गे,
कनकमंजरी, इन्दिरा चंग,
विबुधवंदिता, भामिनी भणो,
यति छये धरी, भाविनी गणो.

१ संगीतानुसार छंदोमंजरी अने छंद प्रभाकरमां आ नाम आप्युं छे आ वृत्त राग प्रदीपक, ताल चतुश्र जाति त्रेताल, मात्रा १६ मध्य काळमां गाई शकाय छे

२ मंदारमरंदचम्पूमा माप न र र ग ग आप्यु छे ते भूलछे, तेने बदले उदाहरणमां अने ल ग छे ते खरु छे

५९८ श्येनिका, श्येनी, †सेनक | र,ज,र,ल,ग. ६८३
श्रेणिका, श्रेणी, ताल[1]. | ५, ६ यति.

श्येनिका रचो, र जा र ला ग थी.

‡ गणप्रस्तारप्रकाशमा आ नाम छे　छंदोमंजरीमा "श्रेणी" नाम छे
१ छंदोवृत्तमुक्तावलिमा आ गणोथी ताल वृत्त कह्युं छे तेमा यति कही नथी

५९९ सीधु. (वाग्वल्लभ)　　स,भ,र,ल,ग. ६९२

स भ रा ला ग कराय सीधुमां.

६०० रथोद्धता[1], रथोध्रता[2].　　र,न,र,ल,ग. ६९९

रा न रा ल ग थकी रथोद्धता.

१राग पुन्नाग वराड, ताल चतुश्रजाति तेताला, मात्रा १६ मध्य काळ (संगीतानुसार छंदोमंजरी)　२ गणप्रस्तारप्रकाश

६०१ प्रतारिता.　　स,न,र,ल,ग　७००

स न रा ल ग थकी प्रतारिता.

६०२ नीला.　　त,न,र,ल,ग　७०१

नीला रच त न रा ल गा थकी.

६०३ सुभद्रिका, [1]सुमुद्रिका, | न,न,र,ल,ग. ७०४
भद्रिका.[2] | ६, ५ यति

न न र ल ग थकी सुभद्रिका.

राग कौसीकानडा (श्रीरंजनी) ताल चतुश्र जाति आडा चौताल, मात्रा १४ मध्यकाळ (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

१ अपरांतिका अथवा परातिका जाति जे वैतालीय भेदमां छे तेनी साथे मळेछे छंद शास्त्रमां पादाते यति लखेछे श्रुतबोध टीकामा ७, ४, यति लखेछे.

२ छंदार्णव तथा वाग्वल्लभ (सुमुद्रिका)

६०४ सौरभवर्द्धिनी. न,य,स,ल,ग. ७२०

न य स ल गे सौरभवर्द्धिनी.

६०५ भुजगहारिणी. न,र,स,ल,ग. ७२८

भुजगहारिणी न र सी ल गे.

६०६ उपचित्र,सुचित्र,नरेश. ६,५ यति. स,स,स,ल,ग. ७३२

स स सा ल ग थी, उपचित्र छे,

५
षट पांच परे, यति मित्र छे.

वाग्वल्लभमां यति कही नथी पिंगळादर्शमा उपचित्रा नाम आपी छेने यति कही छे

६०७ सम्मद्‌मालिका. न,स,स,ल,ग. ७३६

न स स ल ग सम्मद्‌मालिका

६०८ कनककामिनी. ज,त,स,ल,ग. ७४२

ज ता स ला गे कनककामिनी.

६०९ उपदारिका[१], रंजिता[२]. ५,६ यति. र,ज,स,ल,ग ७४७

रा ज सा लगे तुं उपदारिका

५
दे शरे छये, विरति रंजिता.

१ उपदारिका अने द्वारिकानु मिश्रण थवाथी १४ प्रकारना उपजाति भेद थायछे, पण तेना नाम लभ्य नथी संगीतानुसार छंदोमजरीमां आनु नाम ललित छे राग कामोदी, ताल चतुश्र जाति त्रेताला, मात्रा १६ मध्यकाळ.

२ आ नाम तथा यति मंदारमरंदचंपूमां छे.

६१० दारिका, नन्दिनी[1]. ५,६ यति. म,ज,स,ल,ग. ७४८

स ज सा ल गे रच तु दारिका;
शर ने छये, यति वदे टीका.

१ मंदारमरंदचंपूमां ए नाम तथा यति छे. वाग्वल्लभमां दारिकामां यति कही नथी.

६११ मालविका. त,ज,स,ल,ग. ७४९

छे मालविका त ज स ला ग थी.

६१२ नाभस. ज,ज,स,ल,ग. ७५०

ज जा स ल गा रच तुँ नाभसे.

६१३ सौभगकला. भ,ज,स,ल,ग. ७५१

सौभगकला भ ज स ला ग थी.

६१४ वीवध. न,ज,स,ल,ग. ७५२

न ज स लगी रच तुँ वीवधे.

६१५ आशापाद. म,भ,स,ल,ग. ७५३

आशापादे म भ स ल गा धरो.

६१६ भुजलता. न,स,त,ल,ग. ८००

रच भुजलता ना सा त ल गे.

६१७ सायक. स,भ,त,ल,ग. ८१०

रचजो सायक सो भा त ल गे.

६१८ कलस्वनवंश[1], पायका. (ग. प्र. प्र.) भ,भ,त,ल,ग. ८२३

वे भ कलस्वनवंशे त ल गा.

१ वाग्वल्लभ.

६१९ मदनया. न,न,त,ल,ग. ८३२

रच तुँ मदनया नान्त ल गे.

६२० मोटनक, [1]मोटक, [2]मनिमाळ. त,ज,ज,ल,ग. ८७७

ता जा ज लगी कर मोटनके.

1 छंदोलतामांथी 2 आ नाम प्रवीणसागरमां छे कोइ पांचे यति केहेछे

६२१ खटका,हरिणी. (छंद प्रभाकर.) ज,ज,ज,ल,ग. ८७८

ज जा ज लगे रचजो खटका.

६२२ शल्कशकल. भ,ज,ज,ल,ग. ८७९

शल्कशकले भ ज जा ल ग छे.

६२३ सुमुखी. ७, ४ यति न,ज,ज,ल,ग. ८८०

न ज ज लगे रच तुं सुमुखी.

*छंदशास्त्र (कलकत्तानी छापेली प्रति) उपरना बेचर रामदेवना टिप्पण (पृ २२२) प्रमाणे, पण "मंदारमरंदचंपू" पृष्ट १६मां ६,५ उपर अने वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीमा ५,६ उपर यति पृष्ट ४३मे कही छे. छंदोवृत्त मुक्तावलीमा यति कही नथी.

६२४ जिह्माशया. त,भ,ज,ल,ग. ८८५

जिह्माशया त भ ज ला ग धरो.

६२५ चपला. ६,५ यति. भ,भ,ज,ल,ग. ८८७

भू भ ज ला ग थी, रचो चपला.

६२६ कुशलकलावतिका. म,न,ज,ल,ग. ८८९

म्ना ज्ला गे कुशलकलावतिका.

६२७ अर्धशिखा. भ,न,ज,ल,ग. ८९१

भा न ज ल ग कर अर्धशिखा,

६२८ हरिकान्ता. स,भ,त,ल,ग. ९२०

हरिकान्ता रच सा भा त लगे.

६२९ निरवधिगति. न,स,भ,ल,ग. ९२८

निरवधिगति ना स भ लगे.

६३० हरिरूपक, हरिरूप. र,न,भ,ल,ग. ९९५

छे हरिरूपक रा न भ ल गे.

६३१ दामघटिता. न,न,भ,ल,ग. ९६०

न न भ ल ग थी दामघटिता.

६३२ समित्. न,य,न,ल,ग. ९७६

समित बनावो न य न ल गे.

६३३ सामपदा. म,स,न,ल,ग. ९८५

जाणो सामपदा म स न ल गे.

६३४ अशुविलास. ५,६ यति. न,त,न,ल,ग. १०००

अशुविलासे, न त न ल ग छे.

६३५ भ्रमरविलसिता[1], भ्रमरविलसित, [2]भ्रमरललित, [3]भ्रमरावित. } म,भ,न,ल,ग. १००९ ४,७ यति.*

मा भ्रा ला गे, भ्रमरविलसिता.

१ राग हिंडोळ, ताल चतुश्र जाति तेताला, मात्रा १६ मध्यकाळ (संगी तानुसार छंदोमंजरी २ छंदःशास्त्रमा भ्रमरललित नाम अने ४,७ यति कही छे. ३ गणप्रस्तारप्रकाश

* मंदारमरंदचंपूमा पण आ प्रमाणे यति छे. वाग्वल्लभमां यति नथी कही.

६३६ काहली. स,भ,न,ल,ग. १०१२

स भ ना ला ग धर प्रति पदे,

रचना काहली सरस वदे;

१४
मनु मात्रा चरण पण गणे

कवि को' जाति कल प्रकरणे.

"वृत्तरत्नाकर"नी नारायणभट्टीकामा आ मात्रामेळ जाति कही छे.

६३७ दमनक. ४,७ यति न,न,न,ल,ग, १०२४

दमनक, रच न न न ल गे.

छंदःशास्त्र, प्राकृतपिंगळसूत्र, वाणीभूषण, वाग्वल्लभ अने छंदोवृत्त मुक्तावलीमां आ यति पाळी नथी.

६३८ गंभारि. र,र,र,ग,ल. ११७१

रा र रा गा ल थी थाय गंभारि.

६३९ कामुकलेखा. भ,म,स,ग,ल. १२२३

कामुकलेखा भू म स गा ले थाँ.

६४० संश्रयश्री. त,त,त,ग,ल. १३१७

छे संश्रयश्री त ता ता ग ला थाँ.

६४१ सैनिक-[1] सेनिका. ज,र,ज,ग,ल. १३६६

रचाय सैनिके ज रा ज गाल.

१ वाणीभूषणमा तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमा गुरु लघुने क्रमे ने लघु गुरुने क्रमे एम बन्ने रिते ११ अक्षरना छंदने सेनिका एवु नाम आप्युं छे, पण आ पिंगळमा गणना भेदने लीधे श्येनिका ने श्येनी वृत्तने अंक ५९८ मे जूदु गण्युं छे

६४२ पिचुल. स,स,ज,ग,ल. १३७२

पिचुले रचवा स सा ज गा ल.

६४३ कालवर्म. न,भ,ज,ग,ल. १४००

न भ ज गा ल रच कालवर्म.

६४४ सान्द्रपद. चोथे यति. भ,त,न,ग,ल. १५११

सान्द्रपदे, आण भ त न गा ल.

छंदोमंजरीना परिशिष्टमा छे पण यति नथी

६४५ सालन. (गणप्रस्तार प्रकाश) भ,भ,भ,ल,ल. १५९१

भू भ भ लो ल थकी तो सालन.

६४६ शेषापीड. म,भ,स,ल,ल. १७७७

शेषापीडे म भ स ल ला धर.

६४७ कोलिचर.　　　　न,य,न,ल,ल. २०००.

न य न ल ल कोलिचर कर.

६४८ अगरिम.　　　　न,न,न,ल,ल. २०४८

न न न ल ल थकी अगरिम.

१२ जगतीछंद. ४०९६ भेद छे. १२ वर्ण.

६४९ विद्याधार, विद्याधर, विद्याधारी, †विद्याहार. } छंदोलतामां ४,४,४ यति कही छे　　　　म,म,म,म. १

मा मा मा मी, विद्याधारे, वारे आवे,

चारे चोगे, चारे शोधी, छेदो लावे,

† छंदोवृत्तमुक्तावलीमा आ नामनुं वृत्त आज मापनुं छे, पण तेमा यति कही नथी, परंतु वाग्वल्लभ इत्यादिमा यति कही छे

६५० भासितभरण.　　　　भ,स,म,म, ३१

भासितभरणे भा सा मा मा आणो.

६५१ विषमव्याली　　　　न,स,म,म. ३२.

न स म विषमव्यालीमां छेलो मा.

६५२ शय्या.　　　　त,न,म,म. ६१

शय्या रच त न मा मा आणी पोते.

६५३ मिथुनमाली.　　　　न,न,म,म. ६४

रच तुं मिथुनमाली-ना ना मा मे.

६५४ किंशुकास्तरण　　　　र,स,य,म. ९१

किंशुकास्तरणे र सा या मा आवे.

६५५ दोलीला.　　　　स,स,य,म. ९२

स स या म धरी बनावो दोलीला.

६५६ विशालाम्भोजाली, अम्भोजाली. त,स,य,म. ९३

ता सा य म थकी विशालाम्भोजाली.

६५७ वीणादण्ड. ज,स,य,म. ९४

ज सा य म धरो तमे वीणादण्डे.

६५८ मत्ताली. (वाग्वल्लभ) ४, ८ यति. म,त,य,म. ९७

मत्ताली मां, मा त य मा छेडो चोथे.

६५९ वसनविशाला. न,न,य,म. १२८

न न य वसनविशाला छेलो मा.

६६० लीलारत्न. म,म,स,म. १९३

लीलारत्ने आणो म म सा मा खोळी.

६६१ कान्तोत्पीडा. भ,म,स,म. १९९

भा म स माथी थायज कान्तोत्पीडा.

६६२ जलधरमाला. ४,८ यति[1] म,भ,स,म. २४१

मा भा सा मा, जलधरमाला चोथे.

१ शब्दकल्पद्रुम, अने छंदोमजरी प्रमाणे. वाग्वल्लभ इत्यादिमा यति कही नथ

६६३ विवरविलसित. त,न,स,म. २५३

ता ना विवरविलसिते छे सा मा.

६६४ शुद्धान्त. न,न,स,म. २५६

न न स म ठिक रचजो शुद्धान्ते.

६६५ सुखानंद[1]. य,र,त,म. २७४

सुखानंदे रचो या रा त मा शोधी.

१ छंदःकामदुघावत्सेना कर्त्ता सुखानंदे पोताना नामनो रच्यो छे.

६६६ साक्षी. स,स,ज,म. ३४८

स स जा म धरो सदाय साक्षीमां.

६६७ स्रग्वर्षिणी. स,ज,ज,म. २६४

स्रग्वर्षिणी रच सो ज जा माथी.

६६८ धवलकरी. न,न,भ,म. ४४८

रच धवलकरी न न भा माथी.

६६९ लुम्बाक्षी, लुब्धाक्षी. स,स,न,म. ४७६

स स ना म थकी रच तुं लुम्बाक्षी.

६७० मलयजसुरभि. म,न,न,म. ५०५

मा ना न्मा मलयजसुरभिमां छे.

६७१ वाहिनी. ७, ५ यति. (पिंगळछंद सूत्रे)त,म,म,य. ५१७

छे वाहिनीमां साते, दे ता म मा या.

६७२ पुट, श्रीपुट[1], स्फूट. ८,४ यति. न,न,म,य. ५७६

पुट वसु[८] युग[४] ना ना, मा य थी छे.

१ मंदारमरंदचंपूमां ए नाम छे अने ते तथा छंदोमंजरीनां परिशिष्ट अने शब्दकल्पद्रुममां पण एज यति छे.

वृत्तरत्नाकरमां मुनि[७] शर[५] विरति एम कहीने वसु[८] युग[४] इति पाठ एम छे.

६७३ वैश्वदेवी[1]. ५,७ विराम. म,म,य,य. ५७७

मा मा या ये छे, वैश्वदेवी शरे[५] तो.

राग बेहागडा, ताल विजयानंद, मात्रा ११ विलंब काळ.

(संगीतानुसार छंदोमंजरी)

१ छंद शास्त्र, छंदोमंजरी, प्राकृत पिंगळसूत्र अने मंदारमरंदचंपूमां पण आ प्रमाणे यति छे

६७४ आधिदैवी. (वाग्वल्लभ) ६,६ यति. य,म,य,य. ५७८

य मा या या छट्ठे, यति आधिदैवी.

६७५ भुजंगप्रयात[1], भुयंगपयाउ[2]. य,य,य,य.६५८

य या या य आवे भुजंगप्रयाते.

१ मागधी "छंद'शतक" आना दोटा=छ य गणवाळाने क्रीडाचक्र अने वमणा=आठ यगणवाळाने महाभुजगप्रयात केहेछे. पादान्ते यति.

२ राग मालकौंस, ताल खंड जाति एकताल (संगीतानुसार छंदोमंजरी.)

६७६ समयप्रहिता. स,स,य,य. ६०४

समयप्रहिता ससा या य थी छे.

६७७ मिहिरा. न,स,य,य. ६०८

रच तुं मिहिरा नसा या य थी तो.

६७८ कलवल्लीविहंग. ज,त,य,य. ६१४

जता य या छे कलवल्लीविहंगे.

६७९ अस्त्रधारा, असुधारा. (वाग्वल्लभ) ज,र,र,य. ६६२

६८६ कुमुदिनीविकाश. ज,त,स,य. ७४२

जता स या छे कुमुदिनीविकाशे.

६८७ दल[1]. भ,ज,स,य. ७५१

भू ज स य आण दल वृत्तमांहे.

[1]कवि दलपतरामे आ वृत्त पोताना नामनुं नवु बनाव्यु छे.

६८८ वसन्तहास. म,भ,स,य. ७५३

मो भा सा या कर तुं वसन्तहासे.

६८९ मणिमाला[1], पुष्पविचित्रा. ६,६यति. त,य,त,य. ७८१

ता या त य आणो, छट्ठे मणिमाला.

[1] मंदारमरदचंपूमा तथा शब्दकल्पद्रुममां ६,६, यति छे

६९० सिक्तमणिमाला, श्वेतमणिमाला. भ,य,त,य. ७८३

सिक्तमणिमाला भा या त य थी छे.

[illegible]९१ विद्रमदोला. न,य,त,य. ७८४

न य त य थी थाशे विद्रमदोला.

[illegible]खशैल. म,भ,त,य. ८१७

मा भा ता या धर शोधी सुखशैले.

[illegible] करमाला. स,भ,त,य. ८२०

करमाला कर सा भा त य आणी.

विजयपरिचया. न,न,त,य. ८३२

विजयपरिचयामां न न ता या.

कासारक्रान्ता. म,त,ज,य. ८६५

कासारक्रान्ता म त जा य थकी छे.

६९६ माया, गौरी[1]. त,ज,ज,य. ८७७

माया रचजो त ज जा य धरीने.

[1] छंद'प्रभाकरमा लखेछे के आ वृत्त "रामचंद्रिका"मा जोवामा आवेछे.

६९७ परिलेख[1], धारी. ज,ज,ज,य. ८७८

ज जा ज य आण सदा परिलेखे.

१ जे बे वृत्तना घणुं करीने पेहेला अक्षर गुरु अथवा लघु होय, अने बाकीना अक्षर विशेषे करीने सरखा होय तो तेवां बे वृत्तना मिश्रणथी उपजाति वृत्त बनेछे; जेमके-माया (अं. ६९६) अने परिलेख (अं. ६९७) ए बे वृत्तमा पेहेलानो प्रथम अक्षर गुरु छे, अने बीजानो प्रथम अक्षर लघु छे, अने बाकीना बंने वृत्तना बधा अक्षर एक सरखा छे, तो ए बे वृत्तना मिश्रणथी उपजाति थायछे. तेवीज रीते, धृष्टपद(अं.७०३) अने दृतपदना (अं.७०४) मिश्रणथी पण उपजाति थायछे, अने ते प्रत्येक चौद चौद थायछे. विषमपदना प्रकरणमां असंकीर्णना पेटामां कहेलां वृत्त उपजाति गणाय. तेमज विषमाक्षरपादवाळां वृत्तोनुं मिश्रण थवाथी पण उपजाति थायछे. जेमके, (अं.७२८) वंशास्थना अक्षर बार छे, अने उपेन्द्रवज्राना(अं.५७१) अक्षर ११ छे, तो पण ते बेनुं मिश्रण थवाथी उपजाति थायछे, तेनुं उदाहरण, वाल्मीकी रामायणना सुन्दर काण्डमां नीचे प्रमाणे छेः–

नमोऽस्तु वाचस्पतये सचाक्रिणे,	१२	वंशस्थनुं.
स्वयम्भुवे चापि हुताशनाय;	११	उपेन्द्रवज्रानुं.
अनेन चोक्तं यदिदं ममाग्रतो,	१२	वंशस्थनुं.
वनौकसां तच्च तथास्तु नान्यथा.	१२	वंशस्थनुं.

वळी इन्द्रवंशा, उपेन्द्रवज्रा, अने वंशस्थ ए त्रणना मिश्रण थकी उपजाति थायछे, तेनुं उदाहरण भागवतना १० स्कंधमां नीचे प्रमाणे छे.

(भागवत स्कंध १० पूर्वार्द्ध अध्याय १२ मो श्लोक ३६)

तावत्प्रविष्टा स्त्वसुरोदरान्तरे, १२ इन्द्रवंशानुं.
परं न गीर्णाः शिशवः सवत्साः ११ उपेन्द्रवज्रानुं.
प्रतीक्षमाणेन बकारिवेशनं, १२ वंशस्थनुं.
हतस्वकान्तस्मरणेन रक्षसा. १२ वंशस्थनुं.

इन्द्रवज्रा, इन्द्रवंशा, उपेन्द्रवज्रा अने वंशस्थनुं मिश्रण थवाथी उपजाति थायछे तेनुं उदाहरण प्रबोधचंद्रोदय नाटकमां नीचे प्रमाणे छे. अंक बीजो (प्रवेशक) श्लोक १२मो.

विद्याप्रबोधोदय जन्मभूमि, ११ इन्द्रवज्रानुं.
वाराणसी ब्रह्मपुरी दुरत्यया; १२ इन्द्रवंशानुं.
अनः कुलोच्छेद विधिं सिधित्सु, ११ उपेन्द्रवज्रानुं.
र्निवस्तु मत्रेच्छति नित्यमेवसः. १२ वंशस्थनुं.

उपरना उदाहरणो उपरथी एम सिद्ध थायछे के, प्राचीन विद्वानोए एम मान्युं छे के, समाक्षरवृत्तना मिश्रणथी उपजाति थाय, अने वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां कह्युं छे के- त्रिष्टुपमां वृत्तोनां मिश्रण थवाथी जेम उपजाति थायछे, तेमज बार तेर अक्षरना समानअक्षरना तथा समान यतिवाळा पादोना मिश्रणथी पण उपजाति थायछे. एटले विषम अक्षरना विषम यतिवाळा, तेमज बे करतां वधारे वृत्तना मिश्रणथी उपजाति वृत्त थायछे, एम रामायण, भागवत अने प्रबोधचंद्रोदयनां द्रष्टांतो सहित उपर जे लखवामां आव्युं छे, ते मतनुं नारायणभट्टीना अभिप्रायथी खंडन थायछे. एटले एवा प्रकारनी उपजाति करवी योग्य नथी, एम अभिप्राय जणावेछे ते उचित छे.

६९८ वस्रा. म,ज,ज,य. ८७९

भो ज ज य थी बनशे कवि! वस्रा.

६९९ तामरस, [1]अभिनवतामरस, ललितपद[2]. } न,ज,ज,य. ८८०

न ज ज य थायज तामरसे तो.

१ छंदोलता अने वृत्तरत्नाकरमा अभिनवतामरस'- भाषाछंदोमंजरीना आपमा त्रण नगण पछी एक जगण छे पण कवितामां तेम नथी माटे ए भूल जणायछे २ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी प्रमाणे

७०० कुंभोध्नी. म,भ,ज,य. ८८१

कुंभोध्नीमां म भ ज या करजो जी.

७०१ शरमेया. स,भ,ज,य. ८८४

शरमेया रच स भा ज य आणी.

७०२ नीरान्तिक. त,भ,ज,य. ८८५

नीरान्तिके त भ ज या ठीक आवे.

७०३ धृष्टपद. भ,भ,ज,य. ८८७

धृष्टपदे रच भ भा ज य आणी.

७०४ द्रुतपद[1], द्रुतपा. न,भ,ज,य, ८८८

द्रुतपदे रच न भा ज य शोधी.

१"शब्दकल्पद्रुममा" आ वृत्तना गण न भ न य छे, पण तेने बीजा ग्रंथोनु प्रमाण नथी.

७०५ अर्दितपाद. र,न,ज,य. ८९१

रा न जा य धर तुं अर्दितपादे.

७०६ परितोषा. स,न,ज,य. ८९२

स न जा य थकी रचो परितोषा.

७०७ छलितकपद.   त,न,ज,य. ८९३

आणो छलितकपदे त न जा या.

७०८ उपधान.   ज,न,ज,य. ८९४

ज ना ज य थी उपधान रचेछे.

७०९. पथिकान्ता.   भ,न,ज,य. ८९९

भा न ज य थकी रचो पथिकान्ता.

७१० नयमालिनी, वनमालिका, नवमालिनी, नवमालिका, नवमालती.   न,ज,भ,य. ९४४ ८,४ यति. [1]नारा. भट्टी अने छंद शास्त्र प्रमाणे.

वसु नवमालिका न,ज भ य थी.

१ सूत्रने अनुसरना केटलाक ५,७ यति मानेछे, वळी मंदारमरंदचपूमां ७, ५ उपर यति कही छे.

७११ कुसुमविचित्रा. ६, ६ यति.[1]   न,य,न,य. ९७६

कुसुमविचित्रा, पटे न य ना ये.

१ मंदारमरंदचपूमा पण एज प्रमाणे यति छे.

७१२ अर्पितमदना.   भ,स,न,य. ९९१

अर्पितमदना रच भ स ना ये.

७१३ विरतिमहती.   त,न,न,य. १०२१

ता ना न य थी विरतिमहती छे.

७१४ अगौरी, ललित.[1]   न,न,म,र. १०८८

न न म र थी अगौरी छे शोभती.

१ वाग्वल्लभमां आ वृत्तनु नाम ललित राख्यु छे पण ११ अक्षरमा प्रसिद्ध ललित छे. जुओ अंक ५१७ मे   कामदुघावल्लभमा पण आ नाम छे.

७१५ गलितनाला.   ज,भ,य,र. ११४२

ज भा य रे गलितनाला थायछे.

७१६ सरोजावली. य,य,र,र. ११६२

सरोजावलीमां या य रा रा करो.

७१७ स्रग्विणी, शृङ्गारिणी, लक्ष्मीधर, लक्ष्मीधरा[1], चंदायणा[2], चंदाणा[3], चंद्रानन[4], काममोहिनी, चंदाना, मलया[5], कामिनीमोहन[6], हिंगुदी, झंपताल[7]. र,र,र,र. ११७१ पादान्ते यति.

स्रग्विणी तो रचो रा र रा रा धरी.

१ छंदःप्रभाकरमांथी २ "मागधी छंदःशतक"

३-४ मागधी पिंगळ छंदोग्रथमां चंदाणा, चंद्रानन नाम आप्यां छे.

५ पृथ्वीराजरासामां ए नाम वापर्युं छे.

६ मागधी "छंदःशतक"मां एनुं कामिणीमोहण नाम लखी तेनी चार पंच कलथी २० मात्रा कही छे, अने तेना ताल स्रग्विणी प्रमाणे छे

७ प्रवीणसागरमां आ नाम छे.

राग वाघेश्री, ताल त्रिश्रजाति रुपक, मात्रा ५, मध्यकाल (संगीतानुसारछंदोमंजरी.)

७१८ विप्लुतशिखा. भ,ज,र,र. ११९९

विप्लुतशिखा रचो भ जी रा र थी.

७१९ विशिखलता. न,ज,र,र. १२००

विशिखलता रचो न जा रा र थी.

७२० गौरी[1], प्रभा[2], मन्दाकिनी[3], प्रमुदितमदना, प्रमुदितवदना[4]. न,न,र,र. १२१६ ७, ५ यति.

हय[7] शर[5] न न रा, र गौरी विषे.

१ भट्टोजीदीक्षितना मत प्रमाणे ए नाम छे, तेमां यति आठे छे.

२ मल्लिनाथना मत प्रमाणे प्रभा नाम छे

३ ए नाम तथा यति मंदारमरंदचम्पू अने वाग्वल्लभमां छे. वाग्-

वल्लभमा "प्रभा, मंदाकिनी" नाम छे, तेनु माप उपर प्रमाणे अने तेमा ७, ५ यति कही छे शब्दकल्पद्रुममा यति कही नथी ते मत ग्राह्य नथी

४छंद शास्त्र, मंदारमरंदचम्पू (पृष्ट१७) अने वृत्तरत्नाकरमा प्रमुदितवदना नामथी आ मापने यति छे

७२१ चपलाक्षिका, चंचलाक्षिका[1]. न,न,र,र. १२१६

न न र र चपलाक्षिकामां दिसे.

१छंद शास्त्र प्रमाणे आ नाम छे, पण कवियो वर्णु करीने वृत्तना मापमां आवी शके नहि एवा नाम पाडता नथी "चंचलाक्षिका" ए नाम कोइ प्रकारे पण पोताना मापना गणमा आवी शकतु नथी माटे अमे "चपलाक्षिका" एवो पर्याय मूक्यो छे.

७२२ सुतल. स,र,स,र. १२३६

सुतले आणवा सरसारा गणो.

७२३ अंतर्विकाशवासक. न,र,ज,र. १३६५

अंतर्विकाशवासके त रा ज रा.

७२४ ललामलालिताधरा,[1] वसंतचत्वर[2], वरायति[3] ज,र,ज,र. १३६६

ललामलालिताधरा ज रा ज रा

१ वाग्वल्लभमा यति कही नथी अने ललामलालिताधरा नाम छे.

२ वसंतचत्वर नाम पिंगळादर्शमा छे तेणे ६, ६ यति कही छे पण तेनु बीजु प्रमाण जड्यु नथी

३ आ नाम प्रवीणसागर लेहेर १५ मीमा छे आ गणोवाळा रूपने शब्दकल्पद्रुममा "पंचचामर" कह्यु छे, पण आ ग्रथमा "पंचचामर" वृत्त अक ७८५ मे जूदुं दाखल छे, तेथी अमे ए नाम उमेर्यु नथी

७२५ परिपुंखिता. र,स,ज,र. १३७१

थायछे परिपुंखिता र सा ज र.

७२६ प्रसुमरमरालिका. न,स,ज,र. १३७६

प्रसुमरमरालिका न सा ज रे.

७२७ वीरासिका, इन्दुवंशा, इंद्रवंशा. } त,त,ज,र. १३८१ ५, ७ यति.[१]

वीरासिकामां, शर छे त ता ज रे.

१ आ त्रणे नाम वाग्वल्लभमां छे पण तेणे यति कही नथी श्रुतबोध टीकामा ५, ७ यति छे. राग नवरोज, ताल त्रिखंडवज्र, मात्रा १९, मध्यकाळ (संगीतानुसार छंदोमजरी)

७२८ वंशस्थ, वंशस्थविल, महानिबंधा, वंशस्तनित[१] } ज,त,ज,र. १३८२ पादांते यति.[२]

रचाय वंशस्थ ज ता ज रा धरी.

१ शब्दकल्पद्रुम २ श्रुतबोधमा पाचमे यति केहेछे, पण मंदारमरदचम्पूमा ६, ६ ए किंवा पादाते यति कही छे. छंद-शास्त्रमा पण पादाते यति छे पिंगलादर्शमां वंशस्थमा ६, ६ यति कही छे तेनु प्रमाण जड्यु नथी राग देवगांधार, ताल निसारुक, मात्रा ९, विलंबकाळ (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

इन्द्रवंशा अने वंशस्थना चरणोना मिश्रणथी १४ प्रकारना उपजाति भेद थायछे. (ऽ) आ चिन्ह इन्द्रवशानुं छे. (।)आ चिन्ह वंशस्थनुं छे.

ऽऽऽऽ चारे चरण इन्द्रवंशानां छे एम सूचवेछे.

१	।ऽऽऽ वैरासिकी-	१ वंशस्थ, २ इन्द्रवंशा,	३ इन्द्रवंशा, ४ इन्द्रवंशा.
२	ऽ।ऽऽ रताख्यानकी.	१ ,, २ वंशस्थ,	३ ,, ४ इन्द्रवंशा.
३	।।ऽऽ इन्दुमा.	१ वंशस्थ, २ वंशस्थ,	३ इन्द्रवंशा, ४ इन्द्रवंशा.

४ SSIS	पुष्टिदा.	१ इन्द्रवंशा, २ इन्द्रवंशा,
		३ वंशस्थ, ४ इन्द्रवंशा.
५ ISIS	उपमेया,	१ ,, २ ,,
	रामणीयक.	३ ,, ४ ,,
६ SIIS	सौरभेयी.	१ इन्द्रवंशा, २ वंशस्थ,
		३ वंशस्थ, ४ इन्द्रवंशा.
७ IIIS	शीलातुरा.	१ ,, २ वंशस्थ,
		३ ,, ४ इन्द्रवंशा.
८ SSSI	वासन्तिका.	१ इन्द्रवंशा, २ ,,
		३ ,, ४ वंशस्थ.
९ ISSI	मन्दहासा.	१ वंशस्थ, २ इन्द्रवंशा,
		३ इन्द्रवंशा, ४ वंशस्थ.
१० SISI	शिशिरा.	१ इन्द्रवंशा, २ वंशस्थ,
		३ ,, ४ ,,
११ IISI	वैधात्री.	१ वंशस्थ, २ ,,
		३ इन्द्रवंशा, ४ ,,
१२ SSII	शंखचूडा.	१ ,, २ इन्द्रवंशा,
		३ वंशस्थ, ४ वंशस्थ.
१३ ISII	रमणा.	१ ,, २ इन्द्रवंशा,
		३ ,, ४ वंशस्थ.
१४ SIII	कुमारी.	१ इन्द्रवंशा, २ ,,
		३ वंशस्थ, ४ ,,

७२९ विधारिता. ज,ज,ज,र १३९०

जजाजर थाय विधारिता विषे.

७३०. पिकालिका, विधायिनी. भ,ज,ज,र. १३९१

भा ज ज र थाय पिकालिका विषे.

७३१ मालती[1], शुभ, वरतनु, यमुना[2]. न,ज,ज,र. १३९२ ५,७, यति. ३

यति शरले, न ज जा र मालती.

१ मंदारमरंदचपूमां कह्यु छे के केटलाकने मते "मालिनी" नाम छे.

२ शब्दकल्पद्रुम तथा प्राकृतपिंगलसूत्रमा (पृष्ट १५०) मे केहेछे के, मालतीने कोइ यमुना केहेछे

३ नारायणभट्टी प्रमाणे छंदोलतामा केहेछे के केटलाक मालती ने मालिनी केहेछे ७,५, यति तेणे कही छे.

छंदोमंजरीमा यति नथी

राग वसत, ताल चतुश्र जाति तेताला, मात्रा १६, मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमजरी)

७३२. ललिता, सुललित. ५,७ यति. त,भ,ज,र. १३९७

पांचे विराम, ललिता त भा ज रे.

वाग्वल्लभमां तथा छंदोमजरीमा ललिता नाम छे तेमां यति नथी मंदारमरदचपूमां यति लखी नथी, पण छंदोर्णव तथा पिंगळादर्शमा ५,७ यति कही छे (पृष्ट ८५) सुललित नाम आपी छंदोमजरीमा छे तेमा यति कही के पाळी नथी.

७३३ प्रियम्वद, प्रियंवदा. न,भ,ज,र. १४००

न भ ज रा धर प्रियंवदा विषे.

राग त्रिवेणी, ताल चतुश्र जाति त्रिताल, मात्रा १६, मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमजरी)

७३४ विरला, वीरला. स,न,ज,र. १४०४

विरला रच स न जा र आणिने.

७३५ अविरलरतिका. भ,न,ज,र. १४०७

छे अविरलरतिका भ ना ज रे.

७३६ राधिका स,भ,भ,र. १४६०

सभभारे रच वृत्त तुँ राधिका.

७३७ द्रुतविलम्बित,[1] सुंदरी, द्रुतविलंब. (गणप्रस्तारम.) } न,भ,भ,र. १४६४

द्रुतविलम्बित थाय नभाभरे.

१ मंदारमरदचंपू प्रमाणे पदमा यति नहि पिंगळादर्शमा ६, ६ यति कही छे, पण वृत्तरत्नाकर, छंदोमंजरी, प्राकृतपिंगळसूत्र (पृष्ट १५३) वगे प्रमाण प्रथमा यति नथी प्राकृतपिंगळसूत्रमा "सुंदरी" मां द्रुतविलंबितनुं माप आप्युं छे, यति कही नथी. राग सोहनी, ताल चतुश्र जाति तेताला मात्रा १६, मध्यकाळ (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

७३८ यूथिका. ३, ९ यति. र,न,भ,र. १४६७

यूथिका, रनभरे यति छे त्रणे.

राग मध्यमावती सारंग मिश्रगजलीला, मात्रा१७,मध्यकाळ (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

७३९ उज्वला, महोज्वला. न,न,भ,र. १४७२

ननभर धरजो कवि! उज्वले.

७४० रास,[1] मता.[2] ६, ६ यति. न,र,न,र. १४९६

नरनरे मता, छ पर रासमां.

१ रास भगवत्‌पिंगळमाथी २ मंदारमरदचंपूमा ए नाम तथा यति छे

७४१ विपुलपालिका. र,ज,न,र. १५१५

राजनार आण विपुलपालिका.

७४२ उपलेखा. स,भ,न,र. १५२४

उपलेखा रच सभनरा थकी.

७४३. भसलविनोदिता. ज,भ,न,र. १५२६

जभानरा थी भसलविनोदिता.

७४४. विरतप्रभा. म,भ,न,र. १५२७

भा भ न रे थी रंच्‌ विरतप्रभा.

७४५. मुकुलितकलिकावली. र,न,न,र. १५३१

रा न्नरे मुकुलितकलिकावली.

७४६. जलमाला. ४,८ उपर यति. भ,भ,म,स. १४९१

भा भ म सा, जलमाला वेद[४] वसु[८]

मंदारमरदंचपू पृष्ट १७ मे आ नाम तथा यति छे

७४७ अतिवासिता. स,य,र,स. १६७६

अतिवासितामां सा य रा स धरो.

७४८. भुजङ्गजुपी. र,स,र,स. १६९१

रा स रा स थकी छे भुजङ्गजुपी.

७४९. अजितफालिका. भ,स,र,स. १६९५

अजितफालिका भा स रा स थकी.

७५०. ललना. ५,७ यति. भ,स,स,स. १७३५

छे यति पांचे, भा म स से ललना.

वाग्वल्लभ, छंद शास्त्रनु टिप्पण, छंदोमंजरी शब्दकल्पद्रुम इत्यादिमां यति छे छंद.प्रभाकरे यति पाळी नथी

७५१ कुरङ्गावतार. य,य,स,स. १७३८

कुरगावतारे य य सा स धरो.

७५२. प्रमिता. स,र,स,स. १७४८

प्रमिता तो रचो स र सा स धरी.

७५३ तोटक,नंदिणी.[1] पादान्ते यति[2]. स,स,स,स. १७५६

रचजो ठॉक तोटक सा स स से.

१ मागधी पिंगळ छंदोग्रंथमा नंदिणी नाम आप्युं छे

२ पिंगळादर्शमा ६,६ यति कही छे. राग देश, ताल चतुश्र जाति तेताला, मात्रा १६, मध्यकाळ, (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

७५४ प्रमिताक्षरा.[1] पादान्ते यति. स,ज,स,स. १७७२

प्रमिताक्षरा रच स जा स सथी.

१ छंद प्रभाकरनी टीकामां लख्युं छे के "आ वृत्तमा कोइ कोइ ठेकाणे न न भ र" गण आवेछे, पण तेनु ए कथन उचित नथी, केमके एवु रुप उज्वलानु अंक ७३९ मे प्रसिद्ध छे राग असावरी, ताल चतुश्र जाति सवारी, मात्रा १६, मध्यकाल (संगीतानुसार छदोमजरी.)

७५५ विकत्थन. (वाग्वल्लभ) ज,ज,स,स. १७७४

विकत्थन मांह धर जा ज स सा

७५६ नीलगिरिका. भ,ज,स,स. १७७५

नीलगिरिका रच भ जा स स थी.

७५७ वनिताभरण. भ,भ,स,स. १७८३

भा भ स सा धर वनिताभरणे.

७५८ हाकालिका. न,न,स,स. १७९२

न न स स थकी कर हाकलिका.

७५९ सुभद्रावतरणि. म,त,त,स. १८२५

मा ता ता सा थी सुभद्रावतरणि.

७६० विरलोद्धता. भ,स,ज,स. १८८१

भा स्जा से विरलोद्धता रच भले.

७६१ सुविहिता. य,स,ज,स. १८८२

य सा जा स थकी बने सुविहिता.

७६२ उदर्करचिता. स,स,ज,स. १८८४

स स जा स थकी उदर्करचिता.

७६३ सुवनमालिका, उपवनमालिका. त,स,ज,स १८८५

जाणो सुवनमालिका त स ज से.

७६४ जलोद्धतगति. ६, ६ यति. ज,स,ज,स. १८८६

ज सा ज स छये जलोद्धतगति.

मंदारमरदचंपू, वृत्तरत्नाकर, छंदोलता अने पिंगळ छंदःसूत्रमां पण एज प्रमाणे यति छे. छंदोमंजरीमा यति कही नथी.

राग दिनकीपूर्या अथवा पंचवराळी, ताल चतुश्र जाति तेताल, मात्रा १६, मध्य काळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी.)

७६५ नगमहिता, क्रमुकवती. स,भ,भ,स. १९७२

स भ भा से करजो नगमहिता.

७६६ संमदवदना. भ,भ,भ,स. १९७६

भा भ भ से कर संमदवदना.

७६७ चंद्रवर्त्म, चन्द्रवर्तन, चंद्रमग[1], चंद्रमगा,[2] चंद्रमग्ग.[3] र,न,भ,स. १९७९ ४,८ यति[4].

चंद्रवर्त्म, श्रुति रा न भ स थकी.

१ चंद्रमग नाम भाषा छंदोमजरीमा छे तेमां यति कही नथी २ छंदरत्नावळी. ३ चंद्रमग्ग नाम छंदःरत्नावलिमां छे तेमां यति कही नथी. ४ मंदारमरदचम्पू पृष्ठ १७ मे अने प्राकृतपिंगळसूत्र पृष्ठ १५३ मे चंद्रवर्त्म नाम छे पण तेमा अने छंदोलता तथा छंदोमजरीमा यति कही नथी, परतु पिंगळादर्श तथा वृत्तरत्नाकरनी टीका (नारायण भट्टी) प्रमाणे यति दाखल करी छे.

७६८ कुमारगति. ज,न,भ,स. १९८२

कुमारगति रचो ज न भ स थी.

७६९ उदयनमुखी. न,स,न,स. २०१६

उदयनमुखी रच न स न से.

७७० रसिकपरिचिता. स,त,न,स. २०२०

स त ना सा थी रसिकपरिचिता.

७७१ वीरणमाला. (वाग्वल्लभ) भ,त,न,स. २०२१

वीरणमाला रच तुं भ त न से.

७७२ व्यायोगवती. त,ज,न,स. २०२९.

व्यायोगवती रच त ज न स थी.

७७३ वियोगवती. ज,ज,न,स. २०३०.

वियोगवती कर ज ज न स थी.

७७४ संगमवती. भ,ज,न,स. २०३१.

संगमवती रच भ ज न स थी.

७७५ ज्वलिता. स,न,न,स. २०४४.

ज्वलिता रच स न न स धरीने.

७७६ रूपावलि. त,न,न,स. २०४५.

रूपावलि रच त न न स धरी.

७७७ अनीचक. ज,न,न,स २०४६.

अनीचक रच ज न न स थकी.

७७८ भासितसरणि. भ,न,न,स. २०४७

भासितसरणि रच भ न न से.

७७९ कृतकातिका, कातिका. न,न,न,स. २०४८.

न न न स गणथी कृतकातिका.

७८० निशानी.[१] म,म,म,त. २०४९.

मा मा मा ता थी तो निशानी के'वाय.

१ निशानीमां ११ गुरु+१लघु=१२ अक्षर.

एक गुरु घटे तेम बे लघु वधे एम निशानीना बार भेद थायछे.

भेद.	गुरु.	लघु.	अक्षर.
१ कीला.	११	१	१२.
२ लीला.	१०	३	१३
३ स्थिरा.	९	५	१४

४ कुमारी.	८	७	१५
५ वीणा.	७	९	१६
६ रंगी.	६	११	१७
७ चातुरत्रंगी.	५	१३	१८
८ वारी.	४	१५	१९
९ विद्या.	३	१७	२०
१० माळा.	२	१९	२१
११ बालिका.	१	२१	२२
१२ वामा, वाम.	०	२३	२३

७८१ सारङ्ग, मेनावली, मेनिका[1], सारंगरूप[2], मैणाउल[3], मदनाकुल[4], सारंगा, काम — त,त,त,त. २३४१. ३,९ यति.[5]

सारंग, तो थाय ता ता त ता थीज.

१ वाणीभूषण नामे मिथिलाना दामोदरमिश्र कृत छंदग्रंथमां आ नाम आप्युं छे २ छंदोलता अने मागधी पिंगल छंदोग्रंथमा केटलाकने मते ए नाम जणावेल छे ३–४ मागधी छंद शतकमा एने मदनाकुल अने मैणाउल केहेछे.

५ प्राकृतपिंगळसूत्र प्रमाणे, सारंगमा ३,९ यति छे वाणीभूषणमां यति कही नथी

आना बमणा-आठ तगणनुं आभार वृत्त मान्यु छे ते २४ वर्णमां रूप ९५,८६,९८१ मे दाखल छे

७८२ विकलवकुलवल्ली. न,न,त,त. २३६८

विकलबकुलवल्ली ननाताता.

७८३ निमग्नकीला. ज,त,ज,त. २४०६

निमग्नकीला रच् जा त जा ता थी.

७८४ सयल (शैल). ६,६ यति. य,य,य,ज. २६३४

धरो शैल छट्ठे, यथा याज ठीक.

पिंगळादर्शने आधारे यति छे गणप्रस्तारप्रकाशमां आने १९ मात्रानी तमाल जाति कही छे

७८५ पंचचामर, त्रिभावरी.[1] र,ज,र,ज. २७३१

राजराज लाव पंचचामरे तुँ.

१ वाणीभूषणमा ए नाम छे

७८६ मौक्तिकदाम, मोतीदाम, मुत्तियदाम[1], मयंधरमालव[1] ज,ज,ज,ज. २९२६

जजाजज थी रच मौक्तिकदाम.

१ मागवी छंद शतकमां आ बन्ने नाम छे आना वमणाने मुक्तहरा कहेछे पिंगळादर्शमा छठ्ठे यति कही छे, पण बीजु प्रमाण जड्युं नथी

७८७ वासरमणिका. भ,स,स,भ २२९१

वासरमणिका रच भासासभ.

७८८ अरिला. स,भ,भ,भ. २५०८

अरिल्लामां धर ठीक सभाभभ

७८९ मोदक[1], वधा, मोटक[2] भ,भ,भ,भ. २९११

मोदक मांह रचाय भभाभभ.

१ तोटकथी उलटो छे २ शब्दकल्पद्रुममा आ नाम छे मंदारमरंद चंपूमा चार भगणने "भामिनि" नाम आप्यु छे पण ते अगियार अक्षरमा न,र,र,ल,ग थी अंक५९७ मे छे एटले दाखल करवा जेवु नथी प्राकृत-छंद-कोषमा चार भ नो दोधक-कह्यो छे पण दोधक अक्षर अगियारमा अंक ५८० मे छे एटले आ भूल होय एम लागेछे

मोदकमा पिंगळादर्शमा ६,६ यति कही छे तेनु प्रमाण जड्यु नथी

७९० तरलनयन, तरल, तरलनयनी, तरलद्दुत. न,न,न,न. ४०९६

ननननन थकी तरलनयन.

तरलनयनमा पिंगळादर्शमा छठ्ठे विराम आप्यो छे तेनु प्रमाण जड्युं नथी.

१३ अतिजगती छंद. ८१९२ भेद. १३ वर्ण.

७९१ सव्याली. म,म,म,म,ग. १

सव्यालीमां तेरे गुरु आवेछे पादे.

७९२ वस्तु[1], वास्तुक. म,त,र,म,ग. १६१

मा ता रा मा गा रचायछे वस्तु वृत्ते.

[1] चित्रसेन टीकावाळा मागवी पिंगळमा आ वृत्त छे ते लखेछे के स्वताने आनद देछे, मित्र तथा गवर्वनु भूषण छे, मायिकने तोषक छे तथा कर्णने प्रिय छे.

७९३ उल्काभास. म,त,स,म,ग. २२५

उल्काभासे मा त स म गा आणो शोधी.

७९४ लीलालोल. ४,९ यति. (वा. व.) म,भ,स,म,ग. २४१

मा भ्सा मा गा, विरति युगे[४] लीलालोले.

७९५ कलाधाम. म,भ,ज,म,ग. २७१

भा भ ज मा ग वरजो कलाधामे तो.

७९६ वासविलासवती. भ,भ,भ,म,ग. ४३९

वासविलासवती भ भ भा मा गा थी.

७९७ विपन्नकदन, विपन्नकलन, विपन्नकवल. } न,र,न,म,ग. ४७

न र न म ग विपन्नकदने आवेछे.

७९८ राधा. (छंदःप्रभाकर) र,त,म,य,ग. ५४७

रा त मा या गा वडे राधा रचो भाई.

७९९ कंदुक, कंद. (छंदोलता) य,य,य,य,ग.

नयतयगा आणो आप विभा मांही.

८०१ रसधारा.   न,य,न,य,ग. ९७६

न य न य गेथी रच रसधारा तुं.

८०२ प्रज्ञामूल.   म,भ,न,य,ग. १००९

प्रज्ञामूले रच म भ न य गा आणी.

८०३ चञ्चरीकावली[1].   य,म,र,र,ग. ११५४

य मा रा रा गेथी चंचरीकावली छे.

१ मंदारमरन्दचंपू अने वाग्वल्लभमा पण चंचरीकावली माटे यति आनी नथी

८०४ दर्पमाला,दर्भमाला.६,७यति[1]. य,य,र,र,ग. ११६२

य या रा र गे छे, रागथी दर्पमाला.

१ वाग्वल्लभमा ए प्रमाणे यति छे

८०५ भाजनशीला.   त,य,र,र,ग. ११६५

छे भाजनशीला ता य रा रा ग धातां.

८०६ आक्रान्ता.   र,र,र,र,ग. ११७१

रा र रा रा ग थी थायछे आक्रान्ता.

८०७ चन्द्ररेखा[1],चन्द्रलेखा[2].६,७यति.न,म,र,र,ग. ११८४

न स र र ग थी, ने छए चन्द्ररेखा,

यति छ मुनिथी, जाणजो चन्द्रलेखा.

१ शब्दकल्पद्रुममा ए नाम छे   २ वृत्तरत्नाकरना परिशिष्ट प्रमाणे ए नाम तथा यति लखेल छे, चन्द्रलेखा नाम आ माप अने यतिवाळुं मळी आवता यथार्थ छे, परंतु चन्द्रलेखा पदर अक्षरमा रूप ४६२५ मु छे

८०८ आनता.   म,न,र,र,ग. १२०९

मा ना रा र ग थकी रचो आनता तो.

८०९ प्रमोद[1], पुसपताग्र.[2]   न,न,र,र,ग. १२१६

न न र र ग धरो सुखेथी प्रमोदे.

१ वाग्वल्लभमां आ नाम छे २ गणप्रस्तारप्रकाशमा ए नाम छे.

८१० उर्वसी[1]. ७,६ यति. न,त,त,र,ग. १३३०

न त त रा गे मुनि, अंग उर्वसी छे.

१ मंदारमरंदचंपूमा ए नाम तथा यति छे.

८११ सुकर्णपूर. न,र,ज,र,ग. १३६८

न र ज रा ग थायछे सुकर्णपूरे.

८१२ जगत्समानिका. स,स,ज,र,ग. १३७२

स स जा र ग थी जगत्समानिका छे.

८१३ ऋक्षपाद. स,ज,ज,र,ग. १३८८

रच ऋक्षपाद स जा ज रा ग आणी.

८१४ अतिरंह. ज,ज,ज,र,ग. १३९०

रचो अतिरंह ज जा ज रा ग आणी.

८१५ मृगेन्द्रमुख, हरिमुख[1]. न,ज,ज,र,ग. १३९२

धर तुं मृगेन्द्रमुखे न जा ज रा गा.

१ छंदोर्णवमा ए नाम छे

८१६ प्रहर्षिणी[1]. ३,१० यति. म,न,ज,र,ग. १४०१

मा ना जा, र ग थी प्रहर्षिणी त्रणे छे.

१ सुवृत्ततिलकमा लख्यु छे जे घणु करीने आकारवाळा अने प्रथमना त्रण अक्षरो धीरे अने बाकीना उतावळथी बोल्याथी आ वृत्त शोभेछे प्राकृतपिंगलसूत्र, पिंगळछंद सूत्र, छंदोमंजरी, वृत्तरत्नाकर, शब्दकल्पद्रुम, अने छंदोवृत्तमुक्तावलिने आधारे अमे यति आपी छे, पण छंद प्रभाकर (पृष्ट १८८) मा यति पाळी नथी

राग शेहना, ताल चतुश्र जाति प्रतिमठ, मात्रा १०, विलंब काळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

८१७ माणविकाविकास. त,भ,भ,र,ग. १४६१

ता भा भ रा गुरु माणविकाविकासे.

८१८ कीरलेखा. न,र,न,र,ग. १४९६

न र न रा ग थाय कवि' कीरलेखा.

८१९ मत्तमयूर, माया, मत्तमयूरी, मायक. } म,त,य,स,ग. १६३३ ४,९ यति.[1]

छे मा ता या, सा ग युगे मत्तमयूरे.

१ प्राकृतपिंगळसूत्रमां तथा वाणीभूषणमां यति कही नथी मंदारमरंद चंपू प्रमाणे (वर्ण ह्यार्ब्धि स्तनैर्यतिः) चारे तथा नवे यति कही छे; वळी वाग्वल्लभ, छंदोमंजरी, वृत्तदर्पण अने शब्दकल्पद्रुममां ४,९ यति कही छे, पण बीजा केटलाक ग्रंथकारोए तेमज छंद प्रभाकरना कर्त्ताए यति पाळी नथी.

संगीतानुसार छंदोमंजरीमां राग श्याम, ताल षष्टितापुत्रकिम मात्रा ११, विलंबकाळ कहेछे.

८२० आननमूल. भ,त,य,स,ग. १६२९

आननमूले रचवा भा त य सा गा.

८२१ लोध्रशिखा. म,स,स,स.ग. १७१३

मा सा सा-स ग थी रच लोध्रशिखा तुं.

८२२ तारक[1]. स,स,स,स,ग. १७९६

रचजो कवि' तारक सा स स सा गे.

१ पिंगळादर्शमां छट्ठे यति आपी छे पण वाग्वल्लभ, छंदोर्णव इत्यादिमां यति कही नथी

८२३ कलहंस, सिंहनाद, कुटजा, प्रानपियारी. } स,ज,स,स,ग. १७७२

कलहंस मांह स ज सा स ग आवे.

छंदःप्रभाकर तथा शब्दकल्पद्रुममां **नन्दिनी** नाम विशेष छे पण अंक ८२६ मां ते जूदुं वृत्त छे. वाग्वल्लभमां आ मापनुं **क्षमा** वृत्त मूकेल छे पण ते अंक ८४४ मां जूदुं छे.

कलहंस, सिंहनाद, क्षमा, अने **कुटजा,** ए नामो वाग्वल्लभ पृष्ट ६१ मे छे तेमां यति कही नथी.

प्राकृतपिंगळसूत्र पृष्ट १६३ मे, छंदोमंजरी पृष्ट ११९ मे, छंदोलता, वृत्तदर्पण इत्यादिमां लखेछे के, **कलहंसनुं** बीजुं नाम **सिंहनाद** छे तेना मापमां आ गणों छे, पण यति कही नथी.

शब्दकल्पद्रुममां **कलहंस** अने **सिंहनाद** ए बे नामो आपी; तेमां यति कही नथी.

पिंगळादर्शना कर्त्ताए **कलहंस** नाम आपी ६,७ यति कही छे (पृष्ट ७६), पण तेनुं प्रमाण शिष्ट ग्रंथोमां मळी आवतुं नथी; एटले ग्राह्य नथी.

८२४ नंदिनी. ९,८ यति[1]. न,ज,स,स,ग. १७७६

रच **नंदिनी, तुँ न ज सा स ग** पांचे.

१ पिंगळादर्श प्रमाणे यति लखी छे

८२५ चंडी. न,न,स,स,ग. १७९२

रच कवि **न न स स गा** थकी **चंडी.**

८२६ नान्दिनी[1]. स,म,त,स,ग. १७९६

स म ता सं गे नान्दिनी कवि रचेछे.

१ अगियार वर्णमां **नन्दिनी** अंक ६१० मे छे तेमा स, ज, स, ल, ग, ए माप छे अने ५,६ यति छे.

८२७ उपस्थित. ६,७ यति. ज,स,त,स,ग. १८२२

उपस्थित विषे, आणो **ज स त सा गा.**

छंदोमंजरी अने शब्दकल्पद्रुममां आ गणोथी आ वृत्त छे पण यति कही नथी.

पिंगलादर्शमां ६,७ यति कही छे (पृष्ठ ७२). पण तेनुं प्रमाण जडतुं नथी

८२८ शलभलोला. य,य,ज,स,ग. १८६६

ययाजासगे थी रचो शलभलोला.

८२९ पङ्कजधारिणी. म,स,ज,स,ग. १८९१

थाशे पंकजधारिणी मसजसागे.

८३० कुबेरकटिका. स,स,ज,स,ग. १८८४

ससजासग थी कुबेरकटिका छे.

८३१ रुचिरवर्णा,साला.(शार्ङ्गवल्लभ) ज,स,ज,स,ग. १८८६

जसाजसग थी रचो रुचिरवर्णा.

८३२ मयूपसरणि. भ,स,ज,स,ग. १८८७

भासजसग थी मयूपसरणि छे.

८३३ विरलविरागा,विरलवैराग[1]. स,स,भ,स,ग. १९४८

ससभासग थी छे विरल विरागा.

१ रागप्रस्तारप्रकाशमां ए नाम छे.

८३४ विधुरवितान. न,न,भ,स,ग. १९८४

रच विधुरवितान ननभसागे.

८३५ रति.[1] ४,९ यति. स,भ,न,स,ग. २०६६

सभनासाग थकी रति ^{४} श्रुति ^{९} खडे.

१ मंदारमरंदचंपूमांथी रति नाम लीधुं छे

८३६ कुटजगती. ७,६ यति[1]. न,ज,भ,त,ग. २०९६

कुटजगती हये,^{७} नाजाभाताग थी.

१ शब्दकल्पद्रुममां तथा छंदोमंजरीनां टिप्पणमां ए यति छे.

८३७ पारावत. त,त,न,त,ग. २३४१

पारावते थाय ताताजताग खरे.

८३८ प्रवाहिका. ज,त,त,त,ग. २३४२

प्रवाहिका थाय जा ता त ता गा थकी.

८३९ स्विन्नशरीर. भ,त,त,त,ग. २३४३

स्विन्नशरीरे धराशे भ ता ता त गा.

८४० परिवृढ. न,त,त,त,ग. २३४४

परिवृढे ना त ता ता ग आवे पदे.

८४१ वामवदना. भ,ज,त,त,ग. २३५१

वामवदना रचो भा ज ता ता ग थी.

८४२ किरात, कुटिलगति. न,ज,त,त,ग. २३५२

रच तुँ किरात ना जा त ता गा थकी.

८४३ चन्द्रिका,[1] उत्पलिनी, क्षमा,[2] विद्युत.[3] — न,न,त,त,ग. २३६८ ७,६ यति.

न न त त ग हये, जोड़ तुं चंद्रिका.

१ प्राकृत पिंगळसूत्रमा चंद्रिका नाम छे, तथा उत्पलिनी एवुं नाम कोई केहेछे एवु लख्युं छे ७,६ यति कही छे. छंदोर्णव तथा संस्कृत प्रोसडीमा चंद्रिकानु आ माप छे, पण यति कही नथी पिंगळादर्श, तथा छंदोलतामा न न त र ग माप चंद्रिकानु आप्यु छे अने चारे यति कही छे, छंदोमंजरीमां चंद्रिका नाम छे अने कोइ उत्पलिनी केहेछे एम जणाव्यु छे.

२ वृत्तरत्नाकर पृ ४६ मे क्षमा नाम आपी ७,६ यति कही छे अने कोइ चंद्रिका नाम आपेछे एम पण जणावेछे पिंगलादर्शमा ७,६ यति क्षमानां कही छे

मंदारमरद चंपूमां पण क्षमानुं एज माप छे, तेमां ७,६ यति कही छे. छंदःशास्त्रमा क्षमानु न न ज त ग माप अने ७,६ यति कही छे; पण घणा प्रमाणथी ए गणो जूदा पडेछे माटे ग्राह्य नथी. छंदोर्णव तथा छंदोलतामा न, न, त, र, ग गण क्षमाना लखेछे ते भूल छे.

३ शब्दकल्पद्रुममा यति सहित आ मापना वृत्तनु नाम विद्युत पण आप्यु छे.

८४४ भसलबद, भसलपद. भ,स,ज,त,ग. २३९९

छे भसलमदे भ सा जं ता गा पदे.

८४५ कठिनी. न,स,ज,त,ग. २४००

रच तुं कठिनी न सा ज ता गा थकी.

८४६ वृद्धवामा. त,त,ज,त,ग. २४०५

छे वृद्धवामा त त जा त गा आणवे.

८४७ सर्पस्फुर. त,भ,ज,त,ग. २४२१

ता भा ज ता ग धर वृत्त सर्पस्फुरे.

८४८ सुक्षमा[1]. न,न,म,ज,ग. २६२४

न न म ज ग वस्याथी थाय सुक्षमा.

१ भाषाछंदोमंजरीमां सुछमा नाम छे पृष्ट १८२

८४९ पृपद्भृती, निस्तुपा. त,र,र,ज,ग. २७०९

लावो पृषद्भृती मांह ता र रा ज गा.

८५० अखंडमंडन. ६,७ यति (वा०व०) ज,र,र,ज,ग. २७१०

अखंडमडने, आण[1] जा र रा ज गा.

८५१ कलापतिप्रभा, राग, नंदराग. र,ज,र,ज,ग. २७३१

छे कलापतिप्रभा र जा र जा ग थी.

१ छंद.प्रभाकरमां आ वृत्त छे, ते पोते नवु रच्युं छे एम लखेछे, पण "कलापतिप्रभा" प्रथमथीज रचायलु वाग्वल्लभमां छे

८५२ अशोकपुष्प. न,न,र,ज,ग. २७५२

न न र ज ग अशोकपुष्पमां धरो.

८५३ करपल्लवोद्गता. य,य,स,ज,ग. २७६२

य या सा ज गाथी करपल्लवोद्गता.

८५४ सार्द्धपदा. र,य,स,ज,ग. २७६३

रा य सा ज गे सार्द्धपदा रचो तमे.

पाड्युं छे अने ते त्रणेमा यति कही नथी ४ छंदोमार्त्तंडमा तथा वृत्तमौक्तिकमा ए नाम छे

संगीतानुसार छंदोमंजरीमा राग मुखारी ताल वसंत, मात्रा १८, विलंबकाळ जणावेछे

८५९ प्रभावती.[1] ४,९ यति.[2] त,भ,स,ज,ग. २८०५

चारे नंव, त भ ज स गे प्रभावती.

१वृत्तदर्पणमा ज, भ, स, ज, ग. ए माप छे २ वाग्वल्लभमा यति कही नथी शब्दकल्पद्रुम, श्रुतबोध, छंदोवृत्तमुक्तावलि, अने पिंगळादर्शमा ४,९ यति कही छे

८६० रुचिरा,[1] अतिरुचिरा,[2] तनरुचिरा,[3] कलावती.[4] } ज,भ,स,ज,ग २८०६ ४,९ यति.

ज भा स जा, ग थी रुचिरा युगे[4] नंव.

१ वृत्तरत्नाकर पृष्ट ४७ मे, वाग्वल्लभ पृष्ट ६१ मे रुचिरा अने अतिरुचिरा नामो, उपरना माप तथा यतिथी जणाव्यां छे. प्राकृतपिंगळसूत्र पृष्ट १६८ मां रुचिरा नाम आपी यति अने गणो उपर मुजब जणाव्या छे.

२ मंदारमरंदचंपू पृष्ट १७ मे अतिरुचिरा नाम आपी तेना गण ज भ स र ग जणावी ४,९ यति केहेछे, पण चोथा गणने स्थाने तेणे जगणने बदले रगण भूलथी गण्यो छे.

३ छंदोर्णव पृष्ट ८५ मे, तनरुचिरा नाम, उपरना गणो अने यतिवाळा वृत्तनु आप्यु छे.

४ कलावती नाम छंदोवृत्तमुक्तावलिमांथी लीधुं छे.

छंद प्रभाकर पृष्ट १८९ मे रुचिरामां यति कही नथी अने रुचिरानेज प्रभावती केहेवानुं जणाव्युं छे, परंतु प्रभावती अंक ८५९ मे उपर जूदा मापथी छे,

संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे राग प्रभाती, चतुश्रजाति मजलीला, मात्रा १८, मध्यकाळ.

८६१ विराधिनी. न,भ,स,ज,ग. २८०६

न भ स जा गथकी रचो विराधिनी.

८६२ चंद्रहासकरा. र,स,ज,ज,ग. २९०७

चंद्रहासकरा र सा ज ज गे बने.

८६३ द्रुतलम्बिनी. स,स,ज,ज,ग. २९०८

स स जा ज गथी रचो द्रुतलम्बिनी.

८६४ कनककेतकी, कनककेतन. त,स,ज,ज,ग. २९०९

थाशे कनककेतकी त स जा ज गे.

८६५ गरुदवारिता. ज,स,ज,ज,ग. २९१०

रचो गरुदवारिता ज स जा ज गे.

८६६ अमितनगानिका. भ,स,ज,ज,ग. २९११

छे अमितनगानिका भ स जा ज गे.

८६७ उपगतशिखा. न,स,ज,ज,ग. २९१२

उपगतशिखा न सा ज ज गाथकी.

८६८ आपणिका. ज,त,ज,ज,ग. २९१८

रचायछे आपणिका ज त जा ज गे.

८६९ गुणसारिका, गणसारिका. ज,ज,ज,ज,ग. २९२६

रचाय ज जा ज ज गे गुणसारिका.

८७० प्रमोदतिलका. त,भ,ज,ज,ग. २९३३

थाशे प्रमोदतिलका त भ जा ज गे.

८७१ सारसनावलि, विभावरी[१]. न,भ,ज,ज,ग. २९३६

न भ ज जा गथकी सारसनावलि.

१ वृत्तदर्पणमा आ नाम छे, तथा पादान्ते यति कही छे विभावरीनो राग पीलु, ताल खंड जाति आडा चौताला, मध्यकाळ, मात्रा १७. (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

८७२ उपचितरतिका. भ,न,ज,ज,ग. २९४३

छे उपचितरतिका भ न जा ज गे.

८७३ उदात्तहास. ज,त,भ,ज,ग. २९८२

उदात्तहासे गणो ज त भ जा ग छे.

८७४ कलनायिका. ज,त,न,ज,ग. ३०४६

ज ता न जा गे कर तुं कलनायिका.

८७५ अभ्रभ्रमशीला. त,य,स,भ,ग. ३२७७

अभ्रभ्रमशीला त य सा भा गथकी.

८७६ विदला. न,स,त,भ,ग. ३३६०

रच तुं विदला मांहे न सा त भ गा.

८७७ प्रपातलिका. भ,स,ज,भ,ग. ३४२२

भा स ज भ ग थी रचो प्रपातलिका.

८७८ मोहप्रलाप[1]. ४,९ यति. म,भ,भ,भ,ग. ३५०६

मा भा भी भा, गथी मोहप्रलाप युगे.

१ आ वृत्त 'मंदारमरंदचंपूमाथी नवु मळ्यु छे, तेमा आ माप ने यति छे.

८७९ कर्मठ. भ,भ,भ,भ,ग. ३५११

कर्मठमा रच आप भ भा भ भ गा.

८८० लवलीलता. भ,र,न,भ,ग. ३५४३

छे लवलीलता य र न भा गथकी.

८८१ अनिलोद्धतमुखी. न,र,र,न,ग. ३७३६

न र र ना गथी तो अनिलोद्धतमुखी.

८८२ प्रबोधफलिता. र,न,र,न,ग ३७७१

छे प्रबोधफलिता र ना र न गथी.

८८३ कोमलकल्पकलिका. स,य,स,न,ग. ३७८८

स य सा न गे कोमलकल्पकलिका.

८८४ रमणी. ज,स,स,न,ग. ३८०६.

ज सा स न गथी रच ठीक रमणी.

८८५ परगति. र,न,स,न,ग. ३८३५

थायछे परगति र ना स न गथी.

८८६ अभिरामा. स,भ,त,न,ग. ३८९२

अभिरामा रचजो सा भ त न गथी.

८८७ उपसरसी. स,न,ज,न,ग. ३९६४

स न जा न गथी रचो उपसरसी.

८८८ मदनजवनिका. न,य,न,न,ग. ४०४८

न य न न गेथी मदनजवनिका.

८८९ वरिवशिता, परिवशिता स,स,न,न,ग. ४०६०

स स ना न गथी रच वरिवशिता.

८९० अर्द्धकुसुमिता. भ,स,न,न,ग. ४०६३

अर्द्धकुसुमिता रच भ स न न गे.

८९१ विनताक्षी, वनिताक्षी. स,भ,न,न,ग. ४०८४

विनताक्षी रच स भ न न ग थकी.

८९२ नरावलि, निरावलि. त,भ,न,न,ग. ४०८८

थाशे नरावलि त भ न न ग थकी.

८९३ अभीरुका. ज,भ,न,न,ग. ४०८

अभीरुका रच ज भ न न ग थकी.

८९४ कनकिता. भ,भ,न,न,ग. ४०८७

भा भ न ना ग थकी रच कनकिता.

८९५ हरिवनिता, उपनमिता. न,न,न,न,ग. ४०९६

न न न न गथी रच हरिवनिता.

आ वृत्तना अत्य गुरुने स्थळे लघु मूकवाथी अडमलवृत्त थाय जुओ अंक १०४ मे.

८९६ सुखकारिका. स,ज,ज,म,ल. ४४६०

सुखकारिका रच सा ज जा मा लाथी.

८९७ कन्द[1], कन्दा[2], कुंद[3], सारंग[4]. य,य,य,य,ल. ४६८२

य या या य ला आववाथी बने कंद.

१ कन्द वृत्त प्राकृतपिंगळसूत्र, छंद शास्त्र अने वाणीभूषणमा छे

२ पिंगळादर्शमा कंथा अने केटलाकमा कंदा नाम छे कंथाना पिंगळादर्शमा ७,६ यति कही छे, पण तेनु बीजुं प्रमाण जड्यु नथी

३ आ नाम प्रवीणसागरमा छे

कवि दलपतराम डाह्याभाइए कन्दुक नाम आप्यु छे; अने तेमा छेलों लघु मूक्यो छे ते भूल छे मागधीपिंगळ छंदोग्रथमा सारंग नाम आप्युं छे आ वृत्तमां अत्य लघुने बदले गुरु मूकवाथी कदुक थाय जुओ अक ७९९ मे.

८९८ कनीया, कनैया. त,स,य,य,ल. ४७०२

ता सा य य ल थी कनीया करो वृत्त.

८९९ अट्टासिनी. त,भ,र,स,ल. ५८१३

अट्टासिनी महि ता भ रा स ल थाय.

९०० समूद, समूहा. न,ज,स,ज,ल. ६८९६

न ज स ज ला थी समूहा समूह ज.

९०१ पंकवती[1], पंकजमाला, पंक, पंकजावली, एकावली, कमलावली, पंका, कंजअवली, पंकजवाटिका, चंपकवाटिका, पंकज- } भ,न,ज,ज,ल. ७०३९

पंकवती महि भ ना ज ज ला धर.

१ पंकवतीने पंकावलिना मिश्रणथी उपजातिना १४ भेद थायछे एम वाग्वल्लभमां लख्युं छे. छंदोमंजरी (भाषा)मां "एकावली, चंपकवाटिका" एवां नाम छे.

९०२ पंकावलि. भ,न,य,न,ल. ७८०७

भा न य न लथकी पंकावलि कर.

९०३ अशनि. न,न,त,न,ल. ८०००

न न त न ल बनावी रच अशनि.

९०४ अंडमरु. न,न,न,न,ल. ८१९२

अडमरु महि धर न न न न ल.

शक्करी(शाक्करी)छंद. १६,३८४भेद. १४वा

९०५ संकल्पासार, संकल्पाधार. म,म,म,म,ग,ग.

चौदे गुरु आवेछे सर्वे संकल्पासारे.

९०६ नीलोद्दामा. ४,१० यति.[१] म,म,म,म,ग,ग.

नीलोद्दामा, वृत्ते मा मा मा गा गा गा चारे.

१ छंदोल्लतामा ए प्रमाणे यति छे.

९०७ वंशोत्तंसा. त,य,स,म,ग,ग. २०५

शोधी त य सा मा ग ग जोडो वंशोत्तंसा.

९०८ वासन्ती.[१] म,त,न,म,ग,ग. ४८१

वासंतीमां लाव म त न मा गा गा शोधी.

वासन्तीमा ७,७ यति कोइ केहेछे, परतु प्राकृतपिंगळसूत्र, छंदोमंजरी वृत्तरत्नाकरनु टिप्पण, वाग्वल्लभ इत्यादि प्रमाण ग्रंथोमा पाळी नथी

९०९ कालध्वान्त,कालध्वान्त. ६,८यति[१] म,म,न,य,ग,ग. ९६

कालध्वान्ते छट्ठे, म म न य गा गा आणो.

१ वाग्वल्लभमा ए प्रमाणे यति छे.

१० मध्यक्षामा. ४, १० यति.[1] म,भ,न,य,ग,ग. १००९

मध्यक्षामा, युग[4] यति म भ ना या गा गे.

शब्दकल्पद्रुममा तथा वृत्तरत्नाकरना परिशिष्ट भागमा ४,१० यति छे
राग रीतगोळ, ताल चतुश्रजाति प्रतिभानुमति, मात्रा ११, विलंबकाळ.
(संगीतानुसार छंदोमजरी).

११ चूडापीड. (वाग्वल्लभ) म,भ,न,य,ग,ग. १००९

चूडापीडे मभनयगग आणो शोधी.

१२ कुटिल[1]. ४,१० यति. स,भ,न,य,ग,ग. १०१२

यति वेदे[4], कुटिल रच स भा न्या गा गे.

१ आ नाम छंद'प्रभाकरमा छे तेमा यति आपी नथी; परतु वृत्तरत्ना-
रना टिप्पणमां अने शब्दकल्पद्रुमना टिप्पणमा तथा पिंगलादर्शमा आ
ाम तथा यति कही छे.

१३ पारावार. त,न,न,य,ग,ग. १०२१

आणो ठिक त न न य ग ग पारावारे.

१४ प्रपन्नपानीय. त,य,त,र,ग,ग. १२९३

ता या त र गा गा आवे प्रपन्नपानीये.

१५ अनिन्दगुर्विन्दु, गुर्विन्दु, पूर्वेन्दु. न,य,त,र,ग,ग. १२९६

न य त र गा गे जोडो अनिन्दगुर्विन्दु.

१६ धीरध्वान. ८,६ यति. म,म,म,स,ग,ग. १९२७

धीरध्वाने आठे छेदो, मा म म सा गी गा.

१७ ललितपताका. न,य,स,स,ग,ग. १७४४

ललितपताका रच ना य स सा गा गे.

१८ असम्बाधा, असंबंधा. ५,९यति. म,त,न,स,ग,ग. २०१७

मा ता नी सं गे, ग शर[5] यति असंबाधा.

१ मदारमरदचंपूमां असंबधा नामथी एज माप ने यति आपी छे

२ वृत्तरत्नाकर, छंदःशास्त्र वाग्वल्लभ अने छंद प्रभाकरमां यति कही नथी राग आरभी ताल चतुश्रजाति भानुमति, मात्रा ११, चिलवकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे)

९१९ सम्बोधा. (वाग्वल्लभ) ज,त,न,स,ग,ग २०११

ज ता न सा गा गथी कवि रच सम्बोधा.

९२० विन्ध्यारूढ, बन्ध्यारूढ. म,र,म,त,ग,ग. २०६९

विन्ध्यारूढे म रा मा ता गा गा आणजोजी.

९२१ बिम्बालक्ष्य. ७,७ यति. म,र,त,त,ग,ग. २३२१

बिम्बालक्ष्ये ह्ये छे, मा र ता ता ग गा थी.

९२२ दृप्तदेहा. य,र,त,त,ग,ग. २३२२

य रा ता ता ग गा थी दृप्तदेहा बनेछे.

९२३ बभ्रुलक्ष्मी. (वाग्वल्लभ) र,र,त,त,ग,ग. २३२३

रा र ता ता ग गा थी बभ्रुलक्ष्मी बनेछे.

९२४ सरमासरणि. स,स,त,त,ग,ग. २३३२

सरमासरणि जोडो स सा ता त गा गे.

९२५ पुष्पशकटिका. भ,स,त,त,ग,ग. २३३६

पुष्पशकटिकामां छे भ सा ता त गा गे.

९२६ निर्यत्पारावार. म,त,त,त,ग,ग. २३३७

निर्यत्पारावारमां छे म ता ता त गा गा.

९२७ कल्पकान्ता. र,त,त,त,ग,ग. २३३९

कल्पकान्ता मांह रा ता त ता गा ग आवे.

९२८ परीवाह. न,त,न,त,ग,ग. २३४४

रच परीवाह ना ता त ता गा ग आणी.

९२९ नान्दीमुखी[1], वसंत[2]. ७,७ यति न,न,त,त,ग,ग. २३१८

न न त त ग ग थी, मात नान्दीमुखीमां.

१ वाग्वल्लभमा नान्दीमुखी नाम, आ माप ने ७,७ यति जणावेले.

२ नारायणभट्टीना टिप्पणमाना सूत्र प्रमाणे वसंत नाम तथा यति छे.

९३० हंससेनी. ४, १० यति[1] म,भ,न,त,ग,ग. २५४९

चारे थोभो, म भ न त ग गे हंससेनी.

१ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीना टिप्पणमा अने पिंगळादर्शमा ए यति छे

९३१ वाटिकाविकाश, वाटिका; वाटिकाविलास. } भ,न,य,ज,ग,ग. २६८७

भॉ न य ज ग ग धरो वाटिकाविकाशे.

९३२ अर्कशेषा. र,ज,र,ज,ग,ग, २७३१

रा ज रा ज गा ग थी रचाय अर्कशेषा.

९३३ मदावदाता स,भ,र,ज,ग,ग. २७४०

स भ रा जा ग ग थी रचो मदावदाता.

९३४ वंशमूल. स,भ,स,ज,ग,ग. २८०४

स भ सा जा ग ग रच जोइ वंशमूले.

९३५ चेलाञ्चल,वेलाञ्चल,वेलांतर. त,भ,स,ज,ग,ग. २८०५

चेलाञ्चले त भ स ज गा ग आणजोजी.

९३६ कुसुम्भिनी. ज,भ,स,ज,ग,ग. २८०६

कुसुम्भिनी ज भ स ज गा ग थी रचाशे.

९३७ विलम्बनीया. न,भ,स,ज,ग,ग. २८०८

न भ स जा ग ग थी थशे विलम्बनीया.

९३८ अनन्तदामा. न,न,स,ज,ग,ग. २८१६

न न स ज ग ग थी रचो अनन्तदामा.

९३९ नदीः ७,७ यति[1] न,न,त,ज,ग,ग. २८८०

न न त ज ग ग थी, छेद हये[७] नदी छेः

[1] शब्दकल्पद्रुम प्रमाणे यति आपी छेः

९४० वसन्ततिलका,[१] उद्धर्षिणी,[२] सिंहोद्धता,[३] सिंहोन्नता,[३] मधुमाधवी,[४] तका,[५] वसंततिलक,[६] वसंततिल,[७] शोभावति, चेतोहिता[८]	त,भ,ज,ज,ग,ग. २९१३

थाशे वसंततिलका त भ जा ज गा गे.

१ पिंगलाचार्यना मत प्रमाणे. २ सैतव मुनि. ३ काश्यप मुनि. ४ राम अने गोमानसना मत प्रमाणे, वळी वृत्तरत्नाकरना टिप्पणमां नागे ए नाम आप्यानो पाठ जणाव्यो छेः ५ नागराज पिंगळ, ६ छंदोलता, ७ गणप्रस्तारप्रकाश, ८ शामकीर्त्ति पंडिते चेतोहिता नाम आप्युं छे. श्रीकृष्ण कवियें, मंदारमरंदचंपूमां वृत्तबिंदुना पेहेला भागमां पादांते अथवा ७, ७ उपर यति कही छे. छंदःशास्त्रमां पादान्ते यति कही छे. पिंगळादर्शमां, वसंततिलका, सिंहोन्नता, उद्धर्षिणी, अने मधुमाधवी ए नामो आपी तेमां ८, ६ यति कही छे; तेज प्रमाणे शब्दकल्पद्रुममां पण यति कही छे. प्राकृतपिंगळसूत्रमां तथा वाणीभूषणमां वसंततिलका, अने सिंहोद्धता ए बन्ने नामो आपी तेमां यति कही नथीः

राग यमनकल्याण, ताल लक्ष्मी, मात्रा २१, मध्यकाळ.

(संगीतानुसार छंदोमंजरी.)

९४१ कुमारी, कुमारिका. ८,६ यति[1]. न,ज,भ,ज,ग,ग २,९९१

न ज भ ज गा ग आठ, वसुथी कुमारी.

१ वृत्तरत्नाकर मूळ तथा शब्दकल्पद्रुममां ८,६ यति कही छे

९४२ अलोला[1], लोला.[2] ७,७ यति म,स,म,भ,ग,ग. ३,०९७

साते छे यति मा सा, मा भा गा गु अलोला.

१ वाग्वल्लभ २ छंद शास्त्रना परिशिष्टमां ए नाम छे, तथा ७,७ यति कही छे मंदारमरन्दचपूमां ए नाम तथा यति छे, शब्दकल्पद्रुममां अने छंद-प्रभाकरमां लोला नाम तथा एज यति छे वृत्तरत्नाकरनी टीकामां केहेछे के आ वृत्तनेज केटलाक कुटिल केहेछे, पण ते जूदो छे, जुओ अंक ९१२ मे

९४३ कृतमाल. त,ज,य,भ,ग,ग. ३,१८१

आणो कृतमाल विषे ता जा य भ गा गा.

९४४ शारदचन्द्र, प्रिया. त,य,स,भ,ग,ग. ३,२७७

ता या स भ गा गा धरजो शारदचन्द्रे.

९४५ कलहंसी. ६,८ यति.[1] त,य,स,भ,ग,ग. ३,२७७

ता या स भ गा गे, छ दिशाथी कलहंसी.

१ मंदारमरंदचमूमांथी

९४६ परिणाही. म,भ,स,भ,ग,ग. ३,३१३

मा भा सा भू ग ग थी रचाशे परिणाही.

९४७ रतिरेखा. त,य,भ,भ,ग,ग. ३,४६९

ता या भ भ गा गे तुं रचजे रतिरेखा.

९४८ मन्मथ. स,स,भ,भ,ग,ग. ३,४८४

स स भा भ गा गा आण तुं मन्मथ माहे.

९४९ जाह्नमुखी. भ,भ,भ,भ,ग,ग. ३,९११

जाह्नमुखी रच भा भ भ भा ग ग आणी.

९५० इन्दुवदना[1], इन्द्रवदना[2], वरसुन्दरी. } भ,ज,स,न,ग,ग. ३,८२३

इन्दुवदना रच भ जा स न ग गा थी.

१ पिंगळादर्शमां इन्दुवदना नाम आपी ५,४,५ यति कही छे, परंतु मंदारमरंदचंपू, छंदोमंजरी, वृत्तरत्नाकर, अने छंद प्रभाकरमां यति कही नथी

२ इन्द्रवदनामां शब्दकल्पद्रुममां यति कही नथी वाग्वल्लभमां इन्दुवदना अने इन्द्रवदना ए बन्ने नामो आपी तेमां यति कही नथी. एटले असे यति ग्राह्य गणी नथी.

९५१ लक्ष्मी[1]. पादान्ते यति. म,स,त,न,ग,ग. ३,८६५

लक्ष्मीमां धरवा मा सा त न ग ग पादे.

१ आ वृत्तमां वृत्तरत्नाकरना परिशिष्ट भागमां न ने बदले भ अर्थात् (न स त भ ग ग,) एवु लक्षण आप्युं छे.

९५२ प्रतिभादर्शन. स,भ,त,न,ग,ग. ३,८९२

प्रतिभादर्शनमां छे स भ त न गी गा.

९५३ अलिपद[1], नटगति[2]. न,न,न,न,ग,ग. ४,०९६

नटगति अलिपद न न न न गा गा.

१ वाग्वल्लभमां अलिपद नाम छे, तेमां यति कही नथी

२ छंदोलतामां छे, तेमां यति कही नथी

९५४ सुपवित्र, पवित्र. ८,६ यति. न,न,न,न,ग,ग. ४,०९६

न न न न ग ग वसु, यति सुपवित्रे.

१ शब्दकल्पद्रुम, छंदोमंजरीनाटिप्पणमां सुपवित्र नाम छे, एमां ८,६ यति कही छे

९५५ कामला. न,न,म,य,ल,ग. ४,६७२

रच तुं ननमया लागा थकी कामला.

९५६ प्रपात. य,य,य,य,ल,ग. ४,६८२

प्रपाते रचो या यया या ल गा आणिने.

९५७ जलदरासिवा. न,स,य,य,ल,ग. ४,७०४

जलदरासिवा नसा या यलागा थकी.

९५८ पथ्या,[1] मंजरी.[2] वसुधा.[3] } ५,९. यति. स,ज,स,य,ल,ग ४,८४४

स ज सा य ला, ग शर[4]छेद पथ्या विषे.

१ वाग्वल्लभमा पथ्या नाम छे पण यति नथी २ आ नाम छंद कामदुघावत्समा छे ३ आ नाम छंद प्रभाकरमा छे ४ शब्दकल्पद्रुममा तथा छंदोमजरीना टिप्पणमा अने पिंगळादर्शमा ५,९ यति कही छे, मंदारमरंदचपूमा १०,४ यति कही छे

९५९ चंद्रौरस. म,भ,न,य,ल,ग. ५,१०५

थाशे चंद्रौरस ठिक म भ ना या ल गे.

९६० कल्पमीलिता. र,र,र,र,ल,ग. ५,२६७

रा र रा रा ल गे थायछे कल्पमीलिता.

९६१ सुधाधरा. र,ज,त,र,ल,ग. ५,४१९

रा ज ता र ला ग आण्या थकी सुधाधरा.

९६२ कलाधर. र,र,ज,र,ल,ग, ५,४५९

आणजो रा र जा र ला ग आ कलाधरे.

९६३ कुडाङ्गिका, हरी,[1] आनन्दा.[2] ज,र,ज,र,ल,ग. ५,४६२

कुडाङ्गिका रचो ज रा ज रा ल गे करी.

१ छंद प्रभाकरना प्रकटकर्त्ताए ए नाम नवु कल्प्यु छे, परंतु तेनु "कुडङ्गिका" नाम प्रथमनुज छे

२ आनन्दा नाम गणप्रस्तारप्रकाशमा आप्यु छे

९६४ मल्ली.[1] स,स,ज,र,ल,ग. ५,४६८

स स जा र ल गा धराय मङ्गली विषे.

१ गणप्रस्तारप्रकाशमा ए नाम छे, छंद कामदुघावत्समां पण ए नाम छे एज नामनुं वृत्त पदर अक्षरमा छे

९६५ सुकेशर[1]. न,र,न,र,ल,ग. ५,९९२

रच खरे सुकेशर न रा न रा ल गे.

१ वृत्तरत्नाकरमा नरनरैर्लगौच रचितं सुकेशरम् कह्युं छे १५ वर्णमा जूदाज मापथी सुकेसर वृत्त अंक १०२७ मे छे

९६६ वितानिता. न,न,न,र,ल,ग. ५,६३२

न न न र ल ग धर वितानिता विषे.

९६७ अलकालिका, अलिकालका. त,भ,र,स,ल,ग. ५,८१३

ता भा र सा ल ग थी रचो अलकालिका.

९६८ गगनोद्गता. र,न,र,स,ल,ग. ५,८१९

रा न रा स ल ग थी-रचो गगनोद्गता.

९६९ अपराजिता. ७, ७ यति[1]. न,न,र,स,ल,ग. ५,८२४

न न र स ल ग थी, मुनि अपराजिता.

१ वाग्वल्लभ, पिंगळ छद सूत्र, वृत्तरत्नाकर, छंदोमजरी, शब्दकल्पद्रुम, तथा मंदारमरदचपू प्रमाणे यति लखी छे छंद प्रभाकर (पृष्ट १९५) मां यति कही नथी.

९७० विनन्दिनी. स,स,म,स,ल,ग ५,८९२

स स सा स ल गे रच ठीक विनन्दिनी.

९७१ *पुराली, नगरालिका. न,त,म,न,ल,ग. ६,०५६

न त म या ला ग थी कवि! पुराली करो.

* मूळ नगरालिका नाम छे, पण ते माप कोइ प्रकारे आवी शकतुं नथी माटे नगर+आलिका अथवा आली=नगरआली शब्द थाय अने नगरने बदले पुर शब्द मूकी पुर+आली=पुराली नाम ग्रहण कर्युं छे.

९७२ भूरिशिखा. म,स,म,न,ल,ग. ६

स स भा त ल गा आण्ये थाशे भूरिशिखा.

९७३ क्रीडायतन, क्रीडावसथ. स,स,स,त,ल,ग. ६,३६४;

स स सा त ल गा रचजो क्रीडायतने.

९७४ नासाभरण. त,य,भ,त,ल,ग. ६,९४१

ता या भ त ला गा आण तुं नासाभरणे.

९७५ कर्णिशर. भ,भ,भ,त,ल,ग. ६,९८३

कर्णिशरे धर टांक भ भा भा त ल गा.

९७६ विपाकवती. न,भ,ज,ज,ल,ग. ७,०३२

न भ ज जा ल ग-थी थाय विपाकवती.

९७७ काकिणिका ज,ज,भ,ज,ल,ग. ७,०८६

ज जा भ ज ला ग-थी रचतुं काकिणिका

९७८ कारविणी. भ,ज,भ,ज,ल,ग. ७,०८७

तुं रच भ जा भ जा ल ग थी कारविणी

९७९ कुररीरुता[1], धृति[2], भगदा[3] न,ज,भ,ज,ल,ग. ७,०८८

रच कुररीरुता न ज भ जा ल ग थी

१ वाग्वल्लभमा कुररीरुता सिवाय बीजा नाम नथी, अने यति पण नथी, २ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीना टिप्पणना सूत्र प्रमाणे धृति नाम छे पण तेमा यति नथी

३ वृत्तरत्नाकर तथा शब्दकल्पद्रुममा यति नथी छंद कामदुघावत्स तथा छंदोमंजरीना टिप्पणमा छे, तेमा यति कही नथी.

९८० कूर्चललित. र,र,र,भ,ल,ग. ७,३३५

रा र रा भा लगा थायछे कूर्चललिते.

९८१ कलहंतिका. स,ज,ज,भ,ल,ग. ७,९३२

कलहंतिका स ज जा भ ला ग थी रचो.

९८२ अंचलवती. भ,ज,ज,भ,ल,ग. ७,९३६

अंचलवती भ ज जा भ ला ग थी करो.

९८३ गगनगतिका. र,स,ज,न,ल,ग. ८,०२

रा स जा न लगे रचो गगनगतिका.

९८४ निर्मुक्तमाला. म,र,भ,न,ल,ग. ८,०८१

जोडो निर्मुक्तमाला म र भ न ल ग थी.

९८५ प्रहरणकालिका, प्रहरणकलिता. } ७,७ यति[१]. न,न,भ,न,ल,ग. ८,१२८

न न भ न लग थी, प्रहरणकालिका,

मुनि[७] विरतिथकी, प्रहरणकलिता.

छंदोमंजरी पृष्ट ११६ मे प्रहरणकालिका नाम उपरना गणोवाळु छे, तेमा यति कही नथी प्राकृतपिंगळसूत्र पृष्ट १६७ मे, वाग्वल्लभ पृष्ठ ६४ मे, मंदारमरंदचंपू पृष्ट १८ मे, ए माप छे पण यति कोइए कही नथी

१ शब्दकल्पद्रुममा प्रहरणकालिका नामना वृत्तनुं उपर प्रमाणे माप अने ७,७ यति कही छे

शब्दकल्पद्रुम, वृत्तदर्पण, वृत्तरत्नाकर नारायणभट्टी टीका (पृष्ट ४८) वाळामां प्रहरणकलिता (प्रहरणकलिका इति पाठ) नाम आपी तेमा ७,७ यति कही छे

छंद प्रभाकरमा आ गणोथीज प्रहरणकालिका नाम आपी (यति कह्या वगर) विशेषमा जणावेछे के, आ वृत्तनेज प्रहरणकलिता केहेछे.

पिंगलछंद सूत्रनी हलायुधनी टीकामा ७,७ यति प्रहरणकलिता नाम आपता जणावेछे

राग गारा (कानरा), तालचतुश्र जाति तेताल, मात्रा १६ (संगीतानुसार छदोमंजरी प्रमाणे.)

९८६ चक्र, चक्रपद[१], चक्रवर्त्ती[२], वृत्तचक्र[३], चक्रविरति[४], देवरवरतनु[५], चकुरा[६]. } भ,न,न,न,ल,ग. ८,१९१

चक्र रच भ न न न ल ग कवि गणी.

१ पिंगळादर्शमा चक्रपद नाम आपी तेमा ७,७ यति कही छे २ भगवन्‌पिंगलमा ए नाम छे ३ छंदरत्नावलीमा ए नाम छे ४ छंदप्रभाकरमा ए नाम छे ५ [illegible] उपगनाा सूत्र प्रमाणे छे ६ गणप्रस्तारप्रकाशमा ए नाम छे

९८७ कामशाला. र,र,र,र,ग,ल ९,३६३

कामशाला विषे रा र रा रा ग ला थाय.

९८८ उन्नर्म. भ,भ,स,स,ग,ल. ९,९७९

भा भ स सा ग ल थर्का तो रच उन्नर्म.

९८९ लीला[1]. त,भ,य,ज,ग,ल. १०,८६९

लीला विषे ठिक त भा या ज गा ल थाय.

१ पिंगळादर्शमा ५,९ यति कही छे पण तेने बीजु प्रमाण मळ्यु नथी

९९० गोप[1], कुरंग[2]. ८,६ यति. र,ज,र,ज,ग,ल. १०,९२९

गोप आठ छेद रा ज, रा ज गा ल धार.

१ पिंगळादर्श पृष्ट ८१ मे गोप नाम आपी ८,६ यति कही छे.

२ प्रवीणसागरमा कुरंग नाम छे

९९१ हरलीला[1], हरिलील. त,त,त,ज,ग,ल. ११,०४९

ता ता त ज गा ल थी थाय हरिलीलाज.

१ गणप्रस्तारप्रकाशमा ए नाम छे

९९२ हरिलीला[1]. त,भ,भ,ज,ग,ल. ११,१८९

ता भा भ जा ग ल थी हरिलीला रचाय.

१ भाषाछंदोमजरी पृष्ट १८४ मे ए नाम आप्यु छे

९९३ उपकारिका. स,ज,ज,भ,ग,ल. ११,६२८

उपकारिका रचवा स जा ज भ गा ल.

९९४ हेमसिंहिका. भ,ज,ज,भ,ग,ल. ११,६२९

हेमसिंहिका करवा भ जा ज भ गा ल.

अंचलवती भ ज जा भ ला ग थी करो.

९८३ गगनगतिका. र,स,ज,न,ल,ग. ८,०२७

रा स जा न लगे रचो गगनगतिका.

९८४ निर्मुक्तमाला. म,र,भ,न,ल,ग. ८,०८१

जोडो निर्मुक्तमाला म र भ न ल ग थी.

९८५ प्रहरणकालिका,
प्रहरणकलिता. } ७,७-यति[१]. न,न,भ,न,ल,ग. ८,१२८

न न भ न लग थी, प्रहरणकालिका,

मुनि[७] विरतिथकी, प्रहरणकलिता.

छंदोमंजरी पृष्ट ११६ मे प्रहरणकालिका नाम उपरना गणोवाळु छे, तेमां यति कही नथी. प्राकृतपिंगळसूत्र पृष्ट १६७ मे, वाग्वल्लभ पृष्ट ६४ मे, मंदारमरंदचपू पृष्ट १८ मे, ए माप छे पण यति कोइए कही नथी

१ शब्दकल्पद्रुममां प्रहरणकालिका नामना वृत्तनुं उपर प्रमाणे माप अने ७,७ यति कही छे.

शब्दकल्पद्रुम, वृत्तदर्पण, वृत्तरत्नाकर नारायणभट्टी टीका (पृष्ट ४८) वाळामां प्रहरणकलिता (प्रहरणकालिका इति पाठ) नाम आपी तेमा ७,७ यति कही छे.

छंद.प्रभाकरमा आ गणोथीज प्रहरणकालिका नाम आपी (यति कह्या वगर) विशेषमां जणावेछे के, आ वृत्तनेंज प्रहरणकलिता केहेछे

पिंगलछंद सूत्रनी हलायुधनी टीकामा ७,७ यति प्रहरणकलिता नाम आपता जणावेछे

राग गारा (कानरा), ताल चतुश्र जाति तेताल, मात्रा १६ (संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे.)

९८६ चक्र, चक्रपद[१], चक्रवर्त्ती[२],
वृत्तचक्र[३], चक्रविरति[४],
देवरवरतनु[५], चकुरा[६]. } भ,न,न,न,ल,ग. ८,१९१

चक्र रच्च भ न न न ल ग कवि गणी.

१ पिंगळादर्शमा चक्रपद नाम आपी तेमा ७,८ यति कही छे २ भगवत्पिंगळमा ए नाम छे ३ छंदरत्नावलीमा ए नाम छे ४ छंद-[illegible] ए नाम छे ५ [illegible] पोटीना टिप्पणना सूत्र प्रमाणे छे

६ गणप्रस्तारप्रकाशमा ए नाम छे

९८७ कामशाला. र,र र,र,ग,ल. ९,३६३

कामशाला विषे रा र रा रा ग ला थाय.

९८८ उन्नर्म. भ,भ,स,स,ग,ल. ९,९७९

भा भ स सा ग ल थकी तो रच्च उन्नर्म.

९८९ लीला[1]. त,भ,य,ज,ग,ल. १०,८६९

लीला विषे ठिक त भा या ज गा ल थाय.

१ पिंगळादर्शमा ५,९ यति कही छे पण तेने वीजु प्रमाण मळ्यु नथी.

९९० गोप[1], कुरंग[2]. ८,६ यति र,ज,र,ज,ग,ल. १०,९२३

गोप आठ छेद रा ज, रा ज गा ल धार.

१ पिंगळादर्श पृष्ट ८१ मे गोप नाम आपी ८,६ यति कही छे.

२ प्रवीणसागरमा कुरंग नाम छे

९९१ हरलीला[1], हरिलील. त,त,त,ज,ग,ल. ११,०४५

ता ता त जं गा ल थी थाय हरिलीलाज.

१ गणप्रस्तारप्रकाशमा ए नाम छे

९९२ हरिलीला[1]. त,भ,भ,ज,ग,ल. ११,१८९

ता भा भ जा ग ल थी हरिलीला रचाय.

१ भाषाछंदोमंजरी पृष्ट १८४ मे ए नाम आप्यु छे

९९३ उपकारिका. स,ज,ज,भ,ग,ल. ११,६२८

उपकारिका रचवा स जा ज भ गा ल.

९९४ हेमसिंहिका. भ,ज,ज,भ,ग,ल. ११,६३१

हेमसिंहिका करवा भ जा ज भ गा ल.

९९५ हेति. न,ज,ज,भ,ग,ल. ११,६३२.

न ज ज भ गा ल थकी रचो कवि! हेति.

९९६ मधुपालि, मनोरम[१]. स,स,स,स,ल,ल. १४,०४४.

स-स-सा स-ल-ले मधुपालि रचो कवि!

१. गणप्रस्तारप्रकाशमां ए नाम छे

९९७ सुखदा[१]. त,य,स,त,ल,ल. १४,९४१

ता या स त ला ले सुखदा शोभे सरस.

१ भाषाछंदोमंजरी पृष्ठ १८३ मे ए नाम छे.

९९८ वेशम्भरि. न,न,य,न,ल,ल. १६,०००

न न य न ल ल थी वेशम्भरि तुं रच.

९९९ अक्रहरि, अक्रुहरि. न,न,न न,ल,ल. १६,३८४

अक्रुहरि रच, न न न न ल ल थकी.

१५ अतिशक्करी छंद. ३२,७६८ भेद. १५ वर्ण.

१००० सारङ्गी, लीलालेख[१], लीलाखेल, कामक्रीडा, सारंगिका, सारंग, सारंगक, केशवलेख[२], त्रिनयन[३]. } म,म,म,म,म. १

मा मा मा मा माथी जोडो सारङ्गी रूडी रीते.

१ ए नाम प्राकृतपिंगळसूत्र तथा छंदोमंजरीमा छे.

२ ए नाम छंदोलतामां छे.

लीलालेख, सारङ्ग अने कामक्रीडा नाम वाग्वल्लभमां छे तेमां यति आपी नथी, छंदोवृत्तमुक्तावलिमां सारङ्गी नाम आपी यति कही नथी.

३ त्रिनयन नाम चित्रसेनटीकावाळा मागधी पिंगळमां छे, तेमां पंदर गुरु यति वगरना कह्या छे.

प्राकृत पिंगळसूत्र अने छंदोमंजरीमां यति कही नथी.

छंदोल्लतामां पाच मगणवाळा वृत्तने कामक्रीडा नाम आपता तेमा यति कही नथी, अने विशेपमां जणाव्युं छे के, कोइ एने ज लीलालेख, केशवलेख, अने सारंगक ए नाम पण आपे छे.

कामक्रीडा अने सारंगिका नामनुं उपर प्रमाणे माप आपी तेमां पिंगळादर्शमा पृष्ट ८९ मे ४,४,४,३, यति कही छे पण तेनुं प्रमाण जोवामां आवतुं नथी.

१००१ वज्राली. (वा.व.) ८,७ यति. त,य,म,म,म. १३

ता या म म मा थी थाशे, आठे थोभो वज्राली.

१००२ स्फोटक्रीड. (वा.व.) १०,५ यति. न,य,म,म,म. १६

विरति दशे स्फोटक्रीडे छे, ना या मा मा मा.

१००३ क्रीडितकटका. (वा.व.) ११,४ यति. भ,स,स,म,म. २२३

क्रीडितकटका भ स सा मा मा, रुद्रे ११ थोभो.

१००४ चार्वटक. (वा.व.) १०,५ यति. म,भ,भ,म,म. ४३३

दिशा१० पांचे यति चार्वटके, मा भा भा मा मा.

१००५ आनद्ध. (वा व.) १०,५ यति. र,न,स,त,म. २,२९९

रा न सा त म दश अने छे, पांच आनद्धे.

१००६ बहुलाभ्र. (वा.व.) ९,६ यति. स,भ,स,भ,म. २,३१६

बहुलाभ्रे विरति नवे, सा भ स भा मा छे.

१००७ वाणीभूषा. (वा.व.) ८,७ यति. म,म,त,न,म. ३,८४१

वाणीभूषा आठे साते, म म त न माथी छे.

१००८ चित्रा[1], चित्र[2]. म,म,म,य,य. ४,६०९

चित्रा माहे शोधी शोधी आण मा मा म या या.

१ वाग्वल्लभ २ प्राकृतपिंगळसूत्र अने छंदोमंजरीमा छे.

१००९ चन्द्रलेखा[1],चन्द्रसेना. ७,८यति.[2] म,र,म,य,य. ४,६२६

स्राते छे चन्द्रलेखा, मा रा य या या कन्याथी.

१ मंदारमरंदचंपूमा ए नाम तथा यति कही छ

२ छंदोमजरी, पिंगळादर्श, शब्दकल्पद्रुम, अने वाग्वल्लभमा ७,८ यति अने उपरना मप्रमाणे चन्द्रलेखा नाम आप्यु छे छंद प्रभाकरमा यति कही नथी. १३ वर्णमा ६,७ यति ने न स र र ग ए गणोथी चन्द्रलेखा वृत्त अक ८०७ मे छे.

१०१० मालिनी[1],मानिनी, नूतनमाला[2]. } ८,७ यति. न,न,म,य,य. ४,६७२

न न म य य वसुए[8], मालिनी ठीक थाशे.

१ वाग्वल्लभ, शब्दकल्पद्रुम,छंदोबोध,सुवृत्ततिलक अने मंदारमरदच-पूमा पण आ नाम अने आ प्रमाणेज यति छे छंदसारमां मालती नाम आप्युं छे. [पृष्ठ २५ मे] संगीतानुसार छंदोमजरीप्रमाणे राग सोरठ, ताल खंड जाति जगपाल, मात्रा ११, विलवकाळ

२ गणप्रस्तारप्रकाशमा ए नाम छे

१०११ सिंहपुच्छ. य,य,य,य,य. ४,६८२

धरो सिंहपुच्छे य या या य या आप आणी.

१०१२ कुमारलीला. म,न,न,र,य. ५,६२६

ज्रो जोडो म न न र य बने कुमारलीला.

१०१३ चन्द्रकान्ता. ७, ८ यति. र,र,म,स,य. ५,६५१

रा र मा सा य थी ने, साते यति चन्द्रकान्ता.

१०१४ वृषभ. स,ज,स,स,य. ५,८६८

वृषभे रचाय रचना स ज सा स या थी.

१०१५ दीपक. भ,त,न,त,य. ६,६३१

दीपकमां लाव भ त न ता या कवि शाणा.

१०१६ परिमल. न,य,न,ज,य. ७,१२०

परिमल माहे न य न ज या कर शोधी.

१०१७ शरकल्पा.　　　　न,न,स,न,य. ७,९३६

न न स न य कर सदा कवि! शरकल्पा.

१०१८ एला[1], रेखा[2], कवितरेला[3].　　　　स,ज,न,न,य. ८,१७२
　　　　५, १० यति.

स ज ना न या, शर[5] दश यति धर एला.

१ छंद कामदुघावत्समा ए नाम छे वाग्वल्लभ अने शब्दकल्पद्रुममां एला नाम तथा ५, १० यति छे २ मदारमरदचपुमा ए नाम तथा यति छे.
३ पिंगळादर्शमा कवितरेखामा ५, १० यति कही छे

१०१९ मुरेला.　　　　न,ज,न,न,य. ८,१७६

न ज न न या धरी शुभ रच तुं मुरेला.

१०२० सीता[1].　　　　र,त,म,य,र. ८,७३९

रा त मा या रे करी सीता रचो आ नेमथी.

१ आ वृत्त छंद प्रभाकरना कर्त्ताए नवु कल्प्यु छे

१०२१ लास्यकारी[1], चन्द्ररेखा[2]. ७,८ यति. र,र,र,र,र. ९,३६३

रा र रा रा र आणो, तमे लास्यकारी विषे.

रा र रा रा र साते, यति चंद्ररेखा दिसे.

१ लास्यकारी नाम वाग्वल्लभमा छे, तेमा यति कही नथी
२ पिंगळादर्शमा ७,८ यति चन्द्ररेखामा कही छे.
तेर वर्णमा अंक ८०७ मे आ नामनु वृत्त छे तेनु माप जूदु छे.

१०२२ मदनमालिका.　　　　न,र,न,र,र. ९,६८८

मदनमालिका न र न रा र थी थायछे.

१०२३ विपिनतिलक[1],विपिनतिलका[2]. न,स,न,र,र. ९,६९६

विपिनतिलके न स न रा र छे सामटा.

१ वाग्वल्लभ　　　　२ छंद.प्रभाकर.

१०२४ तूणक[1], तूण[2], चामर[3], पंचयामल. | र,ज,र,ज,र. १०,९२३ ८,७ यति[4]

आठ सात छे यति र, जा र जा र तूणके.

१ तूणकनाम, छंदोमजरी, अने शब्दकल्पद्रुममा छे, तेमा यति कही नथी संस्कृत प्रोसडीमां ८,७ यति कही छे

२ आ नाम छंद प्रभाकरमा छे पण तेमां यति कही नथी.

३ मदारमरंदचपूमा आ नाम आप्युं छे, अने तेमां र, र, ज, ज, र गण, कह्या छे तथा ७,८ यति कही छे, तेनुं बीजुं प्रमाण जड्युं नथी

४ वृत्तदर्पणमां चामरमा पादान्ते यति कही छे. छंदोवृत्त मुक्तावलीमां अने प्राकृतपिंगळसूत्रमां तथा वाणीभूषणमां चामरमां यति कही नथी. वाग्वल्लभमां तुणक अथवा पचयामल नाम आपी यति विषे कह्युं नथी. संगीतानुसार छंदोमंजरीमां राग पहाडी (कामोदी), ताल दिव्य जाति संकीर्ण, मात्रा २३, मध्यकाळ छे.

१०२५ मृदंग. ८,७यति. (पिं. द.) त,भ,ज,ज,र. ११,१२५

ता भा ज जा र वसु[८] ने, मुनिथी[७] मृदंग छे.

१०२६ प्रभद्रक[1], प्रभद्रिका[2], सुखेलक[3]. | न,ज,भ,ज,र. ११,१८४ ८,७यति[1].

न ज भ ज रा कराय, वसुथी[८] प्रभद्रके.

१ प्रभद्रक नाम वाग्वल्लभमा छे पण तेमा यति कही नथी. पिंगळादर्शमां ८,७ यति कही छे.

२ आ बन्ने नामो छंद प्रभाकरमा छे. ३ नारायणभट्टी प्रमाणे.

१०२७ सुकेसर, सुखेलक. ९,१०यति. न,ज,भ,ज,र. ११,१८४

न ज भ ज रा, शरे[५] यति सुकेसरे करो.

वृत्तरत्नाकर पृष्ठ ५०मे "नजभजरै विराजितमिदं सुकेसरम्" जणावी विशेषमा टिप्पण आप्युं छे के सुखेलकम् इति पाठः.

पिंगळादर्शवाळाए सुकेसरमां ५, १० यति कही छे,

१०२८ प्लवंगम[1]. भ,भ,त,भ,र. ११,९७५

भा भ त भा र धरो आप ठीक प्लवंगमे.

१ मात्रामेळमा आ नाम छे. जुओ पृष्ट २६, अंक ७४.

१०२९ उपमालिनी. ८,७ यति.[1] न,न,त,भ,र. ११,९८४

न न त भ र वसुएँ, रचो उपमालिनी.

१ वृत्तरत्नाकरमा ए यति छे

१०३० मणिहंस, मानहंस[1], मनहंस[2], रणहंस[3], मनहंसरूप[4], हंस[5], कलहंस, मनोहंस[6], मानसहंस[7], पदहंसक, चूलियारा[7], चुरियार[8]. — स,न,ज,भ,र. ११,६२८

मणिहंस थाय सदा स जा ज भ रे करी.

१ छंदःप्रभाकरमा मानहंस छे. २ वाणीभूषणमा मनहंस छे. ३ छंदरत्नावलिमा ए नाम छे ४ प्राकृतपिंगळसूत्रमा ए नाम छे ५ शब्दकल्पद्रुममा ए नाम छे ६ छंदोवृत्तमुक्तावलिमा ए नाम छे ७,८ मागधीपिंगळछंदोग्रंथमा आ मापवाळा वृत्तनां चूलियारा तथा चुरियार एम बे नाम आपेला छे.

१०३१ मयूरवदना. भ,ज,ज,भ,र. ११,६३१

तुं रच मयूरवदना भ जा ज भ रा थकी.

१०३२ पल्लवरी[1]. भ,भ,भ,भ,र. ११,७०३

भा भ भ भा र थी पल्लवरी करजो तमे.

१ प्रवीणसागर लेहेर १५मीमाथी ते प्लवंगम जातिने रागे गवायछे.

१०३३ सारसिका[1], हारवती[2], पर्मगंल, नूतन[3], सूकण. — र,न,भ,भ,र. ११,७०७

रा न भा भ र थकी ठिक सारसिका बने.

१-२ सारसिका अने हारवती नाम वाग्वल्लभमा छे, पण तेमां यति कही

नथी. ३ पिंगळादर्शमा पमगल नाम छे, तेमां ८,७ यति कही छे; ए नाम क्यांथी लीधु ते जणातु नथी.

१०३४ सीरिणी. र,न,र,न,र. ११,९९३

रा न रा न र थकी रचो सरस सीरिणी.

१०३५ चमरीचर. न,न,र,न,र. ११,९९८

तुँ रच कवि! न ना र ना र चमरीचरे.

१०३६ निशिपाल, निशिपालक, निशिपालिका, शंभु,[1] निशंपालिका,[2] निशापाल.[2] भ,ज,स,न,र. १२,०१९

वृत्त निशिपाल रच भा ज स न रा धरी.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रथमां ए नाम छे.

२ छंद.कामदुघावत्तमां ए बे नाम छे. अने विशेषमा ८,७ यति केहेछे. पिंगळादर्शमा पण निशपालिकामा ८, ७ यति कही **भ ज य न र** गणो जणाव्या छे, ते भूल छे, परतु प्राकृतपिंगलसूत्र, वाणीभूषण, वाग्वल्लभ इत्यादि बीजा ग्रथोमां यति कही नथी, अने गणो उपर मुजब छे.

१०३७ जलनिधिवेला. न,य,स,म,स. १२,४९६

जलनिधिवेला रच ना या सा मा स थकी.

१०३८ लीलाचन्द्र. ८,७ यति. (वा.व.) म,म,त,य,स. १३,०९७

लीलाचन्द्रे आठे साते, गण मा मा त य सा.

१०३९ मोहनि[1]. स,भ,त,य,स. १३,१०८

स भ ता या स वडे मोहनि तो वृत्त रचो.

१ आ वृत्त छंद प्रभाकरमा आपेलु छे अने तेनीज टीकामां लखेछे के, आ वृत्तना आदिमां **स** ने बदले रगण पण आवेछे. एम कहीने प्रथमना बे पादमा प्रारभे सगण मूक्यो छे अने बाकीना बे पादमा प्रारंभे रगण मूक्यो छे, पण ए प्रमाणे शेळभेळ करवु उचित नथी; रगण मूकवाथी १३,१०७मुं रूप जुदुं थायछे.

१०४० धोरित. ९,६ यति. (वा.व.) भ,न,र,र,स. १३,९०३

धोरित यति नवे छए-भा न रा र स थी.

१०४१ शान्तसुरभि. भ,न,र,स,स. १४,०१९

शान्तसुरभि रचो भ ना र स सा धरता.

१०४२ भाम[1]. भ,म,स,स,स. १४,०२३

भा म स सा सा आण गणो कवि! भाम विषे.

१ आ वृत्त छंद प्रभाकरना कर्त्ताए नवु कल्प्यु छे.

१०४३ भ्रमरावलिका[1], मनहरण[2], भ्रमरावल, दंडिका[3], रत्न[4], मनोहरण[5], भ्रमरावती[6], भ्रमरावली, भमरावली[7], भवरावलि, नलिनी, भ्रमर[8]. — स,स,स,स,स. १४,०४४

भ्रमरावलिका रच-सा स स सा स धरी.

१ वाग्वल्लभ २ छंद प्रभाकरमा ए नाम छे ३ नागराज पिंगळमां आ नाम छे. ४ छंद कामदुघावत्समा ए नाम छे ५ गणप्रस्तारप्रकाशमा ए नाम छे. छंदोबोधमा लखेछे के भाषामा ए नाम छे ६ छंद शास्त्र प्रमाणे. ७ भमरावली नाम पिंगळादर्शमा छे, तेमा ५,६ यति कही छे ८ भगवत् पिंगळमा ए नाम छे.

१०४४ कर्णलता. स,भ,भ,स,स. १४,२६०

रचजो कर्णलता स भ भ स सा करिने.

१०४५ त्रिशकलिता. भ,भ,स,भ,स. १५,६०१

भा भा सा भा स थी झट जोडो त्रिशकलिता.

१०४६ शीर्षविरहिता. म,य,भ,भ,स. १५,७५३

मा या भा भ सा आणी रच कवि! शीर्षविरहिता.

१०४७ शंकावली. त,भ,र,न,स. १६,०१३

शंकावली रच ता भ रा न स धरीं पदे.

१०४८ मणिगुण, धवलंगरु,[1] शशिकला[2], चन्द्रावर्त्ता[3], शशिलेखा[4]. } न,न,न,न,स. १६,३८४

मणिगुण रच न न न न स धरीं करी.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रंथ २ अ० पिंगळसूत्रमां ६,९ यति केहेछे पण वाग्वल्लभ तथा छन्द प्रभाकर, छंदोमंजरी अने शब्दकल्पद्रुममा ए नाम छे पण यति नथी पिंगळादर्शें एमा ७,८ यति कही छे. ३ छंद शास्त्रमां चन्द्रावर्त्ता नाम आपी तेमां ७,८ यति केहेछे ४ संस्कृत प्रोसडीमां शशिलेखा अथवा शशिकला नाम आप्युं छे.

१०४९ मणिनिकर. १०,९ यति[1]. न,न,न,न,स. १६,३८४

१ प्राकृत पिंगलसूत्र, छंद शास्त्र, शब्दकल्पद्रुम, छंद प्रभाकर, वाग्वल्लभ, तथा छंदोबोध अने पिंगलादर्शमा, ए नाम तथा यति छे.

१०५३ निश्चल. ९,६,४ यति. (पिं.द.) भ,त,न,भ,त. १६,८७१

निश्चल पाचे, षड युग भा ता, ना भा ता थी.

१०५४ रूक्मामाला, रूपमाला[१] त,र,र,य,ज. २१,१३०

ता रा रा या ज थी थायछे रूक्मामाळ वृत्त.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रंथमा आ वृत्तनु माप न र ज र ज कह्युं छे. ते २१,८४८ मु रूप थायछे

१०५५ उह्निनी. ८,७ यति. (वा.व.) र,स,य,ज,ज. २३,१३१

आठथी उह्निनी गणो, रा स या ज ज आण.

१०५६ मितसवित्थ. (वा. व) न,स,स,ज,ज. २३,२६४

मितसवित्थमा न स सा ज जा पद थाय.

१०५७ महाह्व[१] ज,ज,ज,ज,ज. २३,४०६

महाह्वमां रचवा ज ज जा ज ज पाद.

१ चित्रसेनटीकावाळा मागधीपिंगळमा ए नाम छे

१०५८ रुचि. (मंदारमरंदचपू) भ,भ,भ,भ,भ. २८,०८७

भू भ भ भू भ करी रुचि तुं रच सुंदर.

१०५९ रमण. न,न,ज,न,भ. २८,१४४

सरस रमण विषें न न ज न भा धर.

१०६० शरहति, वसुमति[१] न,न,न,न,न. ३२,७६८

शरहति-वसुमति न न न न न थकी.

१ शरहति नाम वाग्वल्लभमां छे.

१६ अष्टिछंद. ६५,५३६ भेद. १६ वर्ण.

४०६१ चन्द्रापीड, [२] ब्रह्म, [३] ब्रह्मरूप, [४] ब्रह्मरूपक, ब्रह्मारूपा, क्रामकी, [५] माधोराधा, [६] वंभाण. } म,म,म,म,म,ग. [१]

मा मा मा मा मा गा आवे चंद्रापीडें के ब्रह्में तो.

विद्युन्माळाथी आ वृत्त बमणु छे. एटले कोइ ८,८ यति केहेछे, परंतु ते सर्वसंमत नथी.

१ चन्द्रापींड तथा ब्रह्म ए बे नाम वाग्वल्लभमां छे, तेमां यति कही नथी.

१०६६ वक्रावलोक, चक्रावलोक. न,न,म,र,र,ग. ९,२८०

न न म र र ग आवेछे वृत्त वक्रावलोके.

१०६७ प्रवरललित, प्रवरेन ललिता[१]. य,म,न,स,र,ग. १०,१७८

य मा ना सा रा गा प्रवरललिते लाववाना.

१ छंदोर्णवमां ए नाम छे.

१०६८ अभिधात्री. स,स,स,ज,र,ग. १०,९७२

अभिधात्रीतणी रचना स सा स जा र गा थी.

१०६९ पाणी. न,र,भ,ज,र,ग. ११,११०

न र भ जा र गा थी कवि! रचाय वृत्त पाणी.

संस्कृत प्रोसडी पृ ३८ मा वाणिनी ने बदले वाणि समजी भूल करी वाणि वृत्त तेणे जुदु पाड्यु अने वाणिने बदले पाणी नाम नवु आपी तेज मापनु वृत्त आ स्थाने कायम राख्यु छे

१०७० वाणिनी[१] ७,९ यति[२]. न,ज,भ,ज,र,ग. ११,१८४

मुनि नव छेदथी, न ज भ जा र ग वाणिनीमां.

१ वर्ग १७मा आ नामनु वृत्त अंक १११५मे छे

२ मंदारमरंदचंपूमा ७,९ यति छे.

१०७१ अनिलोहा. स,भ,त,य,स,ग. १२,१०८

अनिलोहा रच सा भा त य सा गा धरवाथी.

१०७२ भोगावलि. त,न,न,य,स,ग. १२,२०९

भोगावलि रच त न न य सा गा पद लावी.

१०७३ कलधौतपद. स,स,स,स,स,ग. १४,०४४

कलधौतपदे स स सा स स गा धर पादे.

१०७४ धलिवदन. न,य,म,भ,स,ग. १५,३७६

धलिवदने लावो ना या मा भ स गुरु शोधी.

१०७५ मृताशिखा. ९,७ यति[१]. त,य,स,भ,स,ग. १५,३६९

८ ७

छे सूतशिखा खंड हये, ता य स भ स गा थी.

१ वाग्वल्लभमां ए प्रमाणे यति छे

१०७६ परिखायतन, परिखापतन. स,स,स,भ,स,ग. १९,१८०

परिखायतने स स सा भा स ग धर लावी.

१०७७ मालावलय. म,भ,स,भ,स,ग. १९,६०१

पादे मालावलय विषे मा भ स भ स गा छे.

१०७८ भीमावर्त्त. म,भ,न,न,स,ग. १६,३६९

भीमावर्त्ते म भ न न स ग धर पद्ममांहे.

१०७९ रतिलेखा. स,न,न,न,स,ग. १६,३८०

कवि! जाण स न न न स ग थकी रतिलेखा.

१०८० शिशुभरण. न,न,न,न,स,ग. १६,३८४

न न न न स ग थकी शिशुभरण बनेछे.

१०८१ मन्दाकिनी[१]. ४;४,४,४यति[२]. त,म,य,र,त,ग. १७,४७७

ता मा य रा, ता गा थकी, चच्चारथी, मन्दाकिनी.

१ आ सिवाय १२ अक्षरमां पण अंक ७२० मे मन्दाकिनी वृत्त आवेछे.

२ मंदारमरंदचंपूमां ४, ४; ४, ४ यति कही छे

१०८२ गरुडरुत[१]; गरुडप्लुत[२]. न,ज,भ,ज,त,ग. १९,३७६

गरुडरुते रचो न ज भ जा त गा पादमां.

१ वाग्वल्लभ. २ छंद कामदुघावत्समां आ नाम छे

१०८३ नराच[१], नाराच[२], नराज[३], नाराज[४], नागराज[५], पंचचामर[६], विपक्ष[७].	ज,र,ज,र,ज,ग. २१,८४६

ज रा ज रा ज गा धरो नराच मांह भावथी.

प्रमाणिकाथी बमणुं आ वृत्त छे.

१ वाग्वल्लभ अने छंदोवृत्तमुक्तावलिमां नराच नाम आपी यति

कही नथी. आ मापमां एक लघु वधारतां १७ वर्णमा अंक ११४७ मे द्वितीय पंचचामर छे.

२ भाषाछंदोमंजरीमां **नाराच** नाम छे. ३ मागधी छंदः-शतकमां **नराच** नाम छे. ४ सरोजसिंधुमां **नाराज** लखेछे.

५ छंद प्रभाकरे टीकामां **नागराज** नाम आप्युं छे, पण तेमां यति कही नथी, अने तेणे **नराच, पंचचामर** ए नामो पण आप्यां छे.

६ शब्दकल्पद्रुममां १६ अक्षरमां प्रमाणिकाथी बमणुं आ वृत्त जणावी १७ अक्षरमां पण एज नामनुं वृत्त, **ज र ज र ज ग ल** ए मापथी आप्युं छे, परंतु तेनुं बीजुं प्रमाण न मळतां अमे १७वर्ण-मां दाखल कर्युं नथी.

संस्कृत भोसडी पृष्ट ३८ मे पंचचामरनुं बीजु नाम **विचित्र** आप्युं छे.

७ मागधी पिंगळ छंदोग्रंथमां **विपक्क** नाम आप्युं छे.

प्राकृतपिंगळसूत्र, वाणीभूषण, छंदोमजरी आदि प्राचीन प्र-माण ग्रंथोमां यति कही नथी; वळी मंदारमरंदचंपूना वृत्तबिंदुमां तो स्पष्ट कह्युं छे के, नराचना पदमां छेद(यति)नज आवे. वृत्तदर्प-णमां पादांते यति कही छे. कवीश्वर दलपतरामे अने छंदःप्रभाकरे पण यति पाळी नथी. परतु पिंगळादर्शमां ८,८ यति कही छे. तेनुं कारण एम समजायछे के, प्रमाणिकाथी बमणु पद करी बोलतां यति आठे लेवायछे, तेथी तेणे यति कही छे अने बीजाए ने गौण मानी छे, किंवा ते विषे मौन्य पकड्युं छे.

राग श्रीराग कर्णाटकी, त्रिश्रजाति एकताल, मात्रा ३, मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

१०८४ तरवारिका. (वाग्वल्लभ) न,स,स,ज,ज,ग. २२,२६१

न स स ज ज गे तरवारिका रचजो पदे.

१०८५ कमलकर, कमठकर. न,य,न,य,भ,ग. २५,५९२

कमलकरे छे न य न य भा गा पादविषे.

१०८६ प्रमदा[1]. ४,४,४,४ यति. स,त,य,स,भ,ग. २६,२१२

यति चारे, वेद[४] स ता, या स भ गा, छे प्रमदा.

१ मंदारमरदचम्पूमां. वर्ण चौदमा पण प्रमदा नामे वृत्त अंक ९७९ मे छे.

१०८७ त्रोटक, मणिकल्पलता. न,ज,र,भ,भ,ग. २७,८२४

न ज र भ भा ग त्रोटके छे मणिकल्पलता.

चार वर्णमां चार सगणना मापवाळु प्रसिद्ध तोटक वृत्त अंक ७५३ पृष्ठ ३१२ मे छे तेथी आ भिन्न छे.

१०८८ नील[1], अश्वगति, नीलस्वरूप[2],
विशेषिका, विशेषक[3], विशेष,
लीला[4], पदनील[5], खगति[6]. } भ,भ,भ,भ,भ,ग. २८,०८७

नील विशेष विषे धर पांच भ तेपर गा.

१ आ नाम छंदोलतामां छे. २ छंद कामदुघावत्समा ए नाम छे.
३ आ नाम छंद प्रभाकरमा छे. ४ छंदःशास्त्र तथा मागधी छंदःशतकमा ए नाम छे. ५ प्रवीणसागरमा ए नाम छे, पिंगळादर्शमां नील, विशेष अने अश्वगति ए नामो आपी तेमा पाचे पाचे यति कही छे.
६ वाग्वल्लभमां खगति, नील, विशेषिका ए नामो छे तेमा यति नथी.

१०८९ शैलशिखा. भ,र,न,भ,भ,ग. २८,११६

शैलशिखा रचो भ र न भा भ ग आप धरी.

१०९० कलहकर. न,न,न,न,भ,ग. २८,६७२

न न न न भ ग थी कलहकर वृत्त बने.

१०९१ मदनललिता. ४,६,६ यति[1]. म,भ,न,म,न,ग. २९,१६९

चारे शास्त्रे[1], मदनललिता, मा भा न म न गे.

१ वाग्वल्लभ, छंदोमंजरी, शब्दकल्पद्रुम, इत्यादिमा पण आज प्रमाणे यति छे. संस्कृत प्रोसडीमां मदनललित नाम आप्युं तेमा यति कही नथी.

१०९२ धीरललिता. भ,र,न,र,न,ग. ३०,१६७

भा र न रा न गा धरी रचाय धीरललिता.

१०९३ सुललिता[1]. ४,४,४,४ यति. न,म,ज,स,न,ग. ३०,१३६

यति युगे[४], चारे न मा, ज स न गा, सुललिता.

१ मंदारमरंदचंपूमांथी

१०९४ नराशिखी. न,भ,ज,स,न,ग. ३०,९८४

नराशिखी रच न भा ज स न गा कवि करी.

१०९५ चकिता. ८,८ यति[1]. भ,स,म,त,न,ग. ३०,७९१

आठ वसु[८] परे छेदो, आणो भा स म त न गा

१ वाग्वल्लभ, अने शब्दकल्पद्रुममा पण ए प्रमाणे यति छे. छंद प्रभाकरमा यति नथी.

१०९६ सारवरोहा. भ,त,न,त,न,ग. ३१,२०७

सारवरोहा रच भ त ना ता न ग धरिने.

१०९७ वस्युवति. भ,र,य,न,न,ग. ३२,३४३

लाव भ रा य ना न गा ठीक वस्युवतिये.

१०९८ ऋषभगज, विलसित[1], गजविलसित, गजतुरगविलसित[2], विलसित. भ,र,न,न,न,ग. ३२,७२९ ७, ९ यति[3].

सात नवे धराय, विरति ठिक विलसिते.

१ प्राकृतपिंगळसूत्र अने वृत्तरत्नाकरमा ७,९ यति छे २ छंदोलता.

३ मंदारमरंदचंपूमा ए प्रमाणे यति छे (स्वर घनैश्छिन्नम्.)

४ य अहीं तथाने बदले वापर्यो छे.

११९९ सरभ[१]. ८,८ यति. न,न,न,न,म,ग. ३१,७६८

वसु वसु यति नन, ननगं सरभमां.

१ पिंगळादर्श पृष्ट ९४ प्रमाणे

११०० दन्तालिका. (वा.व.) त,म,र,म,य,ल. ३६,९९७

तामारमायाला आण शोधी दन्तालिका मांह.

११०१ सुखसार. भ,त,य,ज,र,ल. ४३,६२३

भातयजाराल धरो पाद सुखसारमांह.

११०२ कल्पधारि, कल्पचारि. र,र,र,ज,र,ल. ४३,६६७

रारराजारला थी बने सदाय कल्पधारि.

११०३ चित्र[१],चञ्चला[२],चित्रसंग[३]. र,ज,र,ज,र,ल. ४३,६९१

चित्र, चंचला, रचायछे रजारजारला थी

१ पिंगळ छंदसूत्रना टिप्पणमा चित्र नाम छे तेमा यति कही नथी.

२ छंदोवृत्तमुक्तावलीमा पण आ नाम छे, तेमा यति आपी नथी.

२ वाग्वल्लभमा चित्र अने चंचला नाम आपी यति कही नथी

२ छंदःप्रभाकरे चंचला अने चित्र ए बन्ने नाम आपी यति कही नथी

३ छंदोलता, छंदोमंजरी, तथा प्राकृत पिंगळसूत्रनी टीकामा चित्रसंग नाम छे, तेमा यति कही नथी. समानिका वृत्तनु बमणु आ वृत्त छे.

११०४ सुखसार[१]. भ,त,य,ज,स,ग. ४७,७१९

भातयजासाग करावो सदाय सुखसारे.

१ वाग्वल्लभ प्रमाणे.

११०५ कुल्यावर्त्त[१],कुल्यावृत्त[२]. ६,१० यति. } म,म,स,भ,त,ल. ९२,९१७

छट्ठे कुल्याबर्चे, यति मा मा स भ ता ला धर.

१ वाग्वल्लभ प्रमाणे.

११०६ रासा[1].　　भ,भ,भ,भ,भ,ल. ६०,८९९

भा भ भ भा भ ल थी रचजो झट रास कवि!

१ चित्रसेन टीकावाळा नागपिंगल तथा मागधीछंद शतकमा ए नाम छे रासा नाम वृत्तमा आवी शक्तु नथी माटे असे रास राख्यु छे

११०७ अचलधृति[1].　　न,न,न,न,न,ल. ६५,५३६

न न न न न ल थकॉ अचलधृति तुं रच.

जुओ प्रचूर्ण मात्रामेळ जातिमा पृष्ट २०६ मात्रासमक प्रकरण

१ छंद शास्त्र प्रमाणे आनुं वीजुं नाम "गीत्यार्य्या" आप्युं छे, अने ते उपरथी छंद प्रभाकर पण एमज केहेता विशेषमा केहेछे के, आना बमणाने "डमरु" केहेछे, ते दंडक प्रकरणमा ३२ लघु अक्षरनु छे

१७अत्यष्टि छंद. १,३१,०७२भेद. १७वर्ण.

११०८ मानाक्रान्ता.　　म,म,म,म,म,ग,ग. १

मानाक्रान्ता नामे वृत्ते मा मा मा मी मा गी गो आवे.

११०९ मंजारी.[1]　　म,म,भ,त,य,ग,ग. ६,९२९.

मा मा भा तू यो गे गा पद सारी कविता मंजारी.

१ गणप्रस्तारप्रकाशमा ए नाम छे.

१११० वीरविश्राम.　　न,न,र,न,र,ग,ग. ११,९६८

धर तुं न न र ना र गा ग पद वीरविश्रामे.

११११ वल्वज, वल्गुज.　　भ,भ,त,न,स,ग,ग. १६,१८१

वल्वज- वल्गुज मांहे भ भ त न स ग गा आवे.

१११२ कूराशन, क्रूराशन, कराशन, क्रूरासन　　त,न,त,न,स,ग,ग १६,१८९

क्रूराशन रच ता ना त न स ग ग धरी पादे.

११११३ मन्दाक्रान्ता. ४,६,७यति[1]. म,भ,न,त,त,ग,ग. १८,९२९

मन्दाक्रान्ता, श्रुति षड हये, मा भ ना ता त गा गे.

१ छंदःशास्त्र, छंदोवृत्तमुक्तावलि, मंदारमरंदचंपू, छंदोमंजरी अने वृत्तरत्नाकरमां ए प्रमाणे यति छे.

राग वेगवाहिनी, ताल मिश्रजाति रूपक, मात्रा ९, मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी प्रमाणे.)

शब्दकल्पद्रुममां कह्युं छे के, कोइने दूत तरीके मोकलतां तेनुं वर्णन आ वृत्तमां सारुं लागेछे. कालिदासनुं मेघदूत खंडकाव्य आ वृत्तमां छे.

११११४ कामरूप[1]. म,र,भ,न,त,ग,ग. २०,३६९

मा रा भा ना त गा गा कविवर! धरो कामरूपे.

१ आ नाम वाग्वल्लभमां छे

११११५ वाणिनी[1]. ७,१० यति. न,ज,भ,ज,ज,ग,ग. २३,४७२

मुनि दश वाणिनी, यति न जा भ ज जा ग गे छे.

१ वाणिनी १६ अक्षरमां अंक १०७० मे छे, तेम छतां पिंगळादर्शमां ७,१० यतिथी १७ वर्णमां क्याथी लावी उमेर्यो तेनुं प्रमाण जडतु नथी.

११११६ अतिशायिनी[1], चित्रलेखा[2]. — स,स,ज,भ,ज,ग,ग. २३,९०० — १०, ७ यति.

स स जा भ ज गा ग थी दशे, ज अतिशायिनी छे.

१ वाग्वल्लभमां १०, ७ यति छे. २ वृत्तरत्नाकरमां चित्रलेखा नाम छे. तेमां यति नथी; वळी चित्रलेखा १८ वर्णमां अंक ११५३मे छे.

११११७ शायिनी[1]. न,स,ज,भ,ज,ग,ग. २३,९०४

न स ज भ ज गा ग थी बने सरस शायिनी तो.

१ वाग्वल्लभमां.

१११८ सलेखा[1]. न,न,म,न,न,ग,ग. ३२,३२०

न न म न न ग ग जोडो कवि! सरस सलेखा.

१ वाग्वल्लभमां

१११९ तितिक्षा[1]. भ,न,य,न,न,ग,ग. ३२,३८३

भा न य न न ग ग आणी रच तुं पद तितिक्षा.

१ वाग्वल्लभमां छे

११२० हारिणी[1]. ४,६,७यति[2]. म,भ,न,म,य,ल,ग, ३७,३६१

चारे चक्रे, मुनि म भ न मा, या ला ग्रथो हारिणी.

१ छंद प्रभाकरमां आ वृत्तने हारिणी साथे एक गण्यु छे, ते भूल छे.

२ छंदोमंजरी, वाग्वल्लभ, प्राकृतपिंगळसूत्र अने छंद शास्त्रमां आ यति छे

११२१ पृथ्वी. ८,९ यति[1]. ज,स,ज,स,य,ल,ग. ३८,७५०

दिशा८ नवपरे ज सा, ज स य ला ग पृथ्वी धरो.

१ मंदारमरंदचंपू, वाग्वल्लभ, छंदोमंजरी, प्राकृतपिंगळसूत्र, वाणीभूषण, अने वृत्तरत्नाकरमां ए प्रमाणे यति छे
राग गौरी, ताल चतुश्र जाति एक ताल, मात्रा ४, मध्यकाळ (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

११२२ वालविक्रीडित. भ,स,ज,स,य,ल,ग. ३८,७५१

भा स ज स य ला ग पाद रच वालविक्रीडिते.

११२३ मालाधर, मालाहरा[1]. न,स,ज,स,य,ल,ग. ३८,७५२ ८, ९ यति[2].

वसु नव यति न सा, ज स य ला ग मालाधरे.

१ पिंगळादर्शमां ए नाम अने यति छे पण तेनु बीजु प्रमाण मळ्यु नथी.

२ छंदोवृत्तमुक्तावलि, छंद प्रभाकर, प्राकृतपिंगळसूत्र, वाग्वल्लभ, अने वाणीभूषणमां मालाधर नाम साथे यति नथी, पण छंदोर्णवमां ८, ९ यति कही छे, ने मालाधर नाम आप्यु छे

११२४ कालसारोद्धत[1]. ज,त,ज,स,य,ल,ग. ३८,७५४

ज ता ज सा या ल ग धार कवि! कालसारोद्धते.

१ वाग्वल्लभमा छे.

११२५ घनमयूर[1] ७,६ यति. न,न,भ,स,र,ल,ग. ४२,९४४

घनमयूर हये, रस थी न ना भा ,स रा ल गे.

१ मंदारमरंदचपूमा छे.

११२६ हरिणी. ६,४,७ यति[1]. न,स,म,र,स,ल,ग. ४६,११२

छ युग मुनिये, न स्मा रा सा, ल गे हरिणी करो.

१ वाग्वल्लभ, वृत्तरत्नाकर, प्राकृतपिंगळसूत्र, छंदोमंजरी, अने मंदारमरंदचपू राग कामोद, ताल मिश्रजाति ध्रुवपंच, मात्रा २५, मध्यकाल. (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

११२७ हरि. ६,४,७ यति[1]. न,न,म,र,स,ल,ग. ४६,१४४

छ चरण हय, छेदे ना ना, म रा स ल गे हरि.

१ वृत्तरत्नाकर प्रमाणे.

११२८ मोहन. ९,८ यति[1]. य,र,स,र,स,ल,ग. ४६,२९०

नवे आठे वने य र सा, रा स ला गुरु मोहने.

१ पिंगळादर्श प्रमाणे यति छे

११२९ भाराक्रान्ता. ४,६,७यति[1].म,भ,न,र,स,ल,ग. ४६,५७५

भाराक्रान्ता, युग छ मुनिये, म भा न र सा ल गे.

१ प्राकृतपिंगळसूत्र तथा छंदोमंजरी प्रमाणे यति छे

११३० कान्ता. ४,६,७ यति १. य,भ,न,र,स,ल,ग. ४६,५७६

करो कान्ता,युग छ मुनिये, य भा न र सा ल गे.

१ शब्दकल्पद्रुम अने नारायणभट्टी टीकावाळा वृत्तरत्नाकरमा ४,६,७ यति कही छे पण छंदोमंजरीनीटीपमां (भवेत्कान्ता रस युग हयैर्यभौ नरसा लगौ) ६,४,७ यति कही छे

११३१ विरुद्रुत. (वा.व) म,भ,स,भ,त,ल,ग. १२,४६,९

चारे पादे विरुद्रुते छे म भ सा भा त ल गा॥

११३२ कासार. ८,९यति(वा.व.)म,म,त,न,त,ल,ग. १२,९९३

अठे खंडे मा मा ता-ना, त ल ग थी कासार करो.

११३३ वंशल. (वा. व.) म,त,ज,ज,ज,ल,ग. १६,१६९

मा ता जी जा जा ल ग आप धरो कवि! वंशलमां.

११३४ अवितथ, नर्दटक, नर्कुटक, नर्द्दटक[1], मर्कटक[2]. } न,ज,भ,ज,ज,ल,ग. १६,२४० ७, १० यति[2].

अवितथमां रचो, न ज भ जा ज ल गा पदमां.

१. संस्कृत प्रोसडीमाथी. भागवतना दसमस्कंधना ८७मा अध्याययमां वेदस्तुति आ वृत्तमां छे, अने तेमां ७, १० यति छे.

२ वृत्तरत्नाकरमां ७, १० यति जणावी तेनां नाम नर्दटक, नर्कुटक आप्यां छे. छंदःशास्त्रनी टीपमां यति नथी, छंदोमंजरीमां नर्दटक नाम छे पण यति नथी, मंदारमरंदचपूमां पण यति नथी. छंदोलतामां ७, १० यति छे, सुवृत्ततिलकमा यति नथी, पिंगळादर्शमां नर्कुटकमां ७, ४, ६ यति कही छे. ३ वृत्तरत्नाकरनीटीप.

११३५ कोकिल, कोकिलक. } न,ज,भ,ज,ज,ल,ग. १६,२४० ७, ६, ४ यति[1].

हय पट कोकिले. न ज भ जा ज ल, गा करजो.

१ वृत्तरत्नाकर तथा प्राकृतपिंगळसूत्रना क्षेपकमां तथा शब्दकल्पद्रुममां ७,६,४ उपर यति दर्शावी छे, पण छंदःशास्त्रना आठमा अध्यायना पदरमा सूत्रमां ८,५,४ यति कही छे

११३६ शिखरिणी. ६,११यति. य,म,न,स,भ,ल,ग. १९,३३०

छ ए रुद्रे छेदो, य म न स भ ला गे शिखरिणी.

१ प्राकृतपिंगळसूत्र, छंदोमजरी, वाग्वल्लभ, छंदोवृत्तमुक्तावली, वृत्तरत्नाकर अने पिंगळादर्शमां ६,११ यति मूकी छे.

राग बाहार, ताल मिश्रजाति ध्रुवपच, मात्रा २५, मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमजरी)

११३७ समदविलासिनी. न,ज,भ,ज,भ,ल,ग. ६०,३३६

समदविलासिनी न ज भ जा भ ला गुरु रचो,

११३८ सुधाधारा. ६,११ यति. य,त,न,न,भ,ल,ग. ६१,४१०

सुधाधारा राम, शिव यति य त ना न भ ल गे.

१ पिंगळादर्श प्रमाणे यति छे

११३९ विधुरविरहिता[1]. ९,१२ यति. स,त,य,भ,न,ल,ग. ६४,६१२

स त य भा ना ला, गुरु थी पांचे विधुरविरहिता.

१ वाग्वल्लभ

११४० शुकवनिता, शिशुवनिता. स,स,भ,भ,न,ल,ग. ६४,९२४

स स भा भ न ला गा धरिने रच शुकवनिता.

११४१ वाहान्तरित. त,न,भ,भ,न,ल,ग. ६४,९९७

वाहान्तरित विषे धरजो त न भ भ न ल गा.

१ वाग्वल्लभमां छे.

११४२ वंशपत्रपतित, जलधररसित, वंशवदन[1], वंशपत्र, वंशदल, वंशपत्रपतिता[2]. — भ,र,न,भ,न,ल,ग. ६४,९८३ १०,७ यति[3].

दिग्मुनि वंशपत्रपतितं, भ र न भ न ल गा.

१ शंभुमते प्राकृतपिंगळसूत्रमां जणाव्युं छे २ "माघकाव्य" मां ए नाम छे.
३ छंदःशास्त्र, मंदारमरंदचंपू, वाग्वल्लभ, अने वृत्तरत्नाकरमां ए प्रमाणे यति छे.

११४३ कर्णस्फोट. न,य,त,न,म,ग,ल. ६९,३९२

कवि! पद कर्णस्फोटे न य त न मा गा ला धार.

वाग्वल्लभमा छे

११४४ प्रतिहार (वा० व०) र,र,र,र,र,ग,ल. ७४,८९९

रा र रा रा र गा ला थकी आप जोडो प्रतिहार.

११४५ कान्तार (वा० व०) य,म,न,स,र,ग,ल. ७९,७१४

तमे जोडो या मा न स र ग ल थी वृत्त कान्तार.

११४६ फल्गु. ६,६,५ यति. स,भ,स,भ,स,ग,ल. ८१,१४०

रस शास्त्रे शर, यति सा भा स भ, स ग ले फल्गु.

१ वाग्वल्लभमां छे.

११४७ द्वितीयपंचचामर. ज,र,ज,र,ज,ग,ल. ८७,३८२

द्वितीय पंचचामरे रचो ज रा ज रा ज गा ल.

आ वृत्त शब्दकल्पद्रुममा छे आ पिंगळमा १६ वर्णमा अंक १०८३ मे "पंचचामर" आवी जायछे, तेथी अहि पंचचामरना नामसाथे "द्वितीय" जोडवामा आव्यु छे.

११४८ रूपमाल,[१] } र,स,ज,ज,भ,ग,ल. ९३,०१९

रूपमाला. } ८,६,३ यति.

रूपमाल वसु छ ए, र स जा ज भा ग, ल थाय.

१ पिंगळादर्शमा आ नाम अने ८,६,३ यति कही छे

११४९ अचलनयन. न,न,न,न,न,ल,ल. १,३१,०७२

न न न न न ल ल थकी रच अचलनयन.

वाग्वल्लभमा छे-

१८ धृतिछंद. २,६२,१४४ भेद. १८ वर्ण.

११५० रणशूर[१]. १०,८ यति. म,म,स,र,र,म. ९,४३३

दशाशाए रणशूर रचेछे, म मा सा र रा मा आणी

१ आ वृत्त अमारा नामथी नवु रच्युं छे. श नो छ थायछे अने र नो ड थायछे, एटले रणछूड एम शब्द थयो. तेमां छू नो ओ थता रणछोड एम छेवटे थायछे

१९५१ शार्दूल. १२,६ यति[१] म,स,ज,स,र,म. १०,०७३.

बारे छे यति छेवटे म स ज सा, रा म शार्दूले तो.

१ शब्दकल्पद्रुम, वृत्तरत्नाकर अने छंदोमजरीमां ए प्रमाणे यति छे

१९५२ मंजीरा, मंजीर[१] ९,९ यति[२] म,म,भ,म,स,म. १२,६७३

मंजीरामांहे खंडे यति, मा मा भा म स मा आणोजी.

१ ए नाम छंदप्रभाकरमां छे, तेमां लक्षणमां यति कही नथी; पण उदाहरणमां उपर मुजब यति पाळी छे. २ मंजीरा नाम वाग्वल्लभमां छे, पण तेमां तथा प्राकृतपिंगळसूत्र अने वाणीभूषणमां यति कही नथी, पण छंदःशास्त्रनुं टिप्पण, छंदःपारिजात, छंदोवृत्तमुक्तावली अने पिंगळादर्शमां उपर प्रमाणे यति छे.

१९५३ चित्रलेखा[१] ४,७,७ यति[२] म,न,न,त,त,म. १८,९३७

मा ना ना त, त म युग हये छे, यति चित्रलेखामां.

१ १७ वर्णमां अंक ११११६ मे आ नागनुं वृत्त छे.

२ वृत्तरत्नाकर, छंदोमजरी, अने शब्दकल्पद्रुममा ए यति छे

१९५४ परामोद. य,स,स,ज,न,म. २१,४५०.

परामोद विषे य स सा ज ना म खचित आवेछे.

१९५५ विलुलितवनमाला. न,त,म,न,न,म. ३२,३२०.

विलुलितवनमालामां न न म न न म आवेछे.

१९५६ सिंहविस्फूर्जित. ५,६,७ यति म,म,भ,म,य,य. ३७,२४९

मा म्भा मा या या, पांचे षट साते, सिंहविस्फूर्जिते छे.

वृत्तरत्नाकरना परिशिष्टमा आ नाम तथा यति छे.

११५७ नीलशार्दूल, नीलमालूर, नीलशालूर. } न,न,म,य,य,य. ३७,४४०

न न म य य य आणो नीलशार्दूलमां ठीक धारी.

११५८ क्रीडचंद्र[1], वारवाणावृत्त[1], क्रीडगा[1], चंद्रिका[1], क्रीडाचद्र[2], क्रीडाचक्र[3], कीलानंद[4], चंद्रक्रीडा[5], महामोदकारी[6], महामोद[7], क्रीडचक्र[8].

य,य,य,य,य,य. ३७,४५०

यया या य या या धरो क्रीडचन्द्रे वळी चंद्रिकामां.

१ वाग्वल्लभमां, २ प्राकृतपिंगळसूत्र, ३ पिंगळादर्शमां, ११,७ यति कही छे, पण तेनु प्रमाण जड्युं नथी. ४–५ भगवत् पिंगळमां छे. ६ छंदःप्रभाकर. ७ भाषा छंदोमंजरी. ८ शब्दकल्पद्रुम.

११५९ कुसुमितलता[1], कुसुमितलतावेल्लिता[2], कुसुमलतावेल्लिता, फूलमाला, कुसमिलता.

५,६,७ यति. म,त,न,य,य,य, ३७,८२७

आने चके छे, कुसुमितलता, मा त ना या य ये थी.

१ मंदारमरंदचंपूमां ए नाम तथा यति छे. २ प्राकृत पिंगळ सूत्रमां आ नाम छे अने यति पण एज प्रमाणे छे. ३ प्राकृत पिंगळसूत्र, छंदोमजरी, वृत्तरत्नाकर, अने छंदःशास्त्रप्रमाणे ए यति छे, पण छंद:प्रभाकरमां यति कही नथी.

११६० चन्द्रलेखा, चित्रलेखा[1]. } म,भ,न,य,य,य. ३७,८७३ ४, ७, ७ यति[2].

चारे साते, यति म भ न य या, ये बने चन्द्रलेखा.

१ छंदोमंजरीमां अने प्राकृत पिंगळसूत्रना परिशिष्ट भागमां ए नाम तथा यति छे, पण छंदःप्रभाकरमां ए नाम साथे यति नथी.

२ शब्दकल्पद्रुम अने वाग्वल्लभमां बन्ने नाम छे, पण तेणे यति कहीज नथी. वर्ण १९मां अंक १००९ मे चंद्रलेखा नाम छे.

११६१ सत्केतु. म,न,न,ज,र,य. ४४,०२६

आ सत्केतु **म न न ज र य** आणवे खरे बनेछे.

११६२ चन्द्रकुल. १०, ८ यति. स,स,ज,भ,स,य. ४८,४७६

धर चन्द्रकुले दशे यति, **स स ज भ सा य** लावी.

पिंगळादर्श प्रमाणे आ नाम तथा यति छे.

११६३ केशर. ४, ७, ७ यति. म,भ,न,य,र,र. ७४,७३७

च्यारे साते, **म भ न य र र** थी, थारी पदो केशरे.

वृत्तरत्नाकर प्रमाणे आ नाम तथा यति छे.

११६४ सिन्धुसौवीर. (वा० व०) र,र,र,र,र,र. ७४,८९९

रा र रा रा र रा आणजो गोठवी सिन्धुसौवीरमां.

११६५ लालसा. ९,९ यति[1]. त,न,र,र,र,र. ७४,९४१

छेदो नव नव लालसा, ने गणो **ता न रा रा र रा.**

१ छंदोमजरीनी टीप.

११६६ महामालिका[1], नाराच[1], नराच[2], नाराचक, महामाला.

६,६,६ यति. न,न,र,र,र,र. ७४,९४४

छ छ छ विरति, छे महामालिका, **ना न रा रा र रे.**

१ वाग्वल्लभ. २ नाराच के नराचमां प्राकृत पिंगळसूत्रना परिशिष्ट भागमां १२,६ यति कही छे.

३ छंदोलतामाथी.

११६७ निशा[1], सालसा[2]. १०,८ यति. न,न,र,र,र,र. ७४,९४४

दिग (१०) वसु (८) यतिथी निशा छे, **न ना रा र रा रा** धरे.

१ मंदारमरदचपू, तेमा यति एज छे
२ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीना टिप्पणमा छे

११६८ तारका,[1] महामालिनी.[2] } न,न,र,र,र,र. ७४,९४४ १३,५ यति[1].

जख शर यति नानराराररें छे, सदा तारका.

१ पिंगळादर्श. २ आ नाम छंदःप्रभाकरमां छे पण तेमां यति कही नथी, अने तेणे तारका ने नाराचने एकठा गण्या छे.

११६९ विलास. ४,६,८ यति. म,स,स,र,र,र. ७४,९६९

चो छो आठ, विलास रचो मा, ससाररा आणिने.

मंदारमरदचपूमा छे

११७० नन्दन. ११,७ यति. न,ज,भ,ज,र,र. ७६,७२८

शिव मुनिये यति नजभजा, ररा करो नन्दने.

छंदोमंजरीमां आ यति छे. शब्दकल्पद्रुममां आनी जोडे महामालिका नाम आपेल छे, पण तेना लक्षणमां "वेदरेफैश्छिन्ना" आप्युं छे, एटले वाग्वल्लभमां आपेलुं माप बराबर छे. वाग्वल्लभ, प्राकृतपिंगळसूत्र तथा शब्दकल्पद्रुममां पण एज नाम तथा यति छे.

११७१ गजेन्द्रलता, लता.[1] } न,न,र,भ,र,र ७६,९९२ १०,८ यति.

ननरभरर थी लता ने, यति छे दशे आठमे.

१ छंदोमंजरीना परिशिष्टमा १०,८ यति कही छे
२ शब्दकद्रुममा १०,८ यति

११७२ पर्विणी. ९,९ यति. न,न,र,न,र,र. ७७,९०४

नव नव यति नानरा, नररथी बने पर्विणी.

११७३ क्रोडक्रीड. म,भ,न,न,र,र. ७७,८०६

आणीचो मा भ न न र र गण क्रोडक्रीडा मही.

११७४ वसुपदमंजरी[1], हरिणाभिनंदन[2]. न, ज, भ, ज, ज, र. ८९,००८

वसुपदमंजरी रच न जा भ ज जा र आणिने.

१ वाग्वल्लभ २ छंदोलता.

११७५ हरिणप्लुत, हरिणप्लुता. } म, स, ज, ज, भ, र. ९३,०१७ ८, ५, ५ यति.

आठे छे हरिणप्लुता, शर पांच मा, स ज जा भ रे.

वृत्तरत्नाकर, छंदोमजरीनु टिप्पण, अने शब्दकल्पद्रुम

११७६ विबुधप्रिया, मत्तकोकिल[1], कूर्पर, चर्चरी[2], चंचरी[3], चंचली[4], चक्रा. } र, स, ज, ज, भ, र. ९३,०१

थायछे विबुधप्रिया ठिक वृत्त रा स ज जा भ रे.

१ मत्तकोकिल, चर्चरी, कूर्पर, चंचरी ए नामो वाग्वल्लभमां छे, तेमां यति कही नथी. २ छंदोवृत्त-मुक्तावलि, प्राकृतपिंगळसूत्र, वाणीभूषणमां अने छंदोलतामां आ नाम छे, तेमां यति कही नथी. ३ चंचरी अने चर्चरी ए बे नामो पिंगळादर्शमां आपी तेणे १०, ६ यति कही छे, परंतु १८ अक्षरनुं आ वृत्त होतां ६ने बदले ८ लखवा जोइये, ६नो अंक हस्तदोष हशे: दशे यति बोलायछे, परंतु बीजां प्रमाण नहि होतां असे आवश्यकता गणी नथी.

४ छंदःप्रभाकरमां बीजां केटलांक नामो साथे आ नवुं नाम छे, तेणे यति कही नथी. राग असावरी (जीवनपुरी), ताल मिश्रजाति षष्ठीताल, मात्रा २६, मध्यकाळ; विबुधप्रिया, चंचरी अने चर्चरी वृत्तनां छे, एम संगीतानुसार छंदोमंजरीमां लख्युं छे.

११७७ चल. ४,७,७ यति. म,भ,न,ज,भ,र. ९३,१६९

चारे साते, म भ न ज भ र थी, रचो चल रीझथी.

वृत्तरत्नाकर तथा छंदोमजरीना टिप्पणमा ए नाम तथा यति छे

११७८ पटपदेरित. न,र,न,र,न,र. ९१,७०४

पटपदेरिते न र न रा न रा पद रचायछे.

११७९ पार्थिव. १२,६ यति. (वा.व.) ज,स,ज,स,न,र. ९६,०९४

विराम रविये ज सा ज स न रा, चरण पार्थिवे.

११८० हीरक[1], हीर[2], हारक, हीरा[3]. भ,स,न,ज,न,र. ९७,२४७ १२, ६ यति.

हीरक रचवा भ स न ज ना र, रवि छये यति.

१ छंदोमंजरीना टिप्पणमां तथा शब्दकल्पद्रुममां हीरक नामे आपी तेमां यति कही नथी. परंतु प्रत्येक छ वर्णे अथवा १२,६ वर्णे यति बोलायछे. २ छंदःप्रभाकरमां हीरक नाम आपी तेमा १२,६ ये यति कही छे. मात्रा जातिमां हीरक, हीर, पृष्ट ३०, अंक ८७, मात्रा २३मा छे, ते आनीज विकृति छे. आनी मात्रा २३ थायछे. ३ गणप्रस्तारप्रकाशमा हीरा नाम छे.

११८१ जगदउदय, जगदुदय[1]. न,न,न,न,न,र ९८,३०४

जगदउदय न न न न न र चरण थायछे.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रंथमा जगदुदय नाम छे.

११८२ परिपोषक. स,स,स,स,स,स. १,१२,३४८

परिपोषकमां कवि! सा स स सा स स आप धरो.

११८३ शार्दूलललित[1]. शार्दूललसित[2]. म,स,ज,स,त,स. १,१६,९६९ १२,६ यति.

बारे छेद छए म सा ज स त सा, शार्दूलललिते.

१ वाग्वल्लभ तथा छंदोमंजरीमा ए नाम अने १२,६ यति कही छे.
२ छंद प्रभाकरमा यति कही नथी अने एनु नाम शार्दूलललिता आप्युं छे अने टीकामां जणाव्यु छे के कोइ कोइ एने "शार्दूललसिता" पण केहे छे.

११८४ सुधा. ६,६,६ यति. य,म,न,स,त,स. १,१६,६७४

छए चक्रे छेदो, य म न स त सा, आणो पद सुधा.

१ वृत्तरत्नाकर आदिमा आ नाम तथा यति छे.

११८५ अश्वगति. भ,भ,भ,भ,भ स. १,२६,३९१

पाद विषे रच भा भ भ भा भ स अश्वगति सदा.

छंदोलतामा केहेछे के, कोई एने सुधा केहेछे. पण बीजा प्रमाणो उपरथी सुधा वृत्त तो अ-११८४ में जूदु छे.

११८६ भ्रमरपद. भ,र,न,न,न,स. १,३१,०३१

भा र न ना न से कवि! भ्रमरपद चरण रचो.

११८७ अर्द्धान्तरालापि[1], अद्धान्तरालापि[2]. त,त,त,त,त,त. १,४९,७९७

अर्द्धान्तरालापि मांहे त ता ता त ता ता बधा आण.

१–२ वाग्वल्लभमा आ नाम छे, तेमा यति कही नथी.

११८८ छेल. ११,७ यति, त,त,त,त,त,त. १,४९,७९७

रुद्रे हये छेद ता ता त ता ता, त छे छेलनी मांह.

पिंगळादर्शमां आ नाम अने यति छे तेनुं बीजुं प्रमाण जड्यु नथी.

११८९ पतङ्गपाद. ज,त,त,त,त,त. १,४९,७९८

पतङ्गपादे रचो जा त ता ता त ता पाद शोभीत.

११९० सारस्वती[1], शारदा[2]. त,भ,र,स,ज,ज. १,८६,०३७ ९,९ यति.

सारस्वती नवने नवे, त भ रा स जा ज धराय.

१ पिंगळादर्शमा सारस्वतीमां ९,९ यति कही छे. २ गणप्रस्तारप्रकाश.

११९१ हीरकहारधर. (वा.व.) म,म,म,म,म,म. २,२४,६९६

हीरकहारधरे पद भा भ भ भा भ भ थी रच.

११९२ दंडी, दंडक. (ग.प्र.प्र.) त,न,त,न,त,न. २,४९,६६१

दंडी रच कवि! ता ना त न त न आणी स्पष्ट.

१ वाग्वल्लभमा छेल्ले स लखेछे पण दृष्टांतमा न गणेछे

११९३ तुमुलक. न,न,न,न,न,न. २,६२,१४४

न न न न न न थकी रच कविवर! तुमुलक.

१९ अतिधृति छंद. ५,२४,२८८ भेद. १९ वर्ण.

११९४ शम्भु[१], शंकर, संभो[२]. स,त,य,भ,म,म,ग. ३,१७२.

स त या भा मा म ग आवे शंकर संभो शंभु वृत्ते तो.

१ छंदोलतामां ७,९ यति लाववा केहेछे पण वाग्वल्लभ, छंदःप्रभाकर तथा छंदोवृत्तमुक्तावलीमां यति विषे कह्यु नथी. तेमज प्राकृत पिंगळसूत्र अने वाणीभूषणमां पण यति नथी. २ संभो नाम गणप्रस्तार प्रकाशमां छे, ते शंभुनो अपभ्रंश छे.

११९५ झिल्लीलीला. ८,११यति[१]. न,य,म,म,ज,म,ग. २०,४९६

वसु (८) शिव (११) छेदे ना या, मा मा जा मा ग थाय झिल्लीलीला.

१ वाग्वल्लभमा आ यति कही छे

११९६ विधुनिधुवन[१]. म,न,न,त,न,म,ग. ३१,२२५

आवेछे विधुनिधुवनमां मा न न त न मा गा पादे.

१ आ वृत्त वाग्वल्लभमा छे

११९७ गीतका, भैरौ. न,य,र,र,र,य,ग. ४२,१२८

न य र र रा या गा थकी गीतका थायछे तथा भैरौ.

११९८ माराभिसरण. त,न,म,भ,स,य,ग. ४८,१८९.

माराभिसरणमां आवेछे त न म भ सा य गा पादे.

११९९ लोललोलम्बलील. (वा व.) र,र,र,र,र,र,ग. ७४,८९९

लोललोलम्बलीले रचो रा र रा रा र रा गा पदे तो.

कोइ आ वृत्तमां ६,६,७ यति मानेछे, पण तेने बीजुं प्रमाण मळतु नथी.

१२०० मेघविस्फूर्जिता[1], विस्मिता, मेघवंश[2]. } य,म,न,स,र,र,ग. ७९,७१४ ; ६,६,७ यति.[3]

छए चक्रे छे या, म न स र र गा, मेघविस्फूर्जिता छे.

१ वागवल्लभमां आ नाम अने यति छे. २ मेघवंश नाम गणप्रस्तारप्रकाशमां छे.

३ आ वृत्तमां छंदःप्रभाकरमां यति कही नथी, पण प्राकृतपिंगळसूत्र, वृत्तरत्नाकरनो परिशिष्ट भाग, वाणीभूषण अने मंदारमरंदचंपू एओमां आ प्रमाणे गण अने यति छे.

१२०१ फुल्लदाम, पुष्पदाम. म,त,न,स,र,र,ग. ७९,७४९

६,७,७, यति.

पांचे साते छे, म त न स र र गा, पादमां फुल्लदामे.

फुल्लदामने कोइ पुष्पदाम केहे छे, एम शब्दकल्पद्रुममां कह्युं छे. छंदोमंजरी अने प्राकृतपिंगळसूत्रमां ए यति कही छे, छंदःप्रभाकरमां यति कही नथी. सुरसा अंक १२२० मे छे, तेथी आनी यति उलटी छे. पुष्पदाम नाम (यति सहित) आ मापथी वृत्तरत्नाकरमां छे.

१२०२ झूलना. १०,५,४ यति.[1] स,ज,ज,भ,र,स,ग. १,०९,९३२

स ज जा भ रा स ग थी रचो, झट झूलना, दश पांचे.

१ पिंगळादर्शमां १०,५,४ यति कही छे.

१२०३ किरणकीर्त्ति[1]. त,ज,त,भ,न,स,ग १,२०,३५९

साते रविये यति, त ज ता भ न स ग किरणकीर्त्ति.

१ वागवल्लभमां आ नाम तथा ७ १२ यति छे.

१२०४ शार्दूलविक्रीडित. म,स,ज,स,त,त,ग. १,४९,३३७
१२,७ यति[1].

मा सा जा स त ता ग सूर्य मुनिये, शार्दूलविक्रीडिते.

१ वाग्वल्लभ, छंदोमंजरी आदि प्रमाणे यति छे.

आ मूळ प्रकृति छे एनी विकृति जुओ मात्रामेळमां पृ. ४९, अंक २९ मे साटक अने तेना भेदो. राग- मुखावरी, ताळ खंड जाति, मात्रा ९, विलंबकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी)

१२०५ छाया. ६,६,७ यतिः य,म,न,स,त,त,ग. १,४९,४४२

छए चक्के छाया, विरति धरवी, या मा न सा ता त गे.

छंद कामदुघावत्स, छंदोर्णव, वृत्तरत्नाकरनु परिशिष्ट, छंदःशास्त्र अने प्राकृतपिंगळसूत्र, तथा वाणीभूषण एओमां पण ए माप अने यति छे छंदोमंजरी अने शब्दकल्पद्रुममां १२ मे तथा अन्त्याक्षरे यति कही छे, अने छंद प्रभाकरमां यति कही नथी.

१२०६ बिम्ब. ५,७,७ यति[1]. म,त,न,स,त,त,ग. १,४९,४७३

पांचे साते ने, हय यति म त ना, सा ता त गा बिम्बमां.

१ छंदोमंजरीना टिप्पणमां अने शब्दकल्पद्रुममां ए यति छे.

१२०७ शक्र १०,९ यति[1]. र,स,ज,ज,त,त,ग १,५०,३६३

रा स जा ज त ता ग छे दशे, ने नवे छेद तो शक्रमां.

१ पिंगळादर्शमां ए यति छे

१२०८ शिलीमुखोज्जृम्भित[1]. म,म,ज,न,ज,त,ग. १,५५,४८१

मा सा जा न ज ता ग आण चरण शिलीमुखोज्जृम्भिते.

१ वाग्वल्लभ.

१२०९ कलापदीपक. र,ज,र,ज,र,ज,ग. १,७४,७६३

रा ज रा ज रा ज गा धरो सदा तमे कलापदीपके.

१२१० प्रपञ्चचामर[1], अपञ्च[2], पंचचामर[3]. } न,न,र,ज,र,ज,ग. १,७४,७८४

नानरजरजगा धरो भले तमे प्रपंचचामरे.

१-२ वाग्वल्लभ. ३ वृत्तरत्नाकर.

१२११ कल्पलतापताकिनी.(वा.व.)म,न,न,स,स,ज,ग.१,७८,१६९.

मा ना ना स स ज ग थकी रच कल्पलतापताकिनी.

१२१२ सुललिता. न,स,न,म,ज,ज,ग. १,८४,८००

रच सुललिता चरण ना सा ना म जा ज ग थी करी.

१२१३ मणिमंजरी.१२,७ यति[१].य,भ,न,य,ज,ज,ग.१,८५,३३७.

यति बारे मुनि य भ न य जा ज्गे, रचो मणिमंजरी.

१- वृत्तरत्नाकरमां ए यति छे.

१२१४ सरल. ९,१० यति. न,भ,र,स,ज,ज,ग. १,८६,०४०

सरलमां नव दोषथी, न भ रा स जी ज ग आणजो.

१ आ वृत्त उपर प्रमाणेना माप अने यतिथी मंदारमरंदचम्पूमां छे, अने ते हरिगीतने रागे गवायछे, प्रथमनी बे मूकी देवानी मात्रा ओछी छे.

१२१५ मकरंदिका[१], मकरंदी. य,म,न,स,ज,ज,ग. १,८६,३०६.

छए चक्रे साते, य म न स ज जा, गथी मकरंदिका.

१ वृत्तरत्नाकरमा मकरंदिका नाम अने ६,६,७ यति छे.

१२१६ निर्गलितमेखला.(वा.व.) न,न,र,न,भ,ज,ग.१,९२,१९२.

चरण न न र ना भ जा ग रच निर्गलितमेखला.

१२१७ वरूथिनी.५,५,५,४यति.ज,न,भ,स,न,ज,ग.१,९४,४९४

ज ना भ स न, ज गा विरति, शरो त्रणथी, वरूथिनी.

आ वृत्त मंदारमरंदचम्पूमां छे.

१२१८ ग्रावास्तरण.[१] म,भ,स,भ,म,म,ग. १,९९,९२१

१०,९ यति.

मा भा सा भा म भ ग दशे ने, यति अन्ते ग्रावास्तरणे.

वाग्वल्लभमां आ नाम अने यति छे.

१२१९ समुद्रतता. ८,४,७ यति ज,स,ज,स,त,भ,ग. २,१४,८७८

यति वसु युगे ज सा, जस त भा, गे छे समुद्रतता.

वृत्तरत्नाकर तथा छंदोमजरीना परिशिष्टमा आ नाम तथा यति छे.

१२२० सुरसा[1]. ७,७,५, यति. म,र,भ,न,य,न,ग.-२,३७,४९१

मा रा भा ना य ना गे, मुनि हय शरथी, थाय सुरसा.

१ वाग्वल्लभ, नागराजपिंगळ, छंद कामदुघावत्स, प्राकृतपिंगळसूत्र अने छंदोमजरीमां ए नाम तथा यति छे

१२२१ टङ्कण. ९,१० यति. र,न,र,न,र,न,ग. २,४१,३३९.

आण टंकण विषे सदा, र न र ना र ना ग कवि तुं,

वाग्वल्लभमां आ नाम-तथा यति-छे

१२२२ धवल[1], धवलांग, धवला, शशि[2]. } न,न,न,न,न,न,ग. २,६२,१४४.

धवल पद सरस धर गण न न न न न न गा.

१ वाग्वल्लभ, प्राकृतपिंगळसूत्र, छंदोवृत्तमुक्तावली, वाणीभूषण, आदिमा यति कही नथी. २ ए नाम मागधी पिंगळछंदोग्रथमा छे.

१२२३ मणिमाल. (ग. प्र.-प्र) स,ज,ज,भ,र,स, ल. २,७२,०७६

मणिमाल माह स जा ज भा र स ला धरो कवि आप.

१२२४ मुनि[1], मुनीश[2] न,म,न,स,न,स,ल. २,९१,११२

मुनि विषे छेदो दश नव, न मा न स न स ल आण,

१ पिंगळादर्शमा आ वृत्तमा १०,९ यति कही छे. २ ए नाम गणप्रस्तारप्रकाशमा छे.

१२२५ प्रेम. ९,१० यति. स,स,र,न,न,स,ल. २,९२,८६०

स स रा न न सा ला थकी, नव दश यति कर प्रेम.

प्रेमानंद कवियें द्रौपदीहरणनी समाप्तिमा पोताना नामनु नवु वृत्त बनाविलु जणायछे, अने ते दूहाना रागथी गवायछे, वृत्तना पादमा दूहाना सर्वे नियमो सचवायछे जुवो पाछळ पृ. ७५ अंक ८०

१२२६ रसाला. म,न,ज,भ,ज,ज,ल. ४,४९,९१९.

भा न ज भ ज ज ल छे रसाल शुभ छंद विषे पद.

१२२७ चन्द्रमन, चन्द्रमाला,[1] चंद्र[2], शशिस्र,[3] चंदमालु.[4] } न,न,न,ज,न,न,ल. ५,२२,२६४

नं न न ज न न ल चरण चन्द्रमन धर सरस.

१ चंद्रमालामा पिंगळादर्शमा ११,८ यति कही छे, पण प्राकृत पिंगळ-सूत्र, वाणीभूषण इत्यादिमां यति कही नथी, तेथी ते सर्वमान्य नथी.

२ संस्कृत छंदोलतामां तेमज छंदोर्णवमां चंद्र नाम आपी २० मात्राना मात्रामेळमां दाखल कर्युं छे. पण छंदोवृत्तमुक्तावलीमां आमां कहेला गणो वडे माप बतावेलुं होवाथी अमे तेने वर्णमेळमां दाखल करेल छे. वाणीभूषणमां चंद्र नाम आप्युं छे; तेमां यति कही नथी. ३ गणप्रस्तारप्रकाश. ४ चंदमालु नाम छंदसारमां छे.

१२२८ वसुमती. ज,ज,न,न,न,न,ल. ९,२४,२६९

ज जा न न ना न ल थकी कविवर! वसुमति रच.

आ वृत्त मागधी पिंगळछंदोग्रंथमा छे.

२० कृतिछंद. १०,४८,५७६ भेद छे. २० वर्ण.

१२२९ चतुरानन. न,न,स,स,स,म,ग,ग. १४,०८०

नं न स स स म ग ग थी चतुरानन जोडो शोधी पादे.

१२३० वाणीबाण. १०,१० यति[1]. म,भ,स,भ,त,य,ग,ग. ९२,४६६.

वाणीबाणे रच म भ सा भा, त य गा गा दश छेदे आणी.

१ वायुवल्लभ.

१२३१ भेकालोक. (वायुवल्लभ) भ,म,स,त,न,स,ग,ग. १,२९,०२१

तुं रच भेकालोके भा मा सा ता न स ग ग पद लावीने,

१२३२ विष्वग्वितान. त,भ,ज,न,त,त,ग,ग. १,९१,४१३

विष्वग्वितान रचजो पद त भ जा ना त ता गा ग आणी.

(वाग्वल्लभ)

१२३३ सुवंशा.[1] म,र,भ,न,त,त,ग,ग. १,९१,४४१

मा रा भा ना त ता गा ग कवि रसिया[1] आण सुवंश वृत्ते.

१ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभटी टीका अने शब्दकल्पद्रुम

१२३४ भूरिशोभा. म,म,न,न,त,त,ग,ग. १,९१,४८९

चक्रे साते साते, म म न न त त गा, गा थकी भूरिशोभा.

वाग्वल्लभमा ६,७,७ यति कही छे.

१२३५ शोभा. ६,७,७ यति. य,म,न,न,त,त,ग,ग. १,९१,४९०

छए साते साते, य म न न त त गा, गा थकी थाय शोभा.

१ प्राकृतपिंगळसूत्र, तथा वाग्वल्लभ प्रमाणे यति छे. वर्ण २३ मा अंक १३११ मे आ नामनुं वृत्त पण छे

१२३६ संलक्ष्यलीला. न,र,न,र,न,त,ग,ग. १,६१,२४०

न र न रा न ता ग ग थकी वने चरण संलक्ष्यलीला.

वाग्वल्लभ

१२३७ भारावतार, हारावतार[1]. } न,त,ज,न,न,त,ग,ग. १,६२,६८८

पदविषे आण न ता ज न न त त ग ग भारावतारे.

१ वाग्वल्लभ

१२३८ वीरविमान. भ,भ,भ,भ,भ,भ,ग,ग. २,२४,६९९

वीरविमान विषे रच भा भ भ भा भ भ मा गुरु आणी.

वाग्वल्लभ.

१२३९ मत्तेभविक्रीडित. स,भ,र,न,म,य,ल,ग. २,९८,६७६

जव छे छेद स भा र ना म य ल गा, मत्तेभविक्रीडिते.

मत्त=मातेलो+इभ=हाथी+विक्रीडित=तेनी क्रीडा-मातेला हाथीनी क्रीडा पेठे बोलाय माटे.

छंदोमंजरीना टिप्पणमां तथा शब्दकल्पद्रुममां आ वृत्तमां १३,७ यति कही छे.

१२४० अवन्ध्योपचार. य,य,य,य,य,य,ल,ग. २,११,११६

अवन्ध्योपचारे य या या य या या ल गा आणजो पादमां.

१२४१ पंचचामर, नराच[1]. ज,र,ज,र,ज,र,ल,ग. ३,४९,१२६

ज रा ज रा ज रा ल गा थी पंचचामरे नराच थायछे.

१ मागधी छंद शतकमां ए नाम छे.

१२४२ उत्पलमालिका. भ,र,न,भ,भ,र,ल,ग. ३,११,७९

उत्पलमालिका भ र न, भू भ र ला ग थकी नवे शिवे.[1]

१ मंदारमरदचम्पूमां ९,११ यति छे.

१२४३ गीतिका[1], मुनिशेखर[2], शेखर, गीता, शर्वरी[3], गीतक[4]. } स,ज,ज,भ,र,स,ल,ग. ३,७२,०७६

मुनिशेखरे रच गीतिका स ज जे भ रे स ल गे करी.

गवायछे. तेम वळी छंदोवृत्तमुक्तावलिमां उपरना मापवाळा वृत्तने हरिगति नाम आप्युं छे, पण तेमां यति कही नथी.

१२४४ शशिधर. ९,११यति[1]. भ,भ,र,स,स,स,ल,ग. ३,७४,४९९

अक[९] शिवे[११] यति भा भ रा स स सा ल ग थाय शशिधरे.

१ पिंगळादर्शमा ए यति कही छे

१२४५ मालव[1]. र,ज,र,ज,र,ज,ल,ग. ४,३६,९०७

राजराजराजलाग थीं रचो तमेज छंद मालव तो.

१ मंदारमरंदचम्पू प्रमाणे.

१२४६ सुवदना[1], सर्ववदना[2]. } म,र,भ,न,य,भ,ल,ग. ४,६६,८३३ ७,७,६ यति.

साते[७] अश्वे छये छे, मरभनयभला, गा थी सुवदना.

१ प्राकृतपिंगळसूत्र अने वाग्वल्लभमां ए नाम अने यति छे. मंदारमरंदचम्पूमां पण एज यति छे. २ छंदोर्णवमां सर्ववदना नाम आपीने एज यति कही छे.

१२४७ मदकलनी. न,ज,न,भ,स,न,ल,ग. ९,०७,३७६

नजनभसा, नलग थकी, कर कवि! तुं, मदकलनी.

मंदारमरंदचम्पूमा "शरांगबाणांगैः" (शर=५ अंग=६, जेम पंचांग. बाण=५ अने अंग=६ एम) यति कही छे, अने तेनुं उदाहरण इतरवृत्तमां आप्युं छे, एटले तेनी यति विषे स्पष्ट लेख जड्यो नथी. बीजा ग्रंथोमां ए नाम नथी.

१२४८ सौरभशोभासार.(वा.व.) भ,म,त,न,स,न,ल,ग.१०७६९९

सौरभशोभासारे आण भ म त न स ना ल ग पदमां.

१२४९ कनकलता. न,न,न,न,न,न,ल,ग. ९,२४,२८८

न न न न न न लघु गुरु धर चरण कनकलता.

१२५० गंडका[1], गंडकी, गंडिका, गंजिका[2], इद्रश[3], माद्रश[3], दंडिका[4], वृत्त[5], चित्रवृत्त[6], रत्नका[7]. — र,ज,र,ज,र,ज,ग,ल. ६,९९,०५१

राजराजराज गाल गंडका च गंडकी विषे कराय.

१ गंडका नाम प्राकृतपिंगळसूत्र, छंदोमंजरी, अने वाणीभूषणमां छे, पण त्रणे ग्रंथोमां यति कही नथी. २ ए नाम भगवत्पिंगळमां छे, तेमां यति कही नथी. ३ ए बंने नामो वाग्वल्लभमां छे, पण तेमां यति नथी. ४ भाषा छंदोमंजरी. ५ छंदःशास्त्र अने छंदोमंजरी प्रमाणे वृत्त नाम छे, तेमां पादांते यति कही छे; शब्दकल्पद्रुममां ए नाम छे, पण तेमां यति नथी. ६ छंदोमंजरीमां गंडकानुं ए नाम छे, पण तेमां यति कही नथी. ७ गणप्रस्तारप्रकाशमां ए नाम अने १२, ८ यति छे. छंदोवृत्तमुक्तावलीनी लिखित प्रतिमां आ मापनुं मंडक वृत्त लख्युं छे, ते नवुंज नाम होय के गंडकने बदले लिखित दोष पण होय.

१२५१ मधुकर, महूअर[1]. न,य,न,य,भ,भ,ग,ल. ७,४६,४४

मधुकरमांहिं नयनयभाभा गाल कराय सदाय.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रंथमां ए नाम छे.

१२५२ मनोभव. ६,६,८यति. स,स,स,स,स,स,ल,ल. ८,९८,७८

रस चक्र दिशा, यति सासससा, सस लोल मनोभव.

पिंगळादर्शमां ६,६,६ यति कही छे, पण तेम करतां बे वर्ण छूटे छे एटले अमे आठे मूकी छे.

२१ प्रकृतिछंद. २०,९७,१५२ भेद छे. २१ वर्ण.

१२५३ अशोकलोक, अशोकलोकालोक. } ४ म+तर+म. ८१,९२१

चारे मा छे ता रा छे मा अन्ते आणो वृत्ते अशोकलोके खोळी.

१२५४ मन्दाक्षमन्दर[1]. १०, ११ यति. २न+२म+ज, र, म. ८६,०८०

द्वि न द्वि म पर छे जा रा मा, मन्दाक्षमन्दरे पदे आवे छे.

१ वाग्वल्लभमा आ यति तथा नाम छे.

१२५५ तल्पकतल्लज. ५भ+जय. १,९१,९२७

तल्पकतल्लज पांच भ ते पर आण् ज य तुं बधे पादे.

गीतिने रागे गवायछे अने एमा तेनु वधु माप सचवायुं छे जुवो पृष्ठ १११ अक ७१.

१२५६ अहि. (छंदःप्रभाकर.) ६भ+म. २,२४,६९९

भा छ करी धर् मा चरमे चरणे अहि वृत्त विषे शोधी.

गीतिने रागे गवायछे.

१२५७ विद्युदाली. (वा. व.) ७य. २,९९,९९४

रचो विद्युदाली तमे सात या पाद आणी करी शोभता जे.

१२५८ स्रग्धरा, रूपकमाला[1], रूपामाला[2], रूद्रामाला[3], स्रक्धरा[4]. } मर+भन+३य. ३,०२,९९३ ७,७,७ यति.

मा रा पूठे भ ना छे, त्रण य ह७य ह७ये, छेद छे स्रग्धरामां.

१ प्राकृतपिंगळसूत्र तथा मंदारमरंदचम्पूमां ए नाम तथा यति छे. २ मागधी छंदःशतक. ३ मागधीपिंगळछंदोग्रंथ.

४ गणप्रस्तारप्रकाश. राग हरिश्चंद्रिका, ताल चतुश्र पंचक, मात्रा ३२, मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी.)

१२५९ सारीसुन्दरी.[1] २स+भस+त+जय. ४,४४,३११.

द्वि स छे भ स छे ता पर ज य सारीसुन्दरीना पदमांहे.

१ त्रेवीश अक्षरमां अंक १३२३मे "सुंदरी" वृत्त छे, अने ते केटलांक पिंगळोमां छे, छतां २१ अक्षरमां पण तेज नाम छे, माटे फेर रेहेवा सारी विशेषण मूकी सारीसुंदरी नाम राख्युं छे.

१२६० शुभता. ७,७,७यति[1]. मर+भन+नजय. ४,६०,४८९

७ ७
मा रा पूठे भ ना छे, हय हय यति छे, ज ज या शुभतामां,

१ पिंगळादर्शमां ए यति कही छे.

१२६१ नरेन्द्र[1], समुच्चय[2].	मर+२न+२ज+य. १४,७ यति.	४,६०,६१९

७
भा र नरेन्द्रमां द्वि न द्वि ज पर य छे, यति चौद हये छे.

१ वाणीभूषण, प्राकृतपिंगळसूत्र, अने छंदोवृत्तमुक्तावलीमां ए नाम छे, पण यति कही नथी. पिंगळादर्शमां नरिन्द्र नाम आपी तेमां १४,७ यति कही छे. २ भाषा छंदोमंजरीमां यति वगरना एज मापना वृत्तने समुच्चय नाम आप्युं छे.

१२६२ दूरावलोक.	मर+भन+यरर. १४,७ यति[1].	५,९७,९०५

१४ ७
मा रा छे भा न छे या र र मनु हय वे, दूरावलोके यति.

१ वाग्वल्लभमां ए यति छे

१२६३ शरकांडप्रकांड. सरन+४र. ५,९९,५०८

शरकांडप्रकांड स र ना पछी चार छे रा गणो पादमां.

१२६४ कलमतल्लिका. (वा व.) ३नर+र. ६,१९,९९३

कलमतल्लिका त्रण न रा पछी र गण छेवटे थायछे.

१२६५ चम्पकमालिका[1], चम्पकावली. } नतम+२ज+र. ७,११,४००

न त स छे ने ज त्रण छे र छेवट चम्पकमालिका पदे.

१ वाग्वल्लभमां आ बने नाम आपी तेनुं माप न ज भ ज ज-ज र आप्युं छे अने ते ७,११,४०० मुं रूप छे एम जणाव्युं छे, पण एवा गणवाळुं रूप ७, ११, ६०० मुं थाय अने ते तो अंक १२६६ मे जूदुं आपवामां आव्युं छे एटले आ वृत्तमां गण लखवानी वाग्वल्लभमां भूल थइ गइ छे.

१२६६ शशिवदना, सरसी[1], पंचकावली[2], सिंहक[3] सलिलनिधि[4], सिद्धक[5], सिद्धिका[6], सिद्धि, धृतश्री. } नजभ+२ज+र. ७,११,६००

शशिवदना न जा भ पर जा त्रण ते पर रा पदे करो.

१-२ ए बे नाम वाग्वल्लभमां छे, छंदोमंजरी, अने छंद-प्रभाकरमां पण सरसी नाम आपी यति कही नथी. छंदोर्णव सरसीमां एकादश (११) वर्णे यति केहेछे. ३-४ सरसीने कोइ एवां नाम आपेछे, एम शब्दकल्पद्रुममां छे. पण तेमां यति कही नथी. ४ वृत्तरत्नाकरमां केहेछे के,—आनेज कोइ सिद्धक केहेछे. ५ प्राकृत पिंगळसूत्रनी टीकामां सिद्धक नाम छे, पण तेमां यति नथी. ६ छंदोबोधमां कह्युं छे के कोइ एने सिद्धिका केहेछे.

१२६७ कनकमालिका. (वा. व) ३रन+र. ७,६५,६२७

थायछे कनकमालिका त्रण र ना पछी र धरवा थकी.

१२६८ सुरनर्त्तकी[1]. ६,६,६,३ यति. ३रन+र. ७,६५,६२७

लोकराने पर, रा थकी रस छ, शास्त्र छेद सुर, —नर्त्तकी

१ मंदारमरन्दचम्पू प्रमाणे

१२६९ प्रतिमा. ७स. ८,९८,७८

रचजो प्रतिमा कवि! सात स सर्व मळी पदमांह करी.

१२७० कलमशिखा. न य म+भ+३ स. ९,००,११२

कलमशिखा ना या मा आणी, भ पर तमे त्रण सा करजो.

अमारा अभिप्राय प्रमाणे १०, ११ यति आवेछे.

१२७१ ललितललाम. न+२ ज+३ त+स ९,३६,२०४

ललितललाम न थाय बे जा पछी लोक ता छे स चरमे.

१२७२ धर्म. भ स+न ज+न भ स. १०,१४,७९१

भा स पर न जा धर न भ सा कवि! रच धर्म चरणमां.

१२७३ तडिदम्बर, मदिरा[1]. ७ भ. १७,९७,५५९

तुं तडिदम्बरमां रच भा गण सात बधा पदमां कवि!

१ छंदोर्णवमां केहेछे के, साधारण रीते आवां वृत्त सवैयानी संज्ञाथी ओळखायछे. ते नीचे प्रमाणेः—

क्रम	अंक	नाम.	माप.	वर्ण.
१	१२७३	तडिदम्बर, मदिरा.	७ भ	=२१
२	१२९४	मद्दिरा, मदरा, मालिनी.	७ भ+ग.	=२२
३	१३११	मत्तगजेंद्र मत्तगयद, इन्द्रविजय, इन्दव, मधुमालतिका, शोभा, मदिरा, सवैया.	७भ+ग,ग.	=२३
४	१३२५	मल्लिका, मानिनी, सुमुखी, कुंदसवैया, सवैया.	७ज+ल,ग.	=२३
५	१३३४	चकोर, चित्तपदा, ललिता, सवैया.	७भ+ग,ल	=२३
६	१३३५	मंजुल. १२,११यति	७भ+ग,ल.	=२३
७	....	महाभुजंगप्रयात, भुजङ्ग, सुधाप, महा- सवैया	८ यगण.	=२४

८	१३४३	माधविका, कोक, माधवी, मकरद, वाम, वाम, वामा, मंजरी, सवैया	७ ज+य =२४
९	१३५२	गंगोदक, वैकुंठधामा, जानकी, खजना, गंगाधर, लक्ष्मी, लच्छी, सवैया	८ रगण =२४
१०	१३५५	अरसात, मकरद, अलसा.	७ भ+र =२४
११	१३५७	दुमिला, मदिरा, द्विमिला, दुर्मिल, चद्रकला, दोमलया, मुकुन्द, रूपमकरन्द, घोटक, सवैया.	८ सगण =२४
१२	१३५८	दुर्लतिका, माधवी, दुर्मिला, दुर्मिलका, दुर्मेला.	८ सगण =२४ ८,६,१० यति
१३	१३६२	आभार, सवैया.	८ तगण =२४
१४	१३६३	सुखदा, विष्णु, सुरेश्वर, कोकी, मुक्तहरा, मुक्तहरा, माधवी, सवैया	८ जगण =२४ १२,१२ यति
१५	१३६४	मेदुरदन्त, किरीट, किरत, माधाविका, करिटी	८ भगण =२४ १२,१२ यति.
१६	१३६९	सुदिर, मल्लि, सुमिला, कमला, माधवी, अमला, चद्रकला, सुछंद, सुदरी, सुखदा, सुखदानि, सवैया	८ सगण+ग=२५ १२,१३ यति
१७	१४२३	वशंवद, लीला, मागधी, कुन्दलता, सुख, सामन, सावन, अंबुज, किशोर, मालती, सवैया.	८ स+२ ल =२६ १२,१४ यति.

२२ आकृतिछंद. ४१,९४,३०४ भेद छे. २२ वर्ण.

१२७४ वासकलीला. भ,म,स+त,य+भ,म+ग. २,०२,९९१

वासकलीला भा म स छे ता या उपर भा मा पर छे गा अन्ते.

१२७५ दंडिका[1]. य,य,य,य,य,य,य,ग. २,९९,९९४.

रचो दंडिका सात या आणिने ने पछीथी गुरु एक अंते छे.

[1] चित्रसेन टीकावाळा मागधी पिंगळमां आ वृत्त छे, तेना तेणे नीचे प्रमाणे सात भेद पाड्या छे पण ते भेद दंडकना थायछे.—

अंक.	संस्कृतनाम.	प्राकृतनाम.	माप.	वर्ण.
१४३९	उद्दर्प,	उद्दप्पो.	२न+७र=२७	

१४२६ विद्याधर, विज्जाहर. ३न+६र=२७
१४२७ सज्जन, साजण. ४न+५र=२७
१४२८ दुःखाकर, दुखाकरो. ५न+४र=२७
१४२९ विरतिकल्प, विरयकप्पो. ६न+३र=२७
१४३० मतिकर, मकर. ७न+२र=२७
१४३१ शुभंकर, सुहंकर. ८न+ र=२७

१२७६ द्रुतमुख. ४ न+मर+यग. ३,३१,७७१

द्रुतमुख चरण चरण कर चारे, ना छे मरा पछी या गा.

अमारा अभिप्राय प्रमाणे १४, ८ यति आवेछे.

१२७७ भीमाभोग[1]. { म,त,त,म,म,र,र,ग. / ४,७,४,७, यति. } ५,९०,११३

चारे साते, चार साते विरामे, भीमाभोगे, मा त ता मा म रा गें.

१ शालिनीथी बमणो आ वृत्त वाग्वल्लभमां छे

१२७८. वीरनीराजना. ४य+३र+ग. ५,९८,६०२

करो चार या लोक[3] रा अन्तमां गा वीरनीराजना वृत्त मांहि.

१२७९. कङ्कणक्वाणवाणी. म+६र+ग. ५,९९,१८५

मा आणीने छ रा ने ग आणी रचो युक्तिथी कंकणक्वाणवाणी.

१२८० सर्वगामी, } ७र+ग ५,९९,१८७
केकनी. } १२, १०, यति.

सर्वगामी विषे छेद सूर्य[12] दशे, रा गणो सात अन्ते ग आणो.

पिंगळादर्शमा १२,१० यति कही छे केकनी गणप्रस्तारप्रकाशमां छे.

वळी सर्वगामी नामनु वृत्त २३ अक्षरमा अंक १३०९ मे छे.

१२८१ कंकणक्वाण. ७र+ग. ५,९९,१८७

कंकणक्वाणमां आणवा रा गणो सात अन्ते ग पाछे त्रय तो.

सर्वगामी अथवा कोकनी करतां फेर एटलोज के, आमां यति पाळवानी नथी. आ बन्ने वृत्त, झूलणा जाति जे पृ.६४मे अंक१५०मे छे-तेने अने प्रभातियाने रागे गवायछे.

१२८२ महास्रग्धरा. ८,७,७यति स,ज,त,न,स,र,र,ग. ६,०५,९९६

वसु सात छेद साजा, तन सरर ग थी, छे महास्रग्धरा तो.

वृत्तरत्नाकरना टिप्पणमा आ वृत्त अने यति छे

१२८३ मोद. ५भ+मम+ग. ८,१४,५१९

पांच भ थी मम थी ग थकी रच मोद रुडेरुं वृत्त भला! तुं.

जुओ टीप अक १३०४

१२८४. अर्भकमाला. भतनत+नम+सग. ८,१७,६२९

अर्भकमाळा भ त न त आणो न म पग सा गा पाद धरीने.

१२८५ भद्राानिस्तरण. ममभ+नजर+सग ८,७६,४४१

भद्रानिस्तरणे मा स भ पर न ज रा पछी स गा पद मांहे.

१२८६ हरितकी. १४,८यति. ७स+ग. ८,९८,७८०

मनु आठ विराम हरितकीं मांह स, सात पछी ग करेछे.

हकीछंद मागधी छंद गतकमा एज मापथी छे, पण ८, १६ प्राम लावता केटेछे

१२८७ अयमान. ७स+ग. ८,९८,७८०

गण सात स आण पदे अयमान तणे चरमे ग करीने.

१२८८ हंसी[1], रजतहंसी[2], हंस, साहंसी[3].

८, १४ यति. मम+तन+नन+सग. १०.४८.३२१

आठ चौदे छेदे मा मा, तन पर न न धर स ग कर हंसी.

१ छंदोमंजरीमां ८, १४ यति कही छे वाणीभूषणमा ८, ६, ८ विराम छे २ हंसी अने रजतहंसी ए नाम वाग्वल्लभमा आपी तेमां ८, १४ यति कही छे. ३ पिंगळाचार्यकृत छंद शास्त्रमां

हंसीनुं "साहंसी" नाम आप्युं छे अने तेना टिप्पणमां वसु भुवन यतिः एम कह्युं छे.

१२८९ **मंदारमाला.** ४,६,१२यति[1]. ७त+ग. ११,९८,३७२

चारे. छए, बारथी ता गणो, सात अन्ते ग मंदारमाला विषे.

१ वृत्तदर्पणमां ४,६,६,६यति केहेछे पण ते प्रमाणे यति खरातां मंदारमाला ए नाम कोइ प्रकारे वृत्तमां बंध बेसतुं आवी शकतुं नथी, तेमज एवी चार यति करवानुं सबल कारण जणातुं नथी; माटे अमे ४,६,१२ यति राखी छे. पण छंदप्रभाकरमां तथा संगीतानुसार छंदोमंजरीमां यति कही नथी. तेथी यतिनो नियम नहि पळाय तो पण अयोग्य नथी. राग रविचंद्रिका, ताल सत्यसेना, मात्रा ३७, मध्यकाळ. (संगीतानुसार छंदोमंजरी.)

१२९० **भोगावली.** तभर+सनन+जग. १९,७०,४८९

भोगावली रच ताभरा पर सानन प्रति पद जगा धरी.

१२९१ **स्वर्णाभर्ण.** ४स+नय+भग. १६,३६,०६०

पद चार स छे नय आण पछी भग धर स्वर्णाभर्ण विषे.

१२९२ **निष्कलकण्ठी.** भ,म,स,त,य,स,भ,ग १६,३७,५११

पंदर साते छेद धर्याथी निष्कलकण्ठी, भ म सा त्या स भ गे.

१५, ७ यति वाग्वल्लभ प्रमाणे

१२९३ **सवैया**[1], **मानिनी**[2], **ललिता**[3], **दिवा**[4], **मालिनी**[5], **सुंदर**[6].

७भ+ग. १७,९७,५५९

सात भ ने गुरुथीज दिवा वळी मालिनी मानिनी ने ललिता.

१ छंदोवृत्तमुक्तावलिमां सवैया नाम आपी तेमां यति कही नथी.

२ वाग्वल्लभमां मदिरा अने मानिनी नाम आपी तेमां यति कही नथी.

३ छंदोलतामां ललिता नाम आपी तेमां यति कही नथी. वळी

विशेष जणावेछे के, तेने केटलाक मदिरा पण केहेछे.

४ दिवा नाम छंद प्रभाकरमां छे तेणे यति कही नथी अने आ साथेज उमा, मालिनी, मदिरा अने सवैया एकज गण्या छे. तेणे सात भगणने बे गुरुनो बीजो सवैयो, आठ नगणनो त्रीजो अने आठ सगणनो चोथो सवैयो कह्यो छे.

५ छंदःसारमां मालिनी नाम छे. ६ छंदरत्नावली.

१२९४ मदिरा[1], मदरा.　　७भ+ग. १७,९७,५५९　१२,१० यति.

चार द्रशे यति छे मदिरा[७] हय, भा गण अन्त ग तो धरवे.

१ वृत्तरत्नाकरमां मदिरा नाम आपी तेमां यति कही नथी. वाग्वल्लभमां मदिरा ने मालिनी नाम आपी तेमां यति कही नथी. प्राकृतपिंगळसूत्रमां तथा शब्दकल्पद्रुममा मदिरा नाम आपी तेमां यति कही नथी. पिंगळादर्शमां १२, १० यति कही छे. मंदारमरंदचंपूमां मदिरा नाम आपी तेमां यति कही नथी. गणप्रस्तारप्रकाशमां मदरा नाम छे, मदिरा नामनुं वृत्त २३ वर्णमां अंक १३११मे छे. तेनुं बीजुं नाम शोभा अथवा इन्द्राविजय पण छे.

१२९५ उमा.　६,६,६,४यति.　७भ+ग. १७,९७,५५९

राग[५] छए षड[६], चार उमा यति, भा गण सात ग, अन्त रचो.

वृत्तदर्पणमां उमा नाम आपी आ माप अने आ यति केहेछे. संगीतानुसार छंदोमंजरीमां उमा अथवा मदिरानुं एकज नाम आपी तेमां यति कही नथी. तेनो राग सिंधुरा, ताल दिव्यमणि, मात्रा ३०, विलंबकाळ छे.

१२९६ भुजंगोद्धत.　तभ+रर+सर+नग. १९,१४,०३७

ता भा पछी र र छे भुजंगोद्धते स र छे ने न गा चरणमा

१२९७ सितस्तवक, } परिस्तवक. } तभयज+सरनग. १९,१९,१०९

आवे सितस्तवक वृत्ते त भा य ज पछी सा र ना ग पद्मा.

आ वने नाम वाग्वल्लभमा छे आज गणोवाळु अश्वधाटि वृत्त छे, परंतु तेमा कइ बंधन विशेष होवाथी अमे आ नीचे तेने जुदुं पाड्यु छे.

१२९८ अश्वधाटि. त,भ,य,ज,स,र,न,ग, १९,१९,१०९

ता भा य जा स र न ग छे भाइ! वृत्त कविता अश्वधाटी रचवा.

अश्व एटले घोडो, ने धाटी एटले रूढी- चाल, घोडाने चालवानी रूढी. घोडो चालता एक डावलामा पछवाडेला पगनो डाबलो मूकेछे, एवो आधार गणीने अश्वधाटी वृत्त रचवामां प्रत्येक पादमां बीजो, नवमो, अने सोळमो अक्षर जे गुरु होयछे ते तेनो तेज आववो जोइये. एज प्रमाणे अमारी रचनामां बीजो भा छे, नवमो भा छे, ने सोळमो भा आणवो जोइये पण ते आवी शके एम नथी. अश्वनो अ दीर्घ छे तेथी आ गणवो. आ प्रमाणेज अश्वधाटी काव्य २६ वृत्तनुं जगन्नाथ पंडिते रच्युं छे. जुओ सुभाषितरत्नाकर पृष्ट ३१६ थी ३३० मे.

१२९९ मत्तेभ. ७,७,८यति. तभय+जसर+नग. १९,१९,१०९

मत्तेभ सात हय, आठ त भा य पर, जा सा र ने न ग करो.

आ वृत्त मंदारमरन्दचपूमा छे.

१३०० अमृतध्वनि. { त,भ,य,ज,स,र,न,ग. ४,७,७,४ यति. } १९,१९,१०९

ता भा य जा, स र न गा चार ने, हय हये अमृतध्वनि बने.

१३०१ भद्रक[1], भद्रिक[2], प्रभद्रक[3], भद्रिका[4].

१०,१२ यति. भ+३रन+ग. १९,३०,७११

भद्रकमां भ छे त्रण र ना, ग अन्त दश बारथी यति करो.

१ वृत्तरत्नाकर, छंदःशास्त्र, छंदोल्ना अने पिंगळादर्शमा भद्रक नाम आपी १०,१२ यति कही छे, छंद प्रभाकरमां यति कही नथी.

२ भद्रिक, भद्रक ए बे नामो वाग्वल्लभमा आपी १०, १२ यति कही छे, पण तेमां चोथो गण र ने बदले स गण्यो छे, ए हिसाबे ते १९,३१,२२३ मी वृत्ति थाय, तेने बदले १९,३०,६५१ मी लखी छे माटे एना मापमां पण भूल जणायछे; कारण के १९,३०,६५१ नी वृत्ति प्रमाणे तेनु रूप र स भ र न र न ग एवुं थायछे.

३ मंदारमरंदचंपू. ४ भाषाछंदोमंजरी.

१३०२ लालित्य. ममर+सत+जन+ग. २०,१६,९२१

लालित्ये म स रा छे स ता पर जा ना ते पर गा कर चरमे.

१३०३ अचलविरति. (वाग्वल्लभ) ७न+ग. २०,९७,१५२

हय ७न गणपर म धर कविवर[1] तुं अचलविरतिमा.

१३०४ मोदक,[1] मोद. (ग प्र प्र.) { ५भ+म+स+ल. २९,११,६७१ }

मोदकमांह भ पाच पछी म स ने लघु लावो एक सदाय.

मोद नामनु वृत्त अंक १२८२ मे उपरना गणो साथे अंत्य लघुने बदले गुरुवाळुं पण छे. १ भाषा छंदोमंजरीमा मोद सवैया एवु नाम छे.

१३०५ हाटक. ७ स+ल. २९,९९,९३२

झट हाटकमा हय ७सा कर ला चरमे करजे कविराय!

चित्रसेननी टीकावाळा नागपिंगळमा हाटक नाम छे

मागधी पिंगळछंदोग्रंथमा हाटका नाम छे तेमा लखेछे के —

यस्यां प्रथम गुरु द्वय सा हाटका अजया

यस्या प्रथम ह्रस्त गण सा विजया

यस्या प्रथमं चरण गण सा मंगला

१२९७ सितस्तवक,
परिस्तबक. } तभयज+सरनग. १९,१५,९०९

आवे सितस्तवक वृत्ते त भा य ज पछी सा र ना ग पदमां.

आ बने नाम वाग्वल्लभमा छे आज गणोवाळु अश्वधाटि वृत्त छे, परंतु तेमा कइ बंधन विशेप होवाथी अमे आ नीचे तेने जूदुं पाड्यु छे

१२९८ अश्वधाटि. त,भ,य,ज,स,र,न,ग, १९,१९,९०९

ता भा य जा स न ग छे भाइ वृत्त कविता अश्वधाटी रचवा.

अश्व एटले घोडो, ने धाटी एटले रूटी- चाल, घोडाने चालवानी रूढी. घोडो चालतां एक डावलामा पळवाडेना पगनो डाबलो मूकेछे, एवो आधार गणीने अश्वधाटी वृत्त रचवामां प्रत्येक पादमां बीजो, नवमो, अने सोळमो अक्षर जे गुरु होयछे ते तेनो तेज आववो जोइये. एज प्रमाणे अमारी रचनामां बीजो भा छे, नवमो भा छे, ने सोळमो भा आणवो जोइये पण ते आवी शके एम नथी. अश्वनो अ दीर्घ छे तेथी आ गणवो. आ प्रमाणेज अश्वधाटी काव्य २६ वृत्तनु जगन्नाथ पंडिते रच्यु छे. जुओ सुभापितरत्नाकर पृष्ट ३१६ थी ३३० मे.

१२९९ मत्तेभ. ७,७,८यति. तभय+जसर+नग. १९,१९,९०९

मत्तेभ सात हय, आठ त भा य पर, जा सा र ने न ग करो,

आ वृत्त मंदारमरदचपूमा छे.

१३०० अमृतध्वनि. { त,भ,य,ज,स,र,न,ग.
४,७,७,४ यति. } १९,१९,९०९

ता भा य जा, स र न गा चार ने, हय हये अमृतध्वनि बने.

१३०१ भद्रक[१], भद्रिक[२], प्रभद्रक[३], भद्रिका[४].

१०,१२ यति. भ+३रन+ग. १९,३०,७११

भद्रकमां भ छे त्रण र ना, ग अन्त दश बारथी यति करो.

१ वृत्तरत्नाकर, छंद शास्त्र, छंदोल्ना अने पिंगळादर्शमां भद्रक नाम आपी १०,१२ यति कही छे, छंद प्रभाकरमां यति कही नथी.

२ भद्रिक, भद्रक ए बे नामो वाग्वल्लभमां आपी १०, १२ यति कही छे, पण तेमां चोथो गण र ने बदले स गण्यो छे, ए हिसाबे ते १९,३१,२२३मी वृत्ति थाय, तेने बदले १९,३०,६५१ मी लखी छे माटे एना मापमां पण भूल जणायछे, कारण के १९,३०,६५१ नी वृत्ति प्रमाणे तेनुं रूप र स भ र न र न ग एवुं थायछे.

३ मदारमरदचंपू. ४ भाषाछंदोमंजरी.

१३०२ लालित्य. मसर+सत+जन+ग. २०,१६,९२१

लालित्ये मस रा छे स ता पर जा ना ते पर गा कर चरमे.

१३०३ अचलविरति. (वाग्वल्लभ) ७न+ग. २०,९७,१५२

हय ७न गणपर म धर कविवर[१] तुं अचलविरतिमा.

१३०४ मोदक,[१] मोद. (ग प्र प्र.) { ५भ+म+स+ल. २९,११,६७१ }

मोदकमांह भ पाच पछी म स ने लघु लावो एक सदाय.

मोद नामनुं वृत्त अंक १२८२ मे उपरना गणो साथे अंत्य लघुने बदले गुरुवाळु पण छे. १ भाषा छंदोमंजरीमां मोद सवैया एवु नाम छे.

१३०५ हाटक. ७ स+ल. २९,९९,९२१

झट हाटकमां हय ७सा कर ला चरमे करजे कविराय!

चित्रसेननी टीकावाळा नागपिंगळमां हाटक नाम छे

मागधी पिंगळछंदोग्रंथमां हाटका नाम छे तेमां लख्युंछे के —

यस्या प्रथम गुरु द्वय गा हाटकी अजया

यस्या प्रथम ह्रस्त गण गा विजया

यस्या प्रथमं चरण गण गा मंगला

यस्यां प्रथमं विप्रगण सा **रसमंगला.**

शेषे पूर्वोक्ता एव.

एनो अर्थ नीचे प्रमाणे—

१ **अजया** तेमां पेहेले कर्ण(ऽऽ) गण बाकी उपर प्रमाणे.

२ **विजया** तेमा पेहेले (हस्त) सगण बाकी उपर प्रमाणे.

३ **मंगला** तेमां पेहेले (चरण) भगण बाकी उपर प्रमाणे.

४ **रसमंगला** तेमां पेहेले विप्र गण (।।।।) बाकी उपर प्रमाणे

जो प्रतिपदनी २९ मात्रा कायम राखिये अने सूचव्या प्रमाणे प्रारंभमां वधारो घटाडो करिये तो नीचे प्रमाणे रूप थायछे:—

अजया- २ ग+६ स+ल=२१ वर्ण तेनी मात्रा २९. रूप १४,९७,९६५ मु.
विजया-एक सगण वधारीने तेने बदले एकसगण घटाडता ७स+ल=हाटका
मंगला- भ+६स+ल=२२ वर्ण=२९ मात्रा रूप २९,९५,९३५ मु.
रसमंगला- न+ल+६स+ल=२३ वर्ण, २९ मात्रा. रूप ५९,९१,८७२ मु.

जो उपर प्रमाणे करिये छिये तो अजयामा एक वर्ण घटेछे. विजयानु रूप तो मूळ **हाटका** प्रमाणेज थइ जायछे **मंगलामा** मात्र २२ वर्ण कायम रेहेछे, **रसमंगलामां** २३ वर्ण थइ जायछे, पण सर्वेमां मात्रा तो २९ कायम रेहेछे.

हवे जो "**शेषे पूर्वोक्ता एव**" एटले "बाकीनु पूर्वे कह्या प्रमाणे," तेनो अर्थ एवो करिये के, **हाटकानु** रूप जे ७स+ल छे ते कायम राखीने प्रत्येक भेदना प्रारंभमा सूचव्या प्रमाणे उमेरो करिये तो नीचे प्रमाणे रूप थाय:—

अजया- २ ग+७स+ल=२४ वर्ण. ९,१९,८३,७२५ मुं रूप.
विजया- स+७स+ल=२५ वर्ण अंक. १३८९ मे अरविंदसुखी छे.
मंगला- भ+७स+ल=२५ वर्ण २,३९,६७,४५५ मु रूप.
रसमंगला- ४ ल+७स+ल=२६ वर्ण ४,७९,३४,९१२ मु रूप

आ रीते, "शेषे पूर्वोक्ता एव" एवा लखाण उपरथी बने प्रकारे रचना थइ शकेछे.

१३०६ **वनवासिनी**. { सज+जभ+रन+सल. १०,१२ यति. } ३१,२४,५८८

वनवासिनी सज छे जभा, रन छे सला विरति दश सूर्य.

वाग्वल्लभ प्रमाणे.

२३ विकृतिछंद. ८३,८८,६०८ भेद. २३ वर्ण.

१३०७ इच्छा. ७म+२ग. १

अवीशे वाजी वर्णो आवेछे माताजीने नामे इच्छा वृत्ते तो सारा.

अमारां माताजीना नामनु नवु वृत्त छे

१३०८ परिधानीय. नन+भत+जय+स+गग. ८,४२,१७१

नन पर भत छे जय पूठे स पछी धर गा गा परिधानीये.

१३०९ सर्वगामी. ७त+२ग. ११,९८,३७२

ता सात आणी धरो गा ग अन्ते बने एम तो वृत्त आ सर्वगामी.

गणप्रस्तारप्रकाश प्रमाणे सर्वगामी वृत्त, वर्ण २२मा अंक १२८० मे छे तेथी आ माप भिन्न छे.

१३१० विलासवास, सुभाग, विलास. } भस+भभ+सज+भगग. १७,९२,४७९

भास पर भभा छे सज ते पर भ ग गा विलासवास-सुभागे.

आ त्रणे नाम वाग्वल्लभमा छे

१३११ मत्तगजेन्द्र[1], मत्तगयंद[2], मालती[2], इन्द्रविजय, इन्दव[3], मधुमालतिका[4], शोभा[5], सवैया[6].

१२, ११ यति. ७भ+२ग. १७,९७,५९९

बार शिवे यति भा हय अन्त ग,-वे पद मत्तगजेन्द्र-सवैया.

१ वाग्वल्लभमा आ नाम छे, अने तेणे यति कही नथी.

२ मत्तगयंदमा सात भगण+२ गुरु आवेछे, अने तेनेज मालती केहेछे, एम छंद प्रभाकरमा कह्यु छे. ३ छन्दरत्नावली तथा गणप्रस्तार-प्रकाशमा इन्दव नाम छे तेमा यति कही नथी ४ वृत्तदीपिकामा आ नाम छे, तेमा यति कही नथी ५ शोभा अने इंद्रविजय नाम पिंगळादर्शमा आपी तेमा १२, ११ यति कही छे अने ते बोलतां ठीक पडेछे माटे अमे स्वीकारी छे हाथीनो कान फरेछे ते प्रमाणे गावानी ढब

छे. वीश अक्षरमां शोभा नाम छे जुओ अंक १२३५मे.

६ सवैयामां लखपतजशसिंधुप्रमाणे १६,१५ यतिथी ३१ मात्रा-२२ वर्ण तेमां अंते ल अथवा ग. वळी मुनिनायकनुं मत पण ए छे के बे गुरु अथवा ल ग आवे मदिरा, शोभा, अथवा इन्द्रविजे ए नाम संगीतानुसार छंदोमजरीमां छे, पण तेमां तेणे यति कही नथी. वळी मदिरा नाम २२ वर्णमां (७भ+ग) आप्युं छे, एटले अहिं ग्राह्य नथी. राग खमाच, ताल चतुश्रजाति तेताल, मात्रा १६, मध्यकाळ.

१३१२ मन्थरायन, मन्थर. नर+२न+३भ+गग. १७,९८,१०४

न र पछी न बे त्रण भ चरणे छे चरमे ग ग मंथर मांहे.

आ बन्ने नाम वाग्वल्लभमा छे.

१३१३ मदिरा[1], सवाइ[2]. { ६,६,६,५ यति. १८,१३,९४२
४भ+रन+भ+२ग.

चार भ ने र न, दे भ पछी द्वि ग, छे सवाइ छछ, छो मदिरामां.

१ मराठी वृत्तदर्पणमां आ नाम तथा यति आप्यां छे. पण जुओ वर्ण २२मां अंक १२७३मे मदिरा नाम छे.

२ संगीतानुसार छंदोमजरीमां मदिरा किंवा सवाइ नाम आपी तेमां आ गण लख्या छे, पण यति कही नथी राग स्वरहरप्रिया; ताल चतुश्र जाति तेताल, मात्रा १६, मध्यकाळ.

१३१४ पुलकाञ्चित. भसन+नय+२न+भ+२ग. १९,२१,९०२

भा स पर न या धर द्वि न छे भा पर द्वि ग पुलकांचित पादे.

यति कही छे. २ गणप्रस्तारप्रकाशमा वागेश्वरी नाम पण अशुद्ध छे.

१३१७ विपुलायित. मन+जभ+नज+रलग. २८,१७,४०१

माना दे जभ पर नाज आण रलग विपुलायिते बधे पदे.

१३१८ कालिका[1], कालका[2]. { २रन+रलग. २८,६२,७७९ / १२, ११ यति.

वार रुद्र यति आण रान त्रण, ते पछी रलग कालिका पदे.

१ पिंगळादर्शमा कालिका नाम आपी तेमा १२, ११ यति कही छे.

२ गणप्रस्तारप्रकाशमा आ नाम छे ते कालिकानो अपभ्रंश छे

१३१९ पारावारान्तस्थ[1], पारावारान्त[2]. } ३म+सभ+सत+लग. ३२,७०,१४९.

पारावारान्तस्थे छे मा तो त्रण साभा पर सत अन्ते लाग करो.

१३२० रामावद्ध. { म,भ,स,भ,त,न,त,ल,ग. ३३,९४,८०१, / १०,४,९यति.

रामावद्धे रच मभसाभा, तनताला, ग दश युगे खड यति.

१३२१ विलम्बललित, विल. २जस+ज+लग. ३५,२८,५४

विलम्बललिते रचो त्रण जसा पछी ज पर लाग अन्त करो.

१३२२ वसुरत्न[1], वसुरयण[2]. ५भ+तज+लग. ३५,६७,०३

आ वसुरत्न विषे धर पांच भ ते पर ता जा पर लाग पदे.

१ चित्रसेन टीकावाळा नागपिंगळमा छे २ मागधी पिंगळछंदोग्रंथमा छे

१३२३ सुंदरिका[1], सुंदरी[2], सुंदरिया, सुंदर[3]. } २स+भस+त+२ज+लग / ३५,९०,०४४.

धर बे स पछी भास कर त ने बे जा पर छे लग सुंदरिका.

१ प्राकृत पिंगळसूत्र, वाणीभूषण, शब्दकल्पद्रुम एकेयमा यति कही नथी; छंदोलता अने छंद कामदुघावत्समा ७,६,१० यति कही छे

२ सुंदरीवृत्तमा ७,६,१० वर्णे यति पिंगळादर्शमा कही छे पण प्राकृ

त पिंगळसूत्र, वाणीभूषण, छंदोमंजरी, छंदोर्णव तथा छंद प्रभाकरमा यति कही नथी, पण बोलता पळायछे ३- सुंदर-गणप्रस्तारप्रकाशमा छे.

१३२४ डम्बलया. त+६ज+लग. ३९,९९,०१७

ता उपर जा छ करी, लग, छेवट पाद धरी रच डम्बलया.

मागधी, पिंगळछंदोग्रथमां एनु चरण ३२ मात्रानु कह्यु ते वृत्तना पिंडमां ३६ गुरु ५६ लघु अने ९२ वर्ण तथा १२८ सर्व मात्रा कही छे, ते आ मापने मळतु छे

आमा एक कर्ण (ऽऽ) गण उपर ६ सगण थायछे.

१३२५ मल्लिका[1], मानिनी[2], सुमुखी[3], सवैया[4], कुंदसवैया. } ७ज+लग. ३९,९९,११८

ज सात धरी लग अन्त करी मलिका-सुमुखी रच कुंद-कवि!

१ छंद प्रभाकर, तेमा यति कही नथी. पिंगळादर्शमा मलिका नाम छे. २- छंद प्रभाकर, छंदोर्णव, छंदसार एमां यति कही नथी. अक ३२३- मे ८ वर्णनु मल्लिका नामनु वृत्त जूदुं छे ३ छंदोबोध, छंद प्रभाकर, ४ छंदोर्णव.

१३२६ विराजित[1], श्रवणाभरण[2], सवाइ.[3] } न+६ज+लग. ३९,९९,१२०

न गण पछी छ ज ने लग आण विराजित ने श्रवणाभरणे.

१-२ वाग्वल्लभ. ३ संगीतानुसार छंदोमजरी, राग जारकुरजी, ताल चंद्रकान्ता, मात्रा ३०, मध्यकाळ रामकृष्ण कविकृत भगवती पद्य पुष्पांजली नामे स्तोत्र अने शंकराचार्य कृत यमुनाष्टक आ वृत्तमा छे ते जूदजूदा रागमा गवायछे वृत्तदर्पणमां ७, ६, ६, ४ यति कहेछे. ते प्रमाणे यमुनाष्टकमा घणोखरो नियम सचवायो छे.

१३२७ सुधालहरी. न+६ज+ल ग. ३९,९९,१२९

न पर छ जा पर अन्त लगा, हर शास्त्र छये, ज सुधालहरी.
११ ६

मंदारमरंदचंपूमा ११,६,६ यति छे.

१३२८ अद्रितनया.　न ज+२ भ ज+भ ल ग. ३८,६१,४२४

न ज पर वे भ जा धर पछी भ ला ग कर पाद अद्रितनया.

प्राकृतपिंगळसूत्र, छंदोमजरी, अने शब्दकल्पद्रुममा यति कही नथी, तेमा जणाव्यु छे के, आनेज बीजा अश्वललित नाम आपेछे. परतु वाणीभूषणमा यति न मानीने अश्वललितथी आ वृत्त जदु मान्यु छे वागवल्लभ मा यति कही नथी अने अद्रितनया तथा अश्वललित एम वे नाम एकठां आप्या छे

१३२९ अश्वललित[1], ललित[2].　{ नज+२भज+भलग. ३८,६१,४२४ ; ११, १२ यति.

न ज पर वे भ जा धर पछी, भ ला ग शिव सूर्य अश्वललिते.

१ वृत्तरत्नाकर, छंद शास्त्र, अने शृंगारमरदन्चपूमा अश्वललितना न,ज,भ,ज,स,ज,न,ल,ग गण आप्या छे परतु ते प्रमाण प्रयोथी विरुद्ध होता तेमा भूल थयेली जणायछे, छंदोलतामा न ज भ ज भ ल ग एवु माप छे तेमा पण भूल थइ छे

२ पिंगळादर्शमा अद्रितनया के अश्वललित एके नाम न आपता एकलु ललित नाम आपी तेमा ११, १२ यति कही छे अगियार अक्षरमा पृष्ट २९० अक ५९७ मे ललित नामनु प्रसिद्ध वृत्त जदु छे

१३३० मत्ताक्रीड[1], मत्ताक्रीडा[2], वाजिवाहन[3]　{ २म,त,४न,लग. ४१,९४,०४९ ; ८, १५ यति.

मत्ताक्रीडे वे मा छे ता, चतुर न पर लग वसु तिथि यति छे.

१ मत्ताक्रीड नाम आपी छद शास्त्र, छदोमजरी, अने वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा ८, १५ यति कही छे परतु छदोलता, छदोबोध, प्राकृत पिगळसूत्र, शब्दकल्पद्रुम, सस्कृत प्रोसडी अने पिंगळादर्शमा ८ तथा १५ ने बदले ५, १० यति कही छे, ते मूळनो अर्थ खोटो समजायाथी भूल करी जणायछे, एवो स्पष्ट लेख वृत्तरत्नाकरनी टीप पृष्ट ५४ मे पण आप्यो छे.

२ छद प्रभाकरमा यति कही नथी अने आ नाम आप्यु छे.

३ नारायणभट्टी प्रमाणे आ नाम छे

१३३१ अमरचमरी. ७न+लग. ४१,९४,३०४

हय नगणपर लग थकी पद रच कवि! अमरचमरी.

१३३२ कोकिलीशारदा. १२,११यति. ७र+गल. ४७,९३,४९१

बार रुद्रे यति सात रा अन्तमां, गाल छे कोकिलीशारदा पाद.

१३३३ संभृतशरधि. २भनय+स+गल. १०,४५,३७५

संभृतशरधि विषे बे भानय पर स तथा गाल पदे अन्त.

१३३४ चकोर[1], चित्तपदा[2], सवैया, ललिता[3]. } ७भ+गल. ५९,९१,८६३

भा गण सात तथा गलथी रच चित्तपदा–ललिता च चकोर.

१ वाग्वल्लभ. २ छंदोलता, वृत्तदीपिका. ३ छंदोलता.

१३३५ मंजुल. ७भ+गल. ५९,९८,८६३

१२,११ अक्षरे एटले १६ ने १५ मात्राए यति.

सात भ ने गल अन्त धरी रवि, रुद्र यति कर मंजुल पाद.

१३३६ सभा. १२,११यति. ७स+लल. ७१,९९,२३६

रवि रुद्र परे यति बे हय सा, गण अन्त ललार्थी सभा पद.

२४ संस्कृति छंद.

१,६७,७७,२१६ भेद छे. २४ वर्ण.

१३३७ वंशलोन्नता. रजर+२म+ज+र+म. ६,८८,२९९.

वंशलोन्नता विषे र जा रा ने बे मा छे जा पछी रथाय अन्ते मा छे.

१३३८ धौरेय,मानबिम्ब. २भ+२स+२न+स+म. १०,४६,२६३

बे भ परे द्वि स पर बे न करी स पर म चरण करो धौरेय.

१३३९ देव[1], महाभुजङ्गप्रयात, महाभुजङ्ग[2], भुजङ्ग[2], सुधाप[2], महानाग[3], सवैया. } ८ य. २३,९६,७४६

करो आठ या देवमा बार छेदे, भुजंगे-महानाग पादे सवैये.

१ पिंगळादर्शमा आनु देव अथवा महाभुजगप्रयात नाम आपी १२, १२ यति कही छे

२ महाभुजग, भुजंग अने सुधाप ए त्रणे नाम वाग्वल्लभमा छे काव्यसुधाकर अने छंदोर्णवमा एने भुजग कहेछे

३ गणप्रस्तारप्रकाशमा महानाग नाम छे.

१३४० झूलना. १२,१२ यति. ७स+य. २९,९१,९३२

कर सात स नी पर या चरमे, यति बार परे झूलना पदे तुं.

गणप्रस्तारप्रकाशमाथी

१३४१ भासमानबिम्ब, भासमान. } रज+भस+जभ+सय. ३१,०२,६३९

भासमानबिंबमां रज परभास छे जभा पर सय भासमाने.

आ बन्ने नाम वाग्वल्लभमा छे

१३४२ धूत्रा. स+२ज+भर+सज+य. ३१,१७,८०४

स पछी ज बे कर भा र ने स ज आण ते पर या धरी रच धूत्रा.

चित्रसेनटीकावाळु मागधीपिंगळ.

१३४३ माधविका[1], कोक, सवैया, माधवी, मकरंद[2], वाम[3], वाम[4], वामा[5], मंजरी[6]. } ७ज+य. ३९,९९,११८

ज सात पछी य पदे धरी मंजरी-माधविका रच कोक-सवैया.

१ छंदोग्रंथमा आ नाम छे, ते जणावे छे के भाषामा आनु नाम वामा छे २, ३ आ बन्ने नाम भाषा छंदोमंजरीमा छे.

४ आ वामनु अपभ्रंश रूप गणप्रस्तारप्रकाशमा छे

५ छंदोबोध ६ काव्यसुधाकर अने शब्दकल्पद्रुममां आ नाम छे

१३४४ समाहित. न+६ज+य. ३९,९९,१२०

न पर छ जा धर ते पर या कर ने रच पाद समाहित केरा.

१३४५ त्रिगाहितगेह, गाहितगेह, गाहितदेह.

३न+य+म न+जय. ३६,३८,२७१

त्रण न पर य धर मन आणी जा या जोड पद त्रिगाहितगेहे.

आ त्रणे नाम वाग्वल्लभमां छे.

१३४६ अधीरकरीर. म+२न+भस+नज+य. ३६,९२,११३

मा ने बे न पर भ स करी न ज पर या चरण अधीरकरीरे.

१३४७ तन्वी[1], तन्वीस[2]. } भत+न+सभ+म+नय. ४१,५५,३६१ ५,७,१२ यति.

भा त पछी ना, कर स भ पर भा, ना य थकी शर हय रवि तन्वी.

१ वृत्तरत्नाकर, छंदोमजरी, वाग्वल्लभ, अने प्राकृतपिंगळसूत्र, इत्यादिमा आ नाम अने यति छे २ गणप्रस्तारप्रकाशमा छे

१३४८ अर्दित, नार्दित. ६भ+न+य. ४१,५६,८५५

अर्दित नर्दित मांह छ भा गण, ते पर ना पर य गण धरोजी.

अमारा अभिप्राय प्रमाणे १२,१२ यति आवेछे.

१३४९ पार्षतसरण. भन+य+म+३न+य. ४१,९०,३३१

पार्पतसरण पदे भाना छे या पर म पर त्रि न पर य अन्ते.

१३५० कोकपद. भम+सभ+३न+य. ४१,९३,४७९

कोकपदे भामा पर सा भा उपर त्रण न पर य गण करोजी.

१३५१ वैकुंठधामा. ८र. १२,१२, यति. ४७,९३,४९१

बार ने बार छेदो अने आठ रा, आणजो आप वैकुंठधामा पदे.

१३५२ स्वैरिणीक्रीडन, गंगोदक, जानकी, खंजना, गंगाधर, लक्ष्मी, लच्छी, सवैया. } ८ र. ४७,९३,४९१

स्वैरिणीक्रीडने आठ रा आणजो पाद पादे तमे शोभता जोइने.

१, मंदारमरदचंपूमा आ वृत्त छे, छट्ठे अक्षरे यति लइ ठीक बोलायछे

२ वाग्वल्लभमा यति कही नथी. भाषाछंदोमजरीमा पण तेज प्रमाणे छे.

३ छंदोलना. ४ गणप्रस्तारप्रकाश ५,६ छंद प्रभाकरमा छे, पण तेमा यति कही नथी.

१३५३ उत्कटपट्टिका. तज+रज+नस+रर. ४८,४८,३०१

छे उत्कटपट्टिका पदे त जा पर र ज पर ना सा पछी रार छे.

वाग्वल्लभ प्रमाणे.

१३५४ त्रिपक्व. १६,८ यति. ४ जर. ९९,९२,६०६.

त्रिपक्व पाद सोळ आठ एम बे विराम ने, रचाय चार जारथी.

चित्रसेनटीकावाळा मागधीपिंगळमाथी

१३५५ अरसात[1], मकरंद[2], अलसा[3]. ७भ+र. ९९,९१,८६३

सात भ आण र अन्त पदे अलसा-मकरंद अने अरसातमां.

१, छंदोर्णवमा सवैया प्रकरणमां आ तथा अलसा नाम छे २ गणप्रस्तारप्रकाश ३ काव्यसुधाकर.

१३५६ शम्बर. { न+भस+स्न+भभ+र. ६,६,६,६, यति } ९९,९३,९१२.

छछछ छो यति, ना पर छे भभा, पर स्ना भ भ, रा पछी शम्बर.

द्रुतविलंबित (पृष्ट ३११ अक ७३७मे) न+२भ+र=१२ वर्णनाथी बमणु.

१३५७ { दुमिला, मदिरा, द्विमिला[1], दुर्मिल[2], चंद्रकला[3], दोमलया, सवैया, मुकुन्द, रूपमकरंद, घोटक[4]. } ८स. ७१,९०,२३६.

दुमिला-मदिरा-द्विमिला रचजो सगणो कुल आठ विचार करी.

१ वाग्वल्लभ, २ छंदोमजरीनु परिशिष्ट, भाषाछंदोमजरी ३ भाषाछंदोमजरी. ४ मंदारमरन्दचपू

१३५८ { दुर्लतिका,[१] माधवी,[२] दुर्मिला,[३] दुर्मिलका,[४] दुमेला.[५] } ८स. ७१,९०,२३६ ८,६,१० यति.

वसु ने छ दशे यति, दुर्लतिका वळी, माधवनामां वसु सा पद छे.

१,२ दुर्लतिका नाम अने ८,६,१० वर्णे यति छंदोबोधमा छे भाषामा एने माधवी केहेछे.

३ प्राकृत पिंगळसूत्रमां दुर्मिला नाम आपी तेमां १०,८,१४ मात्राए एटले ८,६,१० वर्णे यति कही छे, ते एकनु एकज छे.

४ दुर्मिलका नाम वृत्तदीपिकामां आपी ८,६,१० वर्णे यति कही छे; वागीभूषणमा दुर्मिलका, दुर्मिला नाम आपी तेमा यति कही नथी.

५ दुर्मिला, दुमेला नाम पिंगळादर्शमां आपी १२,१२ यति कही छे. बोलवामा पण ते ठीक छे.

१३५९ नेहपाळ. १२,१२ यति. मतर+सत+जभ+स. ८०,४६,२४१

बारे बारे नेहपाळ मा त र छे, साता पर जाभ छे स चरममा

पिंगळादर्शमां १२,१२ यति कही छे.

१३६० वेश्याप्रीति. मभ+यम+नभ+नस. ८२,५१,८५७

आठे आठे त्रण यति, छे वेश्याप्रीति म भ ने, य म पर न भ नसा.

मंदारमरंदचंपूमां आ वृत्तमा ८,८,८ यति कही छे

१३६१ वेल्लितवेल. ३भ+मस+नन+स. ८३,६८,५७७

वेल्लितवेल विषे त्रण भा ने मा स पछी न न चरम स रचजो.

वाग्वल्लभ.

१३६१ (अ.) अतुलपुलक. ७न+स. ८३,८८,६०८

अतुलपुलक कविवर! रच हय न[७] गणपर सथी चरण.

१३६२ आभार[1], गवेषा. ८त. ९९,८६,९८१

आणो तमे आठ ता पाद पादे गणी नाम पाडी सवैया च आभार.

१ छंदोर्णव तथा काव्यसुधाकर अने छंद प्रभाकर

१३६३ सुखदा[1], विष्णु, सुरेश्वर, कोकी, मुक्ताहरा[2], मुक्तहरा[3], सवैया, माधवी[4]. — ८ज. १,१९,८३,७२६ १२,१२यति.

रचो सुखदा रविये यति कोकी, सुरेश्वर आठ ज माधवी-विष्णु.

१ पिंगळादर्शमा सुखदा नाम आपी १२,१२यति कही छे.

२ छंदोर्णव ३ छंद प्रभाकर ४ गणप्रस्तारप्रकाश.

१३६४ मेदुरदन्त[1], किरीट[2], किरत[3], माधविका, करींटी[4]. — ८भ. १,४३,८०,४७१ १२,१२ यति.

मेदुरदन्त–किरीट विषे रवि, छेद धरी रच आठ भ पादज.

१ वाग्वल्लभमा यति कही नथी २ वाणीभूषण, छंद प्रभाकर, प्राकृतपिंगळसूत्र अने वाग्वल्लभमा आ नाम छे पण एकेयमा यति कही नथी.

३ छंदोवृत्तमुक्तावलीमा आने त्रीजा प्रकारनो सवैयो कह्यो छे, पिंगळादर्शमा किरीट अने कीरत नाम आपी १२,१२ यति कही छे.

४ करीटी गणप्रस्तारप्रकाशमा छे

२५ अतिकृति अथवा अभिकृति छंद.

३,३५,५४,४३२ भेद छे. २५ वर्ण.

१३६५ शंभु. चच्चारे यति. ८म+ग. १

शंभुवृत्ते, पादे पादे, आठे मा ने, गा आणीने, चारे चारे, छेदो लावे छे.

शंभु नामनु बीजु वृत्त पाछळ जुओ वर्ण १९ अंक ११९४ मे

१३६६ व्याक्रोशकोशल. त भ+य भ+३स+ज ग. १,४,२२,९६६

व्याक्रोशकोशल त भा, याभा पर त्रण सा, जग आठ हये दशे यति.

वाग्वल्लभमा आ नाम तथा ८,७,१० यति छे.

१३६७ शरभूरिणी. र स+जज+भर+सय+ग. २९,७६,६०३

रास छे जज छे पछी भर छे अने सय अन्त गा शरभूरिणी पादे.

१३६८ हीणहैयंगवीन. ८र+ग. ४७,९३,४९१

आठ रा पाद पादे तमे आणजो शोभता वृत्तमां हीणहैयंगवीने.

१३६९ कमला, सुंदिर, मल्ली, सुमिला, माधवी, अमला, चंद्रकला, सुछंद, सुंदरी, सवैया, सुखदा, सुखदानि.

१२,१३ यति. ८स+ग ७१,९०,२३६

कमला-सुमिला-सुंदिरे रचिये, यति ने धर आठ स ने ग वळी तुं.

१ वाग्वल्लभ, तेमां यति कही नथी. २ छंद सारमा आ मापथी मल्लिका नाम आपी तेमा यति कही नथी ३ पिंगळादर्शमा आ नाम आपी तेमा १२,१३ यति कही छे. ४ छंदरत्नावली ५ काव्यसुधाकर ६ भगवत्पिंगळ ७ छंदबोध. अने ८ गणप्रस्तार-प्रकाशमां अनुक्रमे ए नाम छे पण ते ग्रंथोमा यति कही नथी.

१३७० नीपवनीयक, वनीपक, नीपक. } भनन+सभ+३स+ग. १२,०२,८१५

भा न न पर स भ पर त्रण सा छेवट गुरु नीपवनीयक वृत्त.

१३७१ कुमुदमाला. न त स भ य+न त स ग. ७९,७६,८०८

अथवा (न+कर्णगण (। । । ऽ ऽ) एवा पांच यतिना पांच टूकडा)

कुमुदमाला, न त स भा या, न त स गा छे, यति शरे छे, शर शरे ना

अथवा

नगण कर्णे, पचिस वर्णे, क्रम करीने, शर धरीने, कुमुदमाला.

१३७२ रसिकरसाला. नन+सस+भतन+सग. ८२,८३,९०४

नन पर सस धर भातन आणी सग पादे रच रसिकरसाला.

१३७३ विरहविरहस्य.मन+नत+यन+नस+ग. ८३,६२,४८९

माना छे नत पर यन पूठे नस अन्ते ग पद विरहविरहस्ये.

१३७४ भास्कर, भास्करविलसित. { भन+ज+यभ+नन+सग. ८३,८१,२११ }

भास्कर भ न पर जा धर या भा तेपर न न पर स ग कर शाणा.

१३७५ चित्तचितामणि. ९,८,८ यति. } ३र+नज+३त+ग. ९९,६२,४६७

३ ३
लोक रा ने नजा लोक ता, यति नव आठ अन्ते, ग छे चित्तचितामणी.

१३७६ गुणमालाधरा. १२,१३ यति. } ७भ+त+ग. १,०१,८६,१६७

१२ १३
छे रवि ने जग्वथी यति वे पद,सात भथी रचजो गुणमालाधरा.

१३७७ वल्लरी,वल्लरिका.५न+जन+ज+ग. १,२९,१७,३७६

५
शर नगण पर ज न धर ज गण कर अन्त ग चरण वल्लरी.

१३७८ दास. ६,६,६,७यति. ४सभ+ग. १,३९,८१,५५६

६ ७ ४
छ छ चक्रे हय, यति आणो कवि! युग साभ पर,ग धरी दास करो,

पिंगळादर्शमा उपर प्रमाणे यति छे

१३७९ वंधूर. (छंदोलता) ४न+२स+२भ+ग. १,४२,७०,४६२

४
चतुर नगण पर द्वि स धर द्वि भ अन्त ग वंधूर पदे करजो.

१३८० शिविका[१], चारु[२], सारु. } ८भ+ग. १,४३,८०,४५६ १२, १३ यति.

बार वळी जख उपर छे यति, भा गण आठ पछी ग कथ्ये शिविका.

१ वाग्वल्लभमा छे पण तेमा यति नथी. २ पिंगळादर्शमा १२,१३ यति कही छे, अने तेम बोलाय पण छे.

१३८१ भाविनीविलसित. ४रन+ग. १,५४,४९,६९१

चार छे रन गणो तथा चरम गा धरो चरण भाविनीविलसिते.

१३८२ कलकंठ. { ८,८,९ यति. सज+नज+भतर+नग. १,५४,६१,३९६ }

कलकंठ सा ज पर, न ज छे भ ता र न ग, यति आठ आठ नवथी

आ नाम अने यति मंदारमरन्दचम्पूमा छे

१३८३ विशेषकवलित, विशेषित. { २त+२म+३ज+नग. १,६१,७९,१६८ }

प्रथम त गण बे आवे बे मा लोके जा पद थाय विशेषकवलिते.

१३८४ अभ्रभ्रमण. तन+मस+४न+ग. १,६७,७४,७१७

अभ्रभ्रमण विषे ता ना पर मा स कर चतुर न धर ग चरमे.

१३८५ क्रौंचपदा[१], क्रौंशपदा[२]. } भमस+भ+४न+ग १,६७,७६,३९१ ५,५,८,७यति.

क्रौंचपदामां, भा म स छे भा, युग न पर ग शर शर वसु हय छे.

१ छंदःशास्त्र, वृत्तरत्नाकर, शब्दकल्पद्रुम, छंदोलता अने छंदोमंजरीमां क्रौंचपदाना उपर प्रमाणे गण तथा यति छे.

२ क्रौंशपदा नामे वाग्वल्लभमा छे, तेमा उपर प्रमाणे गण अने यति छे. तेणे छंदोमंजरीनु अक्षरे अक्षर माप उतारी लीधु छे मात्र आरंभमां क्रौंच शब्द फेरवीने क्रौंश शब्द मूक्यो छे

पिंगळादर्शमा क्रौंचपदामा भमसभननननग एवुं माप अने ५,५,८,७ यति कही छे, पण छंदःशास्त्रमा "भ्मौ स्भौ नो नौ ग" इत्यादि सूत्र छे, तेमा त्रीजो गण स छे, त्या आगळ ननी भ्रान्ति थवाथी पिंगळादर्शमा भ्मौ न्भौ नौ नौ ग एम उतार्यु छे, तेथीज तेमा भूल थइ छे

१३८६ अलका, अलिका. ८न+ग. १,६७,७७,२१६

चरण चरण प्रति वसु[८] नगण पर चरम ग कर तुं अलका.

१३८७ मल्लपल्लीप्रकाश. ८य+ल. १,९१,७३,९६२

रचो मल्लपल्लीप्रकाशे वधा आठ या ने पछी ला धरी पादनी मांह.

आ वृत्त वाग्वल्लभमा छे भुजगप्रयातना बे चरणोमा एक लघु उमेरवाथी आ वृत्त थायछे

१३८८ सौदामनदाम ४स+नज+यस+ल. २,२९,२९,०८४

रच चार स ने न ज ने य स ने ल चरममां कर सौदामनदाम.

१३८९ अरविंदमुखी[१], अरविंद[२]. ८स+ल. २,३९,६७,४५२

१२,१३ यति.

अरविंदमुखी वसु[८] सा धरता, पर ला करतां रवि[१२] तेर विराम.

१ पिंगळादर्शमा आ नाम अने यति छे २ गणप्रस्तारप्रकाश

१३९० हरि. २स+भसत+३ज+ल. २,८७,५५,८६८

यति सात छये[६] ने, युग वसु[८] सा बे, ने भ स ता, त्रण जा पर ला हरि.

पिंगळादर्शमा ७, ५, ४, ८ यति छे, तेमा शत्रु अथवा रिपुनी सज्ञा ५ लखी छे ते भूल छे, षट् अरि केहेवायछे १ काम, २ क्रोध, ३ लोभ, ४ मोह, ५ मद, अने ६ मत्सर

१३९१ ललितलता[१], कळाकुशळ[२], विजय,[३] (विजै).

१२, १३ यति ८ज+ल. २,८७,६०,९४२

ललितलता वसु[८] जा पर अन्त, ल पाद विराम कळाकुशळे रवि[१२].

१ भगवत्पिंगळमा बने नाम छे, पण यति विषे कशु कह्यु नथी, अने तेणे उदाहरणमा कहिंक ११ अने काहिंक १२ वर्णे यति पाळी छे, ते अनियमित छे एटले १२, १३ यति पाळवी ठीक छे

२ पिंगळादर्शमा ए नाम आपी उपर प्रमाणे गण तथा यति केहेछे.

३ गणप्रस्तारप्रकाशमा विजयने बदले विजै एम अशुद्ध पाठ छे,

२६ उत्कृति छंद.

६,७१,०८,८६४ भेद छे. २६ वर्ण.

१३९२ जीमूतध्वान[1], गौरी[2]. ८म+२ग. १

जीमूतध्वाने छव्वीशे लांबा वर्णोना आठे मा बे गुरु गौरी अन्ते आवेछे.

१ वाग्वल्लभ. २ छंदोलता.

१३९३ तनुकिलकिंचित. ३म+नजन+तय+२ग. ३३,९९,१६९

आठे आशा आठे छेदो, छे तनुकिलकिंचित मम, माना जन ताया गागा.

वाग्वल्लभमा ८,१०,८ यति छे

१३९४ विनयविलास. ४नय+२ग. ३९,९४,९७६

विनयविलासे चरण विषे चार नय पछी बे गुरु चरमे आवेछे.

१३९५ विश्वविश्वास. म+३य+२र+२त+२ग. ९५,११,४९७
५,७,७,७ यति.

मा ने लोक या, बे र बे ता गुरु बे, विश्वविश्वास पांचे, सात साते विरामो.

१३९६ अशोकानोकह. मभ+नभ+नर+२त+२ग. ९५,३४,९६१

माभा छे नाभ पर नर छे द्वि त पर ग बे अशोकानोकहे पाद पादे.

१३९७ आभासमान. ४य+४त+२ग. ९५,८५,२२६

रचो चार या चार ता अन्त बे गा आभासमाने पदो चार एवां रसेथी.

१३९८ वीरविक्रांत. मनज+५त+२ग. ९५,८७,०६५

जोडो चार चरण वीरविक्रांत मांहे मना जा पछी पांच ता अन्त बे गा.

१३९९ झूलना[1], झूलणा. नस+यन+रभ+जत+२ग. ९९,०७,८०८
८,१९ यति.

न स पर यना करो, रा भ पर जा त ने बे ग वसु पंदरे झूलणामां.

१ मागधी पिंगळछंदोग्रंथ प्रमाणे.

१४०० अपवाह[1], अपवाहक. म+६न+स+२ग. १,०२,८८,९०१

मा छे ना छ पर सगण, पर द्वि ग यति, नव छ छ शर, अपवाहे छे.

१ वृत्तरत्नाकर तथा वाग्वल्लभमा ९,६,६,५ यति कही छे

१४०१ विकुण्ठकण्ठ ४ रज+२ग. १,११,८४,८११

थायछे विकुण्ठकंण्ठ मांह चार रा ज थाय अन्त पाद बे ग आणवाथी.

१४०२ चारुगति. २न+सम+नज+रन+२ग. १,१२,०२,८१६

द्वि न पर स म धरी ना जा थी चारुगति विषे रचाय रा ज अन्त बे गा.

१४०३ द्वितीयझूलणा. न+२स+२जभ+ज+२ग. १,२२,४९,८२४

न पर द्वि स बे ज भ ने ज छे द्वि गा रच द्वितीयझूलण जरूर सारा.

मात्रामेळ झूलणाना रागसा आ वृत्त बराबर बेसतु नथी, कारण के आवा गणथी बे मात्रा घटेछे, पण उपर अंक १३९९मे झूलणाना जे गण आप्या छे ते वधारे भरोसा पात्र छे एटले अमे आ माप यथोचित मानता नथी, तोपण मागधी पिंगळछंदोग्रंथमा आ प्रमाणे माप होता एने द्वितीयझूलणा एवु नाम आपी दाखल कर्यु छे

१४०४ प्रियजीवित. ८भ+२ग. १,४३,८०,८७१

छे प्रियजीवितमां वसु भा गण ते पर अंतविषे गुरु बे धरजोजी.

१४०५ रंजन. भनज+नस+२न+भ+२ग. १,४६,६३,९९१

७,७,७,५ यति.

रंजन मुनि हय, सात शर भ न ज, छे न स पर द्वि न, भा गण बे गा.

१४०६ भसलसलाका. { मभ+समन+यत+न+२ग. १,९७,९०,३२१ }

आठे आठे दश म भ, छे सा मा ना पर य त, ना छे बे गा भसलसलाका.

वाग्वल्लभमा आ नाम तथा ८,८,१० यति कही छे

१४०७ उज्झितकदन. भन+३ज+३न+२ग १,६७,६७,८७१

उज्झितकदन विषे भ न छे त्रण जा पर त्रण न पर चरम बे गा.

१४०८ कुहककुहर. २न+मय+२न+मय+लग. १,९१,३२,९९२

कुहककुहरमां बे ना तथा मा य पर द्विन पछी माया अने लाग छे.

१४०९ सूरसूचक. मसज+३स+२य+लग. १,९२,४८,९८९

मा सा जा पद सूरसूचक विषे त्रण सा पर बे य आणो लगा अन्तमां.

१४१० विषाणाश्रित. { यन+२भ+जत+सय+लग. १,९८,१९.६१०

विषाणाश्रितविषे यना छे र भ अने जता छे सय तथा लगा अन्तमां.

१४११ विनिद्रसिन्धुर. ४र+२ जर+लग. २,२३,६९.४२७

चार रा आणजो बे जरा जाणजो विनिद्रसिन्धुरे धरो लगा पदे पदे.

१४१२ शकुन्तकुन्तल[1]. { म+२र+२न+रजर+लग. २,२३,८०,१७७

मा ने बे रा न बे ने र जा, र पर लग नवे, हयें दशे शकुन्तकुन्तले.

[1] वाग्वल्लभमा आ नाम अने ६,७,१० यति छे

१४१३ भुजगेरित. मय+नत+२न+रस+लग. २,३८,५३,५१२

माया ने नता छे द्विन, र सा ने लग यति वसु हरे, हयें भुजगेरिते.

पिंगळादर्शमा ८,११,७ यति छे.

१४१४ भुजंगविजृंभित. ममत+३न+रस+लग. २,३८,९४,८४९.

आठे रुद्रे मा मा ता छे, त्रण न पर र स पर लगा, भुजंगविजृंभिते.

वृत्तरत्नाकर, प्राकृतपिंगळसूत्र, वाग्वल्लभ, अने शब्दकल्पद्रुममा ८, ११, ७ यति कही छे. पिंगळादर्शमा ८, १२, ६ यति कही छे, तथा छंद प्रभाकरमा यति कही नथी, ते उपर जणावेला प्रमाण ग्रंथोमां माप नहि जोयाथी चन्यु हशे.

कथा एवी छे के, गरुड, भुजग (नाग) पछवाडे पड्यो हतो, तेने भुजंगे पिंगळ समजाववा माड्यु अने आ वृत्त सुधी समजावतो अने प्रस्तार करतो चालता चालता समुद्रकिनारा सुधी आवी पोहोच्यो, पछी समुद्रमा प्रवेश करी गयो. ते उपरथी भुजग=नाग अने विजृम्भित= पलायन=भुजगनु नासी जवु, एवो अर्थ थायछे

१४१५ काकलीकलकोकिल. { रस+२ज+मर+सज+लग. २,८१,४२,४२७

काकलीकलकोकिले र सा ने द्वि जा पर मा र छे स ज अन्त ला ग करो.

१४१६ दीणार[1]. त+७ज+लग. २,८७,६०,९४१

दीणार विष गण ता पर मात ज ते पर अन्त ल गा चरणे धरजो.

१ आ वृत्त मारवाडी हरिजशपिंगळमा छे

१४१७ शृंखलवल्यित. { भ+२न+मम+नन+जलग. २९३,३०,९४३

शृंखलवल्यित पद भा पर बे ना छे भ म पर न न पछी ज ल गा.

१४१८ विरामवाटिका. { नज+रसन+जर+न+लग ३,२१,७५,७९२

चरण विरामवाटिका न ज छे र स न पछी ज रा अने नगण ल गा

१४१९ कर्णाटक तभ+२जम+२न+लग ३,३९,१२,८२१

कर्णाटके त भ रचाय बे ज म अणाय बे न पर ल ग चरम विषे.

१४२० अरिदमन, अरिदलन. } २य+त+२न+लग ३,३९,९४,११७

आठे आशा आठे बे भा, त पर शर न पर ल ग. पद अरिदमनमां.

आ वृत्त मागधी पिंगळछंदोग्रंथमा छे अने तेमा १६,१०,९ मात्राए एटले ८,१०,८ वर्णे यति आणवा केहेछे.

१४२१ कुंभक. २न+६र+गल ३,८२,४७,९६८

चरण चरण कुंभके बे न छे ने छ छे रा गणो ने पछी अन्तमां गा ल.

१४२२ कलधुनि. २सज+नस+२न+गल. ५,०१,९९,२७६

सज बे पछी नस पछी न बे कलधुनि पदमांह चरम गल थाय.

१४२३ वशम्वद[1], सुख[2], सामन[3], सावन[3], मागधी; सवैयो, अम्बुजं, कुन्दलता[4], किशोर[5], मालती[6].

१२,१४ यति. ८स+२ल. ९,७१,२१,८८४

रवि[१२]ये यति छे गण सा वसु[८] बे,–लघु अम्बुज, सुख, वशम्वद, सामन

१ आ नाम वाग्वल्लभमा छे, पण तेमा यति नथी १ ऐ नाम छंदःप्रभाकरमा छे तेमा यति नथी ३ ए बे नाम गणप्रस्तारप्रकाशमा छे. ४ भाषाछंदोमजरीमा छे ५ छंद शृगारमा किशोर नाम छे तेणे यति कही नथी, ए वृत्त पिंगळादर्शमा छंद शृगारमाथी लीधु छे परतु १२, १४ यति. बोलाय छे तेथी तेणे ते प्रमाणे यति आपी छे ६ छंदोर्णव

१४२४ विलास[1]. ८भ+२ल. ६,४७,१२,११९

वार मनु[१४] यति भा वसु[८] छे गण, ने लघु बे थको थाय विलास चरणे.

१ गौडपिंगळ तथा लखपतजशसिन्धुमां अन्ते बे गुरु कह्या छे, परतु तेम थवाथी तो १,४३,८०,८७१ मुं रूप अक १४०४ नु प्रियजिवित थायछे, जेथी ते योग्य नथी पिंगळादर्शमा १२, १४ यति छे.

वर्णदण्डक.

छव्वीश वर्ण उपरांतना सम चरणना पद्यने दंडक केहेछे. पण पिपीडिका आदि केटलांक छव्वीश अक्षर उपरांतनां पद्य छे तेनी गणना आमां थती नथी.

ओछामां ओछा २७ वर्ण अने घणामां घणा ९९९ वर्णनुं एक पाद थाय एटलो तेना एक चरणनो विस्तार छे; एवां चार समचरणनो एक दंडक थायछे. छंदःशास्त्रमा सूत्र छे के,

दंडको नौरः ७।३१।

२न+र आववाथी दंडक थाय छे. आ सूत्रनी वृत्तिमां हलायुधे २न उपर ७रगण आवे एम कह्युं छे, पण—

प्रथम श्चंडवृष्टिःप्रयातः ७।३२।

ए सूत्रमां पेहेलो दडक २७ वर्णनो चंडवृष्टिप्रयात थायछे, एम केहेछे, तो २न उपर इच्छा पूर्वक रगण आवे ते दंडक केहेवाय, एम मानवामां आव्युं छे ते उचित छे.

अन्यत्र रात माण्डव्याभ्याम् ।७।३३।

ए सूत्रमां एम केहेछे के, रात अने माण्डव्य ऋषियोए आ चंडवृष्टिप्रयातने अन्य स्थाने बीजुं नाम ठराव्यु छे, पण नारायणभट्ट केहेछे के ए ऋषियोए एनुं बीजुं नाम नथी ठराव्युं.

शेषः प्रचितः ।७।३४।

आ चंडवृष्टिप्रयात उपरात दंडकप्रस्तारपूर्वक रगण वधता जाय तेनी सामान्य संज्ञा प्रचित अथवा प्रचितक केहेवायछे. पछवाडे गयेला वर्णछंदोमां अकेको वर्ण वधतां २६ वर्ण सुधी छंद बनेछे, तेम अहि अकेको गण वधवाथी प्रचितक थायछे.

प्रचित अथवा प्रचितक एटले वृद्धि पामेलुं. अर्थात् अकेको रगण वृद्धि पामतो जायछे, माटे एनुं सामान्य नाम एवुं कल्प्युं छे. केटलाएकनो अभिप्राय एवो छे के, २न उपर अकेको रगण वधारवानुं कथन छे ते दंडकना चरणमां वधारो करवानुं सूचवेछे. अने वृत्तरत्नाकरनी अवधूरि टीकामां केहेछे के, ए प्रमाणे चरणमां रगणनो वधारो करवाथी जे दंडक थाय तेनां नाम अर्ण, अर्णव एवां छे ते नहि पण बीजां कल्पवां. जो आ प्रमाणे करवामां आवे तो नीचे दर्शावेला अर्ण दंडकना पेहेला चरणमां ८ र आवे तो बीजामां ९ आवे, त्रीजामां १० आवे, अने चोथामां ११ आवे एटले अर्णनी रचना नीचे प्रमाणे थायः—

प्रथम चरणमां २न+८र=३० वर्ण.

बीजा चरणमां २न+९र=३३ वर्ण.

त्रीजा चरणमां २न+१०र=३६ वर्ण.

चोथा चरणमां २न+११र=३९ वर्ण.

तेमज अर्णवमां नीचे प्रमाणे थायः—

प्रथम चरणमां २न+ ९र=३३ वर्ण.

बीजा चरणमा २न+१०र=३६ वर्ण.

त्रीजा चरणमां २न+११र=३९ वर्ण.

चोथा चरणमा २न+१२र=४२ वर्ण.

२७ वर्णना दंडक

१४२९ चंडवृष्टिप्रयात[1], चंडवृष्टिप्रपात[2], चंडवृष्टि[3], उद्दर्प[4]. } २न+७र=२७ वर्ण.

द्विन पर हय रागणो चंडवृष्टिप्रयाते धरो चार पादो विषे भावथी.

१ छंदःशास्त्र २ वृत्तरत्नाकर, प्राकृतपिंगलसूत्र. ३ छंदोवृत्तमुक्तावली. ४ मागधीपिंगळछंदोग्रंथ

चंडवृष्टिप्रयात उपरांत अकेको रगण वधारतां जे दंडको थायछे, ते वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा तथा छंदःशास्त्र आदिमा नीचे प्रमाणे जोवामा आवेछे. तेमां छंदोबोधमां मात्र अंक १थी ६सुधी नामछे. अने छंदोमंजरीमां अंक १थी ७सुधीछेः—

क्रम.	नाम.	लक्षण.	वर्ण.
१४७०	अर्ण, दंडकत्रिभंगी.	२न+ ८र=	३०
१४९७	अर्णव	२न+ ९र=	३३
१५०२	व्याल,† विशेषशालीन	२न+१०र=	३६
१५०५	जीमूत.	२न+११र=	३९
१५०९	लीलाकर	२न+१२र=	४२
१५१२	उद्दाम.	२न+१३र=	४५
१५१४	शंख.	२न+१४र=	४८
१५१७	आराम, अर्क[1], पद्मक[2], त्रिभ्रवाह.	२न+१५र=	५१
१५१८	संग्राम, चंद्र[1], तक्षक[2], पद्मराग, चंद्रेश, कालदंड.	२न+१६र=	५४

† छंदोवृत्तमुक्तावलीनी लिखित प्रतिमा व्याज नाम छे, ते भूल जणायछे

१ आ निशानवाळा नाम छंदोवृत्तमुक्तावलीमा छे

२ वृत्तरत्नाकरनी जनार्दननी टीकामा आ नाम छे

१५१९ सुराम, ईश, पौण्ड्रक, भोगीन्द्र. २न+१७र= ५७
१५२१ वैकुंठ, भोगी, उदारपाद..........२न+१८र= ६०
१५२२ सीतकंठ, इंद्र........ ... ...२न+१९र= ६३
१५२३ सार, पीयूष[1] .. ..२न+२०र= ६६
१५२४ कासार, वाराह[1] .... २न+२१र= ६९
१५२५ विस्तार, वात[1]. . . . २न+२२र= ७२
१५२६ संहार. .... २न+२३र= ७५
१५२७ नीहार................................२न+२४र= ७८
१५२९ मंदार ....२न+२५र= ८१
१५३० केदार ....२न+२६र= ८४
१५३१ साधार............... ....२न+२७र= ८७
१५३२ सत्कार...... ....२न+२८र= ९०
१५३३ संस्कार. ... . २न+२९र= ९३
१५३४ माकंद.................. ....२न+३०र= ९६
१५३५ गोविंद ....२न+३१र= ९९
१५३६ सानंद........ ....२न+३२र=१०२
१५३७ संदोह. ....२न+३३र=१०५
१५३८ नंद ....२न+३४र=१०८

उपर प्रमाणे प्रमाणग्रंथोमां २न कायम राखी ते उपर अकेको रगण वधारीने जूदा जूदा दंडक रचवानु केहवामां आवेछे, त्यारे मागधीपिंगळछंदोग्रंथमां एथी उलटुं ७ रगणमां अकेकानो घटाडो करीने नगणमां वधारो करवानुं केहेछे, २ न+७रनुं रूप जे उपर लखवामां आव्युं छे तेने ते उद्दर्प नाम आपेछे अने तेना भेद उपर जणावेला क्रमे नीचे प्रमाणे थायछे:—

१४२६ विद्याधर, विज्जाहर. ३न+६र=२७ वर्ण.

त्रण न गण पर षट् र गणो धारिने पादमा आण विद्याधरे दंडके.

१४२७ सज्जन. ४न+५र=२७ वर्ण.

चतुर नगण पर शर रगणो धरो पाद पादे तमे सज्जने दंडके.

१४२८ दु:खाकरो. ५न+४र=२७ वर्ण.

शर नगण पर चतुर रगण धरतां बनेछे खरो भेद दु:खाकरो.

१४२९ विरतिकल्प, विरयिकप्पो. ६न+३र=२७ वर्ण.

षट नगण उपर धर त्रण रगण विरतिकल्पमा पाद पादे खरे.

१४३० मकर, मतिकर. ७न+२र=२७ वर्ण.

हय नगण पर र धर प्रतिपद मकर-मतिकर दंडके पादमां.

१४३१ शुभंकर, सुहंकर. ८न+१र=२७ वर्ण.

वसु न गण पर र गण धरों कविवर! प्रतिचरण रच शुभंकरे.

उपर जणाव्या प्रमाणे मागधीपिंगळछंदोग्रंथमां नगण वधारी रगण घटाड्या छे, पण प्रमाणग्रंथोमां एम नथी. तेमा तो २नगण+७ रगणनो चंडवृष्टिप्रयात थायछे, तेना उपर अकेको रगण वधारतां ९९९ अक्षर सुधीनुं एक पाद करवाने बे नगण उपर ३३१ रगण सुधी वधारवानु केहेछे. ए हिसावे तेना ३२९ भेद थायछे, तेमांथी ३४ भेदनां नाम तो ग्रंथोमां प्रसिद्ध छे, ते उपर जणाववामां आव्यां. जनार्दन, सुखानद, आदि केहेछे के, आवा दंडकोनां नाम नीचे प्रमाणे कल्पवा—

कुमुद, तक्षक, अब्ज, मंजुल, वारिधि, तरंग, इत्यादि.

वाग्वल्लभमां केहेछे के, कविनी इच्छा प्रमाणे जेमां विराम बराबर सचवाय तेवा गणोथी अनेक दंडको थायछे अने ते घणा गणोथी गुंथायछे, माटे तेनां **गुच्छक, दाम, हास, प्रसून, मंजरी** अने **रुचिरा** एवा अर्थवाळां नाम कलपवा. वृत्तरत्नाकरनी अवचूरि-टीकामां केहेछे के, **गगन, समुद्र,** एवां नाम पण अपायछे.

छंद:शास्त्रनो उपर अभिप्राय लखवामां आव्यो तेमां २ **न-गण** उपर ७ **रगण** आवे तेज **दंडक** केहेवाय अने **रगणनो** वधारो करवाथी जे दंडक थाय ते **प्रचित** केहेवाय, एम ठरेछे; पण बीजा ग्रंथो जोतां तथा कविना प्रयोगोनुं अवलोकन करतां **रगण** सिवायना गणो जोडवाथी पण दंडक बनेला जणायछे. गंगादास अने केदारभट्टे २ नगण उपर ७ यगणनो **प्रचितक** कह्यो छे अने बीजा ग्रंथोमां पण तेमज जोवामां आवेछे.

छंद:शास्त्रना टिप्पणमां, छंद:पारिजात उपरथी लखेछे के; छवीश अक्षर सुधी एकेक वर्ण वधतां जे छंद थया ते बताववामां आव्या, हवे ते उपरांत अकेक गण के वर्ण वधवाथी **दंडक** अने **प्रचितक** केहेवायछे; एटले **नगण** साथे **रगणनो** प्रयोग करतां जे बने ते **दंडक** अने बीजा गणनी रचनावाळाने **प्रचितक** केहेछे. **नगण** साथे **य, त, र** तथा **भ, स, ज** ना परस्परना प्रयोगथी, अथवा ते गणोना मांहोमांहेना संमिलनथी, तेमज केवळ **सगण** अने **भगणना** योगथी, **प्रचितकना** करोडो भेद थइ शकेछे, ते केवळ **शेषज** जाणी शकेछे.

छंद:शास्त्रनी टीकामां छंद:पारिजातनुं वचन छे के:—

विहाय भगणं शुद्धं गणैरन्यैरशेषतः षड्विंशादधि
कैर्वर्णैर्दृश्यन्ते प्रचितानि च.

मगण वर्ज्य करतां बाकीना बधा गणोना समिलनथी २६ वर्ण उपरांतना प्रचितको जोवामां आवेछे.

उपर प्रमाणे मगणने वर्ज करवा केहेछे पण अक १४३४ नो उद्दाल ९ मगणनो थायछे, तेथी उपरना वचन उपर आधार राखवो उचित जणातो नथी.

उपर जणाव्या प्रमाणे रगणघटित दंडक ३२९ सुधी बनी शकेछे, अने एज प्रमाणे यगणघटित प्रचितक पण बनेछे. तेमज बीजा गणोनी योजनाथी पण बनेछे. छंद शास्त्रमां बे नगण उपर ७ रगणवाळाने दंडक मान्यो छे, अने सात उपरातना रगणवाळाने प्रचितक मान्यो छे. अने तेनुं सूत्र नीचे जणाव्युं छे—

शेषः प्रचितः इत.

एमां शेषनो अर्थ, सात रगण उपरात अकेक रगण वधवाथी जे दंडको थायछे ते प्रचित केहेवायछे, एम हलायुधे कर्यो छे; पण वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टनी बनावेली टीकामा केहेछे के, यगण आदि प्रयोगथी रचेला दंडको कविओए बनाव्या छे माटे, शेषः एटले रगणवाळा दंडक सिवायना यगणोथी रचायला दंडकोने पण प्रचित केहेवा.

१४३२ प्रचितक[1], सिंहविक्रान्त[2]. २न+७य=२७वर्ण.

प्रचितक पद पदे बे न छे ने य छे सात पूरा रचो ए प्रकारे प्रवीणो!

१ वाग्वल्लभ अने छंदोवृत्तमुक्तावलीमा प्रचितकनुं माप आ प्रमाणे छे.

२ छंदोवृत्तमुक्तावलीमा सिंहविक्रान्त नाम आपी तेमा २न+९य लाववा कही उदाहरणमा ९य आप्या छे, ते उपरथी जणायछे के, य यथेच्छ आणवा. पण छंदोमजरीनुं परिशिष्ट तथा वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टीमां केहेछे के—

॥ नयुगलगुरुयुगेवं यकाराः कवीच्छानुगेयास्तदा यत्र-बध्यन्त एषोऽपरो दण्डकः पण्डितैरीरितः सिंहविक्रांतनामा॥ २न+इच्छापूर्वक य एवा मापना दंडकने सिंहविक्रान्त केहेछे. छंदोमंजरीना उदाहरणमां १३ य मूक्या छे.

जेम चंडवृष्टिप्रयातमां २न+७र आवेछे अने ते उपरांत एकेको रगण वधवाथी जूदा जूदा दंडक थायछे तेम, २न+७य उपरांत अकेको यगणनो चडावो करतां ९९९ वर्ण सुधीनुं पद थतां ३३१ य आवे अने तेना ३२९ भेद थाय तेनां नाम प्रथम सूचव्या प्रमाणे पडी शकेछे.

चंडवेगदंडक २न+य (यथेच्छनो) थायछे, एम, छंदोवृत्तमुक्तावलीमां केहेछे पण छंदोलतामां तेनुं माप २न+८य+२न आप्युं छे; माटे अमे ते अहिं दाखल कर्या नथी.

मुक्तकदंडक.

गणना नियमथी मुक्त एटले जेने गणना नियम लागु पडता नथी, पण इच्छापूर्वक वर्णनी रचना करवामां आवेछे ते मुक्तकदंडक केहेवायछे.

१४३३ मुनीन्द्र. लघु गुरुनो नियम नहि. २७ वर्ण.
मुनीन्द्रमांहे लघु गुरु केरो निम न आवे पण सत्ताविश अक्षर लावे.

मनहरपिंगळमा छे.

बीजा मुक्तक वर्णसख्याना क्रमे आगळ जोवाना आवशे.

मयरसतजभनगलथी थता दंडक.

उपर प्रमाणे आठ गण तथा गुरु अने लघु एवा प्रत्येकना सत्तावीश अक्षरना प्रारभथी प्रतिचरणमा ९९९ वर्ण आवे त्या सुधी दंडक बनेछे तेमां केटलाक तो वर्ण वधता जाय तोपण एकनुं एक ज नाम राखेछे, परतु २७

वर्णनु थड बनावी ते उपरांत तेनी शाखाओ भेद रूपे थाय, ते ओळखवाने जूदा नाम पाडवा उचित छे

१४३४ उद्दाल, उद्दालक. ९म=२७ वर्ण.

उद्दाले आवेछे पादे पादे सत्तावीशे
गुरु केरा मा सौ खंडे पोहोंची जाना.

१४३५ सिंहविक्रीड. ९य= २७ वर्ण.

गणो या बधा खंड तो थायछे सिंहविक्रीडना
पादमां वर्ण सत्ताविशना.

१४३६ मत्तमातंगखेलित, मत्तमातंगलीलाकर. } ९र=२७ वर्ण.

मत्तमातंगलीलाकरे लावजो खंड रा
छंद ओळा अने तो गमे एटला.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकाना परिशिष्ट भागमा तथा छंदोलतामा इच्छा प्रमाणे रगण करवाथी आ दडक थायछे, एम लक्षण बांधी, उदाहरणमा १३ रगण आण्या छे (महाकवि कालिदासकृत श्यामलादडकना टिप्पणमा बे नगण+यथेच्छ रगणथी आ दडक बनवानु लख्यु छे) छंदोर्णवमा १४ रगण सुधी, वाणीभूषणमा ११ रगण सुधी, अने प्राकृत पिंगळसूत्रमा १० के ११ रगण लाववा कह्यु छे छंद प्रभाकरे ९रनु माप बतावी तेवुज उदाहरण आपी, नोटमा जणाव्युछे के, जेमा ९थी अधिक रगण होय ते पण आनाज भेदमा गणायछे वाग्वल्लभमा ९र अने छंदोमजरीमा यथेच्छ र लाववा कह्युछे, पण ए बने ग्रंथोमा उदाहरण ९ रना छे, एटले नव करता वधारे इच्छापूर्वक रगण आणवानु प्रमाणग्रंथोपरथी नीकळेछे एना भेदमाथी नीचेना बे मळी आव्या छे –

१५०६ सारंग ...... १३ र=३९ वर्ण.
१५२१ रुद्रसारंग ...... १५ र=४५ वर्ण.

१४३७ कुसुमस्तबक[1], कुसुमास्तरण. ९स=२७ वर्ण

नव सा गण शोभित तो सजजो कुसुमस्तबके प्रतिपाद विषे समजो.

१ छंदोबोध तथा वाग्वल्लभ छंद प्रभाकरमां स यथेच्छ अने छंदोवृत्तमुक्तावलीमा १२ सनु उदाहरण छे

१४३८ दाम. ९त=२७ वर्ण.

छे ता गणो खंड सर्वे मळी पादपादे बधा दाममां वर्ण सत्ताविशे थाय.

उदाहरण १२ तगणनु छे.

१४३९ वितान. ९ज=२७ वर्ण.

वितान विषे जगणो नव थाय पदेपदमां कुल वीश अने हय वर्ण.

उदाहरण १२ जगणनु छे.

१४४० वर्त्तुल. ९भ=२७ वर्ण.

वर्त्तुल दंडकमांह् पदेपद छे नव भा गणना विश ने हय अक्षर.

उदाहरण १२ भ गणनु छे.

१४४१ अचल. ९न=२७ वर्ण.

नव तुँ न गण धर् चरण चरण पर विश हय कुल कर् अचल.

उपर प्रमाणे म य र स त ज भ न ए गणना दंडक थइ रह्या बाकी ग ल ना रह्या ते जुवो अंक १४४६ तथा १४४७

१४४२ सुधाधार. ४भ+३त+२भ=२७ वर्ण.

चार भ उपर छे त्रण ता गण तेनी परे तुं सुधाधारमांह् भ बे कर.

१४४३ दिनकर. १भ+८न=२७ वर्ण.

एक भ गण पर वसु तुँ न गणे धर् दिनकर चरण चरण रच्.

१४४४ सौममाला. ४जर+ज=२७ वर्ण. तेमां ९,८ यति.

जराजराजराजराज, सौममालमां विराम, तो नवेज आठ वर्ण धार्.

२८ वर्णना दंडक

१४८९. मकरालय. न+ग+र एम सात वर्णनो न ग र गण चार वार आवे.=२८ वर्ण.

न ग रनां झूमखां वरण सौ सातनां चरणमां चार छे मकरना आलये.

न ग रना झूमखा चारथी आरंभीने १९९ वर्ण थाय त्यांसुधीनी हदमां जेटला आवी शके तेटला आना भेद थायछे आ उपरांत छंदोवृत्तमुक्तावलीना अभिप्राय प्रमाणे न ग र झूमखामां न ग उपर अनुक्रमे अकेक र गण वधारवाथी इच्छापूर्वक दंडको बनेछे. एनी रचनामां काइक चमत्कार होय एम होवुं जोइये एना नीचे प्रमाणे भेद प्रसिद्ध छे:—

क्रम.	नाम.	माप.	वर्ण.
१४९१	पन्नगेन्द्र.	न+१ग+ ८र	=२८
१४७८	दंभोली.	न+१ग+ ९र	=३१
१४९९	हेलावली.	न+१ग+१०र	=३४
१५०३	मालती.	न+१ग+११र	=३७
१५०८	केली.	न+१ग+१२र	=४०
१५१०	कंकेली.	न+१ग+१३र	=४३
१५१३	लीला	न+१ग+१४र	=४६
१५१६	विलास.	न+१ग+१५र	=४९ इत्यादि.

उपरनुं विवेचन नीचे प्रमाणे छंदोवृत्तमुक्तावलीमां कर्युं छे —

नगणतश्चेद्गुरुस्तस्य पश्चाद्यदाष्टौ तु रेफास्तदा पन्नगेन्द्रः कृतः पन्नगैः (न+ग+८र)

प्रतिपदं पन्नगेन्द्रात्पुनारेफवृद्ध्या तु दंभोलिहेलावलीमालती केलिकंकोलिलीलाविलासादयः (न+ग+११र)

छंदोलतामां आ विषे नीचे प्रमाणे लखेछे:—

जलधिलघोर्भवेद्रफकैरष्टभिः पन्नगेन्द्राभिधो दंडकश्चाथ

वृद्धिं क्रमाद्दंडकं प्रत्युपैतीह पादे यदेकादिरेफेण चांभोलि
हेलीधूलीमातलीकेलिलीलाविलासादयः (न+ल+र०१)

नगणने एक लघु उपर आठ रगण लाववाथी पन्नगेन्द्र दंडक थायछे अने त्यार पछी अकेको रगण वधारवाथी अंभोली(१४७९), हेली (१५००), धूली (१५०४), मातली (१५०७), केलि (१५०८), लील्य(१५२३), विलास(१५१६) आदि दडक थायछे.

आ बंने ग्रंथोना जूदाजूदा कथनथी भ्राति थाय एवुं छे, केमके छंदोवृत्तमुक्तावलीमां न+ग+८र अने छंदोलतामां न+ल+८र ना प्रारंभथी भेद बनावेछे अने तेनां नाममां पण अवळसवळ फेर-फार थइ गयो छे, परंतु मकरालयना झूमखामां न+ग+र आवेछे तेथी छंदोवृत्तमुक्तावलीनो अभिप्राय, बीजां सबळ प्रमाणने अभावे अमे मान्य राख्यो छे.

१४४६ चंद्र. २८ गुरु वर्ण.

चंद्रे आवेछे अट्ठावीशे वर्णो पादे नेपादे पूरेपूरा ओछो आवेछे उद्दाले.

अट्ठावीश करता एक वर्ण ओछो राखिये तो उद्दाल (१४३४) थइ जाय माटे आ दडकनो प्रारंभ अट्ठाविश अक्षरथी करवो उचित छे.

१४४७ ललित. २८ लघु वर्ण.

ललित चरण पर लघु तुँ वरण कुल विश पर वसु धर कविवर!

जो सत्ताविश अक्षरथी प्रारंभिये तो अचलदडक थइ जायछे, जुओ अंक १४४१

आठ गण अने लघु गुरुना मिश्रणथी थता दंडक.

१४४८ अनंगशेखर, महीधर[1]. १४ लग=२८ वर्ण.

अनंगशेखरे रचाय चौद लाग सामटा
बधा गणाय वर्ण वीश आठ तो.

[1] महीधर नाम छंद प्रदीप अने छंद प्रभाकरमा १४ लगनुं जणाव्युं छे.

लघुगुरुना क्रमे २८ अक्षरनो आ दंडक छंदोवृत-मुक्तावलीमा छे. आमां प्रत्येक पादमां इच्छापूर्वक लघु गुरु आणवा, एम प्रमाणग्रंथोनो अभिप्राय छे. प्राकृतपिंगळसूत्रमां यथेच्छ लघु गुरु लाववा केहेछे, पण तेनो वृत्तिकार लक्ष्मीनाथ भट्ट विशेपमां एम विस्तार आपेछे के, ल ग ना क्रमथी एटले यथेच्छ. जगण रगणना क्रमे छेवट जगण लावी ते उपर अन्तमा एक लघु आणी २८ वर्ण अथवा तेथी वधारे १० के ११ गण उपर एक लघु आवे एम रचना करवी. पण आ कथन उचित नथी, केमके आ दंडकमा ल ग नो क्रम इच्छापूर्वक आणवानो प्रमाणग्रंथोनो अभिप्राय छे, तेमज मूळ सूत्र छे—

"लघुगुरुर्निजेच्छया यदा निवेश्यते तदैष दण्डको भवत्यनङ्गशेखरः २०९." आ प्रमाणे छे तेमां पण वृत्तिकारे जणावेलो अभिप्राय आवतो नथी माटे ते ग्राह्य नथी.

वाग्वल्लभमां इच्छापूर्वक ल ग लाववा केहेछे, अने गोठती आवे एवी यति आणवी एम जणावेछे, पण लक्षण बाधतां जे रचना करी छे तेमां ल ग नो क्रम साचव्यो नथी अने वर्ण २७ आण्या छे, ते पण तेनीज उक्तिथी तथा प्रमाणग्रंथोथी विरुद्ध पडतुं छे.

छंदःशास्त्रनी टीकामां छंदोमंजरी उपरथी प्रतिपादमां अक्षर अठ्ठावीश आण्या छे, अने लघु गुरुनो क्रम साचव्यो छे, छंदोमंजरीमा यथेच्छ ल ग लाववा केहेछे. उदाहरणमां २८ वर्ण छे. गणप्रस्तारप्रकाशमा ल ग ना क्रमथी ३२ वर्णना दंडकनुं आ नाम आप्युं छे, पण तेनां बीजां नाम द्विनाराचिका, महानाराच, एवां छे ते आना भेद छे. बीजा भेद ९९९ वर्णनी हद सुधी बनी शकेछे.

१४४९ अशोकपुष्पमंजरी. १४गल=२८ वर्ण.

चौद वार गा ल वीश आठ वर्ण छे अशोकपुष्पमंजरी पदे पदे सदाय.

१४ गलना प्रारंभथी बेकीना ९९९ अक्षर सुधी आना भेद थायछे. १६ गलनो सुधानिधि (अं. १४९४) आनो भेद छे.

वाग्वल्लभमां र ज ना क्रमे २७ वर्ण आण्या छे, तेमज छंदः-कामदुघावत्समां २७ अक्षर राखी छेल्लो लघु मूकी दीधो छे. ए विरुद्ध पडतुं छे. छंदःप्रभाकरमां यथेच्छ गुरु लघु लाववानुं केहेछे. प्राकृतपिंगळसूत्रमां गुरु लघुना क्रमे अर्थात् रगण जगणना क्रमे नव गण अने तेमां नवमा रगण उपर अंते एक लघु एम अठ्ठावीश वर्ण लाववानुं केहेछे. ने एज प्रमाणे छंदःशास्त्रनी टीकामां गुरु-लघुने क्रमे अठ्ठावीश अक्षर आणी तेमां छेल्लो लघु आण्यो छे. अनंगशेखर आथी उलटुं छे. जुवो अंक १४४८ मे.

१४५० माला. (छंदोलता) २न+७म+ग=२८ वर्ण.

> द्वि नगण पर साते मा ते पूठे गा अन्ते
> आणो सर्वे वर्णो अठ्ठावी' मालामांहे.

१४५१ पन्नगेन्द्र. न+ग+८र=२८ वर्ण.

> नगण ने गा पछी आठ छे रा गणो
> शोभता पन्नगेन्द्रे बधा वर्ण अठ्ठाविशे.

छंदोलतामां ४लघु+८र=२८ वर्ण लाववा केहेछे, पण अंक १४३३ मे मकरालय छे तेनो आ भेद छे, ते जाणवामां नहि होवाथी छंदोलताना कर्त्ताए भूल करेली जणायछे.

१४५२ शकायतन. (वाग्वल्लभ). ९भ+१ग=२८ वर्ण.

> पाद विषे वसु भा गण आण
> शकायतने पछी एक गुरु धर छेवट तो.

१४५३ लावण्यलीलाप्लुत, उद्दाल. १न+८य+ल=२८ वर्ण.

> नगण परे आठ या ने ल अन्ते धरो
> आप लावण्यलीलाप्लुते प्राङ्मा ठीक.

१४५४ आलानिक. (वाग्वल्लभ) ननर+६य+ल=२८ वर्ण.

ननर पर य छो ल अन्त आलानिके

आणजो पादमां सर्व अट्ठाविशे वर्ण.

१४५५ रंगियो, वर्णरंगी. लघु गुरुनो नियम नथी, अंते ल ग.

९, ७, ७, ५ यति.

नव साते साते ने पांचे, एम यतिना वर्ण, अंते गुरु ने लघु, रंगिया विषे.

१४५६ भगवता. (ग. प्र. प्र.) भजस+नभ+जभ+मय+ल.

भा ज स परे न भ करे ज भ धरे

भगवता विषे म य पूठे अन्त ला पाद.

१४५७ अश्वधाटी. तभय+जसर+नतभ+लग. =२९ वर्ण.

ता भा य छे, गण ज सा रा पछी, न त भ छे

अश्वधाटी पदमांहे लघु गुरु वळी.

१४५८ वसुधाधर. (छंदःप्रदीप) ९स+२ल=२९ वर्ण.

स स सा स स सा स स सा धरिने लघु बे

वसुधाधर दंडक माह सदा कर,

१४५९ सौभाग्य. भज+ततत+सयय+नगल=२९ वर्ण.

भा ज पर छ त ता ता गणो सा य या छे न ग ल

पाद सौभाग्य माहे सुकविराय!

गणप्रस्तारप्रकाश

१४६० वर्णक दंडक. २न+७य+लग=२९ वर्ण.

द्वि न गण पर करो या बधा सात तो

वर्णके दंडके पादमां अन्त ला गा धरी.

भाषाछंदोमंजरीमा.

१४६१ शालुर, सालु, सालुर. त+८न+लग=२९ वर्ण.
८,८,१३ यति.

८
ता शालुर पर वसु, नगण चरम लग,
८ ८ १३
विरति वसु वसु जख पर धरो.

१ "ब्रह्माए ए छंद सरस्वतीने कह्यो, अने सरस्वतीना मुखथी शेषनागे सांभळ्यो; तेणे गरुडने कह्यो" एम लखपतजशसिंधुमा लखेछे

२ गणप्रस्तारप्रकाश.

मागधी पिंगळछंदोग्रथमा प्रारंभमा बे गुरु+८नगण+१सगण लाववा कह्यु छे ते माप उपर प्रमाणेज थायछे, पण तेमा पाठांतरे सगणने बदले रगण आवे एम कह्यु छे.

१४६२ स्मारमालाकुल. (वागवल्लभ.) स+८य+लग=२९ वर्ण.

८
स पछी वसु या पछी ला ग तो पाद पादे
रचीने तमे स्मारमालाकुले आणजो.

कामबाण.

कामना बाण पुष्पनां बनेलां कल्प्यांमां आव्यां छे अने तेनी संख्या पांच छे ते पुष्पनां नाम नीचे प्रमाणे छे:—

१अरविंद, २अशोक, ३आम्र, ४नवमल्लिका, ५नीलोत्पल.

ए प्रमाणे कामबाण पांच होतां आ दंडक कविए पांच प्रकारना कल्पेलो होवा जोइये; पण छंदोवृत्तमुक्तावलीमां लखेछे के,—

स्यात्कामबाणाभिधो दंडको ऽयं यथेच्छं निबद्धैस्तसज्यैर्गुरुभ्यां च चित्ताभिहारी.

कामबाण नामनो दंडक त स ज य ए चार यथेच्छ गण उपर अनुक्रमे बे गुरु लाववाथी चित्तने हरण करे एवो थायछे. वळी आगळ जतां आ ग्रंथकारे भुजंगविलास नामनो दंडक लख्यो छे तेनुं माप एवुं आप्युं छे के,—

यत्र यथारुचि भा विलसन्ति गुरू च स एष भुजंगविलासः

यथारुचि भगण उपर बे गुरु आणवाथी भुजंगविलास थायछे.

आ उपरथी जणायछे के, पांच प्रकारना कामबाण छे तेने अनुसरता त स ज य अने भ एवा पांच गण यथेच्छ लावीने उपर अनुक्रमे बे गुरु आणतां पांच प्रकारना कामबाण दंडक थायछे. यथेच्छ एटले आ दंडकना ओछामां ओछा २९ (९ गणना २७+२ग=२९) वर्ण थाय, त्यांथी प्रारंभ करीने ते ९९९ वर्ण थता सुधी जेटला करवा होय तेटला भेद प्रत्येक कामबाणना थइ शकेछे. आ कामबाण दंडक एक बीजाथी ओळखावा माटे जेमां जे गणनुं प्राधान्य छे ते गणनो अक्षर प्रारंभमा मूक्यो छे. वळी वधारे स्पष्ट थवामाटे जे जे पुष्पनां पांच बाण बन्यां छे ते ते पुष्पनुं नाम अनुक्रमे तेनी साथे मूकीने ते पुष्पना नामथी पण ते दण्डक ओळखाय एम क्रम गोठव्यो छे, ते रीते नीचे प्रमाणे दंडको बनेछेः—

१४६३ त कामबाण, अरविंद. (पद्म.) ९त+२ग=२९ वर्ण.

ताकामबाणे धरो ता गणो खड ने ते
पछी तो करो बे गुरु अन्तमा पद्ममाहे.

प्रत्येक दंडकमां २७ वर्णथी ओछा अक्षर लाववा न जोइये, एटला माटे अमे ९ तगणना २७ अक्षर उपर बे गुरु मूकी २९ वर्ण कर्या छे. एना भेद वधारवा होय तो १०, ११, १२ इत्यादि अकेको तगण वधारवाथी ९९९ अक्षर सुधीमां इच्छापूर्वक दंडक थइ शकेछे.

१४६४ स कामबाण, अशोक. ९स+२ग=२९ वर्ण.

कवि! तुं नव सा गण आण पछी गुरु बे
धर पाद अशोक सकामतणा बाणे.

१४६५ ज कामबाण, आम्र. ९ज+२ग=२९ वर्ण.

धरो ज गणो नव ने पर बे गुरु तो
धरजो पद आम्र सदाय जकामबाणे.

१४६६ य कामबाण, नवमल्लिका. ९य+२ग=२९ वर्ण.

धरो खंड या ने पछी बे गुरु अन्त आणो
तमे मल्लिका मांय याकामबाणे पादे.

१४६७ भ कामबाण, भास्मरबाण, नीलोत्पल, भुजंगविलास.
९भ+२ग= २९ वर्ण.

छे नव भागणनी पर बे गुरु अन्त
नीलोत्पलमां चरणे कवि! भास्मरबाणे.

१४६८ मानदकर्षा.[1] नतस+नभनस+रन+गग=२९ वर्ण.

नतस छे नाभनस, रान धर पाद पर,
चरम पछी गाग मानदजकर्षा.

आनी मात्रा ३७ छे एटले झूलणा (प्रभात) रागमां गवायछे. आना प्रत्येक पादना पूर्वार्द्धमां ८+८=१६ वर्ण अने उत्तरार्द्धमां ७+६ अगर ८+५=१३ वर्ण आणवाथी लय ठीक सचवाशे.

१ छंदमालिका प्रमाणे.

१४६९ भवनिधि[1]. भजसन+नततसय=२७ वर्ण.

भाजसन छे नतत, साय भवनिधि विषे
पादमांहे ज कवि तो वदेछे.

झूलणा (प्रभात) ना रागमां गवायछे. कारण आनी मात्र ३७ छे. आना प्रत्येक पादना पूर्वार्द्धमा ८+८=१६ वर्ण अ[ने] उत्तरार्द्धमां ५+६=११ अथवा ७+४ मळी अगियार के ते[थी] उलटा कडका मूकीने ११ वर्ण आणवाथी लय ठीक सचवाशे.

१ छंदमालिका प्रमाणे (आ दृढक आटलु छपाया बाद मळी आवत[ां] अहिं दाखल कर्यो छे, ते २७ ना पेटामां गणवो.)

१४७० वीजकर्पा, विद्युत्कर्पा.[1] भ ज+तन+सनन+स+र+ग =२८ वर्ण

भाज पर तान, सानान पर सगण छे
रगण पर चरम गा वीजकर्पा.

आनी पण मात्रा ३७ छे, एटले झूलणा (प्रभात) रागमां गवाय-छे. आना प्रत्येक पादना पूर्वार्द्धमां छ नव, नव छ, सात आठ, के आठ सातना कडकाथी १५ वर्ण अने उत्तरार्द्धमां ९+४=१३ वर्ण आणवाथी लय ठीक सचवाशे.

१ छंदमालिका प्रमाणे. (आ दंडक आटलुं छपाया बाद मळी आवतां अहि दाखल कर्यो छे ते २९ वर्णना पेटामा गणवो.)

३० वर्णना दंडक.

१४७१ शोभनमणि.[1] ५न+र+नतभ+य=३०वर्ण.

शर[5] न पर रगण धर, नतभ गण ते पछी
यगण पादान्त, शोभनमणीमां.

आ दंडकनी पण मात्रा ३७ थायछे, एटले ते झूलणा (प्रभात) रागमां गवायछे. एना प्रत्येक पादना पूर्वार्द्धमां १०+८=१८ वर्ण, अने उत्तरार्द्धमां ६+६=१२ अथवा ५+७ अने तेथी उलटा एम १२ वर्ण मूकवाथी लय ठीक सचवाशे.

१ छंदमालिका प्रमाणे.

१४७२ नीलचक्र. ५ रज=३० वर्ण.

रा ज पांच थायछे वधाय पाद पादमां
सदाय नीलचक्रमांह वर्ण त्रीश भाइ!

१४७३ खंज. ९ नगण+र=३० वर्ण.

नव नगण कविवर! कर तरत पछी.
उपर धर रगण चरण खंजमां.

१४७४ अर्ण,दंडकत्रिभंगी. २ न+८र=३० वर्ण.

नन पर-वसु रागणो भावथी आणजो
अर्णना पादमां जेथकी त्रीश वर्णो बने.

१४७५ सिंहविक्रीड मोटो. (१४३५) १० य=३० वर्ण.

नव अथवा इच्छानुसार यगण मूकवाथी पण आनाज उपभेद थायछे

रचो सिंहविक्रीडमोटो तमे पाद पादे
य आशा गणी सामटा जेम शोभे रुडेरा.

१४७६ आर्द्रस्तबक. (न,य,न,य,न,य,न,य,न,य.) =३० वर्ण.

शरै नय आणी प्रतिपदमां तो झट
रचजे तुं मन धरी आर्द्रस्तबक क्रमेथी.

१४७७ बाललीलातुर. गमे ते क्रमे १० गण=३० वर्ण.

बाललीलातुर नामे दंडक रचवा काजे
आवे एवा वर्ण त्रीश रुडा धरजो जी.

वाग्वल्लभमां भ,र,न,न,र,न,ज,न,र,र, गण आण्या छे.

१४७८ भाधर.[1] न न स भ+न न+त र त+य=३० वर्ण.

न न स भ पर न न, आणो त र त चरण,
कवि! अन्ते य जो करो, तो भाधर जाणो.

1 गणप्रस्तारप्रकाश प्रमाणे.

१४७९ त्रीसुं कवित* { १६, १४ यति / गुरु लघुनो नियम नहि. } ३० वर्ण.

कुल त्रीश वर्ण पाद यति सोळ चौद धार,
त्रीसुं एम कवित तो चार पादकेरुं.

* व्रजभाषामा ३०, ३१, ३२ अने ३३ वर्णना कवित थायछे, ते विषे अमे विशेष वर्णन कवित प्रकरणमां हवे पछी जणावीशु, परंतु अत्रे एटलुं जणाववानी आवश्यकता छे के, त्रीश वर्णना कवितमां बधा नियम ३१ वर्णना

कवित प्रमाणेज पाळवामां आवेछे, मात्र छेल्ली यति १५ ने बदले चौदनी थायछे, अने तेमां अंते गुरु राखवामा आवेछे. घनाक्षरी नियम रत्नाकरना कर्त्ता ३० वर्णना कवितनुं नीचे प्रमाणे उदाहरण आपेछे.—

"जै जै ब्रज दुल्ह दुलारे जसुदाके सुत,
महाराज मोहन मदन मदहारी;
आनँद अखंड रासमंडल विलास सुव,—
भंडलके आखंडल देव हितकारी;
वंसीधर श्रीधर गुपाल बनमालधर,
राधावर गोपवर गिरवरधारी;
वृन्दावनचंद नंदनंदन गोविंदश्याम,
सुंदर कुंवर कुंज-मंदिर विहारी."

३१ वर्णना दंडक.

१४८० कळाधर. (काव्यसुधाकर) ५ रज+ग. =३१ वर्ण.

राज पांच वार थाय अन्त गा कळाधरे
सदा धरो सुदंडके भले प्रकार भावथी.

१४८१ मनहर. १६,१५ यति. १० म+ग=३१ वर्ण.

सोळे ने तिथिये आवे विश्रामो त्रे पूरे पादे,
एकत्रीशे गुरु वर्णो सर्वे तेमां आवेछे.

कवित अथवा घनाक्षरीने घणे भागे केटलाक मनहर केहेछे. तेनु माप जुओ अंक १४८६ मा.

१४८२ मनहर(बीजो.) त ज+स ज+भ ज र स+भ+त+ग=३१वर्ण.

ताजा सज छे मनहरे बीजे पछी भजर
ते पछी सभा पर ता ते पर गा अन्तमां.

आ दंडक गणप्रस्तारप्रकाशमां छे

१४८३ दंभोलि. न+ग+९र=३१ वर्ण.

नगण ने एक गुरु धरी ते पछी खंड[५] आणो
तमे रागणो त्रीश ने एक दंभोलिमां.

जुवो अंक-१४३३ नी टीप. छंदोलता प्रमाणे एनुं नाम अंभोलि छे अने तेनुं माप तेना जणाव्या प्रमाणे नीचे मुजब थायछे:—

१४८४ अंभोलि. न+ल+९र=३१ वर्ण.

नगण धरी ल लावो तमे खंड[९] रा ते पछी
पाद अंभोलि मध्ये करो वर्ण एकत्रीशे.

दंभोलि एटले इन्द्रनु वज्र पण अंभोलिनो प्रसिद्ध अर्थ जाणवामां नथी, कदापि अंभस्+आलि=अंभोलि एटले पाणी उपर फरनारो भ्रमर एम अर्थ थइ शके.

आ प्रमाणे होतां पण अंभोलि नाम अने तेनुं माप दंभोलिथी भिन्न छे एटले असे एने जूदो दाखल कर्यो छे.

१४८५ मुक्तामणि.[1] भमर+तरज+सय+मज+ग=२१ वर्ण.

भा म र साथे ता रा ज छे मुक्तामणि विषे
सया पर मजा पछी अन्ते गा थाय पादमां.

१ छंदमालिका प्रमाणे.

१४८६ घनाक्षरी. } लघु गुरुनो नियम नथी, अन्ते ग=३१ वर्ण.
घनाक्षर. } कवित्त. १६,१५ यति.

एकत्रीश वर्ण जेमां गुरु लघु नेम नहि,
अंते गुरु एक यति सोळे घनाक्षरीमां.

केटलाक आने कवित अथवा मनहर केहेछे.

कवित प्रकरण.

घनाक्षरी आदि लइने केटलाक दंडक कवितना सामान्य नामथी ओळखायछे माटे आ ठेकाणे "कवित" विषे विस्तार आपवानी अगत्य छे.

छंदःप्रभाकरमा कह्युं छे के "कवितनी लय ठीक थवा माटे प्रथम तेनी ध्वनी सिद्ध करवी जोइये, पछी तेमा सम अथवा विषम प्रयोगनो योग्य योजना करवी जोइये. कवितमां सम (बेकी) प्रयोग बहु कर्णमधुर छे, परंतु काहिक विषम (एकी) प्रयोग आवी जाय तो तेनी आगळ एक बीजो विषम प्रयोग आणवाथी ते विषमता मटी समता बनी जायछे.

कवितनो साधारण नियम एवो छे के- पहेलां त्रण अष्टक अने पछी एक सप्तक मूकवु. अर्थात् ८,८,८,७ एम वर्ण मूकवा, परंतु शब्दयोजना के विभक्तियोना संबंधथी ए विभाग करवामां कंइ कइ अंतर पडी जायछे. जेमके:—

आनंदके कंद जग ८	ज्यावन जगत बंद ८	दशरथनदंके ७	निवाहिइ निबहिये, ८
कहैं पदमाकर ७	पवित्र पन पालिवेको ९	चोर चक्र पाणिके ७	चरित्रनकोचाहिये, ८
अवधविहारीके ७	विनोदनमेंबीधिबीधि ९	गीधगुह गीधेके ७	गुणानुवाद गाहिये, ८
रैनादिनआठोजाम ८	राम राम राम राम ८	सीताराम सीताराम ८	सीताराम कहिये ७

आवी कठणाइने लीधे प्राचीन ग्रंथकारोए केवळ १६, १५ यति मानी छे.

सत्य छे के—"शिष्टस्य गतिश्चिन्तनीया." परंतु सूक्ष्मदृष्टिथी जोइयेछिये तो, एमां पण उपर जणावेलो नियम पळायछे. बीजा अने त्रीजा चरणना पूर्वार्द्धमां १६ वर्ण छे, तो तेमांए ७ विषम आगळ ९ विषम आवीज जायछे, एटले बे विषम मळीने एक सम थइ जायछे. परंतु उत्तरार्द्ध केवळ १५ वर्णनुं थायछे, ते पोते विषम अंक छे, एटले तेना विभागमां बे पैकी एक स्थानमां विषमता अवश्य आववानीज. ते कारणथी आठ आठ वर्णना त्रण अष्टक अने अंतमां एक सप्तक मानी लेवुं बराबर छे. जेमके उपरनुं कवित्त नीचेना कोष्टकमां बतावबामा आवेछे:—

आनँदके कंदजग ८	ज्यावन जगतबंद ८	दशरथ नंदके नि ८	वाहेइ निबहिये; ७
कहै पदमाकर प ८	वित्रपन पालिवेको ८	चोरचक्रपाणिके च ८	रित्रनको चहिये; ७
अवधविहारीके वी ८	नोदनमे बीधिबीधि ८	गीधगुहगीधके गु ८	णानुवाद गहिये, ७
रैनदिनआठोजाम ८	रामराम रामराम ८	सीतारामसीताराम ८	सीताराम कहिये. ७

जे अष्टकमा सम अधिक होय तेने "सम" अने जेमां विषम अधिक होय तेने "विषम" केहेवायछे. सम विषमनो विचार विशेषे करीने अष्टकना प्रथमार्द्धमांज करवो जोइये. सप्तकमां तो बधा प्रयोग विषमज थायछे; ते माटे नीचे जणावेला नियमो ध्यानमां राखवा जोइये:—

"आनंदके" विभक्ति सहित चार वर्णनुं पद . . = सम.
"कहै पद" बे वर्णना बे शब्द . . . . = सम.
"अवध" त्रण वर्णनो शब्द+"विहारी" त्रण वर्णनो शब्द=विषम.
"रैन" बे वर्णनो शब्द. ... . = सम.
"ज्यावन" त्रण वर्णनो शब्द .... =विषम.
"दशरथ" चार वर्णनो शब्द .... = सम.

(१) अष्टकमां बधा सम शब्दो रही शकेछे. जेम– "रैनादिन आठो जाम," "कहे पदमाकरप" "वित्रपन पालिवेको" ए त्रणे सम प्रयोग छे. जे अष्टकनो प्रारंभ अपूर्ण शब्दथी थाय छे, तेमां ते अपूर्णने सम मानी लेवो जोइये; कारणके एनी विषमता तेना आदिना पदांतमां लोपाइ गइ होय छे. जेमके:– "वित्रपन"=४ वर्ण. –"नोदनमे" ४ वर्ण. ए बे सम छे.

(२) अष्टकमां विषम विषम अने सम पण रही शकेछे. जेमके "अवध विहारीके वि", "कुंजमें ललित केलि," "कौनको सुजस गाय," ए त्रणे विषम प्रयोग छे.

(३) अष्टकमां कहि कहिं सम, विषम, विषम, एम पण आवेछे, जेम "राम भजन करत." ए विषम प्रयोग छे. आ सम, विषम, विषम, प्रयोग प्रथम कहेला बे प्रयोगोथी उतरतो छे एटले विशेषे करीने एवो प्रयोग थतो नथी. एटले एनी गणना सर्वथी छेली करी छे. केवल बत्रीश वर्णोना कवित अथवा बीजा दंडकोमां ए कहिं कहिं काममा आवेछे अने ए प्रयोग ज्यां काममां आवेछे, त्यां आदिथी अंतसुधी आखुं अष्टक एक सरखुं थायछे.

(४) बे विषमना वचमां एक सम आववुं न जोइये. जेमके "कुंजमें केलि ललित" "कौनको गाय सुजस" इत्यादि. ए बे अष्टक कर्णकटु छे.

(५) अंत्य सप्तकमां सात वर्ण होवाना कारणथी सर्व प्रयोग विषम थायछे. जेमके "सीताराम कहिये." "रिन्ननको चाहिये," "णानुवाद गहिये." "बाहेइ निवाहिये." "रामहि मनाइये." "राधिके शरण है." इत्यादि.

(६) सोळ अने पंदर वर्णोपर शब्द पूर्ण होवोज जोइये.

(७) सम अथवा विषम प्रयोगनो योग्य उपयोग प्रत्येक अष्टकमां अथवा अष्टकना परस्पर संबंधमां पण राखवो योग्य छे. निकृष्ट प्रयोग रचवाथी बनी शके तेटलुं अलग रेहेवुं जोइये, नहितो कवित कर्णकटु थशे.

(८) कवितनी रचनामाटे नीचेनुं कवित कंठस्थ करवुं लाभकारी थशे

आठ आठ आठ पछी, सात वर्ण सारा सज, अतपर एक गुरु, धारी धारी आणजे
सम सम सम सम, विषम विषम सम, सम पछी बे विषम, एम योग जाणजे;
युगल विषम मध्य, समपद सज नहि, लय नष्ट थाय, सज्ये एम उरः धारजे,
आवी रीति प्रतिपद, नियम कवित केरा, अंतरमा आणी आणी, कवित सुधारजे.

"प्रत्येक कवित अथवा सवैयाने बे वार बोलवानी रीति छे, केमके तेनो संपूर्ण आशय चोथा चरणमां अथवा तेना पण उत्तरार्द्धमां रहेलो होयछे. एटले चोथुं चरण बोलवानो समय आवेछे, त्यां सुधी पेहेला त्रण चरणनो संबंध ठीक स्मरणमां रेहेतो नथी, एटले तेने बे वार बोलवाथी सारी रीते अर्थ समजी शकायछे." छंद प्रभाकर बीजी आवृत्ति (पृ. १८८ थी १९०)

कवित विषे विशेष विचार.

जे दंडक कवितना सामान्य नामथी ओळखाय छे, अने जे ३०थी ते ३३ वर्ण सुधीना बनेछे, ते विषे श्रीयुत बाबू जगन्नाथदासे "घनाक्षरी नियम रत्नाकर" नामनो ग्रंथ बनाव्यो छे; तेमां तेना विशेष नियम नीचे प्रमाणे जणाव्या छे:—

नियम पेहेलो.

कवितना चरणनी आदिमां तथा ४,८,१२,१६,२०,२४ अने २८ एम चच्चार चडता वर्ण पछी कोइ शब्दनो आरम थाय तो तेना आदिमां जगण (ISI) के तगण (SSI) न आववो जोइए; वळी एवा शब्दना आरममा यगण (ISS) के मगण (SSS) आववाथी पण मध्यम श्रेणीनी गति थइ जायछे.

पण तेमा एक वात लक्षमा राखवानी छे के, त्रण वर्णथी ओछा वर्णना शब्दने आ नियम लागु पडतो नथी. कमके त्रण वर्णथी ओछा वर्णनो गण बनी शकतो नथी, जेमके "न होय" एम आदिमां रचना आवे, तेमां आदि शब्द "न" त्रण अक्षरनो गण बनेछे ते करतां ओछी संख्यानो छे, ते साथे "होय" शब्द जोडायाथी जगण बनेछे; अने आदिमां जगण आणवानो निषेध कर्यो छे; तोपण ते "न होय" एवी रचनाने लागु पडतो नथी. पण—

"निकुंज विलोकी वर वृंदावन काननके,
लाजे वन नंदन यों शोभा सरसति है."

आ उदाहरणमां "निकुंज" शब्द त्रण अक्षरनो परिपूर्ण छे. अने तेनो जगण बनेछे, तेथी सरळताथी बोलवामा उच्चार करी शकातो नथी, तो उक्त नियमथी विरुद्ध छे.

चार अक्षर पछी पण जगणादि शब्दनो निषेध छे.जेमके-

"दूरहीसों कलींद सुता रंभन बीचिनिसों,
भीनी श्याम रंगमें सुखद दरसति है."

एमां चार अक्षरो पछी "कलींद" शब्द जगणादिवाळो होतां गति बगडेछे.

आरंभमां तगणादि शब्दनो निषेध छे. जेमके—

"आकाशमें लसति सुहाइ मनभाइ घटा,
छहरी छहरी बुंद झीनी बरसती है".

एमां आरंभमां "आकाशमें" ए शब्द तगणादि छे, तेथी गति बगडेछे

पण चार अक्षर पछी तगणादि शब्दनो निषेध छे. जेमके—

"ऐसे समे सारंगधरपें क्यों न चले वीर!
बैठी कहा मनमें मसूसी तरसती है".

एमां आरंभना चार अक्षर पछी-सारंगधर अंतर्गत "सारंग" शब्द तगणादि छे. तेथी गति बगडेछे.

आरंभमां मगणादि शब्द मध्यम छे. जेमके—

"आकांक्षी तिहारे दरशनको भयो हौं हौं तो"—

एमां आरंभनो "आकांक्षी" शब्द मगण होतां गतिने मध्यम करेछे.

चार वर्ण पछी मगणादि शब्द मध्यम छे. जेमके—

"केसनमें तातारी मृगमद सुगंध लसै"—इ.

एमां आरंभनां चार अक्षर पछी "तातारी" शब्द मगण छे, तेथी मध्यम गति थायछे.

प्रारंभमां यगणादि शब्द मध्यम छे. जेमके—

"निकाई निहारी पर वारी जाती रंभा रमा—" इ.

एमां प्रारंभमां "निकाई" शब्द यगण होतां गति मध्यम श्रेणीनी बनावी देछे.

चार वर्ण पछी पण यगणादि शब्द मध्यम छे. जेमके—

"जोम भरी जवानी"—इ०

एमां चार अक्षर पछी "जवानी" शब्द यगण छे, तेथी गति मध्यम थायछे.

एज रीते ८, १२, इत्यादि वर्णो पछीनेमाटे पण समजी लेवुं.

पेहेला नियमनो अपवाद.

जो आरंभमां अथवा चार, आठ, इत्यादि वर्णोनी पछी एवो शब्द आवे के जे चार अक्षरनो पूरो एक शब्द होय तो जगण, तगण, मगण तथा यगण आरंभमां अथवा चार वगेरे वर्णो पछी आववा विषे आगळ जे पेहेला नियममां कही गया छिये तेनो बाध आवतो नथी, पण जो ते चार अक्षरना शब्दनो अन्त्याक्षर गुरु होय तो गति मध्यम थइ जायछे.

चार वर्णमां जगणादि शब्द निर्दोषनुं उदाहरण.

"छपाकर छत्र मोती झालरन छत्र मानो."

एमां आरंभे "छपाकर" शब्द जगणादि छे, तथापि चार अक्षरनो पूरो शब्द होतां ते निर्दोष छे.

चार वर्णना तगणादि शब्द निर्दोषनुं उदाहरण.

"चामीकर देखिके लजात रूप रावरो है."

एमां आरंभमां "चामीकर" शब्द तगणादि छे, तोपण ते चार वर्णनो एक पूरो शब्द होवाथी निर्दोष छे.

चार वर्णना यगणादि शब्द मध्यम नहि. उदाहरण.

"निराधार प्राण, बिन प्रीतम रहेंगे किमि."

एमां आरंभमां "निराधार" शब्द यगणादि छे, परंतु ते चार वर्णनो एक पूर्ण शब्द होवाथी मध्यम नथी.

चार वर्णनो मगणादि शब्द मध्यम नहि. उदाहरण.

"पारावार पूरन अपार पार ब्रह्म रासि"—इ.

एमां आरंभमां "पारावार" शब्द मगणादि छे, परंतु चार वर्णनो एक पूर्ण शब्द होवाथी मध्यम नथी.

एज प्रमाणे चार, आठ, इत्यादि वर्णो पछीने माटे पण समजी लेवुं.

चार वर्णना जगणादि गुर्वन्त शब्द मध्यम.

"विभावरी संग कोक शोक लाग्यो बाढन है"

एमां आरंभमां "विभावरी" शब्द जगणादि छे, अने चार वर्णनो पूरो शब्द छे, तथापि अंतमां गुरु होवाना कारणथी मध्यम छे.

चार वर्णना तगणादि गुर्वंत शब्द मध्यम.

"धर्मध्वजा धारी है विचारत न बात नेक"—

एमां आरंभमां "धर्मध्वजा" तगणादि शब्द जो के चार वर्णनो पूरो छे, तथापि गुर्वन्त होवाना कारणथी मध्यम छे.

चार अक्षरना मगणादि गुर्वन्त शब्द मध्यम.

"धर्माचारी धर्मकी कहानी कहें लाख भांति"

एमां आरंभमां "धर्माचारी" शब्द मगणादि चार अक्षरनो पूरो छे, तोपण गुर्वन्त होवाथी मध्यम गणायछे.

चार वर्णना यगणादि गुर्वन्त शब्द मध्यम.

"समाधानी करत रहत समाधान सदा"—

एमां आरंभमां "समाधानी" यगणादि शब्द जो के चा वर्णनो पूरो छे, तथापि गुर्वन्त होवाना कारणथी मध्यम छे.

एज प्रमाणे चार, आठ, इत्यादि वर्णो पछीना वर्ण माटे प.. समजवुं.

नियम बीजो.

जो कोइ शब्द ५, ९, १३, १७, २१, २५, अथवा २९ अक्षर उपर समाप्त थाय तो तेना अंतमां लघु गुरु (।ऽ)

आववा जोइये. परंतु तेना अंतमां जो बे गुरु (SS) आवे तो तेनी गति सर्वथा नष्ट तो थती नथी, पण मध्यम श्रेणीनी तो अवश्य थइ जायछे:—

निर्दोषनुं उदाहरण:

"सिन्धुको सपूत सुत सिन्धुतनयाको बन्धु"–इ.

एमां "तनया" शब्द तेर अक्षर उपर समाप्त थायछे, अने तेना अंतमा लघु गुरु (IS) छे, तेथी ते निर्दोष छे.

बे गुरु मध्यमनुं उदाहरण:

"आज सुदामाके खाइ तन्दुल अघाने इमि." इ

एमां "सुदामा" शब्द पांच वर्णपर समाप्त थायछे, अने तेना अंतमां बे गुरु छे, तेथी गति मध्यम थइ गइ छे.

दूषितनुं उदाहरण.

"निरखि श्याम सुघर धीरज धरै न मन"–इत्यादि. तथा

"निरखी मृदु निकाइ धीरज धरै न मन"–इत्यादि.

आ बंने उदाहरणोमां "श्याम" तथा "मृदु" शब्दो पाच वर्ण पर समाप्त थायछे, परंतु तेना अंतमां लघु गुरु (IS) अथवा बे गुरु (SS) न होवाथी गति बगडी गइ छे.

एज प्रकारे नव, तेर, सत्तर, इत्यादि अक्षर पर पूर्ण थतां शब्द विषे पण समजी लेवुं.

नियम त्रीजो.

५, ९, १३, १७, २१, २५ अने २९ वर्णोनी पछी आवनारो शब्द जो एक वर्णनो होय तो ते गमे तो लघु होय अथवा गुरु होय तो चाले, परंतु ते जो एकथी वधारे अक्षरनो होय तो तेना आदिमां लघु आणवो जोइए.

निर्दोषनुं उदाहरण.

५ १० १४
१ पांच नव तेर अने, चार चार चडतानी,
१८ २२ २६ ३०
पाछळ होय जो शब्द, एक वर्ण आवतो;
५ १० १४
२ ते लघु के गुरु होय, तोय तेनो दोष नहि,
१८ २२ २६ ३०
उलटो जणाय ए तो, कवि मन भावतो;
५ १० १४
३ पण जो ते शब्दमांह, वधु वर्ण होय तो तो,
१८ २२ २६ ३०
लघु लागे कर्णप्रिय, कवित शोभावतो;
५ १० १४
४ षट दश चौद अने, ते पछी अढार बावी
१८ २२ २६ ३०
छविश ने त्रीश एम, लघु कवि लावतो.

आना प्रथम चरणमां "तेर" ए शब्द अंतर्गत "र" लघु छे. अने तेर वर्ण पछी "चडतानी" शब्द छे ते "च" लघुथी प्रारंभायलो छे. प्रथम चरणना उत्तरार्द्धमां "पाछळ" शब्द अंतर्गत १८मो वर्ण "छ" लघु छे अने बावीशमो वर्ण "जो" परिपूर्ण एकाज वर्णनो एक शब्द छे तेथी ते गुरु छे तोपण तेनो बाध नथी ए प्रमाणे बीजानु पण अक्षर उपरथी समजी लेवुं.

दूषितनुं उदाहरण.

"मेघ वरसैं बीर बडी बडी हैं बुंद लखो" इत्यादि. एमां पांचमा अक्षर पछी "बीर" शब्दनो आरंभ गुरुथी थायछे, तेथी गति दूषित थायछे.

एज प्रमाणे ९, १३ इत्यादि वर्णोनी पछी पण समजी लेवुं.

नियम चोथो.

२, ६, १०, १४, १८, २२ अने २६ वर्णो पछी जे शब्द

आवे तेना आदिमां जगण, तगण, मगण, अने यगणमाथी गमे ते होय तो मध्यम गति थायछे.

बे अक्षर पछी जगणादि मध्यमनुं उदाहरण.

"देखी निकुंजनकी अनुप सुखमाको रूप,
हियमें हुलास बाढयो कहत बनै नहि."—इ.

एमां बे अक्षरो पछी "निकुंजन" जगणादि शब्द मध्यम छे.

बे अक्षर पछी तगणादि शब्द मध्यम.

"घेरि आकाशहिं राख्यो सरस घनेरी घटा,
चपला चमंकै चख चहत बनै नहि."—इ.

एमां बे अक्षर पछी "आकाश" शब्द तगण होवाथी मध्यम.

बे अक्षरो पछी मगणादि शब्द मध्यम.

"गंजै सारंगीनि मजु गुंजै यों भँवर भीर,
केकी सहनाइसुर रंचक गनै नहि."—इ.

एमां बे अक्षरपछी "सारंगीनि" शब्द मगणादि होवाथी मध्यम छे

बे अक्षर पछी यगणादि शब्द मध्यम.

"ऐसी निकाईहिं लखि मान तजी एरी बीर,
जोगी जनहूसों सुनि धीरज ठनै नहि."—इ.

एमां बे अक्षरो पछी "निकाई" शब्द यगण होवाथी मध्यम छे. एज प्रमाणे ६, १० इत्यादि अक्षरो पछी पण समजी लेवुं.

नियम पांचमो.

३,७,११,१५,१९,२३ अने २७ अक्षरो पछी जे शब्द आवे, अने ते एकथी वधारे अक्षरनो होय तो तेना आरंभमां ल

गुरु (।ऽ) होवानी आवश्यकता छे, पण जो ते एकज अक्षरनो शब्द होय तो तेने माटे कंइ नियम नथी.

निर्दोषपनुं उदाहरण.

"शोभाको सकेलि ऊंची बेलि बाँधी बलीभद्र,
राख्यो सम लोचन कुरंगनिको रोस है;
दीपतिको दीपककै मुख दीपको सुमेरु,
मृदु मुख सारसको सिंफाकन्द जोस है;
कलपतरोवरकी कली कैधों कुंदकली,
उपमा अनुपनिको विविध निसोस है;
तिलको सुमन है कि नासिका तरुनि तेरी,
सुखकी सरन कैधों सौरभको कोस है."

आमां पेहेला चरणमां त्रण अक्षर पछी "सकेलि" शब्द अने २३ वर्ण पछी "कुरंग" शब्द; तथा त्रीजा चरणमां ३ अक्षर पछी "तरोवर" शब्द, १९ अक्षर पछी "अनुपनि" शब्द अने २७ अक्षर पछी "निसोस" शब्द लघु गुरु (।ऽ) थी आरंभायछे.

बीजा चरणमां ३ अक्षर पछी "को" शब्द, ७ अक्षर पछी "कै" शब्द अने २२ अक्षर पछी "को" शब्द गुरु पडेला छे.

वळी चोथा चरणमां ७ अक्षर पछी "कि" शब्द लघु छे, पण ते एकाक्षरी शब्द होवाथी बंने रूप निर्दोष छे.

एज प्रमाणे बीजां स्थानोपर पण समजी लेवुं जोइये.

दूषित उदाहरण.

"सरस बन लसत नाचत मयूरगन" इ.

"सरस कुंजनी लखि नाचत मयूरगन" इ.

"सरस आकाश लसे नाचत मयूरगन" इ.

एमां त्रण वर्णो पछी "वन" "कुंज" तथा "आकाश" शब्दो लघु गुरु (।ऽ) थी आरंभाता नथी, तेथी गति बगडेछे.

एज रीते बीजां स्थानो उपर पण समजी लेवुं जोइये.

पांचमा नियममां अपवाद.

जो ३ अक्षर पछी नगण (।।।) नो पूरो शब्द आवे तो चाले. अर्थात् जो तेना आरंभमा लघु गुरु (।ऽ) थता नथी, तोपण ते निर्दोष छे.

जेम—उपरना "शोभाको सकेलि" ए शब्दोथी आरंभाता कवितना चोथा चरणमां ३ अक्षर पछी "सुमन" शब्द तथा ११ अक्षर पछी "तरुनि" शब्द त्रण लघुना पूरा होवाथी निर्दोष छे.

एज प्रमाणे बीजी जग्याए पण समजवुं.

एकंदर गुरु लघु संख्याविषे.

अंते एक वात ध्यान आपवा योग्य जणायछे के—प्रस्तारनी रीति प्रमाणे जेटलां रूप घनाक्षरीना थाय, तेटलां तमाम आवी शकेछे, तोपण घणा लघु अथवा घणा गुरु एकज स्थानमा आववाथी रुचिकर थता नथी एटले ए वात उपर ध्यान आपवुं जोइये के,—१२थी वधारे गुरु अने २४थी वधारे लघु एकठा न थइ जाय तो सारुं. १० गुरु तथा २३ लघु सुधीनां उदाहरणो मळी आवेछे.

सामान्य विचार.

कवितनी रचनामां कये स्थाने केवा प्रकारना कया शब्दनी

केवी रीते योजना करवी, ए कर्त्ताना ज्ञान, अनुभव, सुघडता, सहृदयता, अभ्यास अने निपुणता उपर आधार राखेछे. ए विषे व्रजभाषाना कवि पद्माकर, पजनेस, तथा बुंदेलखंडी किशोरादिनां कवितोनी गति सारी मार्गदर्शक थशे.

३० अने ३३ अक्षरनां कवित घणा कवियोना काव्यमां जोवामां आवतां नथी. अने ते कानने पण विशेष रुचिकर थतां नथी. तेथी ते विषे विशेष वर्णन करवा उचित धारता नथी. जे नियमो ३१ तथा ३२ वर्णना कवितोने माटे नक्की करवामां आव्या छे, तेज ३० अने ३३ वर्णनां कवितोने पण लागु पडेछे.

३१ वर्णना कवितमांथी एक अंत्याक्षर कमी करवाथी ३० अक्षरवाळुं कवित बनी शकेछे. अने ३२ अक्षरवाळा कवितना अंतमां एक अक्षर वधारवाथी ३३ अक्षरवाळुं कवित थायछे. परंतु ३३ अक्षरवाळा कवितमां अंतना त्रण किंवा वधारे अक्षरो लघु होवानी आवश्यकता जणायछे. अथवा वीप्सा थवा माटे त्रण लघु अक्षरवाळो शब्द बे वार आवे तो ते अत्युत्तम छे.

यति विचार.

विशेषे करीने प्रत्येक ग्रंथमां कवितमां १६ अक्षरे यति मानी छे एटले "मनहर घनाक्षरी"ना एक चरणमां १६,१५ अने "रूपघनाक्षरी"ना प्रत्येक चरणमां १६,१६ अक्षरे यति आवे, एज रीते ३० अक्षरवाळा कवितमां १६ १४, अने ३३ अक्षरवाळा कवितमा १६, १७ अक्षरे यति आवेछे. कोइ कोइ कविये ८,८,८ उपर त्रण यतियो मानी छे, पण ते नियम सुप्रसिद्ध कवियोनां कवितोमां पण सर्वत्र पळायो नथी. एटले सर्वसंमत नथी. वळी १६ अक्षर उपर यति नक्की

करेली छे, तथापि केटलाक सारा कवियोए ते नियमनो केटलीक जगोए भंग कर्यो छे, तेम छतां तेवा कवित कोइ पण रीते अरुचिकर थतां नथी—अर्थात् १६ अक्षर पर यतिनो नियम छे, पण तेनी अति आवश्यकता नथी, एम जणाइ आवेछे.

साधारण रीते आवा दंडको कवितनी संज्ञाथी ओळखायछे, ते नीचे प्रमाणेः—

क्रम.	अंक	नाम.	माप.	वर्ण.
१	१४७९	अंशु कवित…… ……	गुरु लघुनो नियम नहि अते गुरु १६, १४ यति	३०
२	१४८६	घनाक्षरी, घनाक्षर……	गुरु लघुनो नियम नहि अते ग. १६, १५ यति.	३१
३	१४८७	कवित, मनहरण ……	लघु गुरुनो नियम नहि ८, ८, ८, ७ यति.	३१
४	१४८८	विशाल ……………	गुरु लघुनो नियम नहि १६, १५ यति.	३१
५	१४८९	खंजविशाळ…………	गुरु लघुनो नियम नहि १५, १६ यति.	३१
६	१४९०	जनहरण. ……………	३० लघु+ग, ……………	३१
७	१४९१	वर्णककुडळी …………	यथेच्छ ३० वर्ण+गल……	३२
८	१४९२	उपविशाळ…………	यथेच्छ ३० वर्ण+गल १६, १६ यति	३२
९	१४९३	द्वितीय उपविशाळ……	यथेच्छ ३० वर्ण +लल. १६, १६ यति.	३२
१०	१४९४	कृपाण, किरपाण……	यथेच्छ ३० वर्ण+गल ८, ८, ८, ८ यति.	३२
११	१४९५	रूपक घनाक्षरी, रूप घनाक्षरी…………	गुरु लघुनो नियम नहि अते ल ८, ८, ८, ८ यति.	३२
१२	१४९६	जलहरण, बत्रीशु कवित्त	यथेच्छ ३० वर्ण+लल ८, ८, ९, ७ यति.	३२

१३	१४९७	मनोहर..................	यथेच्छ ३० वर्ण+लल. ८, ८, ८, ८ यति.	३२
१४	१४९८	रंगीका..................	यथेच्छ ३१ वर्ण ल. १०, ८, ८, ६ यति.	३२
१५	१४९९	डमरु.	बधा लघु वर्ण	३२
१६	१५०४	विजया............ ...	८, ८, ८, ८ यति=३२ वर्ण. अंते लग अथवा नगण.	३२
१७	१५०५	तेत्रीशु कवित..........	यथेच्छ ३३ वर्ण गुरु लघुनो नियम नहि. १६, १७ यति.	३३

१४८७ कवित, मनहरण. लघु गुरुनो नियम नहि ८, ८, ८, ७ यति. ३१ वर्ण.

आठ आठ आठ साते, यति एकत्रीश मांहि,
गुरु लघु केरो निम, कवितमां छे नहि.
आने पण केटलाक मनहर केहेछे.

एकत्रीशुं, बत्रीशुं अने तेत्रीशुं कवित केहेवायछे. वृत्त-रत्नावलीमां नीचे प्रमाणे छेः—

एकद्वित्रियुतास्त्रिंशद्वर्णाः संति कवित्वके,
अन्ते गुरुर्लघुर्वीप्साऽत क्रमात् कविभिः कृता
वीप्सा त्रिवर्णाभिहिता गुरुशून्या सुखावहा,
अन्यथा कर्णतुल्या तोलिता विषमा भवेत्.

व्रजभाषामां कवित घणां रचायां छे, अने तेमां उपर लख्या प्रमाणे प्रासमां वीप्सा आणेली घणी जोवामां आवेछे, अने ते बत्रीशां अने तेत्रीशां कवितमां होयछे. तेमां छेल्लां बे के त्रण लघुवाळी वीप्सा मधुरी लागेछे.

मनहरण दंडकनुं राजा संग्रामसिंहजीकृत काव्यार्णवमां १६ अने १५ अक्षर मळी ३१ अक्षरनुं चरण कह्युं छे. अने तेनुं बीजुं नाम सौरदंडक आप्युं छे. वळी वृंदावनकृत छंदो-

નિધિ પિંગળમાં મનહરણ દંડકના (૧) પ્રકર્ષ, (૨) કામ, (૩) સોમકર, અને (૪) શોભાધર એ પ્રમાણે ચાર ભેદ કહ્યા છે, તેનાં લક્ષણ નીચે પ્રમાણે આપ્યાં છેઃ—

(૧) પ્રકર્ષનું લક્ષણ. (દોહા).

શશ દશ પુનિ ષટ નખ બરન, ચરન હોત વિશ્રામ;
ઇકતિસ બરનહિ અંત ગુરુ, દંડક પ્રકર્ષ નામ.

પ્રથમનો "શશ" શબ્દ તે દશને બદલે હસ્તદોષ હોય તો અને નખ એટલે વીશને બદલે પાંચ ગણિયે તો ૧૦,૧૦,૬,૫ =૩૧ વર્ણ, તેમાં અંતે ગુરુ, એવો અર્થ થાય.

(૨) કામનું લક્ષણ. (દોહા)

વસુ વસુ વસુ પુનિ સાત પર, વિરતિ અંત ગુરુ હોય;
ઇકતિ બરન વસુ ચરનહિં, કામ નામ હે સોય.

૮,૮,૮,૭=૩૧ વર્ણ, તેમાં અંતે ગુરુ, તેને કામ દંડક કહે છે. ઉપર જણાવેલા કાવ્યાર્ણવ ગ્રંથમાં પણ આ દંડકનું માપ ઉપર પ્રમાણે છે. ઉપરના દોહાના ઉત્તરાર્દ્ધમાં "વસુ ચરનહિ" એ કંઇ અશુદ્ધિ છે.

(૩) સોમકર. લક્ષણ. (દોહા)

અંત ગુરુહિ કામસ બરન, ચરન એક પરમાન,
વસુ વસુ પુનિ પંદ્રહ વિરતિ, કહત સોમકર જાન.

૮,૮,૧૫=૩૧ વર્ણ તેમા અંતે ગુરુ. "કામસ બરન" એટ

(४) शोभाधर. लक्षण. (दोहा)

दश दश पट नवे पर विरति, प्रथम तृतिय पद होय;
चतुर द्वितीय वसु आठपर, नव अक्षरपर सोय.
इकतिस बरन सुचरन इक, पछपाछे गुरु दीन;
सो शोभाधर कहतहै, वृंदावन परबीन.

दश, दश, छ, अने नवने बदले नख एटले पांच करिये तो पेहेला तथा त्रीजा पदमां १०+१०+६+५=३१ वर्ण थाय. अने बीजा तथा चोथामां चतुर द्वितीय=६+८+८+९=३१ वर्ण थाय अने दरेक पदने अन्ते गुरु आवे.

१४८८ विशाळ. लघु गुरुनो नियम नहि एवा ३१ वर्ण. १६, १५ यति

नियम विनाना वर्ण एकत्रीश विशाळमां,
सोळने पंदरपर विरति रचायछे.

छंदोवृत्तमुक्तावली प्रमाणे.

१४८९ खंजविशाळ. गुरु लघुनो नियम नहि एवा ३१ वर्ण. १५, १६ यति.

तिथि सोळ यतिथी वर्ण एम एकत्रीश,
चरण खंजविशाळ कविवर! तुं सभाळ.

छंदोवृत्तमुक्तावलि प्रमाणे कृष्ण कवि कलानिधिकृत वृत्तचद्रिकामां आनुं नाम चपलाघनाक्षरी जणाव्युं छे

१४९० जनहरण. ३० लघु+ग=३१ वर्ण.

जनहरण चरण त्रीश लघु धरी रच,
उपर पृथिवी गुरु धर तुं चरममां.

छंद.प्रभाकरमा जणावेछे के कोइ कोइ कविये आने जलहरण कह्यो छे ते अप्रमाण छे. गणप्रस्तारप्रकाशवाळा रामदासजिये एने मनहरण मान्यो छे.

३२ वर्णना दंडक.

१४९१ वर्णककुंडली. यथेच्छ वर्ण ३०+ग+ल=३२ वर्ण.

वर्णककुंडली विषे, यथेच्छ त्रीश अक्षरो
ते पर अन्तमां गुरु, लघु लावो धारी आप!

१४९२ उपविशाळ. यथेच्छ वर्ण ३०+गल=३२वर्ण. १६,१६ यति.

त्रीश छे यथेच्छ वर्ण गुरु लघु अन्तपर,
उपविशाल कविने सोळ सोळ पर छेद.

छंदोवृत्तमुक्तावली तथा कलानिधिकृत वृत्तचन्द्रिका प्रमाणे

१४९३ द्वितीय उपविशाल. यथेच्छ वर्ण ३०+ल+ल=३२ वर्ण.
तेमां १६, १६ यति.

त्रीश वर्ण गमेतेम पछी बे लघु छे अन्त,
द्वितीय उपविशाळ छेद सोळ सोळ पर.

१४९४ कृपाण, किरपाण यथेच्छ ३० वर्ण+गल=३२ तेमां
८,८,८,८ यति.

कृपाणमां आठ आठ, एम यति केरो पाठ,
बत्रीस वरण ठाठ, चरण चरम गा ल.

छंद प्रभाकर प्रमाणे आनी प्रत्येक यति सानुप्रास लाववो जोइये. विशेषे करीने आ वृत्तमां वीर रसनुं वर्णन थायछे प्रत्येक चरणना अंतमां न कारनो प्रयोग अति कर्णमधुर मान्यो छे जेमके, तेना उदाहरणमां "महान बलवान, लंडितान" इत्यादि शब्द आवेछे, जुवो छंद प्रभाकर बीजी आवृत्ति पृ १९३

१४९५ रूपकघनाक्षरी, रूपघनाक्षरी, वर्णकमनहर.

लघु गुरुनो नियम नथी, अन्ते ल. ८,८,८,८ यति=३२ वर्ण.

रूपकघनाक्षरीमां, चार यति आठ केरा,
अन्ते लघु आणो एक, कुल वर्ण रद मांह. ३२

छंदोलता तथा छंद:प्रभाकर १६,१६ यति केहेछे. भाषा छंदोमजरी आने वर्णकमनहर केहेछे

१४९६ जलहरण, बत्रीशुं कवित. { लघु गुरुनो नियम नथी. अन्ते २ ल. १६, १६ यति. } ३२ वर्ण.

बत्रीशा कवितकेरा रद वर्ण अन्त बे ल,
जलहरण छे नाम सोळ सोळपर यति.

कोइ कोइ आनुं नाम जनहरण आपेछे, ते छंद:प्रभाकर, अप्रमाण केहेछे. ब्रिजभाषाना ग्वाल आदि कवियोए ३२ अक्षरनां विप्सावाळां कवित घणां कर्यां छे.

१४९७ मनोहरण. यथेच्छ वर्ण ३०+२ ल=३२ वर्ण. ८, ८, ८, ८ यति.

चार वसु केरी यति, बत्रीशा कवितमांह,
अन्ते बे लघु लावेछे, रचतां मनोहरण.

जलहरण प्रमाणेज माप छे, मात्र यतिमाज फेर छे

१४९८ रंगीका. गुरु लघुनो नियम नांहि, अते लघु. ३२ वर्ण. १०, ८, ८, ६ यति.

दश आठ आठ छये यति, गुरु लघु नि'म नथी,
वर्ण दांत रंगीकामां, अन्त लघु आण.

आ अन्त्य लघुवाळुं बत्रीसाक्षरी रूपघनाक्षर नामे कवित छे, आनुं माप रूपघनाक्षरी प्रमाणेज छे, मात्र यतिमा फेर छे

१४९९ डमरु. बधा लघु. ३२ वर्ण.

प्रति चरण चरण रद धर सुवरण
डमरु कवित कर कविवर! स्मर हर.

आ दंडक काव्यसुधाकर तथा छंद:प्रभाकरमां छे छंद:प्रभाकरमां ११+११+५+५=३२ वर्ण कह्या छे, अने जणाव्युं छे के-" श्रीयुत भीखारीदासजी अने बैजनाथजी आने जलहरण मानेछे.

१५०० सुधानिधि. गुरु लघुने क्रमे ३२ वर्ण.

गा ल छे क्रमे क्रमे सुवर्ण शुद्ध दात[32] सर्व
धारजो गणी गणी सुधानिधि विषे सदाय

आ दंडक अशोक पुष्पमंजरीनो भेद छे छंदमालिकामा आनु माप
२ भ+जर+जज+नज+गग=३२ आप्युं छे

१५०१ धनपाळ[1]. र त न+न र ज+र न भ+न ग ल=३२ वर्ण.

रतना नाराज धर पद धनपाळ दंडके
रची र ना भ कर ना ग ल चरममाह.

१ गणप्रस्तारप्रकाश प्रमाणे.

१५०२ द्विनाराचिका, महानाराच. १६ ल ग=३२ वर्ण.

रचाय द्विनराचिका महानराच मान तो,
पदे लघु गुरु क्रमे बधा बत्तीश अक्षरो.

अनंगशेखर पृ. ४२८ अंक १४४८ मे छे, तेनो आ भेद छे गणप्रस्तारप्रकाश तथा छंदमालिकामां आनुं नाम अनंगशेखर आप्युं छे, पण आ तो तेनो भेद छे, अने तेनां उपर प्रमाणे बे नाम तो प्रसिद्ध छे आ कवि नर्मदाशंकरना जाणवामां नहि होय तेथी तेमणे नाराचथी बमणो "नर्मछंद" पोताना नामथी नवो कल्प्यानुं जणाव्युं छे.

१५०३ खंजोपविशाळ. १५, १७ यति=३२ वर्ण.

वर्ण दंत[32] आणवा खंजोपविशाळ थवा,
तिथिने[15] सतर सारा छेद शोधी आणवा नवा.

१५०४ विजया. ८, ८, ८, ८, यति
अन्ते ल ग अथवा नगण=३२ वर्ण.

अक्षर बधा बत्रीश छे, विरति वसु[8] उपर,
अंतमा ल ग अथवा, नगण धर चरण.

छंद:प्रभाकरमां कवित करतां आमां फेर एटलोज जणाव्यो छे के "कवितमां बे विषम अक्षरोना शब्दनी वच्चे सम अक्षरना शब्द आवे नहि," अने आ विजयमां ए प्रमाणे अगवडा जोइये

३३ वर्णना दंडक.

१५०५ तेत्रीशुं कवित. { गुरु लघुनो नियम नहि, १६, १७यति } ३३ वर्ण.

अक्षर मळीने बधा तेत्रीशे करोजी पूरा,
सोळ सतर विभागे तेत्रीशाकवित चरण.

आवां कवितमां त्रण त्रण अक्षरनी विप्सा पण लावेछे जेम —

"झिल्लि झनकारे पिक चातकी पुकारे वन,
मोरन गुहारे उठे जुगनु चमकि चमकि;
घोर घन कारे भारे धुरवा धरारे धाम-
धूमन मचाये नचे दामनी दमकि दमकि;
झूकन बयारि बारि लूकन लगावे अंग,
कूकन भभूकनसों और भो खमकि खमकि;
कैसें रहे प्राण प्राणप्यारे यशवंत बिन,
छोटी छोटी बुंदनसों बरसे झमकि झमकि."

१५०६ अर्णव. २ न+९ र=३३ वर्ण.

नगण पर न थायछे ते पछी पादमां खंड रा
आणजो अर्णवे वर्ण चित्ते धरी तेत्रिशे.

३४ वर्णना दंडक.

१५०७ वर्णत्रिभंगी. { २० लघु+भ+त+य+स+गग= ८, ८, ९, ४, ५, यति } ३४ वर्ण.

वसु वसु नव श्रुति, शर पर यति कीधी,
लघु धरी वर्णत्रिभंगी, स त य भ गा, गा ग थकी छे.

छंदःशास्त्रना टिप्पणमां आनुं नाम त्रिभंगी छे, पण मात्रा-मेळ पृ. ९२ अंक १३४ मे त्रिभंगी छे, तेनी साथे भळी न जाय माटे अमे "वर्णत्रिभंगी" एनुं नाम राख्युं छे.

गौडपिंगळना ग-ने बदले ल छे, लखपत जशसिन्धुमां पण तेमज छे; उदाहरणमां पण ते प्रमाणे छे. छंदोवृत्तमुक्तावलीमां द्वितीय (बीजो) त्रिभंगी नाम आपी आमां कहेला गणो बताव्या छे, पण तेमां यति कही नथी. छंद प्रभाकरमां यति नथी, अने गण आ प्रमाणे छे पण रूप नीचे प्रमाणे गोठव्युं छे.–

६ न+स ल भ ग ल ग=२४ वर्ण.

१५०८ हेलावली. न+ग+१० र=२४ वर्ण.

नगण आणो पछी एक गा गोठवी ते पछी रा
१०
गणो आण आशा करो पाद हेलावलीमांह तो.

जूओ अंक १५३३ नी टीप.

१५०९ हेली. न+ल+१० र=२४ वर्ण.

न उपर धायछे रा दशे सामटा ततणा
अक्षरो सर्व चोवीश छे पाद हेलीतणे दंडके.

जुओ अंक १५३३ नी टीप. हेलावलीने बदले छंदोलतामां हेली-नाम आपी उपर प्रमाणे माप आप्युं छे, ते भिन्न होता आ स्थाने दाखल करवामां आव्युं छे.

२६ वर्णना दंडक.

१५१० चंडवेग. न न+८ य+न न=२६ वर्ण.

न न उपर धर या आठ आणी अने बे वने ना
वशा वर्ण छत्रीश तो चंडवेगे शुभ कविवर!

१ छंदोलतामां उपर प्रमाणे माप छे पण छंदोवृत्तमुक्तावलीमां २न+य (यथेच्छ) लाववा कह्युं छे ते उपर छेला व नगण लाववा कह्युं नथी, पण तेवो दंडक अंक १४३२ मे छे, माटे अमे छंदोलतानुं माप प्रमाण गण्युं छे

१५११ व्याल, विशेषशालिन.[1] २ न+१० र=३६ वर्ण.

न न पर दश रा गणो व्याल विशेषशालीनना
पादमां मूकजो छत्रिशे अक्षरो आणिने युक्तिथी.

१ वाग्वल्लभमां ३० र उपरातनाने आवुं नाम आपवा सूचव्युं छे, पण ए अभिप्राय योग्य नथी.

३७ वर्णना दंडक.

१५१२ मालती. न+ग+११ र=३७ वर्ण.

नगण प्रारंभमां ते परे गा करो त्यार पूठे तमे
मालती माह तो रा अगियार आणी पदे गोठवी.

जुवो अंक १४३३नी टीप.

छंदोलताना क्रममां धुली नाम आवेछे तेनुं शुद्ध स्वरूप तो धूली थाय पण ते रगणनी रचनामां आवी शकतुं नथी. "चां-भोली धुली मातली केलि लीला विलासादयः" एमां धुली पछी मातली छे ते आ स्थाने जोइये अने मालती शब्द नुं उलटपालट थइने मातली थयेलुं लागेछे. तोपण मातली इन्द्रनो सारथी केहेवायछे, तेने नामे जूदो दंडक गणिये तो आ स्थाने धूली कायम रेहेतां तेनी रचना नीचे प्रमाणे थायछे.

१५१३ धूली. न+ल+११ र=३७ वर्ण.

नल पर रुद्र-छे रागणो-पादपादे मळी ने बधा
त्रीश ने सात तो वर्ण प्रत्येकमां एम धूली विषे.

३९ वर्णना दंडक.

१५१४ जीमूत. २ न+११ र=३९ वर्ण.

न न पर गण रा अगियार आणी धरो पाद जीमूतम
अक्षरो त्रीश ने खड सोळो बधा आप आ दंडके.

१५१५ सारंग. १३ र=३९ वर्ण.

पादपादे रचो तेर तो रागणो शुद्ध सारंगना दंडके
त्रीश ने खड छे अक्षरो सर्व तो एम जाणो तमे.

४० वर्णना दंडक.

१५१६ मातली. न+ल+१२ र=४० वर्ण.

न ल पर बार आणो क्रमे रागणो सामटा ते तणा सर्व
चाळीश छे वर्ण प्रत्येक पादे सदा मातली दंडके.

१ छंदोलतामायां जुवो अंक १४ः३नी टीप

१५१७ केली. न+ग+१२ र=४० वर्ण.

नगण न एक गा त पछी बार छे रागणा पादपादे मळी
अक्षरो सर्व चाळीश केली विषे थायछे सामटा.

४२ वर्णना दंडक.

१५१८ लीलाकर. २ न+१२ र=४२ वर्ण.

ननर ररर ररररा ररररा रार छे पाद लीलाकरे
एटले बे न छे बार तो रा पछी एम लावी धरो दंडके.

४३ वर्णना दंडक.

१५१९ कंकेली. न+ग+१३ र=४३ वर्ण.

नगणनी उपेर एक गुरु धरी तेर तो आणजे रागणो,
तेतणा अक्षरो अग्नि ने आण चाळीश कंकेलीना दंडकों.

४५ वर्णना दंडक.

१५२१ उद्दामा, उद्दाम. २ न+१३ र=४५ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा आणजो एटले आप
उद्दामनां पाद ज्यारे रचो बे न ने तेर रा ते विषे लावजो.

४६ वर्णना दंडक.

१५२२ लीला.[1] न+ग+१४र=४६ वर्ण.

न पर गा थायछे चौद रा पाद पादे बधा आण आ दंडके
शोभिता नाम लीला धर्युं जेहतुं मांड छेताळीशे अक्षरो थायछे.

१ छंदोलतानां क्रम प्रमाणे आनु माप न+ल+१४ र थायछे
जुओ अंक १६३३.

४८ वर्णना दंडक.

१५२३ शंख. २ न+१४ र=४८ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा रा करो एटले बे न ने
चौद रा आणजो शंखना पादमां आप सारी रीते गोठवी गोठवी.

१५२४ विदग्धत्रिभंगी. ३ त न+२ भ+३ त न+२ भ=४८ वर्ण.

आवे त्रण त न बे भा त्रण त न पाछा द्वि भ धर पाद विदग्धत्रिभंगी
तणो रचनामां कविवर तेमां प्रभुगुण गा मनपूर्वक.

१ वाग्वल्लभमां छे.

४९ वर्णना दंडक.

१५२५ विलास.[1] न+ग+१५ र=४९ वर्ण.

नपर गा थायछे ते पछी पंदरे रा गणा सामटा छे विलासे पदे
वर्ण चाळीश ने नव आणो बधा ते विषे गुण गाओ सदा ईशना.

१ छंदोलतामां न+ल+१५ र एवु माप छे. जुओ अंक १६३३.

५१ वर्णना दंडक.

१५२६ आराम, पर्क[1], विश्वबाह[2], अर्क[3]. २ न+१५ र=५१ वर्ण.
ननर ररर राररा राररा राररा रार छे पर्के ने वळी विश्वबाहे अने अर्के आरामना दंडके वे न ने पंदरे रागणो थायछे.

१ वृत्तरत्नाकरनी जनार्दनी टीका २ वाग्वल्लभ
३ छंदोलता तथा छंदोवृत्तमुक्तावली

५४ वर्णना दंडक.

१५२७ { संग्राम, पद्मराग, तक्षक, कालदंड[1], चन्द्रेश[2], चन्द्र[3]. } २ न+१६ र=५४ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा एम बे ना अने सोळ रा थायछे पद्मरागे अने तक्षके-कालदंडे तथा चन्द्र संग्राममां सामटा.

१ वाग्वल्लभ. २ छंदोलता ३ छंदोवृत्तमुक्तावली.

५७ वर्णना दंडक.

१५२८ सुराम, पौंड्रक[1], ईश[2]. २ न+१७ र=५७ वर्ण.
ननर ररर राररा राररा राररा राररा रा सुरामे अने पौंड्रके ईश ए दंडके थायछे सौ मळी बे न ने सत्तरे रा बधा सामटा पाद पादे लरे.

१ २ छंदोवृत्तमुक्तावलीमा तेमज छंदोलतामाथी
१ पौण्ड्रकनुं माप वाग्वल्लभमा आ प्रमाणे छे

१५२९ विशेषस्तवक[1]. { नय नय नय नय भस भस भस म भस भल=४नय+३भस+म+२भस=५७ }

नय युग आणो त्रण भस जाणो पछी म प्रमाणो द्वि भस वखाणो ने चरण करो भाव मन धरो अक्षर सघळा आणी सत्तावनज विशेष स्तवकविषे.

१ वाग्वल्लभमा छे

६० वर्णना दंडक.

१५३० उदारपाद[1], वैकुंठ[2], भोगी[3]. २न+१८र=६०वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा रार छे
एम बे ना धरो रा अढारे करो अक्षरे साठ उदारपादे
अने वृत्त वैकुंठ भोगी विषे पादपादे तसे.

१ वाग्वल्लभ. २ छंदोवृत्तमुक्तावलि तथा छंदोलतामाथे
३ छंदोवृत्तमुक्तावली

६३ वर्णना दंडक.

१५३१ सोत्कंठ, इन्द्र. २ न+१९ र=६३ वर्ण.

न न र र र र राररा राररा राररा राररा राररा
आणिने बे न ने ओगणी' रा करो सोतकंठे अने इंद्रमां,
अक्षरो तो बधा अंक तो त्रेसठे जाय पो'ची तमे जाणजो.

६६ वर्णना दंडक.

१५३२ सार, पीयूष. २ न+२० र=६६ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा रा
धरी एटले ना रचो बे वळी रा करो वीश पूरा तमे ने बधा
अक्षरो छासठे आणजो सार पीयूष केरा धरी पाद

६९ वर्णना दंडक.

७२ वर्णना दंडक.

१८३४ विस्तार, वात. २ न+२२ र=७२ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा राररा

एम बे ना धरी बाविशे रा करो सामटा माप विस्तार के वातमां
वर्ण बोतेर तो पादमा आणजो आ खरी रीत ए दडके जाणजो.

७५ वर्णना दंडक.

१८३५ संहार. २ न+२३ र=७५ वर्ण.

ननर ररर रारग राररा राररा राररा राररा राररा

रा धरी सर्व ना बे अने रा करो त्रेविशे एम सर्वे मळी वर्ण सित्तेर ने
पांच पूरा रच्ये पाद संहारनुं पूर्ण तो थायछे एम मानो तमे.

७८ वर्णना दंडक.

१८३६ नीहार. २ न+२४ र=७८ वर्ण.

ननर ररर रारग राररा रारग राररा राररा रारग रार

आणी तमे बे न ने ते परे सर्व चोवीश रा लाविने वर्ण सित्तेर नें
आठ पूरा करो पाद नीहारमां ईशना गुण गावा तमे भावथी आदरो.

८० वर्णना दंडक.

१८३७ कुसुमितकाय१. { मम+न,न.त+य,ज,त+र,भ. स+भ,स,भ+स,भ,त+य.स, भ,+तयस+भ न,न+ग,ग. } ८० वर्ण.

एणी पूरा वर्णो आणो कुसुमितकाये ठिक भाइ!
रचाय तेमां पदे पदे तो गण समुदायो ठिक ठिक मामा पछी
तनता छे यजता छे रभसा छे भसभा छे सभता छे
यसभा छे तयसा छे पछी थकी भनन गगा छे.

वाग्वल्लभ.

८१ वर्णना दंडक.

१५३८ मंदार.   २ न+२५ र=८१ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा आणिने सौ मळी बे न ने वीश ने पांच रा लावजो आप मंदारमां ते पछी एहमां भक्तिना भावथी गुण गाजो तमे सर्वव्यापी प्रभुना सदा प्रेमथी.

८४ वर्णना दंडक.

१५३९ केदार.   २ न+२६ र=८४ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा रा थई बे न ने ते परे रा धरो सर्व छव्वीश तो जे थकी अक्षरो अंशिने चार सौ थायछे पाद एकेकमां एम केदार जोडायछे ते तमे जुक्तिथी जाणजो.

८७ वर्णना दंडक.

१५४० साधार. २ न+२७ र=८७ वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा रार साधार छे आ रीते बे न ने वीश ने सात रा तेहना अक्षरो एंशि ने सात तो थायछे पादमां तेहमां गायछे गुण गोविंदना जे कवि भक्तिना भाववाळो खरो.

९० वर्णना दंडक.

१५४१ सत्कार.   २ न+२८ र=९० वर्ण.

ननर ररर राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा राररा लावतां आम सत्कारमां बे न ने वीश ने आठ रा थायछे तेतणा अक्षरो नेवु तो थायछे पाद एकेकमां एम आ दंडके आप आणी पछी गुंथजो काव्य तेमां तमे.

९३ वर्णना दंडक.

१५४२ संस्कार. २ न+२९ र=९३ वर्ण.

ननर ररर रारर रारर रारर रारर रारर रारर रारर रारर रा धरी तेहना बे न चोवीश ने पाच रा लावतां त्राणु संस्कारना थायछे अक्षरो पादपादे खरा तेहनां गुण जो ईशना गाय तो थाय शुद्धि भली चित्तनी एम जाणो तमे.

९६ वर्णना दंडक.

१५४३ माकंद, विमर्ष. २ न+३० र=९६ वर्ण.

ननर ररर रारर रारर रारर रारर रारर रारर रारर रारर रार तो थायछे तेहना बे न ने त्रीश रा आणतां अक्षरो छन्नु सौ थायछे पाद माकंदना ने विमर्षे रची जे कवि कोइ आ दंडके ईशना गुणनु गान गाशे जशे मुक्ति पामी खरे.

आ नियम प्रमाणे जो त्रे नगण पछी ३० रगण उपरांत वधता जाय तो, तेने विशेषशालीन केहेछे, एवु वाग्वल्लभमा कह्यु छे

९९ वर्णना दंडक.

१५४४ गोविंद. २ न+३१ र=९९ वर्ण.

ननर ररर रारर रारर रारर रारर रारर रारर रारर रारर रारर एम लावो तमे जे थकी बे न ने त्रीश ने एक रा तो थतां थाय नव्वाणु सौ अक्षरो पादपादे अने नाम गोविंद के-वायछे एहनु ते विषे तो रचो गुण गोविंदना भाव पूरो धरी.

१०२ वर्णना दंडक.

१५४५ सानद. २ न+३२ र=१०२ वर्ण.

ननर ररर रारर रारर रारर रारर रारर रारर रारर रारर

रारारा रा धरी लावजो पाद स्वानंद्यां बे न ने उपरे बत्रीशे रा वधा एम सौ एक सो बे करो अक्षरो पादपादे तमे प्रेम आणी पछी गाइ ल्यो गुण आ दंडके दीनआधारना दु खोना बंधुना.

१०५ वर्णना दंडक.

१५४६ संदोह. २ न + ३३ र = १०५ वर्ण.

ननर ररर रारारा रारारा रारारा रारारा रारारा रारारा रारारा रारारा रारारा रार आणी करो कुल बे ना गणो ने वळी रा गणो तेत्रिशे तो धरो एम सौ अक्षरो एक सो पांच संदोहने पादपादे गणी आणजो ते विषे गुण गोविंदना गुंथजो जे थकी चित्त चोखु थशे सामटु.

१०८ वर्णना दंडक.

१५४७ नंद. २ न + ३४ र = १०८ वर्ण.

ननर ररर रारारा रारारा रारारा रारारा रारारा रारारा रारारा रारारा रारारा रारारा एम आण्या थकी नंद नामे बने दंडके बे न ने त्रीश ने चार तो रा गणो सामटा तेतणा अक्षरो एक सो ने पछी आठ तो थायछे पादपादे बधा गोठता घाटमां आवता रागमां बेसता आणजो.

અર્દ્ધસમ વૃત્ત.

જેમાં બે પદોનાં સર્વ લક્ષણ મળતાં આવે એવું એટલે ૧લુ અને ત્રીજું પાદ (વિષમપદ) તેમજ બીજું અને ચોથું પાદ (સમપદ) સમાન હોય તે અર્દ્ધસમવૃત્ત કેહેવાય એના બે ભેદ છે.

૧ સંકીર્ણ ૨ અસંકીર્ણ.

૧ સંકીર્ણ એટલે વર્ણમા વધઘટ થવાથી વિષમપાદ કરતા સમપાદની વર્ણસંખ્યા ભિન્ન રહે તે

૨ અસંકીર્ણ એટલે વિષમ તથા સમપાદના વર્ણ સરખા હોય પણ ગણ ભિન્ન ભિન્ન હોય તે.

આ એક જાતની ઉપજાતિ પણ કેહેવાય છે.

અતાગ, ઓજ, અયુગ્મ અયુગ્મક, અને અયુજ એ વિષમ એટલે પેહેલા ત્રીજા પદનાં નામ છે.

અનોજ, યુગ્મ, યુગ્મક, અને, યુજ એ સમ એટલે બીજા ચોથા પદનાં નામ છે.

સંકીર્ણ.

વિષમ પદના ૮ ને સમના ૧૦ વર્ણ હોય તો તેનાં કુલ ૨,૬૨,૧૪૪ રૂપ થાયછે.

૧ આપ્રુત. { ૧,૩. સ જ ગ ગ. =૮ દિગીશ. અંક. ૨૮૦
૨,૪. સ સ જ ગ. =૧૦ સહજા. અંક. ૪૬૮

વિષમે સ જા ગ ગા છે;

સ સ જા ગ સમેજ આપ્રુતે.

वृत्तनां सम चरण (२,४) थायछे. ए रीते द्विगीश अने सहजाना मिश्रणथी आवृत्त थायछे. एज प्रमाणे, जे पदनी सामे अंक सहित वृत्तनुं नाम होय ते वृत्तनां ते पद थायछे, एम समजवुं.

२ ललिता. { १,३. र स ल ग. = ८ रूप. ९१
२,४. स ज ज ग. =१० संयुता. अंक ४७३ }

रा स ला विषमे ग छे;

ललिता समे स ज जा ग छे.

विषम पदनुं अहि जे माप र स ल ग आप्युं छे, एवा मापनुं समवृत्तमां ८ वर्णनुं कोइ वृत्त नथी, तेथी ८ वर्णमां ए मापनुं रूप ९१ मुं थायछे, ते अहि जणाव्युं छे. एज प्रमाणे समवृत्तना पेटामां, जे पाछळ वृत्त दाखल नथी तेनुं जेटलामु रूप थायछे तेनो अंक आप्यो छे.

९,१०,नां रूप ५,२४,२८८ थायछे.

३ वैसारी. { १,३. त ज र.=९ रुक्मोन्मुखी. अंक ३८१
२,४. म स ज ग.=१० विराट,शुद्धविराट.अंक ४६६ }

ता जा र अयुग्मसा गमे;

वैसारी म स जा ग थी समे.

आनु विलोम करिये तो वासववंदिता थायछे. जुवो अंक. ४

१०, ९नां रूप ५,२४,२८८ थायछे.

४ वासववंदिता. { १,३. म स ज ग.=१० विराट. अंक ४६६
२,४. त ज र =९ रुक्मोन्मुखी. अंक ३८१ }

मा सा वासववंदिता ज गे;

ता जा र करो समे वगे.

आ वृत्तमा वैसारीना विषम पद छे ते समपद थयां छे अने तना समपद

छे ते आनां विषम पद थयां छे, आ प्रमाणे उलटासुलटी थाय ते **विलोम** केहेवायछे वैस्तारीनुं विलोम जुवो अंक ३

१०,११नां रूप २०,९७,१८२ थायछे.

५ भद्रविराट, { १,३. त ज र ग.=१० नमेरु. ४४०
समुद्रकान्ता. { २,४. म स ज ग ग.=११ विश्वविराट. ९९३.

छे भद्रविराट ता ज रा गे;

युग्मे मा स ज गा ग ठीक लागे.

कान्ता, शुद्धविराटनु विलोम, जुवो अंक १७.

वैतालिय प्रकरणमा औपच्छंदसिक, पाछळ पृ २१४ मे जुवो तेमां ६ अने ८ मात्रा अनुक्रमे जणावी छे, तेने बदले आहिं गण नक्की कर्याछे एटलोज फेर छे

६ केतुमती. { १,३. स ज स ग. = १० रूप २३६
{ २,४. भ र न ग ग. = ११ रूप ४७१

धरजो स जा स ग अयुग्मे,

केतुमती भ रा न ग ग युग्मे.

विलोमे केतु जुवो अंक १८

७ सुंदरी[१], सुरमालिका, { १.३. स स ज ग=१० सहजा.४६८
कमला, वियोगिनी { २,४. स भ र ल ग.=११ सीधु. ९९९

विषमे स स जा ग सुंदरी;

कमळा मा भ र ला ग थी ठरी.

१ प्राकृत पिंगळसूत्रमा केह्युं छे के —

अयुजो यदि सौ लगौ[१] पुनः

समयो स्भौ रलगाश्च सुन्दरी.

१ एमा लगौ छे त्या जगौ जोइये तेमज छंदोमंजरीमां छे के —

अयुजो यदि सौ जगौ युजो,

वृत्तनां सम चरण (२,४) थायछे. ए रीते दिगीश अने सहजाना मिश्रणथी आवृत्त थायछे. एज प्रमाणे, जे पदनी सामे अंक सहित वृत्तनु नाम होय ते वृत्तनां ते पद थायछे, एम समजवुं.

२ ललिता. { १,३. र स ल ग. = ८ रूप. ९१
{ २,४. स ज ज ग. =१० संयुता. अक ४७३

रा स ला विषमे ग छे;
ललिता समे स ज जा ग छे.

विषम पदनुं अहिं जे माप र स ल ग आप्युछे, एवा मापनुं समवृत्तमां ८ वर्णनुं कोइ वृत्त नथी, तेथी ८ वर्णमा ए मापनुं रूप ९१ मुं थायछे, ते अहिं जणाव्युं छे. एज प्रमाणे समवृत्तना पेटामां, जे पाछळ वृत्त दाखल नथी तेनुं जेटलामु रूप थायछे तेनो अंक आप्यो छे.

९,१०,नां रूप ५,२४,२८८ थायछे.

३ वैसारी. { १,३. त ज र.=९ रुक्मोन्मुखी. अंक ३८१
{ २,४. म स ज ग.=१० विराट,शुद्धविराट.अक ४६६

ता जा र अयुग्ममां गमे;
वैसारी म स जा ग थी समे.

आनु विलोम करिये तो वासववंदिता थायछे जुवो अक. ४

१०, ९नां रूप ५,२४,२८८ थायछे.

४ वासववंदिता. { १,३. म स ज ग =१० विराट. अंक ४६६
{ २,४. त ज र.=९ रुक्मोन्मुखी. अक ३८१

मा सा वासववंदिता ज गे,
ता जा र करो समे वगे.

आ वृत्तमां वैसारीना विषम पद छे ते समपद थया छे अने तनां समपद

छे ते आना विषम पद थयां छे, आ प्रमाणे उलटासुलटी थाय ते **विलोम** केहेवायछे **वैसारीनुं** विलोम जुवो अंक ३.

१०,११नां रूप २०,९७,१५२ थायछे.

५ **भद्रविराट, समुद्रकान्ता.** { १,३. त ज र ग.=१० नमेरु. ४४० ; २,४. म स ज ग ग.=११ विश्वविराट. ९९३.

छे भद्रविराट ता ज रा गे;
युग्मे मा स ज गा ग ठीक लागे.

कान्ता, शुद्धविराटनु विलोम, जुवो अक १७.

वैतालिय प्रकरणमा औपच्छंदसिक, पाछळ पृ २१४ मे जुवो. तेमां ६ अने ८ मात्रा अनुक्रमे जणावी छे, तेने बदले आहि गण नक्की कर्याछे, एटलोज फेर छे

६ **केतुमती.** { १,३. स ज स ग =१० रूप २३६ ; २,४. भ र न ग ग. =११ रूप ४७१

धरजो स जा स ग अयुग्मे;
केतुमती भ रा न ग ग युग्मे.

विलोमे केतु जुवो अंक १८

७ **सुंदरी[1], सुरमालिका, कमला, वियोगिनी.** { १,३. स स ज ग.=१० सहजा.४६८ ; २,४. स भ र ल ग =११ सींधु. ९९९.

विषमे स स जा ग सुंदरी;
कमला सा भ र ला ग थी ठरी.

१ प्राकृत पिंगळसूत्रमा केहछे के —

अयुजो यदि सौ लगौ[1] पुनः
समयोः स्भौ रलगाश्च सुन्दरी.

१ एमा लगौ छे त्या जगौ जोइये तेमज छंदोमजरीमां छे के —

अयुजो यदि सौ जगौ युजो;

समरागौ[२] यदि सुन्दरी तदा.

२ एमां गौ छे तेने बदले ल्गौ जोइये.

वृत्तरत्नाकरनी टीपमा केहेछे के —

विषमे यदि सौ जगौ समे;

स्तर[३]लागोऽपरवक्त्रमीरितम्.

३ एमां स्तने बदले स्भ जोइये

आवी रचनाथी अपरवक्त्र बनेछे, पण अंक २७मा ते जूदा मापथी छे अने आ माप तो सुन्दरीने लागु पडेछे.

८ वेगवती. { १,३. स स स ग. =१० उदित. अंक ४४६
२,४. भ भ भ ग ग.=११दोधक,नीलसरूपी. ९८०

गण छे स स सा ग अयुग्मे,

वेगवती भ भ भा ग ग युग्मे.

विलोमे वर्गवती, जुवो अंक १९

९ सुधा. { १,३. म स ज ग =१० विराट, शुद्धविराट. ४६६
२,४. स भ र ल ग.=११ सीधु. अंक ५९९

ओजे थाय म सा ज गा खरे;

स भ रा ला ग सुधा समे करे.

{ १,३. म स ज ग.=१० विराट, शुद्धविराट. ४६६
२,४. न न र ल ग.=११ सुभद्रिका. ६०३

ओजे तो म स जा ग छे, समे

न न र ल करथा ग तो गमे.

विलोमे वैयाली, अंक २१

११ अरुन्तुद. { १,३. स स ज ग.=१० सहजा. ४६८
२,४. न ज ज र.=१२ मालती. ७३१

विषमे स स जा ग तो धरो,

न ज ज र युग्म अरुन्तुदे करो.

विलोमे अनूकृप जुवो अंक ३८

१२ संपातशीला. { १,३. त म र ग.=१० रूप १३३ | २,४. स न म य =१२ रूप ९७२ }

ओजे त मा रा गा छे रसीला;

स न मा य समभा संपातशीला.

विलोमे पातर्शीला थायछे, जुवो अंक. ३९

१३ अवनीलता, नवनीलता, अवलीलता. { १,३. स स ज ग.=१० महजा. ४६८ | २,४. स भ ज र.=१२ रूप १३२६ }

विषमे भ स जा ग तो गमे,

स भ जा रा थी अवनीलता समे.

विलोमे करीरिला. जुओ अंक ४०

१०,१३ नां रूप ८३,८८,६०८ थायछे.

१४ शुकावली. { १,३. त ज र ग. =१० सुमेरु. ४४० | २,४. म न ज र ग.=१३ प्रहर्षिणी. ८१६ }

ओजे त ज रा ग तो गमेछे,

मा ना जा र ग थी शुकावली समे छे.

विलोमे किंशुकावली, जुवो अंक ६०

१५ जारिणी. { १,३ न त त ग. =१० चरपद. ४९७ | २,४. र र न त ग. =१३ रूप २९१९ सुं }

विषममां ना त ता गा धरो,

जारिणीमां र रा न त ग आणी करो

विलोमे अलिपद, अंक ६१ मे जुवो

१०,१४ नां रूप १,६७,७७,२१६ थायछे.

१६ विलासवापी. { १,३. त ज र ग. =१० नमेरु. ४४०
२,४. स भ र ज ग ग.=१४ मदावदाता. ९३३

ओजे त ज रा ग छे तथापि;

सममां सा भ र जा ग गा विलासवापी.

विलोमे अकोषकृष्टा, जुवो अंक ७२.

११, १० नां रूप २०, ९७, १५२ थायछे.

१७ शुद्धविराट, कान्ता. { १,३. म स ज ग ग=११ विश्वविराट. ५६६
२,४. त ज र ग=१० नमेरु अंक. ४४०

ओजे शुद्धविराट मा स्ज गा गे;

ता जा र ग युग्म ठीक लागे.

विलोमे भद्रविराट जुवो अंक ५ मो

१८ केतु. { १,३. भ र न ग ग.=११ रूप. ४७१
२,४. स ज स ग. =१० रूप. २३६

छे प्रथमे भ रा न ग ग त्रीजे,

स ज सा ग केतु सम कीजे.

विलोम करतां केतुमती थायछे, जुवो अंक ६

१९ वर्गवती { १,३. भ भ भ ग ग.=११ दोधक. अंक. ५८०
२,४. स स स ग.=१० उदित. अंक. ४४६

वर्गवती भ भ भा ग ग ओजे,

करजो स स सा ग अनोजे.

विलोम करतां वेगवती थायछे जुवो अंक ८

२० असुधा. { १,३. स भ र ल ग.=११ सीधु. ५९९
२,४. म स ज ग. =१० विराट. अंक. ४६६

असुधा सा भ र ला ग ओजमां;

मा सा जा ग धरो अनोजमां.

विलोमे सुधा अंक ९

२१ वैयाली. { १,३. न न र ल ग.=११ सुभद्रिका. ६०२
२,४. म स ज ग. =१० विराट. अंक. ४६६ }

न न र ल ग अयुग्ममां गमे;
वैयाली म स जा ग थी समे.
विलोमे करवा जुवो अंक १०

११, १२ नां रूप ८३,८८,६०८ थायछे

२२ द्रुतमध्या. { १,३. भ भ भ ग ग. =११ दोधक. ५८०
२,४. न ज ज य. =१२ नामरस. ६९९ }

भो भ भ गा ग अयुग्म पदे छे;
न ज ज य युग्म विषे द्रुतमध्या.
अंक ४२ मे इहा छे तेनु विलोम

२३ हरिणीप्लुता, हरिणप्लुता. { १,३. स स स ल ग.=११ उपचित्र. ६०६
२,४. न भ भ र.=१२ द्रुतविलंबित. ७३७ }

स स सा ल ग छे विषमे पदे;
न भ भ रा समभा हरिणीप्लुता.

२४ कोरकिता. { १,३. भ भ भ ग ग =११ दोधक. ५८०
२,४. न य न य.=१२ कुसुमविचित्र. ७११ }

कोरकिता भ भ भा ग ग ओजे;
न य न य आवे चरण अनोजे.
अंक ४३ ना पाटलिकानु विलोम

२५ अपरवक्त्र. { १,३.न न र ल ग.=११ सुभद्रिका. अंक. ६०२
२,४. न न ज र.=१२ मालती. अंक. ७३१ }

[illegible]

न अपरवक्त्र न जा र छे समे.

जुवो पाछळ पृ. २१२ वैतालिय अथवा अपरवक्त्र तेना ६ ८ मात्रा, कही छे तेने बदले आंहि गण नक्की कर्या छे

२६ मालभारिणी, औपच्छंदसिक, वसन्तमालिका, परिश्रुता. { १,३. स स ज ग ग.=११ विमला. १६७ / २,४. स भ र य.=१२ बधिरा. ६८१ }

विषमे स स जा गं गा धरे छे;

सममां साभ्रय मालभारिणीमां.

अंक ४१ प्रमालिका अने सौरभसञ्चितत्तु विलोम

२७ उपाढ्य. { १,३. न स ज ग ग.=११ पंचशाखी. अंक. १७० / २,४. भ भ र य. =१२ ललधी. अंक. ६८२ }

न स ज ग ग थी उपाढ्य ओजे;

भा भ र या धरजो तमे अनोजे.

२८ हरिलुप्ता. { १,३. स स स ल ग. =११ उपचित्रा. अंक. ६०६ / २,४. स भ भ र. =१२ राधिका. अंक. ७२६ }

विषमे स स सा ल ग ए गमे;

हरिलुप्ता स भ भा र थकी समे.

विलोम लुप्ता जुवो अंक ४७

२९ विमानिनी. { १,३. स भ र ल ग. =११ सिंधु. ५२९ / २,४. स न ज र. =१२ रून. १४०१ }

स भ रा ला ग विमानिनी विषे;

मा ना जा र स्मविषे बधे दिसे.

३० अनुराढ्या. { १,३. म स ज म ग. =११ विश्वविराट्. / २,४. न न र य. =[illegible] विनया. }

मा मा ना ग ग ओजमां गमेछे:

न न र य असुराढ्यमां समे छे.

विलोमे सुराढ्या जुवो अंक ४४.

३१ किलिकिता, { १,३. र न र ल ग. =११ रथोद्धता. ६००

किलकिता. { २,४. न भ ज र. =१२ प्रियंवदा. ७३३

रा न रा ल ग कराय ओजमां;

किलकिता न भ ज रा अनोजमां.

३२ क्रिमटक. { १,३. त ज ज ल ग. =११ मोटनक. ६२०
{ २,४. स स स स. =१२ तोटक. ७५३

ओजे त ज जा ल ग आप धरो;

सम क्रिमटके स स सा स करो.

अंक ४५ मे नटक छे ते आ वृत्तनु विलोम छे

३३ साचीकृतवदना. { १,३. न य भ ग ग.=११ श्रुतकीर्त्ति. ५७६
{ २,४. त न भ स =१२ रूप. १९८१

न य भ ग गा आणो कवि ओजे,

साचीकृतवदना त न भ स थी.

विलोमे अवाचीकृतवदना थायछे, जुवो अंक ४६

३४ कमलाकर. { १,३. भ भ भ ग ग.=११ दोधक. ५८०
{ २,४. भ न ज य. =१२ पथिकान्ता. ७०९

छे कमलाकर भा भ भ गा गे;

भा न ज य पद समे ठिक लागे.

विलोमे कुसुमध्वर, जुवो अंक ४८

३५ शिशिरशिखा. { १,३. न न र ल ग.=११ सुभद्रिका. ६०३
{ २,४. न ज ज र.= १२ मालति. ७३१

न न र ल ग अयुग्ममां गमे,

शिशिरशिखा, न ज जा र थी समे. ९,७ यति.

विलोमे मृदुमालति. जुवो अंक ४९

३६ उपोद्गता, फलिताग्र. { १,३. स स ज ग ग.=११ विनला. ५६७ / २,४. स भ र य. =१२ बधिरा. ६८१ }

विषमे स स जा ग गा गमेछे;

स भ रा या थी उपोद्गता समे छे.

विलोमे एनु एज नाम रेहेछे

११,१२ नां रूप १,६७,७७,२१६ थायछे.

३७ वद्धास्य. { १,३. म भ न ल ग.=११ भ्रमरविलसिता ६३९ / २,४. स स न न ग.=१२ वरिवसिता. ८८९ }

ओजे आणो म भ न ल ग तमे;

स वधास्य रचाय स न न ग समे.

विलोमे कामाक्षी, जुवो अंक ६२.

१२,१० नां रूप ४१,९४,३०४ थायछे.

३८ अनूकप. { १,३. न ज ज र.=१२ मालती. ७३१ / २,४. स स ज ग =१० सहजा. ४६८ }

विषम विषे न ज जा र तो खपे;

स स जा ग समे अनूकपे.

विलोमे अरुन्तुद, जुवो अंक ११

३९ पातशीला. { १,३. स न म य =१२ रूप. ५७२ / २,४. त म र ग =१० रूप. १३३ }

विषमे स न म या थी पातशीला;

ता मा र गा युग्मे आण कीला!

संपातशीलानुं विलोम, जुवो अंक १२

४० करीरिता. { १,३. स भ ज र.=१२ रूप. १,२९६
२,४. स स ज ग.=१० सहजा ४६८ }

विषमे सा भ ज र लावजो तमे;
स स जा ग करीरिता समे.

विलोमे अवनीलता, जुवो अंक. १३

१२,११ नां रूप ८३,८८,६०८ थायछे.

४१ सौरभसंचित, प्रमालिका. { १,३. स भ र य. =१२ वभिरा. ६८१
२,४. स स ज ग ग.=११ विमला. ५६७ }

स भ रा सौरभसंचिते य ओजे,
स स जा ग ग थायछे अनोजे.

विलोमे परिश्रुता, जुवो अक, २६

४२ इहा. { १,३. न ज ज य. =१२ तामरस. अंक. ६९९
२,४. भ भ भ ग ग.=११ दोधक. अंक. ५८० }

न ज ज य थाय सदाय अयुग्मे;
भा भ भ आण इहा ग ग युग्मे.

अंक २२ मे द्रुतमध्या छे तेनु विलोम

४३ पाटलिका. { १,३. न य न य. =१२ कुसुमविचित्रा. ७११
२,४. भ भ भ ग ग.=११ दोधक. ५८० }

न य न य आणो चरण अयुग्मे;
भा भ भ पाटलिका ग ग युग्मे.

अक २४ मे कोरकिता छे, तेनु विलोम.

४४ सुराढ्या. { १,३. न न र य. =१२ परिमितविजया. ६८३
२,४. म स ज ग ग.=११ विश्वविराट. ५६६ }

न न र य विषमे रचो सुराढ्या;

युग्मे मा स ज मा ग थाय, भाई!

अंक ३० में असुराढ्यानुं विलोम.

४५ नटक. { १,३. स स स स. =१२ तोटक. ७५३
२,४. त ज ज ल ग.=११ मोटनक. ६२०

विषमे स स सा स धरो नटके;

ता जो ज ल गा सम पाद टके.

अंक ३२मे किंनटक छे तेनु विलोम.

४६ अवाचीकृतवदना. { १,३. त न भ स.=१२ रूप. १,९८१
२,४. न य भ ग ग.=११ श्रुतकीर्त्ति. ५७६

ता ना भ स अर्वाचीकृतवदना;

समपदमां ना या भ ग गा छे.

अंक ३३मे स्वाचीकृतवदना छे तेनु विलोम

४७ लुप्ता. { १,३. स भ भ र.=१२ राधिका. अंक. ७३६
२,४. स स स ल ग.=११ उपचित्रा. अंक. ६०६

स भ लुप्ता भ र तो विषमे करो;

स स सा ल ग युग्म पदे धरो.

अंक २८मे हरिप्लुता छे तेनु विलोम

४८ कुसुमचर. { १,३. भ न ज य.=१२ पथिकान्ता. ७०९
२,४. भ भ भ ग ग.=११ दोधक. ५८०

छे कुसुमचर भ ना ज य ओजे;

छे भ भ भा ग ग पाद अनोजे.

अंक ३४मे कमलाकर छे तेनु विलोम.

४९ मृदुमालती. { १,३. न ज ज र.=१२ मालती. अंक. ७३१
२,४. न न र ल ग.=११ सुभद्रिका. ६०३

न ज ज र थी मृदुमालती बने,

न न र ल ग धरो तमे समे.

अंक ३५ शिशिरशिखा छे तेनुं विलोम

१२,१३ नां रूप ३,३९,९४,४३२ थायछे.

९० पुष्पिताग्रा.	१,३. न न र य. =१२	परिमितविजया.	६८३
	२,४. न ज ज र ग=१३	मृगेन्द्रमुख.	८१९

न न र य पद एकी पुष्पिताग्रा,

न ज ज र गा रचजो तमे समे तो.

जुवो पृ २१४ औपच्छंदसिक

अक ६३ मे अपिताग्रा छे ते आनु विलोम छे

९१ मृगी, यवानी.	१,३. र ज र ज.=१२	पंचचामर.	७८९
	२,४. त र ज र ग.=१३	रूप.	१,३६९

रा ज रा ज छे मृगी अयुग्म पाद,

ता रा ज रा ग छे अनोज पादमाहे

९२ वाङ्मती[1], यमवती, जममती, अमरावती, परावती, धवमती[2], यवामती.	१,३. र ज र ज.=१२	पंचचामर	७८९
	२,४. ज र ज र ग=१३	रूप	१,३६६

वाङ्मती र जा र जा अयुग्ममांहि,

समे धरो ज रा ज रा ग प्रीति आणी.

अमरावतीनु विलोम करवाथी एज नाम रहेछे एम वाग्वल्लभमा कह्युं छे

१ छंदोलता प्रमाणे. २ वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां 'स्याद् युग्मके रजौ रयौ' एम पाठ छे, पण जनार्दन अने अवधूरि टीकावाळा मूळपाठमा 'रजौ रजौ' एवो पाठ छे ते खरो छे. शब्दकल्पद्रुममा उपरना पाठ उपरथी विषम पदमा र ज र य मूकीने भूल खाधी छे.

५३ अप्रमाथिनी. { १,३. स भ र य.=१२ वधिरा. अंक ६८१
{ २,४. न ज ज र ग.=१३ मृगेंद्रमुख. ८१५

स भ रा या थकी अप्रमाथिनी छे;
न ज ज र गा कथनी अनोजनी छे.

विलोमे प्रमाथिनी, अंक ६४

५४ पद्मावती. { १,३. त भ ज य. =१२ नीरान्तिक. ७०२
{ २,४. स ज स म ग.=१३ कलहंस. ८२३

पद्मावती त भ ज य्था थकी ओजे;
रचजो सदा स ज स सा ग अनोजे.

५५ चमूरुभीरु. { १,३. र न ज र. =१२ रूप. १,४०३
{ २,४. स न ज र ग. =१३ रूप. १,४०४

ओजमां र न ज र थायछे शिरु;
स न जा र ग समथी चमूरुभीरु.

विलोमे चमूरु. अंक ६६.

५६ वेदवाणी. { १,३. म स ज म. =१२ रूप. ३४५
{ २,४. स भ र य ग. =१३ रूप. ६९२

ओजे पक्ति म सा ज मा वखाणी छे;
सममां सा भ र या ग वेदवाणी छे.

विलोम करवामा आवे तोपण वेदवाणी नाम रहेछे

५७ मंजुसौरभ. { १,३. न ज ज र.=१२ मालती. अंक
{ २,४. स ज य ज ग.=१३ रूप.

विषम पदे न ज जा र थाय छे;
सम मंजुसौरभ सा जा य जा ग छे.

तरत्नाकरमा नीचे प्रमाणे छे

यदि विषमे भवतो नजौ जरौ,

स ज या समे ज गुरु मञ्जुसौरभम

बीजो पाठ शब्दकल्पद्रुममा छे.

स ज य: समेतु जगौ मञ्जुसौरभम्

आ उपरथी जणाय छे के छंदोमंजरीनी टीपमा "स ज गा: समेतु ज गुरु" एम छे तेमा गा: ने ठेकाणे या: जोइये.

१२,१५ नां रूप १३,४२,१७,७२८.

८ शरावती. { १,३. न न र य. =१२ परिमितविजया. ९८३
 { २,४. स भ न ज र.=१५ रूप. ११,२५२

विषम पद न ना र या थकी छे;

सममां सा भ न ज र थी बने शरावती.

विलोमे बृहच्छरावती, जुवो अंक ८१

१२,१६नां रूप २६,८४,३५,४५६ थायछे.

९. अहीनताली. { १,३. म न ज र. =१२ रूप. १,४०१
 { २,४. स भ स ज र ग.=१६ रूप. १,९९६

ओजे छे म न ज र पाद मोह तो;

स भ सा जा र ग सममां धरखे अहीनताली.

विलोमे हीनताली, अंक ८४

१३, १०नां रूप ८३,८८,६०८ थायछे.

१० किंशुकावली. { १,३. म न ज र ग.=१३ महर्षिणी. ८१६
 { २,४. त ज र ग.=१० नमेरु. ४४०

ओजे पंक्ति म न ज रा ग नी भली छे;

ता जा र ग किंशुकावली छे.

शुकावलीनु विलोम, जुवो अंक १४

अलिपद. { १,३. र र न त ग.=१३ रूप. २,५१५
 { २,४. न त त ग. =१० चरपद. अंक: ४५७

ओजमां रा र ना आलिपदे ता ग छे;
सम पदे तो न ता ता ग छे.

अक १५ मे जारिणी छे तेनुं विलोम.

१३,११ नां रूप १,६७,७७,२१६ थायछे.

६२ कामाक्षी.
{ १,३. ससननग. =१३ वरिवशिता. ८८९
{ २.४. मभनलग. =११ भ्रमरविलसिता. ६३९

चरणे स स ना न ग धर असमे;
कामाक्षी मा भ न ल ग थी समे.

वद्धास्यनु विलोम, जुवो अक ३७

१३,१२ नां रूप ३,३५,५४,४३२ थायछे.

६३ अंचिताग्रा
१,३. { न ज ज र ग.=१३ मृगेन्द्रमुख. ७१९
२,४. { न न र य.=१२ परिमितविजया.६८३

न ज ज र गा विषमेथी अंचिताग्रा;
न न र य सम पाद अंचिताग्रा.

अंक ५० मे पुष्पिताग्रा छे तेनु विलोम

६४ प्रमाथिनी.
{ १.३. न ज ज र ग.=१३ मृगेन्द्रमुख. ८१९
{ २,४. स भ र य.=१२ वभिरा. ६८१

न ज ज र गा विषमे प्रमाथिनीयां;
सममां सा भ र या कराय सीधा.

अक ५३ मे अप्रमाथिनो छे तेनु विलोम

६५ मितभाषिणी.
{ १,३ स ज स ज ग.=१३ मंजुभाषिणी.८५८
{ २,४. स ज स स.=१२ प्रमिताक्षरा. ७५४

मितभाषिणी स ज स जा ग विषमे
स ज सा स छे चरण मांह समे.

६६ चमूरु. { १,३. स न ज र ग =१३ रूप १,४०४
२,४. र न ज र. =१२ रूप १,४०३

विषमे स न ज र गा चमूरु आणो;
रा न जा र सम पदे धरो तमे.

अंक ५५ मे चमूरुभीरु छे तेनु विलोम

१३,१४ नां रूप १३,४२,१७,७२८ थायछे.

६७ आलेपन. { १,३. न त त त ग. =१३ परिवृढ. ८४०
२,४. न भ य य ल ग.=१४ रूप ४,७२८

विषममां ना त ता ता ग आलेपने,
समपदे गण न भा या य ला गा बने.

विलोमे अनालेपन थायछे, जुवो अंक ७४

६८ प्रतिविनीता. { १,३. न य ज र ग. =१३ रूप १,३६०
२,४. स भ र न ग ग.=१४ रूप ३,७६४

विषमविषे ना य जा र गा धरोजी;
सममां सा भ र ना ग गे प्रतिविनीता.

विलोमे अतिप्रतिविनीता, जुवो अंक ७५

६९ मदाक्रान्ता. { १,३. स स ज र ग =१३ जगतसमानिका. ८१२
२,४. म स ज र ग ग=१४ रूप १,३६९

विषमे धरजो स सा ज रा ग कान्ता!
बेकीमा म स जा र गा ग थी मदाक्रान्ता.

विलोमे संमदाक्रान्ता, जुवो अंक ७६

७० लास्यलीलालय. { १,३. त य र र ग=१३ भाजनशीला. ८०९
२,४. भ स त त ग ग=१४ पुष्पशकटिका ९२९

ता या र र गा आ ओज केरा पदे छे;

आ स त त ग गा आ लास्यलीलालये छे.

विलोमे लास्यलीला, जुवो अंक ७७.

१३, १६नां रूप ५३,६८,७०,९१२ थायछे.

७१ परश्रीणिता. { १,३. न न त त ग.=१३ चंद्रिका. ८४
२,४. न न स त त ग.=१६ रूप १८,६९

न न त त ग धरो ओज पादे तमे;

न न स त त ग परश्रीणिता रचोजी समे.

विलोमे अपरश्रीणिता, अंक ८५.

१४,१०नां रूप १,६७,७७,२१६ थायछे.

७२ अकोषकृष्टा. { १,३ स भ र ज ग ग=१४सदावदाता.९३३
२,४. त ज र ग. =१० नमेरु. ४४०

स भ रा जा ग ग ओजमां अकोषकृष्टा;

ता जा र ग छे अनोज दृष्टा.

विलोमे विलासवापी, जुवो पाछळ अंक ५६.

१४,१२ नां रूप ६,७१,०८,८६४ थायछे.

७३ षट्पद. { १,३. भ र ज र ग ग. =१४ रूप १,३६७
२,४. र ज र य. =१२ रूप ९८३

षट्पद भा र जा र गा ग ओजमां आवे;

रा ज रा य पाद तो समे समावे.

१४,१३ नां रूप १३,४२,१७,७२८ थायछे.

७४ अनालेपन. { १,३. न भ य य ल ग.=१४ रूप ४,७२८
२,४. न त त त ग. =१३ परिवृढ. ८४१

विषममां न भ य या ल गा अनालेपने;

समविषे आ न ता ता त गा तो बने.

आलेपन अंक ६७ मे छे तेनु विलोम.

७५ अतिप्रतिविनीता. { १,३. स भ र न ग ग =१४ रूप ३,७६४
२,४. न य ज र ग.=१३ रूप १,३६०

स भ रा छे न ग गा अतिप्रतिविनीता;
समपदमां ना य जा र गा विनीता.

प्रतिविनीतानु विलोम, जुओ अंक ६८

७६ संमदाक्रान्ता { १,३. म स ज र ग ग.=१४ जगतसमानिका. ८१२.
२,४. स स ज र ग.=१३ रूप १,३६९

ओजे छे म स जा र गा ग संमदाक्रान्ता;
सममां स स जा र गा धराय शान्ता!

मदाक्रान्तानुं विलोम, जुवो अंक ६९

७७ लास्यलीला. { १,३. भ स त त ग ग.=१४ पुष्पशकटिका. ९२५
२,४. त य र र ग.=१३ भाजनशीला. ८०५

छे विषम विषे भा सा त ता गा ग कीला!
ता या र र गा छे युग्ममां लास्यलीला.

लास्यलीलालयनु विलोम, जुवो अंक ७०.

१४,१५नां रूप ५३,६८,७०,९१२ थायछे.

७८ प्रमोदपरिणीता. { १,३. न न र ज ग ग.=१४ रूप २,७५२
२,४. न ज ज भ य.=१५ रूप ७,५३६

विषम चरण ना न रां ज गा ग गीता;
न ज ज भ याथीं समे प्रमोदपरिणीता.

विलोमे प्रमोदपद, जुवो अंक ८२.

७९ अवरोधवनिता. { १,३. न भ भ र ल ग.=१४ रूप ५,५६०
२,४. स स ज भ य.=१५ रूप ७,५१६

विषम पादविषे न भ भा र ला ग छे;
अवरोधवनितमां समे स स ज भा या.

अक ७३७ मे द्रुतविलंबित छे तेना पाद उपर ल ग वधारवाथी आना विषम पद थायछे विलोममा पण आ नाम रेहेछे.

१४,१८ नां रूप ४,२९,४९,६७,२९६ थायछे.

८० मातंगी, { १,३. स न स न ग ग. =१४ रूप. ३,८३७
मार्दंगी. { २,४. म न ज न न य. =१८ रूप. ६९,४०१

स न छे स न पर ग गा कवि! अयुग्मे,
मातंगी म न पर जा न पर न य चरण युग्मे.

विलोम थता पण एज नाम रेहेछे

१५,१२, नां रूप १३,४२,१७,७२८ थायछे.

८१ बृहच्छरावती. { १,३ स भ न ज र.=१५ रूप ११,२६२
{ २,४ न न र य.=१२ परिमितविजया. ६८३

विषमे सा भ न ज र थी बृहच्छरावती;
न न र य सम पादमां धरेछे.

शरावतीनु विलोम, जुवो अक ५८

१५,१४ नां रूप ५३,६८,७०,९१२ थायछे.

८२ प्रमोदपद. { १,३. न ज ज भ य. =१५ रूप. ७,५३६
{ २,४. न न र ज ग ग. =१४ रूप. २,७५२

न ज ज भ या करजो प्रमोदपद ओजे,
सम चरण न ना र जा ग गा अनोजे.

विलोमे प्रमोदपरिणीता, जुवो अक ७८.

१५,१६ नां रूप २,१४,७४,८३, ६४८. थायछे.

८३ आसन्नवासिता. { १,३. न भ र र य.=१५ रूप ९,३०४
{ २,४. स भ र ज स ग.=१६ रूप १९,०१८

विषममां न भ छे र रा अन्त या कवेछे;

समयांहे स भ छे रजा पछी स ग पदे छे

१ वाग्वल्लभमा नीचे प्रमाणे छे

न भ रा श्च विषमे र्यौ यदा समे चेत्;

स भ रा आसनवासिता जसौ च गुरु रेषा.

विषम पादमां न भ र र य =१५

समपादमां स भ र ज स ग =१६

उपरनी कविताना रचना प्रमाणे तो विषम पदमां चौद वर्ण ने स न र ज ग ग=१४ थायछे, एमां भूल छे. प्रथम नगण जोइये पण ते थतो नथी.

विलोमे अनासववासिता थायछे, जुवो अंक ८६

१६,१२ नां रूप. २६,८४,३९,४५६ थायछे.

८४ हीनताली. { १,३. स भ स ज र ग.=१६ रूप. १०,९९६
२,४. म न ज र. =१२ रूप. १,४०१ }

विषमे सा भ स ज र गे रचाय हीनताली;

आवेछे म न ज र युग्ममां सदा.

अहीनतालीनुं विलोम, अंक ५९

१६,१३ नां रूप. ५३,६८,७०,९१२ थायछे.

८५ अपरप्रोणिता. { १,३. न न स त त ग.=१६ रूप. १६,६८८
२,४. न न त त ग.=१३ चंद्रिका. ८४३ }

न न स अपरप्रोणिता ता ता ग छे ओजमां,

न न त त ग अनोजे रचो मोजमां.

परप्रोणितानुं विलोम जुवो अंक ७१

८६ अनासववासिता. { १,३ स भ र ज स ग.=१६ रूप.१९,०२८
२,४. न भ र र य.=१५ रूप. ९,२०४ }

स भ ने रा ज पछी सगा कराय असमे तो;
न भ अनासववासिता रा र या समे तो.
आसववासिताउ विलोम, जुवो अंक ८३

१८,१९नां रूप. १,३,७,४३,८९,५३,४७२.

८७ रणोदय. { १,३. मस+सर+र म. =१८ रणशूर. १,१५०
२,४ जम+भम+तय+ग.=१९ रूप. ९२,६१४ }

मा सा ने स र नी पर रा मा, गणो ओज पादे आवे;
रणोदये जा मा ने भ भ छे, त य अन्ते ग समे लावे.

रण+उदय=रणोदय—रणछोडभाइ उदयराम एवु नामसूचक आ वृत्त नवु कल्प्यु छे.

भैरव रागमा गवायछे; तेमज लावणीने रागे पण गाइ शकायछे.

८८ कलिकाललिता. { १,३ स भ त य स भ ग ग=२०रूप२०९७१६
२,४ स भ त य स स=१८रूप१११४१ }

प्रथमे ने पद त्रीजे स भ ता या स भ गा गा धरजोजी;
स भ ता या स स आणो समपादे कलिकाललिता.

असंकीर्ण.

१०,१०नां रूप १०,४७,५५२ थायछे.

८९ प्रभासिता. { १,३. स स ज ग.=१० सहजा. अंक ४६८
२,४. म स ज ग.=१० विराट,शुद्धविराट.४६६ }

विषमे स स जा ग तो गमे;
मा सा जा ग प्रभासिता समे.

९० अतैल. { १,३. ज त त ग.=१० त्रिशालप्रभ. अंक ४५६
अत्तिल. २,४. त त त ग.=१० त्रिशालान्तिक. अंक ४५५ }

अतैल ओजे ज ता ता ग छे;

ता ता त गा युग्मनां पाद छे.

विलोमे विश्वप्रभा, जुवो अंक ९१

९१ विश्वप्रभा. { १,३. त त त ग.=१० विशालान्तिक. अंक ४५५
२,४. ज त त ग.=१० विशालप्रभ. अंक ४५६

ओजे त ता ता ग आण्या गमे;
ज ता त विश्वप्रभा गा समे.

अतैजनु विलोम, जुवो अंक ९०.

९२ आलोलघटिका { १,३. स स ज ग.=१० सहजा. अंक ४६८
२,४. त स ज ग.=१० अहिला. अंक ४६९

विषमे स स जा ग थायछे;
आलोलघटिका त स जा छे.

विलोमे लोलघटिका थायछे, जुवो अंक ९३

९३ लोलघटिका, घटिका. { १,३. त स ज ग.=१० अहिला. अंक ४६९
२,४. स स ज ग=१० सहजा. अंक ४६८

ओजे त स ज गा पदे गमे;
घटिका स स जा ग थी समे.

आलोलघटिकानु विलोम, जुवो अंक ९२.

११,११ नां रूप ४१,९२,२५६ थायछे.

९४ उपचित्र, उपचित्रा. { १,३. स स स ल ग.=११ उपचित्र. अंक ६०६
२,४. भ भ भ ग ग. =११ दोधक. अंक ९८०

विषमे स स सा ल ग आणजो;
भा भ भ गा ग समे उपचित्रे.

इहाना समपद ते आना समपद छे.

द्रुतमध्याना विषम पद ते आना समपद छे

अवाहित्र-त्रा अंक ९५मे छे, तेनुं विलोम.

९५ अवहित्र, { १,३. भ भ भ ग ग.=११ दोधक. अंक १८०
अवहित्रा. { २,४. स स स ल ग.=११ उपचित्र. अंक १०६

भा भ भ गा ग धरो विषमे तो;
अवहित्र स सा स ल गा युजे.

अंक ९४ उपचित्र, उपचित्रानु विलोम.

९६ आख्यानकी. { १,३. त त ज ग ग.=११ इंद्रवज्रा. १७१
{ २,४. ज त ज ग ग.=११ उपेंद्रवज्रा. १७२

आख्यानकी ता त ज गा ग ओजे;
ज ता ज गा गा करजो अनोजे.

आना उलटाने विपरीताख्यानकी केहेछे जुवो अंक ९७.
आ अने एना पछीनो भेद उपजातिनी अंदर आवी शकेछे, तो
पण ते विशेष नाम बतावबाने अहिं ग्रहण करवामां आव्या छे.

९७ विपरीताख्यानकी. { १,३. ज त ज ग ग.=११ उपेंद्रवज्रा. ९७
{ २,४. त त ज ग ग.=११ इंद्रवज्रा. ९७

विलोम आख्यानकीनुं प्रमाणो;
आख्यानकी ए विपरीत जाणो.

आख्यानकीनु विलोम, जुवो अंक ९६

९८ सारिका. { १,३. र न र ल ग. =११ रथोद्धता. ६००
{ २,४. र न भ ग ग. =११ स्वागता. १८२

ओजमां र न र ला ग सारिका;
युग्ममा र न भ गा ग धरेछे.

कर्णिनी अंक ९९मे छे तेनु विलोम.

९९ कर्णिनी. { १,३. र न भ ग ग. =११ स्वागता १८२
{ २,४. र न र ल ग.=११ रथोद्धता. ६००

कर्णिनी विषम रा न भ गा गे;
आणजो र न र ला ग युग्ममां.

सारिका अंक ९८मे छे, तेनु विलोम.

१०० शालभञ्जिका. { १,३. स न र ल ग. =११ प्रतारिता. ६०१
२,४. भ त र ल ग =११ रूप ६७९ }

स न रा ल ग थी ओज तो गमे;
भा त्र ल गा शालभंजिका समे.

करभोद्धता, अंक १०१मे छे तेनु विलोम

१०१ करभोद्धता. { १,३. भ त र ल. ग. =११ रूप ६७९
२,४. स न र ल ग. =११ प्रतारिता. ६०१ }

ओज विषे भा त रा ल गा गमे;
स्न र ला ग करभोद्धता समे.

शालभंजिका अंक १००मे छे, तेनु विलोम

१०२ समयवती. { १,३. त न त ल ग. =११ रूप ८२९
२,४. स म न ल ग. =११ रूप ९६४ }

तानातलग करो ओज गति;
स्मनलागा युग्मे समयवती.

अयवती अंक १०३मे छे तेनु विलोम

१०३ अयवती. { १,३. स म न ल ग.=११ रूप ९६४
२,४. त न त ल ग.=११ रूप ८२९ }

समनालागा ओज पद गमे,
तानात अयवती लाग समे.

समयवती अंक १०२मे छे तेनु विलोम.

१०४ औपगव. { १,३. न र र ल ग =११ कनकमंजरी. ललित. ९९७
२,४. भ र र ल ग. =११ वारयात्रिक. ९९६ }

विषममां न रा, रा ल गा गमे, (६,५ यति)
औपगवे भ रा रा लगा समे.

औपगवीतनु विलोम, अंक १०६

१०५ शिशुलीला. { १,३. स स ज ग ग =११ विमला. ५६७
२,४. स र ज ग ग. =११ रूप ३४०

विषमे रचजो ससाजगागा;
शिशुलीला समे सराजगागा.

१०६ औपगवीत. { १,३. भ र र ल ग.=११. वारयात्रिक. अंक ५९६
२,४. न र र ल ग.=११. ललित. अंक ५९७

औपगवीतमां भा र रा ल गा;
समविषे करो ना र रा ल गा.

औपगवनुं विलोम, जुवो अंक १०४.

१२,१२ नां रूप १,६७,७३,१२० थायछे.

१०७ कौमुदी. { १,३. न न भ भ.=१२ रूप. ३,४८०
२,४. न न र र.=१२ चपलाक्षिका. अंक ७२१

न न भ भ विषमे करजो कवि!
न न र र सममां धरवे कौमुदी.

१०८ उपसरसीक. { १,३ स भ ज य.=१२ शरमेया. अंक ७०१
२,४. त भ ज य.=१२ नीरान्तिक. अंक ७०२

स भ जा उपसरसीक य आवे;
ता भा ज या युज विषे कवि लावे.

सरसीकनुं विलोम, जुवो अंक १०९.

१०९ सरसीक. { १,३. त भ ज य.=१२ नीरान्तिक. अंक ७०२
२,४. स भ ज य.=१२ शरमेया. अंक ७०१

ता भा ज या थी सरसीक अयुग्मे;
स भ जा या कवि! पदे कर युग्मे.

उपसरसीकनुं विलोम जुवो, अंक १०८.

११० अर्भकपंक्ति. { १,३. स भ र य. =१२ वधीरा. ६८१
२,४. भ भ र य. =१२ वल्भी. ६८२ }

विषमे सा भ र या धरो तमे तो;
अर्भकपंक्ति भ भा र या समे तो.
उलपोटा अंक १११ मे छे तेनु विलोम.

१११ उलपोटा. { १,३. भ भ र य. =१२ वल्भी. ६८२
२,४. स भ र य. =१२ वधीरा. ६८१ }

ओज भ भा र य थायछे अयुग्मे;
उलपोटा स भ रा य थाय युग्मे.
अर्भकपंक्तिनु विलोम, जुवो अंक ११०

१३,१३ नां रूप ६,७१,००,६७२ थायछे.

रुचिमुखी. { १,३. न न स स ग.=१३ चण्डी. ८२९
२,४. न न भ स ग.=१३ त्रिधुरवितान.८३४ }

न न स स ग रुचिमुखी विषमे तो;
न न भ स ग धराय पद समे तो.
विमुखीनु विलोम अंक ११३

११३ विमुखी. { १,३. न न भ स ग.=१३ त्रिधुरवितान. ८३४
२,४. न न स स ग.=१३ चण्डी. ८२९ }

न न भ स ग अयुग्म पद मुखी छे;
न न स स ग सम पदे विमुखी छे.
रुचिमुखीनु विलोम अंक ११२.

११४ भुजङ्गभृता. { १,३. स स स स ग.=१३ तारक. ८२२
२,४. भ भ भ भ ग.=१३ कर्मठ. ८७९ }

विषमे रचजो स स सा स ग भाई!

भा भ भ भा ग समेर्थो भुजंगभृता.

विलोमे अनंगपद, जुवो अंक ११५.

११५ अनंगपद. { १,३. भ भ भ भ ग. =१३ कर्मठ. ८७९
२,४. स स स स ग. =१३ तारक. ८१२ }

ओज भ भा भ भ गा र्थो अनंगपदे;

कवियो समर्मा स स सा स ग आणो.

भुजंगभृतानु विलोम अंक ११४

११६ सुरहिता. { १,३. न न स स ग. = १३ चण्डी. ८२९
२,४. त न न न ग. = १३ रूप. ४,०९२ }

विषम चरण न न सा स ग आण्ये;

ता ना न न ग समथर्को सुरहिता.

अतिसुरहितानु विलोम अंक ११७.

११७ अतिसुरहिता. { १,३. त न न न ग=१३ रूप ४,०९२
२,४. न न स स ग.=१३ चण्डी. ८२९ }

ओजे त न न न ग अतिसुरहिता;

न न स स ग समपदे रचजो जी.

सुरहितानु विलोम अंक ११६.

११८ मधुवारी. { १,३. स ज स ज ग.=१३ मंजुभाषिणी. ८
२,४. त भ र स ल.=१३ अट्टासिनी. ८ }

स ज सा ज गा र्थो मधुवारी ओज छे;

ता भा र सा ल समे रचो कवि! आप.

निर्मधुवारीनु विलोम, जुवो अंक ११९.

११९ निर्मधुवारी. { १,३. त भ र स ल.=१३ अट्टासिनी. ८९९
२,४. स ज स ज ग =१३ मंजुभाषिणी. ८९८ }

ता भा र सा ल र्थो ओज निर्मधुवारी;

समसां स जा स ज ग थायछे खरे.

मधुवारीनु विलोम अंक ११८

१२० धीरावर्त्त. { १,३. म त य स ग.=१३ मत्तमयूर,माया.८१९
२,४. म भ स म ग.=१३ लीलालोल. ७९४

मापे ओजे, मा त य सा गा कवि लावे, (४,९ यति)
धीरावर्त्ते, म भ स म गा युग्मे आवे. (४,९ यति)

विलोमे पण एज नाम रेहेछे

१२१ अर्द्धरुत. { १,३. भ न य न ल.=१३ पंकावली. अंक९०२
२,४. भ न ज ज ल.=१३ पंकवती. अंक९०१

अर्द्धरुत विषममां भा न य न ल;
युग्म चरण रचवां भ न जा ज ल.

विलोमे अल्परुत थायछे, जुवो अंक १२२.

१२२ अल्परुत. { १,३. भ न ज ज ल =१३ पंकवती अंक९०१
२,४. भ न य न ल.=१३ पंकावली. अंक९०२

अल्परुत भ न ज जा ल पदे धर;
युग्म चरण भ न या ना लथी कर.

विलोमे अर्द्धरुत, जुवो अंक १२१

१२३ कलना. { १,३. स ज स स ग =१३ कलहंस. अंक ८२३
२,४. स ज स ज ग.=१३ मंजुभाषिणी अंक८५८

विषमे स जा, स स ग थी कलना छे, (५,८ यति)
सममां स जा स ज ग तो रचायछे.

कलनावतीनु विलोम, जुवो अंक १२४

१२४ कलनावती. { १,३ स ज स ज ग.=१३ मंजुभाषिणी ८५८
२,४. स ज स स ग =१३ कलहंस. अंक८२३

कलनावती स ज स जा ग ओजमा,
सममां स जा स स ग आण सदा तुं.

कलना, अंक १२३ नु विलोम

भा भ भ भा ग समेथी भुजंगभृता.

विलोमे अनंगपद, जुवो अंक ११५.

११५ अनंगपद. { १,३. भ भ भ भ ग. =१३ कर्मठ. ८७९
२,४. स स स स ग. =१३ तारक. ८११

ओज भ भा भ भ गा थी अनंगपदे;
कवियो समयां स स सा स ग आणो.

भुजंगभृताथु विलोम अंक ११४

११६ सुरहिता. { १,३. न न स स ग. = १३ चण्डी ८२९
२,४. त न न न ग. = १३ रूप. ४,०९३

विषम चरण न न सा स ग आण्ये;
ता ना न न ग समथकी सुरहिता.

अतिसुरहितानु विलोम अंक ११७.

११७ अतिसुरहिता. { १,३. त न न न ग=१३ रूप. ४,०९३
२,४. न न स स ग.=१३ चण्डी. ८२९

ओजे त न न न ग अतिसुरहिता;
न न स स ग समपदे रचजो जी.

सुरहितानु विलोम अंक ११६

११८ मधुवारी. { १,३. स ज स ज ग.=१३ मंजुभाषिणी. ८
२,४. त भ र स ल.=१३ अट्टासिनी. ८..

स ज सा ज गा थी मधुवारी ओज छे;
ता भा र सा ल समे रचो कवि! आप.

निर्मधुवारीनु विलोम, जुवो अंक ११९.

११९ निर्मधुवारी. { १,३. त भ र स ल.=१३ अट्टासिनी. ८९९
२,४. स ज स ज ग =१३ मंजुभाषिणी. ८५८

ता भा र सा ल थी ओज निर्मधुवारी;

सममां स जा स ज ग थायछे खरे.

मयुवारीनु विलोम अंक ११८

१२० धीरावर्त्त. { १,३. म त य स ग = १३ मत्तमयूर, माया. ८१९
२,४. म भ स म ग. = १३ लीलालोल. ७९४ }

मापे ओजे, मा त य सा गा कवि लावे; (४,९ यति)

धीरावर्त्ते, म भ स म गा युग्मे आवे. (४,९ यति)

विलोमे पण एज नाम रेहेछे

१२१ अर्द्धरुत. { १,३. भ न य न ल. = १३ पंकावली. अंक ९०२
२,४. भ न ज ज ल. = १३ पंकवती. अंक ९०१ }

अर्द्धरुत विषममां भा न य न ल;

युग्म चरण रचवां भ न जा ज ल.

विलोमे अल्परुत थायछे, जुवो अंक १२२.

१२२ अल्परुत. { १,३. भ न ज ज ल. = १३ पंकवती. अंक ९०१
२,४. भ न य न ल. = १३ पंकावली. अंक ९०२ }

अल्परुत भ न ज जा ल पदे धर;

युग्म चरण भ न या ना लथी कर.

विलोमे अर्द्धरुत, जुवो अंक १२१

१२३ कलना. { १,३. स ज स स ग = १३ कलहंस. अंक ८२३
२,४. स ज स ज ग. = १३ मंजुभाषिणी. अंक ८१८ }

विषमे स जा, स स ग थी कलना छे; (५,८ यति)

सममां स जा स ज ग तो रचायछे.

कलनावतीनु विलोम, जुवो अंक १२४.

१२४ कलनावती. { १,३ स ज स ज ग. = १३ मंजुभाषिणी ८१८
२,४. स ज स स ग. = १३ कलहंस. अंक ८२३ }

कलनावती स ज स जा ग ओजमां,

सममां स जा स स ग आण सदा तुं.

कलना, अंक १२३ नु विलोम

शिशुसुखी न भ ज जा गुरु ओजमां;
पद विषे न भ स ज गा अनोजमां.

विलोमे अनिरया, अंक १२६.

१२६ अनिरया. { १,३. न भ स ज ग.=१३ विरोधिनी. ८६१
{ २,४. न भ ज ज ग.=१३ सारसनावली. ८७१

विषममां न भ स ज गा करो तमे;
अनिरया न भ ज जा ग धरो समे.

शिशुसुखीनु विलोम, जुवो अंक १२५.

१६,१६ नां रूप ४,२९,४९,०१,७६० थायछे.

१२७ वासववासिनी. { १,३ न ज भ ज ज ग=१६ रूप २३,४७२
{ २,४. त ज भ ज ज ग=१६ रूप २३,४६९

न ज भ ज जा ग ओज पद वासववासिनी;
युग्मे धरवा त जा भ ज ज गा पद वासिनी.

वर्ण १४मा अंक ९७९में कुररीरुता छे ते उपर ल ग वधारवाथी
आनु विषमपद थायछे

विलोमे वासिनी, अंक १२८.

१२८ वासिनी. { १,३ त ज भ ज ज ग.=१६ रूप २३,४६९
{ २,४. न ज भ ज ज ग.=१६ रूप २३,४७२

ता जा भ ज वासिनी विषममां ज ग को करे;
न ज भ ज जा ग माप समपाद विषे धरे.

वर्ण १४मा अंक ९७९मे "कुररीरुता" छे ते उपर ल ग वधार-
वाथी आनां समपद थायछे

विलोमे वासववासिनी, अंक १२७.

असम अथवा विषमवृत्त.

भिन्न भिन्न लक्षणवाळां, एटले जेनां चारे पाद विषम होय ते विषमवृत्त केहेवायछे; तेना संकीर्ण अने असंकीर्ण एवा भेद छे अने ते त्रण जातिना छे:—

१ पदचतुरूर्ध्व (अथवा पादचतुरूर्ध्व),

२ उद्‌गता, ३ उपस्थितप्रचुपित.

संकीर्ण.

१२९ पदचतुरूर्ध्व. { पद+चतुर+ऊर्ध्व=पदचतुरूर्ध्व. जेना पदमां चार चार वर्ण वधे एवुं, वळी जेमां लघु गुरुनो नियम नहि एवुं.

प्रथमे अक्षर आठ,

बीजे बारतणो रचायछे ठाठ;

त्रीजामां अक्षर सोळ सर्व मळीने आणजो,

चोथे अक्षर वीश पदचतुरूर्ध्व पदमांह जाणजो.

वृत्तरत्नाकर अने मंदारमरंदचंपू प्रमाणे

८,१२,१६, अने २० ए क्रममां उथलपाथल करवामा आवे तो पदचतुरूर्ध्वना २४ रूप थायछे

१३० आपीड. {
१. ६ल+२ग. = ८ वर्ण. तुंगा. २९०
२. १०ल+२ग. =१२ वर्ण. रूप १,०२४
३. १४ल+२ग.=१६ वर्ण शिशुभरण. १,०८०
४. १८ल+२ग.=२० वर्ण. रूप २,६२,१४४

(अन्तमां प्रतिपदे बे गुरु बाकीना सर्वे लघु.)

छ ल द्वि[२] ग प्रथमे छे,

दश ल उपर द्वि[२] ग युगले छे;

१४ ७
मनु ल उपर द्विग कवि धर पद त्रीजे;

१८ ४
धृति ल उपर ग ग धरौं कविवर! श्रुति पद कीजे.

उपरनी रीते आना पण चोवीश भेद प्रस्तारथी थायछे.

१३१ प्रत्यापीड.
१. २ग+ ६ ल= ८ वर्ण. सन्धूक. २४९
२. २ग+१० ल=१२ वर्ण. रूप ४,०९३
३. २ग+१४ ल=१६ वर्ण. रूप ६५,५३३
४. २ग+१८ ल=२० वर्ण. रूप १०,४८,५७३

बे गा छ ल प्रथमज,
बे गा पर दश ल द्वितीय पद;
१४
बे गा उपर मनु ल तृतीय चरण धर,
१० + ८
बे गा उपर चरम चरण दश वसु ल कवि! कर.

१३२ उभयापीड.
१. २ ग+४ ल+२ ग= ८ संध्या, बोधा. २८९
२. २ ग+८ ल+२ ग=१२ विरतिमहती. ७१३
३. २ग+१२ल+२ग=१६ रूप. ८,१८९
४. २ग+१६ल+२ग=२० रूप. २,६२,

गा गा ल न ग ग पेले,
८
गा गा वसु ल उपर ग ग बीजे;
१२
गा गा पर रवि ल पर ग ग चरण त्रीजे,
१० + ६
गा गा पर दश पट ल उपर ग ग धर पद चोथे.

उभय+आपीड=उभयापीड=जेमां आपीड अने प्रत्यापीड ए बंनेनां लक्षण आवे ते. एटले एना मापमां आपीडमां अंतमां बे गुरु आवेछे ते लीधा, अने प्रत्यापीडमां प्रारंभमां बे गुरु आवेछे ते आंहा प्रारंभमां लीधा छे. ए रीते प्रत्येक पादमां आदि अने अन्तमां बबे गुरु आवेछे, बाकीना वच्चे लघु अक्षर थायछे.

उभय एटले आदि अने अंत एम बे स्थाने बे गुरु आवे.

१३३ कलिका, मञ्जरी, मन्डरी[1].
{
१. १० ल+२ ग=१२ वर्ण. रूप १,०२४
२. ६ ल+२ ग= ८ तुंग, तुंगा. अंक २९०
३. १४ ल+२ ग=१६ शिशुभरण. १,०८०
४. १८ ल+२ ग=२० रूप २,६२,१४४

दश ल पर ग ग प्रथम दीजे,

छ ल ग ग पद बीजे,

१४
मनु ल पर ग ग तृतीय पद धरजो जी,

१० + ८
दश वसु ल पर ग ग चतुरथ चरण करजो जी.

१ मदारमरदचम्पू प्रमाणे

१३४ लवली.
{
१. १० ल+२ग=१२ रूप १,०२४
२. १४ ल+२ग=१६ शिशुभरण.अंक १,०८०
३. ६ ल+२ग= ८ तुग, तुगा. अंक २९०
४. १८ ल+२ग=२० रूप २,६२,१४४

दश ल पर ग ग प्रथम आणो, (आपीडनुं २जुं पद= १३०

१४
मनु ल उपर द्वि ग लवली द्वितीय जाणो; („ २जु)

छ ल द्वि ग पद त्रीजे, (आपीडनु प्रथम पद)

१० + ८
चतुरथ पद दश वसु ल उपर ठीक ग ग कीजे. („ ४थु)

आमा सकल चरणने अंते बे गुरु आवे.

वृत्तरत्नाकर तथा मंदारमरदचम्पू प्रमाणे

१३५ लवली. (द्वितीय)
{
१. १४ल+२ग=१६ शिशुभरण. अंक १,०८०
२. १०ल+२ग=१२ वर्ण. रूप १,०२४
३. ६ल+२ग= ८ तुंग, तुंगा अंक २९०
४. १८ल+२ग=२० वर्ण. रूप २,६२,१४४

१४
प्रथम चरण मनु ल उपर द्वि ग दीजे,

दश ल पर द्वि ग चरण बीजे;

छ ल पर ग ग त्रीजे,

१० + ८
दश वसु ल पर द्वि ग चतुरथ पद लवलीं कीजे.

पिंगल नागना मत प्रमाणे छंदशास्त्रमां लख्या मुजब.

१३६ अमृतधारा[1] मञ्जरी[2].
१. १० ल+२ग=१२ रूप १,०२४
२. १४ ल+२ग=१६ शिशुभरण १,०८०
३. १८ ल+२ग=२० रूप २,६२,१४४
४. ६ ल+२ग= ८ तुंग, तुंगा. २९०

दश ल पर द्वि ग प्रथम आवे,

१४
द्वितीय चरण मनु ल उपर ग ग लावे;

८ + १०
वसु दश ल उपर ग ग तृतीय पद अमृतधारा,

छ ल द्वि ग पद चारा.

१ वृत्तरत्नाकर तथा मंदारमरदचपूना मत प्रमाणे.

२ मंदारमरदचपू केहेछे के कोइ एने मंजरी केहेछे.

१३७ अमृतधारा. (द्वितीय)
१. १८ ल+२ ग=२० रूप. २,६२,१४४
२. १० ल+२ ग=१२ रूप. १,०२४
३. १४ ल+२ ग=१६ शिशुभरण. १,०८०
४. ६ ल+२ ग= ८ तुंग, तुंगा. २९०

८ + १०
प्रथम चरण वसु दश ल पर ग ग अमृतधारा;

दश ल द्वि ग द्वितीय पद सारा,

१४
तृतीय पद मनु ल पर द्वि ग ठिक गोठे,

छ ल पर ग ग चोथे.

१३८ उद्गता.	१. स ज स ल =१० रसभूम. अंक ९०९
	२. न स ज ग =१० अनुचायिता.अंक ४७१
	३. भ न ज ल ग =११ अर्थशिखा. अंक ६२१
	४. स ज स ज ग=१३ मंजुभाषिणी.अंक ८९१

प्रथमे स जा स ल धराय,

न स ज ग द्वितीय पादमां;

भा न ज ल ग तृतीये चरणे,

स ज सा ज गा पद चतुर्थ उद्गता.

छंद शास्त्र, प्राकृत पिंगळसूत्र, वृत्तरत्नाकर, छंदोमंजरी, अने मंदारमरंदचम्पू प्रमाणे.

१ माघ अने भारवि कविनी रचनामां आवा प्रकारनी उद्गता रचे छे, माटे तेनी प्रकारान्तर गणना करी छे.

१३९ सरल.	१ स ज स ल =१० रसभूम. अंक ९०९
	२. न स ज ग =१० अनुचायिता. ,, ४७१
	३. भ न ज ल ग=११ अर्थशिखा. अंक ६२१
	४. न न न ग =१० रूप ९१

प्रथमे स जा स ल धराय,

न स ज ग करो बीजे पदे;

भा न ज ल ग तृतीये चरण,

त्रि न ग पद युग सरळा.

१४० उद्गता.	१. स ज स ल=१० रसभूम. ९००
	२. न स ज ग=१० अनुचायिता. ४७१
	३ भ न भ ग[1]=१० गहना. ४९२
	४.स ज स ज ग=१३ मंजुभाषिणी. ८९८

प्रथमे स जा स ल रचाय,

न स ज ग द्वितीय उद्गता;

भा न भ ग अनले धरजो,

स ज सा ज गा पद चतुर्थमां सजो.

१ छंदोमजरी तथा प्राकृतपिंगळसूत्रमां प्रथम जणावेलु उद्गतावृत्त पीने आ माप पण जणाव्यु छे, अने तेनुं उदाहरण नीचे प्रमाणे आप्युं छे:—

१ विललास गोपरमणीषु,

२ तरणितनया प्रमोद्गता;

३ कृष्णनयनचकोरयुगे,

४ दधती सुधांशुकिरणोर्मिविभ्रम.

उद्गतानु त्रीजुं पद शब्दकल्पद्रुममां मळतु आवतुं नथी पण छंदो-[म]जरी साथे मळेछे तेमां बीजो प्रकार छे.

४१ सौरभक, सौरभ, सौरलक.

१. स ज स ल=१० रसभूम. अंक ५०९
२. न सं ज ग=१० अनुचायिता. अंक ४७१
३. र न भ ग=१० रूप. ४४२
४. स ज स ज ग=१३ मंजुभाषिणी. अंक ८१८

प्रथमे स जा स ल कराय,

द्वितीय चरणे न सा ज गा;

छे तृतीय पद रा न भ गा,

स ज सा ज गा पद चतुर्थ सौरभे.

पेहेलुं, बीजुं, अने चोथुं चरण उद्गता प्रमाणे थायछे. मात्र त्रीजुं चरण जूदुं पडेछे. आ विषे वाग्वल्लभ, प्राकृतपिंगलसूत्र, अने मंदारमरंदचम्पूनी संमति मळेछे.

परिभूत फुल्ल शत पत्र =१०

वन विसृत गन्ध विभ्रमा =१०

कस्य हृन्न हरतीह हरे =१०

मुख पद्म सौरभ कला तवाद्भुता=१३

पण खरुं उदाहरण उपर प्रमाणे छे तेने बदले संस्कृतप्रोसडीमां

बीजा चरणनी आदिमां वन ने बदले बदन शब्द मूकवाथी एक अक्सर वधेछे अने तेथी माप न न र ल ग गण्युं छे ते भूल छे. तेमज प्रा. पि. सू. मा चोथा चरणना प्रारभमां मुख शब्द मूकी दीधो छे, तेथी १३ ने बदले ११ वर्ण थायछे अने तेनी उद्दव-णिका तेमां जणाव्या प्रमाणे र न र ल ग थायछे, ते पण भूल छे.

* मंदारमरंदचम्पू प्रमाणे

१४२ ललित. (विषम)
1. स ज स ल=१० रसभूम. अंक ५०९
2. न स ज ग=१० अनुचायिता. अंक ४७१
3. न न स स=१२ हाकलिका. अंक ७५८
4. स ज स ज ग=१३ मंजुभाषिणी. अंक ८५८

प्रथमे स जा स ल रचाय,
द्वितीय चरणे न सा ज गा;
तृतीय चरण न न सा स करो,
स ज सा ज गा ललितमां युगे४ धरो.

त्रीजा चरण सिवाय बाकीना चरण उद्गता प्रमाणे छे.

मंदारमरंदचम्पू प्रमाणे पण आ ललित छे —

जेम उद्गताना भेद थायछे तेम आना पण भेद थइ शकेछे वळी संस्कृत ग्रोसडीमा वे जातनु ललित छे तेमा एकमा नीचे प्रमाणे गण आप्या छे'—

१ पादमां स ज स ल. रसभूम. अंक ५०९
२ पादमां न स ज ग. अनुचायिता. अंक ४७१
३ पादमां न न भ ग. फलधर. अंक ४९५
४ पादमां स ज स ज ग. मंजुभाषिणी. अंक ८५८

१४३ अपरा+ उद्गता.
1. स ज न ग=१० धमानिका. अंक ४९९
2. न स ज ग=१० अनुचायिता. अंक ४७१
3. भ न ज ल ग=११ अर्थशिखा. अंक ६२७
4. स ज स ज ग=१३ मंजुभाषिणी. अंक ८५८

प्रथमे स जा न ग कहिजे,
न स ज ग धरो पदे बीजे;
भा न ज ल ग पद मांह त्रीजे,
स ज सा ज्ग तुर्य अपरोद्गता कीजे.

१४४ अपरोद्गता.
1. स ज भ ग=१० प्रवादपदा. अंक ४८६
2. भ रा ज ग=१० कुप्य अंक ४७०
3. ज भ ज ल ग=११ शल्कशकल. अंक ६२२
4. र ज स ज ग=१३ मंजुमालती. अंक ८५७

प्रथमे गणो स जा भ ग छे,
भा स ज ग द्वितिय पाद छे;
ज भा ज ला ग पद थाय त्रीजे,
रा ज सा ज छे ग अपरोद्गता युगे.

१४५ अपरोद्गता. (बीजी)
1. स भ स ल=१० रसभूस. ५०९
2. न न ज ग=१० चितिभृत. ४७९
3. भ ज ज ल ग=११ शल्कशकल. ६२२
4. स ज स ज ग=१३ मंजुभाषिणी. ८५८

स भ सा ला प्रथम रचाय,
न न ज ग पद द्वितीय छे;
भा ज ज ल गा अनले कवि छे,
अपरोद्गता स ज स जा ग तुर्य छे.

उपस्थित प्रचुपित.

१४६ उपस्थित-प्रचुपित.
1. म स ज भ ग ग=१४ रूप ३,४१७
2. स न ज र ग =१३ रूप १,४०४
3. न न स = ९ मदनक. ४०४
4. न न न ज य =१५ रूप ७,१६८

पे'ले पाद म सा ज भा ग गा कवि! आणो,
स न जा र ग पद छे द्वितीय जाणो;
न न स चरण तृतीये,
न न न ज य श्रुपित उपस्थित चोथे

मंदारमरंदचपू प्रमाणे

१४७ प्रवर्द्धमान, वर्द्धमान.	१. म स ज भ ग ग=१४	रूप. ३,४१७
	२. स न ज र ग =१३	रूप. १,४०४
	३. न न स न न स =१८	रूप. १,३०,८१६
	४. न न न ज य =१५	रूप. ७,१६८

मामा ज्भा ग ग वर्द्धमानमां प्रथमे छे,
स न जा र ग चरणे बीजे करेछे,
न न स न न स गण आ अनल पद कवि करे,
त्रि न पर ज य प्रवरधमान चतुर्थे.

१४८ शुद्धविराटऋ-पभ, शुद्ध वि-राड्पभ, शुद्ध विराडार्पभ.	१. मसजभगग=१४	रूप. ३,४१७
	२. सनजरग =१३	रूप. १,४०४
	३. त ज र = ९	रवोन्मुखी. ३८१
	४. न न न ज य =१५	रूप. ७,१६८

पेहेले चरणे म सा ज भा ग ग कीजे,
स न जा र ग कवि! आण पाद बीजे;
ता जा र तृतीय पाद दे,
न न न ज य श्रुति चरण शुद्धविराटे.

वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामा लखेछे के पेहेलाज पादने अने यति मानी बाकीना त्रणे पादो साथे बोलाय तो आर्षभ एवु नाम पडे अने प्रत्येक चरणने अने यति रखाय तो शुद्धविराड्पभ थाय एम यतिना भेद-थी बे नाम पडेछे एम केटलाक केहेछे.

१४९ नगोनिता.
१. त र ल ग=८ नाराचिका. अंक २९४
२. ज र ल ग=८ प्रमाणिका. अंक २९५
३. र ज ग=७ चामर. अंक १६९
४. ज र ल ग=८ प्रमाणिका. अंक २९५

ता रा **नगोनिता** ल गा,
बीजा विषे ज रा ल गा;
रा ज गा त्रीजे धरो,
ज रा ल गा युगे करो.

१५० परार्थिनी, वरार्थिनी.
१. न य स = ९ सारंगिका. अंक ३९३
२. ज त भ ग=१० रूप ४२२
३. भ म स = ९ मणिबंध. अंक ३९२
४. त ज र ग ग=११ रूप १७३

प्रथम न या सा करजो,
बीजे ज ता भा ग तो धरजो;
भा म स त्रीजे पाद धरो,
ता जा र ग गा **परार्थिनी** चोथे.

१५१ नगोपमा.
१. त ज र = ९ रथोन्मुखी. ३८१
२. म स ज ग =१० विराट. ४६६
३. त ज र =९ रथोन्मुखी. ३८१
४. स भ र ल ग=११ सींधु. ५९९

पे'ले त ज रा त्रणे खरे,
बीजे मा स ज गा पदे धरे;
त्रीजे त ज रा तमे करो,
स भ रा ला ग **नगोपमा** धरो.

१५२ अगाधिका.
१. त ज र = ९ रथोन्मुखी. ३८१
२. म स ज ग=१० शुद्धविराट. ४६६
३. स स ज ग=१० सहजा. ४६८
४. म स ज ग=१० शुद्धविराट. ४६६

पेले त ज रा करो भले,
बीजे मा स ज गा पदे भळे;
स स जा ग त्रीजे अगाधिका.
चोथे पाद धरो म सा ज गा.

१५३ विपकण्ठी.
१. न भ र = ९ करशया. ३८८
२. स स ज ग =१० सहजा. ४६८
३. न न र ल ग=११ सुभद्रिका. ६०३
४. स भ स ज ग=१३ रूप. २,८०४

प्रथम ना भ र थायछे,
स स जा ग बीजे रचायछे;
न न र ल ग त्रीजे पदे करो.
विपकंठी स भ स ज गा युगे धरो.

१५४ पंजी.
१. स स य = ९ रूप. ९२
२. न ज ज र =१२ मालती. ७३१
३. न न र ल ग =११ सुभद्रिका. ६०३
४. न ज ज र ग=१३ मृगेन्द्रमुख. ८१९

स स या प्रथमे करो जो,
न ज ज र पाद द्वितीय आणजो;
न न र ल ग तृतीय जाणजो,
न ज ज र गा थकाँ तुर्य पाद पंजी.

छंदोलतामा आना चोथा पदनु लक्षण उपर प्रमाणे छे पण तेमा उदाहरणमां रगण ने बदले मगण थइ गयो छे

१५५ उदया.
१. न ज न ग =१० अमृतगति. अंक ४९६
२. स भ स = ९ अनवीरा अंक ३९९
३. न न न ल ग=११ दमनक. अंक ६३७
४. म न न ग =१० रूप. ५०५

प्रथम पदे न ज न ग छे,
उदया नेत्र स भ स छे;
तृतीय चरण न न न ल गा,
चोथे वर्ण दश म न न गा.

१५६ नालीका.
१. स स ज ग = १० सहजा. अंक ४६८
२. स भ र ल ग = ११ सीधु. अंक ५९९
३. त ज र = ९ स्वोन्मुखी अंक ३८१
४. म स ज ग = १० बिराट. अंक ४६६

प्रथमे स स जा ग नालीका,
स भ रा ला ग द्वितीय छे कोका!
त्रीजे त ज रा तमे करो,
चोथे पाद म सा ज गा धरो.

१५७ सौराङ्गी.
१. स स ज ग = १० सहजा. अंक ४६८
२. स भ र ल ग = ११ सीधु. ,, ५९९
३. स स ज ग = १० सहजा. ,, ४६८
४. म स ज ग = १० बिराट. ,, ४६६

प्रथमे स स जा ग थाय रे,
पद बीजे स भ रा ल गा धरे;
तृतीये स स जा ग कार छे,
सौराङ्ग म स जा ग चार छे.

१५८ मञ्जुमतिका.
१. न ज ज ल ग = ११ सुमुखी. ६२३
२. भ भ भ ग = १० विश्वमुखी. ४०९
३. न भ भ ग = १० शरत. ४९१
४. भ ज त ग = १० स्तेटक. ४९९

प्रथम पदे न ज जा लघु गा,

छे द्वितीये पद भा भ भ गा;
तृतीय पाद न भा भ ग छे,
चंक्षुमतिका भ जा ता ग छे.

५९ शर्म.	१. न न न ल ग=११ दमनक. अंक ६३७
	२. न ज न ग=१० त्वरितगति,अमृतगति. ४९६
	३. भ भ स = ९ प्रियतिलका. अंक ४००
	४. भ न न ग=१० कुनमणिता अंक ४९८

प्रथम चरण न न न ल गा,
चरण द्वितीय न ज न गा,
छे तृतीये भ भ स खरे,
शर्म युग[४] भ न न ग करे.

६० चिरकरका.	१. स स ज ग=१० सहजा. अंक ४६८
	२ स भ र ल ग=११ सीधु. अंक ५९९
	३. त ज र = ९ स्वोन्मुखी.अंक २८१
	४. न ज ज र=१२ मालती. अंक ७२१

प्रथमे स स जा ग थायछे,
द्वितीये सा भ र ला ग गायछे;
त्रीजे त ज रा तमे धरो,
चिरकरका न ज जा र थी करो.

६१ मणित्थक.	१. न न र ल ग=११ सुभद्रिका. ६०३
	२. स भ र ल ग =११ सीधु. ५९९
	३. स स ज ग =१० सहजा. ४६८
	४. म स ज ग =१० विराट. ४६६

प्रथम न न र ला ग तो किजे,
स भ रा ला ग मणित्थके बीजे,

तृतीये चरणे स सा ज गा,
चोथे पाद करो म सा ज गा.

१६२ वैतालीक.	१. स स ज ग=१०	सहजा.	४६८
	२. म स ज ग=१०	विराट,शुद्धविराट.	४६६
	३. न न र ल ग=११	सुभद्रिका.	६०३
	४. स भ र ल ग=११	सीधु.	५९९

प्रथमे स स जा ग तो कीजे,
वैतालीक म सा ज गा बीजे;
तृतीय चरण ना न रा ल गा,
श्रुति[४] पादे रच सा भ रा ल गा.

१६३ मन्देहा.	१. न न भ स =१२	रूप	१,९८४
	२. म न न ल ग=११	रूप	१,०१७
	३. भ स ज ग =१०	रूप	३५१
	४. म त र =९	रूप	१६१

प्रथम चरण ना न भ स धरो,
मन्देहा म न न ल ग थीं करो;
भा स ज ग त्रीजे पदे करे,
चोथे पादे मा त रा धरे.

१६४ कुथिनी.	१. न ज य ग ग=११	वार्त्ताहारी.	अंक ५४०
	२. न न स म =१२	शुद्धान्त.	अंक ६६४
	३. त न म ग =१०	कुल.	अंक ४२८
	४. स न य ग ग=११	सौधाग्नि.	अंक ५४२

प्रथम पदे न ज या गा गा छे,
न न स म कर कुथिनीमां बीजे;
त्रीजे चरण त ना मा गा छे,

स न या ग ग पद चोथामां छे.

१६५ कामकलशिका.
- १. ससजगग=११ विमला. अंक ९६७
- २. सभरय =१२ बधिरा. अंक ६८१
- ३. तजरग =१० नमेरु,लाजवती.४४०
- ४. भसजगग=११ अमंदपाद. ९६९

प्रथमे स स जा ग गा करोजी,
पद बीजे स भ रा य तो धरोजी;
त्रीजे पद थाय ता ज रा गा,
कामकलशिका भ सा ज गा गा.

१६६ वर्त्तिकाविलसित.
- १. रनरलग=११ रथोद्धता. अंक ६००
- २. रनभगग=११ स्वागता. अंक ९८२
- ३. नररलग=११ भाविनी. अंक ५९७
- ४. रनरर =१२ रूप. १,२११

थायछे प्रथम रा न रा ल गा,
छे द्वितीय पद रा न भ गा गा;
न र र ला ग आवे त्रीजे पदे,
वर्त्तिकाविलसिते र ना रा र दे.

१६७ उपवैतालिक
- १. त भ त ग ग=११ इहामृगी. ९६२
- २. त भ त ग ग=११ इहामृगी. ९६२
- ३. त त ज र =१२ विरासिका.७२७
- ४. त भ त ग ग=११ इहामृगी. ९६२

ता भा त्ग गा उपवैतालिके छे,
बीजे पदे त भ ता गा ग के छे;
त्रीजे पदे छे त त जा र मापमां,
चोथे पदे कवि! ता भा त गा ग.

१६८ महातुरा.

१. स न स ल ग=११	रूप.	७६४
२. स भ न र =१२	उपलेखा.	७४२
३. त ज न र =१२	रूप	१,५१७
४. भ न ज र =१२	रूप	१,४०१

प्रथमे स न स ल ग आणजो,
पद बीजुं स भ न र थी जाणजो;
त्रीजे चरणे त ज न र छे शूरा!
चोथे भा न ज र बने महातुरा.

१६९ सुरभि.

१. न ज र र =१२	शिशिखलता.	अंक ७१६
२. न ज ज र =१२	मालती.	अंक ७२
३. न न र य =१२	परिमितविजया.	अंक६८
४. न ज ज र ग=१३	मृगेंद्रमुख.	अंक ८१०

प्रथम पदे न जा र रा जाणजो,
द्वितीय पदे न ज जा र आणजो;
तृतीय चरण ना न रा य आणो,
सुरभि चतुर्थ न जा ज रा ग जाणो.

आ वृत्त छंदोलतामांथी मळ्युं छे छंदोलतामां तेना प्रथम पादना लक्षणमां उपर प्रमाणे गुण कह्या छे पण उदाहरणमां एक रगण [illegible]छो छे.

१७० गिरिकन्या.

१. स स ज ग ग =११	बिमला.	अंक५६७
२. स भ र य =१२	बधिरा.	अंक ८१
३. स स ज य स स ज स ग=२५	रूप	७६,६२,६२८
४. स ज स स ग =१३	कलहंस.	अंक८२३

प्रथमे स स जा ग गा धरीजे,
गिरिकन्या स भ रा य आण बीजे;
तृतीये चरणे स सा ज य सा सा ज स गा करवा वसन्तसूरि भाखे,
स ज सा स गा श्रुति पदे कवि दाखे.

छंदोलतामांथी आ वृत्त लीधुं छे.

१७१ सुरद्रु. { १. ४ रगण=१२ स्रग्विणी. अंक ७१७
२.३य+लग=११ भुजंगी, कर्ण. अंक ६९०
३. ४ यगण=१२ भुजंगप्रयात. अंक ६७९
४. ३त+२ग=११ प्राकारबंध. अंक ६६९ }

आदिना पादमां चार रा तो वदे,
त्रि[३] या छे ल गा छे, द्वितीये पदे;
य तो चार त्रीजे सुरद्रु पदे छे,
चोथे त्रि[३] ता ने द्वि[२] गा माप दे छे.

१७२ अत्सरु. { १. सजसस=१२ प्रमिताक्षरा. अंक ७५४
२. तभजलग=११ जिह्माशया. अंक ६२४
३. भजसस=१२ नीलभिरिका. अंक ७५६
४. जजसस=१२ विकत्थन. अंक ७५५ }

स ज सा स अत्सरु विषे प्रथमे,
बीजे त भा ज ल ग थाय क्रमे;
भा ज स स छे गण तृतीय पदे,
ज जा स स तुर्य[४] पदमांह वदे.

१७३ छेकवती. { १. भभभभ=१२ मोदक. ७८९
२. जजजज=१२ मौक्तिकदाम. ७८६
३. ससस स=१२ तोटक. ७५३
४. भभभगग=११ दोधक, बंधु. ६८० }

भा भ भ भा थकी छेकवती कर,
ज जा ज ज पाद बीजे कवि! धार,
स स सा स त्रीजे पद आण सदा,
भा भ भ गा ग अने पद चोथे.

१७४ मानमुखी.
१. न न भ स ग=१३ विधुरवितान: ८३४
२. भ स न य =१२ अर्पितमदना. ७१२
३. न य न य =१२ कुसुमविचित्रा. ७११
४. भ त न ग ग=११ अनुकूला. ५८६

न न भ स ग बधा पद प्रथमे छे,
भा स न य द्वितीय पद धरेछे;
न य न य त्रीजे चरण करेछे,
मानमुखी भा त्न ग ग चुंगे छे.

१७५ नतभ्रू.
१. म भ न ल ग=११ भ्रमरविलसिता. ६३९
२. स न न स =१२ रसिकपरिचिता. ७७०
३. न य न न ग=१३ मदनजर्वनिका. ८८८
४. भ त न स=१२ तोरणमाला. ७७१

पे'ले पादे म भ न ल ग भरो,
पद बीजे सा न न स कवि! कहो;
नतभ्रू त्रीजे न य न न ग पदे,
तुर्य पदे भा त न सगण वदे.

१७६ मुग्धनाविरति.
१. न भ ज य=१२ द्रुतपद. ७०४
२. र न भ ग ग=११ स्वागता. ५८२
३. ज न ज य =१२ उपधान. ७०९
४. न न स स ग=१३ चंडी. ८२५

प्रथम पाद न भ जा य धरेछे,
रा न भा ग ग द्वितीय पदे छे;
ज ना ज य पद रचो कवि! त्रीजे,
मुग्धनाविरति न न सा स ग चोथे.

१७७ उद्दक.
- १. न भ स ज ग=१३ शिरोविनी. ६८१
- २. स न ज र =१२ विरला. ७३४
- ३. त न र ल ग=११ नीला. ६०२
- ४. भ न ज र =१२ अविरलरतिका ७३९

न भ स जा ग उद्दक आदिमा धरो,

स न जा र कवि! द्वितीयमां करो;

त्रीजे त न र ल गा रचायछे,

भा न ज र चरण तुर्य गायछे.

१७८ संकलि.
- १. न ज ज य=१२ तामरस. ६९९
- २. भ न भ ग ग=११ दोधक. ५८०
- ३. न न स स ग=१३ कडी. ८२९
- ४. भ न ज य =१२ पथिकान्ता ७०९

प्रथम पदे न ज जा य रचावो,

भा त्रि[३] द्वितीय पदे ग ग लावो;

तृतीय चरण द्विन सा स ग जाणो,

संकलि चतुर भ ना ज य आणो.

१७९ दरदपूर.
- १. न न स ल ग=११ रूप. ७६८
- २ स भ न र =१२ उपलेखा. ७४२
- ३. न ज भ ज ग=१३ रूप. २,९९२
- ४. त म र न ग ग=१४ रूप. ३,७७३

प्रथम न न स ल ग आणजो,

पद बीजे स भ न र प्रमाणजो;

तृतीय पदे न जा भ ज ग आणजो,

१७४ मानमुखी.
१. न न भ स ग=१३ विधुरवितान. ८३४
२. भ स न य =१२ अर्पितमदना. ७१२
३. न य न य =१२ कुसुमविचित्रा. ७११
४. भ त न ग ग=११ अनुकूला. ५८६

न न भ स ग बधा पद प्रथमे छे,
भा स न य द्वितीय पद धरेछे;
न य न य त्रीजे चरण करेछे,
मानमुखी भा त न ग ग युगे छे:

१७८ ननभृगु
१. म म न ल ग=११ भ्रमरविलसिता. ६३५
२. स ज न स =१२ रसिकपरिचिता. ७७०
३. न य न न ग=१३ मदनजवनिका. ८८८
४. भ त न म=१२ हीरणमाला. ७७१

पे'ले पादे म भ न ल ग धरो,
न ज र र पादमांह बीजे धरे;
भा ज र र थाय पाद त्रीजा विषे,
भा स ज त ग माप पाद चोथे दिसे.

१८२ नन्दिष्ठा.
१. म न भ ल ग=११ रूप ९५३
२. न य ज भ ग ग=१४ रूप ३,४०८
३. त न र न ग=१३ रूप २,७७३
४. म न ज न य=१५ रूप ८,०५७

पे'ले पाद म न भा ल ग हजो,
चरण द्वितीये न या ज भा ग ग आणो,
त्रीजे चरण त ना र ना ग करजो,
नंदिष्ठा चरण युगे म न ज न य जाणो.

१७७ उद्दक.	१. न भ स ज ग=१३	विरोधिनी.	६८१
	२. स न ज र =१२	विरला.	७३४
	३. त न र ल ग=११	नीला.	६०२
	४. भ न ज र =१२	अविरलरतिका	७३६

न भ स जा ग उद्दक आदिमा धरो,

स न जा र कवि! द्वितीयमा करो;

त्रीजे त न र ल या रचायछे,

भा न ज र चरण तुर्ये थायछे.

१७८ संकलि.	१. न ज ज य=१२	तामरस.	६९९
	२. भ न भ न ग=११	दोधक.	५८०
	३. न न स स ग=१३	कली.	८२५
	४. भ न ज य =१२	पथिकान्ता	७०९

प्रथम पदे न ज जा य रचावो,
स न जा र य चरणे द्वितीयके ॥१॥

तृतीय चरणमां न न भ स ला ग छे,

भौजंगे म न ज न रा ग चरण थाय चोथे.

वाग्वल्लभमां आवु माप छे, पण तेमां जे उदाहरण छे तेमां त्रीजो जगण जोइये तेने बदले नगण आवेछे. अने वळी एक अक्षर पण खूटेछे, जुवो चोथु पद आ प्रमाणे छे —

'मो नो जो नर गण गुरुरपिच भौजंग.'

१८५ उपनय.	१. न न भ न ल ग=१४	प्रहरणकलिका.	९८५
	२. भ स न न ग=१३	अर्द्धकुसुमिता.	८९०
	३. स स न न ग=१३	वरिवासिता.	८८९
	४. त ज न स=१२	व्यायोगवती.	७७२

उपनय प्रथमे न न भ न ल ग छे,

पादपर द्वितीय भ स न न ग छे;

पदमाह तृतीय स स न न ग छे,
चोथे चरणे गण त ज न स छे.

१८६ पिसंगी.
1. नजभजलग=१४ कुररीरुता. ९७९
2. भरनभग=१३ लवलीलता. ८८०
3. भजभजलग=१४ कारविणी. ९७८
4. जजभजलग=१४ काकिणिका. ९७७

प्रथम पदे न जा भ ज ल गा धरजो,
भा र न भा ग आप द्वितीये करजो;
भा ज भ ज ला तृतीय ग पदे रचजो,
पिसंगी चतुर्थ जा ज भ ज ला ग सजो.

१८७ युतक.
1. सजजभगल=१४ उपकारिका. अंक ९९३
2. तभरसल =१३ अट्टासिनी. अंक ८९९
3. भजजभगल=१४ हेमसिंहिका. अंक ९९४
4. नससजज =१५ मितसकिथ. अंक १,०१६

प्रथमे सदा स ज जा भ गा ल रचाय,
बीजे पदे त भ रा स ला ठिक थाय,
छे गण तृतीय पदे भ जा ज भ गा ल,
युतक पद तुर्य न सा स जा ज निहाल.

१८८ अनसूय
1. ननमयय=१५ [illegible] अंक १,०१०
2. भसततगग=१४ [illegible]टिका. ९२९
3. सततगग=१४ सरमामरणी. ९२४
4. तयररग=१३ भाजनशीला. ८

प्रथम चरण ना ना मा य या आप कीजे,
भा स त त ग गा आणो तमे पाद बीजे;
अनसूय विषे सा मा त ता गा ग त्रीजे,
चोथे त य रा रा गा पदे आप दीजे.

१८९ मृदव.
१. स ज ज भ र=१५ मणिहंस. अंक १,०३०
२. त भ र स ल ग=१४ अलकालिका. अंक९६७
३. य ज ज भ र=१५ मयूखदना. अंक १,०३१
४. न स स ज ज ग=१६ तरवारिका. अंक१,०८४

प्रथमे तमे स ज जा भ रा गण आणजो,
बीजे पदे त भ रा स ला ग खरे सजो,
मज्जन तृतीय पदे भ जा ज भ रा धरो,
मृदव श्रुतिमां न स सा ज जा ग पदे करो.

१९० कलंबडंबर.
१. न भ भ र य=१५ रूप ९,३०४
२. स भ म ज र ग=१६ रूप १०,९९६
३. न न र ज र ग=१६ रूप १०,९४४
४. म न ज र य ग=१६ रूप ९,४९७

प्रथममां न भ भा र य सद्य तो धरेछे,
स भ मा जा र ग कवि तो द्वितीयमां करेछे;
न न र ज र ग ए त्रीजे कलंबडंबरे छे,
चोथे पाद म न ज रा य गा सदाय रहेछे.

१९१ मनसुख.
१. म स त य भ म=७+५+६=१८ रूप. २५,३६९
२. त न त य भ स ग ग=८+५+७=२० ,, १,२३,७०९
३. त न म स भ स ग ग=८+५+७=२० ,, १,२४,४७७
४. त ज ज न स न य ग=८+७+७=२१ ,, ९,०७,७५७

पेले पाद म सा ता, या भ म साते, पांच छए छेदो,
बीजे त न त य भा सा, ग म आठे ने, शर[५] मुनि[७] छे छेदो;
आठे शर[५] मुनि[७] ता ना, मा स भ सा ग्गा, मनसुखमां त्रीजे,
चोथे त ज जा न स ना, य ग वसु[८] मुनि[७] ने, मुनि[७] यति तो कीजे.
मारा परम मित्र मनसुखराम सूर्यरामना नामनु आ वृत्त नवु करयुं छे.

१०६ मंजिष्ठा.

१. मसमसग=१३ तारक. ८५३
२. मजमसग=१३ कलहंस. ८५२
३. सजसजग=१३ मंजुभाषिणी. ८५८
४. मनजरग=१३ प्रहर्षिणी. ८१६

चरणे प्रथमे स स म्या म ग कीजे,
स ज भा स गा कर भला पद बीजे;
स ज सा ज गा कनि पदं त्रीजे कर,
मंजिष्ठा चरण म ना ज रा ग चोथे.

१०७ मत्ताक्रान्तिक.

१. ननततग=१३ परिमुद. ८८८
२. मजततग=१३ चामरदना. ८७६
३. जनतनग=१३ मुक्ताहिका. ८८८
४. ननतनग=१३ पारान्न. ८६७

प्रथम पादे रचिंछे न ना ता त गा,
के पद द्वितीयमाँहे म जा ता त गा;
त्रीजे मुक्ताक्रान्तिके छे ज मा ता त गा,
आणी तुर्ये पादे नागे न ना ना त गा.

केटलाक नीचे प्रमाणे माप बतावेछे:—

१,३ विषममां ४ वर्ण+य+ल के ग=८

२,४ सममां स+ग+य+ल के ग=८

वाग्वल्लभमां वक्त्रनो श्लोक नियम–१,२,३,४ पदमां पांचमो लघु ने छट्ठो गुरु आवे. १,३ पदमां ७मो वर्ण गुरु, २,४ पदमां ७मो लघु आवे. छंदोवृत्तमुक्तावलीमां तथा प्राकृत पिंगळसूत्रमां पण ए प्रमाणे नियम छे:—

पांचमो लघु चारेमां, छ साते गुरु तो करो;
समे साते लघु लावो, श्लोके आठज अक्षरो.

हलायुधवृत्ति वगेरे छंदोग्रंथमां अनेक प्रकारना गण भेदथी आ अनुष्टुप् वृत्तने "विषमवृत्तमां" वक्त्र एवां नामथी ओळखाव्यां छे. सघळां पुराणोमां सामान्य रीते आठ अक्षरनां पदवाळां वृत्त अनुष्टुप्‌ना नामथी ओळखाय छे.

वक्त्रनी रूपसंख्या नीचे प्रमाणे नीकळी शकेछे:—

एमां आठ अक्षर आवेछे, तेमां पेहेलो अक्षर गुरु के लघु आवतां तेना बे रूप थाय; अने त्यार पछीना त्रण अक्षरमां न अने सगण वर्ज्य छे, तो ते बे आठ गणमांथी बाद करतां बाकी ६ रूप रह्यां, ते वडे आगलां बे ने गुणतां १२ रूप थयां; त्यार पछी पांच, छ, अने सातमा अक्षरने ठेकाणे मात्र एकज यगण आवेछे, तेनुं एकज रूप थायछे, ते उपर एक अक्षर लघु के गुरु आवेछे, एटले तेनां बे रूप थाय. तो ए प्रमाणे १२×१×२=२४ रूप एक चरणनां थाय. तेवीज रीते बीजा चरणनां तेटलांज रूप थतां २४×२४=५७६ रूप पूर्वार्द्धनां थाय अने तेटलांज उत्तरार्द्धनां थतां ५७६×५७६=

३,३१,७७६ रूप बधां मळीने थायछे. एक (पेहेला) अक्षर पछी जेम न स वर्ज्य गणेला छे, तेम छंदःशास्त्र अने वृत्तरत्नाकरनी नारायणभट्टी टीकामां समपदमां रगणने पण वर्ज्य गण्यो छे. तेम गणतां पेहेला चरणनां २४ रूप थाय, अने बीजा चरणमां रगण वर्ज्य थवाथी बाकी ५ गण रेहेछे, तेथी तेनां रूप २×५×१×२=२० थायछे, एटले २४×२०=४८० रूप पूर्वार्द्धनां थाय, तेटलांज उत्तरार्द्धना थतां ४८०×४८०= २,३०,४०० रूप बधां मळीने थायछे. तेमज पथ्यावक्त्र, विपरीत पथ्यावक्त्र अने चपलावक्त्र ए त्रणेना पण वक्त्रनी पेठे ३,३१, ७७६ भेद थायछे.

२०० चपलावक्त्र. { विषम पदमां चोथा अक्षर पछी नगण आणवो. बाकी वक्त्र प्रमाणे.

१. (ल के ग) १+३ (स न विना)+न+१ (ल के ग)=८

२. (ल के ग) १+३ (स न विना)+य+१ (ल के ग)=८

३. (ल के ग) १+३ (स न विना)+न+१ (ल के ग)=८

४. (ल के ग) १+३ (स न विना)+य+१ (ल के ग)=८

(१) विषमे चार पर न, (२) समे तो य करो एक;

(३) वक्त्र धारा अपर जे, (४) चपलामाह विवेक.

२०१ पथ्यावक्त्र. { विषम पदमां वक्त्र प्रमाणे सम पदमां चोथा अक्षर पछी जगण.

१. (ल के ग)१+३ (न स वर्ज्य)+य+१(ल के ग)=८

२. (ल के ग)१+३ (न स वर्ज्य)+ज+१ (ल के ग)=८

३. (ल के ग) १+३ (न स वर्ज्य) +य+१ (ल के ग)=८

४. (ल के ग) १+३ (न स वर्ज्य) +ज+१ (ल के ग)=८

(१) समे चार परे जा छे, (२) विषमे य रह्यो वळी,
(३) पथ्यावक्त्र बने तेह, (४) वक्त्र धारा विषे भली.

आठ वर्णना चार चरण आवेछे ते "श्लोक" केहवायछे. अनुष्टुप्ना लक्षणमा आ नियम म्होटा प्रबंधमां पाळेलो जणातो नथी. आ नियम क्वचित्ज पाळवामा आवेछे, एम केटलाकनो अभिप्राय छे.

२०२ विपरीत पथ्या-वक्त्र[1]. } विषम पदमां चोथा अक्षर पछी ज-गण आणवो. समपद वक्त्र प्रमाणे.

१. १(ल के ग)+३(सन वर्ज्य)+ज+१ (ल के ग)=८
२. १(ल के ग)+३(सन विना)+य+१ (ल के ग)=८
३. १(ल के ग)+३(सन विना)+ज+१ (ल के ग)=८
४. १(ल के ग)+३(सन विना)+य+१ (ल के ग)=८

(१) पे'ले त्रीजे धरी जने, (२) बीजे चोथे य मूकाय;
(३) विपरीत थवा थकी, (४) पथ्या विपरीता थाय.

१ केटलाकना मत प्रमाणे विपरीत करवाथी पण पथ्या थायछे, ते ओळखवा माटे जूदु नाम राख्युं छे.

२०३ विपुला, युग्मविपुला. { सम[1] चरणमां सातमो अक्षर लघु आणवो. बाकीना वक्त्र प्रमाणे.

पण सैतव आचार्यना मत प्रमाणे चारे पदमां सातमो लघु[2] आणवो जोइये.

चारे परे भ न त ज, सातमा लघुथी थशे,
विपुला वक्त्रने विषे, एम चारे पदे वसे;
एक वर्ण पछी न स, वसु वर्ण विषे तजो,
विपुला वक्त्रना नि'म, सर्व विपुलामां सजो.

१ चार अक्षर पछी पथ्यावक्त्रमा सम चरणमां ज आवे-छे. युग्मविपुलामां सम चरणमां सातमो अक्षर लघु लाववो, एम जो नियम करिये तो चार अक्षर पछी जगण मूकतां पण सातमो अक्षर लघु आवी जायछे, तेथी ए रूप पथ्यावक्त्र साथे मळी जायछे, माटे तेथी भिन्न रूप पाडवा सारु मात्र सम चरणने बदले चारे पदमां सातमो लघु आणवो ए नियम स्वीकारवो ठीक छे तेथी अमे तेनुं ग्रहण कर्युं छे.

२ विपुलामां युग्म (२-४) पदमा सातमो अक्षर लघु आवे-छे, माटे केटलाक, विपुलाने बदले युग्मविपुला नाम आपेछे. मंदारमरंदचम्पूमां आने युग्मविपुला कहेल छे.

विपुलानी रूपसंख्या काहाडवानी रीति आ प्रमाणे छे:—

एनां मात्र सम चरणमाज सातमो अक्षर लघु आणवो, एम स्वीकारिये तो वक्त्रना रूप प्रमाणे आनु पण माप पेहेला त्रीजा पदमां वक्त्र प्रमाणे होतां, प्रथम चरणना २४ रूप थाय; अने सम चरणना प्रथम स्थाननां २ रूप, त्यारपछी ६ गणनां ६ रूप, त्यारपछी अंत लघुवाळां (भ, न, त, ज,) चार रूपने उपर कहेला छेल्ला स्थाननां २ रूपे गुणतां एकंदर (२×६×४×२)=९६ रूप थायछे. एटले पूर्वार्द्धनां २४× ९६=२,३०४ रूप थयां, तेटलांज रूप उत्तरार्द्धना गणतां २३०४×२३०४=५३,०८,४१६ रूप थयां. परंतु आपणे चारे चरणमां सातमो अक्षर लघु आणवा स्वीकार्यो छे, ते हिसाबे प्रत्येक चरणनां ९६ रूप थायछे एटले तेनो चतुर्घात करतां (९६×९६=९२१६×९२१६)=८,४९,३४,६५६ रूप थायछे.

२०४ भविपुला[1]. { विषमपादे चोथा अक्षर पछी भगण आवे,
सम पदमां भ न त के ज मांथी कोइ आवे.

विषमे तो चार पछी, भ थायछे पदे खरे;
भविपुलामां भ न त, वा ज पादे समे धरे.

१ केटलाकनो मत एम पण छे के, प्रत्येक चरणमां चार अक्षर पछी भगण आणिये तो ते भविपुला केहेवाय, तेवीज रीते रविपुला, नविपुला तथा तविपुलामां पण प्रत्येक चरणमां चार अक्षर पछी जे नामनी विपुला होय ते गण आणवा. दरेक विपुलानी रूपसंख्यानो प्रकार उपर जे नियम बताव्या छे तेथी समजी लेवो.

२०५ रविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी रगण आवे,
बाकी भविपुला प्रमाणे.

चार पूठे भा न ता के, ज मांथी को' धरे समे;
विपुला रमां र धार, चार पाछळ विषमे.

२०६ नविपुला. { विषमपदे चोथा अक्षर पछी नगण आवे,
बाकी भविपुला प्रमाणे.

चार धारी भ न त के, ज धरो ने पदे समे;
नविपुला विषममां, न धरीने रचो तमे.

२०७ तविपुला. { विषमपदे चोथा अक्षर पछी तगण आवे,
बाकी भविपुला प्रमाणे.

चार पूठे भा ना त के, ज समे तो करो तमे;
तविपुलामां थायछे, चार पूठे त विषमे.

महाकवियोना प्रयोगमां बे विषमपदने बदले गमे ते एकमां पण भगण आणेलो जोवामां आवेछे, ते उपरथी गमे ते विषम पदमां भगण आणिये तोपण चाले, अने आ विकल्प नियम बीजा गण नांखवाथी त्रिपुलाने पण लागु पडेछे.

२०८ मविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी मगण आवे. बाकी भविपुला प्रमाणे.

त्रिपुला ममां आणो म, चारनी पछी विषमे;
भ न ता के जा मांथी तो, चार पूठे धरो समे.

२०९ यविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी यगण आवे. बाकी भविपुला प्रमाणे.

यविपुला य आण्येथी, विषमे पदे थायछे;
भ ना ता के जमांथी को, लावी समे रचायछे.

२१० सविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी सगण आवे. बाकी भविपुला प्रमाणे.

सविपुला स धर्याथी, विषमे तो बने खरी;
भ किंवा न त ज मांथी, समे साचवीने धरी.

२११ जविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी जगण आवे, बाकी वक्त्र प्रमाणे.

जविपुला ज विषमे, चार पूठे धरी करो;
ज वा भ वा न के त ए, साचवीने समे धरो.

१ वक्त्रथी ते विपुला सुधीना छंदोना पदोनुं एक बीजामां मिश्रण थवाथी अनेक भेद थायछे. अने एवा संकीर्ण असंकीर्णमां चोथो अक्षर घणुं करीने गुरु मूकवानो आम्नाय छे.

२०४ भविपुला[1]. { विषमपादे चोथा अक्षर पछी भगण आवे,
सम पदमां भ न त के ज मांथी कोइ आवे.

विषमे तो चार पछी, भ थायछे पदे खरे;
भविपुलामां भ न त, वा ज पादे समे धरे.

१ केटलाकनो मत एम पण छे के, प्रत्येक चरणमां चार अक्षर पछी भगण आणिये तो ते भविपुला केहेवाय, तेवीज रीते रविपुला, नविपुला तथा तविपुलामां पण प्रत्येक चरणमां चार अक्षर पछी जे नामनी विपुला होय ते गण आणवा. दरेक विपुलानी रूपसंख्यानो प्रकार उपर जे नियम बताव्या छे तेथी समजी लेवो.

२०५ रविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी रगण आवे,
बाकी भविपुला प्रमाणे.

चार पूठे भा न ता के, ज मांथी को' धरे समे;
विपुला रमां र धार, चार पाछळ विषमे.

२०६ नविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी नगण आवे,
बाकी भविपुला प्रमाणे.

चार धारी भ न त के, ज धरो ने पदे समे;
नविपुला विषममां, न धरीने रचो तमे.

२०७ तविपुला. { विषमपदे चोथा अक्षर पछी तगण आवे,
बाकी भविपुला प्रमाणे.

चार पूठे भा ना त के, ज समे तो करो तमे;
तविपुलामां थायछे, चार पूठे त विषमे.

महाकवियोना प्रयोगमां बे विषमपदने बदले गमे ते एकमां पण भगण आणेलो जोवामां आवेछे, ते उपरथी गमे ते विषम पदमां भगण आणिये तोपण चाले, अने आ विकल्प नियम बीजा गण नाखवाथी विपुलाने पण लागु पडेछे.

२०८ मविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी मगण आवे. बाकी भविपुला प्रमाणे.

त्रिपुला ममा आणो म, चारनी पछी विषमे;
भ न ता के जा मांथी तो, चार पूठे धरो समे.

२०९ यविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी यगण आवे. बाकी भविपुला प्रमाणे.

यविपुला य आण्येथी, विषमे पदे थायछे;
भ ना ता के जमांथी को, लावी समे रचायछे.

२१० सविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी सगण आवे. बाकी भविपुला प्रमाणे.

सविपुला स धर्याथी, विषमे तो बने खरी;
भ किंवा न त ज मांथी, समे साचवीने धरी.

२११ जविपुला. { विषम पदे चोथा अक्षर पछी जगण आवे बाकी वक्त्र प्रमाणे.

अन्यदेशीय.

दक्षिणना छंद.

अभंग मुख्यत्वे बे प्रकारना छे. एक म्होटो अने बीजो न्हानो.

१ म्होटो अभंग.

१,२,३ पादमां छ छ अक्षर.

४ पादमां चार अक्षर.

म्होटा अभंगना बे प्रकार छेः—

पेहेला प्रकारमां बीजी अने त्रीजी ऌडना प्रास मळे.

षड् अक्षर छे, पेंले बीजे त्रीजे,

चोथे चार कीजे, अभंगमां.

बीजा प्रकारमा त्रणे ऌडना प्रास मळे.

अक्षर छ त्रणे, चोथे चार गणे;

त्रणे प्रास भणे, अभंगमां.

२ न्हानो अभंग.

एना बे चरण थायछे प्रति पदमां आठ अक्षर, क्वचित् छ अक्षर पण प्रथम पदमा आवेछे. बन्ने पदना अनुप्रास मळेछे.

न्हाना अभंगनो पेहेलो प्रकार.

वर्ण आठ आठ करो, एवां चरण बे भरो;

क्वचित छ पेंले थाय, एम अभंग रचाय.

न्हाना अभंगनो बीजो प्रकार.

पेहेला चरणमां आठ अक्षर, बीजा चरणमां सात अक्षर होतां यमक आवे.

वर्ण आठ पेंले दले,

[illegible]

न्हाना अभंगनो त्रीजो प्रकार.

आठ अक्षरनां चार चरण तेमा प्रथम त्रणनां यमक मळे.
मात्र छेल्लो अक्षर मळे तोपण चाले.

आठ वर्ण पदे थाय,
चार चरण रचाय,
त्रण प्रास मळी जाय,
तेने अभंग गणाय.

३ दिंडी.

१. (३+६) ९, (३+३+ग+ग) १०=१९
२. (३+६) ९, (३+३+ग+ग) १०=१९
३. (३+६) ९, (३+३+ग+ग) १०=१९
४. (३+६) ९, (३+३+ग+ग) १०=१९

पेहेली बीजीना प्रास मळे, त्रीजी चोथीना मळे, अथवा चारेना मळे.

कला त्रण खट त्रण, त्रिपर कर्ण आणो,
दिंडीमां विरति, नव दशमे जाणो.

४ साकी.

१. ४+४+४+४+४+४+२+ग=२८
२. ४+४+४+४+४+४+२+ग=२८

चोकलिया गण सात रचातां, तेमां गुरु धर छेले;
साकी द्विपदी छे सोहाती, अठ्ठावीशने मेळे.

जुवो आज मापनो चोपायो पृष्ट ४६ अंक ११५ मे.

५ ओवी.

१. आठ अक्षर
२. आठ अक्षर
३. आठ अक्षर } त्रणेना प्रास मळे.
४. सात अक्षर

ओछा वत्ता अक्षर पण थइ जायछे.

त्रणे वर्ण आठ आण,
चोथे पदे सात जाण;
नथी वर्णनुं प्रमाण,
ओवीकेरा रागमां.

६ घनाक्षरी कवित.

चार ओवीनो एक छंद थायछे.

८,८,८,७=३१ अक्षरनां चार चरण.

घणु करीने आठ आठ अक्षरनी बार बार मात्रा थवी जोइए सात अक्षरनी ११ मात्रा घणुं करीने थवी जोइये एवो प्राय: नियम आठ अक्षरना त्रणे यतिना प्रास मळे अने सात अक्षरवाळी छेली भड चारे प्रास मळे. पृष्ट ४५४ अंक १४८७ मे कवित-मनहरण स प्रासना वधारा सिवाय आनुं मळतापणु छे.

एकत्रिश वर्ण आवे, यति तेमां युग लावे,
प्रतिपदे एक भावे, ओवी रच आदरे;
आठ वर्णो त्रण वार, एक पछी एक धार.
वर्ण सात वळी सार, पाद तणा पादरे;

આઠતણી કળા બાર, સાતતણી અગિયાર,
એમ વધી મળી ધાર, સુડતાળીસ ખરે;
માત્રાનો ન નિંમ કાંય, ભણ ઓવી રાગમાંય,
સર્વ પ્રાસ મળે જાંય, ઘનાક્ષરી તે ઠરે.

૭ કટાવ-કટિબંધ.

કટાવ રચના કરવા કાજે, આઠ કળા પ્રતિ યતિ વિરાજે;
બે યતિ ચરણે ચરણે લાવો, અથવા ફાવે તેમ બનાવો;
યતિ યતિ કેરા પ્રાસો મળતા, લાગટ એક બીજાશું ભળતા;
કરણ ઘાટપર મધુર જ લાગે, રણકારા પ્રાસોના વાગે;
એવી રીતે પ્રીતે પ્રીતે, પ્રાસ ધરીને સોજ કરીને;
મોજ પ્રમાણે ટાણે ટાણે, ટૂંકો મૂકો;
કટિબંધનો બંધ બાંધવા, બે છેડા સરખાજ સાંધવા;
પ્રથમ ચરણ તે ધ્રુવપદ જાણો, ટેક નામ તેનેજ પ્રમાણો;
તે તો છેલે ચરણે રાજે, કટાવ રચના કરવા કાજે.

સામાન્ય કટાવની રચના તો અમે ઉપર જણાવી છે તે પ્રમાણે છે. એમાં આઠ આઠ માત્રાની ટૂંકો ઇચ્છા પૂર્વક વધારી શકાય છે. કેટલાએક પ્રારંભમાં ધ્રુવપદ જૂદાં જૂદાં મૂકેછે. કેટલાએક અમૃતધ્વનિનેજ કટાવ ગણેછે, જુવો પૃ. ૧૪૨ માત્રામેળ વિષમ જાતિ અંક ૧૬, એમાં પ્રારંભમાં એક દુહો અને પછી ત્રણ અષ્ટકલનું ૨૪ માત્રાનું સમ ચરણ એવાં ચાર ચરણ આવેછે. કવિ દલપતરામે (જુવો દલપતકાવ્ય પ્રથમ આવૃત્તિ પૃ. ૧૨૬મે)

"प्रभुस्तुति कटाव-अमृतध्वनि छंद" एम लख्युं छे; पण प्रारंभमां दुहाने बदले चौद चौद मात्रानां चार चरण मूकीने इच्छापूर्वक अष्टकलनी टूको मूकी छे अने अंतमां टेकना अनुप्रास मेळववा माटे छेल्ला अष्टकल उपर बे गुरु वर्णनी चार मात्रा वधारी प्रारंभनो चौद मात्रावाळो चारे चरणनो टेक फरी मूक्यो छे. जेमके:—

प्रारंभ.

"जय जय जन अंतरजामी, निर्मळ गुणमय बहुनामी;
खुदमां न मळे कशी खामी, छो सकळ जगतना स्वामी." टेक.

अन्त.

सदा स्वतंतर, दलपत अंतरगामी;
जय जय (इत्यादि चारे चरण प्रारंभनां मूक्यां छे.)

कवि दयारामे टेकमां चौद चौद मात्रानां बे चरण मूक्यां छे. (जुवो दयारामकाव्यसंग्रह त्रीजी आवृत्ति पृ. ५९६,) छेवटे टेकने अनुसरतुं एक एक चरण आण्युं छे.

"श्री बृंदावन अस धैयें, प्रीतम प्यारी रस पैयें."
ए प्रमाणे प्रारंभमां टेक छे, अने अन्तमां
"कहो जु क्यां लग गैये, श्री बृंदाबन अस धैये." इत्यादि.

मराठी भाषामां अमृतरावना कटाव वधारे वखणायछे. (नवनीत बीजी आवृत्ति पृ. २२४,) एमां जूदा जूदा कटावमां नीचे प्रमाणे जूदां जूदां ध्रुवपद अथवा टेक छे.

राजाधिराज रामचंद्र गावा हो= २० मात्रा थायछे.

{ सज्जन हो निज गुज आपुलें उमजाना,=२० मात्रा.
{ हरिलागि भजाना.=१० मात्रा.

{ श्री कृष्णें सुदामजीला सोन्याची नगरी दिधली.=२८ मात्रा.
{ स्वानुभूत हृदया मंथिली.=१४ मात्रा.

{ भगवंत भक्तजनाचें निजनामें संकटवारी,=२७ मात्रा.
{ करुणाकर कृष्ण मुरारी.=१४ मात्रा.

आनंदे वंदावा गणनायक तो, मंगलदायक तो.=२०+१०मात्रा.

नर्म कविता पृ. ८०२ मे नीचे प्रमाणे ध्रुवपद आप्युं छे.

गोपियो खेंचाइ हरिनी भणी ते; वांसलडी सुणी ते. टेक.

नर्म कविता पृ. २०८ मां नीचे प्रमाणे छेः—

अद्भुत कृत्य पाताळे, संतोषे हर्ष भाले,
सृष्टिक्रम काळे काळे, कीधां जे देव दयाळे;
मुवेलांने पण पाळे, आवे नहि खूबी ख्याले.
ख्याले ख्याले. टेक.

अन्तमां नीचे प्रमाणे छेः—

सुखना साधन आले आले,
आवे नहि खुबी ख्याले ख्याले.

आ उपरथी जणायछे के कवियोए ध्रुवपद आणवानो सरखो नियम पाळ्यो नथी.

(अवशेष भाग पाछळथी छपाशे)

इति प्रथम भागः

"प्रभुस्तुति कटाव-अमृतध्वनि छंद" एम लख्युं छे; पण प्रारंभमां दुहाने बदले चौद चौद मात्रानां चार चरण मूकीने इच्छापूर्वक अष्टकलनी टूको मूकी छे अने अंतमां टेकना अनुप्रास मेळववा माटे छेल्ला अष्टकल उपर बे गुरु वर्णनी चार मात्रा वधारी प्रारंभनो चौद मात्रावाळो चारे चरणनो टेक फरी मूक्यो छे. जेमके:—

प्रारंभ.

"जय जय जन अंतरजामी, निर्मळ गुणमय बहुनामी;
खुदमां न मळे कशी खामी, छो सकळ जगतना स्वामी." टेक.

अन्त.

सदा स्वतंतर, दलपत अंतरगामी;
जय जय (इत्यादि चारे चरण प्रारंभनां मूक्यां छे.)

कवि दयारामे टेकमां चौद चौद मात्रानां बे चरण मूक्यां छे. (जुवो दयारामकाव्यसंग्रह त्रीजी आवृत्ति पृ. ५९१,) छेवटे टेकने अनुसरतुं एक एक चरण आण्युं छे.

" श्री वृंदावन अस धैयें, प्रीतम प्यारी रस पैयें."

ए प्रमाणे प्रारंभमां टेक छे, अने अन्तमां

"कहो जु क्यां लग गैये, श्री वृंदावन अस धैये." इत्यादि.

मराठी भाषामां अमृतरावना कटाव वधारे वखणायछे. (नवनीत बीजी आवृत्ति पृ. २२४,) एमां जूदा जूदा कटावमां नीचे प्रमाणे जूदां जूदां ध्रुवपद अथवा टेक छे.

रणपिंगल भाग १ ला नी पूरवणी.

रचीने प्रसिद्ध करनार

रणछोडभाई उदयराम.

मुंबाई:
नेटिव ओपिनियन मुद्रायंत्र

संवत् १९६२, पोष.

सन १९०६, जान्युआरी.

मूल्य चार आना

(श्री खेंगार वृत्त.)

(पृष्ठ ५२१.)

नृप खेंगारजी शरणे रहेने, रणशूर उदयरामे,
घिरजे झाझे यत्नो करीने, कविने सुखकर कामे,
प्रतिनिधि पद पण नियमे चलवी, कार्ये तनमन दीधुं,
त्यार पछीथी अवकाशे आ, निज रणपिंगळ कीधुं.

(रणोदय वृत्त.)

(पृष्ठ ४९२.)

छे पंचावन संवत सारो, रह्यो ओगणीसें व्यापी,
अदार ने अठ्ठाणु सनमां, मुजयंत्रे रचना छापी,
बीजा आश्विननो पुनमे आ, थयो भाग पे'लो आखो,
प्रभु अक्षा अभ्यासीजननें, जगमांहे सुखिया राखो.

रणपिंगल भाग १ ला नी पूरवणी.

रचीने प्रसिद्ध करनार

रणछोडभाई उदयराम.

मुंबाई:
नेटिव ओपिनियन मुद्रायंत्र.

संवत् १९६२, पोष.

सन १९०६, जानुआरी.

मूल्य चार आना

पूरवणीनी अनुक्रमणिका.

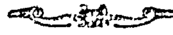
फ.

पूरवणीनी अनुक्रमणिका.

पुरवणीनी अनुक्रमणिका.

रणपिंगल प्रथम भागनी पूरवणी.

मात्रा मेळजाति.



समजाति.

गणप्रस्तारप्रकाशमा एकथी आरंभी २४ मात्रा सुधीनी जातिने मत्तछन्द एवुं नाम आप्युं छे, तेनां सख्यावार भेदनां नाम नीचे प्रमाणे छेः—

मात्रा संख्या.	छन्द अथवा जातिनाम.	मात्रा सख्या.	छन्द अथवा. जातिनाम.
१	अचल.	१३	धरणी.
२	शूलधर.	१४	मधुमालती.
३	वज्र.	१५	चोपाई, जयकरी.
४	ब्रह्म.	१६	विद्युन्माला.
५	पन्नग.	१७	चन्दन.
६	वेणी.	१८	वन्दन.
७	दीप.	१९	तमाल.
८	प्रसिद्ध.	२०	अरुण.
९	रुद्र.	२१	प्लवंगम.
१०	सोमराज.	२२	कमन्द
११	मालती.	२३	निश्चल.
१२	ताडव.	२४	काव्य.

समजातिना आरंभमां याज्ञिकादि पांच मात्रानी जातिओ लेवामां आवी छे. अने तेथी पूर्वेनी एटले एकथी चार मात्रानी जातिनो कोइ उपयोग करतुं नथी एम जणाववामां आव्युं छे. अचलथी आरंभी ब्रह्मा पर्यन्तना मत्त छंदो—जातिनो वर्णवृत्तिमां समावेश थतो होवाथी अथवा खरूं कहिये तो, तेना जे छंदो बने छे ते नियत वर्णमेळने लगता बनता होवाथी ते त्या लेवामा नथी आव्या. परंतु तेना जे जे वृत्त बने छे ते ते वृत्त तले टीपमा तेनी नोंध लखेलां आवी छे. तोपण विशेष स्पष्टिकरण माटे तेना विस्तारनी अगत्य जणातां ते विषे क्रम वार नीचे प्रमाणे लखवामा आवे छे.

१ अचल. १ मात्रानी एक वृत्ति थाय छे.

१ ख

२ ग

३ भ

४ व

२ शूलधर. २ मात्रानी २ वृत्ति थाय छे.

१ कर

२ कल

३ प्रति

४ पद

३ वज्र. ३ मात्रानी ३ वृत्ति थाय छे.

वासव. लगना चार चरण करवां.

आ प्रमाणे करतां महिवृत्त थायछे—जुवो रण० पृ. २२५.

ताल. गलना चार चरण करवां.

आ प्रमाणे करता सारु, चारु वृत्त थाय छे. जुवो० पृ. २२६.

तांडव. लललना चार चरण करवा.

आ प्रमाणे करता हरिणी, कमलि, कमल वृत्त थाय छे. जुवो पृ० २२७.

४. ब्रह्मा. ४ मात्रानी ५ वृत्ति थाय छे.

५ **पन्नग** ९ मात्रानी ८ वृत्ति थाय छे. तेना छेल्ला भेद ।।।।। ने **गमकनु** नाम आप्यु छे. समजाति पृष्ठ ८ अंक १७ मे **तोमर** जाति छे, एविषे विशेषहकीकत नीचे प्रमाणे छे.

माप=ठगण (अन्त्य गुरुविनानो) + डगण (जगण विनानो) + ताल (ऽ।).=१२ मात्रा.

आमां प्रत्येक चरणमां ठगणनो एक लघु एम बे लघु निश्चल छे. माटे एना चारे चरणना पेहेला रूपमा आठ लघु अने २ गुरु ए प्रमाणे आवे. तेमाथी अकेक गुरु घटाडी बबे लघु वधारता जइये तो ते हिसाबे १७ भेद थाय; तेमाना छेल्ला भेदमा चारे चरणमा ४८ लघु अने चार गुरु आवे. मात्रिक गणने ध्यानमा लइये अने तेना भेदनी गणत्री करिये तो ते सख्या नीचे प्रमाणे आवे:—

ठ ड ता

चरणभेद=५×४×१=२०

कुलभेद=२०×२०×२०×२०=१६,०००

उपर जणावेला १६,००० भेदमाना केवळ लघुगुरु ना तफावतथी उत्पन्न थता १७ भेदना नाम अने तेमना स्वरुप नीचे आपेला कोष्टक प्रमाणे छे—

तोमरना १७ भेदनुं कोष्टक.

क्रमांक.	नाम.	गुरु	लघु.	कुलवर्ण.
१	शिव	२०	८	२८
२	विष्णु	१९	१०	२९
३	अज	१८	१२	३०
४	शशी	१७	१४	३१
५	सूर्य	१६	१६	३२
६	हरि	१५	१८	३३
७	मदन	१४	२०	३४
८	धन	१३	२२	३५
९	वन	१२	२४	३६
१०	पुर	११	२६	३७
११	गिरि	१०	२८	३८
१२	सिध	९	३०	३९
१३	नर	८	३२	४०
१४	सर	७	३४	४१
१५	कोल	६	३३	४२
१६	नभ	५	३८	४२
१७	धराणि	४	४०	४४

आपेलुं रुप उपर जणावेल १७ भेदमांना कया भेदने लगतुं छे, ते जाणवा माटे रुपोदिष्ट विधि नीचे प्रमाणे छे.

आपेल **तोमर** जातिना चारे चरणमांना लघु गुरुनो प्रथक् प्रथक् थाळो करवो. जे लघुनी संख्या आवे, तेनु अर्ध करी तेमांथी त्रण बाद करता जे शेष रेहे तेटलामो ए जातीनो भेद जाणवो.

जगण परत्वे आ जातिनी नीचे प्रमाणे त्रण संज्ञा पडे छे.

समचरणमा मात्र एकज जगण होय तो ते पति केहेवायछे.

आखी जातिना चारे चरणमा त्रण जगण होय, तो ते उपपति केहेवाय छे.

त्रणथी वधारे जगणवाळी जाति वैशिक जाति केहेवाय छे.

न्यूनाधिक लघुपरत्वे आ जातिना नीचे जणावेला विप्रादि त्रण भेद थाय छे.

आठ लघु होय, तो ते विप्रा केहेवाय छे, दश लघु होय, तो ते वैश्या केहेवायछे, अने वीस लघु होय, तो ते जाति शूद्रा केहेवाय छे.

एनां आद्यन्त रुपनुं स्वरुप नीचे प्रमाणे थायः—

ऽ ऽ ।   ऽ ऽ   ऽ ।   आदिरुप.

। । । । ।   । । । ।   ऽ ।   अन्त्यरुप.

मानव. १४ मात्रानी ३१० वृत्ति.

मधुमालती. ७, ७, यति=१४. ३, ५, १०, १२ ताल.

कर सात फरि कर सात जो,
पद मध्य कुल, कल चौद जो,
मधुमालती, रच भावथी,
त्रणने छ दश, [13] लख तालथी.

गणप्रस्तार प्रकाशमां आ जातिना आपेला चक्रमां तेनुं पेहेलुं रुप— ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ गुरुनुं आप्यु छे, ए बराबर नथी. एम थवाथी सात सात मात्रा ए यति लाववानो नियम त्रुटे छे.

हंसी. मात्रा १५ तेमां अन्ते ल, ग.

पंदर कला करो प्रति पदे,
भू पछी श्रुंति श्रुंति ताले वदे;
हंसी एवी रीते रचो,
हरि गुण गावा मनथी मचो.

ओ नाम वर्णमेलमां पृ. २७७, ३९१ अंक ४९७, १२८८ में अनुक्रमे छे. वळी पृ. २८९ में अंक ९७३ ना उपजातिना पेटामां पृ. २८६ में अंक ९ में पण छे.

बाला. मात्रा. १७.

५+५+५+ ग=१७ मात्रा.

१, ५, ९, १३, १७ कला ए ताल.

पांच कळ त्रेवडी ने गुरू छे,
एम सत्तर कळे पद पूर्ण छे;
एक उपर पछी चार चडता,
जाति बाला विषे ताल पडता.

मात्रा १७ नी जातिनु सामान्य नाम आपणे महासंस्कारी आप्युं छे तेने चंदन एम केटलाक केहे छे, तेनुं मापः—

चंदन. ३+४+३+४+३=१७. मात्रा.

१, ४, ८, ११, १५ मात्रा ए ताल.

धार त्रणपर चार त्रणपर चार,
नेत्र तेपर आण कल सुखकार;
जाति चंदन मांह सत्तर आण;
पादमां कल कुल एवी जाण.

गण प्रस्तारप्रकाशमा प्रतिचरणमा ७+७+३=१७ मात्रा लाव-वानुं कह्यु छे. अमे विशेष सरलता माटे उपरप्रमाणे ७ ना ३+४=७ एवा बे विभाग पाडी मात्रा लाववानुं सूचव्युं छे.

अवतारी मात्रा २४ नी वृत्ति ७५,०२५ छे तेने गणप्रस्तार प्रकाशमां काव्यनु सामान्यनाम आप्युं छे.

लालाम. पेहेला अने त्रीजा पादमां ४ मगण थइने मात्रा २४ बीजा चोथा पादमा गमे तेम गुरुलघु मळीने मात्रा २४.

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्रा ए ताल.

पेले त्रीजे पादे बारे गुरु आवे,
समपद कल चोवीश गमे त्यम गणीने लावे;

पे'ले पांचे, अके तेरे चारे चाले,
चडता गणीने सत्तर तेविशपुर छे ताले.

केटलाक छन्दःशास्त्रकारो गणप्रस्तारप्रकाशकर्त्ता इत्यादि पचीश मात्राथी आरंभी ४८ मात्रा सुधीनी जातिओने उपमात्रिक (उपमत्त) छंदो गणे छे अने तेने नीचे आपेला कोष्टक प्रमाणे भेद अने उपभेदमा विभक्त करे छेः--

क्रमांक.	नाम.	मात्रा.	भेदना नाम.
१	मदनाग.	२५	
२	अनुहरगीति शक्रचादर.	२६	१ रत्ता. २ विताल. ३ श्याम. ४ गंधानक.
३	कलानिधि.	२७	१ सरली. २ ललितपद. ३ कुमुद. ४ कमल.
४	गीतक (हरिगीति.)	२८	१ दवैया. २ अनुहारिगीत. ३ गीतक.
५	मरहट्ठा.	२९	
६	चोपाइया.	३०	१ ककुभा. २ साटका. ३ कामक. ४ रुचिरा. ५ महादुमिला.
७	सवैया.	३१	
८	त्रिभंगी.	३२	१ पद्मावति. २ दंडक. ३ लीलावती (यगणांत.) ४ दुमिला (कर्णांत .) ५ लोकायत (मध्ययति.) ६ वीरवर (द्विज जगणात्मक.) ७ सिध्यध्वनि. ८ मनहर.

क्रमांक.	नाम.	मात्रा.	भेदनां. नाम.
९	रंगी.	३३	
१०	धीर.	३४	
११	वीर.	३५	
१२	शूर.	३६	
१३	झूलना.	३७	करखा.
१४	उपझूलना.	३८	
१५	अतिझूलना.	३९	
१६	हरिझूलना.	४०	१ मदनहर. २ उद्धित. ३ दीपमाला. ४ विजय. ५ दंडक. (वैत.);
१७	खंज.	४१	
१८	फणीश.	४२	
१९	खगपति.	४३	
२०	व्याली.	४४	
२१	गजेंद्र.	४५	
२२	चंचरीक.	४६	
२३	पंचवदन.	४७	
२४	नागमणि.	४८	

प्रथम लक्षण.

मदनाग=१२+१३=२५ मात्रा. अन्ते रगण तेना बधा मळीने २० वर्ण.

१, ५, ९, १३, १७, २१ मात्रा ए ताल.

बार कला उपॅर विरति, पछीथी इसुकल धारजो,
तेपर धरीँ एक रगण कल पच्चिश कुल सारजो;
प्रतिपद अक्षर विश कुल, कल पच्चिशना आणजो,
जाति रसिक तणुँ नामज, कवि **मदनाग** ज जाणजो.

बीजुं लक्षण.

मदनाग, =१०+८+७=२५

३, ७, ११, १५,१९, २३ मात्राए ताल.

अथवा

प्रथमे दश आणो, पछीँ, वसु जाणो छेवट सात,
विरति ए रीते, आणो प्रीते, कवि साक्षात;
कुल कल पच्चिशे तालज त्रीजे, चडता चार,
मदनागे एवो कवियें लेवो, अवर विचार.

महा भागवत मात्रा २६ नी सामान्य जातिनुं नाम अमे आप्युं छे, तेने गणप्रस्तारप्रकाशमा **अनुहरगीति** कहेली छे. तेना **रत्ता**, २ **विताल**, ३ **श्याम**, अने **गंधानक** एवा चार भेद तेना केहेवामा आव्या छे. तेमनां क्रमवार लक्षण नीचे प्रमाणे छे.

१ रत्ता.

१४+१२=२६ मात्रा १४, १२ यति.

३, ६, १०, १३, १७, २०, २४ मात्रा ए ताल.

रच जाति रत्तामांह कल, कुल चौद उपर बार,
प्रतिपद त्रिषे पण विरति तुं, कल चौद बारे धार;
धर ताल त्रणपर प्रथम पछी, कल षट उपर कवि, आण,
ए रीतथी त्रण चार चडी, सात ताल प्रमाण.

१ टीप

आ मापनी गीता नामे जाति प्रथम भाग पृष्ठ ४२ अंक २०४ मा छे. पण तेमां अन्तमा गुरुलघु आणवानो, विशेष नियम बतावेलो होवाने लीधे अमे आहि आने जूदी पाडी छे

२ विताल. मात्रा २६ तेमां ८, ८, १० यति.

१, ५, ९, १३, १७ २१, २५ मात्रा ए ताल.

आठे आठे, यतिना ठाठे, दश कल तेपर धर,
एवी रीते, रचिने प्रीते, छव्वीश कुल कल कर.,
ताल प्रथमपर धर तु कविवर, चढता चतुर उपर,
एवा ताले, जाति विताले, रचना रच सुखकर.

३ श्याम. १३, १३ मात्राए यति.=२६ मात्रा.

प्रत्येक यतिमां अन्ते गुरु अने १, ५, ९ मात्राए ताल.

तेर कला प्रथमे धरी, तेर पछीथी जाणिये,
एवी बे विरति करी, छव्वीश कुल कल आणिये;
प्रथमे शरपर ने नवे, प्रति यति ताल वखाणिये,
श्याम ज जाति रीति ए, रचना नियम प्रमाणिये.

४ गंधानक.

पाद	वर्ण	मात्रा.
१	१७	२६
२	१८	२६
३	१७	२६
४	१८	२६

प्रत्येक पादमां १० मा वर्ण पर यति.

जाति गंथानक रचो कवि, कुल कल धारीने
छविश छविश पादमध्ये, माप खूब विचारीने;
कुलवर्ण त्यांट्ट आद्य पादे, तृतीये तो लावजो,
अढार वर्णो अन्य पदमां, दशे यति समावजो.

२७ मात्रानी **नाक्षत्रिक** जाति अमे पृष्ट ४३ मा आपेली छे, तेने गणप्रस्तार प्रकाशमा **कलानिधि** छंद केहेछे अने तेनु लक्षण नीचे प्रमाणे आप्युं छे.

कलानिधि. ९+७+११ (अन्ते गल)=२७ मात्रा.

धर **कलानिधिमां** चरण चरणे, नव, मुँनि भैव क्रमवार
कला कविवर तुं, एवीँ विगते, कुल सत्ताविश धार्
ए गणतरीँ मांह अन्त्य समीपे गुरु लघु जानित ज ताल,
सरस जाति **सरसीँ** समकल धरी, मनमां मोद रसाल.

रणपिंगल पृष्ट ४४ मा सरसी जाति छे तेमां १६+११=२७ मात्रा. तेमा अन्ते गुरु लघु (ताल) लाववा जणाव्युं छे. कलानिधिमा ९+७ एम १६ मात्राना बे विभाग पाड्या छे.

कुमुद. १४+१३ (अन्ते जगण)=२७ मात्रा.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, मात्रा ए ताल.

करिये प्रथमे चौद कला, पछीँ तेपर तेर रखाय,
तेमां अन्ते जगण जरुर, कुल कल सत्ताविशमांय;
प्रथम उपर धरीँ ताल पछी चच्चारे चढ कविराय,
कुमुद तणी रचना रीति, ए बहु ठिकठाक गणाय.

कमल. १३+१४ (तेमां अन्ते गुरु)=२७ मात्रा.

१, ५, ९, १३, १७, २१, २५ मात्रा ए ताल.

दोहानुं पद प्रथम करी चौद पछी कल आणोजी,
तेमां आवे एक गुरु, छेवटमां कवि जाणोजी;
बीजा विरतिमां प्रथम, पछी चच्चारे ताले छे,
कमळ तणी रचना विषे, एवो नियम संभाळ्यो छे.

मात्रा २८ नी जातिनुं सामान्य नाम केटलाक गीतक छे, एम केहे छे.

दुवैया. १६, १२,=२८ मात्रा.

६ डगण+गग=४+४+४+४+४+४+गग=२८

छ डगणपर गग धर नर सुखकर, पद कर, कृतमित एमां,
कुल कल वसुविश कवि कर पदपद, यति रच नृप कल तेमां;
जाति **दुवैया** ख्यातिवाळी, कृतपदमां ए रचजो,
द्विपद दुवैया अर्द्धसमे ते, जूदी आथी गणजो.

प्रथम भाग पृष्ठ ८३ अंक ११ मे अर्द्धसम प्रकरणमां **दुवैया** नामे जाति टगण+ ९डगण+ग ना मापनी आपेल छे ते द्विपाद होतां आ साथे एक नाम सिवाय बीजो संबंध नथी धरावती.

अनुहर गीत

५+६+५+५+५+ल+ल=२८.

३, ६, १० १३, १७, २०, २४, २७ मात्रा ए ताल.

ईश कलापर कर. ईसकला वळी शरकला त्रणवार धर
धरी पाद अन्ते यम लघु तुं, पाद एवा चार कर
त्रण, तर्क, आशा तेर व्यष्टि विश चोवीश ताल पर
धर चरम भकले एम क्रमथी श्रेष्ठ अनुहरगीत कर.

गीतक. ९, ७, १२, यति=२८ मात्रा. अन्ते गुरु.

वृत्तमौक्तिकना कर्त्ताना पिताजी पेठे गणप्रस्तारप्रकाशकर्त्ता ए पण आ जातिना यति १४, १४ राखवानु जणाव्युं छे.

द्रौपदी. मात्रा २८ तेमा अन्ते जगण+गुरु.

१६, १२ मात्रा ए यति.

सोळ बार छे यति सरस वर्ळों,
छेवट ज गुरु आणजो,
साधारण द्रौपदी एहने,
कविजन, जाति जाणजो.

आ द्रौपदी जातिनु प्रथम स्वरुप मज मम जग = २८ मात्रा लइये तो तेमां कुल १२ गुरु अने ४ लघु मळी १६ वर्ण आवे. एटले चारे पदमा ४८ गुरु अने १६ लघु मळी ६४ वर्ण थाय. आमां पदान्तमां जग सर्व स्वरुपमां एकसरखी रीते कायम रेहे छे, माटे तेना गुरुमां अकेक घटाडतां अने लघुमां बबे वर्ण वधारतां तेना जुदा जुदा ४९ भेद थाय छे. ते मागधी पिंगल छंदोग्रंथमा नीचे आपेला कोष्टकमां जणाव्या प्रमाणे नामवार छे.

द्रौपदी जाति भेद कोष्टक.

क्रम.	भेदनुं नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	गौरी.	४८	१६	६४
२	छाया.	४७	१८	६५
३	पोमा.	४६	२०	६६
४	पाआ.	४५	२२	६७
५	हंसी.	४४	२४	६८

क्रम.	भेदनुं नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
६	राहंसी.	४३	२६	६९
७	सीया.	४२	२८	७०
८	मातंगी.	४१	३०	७१
९	रंगी.	४०	३२	७२
१०	मोहा.	३९	३४	७३
११	चित्रा.	३८	३६	७४
१२	जाई.	३७	३८	७५
१३	नंदा.	३६	४०	७६
१४	संसीआ.	३५	४२	७७
१५	कोमारी.	३४	४४	७८
१६	आरी.	३३	४६	७९
१७	सोही.	३२	४८	८०
१८	धीरा.	३१	५०	८१
१९	दापा.	३०	५२	८२
२०	वीरा बीरा.	२९	५४	८३
२१	विंबोटी.	२८	५६	८४
२२	तालागी.	२७	५८	८५
२३	णीरा.	२६	६०	८६
२४	लछी.	२५	६२	८७
२५	खेमा.	२४	६४	८८
२६	कोसा.	२३	६६	८९
२७	सिद्धि.	२२	६८	९०
२८	राकंठी.	२१	७०	९१
२९	उखा.	२०	७२	९२

क्रम.	भेदनुं नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
३०	देही.	१९	७४	९३
३१	कुन्ती.	१८	७६	९४
३२	लोला.	१७	७८	९५
३३	कुंभी.	१६	८०	९६
३४	कोपा.	१५	८२	९७
३५	वंगारी.	१४	८४	९८
३६	राही.	१३	८६	९९
३७	सोभंगी.	१२	८८	१००
३८	रंभा.	११	९०	१०१
३९	खंभा.	१०	९२	१०२
४०	पीता.	९	९४	१०३
४१	वंदा.	८	९६	१०४
४२	सासोराठी.	७	९८	१०५
४३	कोकिलावाणी.	६	१००	१०६
४४	पोमावती.	५	१०२	१०७
४५	सूरा सिंगारा.	४	१०४	१०८

त्रीश मात्रानी महातैथिक जातिनुं नाम केटलाक सामान्य रीते चोपाई होवानुं जणावे छे. तद्भेदांतर्गत कामक नामक जाति नीचे जणावेला मापनी थाय छे.

कामक. १५, १५, यति. ३० मात्रा, अन्ते लघु.
१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्रा ए ताळ.
तिथि कळपर धर तिथिकळ आप, त्रीश कळानुं एवुं माप,
तेमां अन्ते लघु धर एक, एवी कविए मारी छाप.

प्रथम उपर धर. पेलो ताल, पछी चच्चारे चडता चाल,
कामक जाति एवी थाप, कह्या नियम तेमां संभाल.

महादुमिला.

२+४+४,+४+४,+४+४,+४= ३० मात्रा.

बेकलपर चोकल, गणनी सांकल, सात सुहाती आवे,
कुल त्रिश कल एवी, शोभे तेवी महादुमीले, लावे;
यति दश कलपर करी, आठ उपर धरी, वळी आठे ने चारे
कल त्रीजी उपर ताल प्रथम धर पछी चढ चारे चारे.

गणप्रस्तारप्रकाशमां आ जातिनुं माप १०, ८, ८, ४=३० मात्रानुं अने ३, ७, ११, १५, १९, २३, अने २७ मात्रा ए ताल लाववानुं जणाव्युं छे. परंतु अमने उपरप्रमाणे गणात्मक माप विशेष सरळ जणायाथी अमे तेम करवानु सूचव्युं छे.

रुचिरा. ७ डगण+गुरु=३० मात्रा. १६, १४ यति.

रुचिरा कविवर रुचि करी रचजो सात डगणपर गुरु धारी,
पद अन्ते गुरु गरवो धरजो, करजो कलकुल त्रिश सारी;
पदपद नृपकल मनुकल यतिवर, सुरवर वंदित पद करवा,
एक उपर पछी चारे चडता, ताल वसु चरणे धरवो,

प्रथम भाग पृष्ट ८५ अंक २३ मे अर्द्धसमान्तर्गत रुचिरा नामे द्विदल जाति आपी छे तेने आ माप मलतुं छे.

३१ मात्रानी अश्वावतारी सामान्य जात्यन्तर्गत **सवैयो-वीर** नामक जाति आपेली छे, एनां लक्षण संबंधमां गणप्रस्तारप्रकाशकर्त्ता नीचे प्रमाणे लखे छे.

सवैयो. टगण +५ डगण+ठगण (लघ्वन्तवाळो)=३१

टगण उपर शर ड धरीतेपर छेवट लघुनो ठगण धराय,
ए रीते एकत्रिश कलनु-प्रतिपद कविवर ! एम रचाय:
प्रथम उपर पछी श्रुतिश्रुति चडता पदपदमांहे ताल रखाय,
एज सवैयो एकत्रीशो आदि टगणनो एम कराय.

उपर प्रमाणे टगणनां १३ रुप, अने प्रत्येक डगणना ५ रुप तथा ठगणनां आठ रुप थाय छे तेमांना त्रण गुर्वन्त रुप बाद करतां बाकीना पाच रुप थाय छे. तेओनो गुणाकार करयाथी सवैया प्रथमपाद रुप संख्या आवेछे.

गण प्रस्तारनी रीतिये सवैयाजातिनां उपरप्रमाणे रुप थाय छे तेमांथी केवळ लघुगुरु अक्षरनी संख्याथी उत्पन्न थता ६१ भेद नीचेना कोष्टकमा नामवार आपिये छिये.

सवैया भेद कोष्टक.

क्रम.	भेदनुं नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	रघुवर	६०	४	६४
२	रत्न	५९	६	६५
३	मनोहर	५८	८	६६
४	मंजुल	५७	१०	६७
५	मदन	५६	१२	६८
६	कदन	५५	१४	६९

क्रम.	भेदनुं नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
७	मायक	६४	१६	७०
८	सायक	६३	१८	७१
९	मन्दर	६२	२०	७२
१०	मन्द	६१	२२	७३
११	भद्र	६०	२४	७४
१२	भव	४९	२६	७५
१३	गज	४८	२८	७६
१४	गगन	४७	३०	७७
१५	गंभीर	४६	३२	७८
१६	नरेन्द	४५	३४	७९
१७	नवल	४४	३६	८०
१८	नीरज	४३	३८	८१
१९	नागर	४२	४०	८२
२०	नूत	४१	४२	८३
२१	नीरद	४०	४४	८४
२२	नारद	३९	४६	८५
२३	पारद	३८	४८	८६
२४	सिंधुर	३७	५०	८७
२५	शेष	३६	५२	८८
२६	नायक	३५	५४	८९
२७	सर	३४	५६	९०
२८	सारस	३३	५८	९१
२९	सलभ	३२	६०	९२

क्रम.	भेदनुं नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
३०	सेन	३१	६२	९३
३१	मुक्त	३०	६४	९४
३२	हारल	२९	६६	९५
३३	हंस	२८	६८	९६
३४	वृषभ	२७	७०	९७
३५	ऐरावत	२६	७२	९८
३६	धीर	२५	७४	९९
३७	गरुड	२४	७६	१००
३८	मयूर	२३	७८	१०१
३९	कपोत	२२	८०	१०२
४०	नाग	२१	८२	१०३
४१	अचल	२०	८४	१०४
४२	कलाधर	१९	८६	१०५
४३	कुसुम	१८	८८	१०६
४४	समीर	१७	९०	१०७
४५	कन्द	१६	९२	१०८
४६	अनन्द	१५	९४	१०९
४७	अन्त	१४	९६	११०
४८	कल्पतरु	१३	९८	१११
४९	कनक	१२	१००	११२
५०	कमंद	११	१०२	११३
५१	कदली	१०	१०४	११४
५२	गिर	९	१०६	११५
५३	हीर	८	१०८	११६

क्रम.	भेदनुं नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
५४	चंपा	७	११०	११७
५५	चंदन	६	११२	११८
५६	चौसर	५	११४	११९
५७	चातक	४	११६	१२०
५८	ताल	३	११८	१२१
५९	तुरग	२	१२०	१२२
६०	अलि	१	१२२	१२३
६१	पिक	०	१२४	१२४

करिखा, कडखा.

(४+४+४+४) =१६+ (४+४+४+गल) =१५
= ३१ मात्रा.

करिखा कडखा रचवामाटे, चार डगणनी मात्रा सोळ,
तेपर डगण वधारी त्रणने, गुरु लघु तेमां छेवट तोळ;
एवी सोळ तिथि तणी यति बे, एक त्रिश मात्रानी थाय,
एक पछी श्रुति चडती तालो, आठ प्रति पदमांह रखाय;

द्वात्रिंशन्मात्रात्मक लाक्षणिक जातिनुं नाम **गणप्रस्तार** प्रकाशमा सामान्य रीते **त्रिभंगी** राखवामा आव्युं छे. तेना भेदनां लक्षण सव-धमां **गणप्रस्तारप्रकाशकर्त्ता** नीचेप्रमाणे जूदां पडे छेः—

लीलावती १०,८,१४ मात्राए यति लावी ३२ मात्रानी रचवा जणावे छे अने तेमां अन्ते **यगण** लावी तेने **यगणान्त लीलावती** केहेछे.

दुमिला. अन्तमा **कर्ण** एटले बे गुरु लाववा जणाव्युं छे अने तेनुं नाम तेपरथी कर्णान्तदुमिला राख्युं छे.

लोकायत मध्य यति.

८+८+८+८=३२ मात्रा. १,५,९,१३,१७,२१,२५,२९ मात्रा ए ताल.

आठ उपर धर, आठ नियम सर, आठ वळी कर, आठनी उपर,
एम कला कर, बत्रिश कविवर, लोकायत सर, गा पछी सुस्वर;
प्रथमे लावी, चार चडावी, ताल मचावी, आठ रचावी,
भाव भजावी, भक्ति लावी, देव वधावी, ल्यो हे भावी.

वीरवर द्विज जगणात्मक[1]

४ (१ विप्रगण + १ ज ग ण) = ३२ मात्रा.
१, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्रा ए ताल.
|S|

द्विजपर पछात, जगण समजात, द्विजवर पछात, जयकर कराय,
द्विजवर कराय, जगणज धराय, द्विजवर जगाय, द्विजकल-गणाय;
विरवर सदाय, कविवर कराय, ठिक ठिक धराय प्रथम धर ताल,
पछी श्रुति चडाय वसु कुल,गणाय,प्रभुगुण गहवाय,चलव त्यम चाल;

सिध्यधुनि,(४+४+४+४+ग)+(४+४)+ (४+ग)=३२
१८,१४ यति = ३२ मात्रा.
३,७,११,१५,१९,२३,२७,३१ मात्रा ए ताल.

अष्टादश कलपर यति ठिक धारो, आठ उच्चारो छकल धरो,
ए रीते कुलकल, बत्रिश आणो, नियम प्रमाणो, ज्यम उचरो;
त्रीजी कलपर ठिक तालज देजो, चारे लेजो पछी चडतां,
ए सिध्यध्वनि रीति जे आ आपी बहु प्रतापी, सुख करतां.

---

[1] गणप्रस्तारप्रकाशककर्त्ताना कह्या प्रमाणे आ जातिने द्विज जगणात्मक रचवा जतां ते वर्णमेळ छंद—सूम थइ जाय छे.

यमक्का. (यमकर्ण) १ सगण + ५ डगण + १ विप्रगण + १ सगण = ३२ मात्रा. ३,७,११,१५,१९,२३, २७,३१ मात्राए ताल. १०, ८, १४. एवा त्रण यति.

प्रथमे सगण पछी शर डगण धरी, विप्र पछीं चरम सगण धरो,
यति छे दश आठे चौदे एवी, बत्रीश कुलकल सरस करो;
त्रण उपर ताल ज, पछी चच्चारे, चडता कविवर वसु करजो,
यमकर्ण यमक्का, जमकाणी ए जाति सरस जन मन हरजो.

रंगी. १०+८+८+७=३३ मात्रा. ३,७,११,१५,१९,२३, २७,३१ मात्राए ताल

प्रथमे दश करजो, वसु वसु धरजो, यति त्रण रचजो अन्ते सात,
तेत्रिश कल एवी, गणीं गणीं लेवी, पद पद देवी, कवि विख्यात;
त्रीजीपर तालो, पछी संभालो, चारे चालो चडता, आप,
ए रंगी नामे, कविता कामे, ज्यम रस जामे, कवि प्रताप,

धीर. १०+८+८+८=३४ मात्रा.

अथवा.

२+८ डगण (जगणहीन) =३४ मात्रा. ३,७,११,१५,१९; २३,२७,३१, मात्राए ताल

प्रथमे दश आणो, वसु वसु जाणो, वसु परमाणो प्रतिपद लावो,
बे प्रथम कला करीं, आठ डगण धरीं, चोत्रिश कल, खरीं जगण तजावो,
त्रीजीपर तालज, प्रथमे पछीं धज, चडता चारज आठ अणावो,
ए रीते करवा, कविवर गरवा, जन मन हरवा धीर जणावो.

---

१ भागवी पिंगळ छंदोग्रन्थ

वीर २०+१५=३५ मात्रा. २०, १५ यति.

१, ६, ११, १६, २१, २६, ३१ मात्रा ए ताल.

वीसनी एक यति आणजो, प्रीतिथी, ते पछी तिथि कला जाणजो,
एम कुल कल वधी, त्रीशपर पांचनी, पांच पांचे त्रुटी आणजो;
प्रथम पर ताल धरी पांच पांचे चडी, एम कुल ताल तो सात छे,
जाति ए वीरना नामनी छे वहु, कामनी खूब प्रख्यात छे.

सूर. १०+८+८+१०=३६ मात्रा.

३, ७, ११, १५, १९, २३, २७, ३१ मात्रा ए ताल.

प्रथमे दश आणो, वसु प्रमाणो,वसु दश जाणो यति ठिक आवे छे,
छत्रिश कल एवी, प्रतिपद देवी जोया जेवी कविवर लावे छे;
प्रथमे त्रीजीपर, ताल कवि तुं धर, चार पछीथी चड,वसु गणावेछे
एवी ए जाति सूर जाणाती, सरस गणाती, कविमन भावे छे.

झूलणा. केटलाक कवि-गणप्रस्तारकर्त्ता इत्यादि—आ जाति नीचेना मापे पण रचवानुं जणावे छे.

झूलणा माप=३+२+३+२+३+२+३+२+३+२+३+२+३+२;+ग=३७ मात्रा.

टगण पर ण गण धारि पांच एवी कला सात वेळा करस्यानुं वदे छे;
एम कल पांतरीशे करी ते उपर एक गुरु छेवटे लावी दे छे;
एम कल साडत्रिश पदपदे तो धरी झूलणा माप थावा कहे छे,
एक पछी पाच पांचे धरो ताल तो आठ तालो वधी एम लेछे.

अतिझूलणा।

आ जाति नीचे जणावेला मापे रचवानुं गणप्रस्तार प्रकाशकर्त्ता जणावे छे,

माप=३+२+३+२+३+२+३+२+३+२+३+२+३+२+
सगण अथवा कर्ण (SS)=३९ मात्रा.

आप कवि छगण पर ण गण करी पांच
एवी कला सात वखते धरी आणो
पांतरिश पुरण कल थाय तेपर सगण
एक वा कर्ण अन्तेज टीक जाणो
एक उण चालिशुं चरण अतिझूलणा
जातिनुं तो करेछे कवि मनथी.
ताल धरीं प्रथमपर पांचपांचे चडी
नव बधी ताल धरजो तमे तनथी.

वेदी. ३९ मात्रा. अन्ते बे गुरु.

चालीश मांह कम एक गणीएटली चरणमा कल बधी तो करजोजी;
वेदीमां गणतणो कांइ विवेक नहि मात्र मात्रा गमे तेम धरजोजी;
एटली कळविषे अन्तमां बे गुरु आणजो एम कविजन वदे छेजी,
प्रथमपर ताल दइ पाच चडती बधी तालकवि आठतो एमदे छेजी,

दीपमाला. अतिझूलणानुं माप + लघु = ४० मात्रा.

अथवा.

२+३, २+३, २+३, २+३, २+३, २+३, २+३, सगण वा कर्ण
+ल=४० मात्रा

बेउपर त्रण कल करो एम कल शर धरो,
सातकल छगण पछी सगण के कर्ण;
धरीं ते पछी लघु कला कुल चालीश कल,
लाविये ठिक धरी शोभता वर्ण,
जो थाय यति बार दश, दश अने आठपर,

सरळता सरस वनीं आवशे एम,
ए जाति तो थाय छे दीपमाळा वडी,
दीपमाळा समी शोभती जेम.

हरि झूलणा. ८ टगण तेमां पदान्ते गुरु = ४० मात्रा.

५+५+५+५+५+५+५+३+ग=४०

१, ६, ११, १६, २१, २६, ३१, ३६, मात्राए ताल.

पाद हरि झूलणामां टगण आठ छे.
कुल कला चालिशे जइ अडे छे पदे,
अन्तमां एक गुरु राखवा कवि कहे,
ते तमे गोखिने राखजोजी हृदे;
प्रथमपर ताल पडी पांच पाचे चडी
आठ तालो वधी एम आणो तमे;
झूलणा रागमां गाओ तो छेवटे;
त्रण कला नां रवी पडी जाय त्यारे गमे.

प्रचित. ८ टगण = ४० मात्रा.

५+५+५+५+५+५+५+५=४०.

प्रचितमां आठ तो टगण ठिक आणीने,
पद विषे कळवधी गोठवी जाणजो;
कळवधी चालिशे चरणमां थायछे,
एम सौ कविजनो गणतरी आणजो;
प्रथमपर ताल दइ पांच चडती पछी
एम कुलताल मळी आठ छे प्रतिचरण.
मन मूक भटकवुं स्थिर थई प्रभुतणुं,
रटण राखी सदा प्रतिपळे कर स्मरण.

शुभकरण.

१०+१०+१०+७+नगण=४०

(५+५)+(५+५)+(५+५)+(७+।।।)=४०

पांच पर पांच धर, एम कल दशतणी
चार यति आणी ने, रच सरस शुभकरण,
एक पर ताल दइ पांच पांचे चडी,
आठ तालो तणु रच चरण;
एम कल बधी मळी आण चालीश कवि;
ते विषे अन्तमां धर नगण,
प्रभु प्रभु ओ प्रभु, प्रभु प्रभु ओ प्रभु
जीभथकी प्रभुतणुं कर रटण.

देवी गांधारी.

(ट+ड) + (ट+ड) + (ट+ड) + (ट+२+ग) =४०

(६+४)+(६+४)+(६+४)+ (६+२+ग) =४० मात्रा

१,५,९ मात्राए चडती ताल.

छ चारनी दशकल त्रण वेळा आणी,
ते पर षटकल पर बे कल गुरु आणो.
कुल कल चालिशनुं पद एवी रीते,
रचनामां आवे, ते सरस प्रमाणो;
प्रथमे ताल दई, पछी चचारे तो,
चडता गणना खुब करी ने दश करजो.
सुदेव गांधारे, रागे ए गवाय,
देवी गांधारी ए नाम ज धरजो.

उद्धत. ४ (७ल+ग+ल) =४० मात्रा.

(।।।।।।।+ऽ+।)+(।।।।।।।+ऽ+।)+
(।।।।।।।+ऽ+।)+(।।।।।।।+ऽ+।)=४०

लघु कल सरस सात, पछी थकीं उपर ताल,
दश, दश विरति चार, कविवर चरण धार;
त्रिश दश कुल कलाय, उद्धत चरण रचाय,
प्रथम शर वसु ताल, कवि सरस धर नार;
जीवंतर जल प्रवाह श्रम थकीं न कदि खलाय,
जुगति थकी न झलाय, कर तुँ सद उपयोग;
शलिन मलज धुवाय, सु करणीं त्यम सुहाय,
त्यम ठिक चलण थाय, त्यम कर सरस योग.

१विजयदंडक ४० मात्रा २०, २० यति.

(१८+ऽ)+(१८+ऽ)=४०

प्रत्येक यतिमां अन्ते गुरु.

वीसने वीसना विरति बे चरणमां तेतणा अंतमां एक गुरु आणवो,
एम चाळीश कळ प्रतिचरण मांय छे,आ विजय दंडके एम तो जाणजो.
हरिविलासे दीठो छंद आ नविन ते, अहि अमे ते मूक्यो फावतो,
प्रथमपर ताल छे ते पछी शर परे एम चडती वधी ताल तो लावतो.

२खंजे. ६ टगण + १ रगण =४१ मात्रा.

६+६+६+६+६+६+ऽ।ऽ = ४१

१,७,१३,१९,२५,३१,३७ मात्रा ए ताल.

१ हरिविलास नामना पिंगलमांथी.

२ आ जाति यावनी बेत नामना छंदना रागे गवाय छे तेथी केटलाक तेने बेत पण कहे छे. तेनु नाम बहरे मुतदारिक मुसम्मन सालिम छे तेनी बे मिसरा (२० + २०) थइने आ दबकनी एक तूक थायछे

तर्क टगण उपर रगण कविवर भग,
एम चरण चार करी हाम भरी जाणजो;
एक तालीं भालीं भालीं कल रचावी,
रस मचावी पाद पाद निर्विवाद आणजो;
प्रथम थकी ताल भरी अंगें चढी,
सात वळी कडी कडी करी खडी सारजो,
खज जाति सारी भाति एम रची
खूब खमी भडि हरिं गान ध्यान धारजो

अर्धसम प्रकरणमा खजा अने खजिका नामे जाति आपेली छे तेथी आ जूदी छे,

फणीश. मात्रा ४२
२+१० डगण = ४२ मात्रा.
२+(४+४+४+४+४+४+४+४+४+४)=४२
३,७,११,१५,१९,२३,२७,३१,३५,३९ मात्राए ताल.

घर बे कल पेली, वे'ली वे'ली पछीं चोकलिया
दश रोकडिया, रच शणगारी,
कल चालिश उपर बेघर कल कविवर
प्रतिपद माहे शोभे त्यांहे सुखकारी,
कवि त्रीजेथी पडता पछीथी चडता,
चारे चारे तालो हारे दे सारी;
ए रचना ख्याति फणीश जाति
वळीं बहु विख्याति ने पोशाती छे भारी.

खगपति

१० डगण (जगण विनाना)+तल (SI)=४३ मात्रा.

४+४+४+४+४+४+४+४+४+४+ऽ।=४३

१,५,९,१३,१७,२१,२५,२९,३३,३७,४१ मात्राए ताल

चोकलिया गण प्रतिपद दशगण तेमां न जगण,
गुरु लघु पछी भण चालिश परत्रण जेम,
कविवर के' छे प्रथम कले छे ताल पडे छे,
चार चडे छे कुल शिवे दे छे एम;
खगपति जाति वहु पोशाती भाति भातिनी.
कविता थाती त्यांय गव ती ठीक
विश्वासे हरि गुण गाशे जे गुणिजन थाशे.
सरस गणाशे दरशे तो प्रभु बीक.

चचरी. १२+१२+१२+८=४४ मात्रा.

बारे बारे बार, आठे एवा ठाठे चार
विरतियो आवे, ठिक शोभावे;
कुल कल चुम्माळीसु, प्रतिपद एम
रचीने कवि जन निज मन गमतुं, रुडु लावे;
एक उपर पछी चारे, चडती तालो ढाले,
कुल नव गणतां आवे, एम बनावे;
ए चंचरी छे जाति, कर्णाटक शोभाती,
तेवी मन लोभाती, रचजो भावे.

व्याली.

८+८+८+८+८ + बे गुरु =४४ मात्रा.

१,५,९,१३,१७,२१,२५,२९,३३,३७,४१ मात्राए ताल.

वसु वसु कलपर, वसु वसु कलधर तेपर वसुकर बे गुरु छेवट धारी,
यतिपण एमज, जोइये तेमज, शोधीने धज, चुम्मालिश कल, सारी;

तर्क टगण ऊपर रगण कविवर भग,
धूम चरण चार करी हाम भरी जाणजो;
धूक ताळी भाळी माळी कल रचावी,
रस मचावी पाद पाद निर्विवाद आणजो;
प्रथम थकी ताल श्री अर्ग चडी,
सात वळी कडी कडी करी खडी सारजो,
खंज जाति सारी भाति एम रची
खूब खमी भीड हरि गान ध्यान धारजो

वळी पंचा करीने २३+२३=४६ मात्रानी जाति छे (जुओ र. पि. पृष्ट १८९ मे अंक) तेनाउपर पण दस्तूनां चार चरण आवे छे.

ए रीते हंसा के पंचा उपर रोला वस्तू, मंगलवस्तू के रायवस्तू चडाववाथी बे छंदना मिश्रणनो कुंडलियो लघुनामे ओळखाय छे तेना छ प्रकार नीचे प्रमाणे थाय छे—

लघु कुंडलियाना भेद.

क्रम	नाम	दुहानी जाति	मात्र	वस्तू	मात्रा	कुलमात्रा
१	कोकन	हंसा	४८	रोला	९६	१४४
२	मागध	हसा	४८	मंगल	८८	१३६
३	बंगुली	हसा	४८	राय	८४	१३२
४	मालव	पंचा	४६	रोला	९६	१४२
५	मध्य	पंचा	४६	मगल	८८	१३४
६	माद्रक	पंचा	४६	राय	८४	१३०

उपरना कोष्टक उपरथी जणाशे के, प्रथम हंसादुहानां बे दल करीने तेउपर रोला चडाववाथी कोकन नामे कुंडलियो थाय छे. हंसादुहानुं छेलुं चरण रोलाना प्रारंभ भागमां कुंडलिया तरीके मूकवामां आवे छे, ए कुंडलियानी रीति प्रथम जणावी छे, तेज प्रमाणे छे. हंसा अने मंगळवस्तू मळीने मागध नामे कुंडलियो थाय छे. ए रीते बाकीना विषे समजवुं.

उपरना कोष्टकपरथी जणाशे के, ओछी मात्रानो माद्रिक (१३० मात्रानो) थाय छे तेमा पंचा उपर राय वस्तू चडाववामां आवे छे एटले पंचानी मात्रा ४६+ रायवस्तुनी मात्रा ८४=१३० सर्व मात्रा थायछे.

पंचाना प्रथम रूपमां २२ गुरु अने २ लघु मळीने २४ वर्ण छे (जुओ. र. पि. पृ. १९०) तेमां बीजा अने चोथा चरणमा अते ताल (ऽ ।) खास आणवानो छे. एटले तेना सर्व लघुवाळा छेला रूपमां पण बे गुरु तो अवश्य रेहेवाना.

माद्रिक कुंडलियामां पंचा साथे रायवस्तू मळेछे. रायवस्तूनुं माप र. पिं. पृ. १६६ में कह्यु छे, तथा त्या तेनो कोठो आप्यो छे, ते प्रमाणे तो तेना प्रत्येक दळमां ९,१२, अने १७ मी मात्रा लघु आणवी जोइये, परंतु गणप्रस्तारप्रकाश. पृ. ९९ मे रायवस्तूमां मात्र अगियारमी मात्रा लघु राखी बाकी सर्व गुरुनुं प्रथमरूप माद्रिक कुंडलियानी रचनामा दर्शाव्यु छे. एटले तेना ११ लघुमाथी ४ लघु स्वीकारया छे; तेथी माद्रिक कुंडलियानुं प्रथम तथा अंत्य रूपनुं चक्र नीचे प्रमाणे थायछेः-

माद्रिक कुंडलियानुं प्रथम रूप.

१	SSS	SS	S	SSS	S	S।
२	SSS	SS	S	SSS	S	S।
३	SS	SS	S।	SS	SS	S
४	SS	SS	S।	SS	SS	S
५	SS	SS	S।	SS	SS	S
६	SS	SS	S।	SS	SS	S

गुरु ६२+६ लघु=६८ वर्ण.- नी मात्रा १३०

वळी पंचा करीने २३+२३=४६ मात्रानी जाति छे (जुओ र पि. पृष्ठ १८९ मे अंक) तेनाउपर पण ८८ हतूनां चार चरण आवेछे.

ए रीते हंसा के पंचा उपर रोळा वस्तू, मंगलवस्तू के रायवस्तू चडाववाथी बे छंदना मिश्रणनो कुंडलियो लघुनामे ओळखाय छे तेना छ प्रकार नीचे प्रमाणे थाय छे:—

लघु कुंडलियाना भेद.

क्रम	नाम	दुहानी जाति	मात्र.	वस्तू	मात्रा	कुलमात्रा.
१	कोकन	हंसा	४८	रोला	९६	१४४
२	मागध	हसा	४८	मंगल	८८	१३६
३	वंगुली	हसा	४८	राय	८४	१३२
४	मालव	पंचा	४६	रोला	९६	१४२
५	मध्य	पंचा	४६	मगल	८८	१३४
६	माद्रक	पंचा	४६	राय	८४	१३०

उपरना कोष्टक उपरथी जणाशे के, प्रथम हंसादुहानां बे दल करीने तेउपर रोळा चडाववाथी कोकन नामे कुंडलियो थाय छे. हंसादुहानु छेलुं चरण रोलाना प्रारंभ भागमां कुंडलिया तरीके मूकवामां आवेछे, ए कुंडलियानी रीति प्रथम जणावी छे, तेज प्रमाणे छे. हंसा अने मंगळवस्तू मळीने मागध नामे कुंडलियो थाय छे. ए रीते बाकीना विषे समजवुं.

उपरना कोष्टकपरथी जणाशे के, ओछी मात्रानो माद्रिक (१३० मात्रानो) थाय छे तेमां पंचा उपर राय वस्तू चडाववामां आवे छे एटले पंचानी मात्रा ४६+ रायवस्तूनी मात्रा ८४=१३० सर्व मात्रा थायछे.

पंचाना प्रथम रूपमां २२ गुरु अने २ लघु मळीने २४ वर्ण छे (जुओ. र. पि. पृ. १९०) तेमा बीजा अने चोथा चरणमा अते ताल (ऽ।) खास आणवानो छे. एटले तेना सर्व लघुवाळा छेला रूपमां पण बे गुरु तो अवश्य रेहेवाना.

माद्रिक कुंडलियामां पंचा साथे रायवस्तू मळेछे. रायवस्तूनुं माप र. पिं. पृ. १६६ मे कह्यु छे, तथा त्यां तेनो कोठो आप्यो छे, ते प्रमाणे तो तेना प्रत्येक दळमा ९, १२, अने १७ मी मात्रा लघु आणवी जोइये, परंतु गणप्रस्तारप्रकाश. पृ. ९९ मे रायवस्तूमां मात्र अगियारमी मात्रा लघु राखी बाकी सर्व गुरुनुं प्रथमरूप माद्रिक कुंडलियानी रचनामां दर्शाव्यु छे. एटले तेना ११ लघुमांथी ४ लघु स्वीकारया छे; तेथी माद्रिक कुंडलियानुं प्रथम तथा अंत्य रूपनुं चक्र नीचे प्रमाणे थायछे:—

माद्रिक कुंडलियानु प्रथम रूप.

१	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ।
२	ऽऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ।
३	ऽऽ	ऽऽ	ऽ।	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
४	ऽऽ	ऽऽ	ऽ।	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
५	ऽऽ	ऽऽ	ऽ।	ऽऽ	ऽऽ	ऽ
६	ऽऽ	ऽऽ	ऽ।	ऽऽ	ऽऽ	ऽ

गुरु ६२+६ लघु=६८ वर्ण,-नी मात्रा १३०

मात्रिक कुंडलियानुं अंत्यरूप.

१	||||||	||||	||	||||||	||	ऽ|	२ गुरु+१२६
२	||||||	||||	||	||||||	||	ऽ|	लघु=१२८
३	||||	||||	|||	||||	||||	||	
४	||||	||||	|||	||||	||||	||	वर्ण तेनी
५	||||	||||	|||	||||	||||	||	मात्रा १३०
६	||||	||||	|||	||||	||||	||	

प्रथम रूप ६२ गुरुवाळुं थाय छे, तेमांथी अकेको गुरु घटाडी तेने बदले बब्बे लघु वधारता जइये तो मात्रिक कुंडलियाना ६१ भेद थशे, कारण के सर्व लघुवाळा अंत्य रूपमां पण बे गुरु तो अवश्य रेहेवानाज, केमके, पंचामां प्रतिदलने अन्त ताल (ऽ।) मूकवानु विधान कह्युं छे.

कोकन कुंडलिया.

मात्रिक करतां चौद मात्रा वधवाथी कोकन कुंडलियो १४४ मात्रानो थायछे. लघुकुंडलियाना भेदपैकी आ भेद सर्वथी विशेष मात्रानो छे. एमां हंसा अने रोला नुं मिश्रण थायछे. हंसामां अगिरमी अने तेरमी मात्रा लघु आणवी जोइये अने रोलामा पण अगियारमी मात्रा प्रत्येक दलमां लघु आणवानी छे, एटले, प्रथम रूपमां हंसाना चार लघु + रोलाना आठ लघु मळी १२ लघु अने बाकीना गुरु थशे. अने अन्त्य रूपमां बे गुरु सिवाय बाकीना लघ आवशे; तेनां बिम्ब नीचे आपवामां आव्यां छे:—

कोकन कुंडलियानुं प्रथमरूप.

हंसा ४८+ रोला ९६=१४४ मात्रा.

१	SSS	SS	SI	SSS	S	SI
२	SSS	SS	SI	SSS	S	SI
३	SSS	SS	I	SSS	SS	IS
४	SSS	SS	I	SSS	SS	IS
५	SSS	SS	I	SSS	SS	IS
६	SSS	SS	I	SSS	SS	IS

गुरु ६६+१२ लघु=७८वर्णनी मात्रा १४४

कोकन कुंडलियानुं अंत्यरूप.

१	IIIII	IIII	III	IIIII	II	SI
२	IIIII	IIII	III	IIIII	II	SI
३	IIIII	IIII	I	IIIII	IIII	III
४	IIIII	IIII	I	IIIII	IIII	III
५	IIIII	IIII	I	IIIII	IIII	III
६	IIIII	IIII	I	IIIII	IIII	III

गुरु २+ लघु १४०=१४२ वर्णनी मा १४४

उपर प्रमाणे पेहेलु रूप ६१ गुरु वाळुं थायछे, तेमाथी अकेको गुरु घटाडी तेने बदले बब्बे लघु वधारता जइये तो **कोकन** कुंडलियाना ६१ भेद थाय. कारण के, सर्व लघुवाळा अन्त्य रूपमां पण बे गुरु तो अवश्य रेहेवानाज. केमके हंसाना प्रतिदलमां पण अंत्ये ताल (ऽ ।) राखवानी आवश्यकता छे.

ए प्रमाणे लघु कुंडलियानुं सौथी ओछामां ओछी मात्रावाळु रूप **मादिक**, अने वत्तामा वत्ती मात्रावाळू रूप **कोकन** थाय छे. तेज प्रमाणे बीजा भेदमाटे पण थइ शके छे.

वृद्ध कुंडलियो.

लघु कुंडलियामा बे छंदनुं मिश्रण आवे छे, तेने बदले **वृद्ध कुंडलियामां** त्रण छंदनु मिश्रण आवे छे. तेमा प्रथम हंसा के **पंचानां** बे दल, तेउपर **रोलावस्तू, मंगलवस्तूके रायवस्तूनां** बे चरण, अने ते उपर **उल्लालना** बे भेद **रस** अने **श्याम**माथी गमे तेनां बे चरण चडाववामा आवे छे. ए रीते छ चरण, त्रण जातिना मिश्रणथी थाय छे **लघुकुंडलिया** जे बे छंदना मिश्रणना छ नामना थाय छे, ते प्रत्येक उपर **रस** उल्लाल चडवाथी ते छ नाम साथे प्रारंभमां **रस** नाम उमेरवामा आवे छे, अने श्याम उल्लालना चरण चडवाथी ते छ नामना प्रारंभमां **श्याम** नाम उमेरवामां आवतां तेथी **वृद्ध कुंडलियाना** बार भेद नीचे प्रमाणे थाय छे:—

वृद्ध कुंडळियाना बार भेद.

क्रम	नाम	भेदनाम	मात्रा	भेदनाम	मात्रा	भेदनाम	मात्रा	कुल मात्रा
१	रसकोकिल	हंसा	८८	शेला	८८	रस	५६	[illegible]
२	रसमागधी	हंसा	८८	मगध	८८	रस	५६	[illegible]
३	रसबकुल	हंसा	८८	गाय	[illegible]	रस	५६	[illegible]
४	रसमालव	पंचा	४६	शेला	४८	रस	५६	[illegible]
५	रस मच्छ	पंचा	८६	मंगल	८८	रस	५६	[illegible]
६	रस मादक	पंचा	८६	गाय	[illegible]	[illegible]	५६	[illegible]
७	श्याम कोकिल	हंसा	८८	शेला	८८	श्याम	[illegible]	[illegible]
८	श्याम मागधी	हंसा	८८	मगध	८८	श्याम	[illegible]	[illegible]
९	श्याम बकुल	हंसा	८८	गाय	[illegible]	श्याम	[illegible]	[illegible]
१०	श्याम मालव	पंचा	४६	शेला	४८	श्याम	[illegible]	[illegible]
११	श्याम मच्छ	पंचा	८६	मंगल	८८	श्याम	[illegible]	[illegible]
१२	श्याम मादक	पंचा	४६	गाय	[illegible]	श्याम	५२	[illegible]

वृद्धकुंडळियानुं पेहेलुं रूप रसकोकिल, नीचेनी जातिना मिश्रणथी थाय छे:—

जातिनाम	गुरु	लघु	मात्रा
हंसा	२२	४	४८
आर्द्र शेला	२२	४	४८
रस उद्गल	२४	८	५६

एटले तेना पेहेला रुपमां ६८ गुरु १६ लघु अवश्य आणवाना छे, पछी ६८ गुरुमांथी अकेको गुरु घटाडतां अने तेने बदले बब्बे लघु वधारतां कुल ६७ भेद थाय छे,ते पाछळ आव्या छे. कुंडलियो बनाववाने सर्व लघुवाळा अन्त्य रुपमां पण २ गुरु तो आवे ज. माटे छेला रुपमां बे गुरु अने १४८लघु मळीने १५० वर्ण आवे छे, तेनुं बिम्ब नीचे आपवामां आवे छे:-

रस कोकननुं प्रथम रूप.

१	SSS	SS	IS	SSS	S	SI			
२	SSS	SS	IS	SSS	S	SI			
३	SSS	SS	I	SSS	SS	IS			
४	SSS	SS	I	SSS	SS	IS			
५	S	SSS	S	IS	S	IS	ISS	IS	S
६	S	SSS	S	IS	S	IS	ISS	IS	S

६८ गुरु+१६ लघु=८४ वर्णनी मात्रा १५२

रस कोकननुं अंत्य रूप.

१	IIIII	IIII	III	IIIII	II	SI			
२	IIIII	IIII	III	IIIII	II	SI			
३	IIIII	IIII	I	IIIII	IIII	III			
४	IIIII	IIII	I	IIIII	IIII	III			
५	II	IIIII	II	III	II	III	IIII	III	II
६	II	IIIII	II	III	II	III	IIII	III	III

२गुरु+१४८लघु=१५० वर्णनी मात्रा १५२

[illegible] प्रथम भेद आ छे. ते सर्व प्रकारना कुंडलिया करतां मोटो छे कारण के तेमां १९२ मात्रा थाय छे. तेटली बीजा कोइमां थती नथी.

कुंडलियानां ६७ नाम.

क्रम	नाम	गुरु	लघु	वर्ण
१	गिरि	६८	१६	८४
२	कुरु	६७	१८	८५
३	जांगल	६६	२०	८६
४	मध्य	६५	२२	८७
५	व्रज	६४	२४	८८
६	काशी	६३	२६	८९
७	पांचाल	६२	२८	९०
८	मगध	६१	३०	९१
९	मिथिल	६०	३२	९२
१०	वग	५९	३४	९३
११	अंग	५८	३६	९४
१२	कालिंग	५७	३८	९५
१३	गौड	५६	४०	९६
१४	कौशल	५५	४२	९७
१५	उत्कल	५४	४४	९८
१६	कर्नाटक	५३	४६	९९
१७	तैलंग	५२	४८	१००
१८	मद्र	५१	५०	१०१
१९	मरहट्टा	५०	५२	१०२

४५	कुसेसै	२४	१०४	१२८
४६	कंज	२३	१०६	१२९
४७	जलज	२२	१०८	१३०
४८	कल्हार	२१	११०	१३१
४९	नीरज	२०	११२	१३२
५०	पाथोज	१९	११४	१३३
५१	शतपत्र	१८	११६	१३४
५२	सरस	१७	११८	१३५
५३	पूपा	१६	१२०	१३६
५४	इन्दीवर	१५	१२२	१३७
५५	अर्विंद	१४	१२४	१३८
५६	बनज	१३	१२६	१३९
५७	उत्पल	१२	१२८	१४०
५८	वनरुह	११	१३०	१४१
५९	पंकज	१०	१३२	१४२
६०	नाग	९	१३४	१४३
६१	भद्र	८	१३६	१४४
६२	मन्द	७	१३८	१४५
६३	मन्दार	६	१४०	१४६
६४	मृग	५	१४२	१४७
६५	मृगेन्द्र	४	१४४	१४८
६६	शुक्र	३	१४६	१४९
६७	सेन	२	१४८	१५०

२०	लाट	४९	५४	१०३
२१	गूर्जर	४८	५६	१०४
२२	द्रविड	४७	५८	१०५
२३	विदर्भ	४६	६०	१०६
२४	मालवा	४५	६२	१०७
२५	अनर्त्त	४४	६४	१०८
२६	मरु	४३	६६	१०९
२७	कैंक	४२	६८	११०
२८	वराट	४१	७०	१११
२९	गौड	४०	७२	११२
३०	सिंधु	३९	७४	११३
३१	सौविर	३८	७६	११४
३२	उषा	३७	७८	११५
३३	दंडक	३६	८०	११६
३४	निषाद	३५	८२	११७
३५	गंधार	३४	८४	११८
३६	लंक	३३	८६	११९
३७	मलार	३२	८८	१२०
३८	सारस्वत	३१	९०	१२१
३९	श्वेत	३०	९२	१२२
४०	सुराष्ट्र	२९	९४	१२३
४१	पद्म	२८	९६	१२४
४२	कुमुद	२७	९८	१२५
४३	कसार	२६	१००	१२६
४४	नलन	२५	१०२	१२७

४५	कुम्भेभ	२४	१०४	१२८
४६	शंख	२३	१०६	१२९
४७	अम्बुज	२२	१०८	१३०
४८	कल्हार	२१	११०	१३१
४९	नीरज	२०	११२	१३२
५०	पाथोज	१९	११४	१३३
५१	शतपत्र	१८	११६	१३४
५२	सरस	१७	११८	१३५
५३	पूषा	१६	१२०	१३६
५४	इन्दीवर	१५	१२२	१३७
५५	अरविंद	१४	१२४	१३८
५६	वनज	१३	१२६	१३९
५७	उत्पल	१२	१२८	१४०
५८	वनरुह	११	१३०	१४१
५९	पंकज	१०	१३२	१४२
६०	नाग	९	१३४	१४३
६१	भद्र	८	१३६	१४४
६२	मन्द	७	१३८	१४५
६३	मन्दार	६	१४०	१४६
६४	मृग	५	१४२	१४७
६५	मृगेन्द्र	४	१४४	१४८
६६	शुक	३	१४६	१४९

मात्रामेळ.

अर्द्ध समजाति.

अमे जे प्रकारनी जातिने अर्द्धसमना पेटामा मूकी छे, तेने गणप्रस्तारप्रकाशकर्त्ता असमपाद छन्दनु नाम आपी तेनो जूदो भेद पाडे छे. ए छंदोना नाम ते नीचे प्रमाणे आपे छे.—

१ नंद.
२ पद्धा.
३ दोहा.
४ कुलहरिया.
५ हल्लाल.
६ तुल्य.
७ चौबोला.
८ शिखा.
९ घत्ता.
१० गाहा.
११ स्कधक.
१२ विषमपद.

अर्द्ध समजाति मात्रा मेळ पृष्ठ ७३मे अंक २ मां "नदक" ने बरवै नामे तथा पृष्ठ७४ मे अंक ४ थे बरवेद नामे जाति आपी गया छिये.

नंदक अथवा बरवैनु माप अमे १,३ पदमां १२ २,४ पदमां ७ तेमां प्रतिदल अन्ते गल आप्युं छे. गणप्रस्तार प्रकाशमां पृष्ट ४७ मे नंदकने वदले नंद नाम आपी तेना विषे नीचे प्रमाणे जणाव्युं छे

नंद—विषम पदमां ११ मात्रा समपदमा ८ मात्रा=१९

आद्यंत रूप प्रदर्शन न्यास.

आदि	SS	SS	IS,	IS	S	SI;	SS	SS	IS,	IS	S	SI.
अंत्य	IIII	IIII	III.	III	II	SI:	IIII	IIII	III,	III	II	SI.

प्रथम रूपमां १६ गुरु अने ६ लघु आवे छे अने अंत्य रूपमां ३ डगण +, डगण =११ मात्रा विषमपदमां; अने डगण

ऽ।

+ गुरुमे + ताल =८ मात्रा समपदमां आणवानु विधान छे एटले बे गुरु तेमा कायम रेहेवाना तेथी अत्यरुपमा २ गुरु +२४ लघु =२६ वर्णनु थशे.

आदि रुपमां १६ गुरुथी आरंभाय छे. अने अंत्य रुपमां बे गुरु कायम रेहे छे एटले प्रत्येक गुरु बदले बबे लघु मूकतां आना १५ भेद थाय छे तेनु कोष्टक नीचे आपवामां आवे छे.

नंदाना पंदर नामनु चक्र.

क्रम	नाम	गुरु	लघु	वर्ण
१	रवि	१६	६	२२
२	शशि	१५	८	२३
३	मंगळ	१४	१०	२४
४	बुध	१३	१२	२५
५	गुरु	१२	१४	२६
६	कवि	११	१६	२७
७	शनि	१०	१८	२८
८	राहु	९	२०	२९
९	केतु	८	२२	३०
१०	वसू	७	२४	३१
११	कुबेर	६	२६	३२
१२	वरुण	५	२८	३३
१३	विधि	४	३०	३४

उपदोह्रा अथवा सोरठा.

पृष्ठ ७९ अंक ९ मे सोरठानो जे नियम जणाव्यो छे तेज उपदोहो छे. पण गणप्रस्तार प्रकाशमां सोरठाने उपदोहानो एक प्रकार गणे छे. अने तेनी रचनानु माप नीचेप्रमाणे आपे छे.

प्रथम दल—६+२+३= ११,३+२+६+२=१३=२४

द्वितीय दल—६+२+३= ११,३+२+६+२=१३=२४

आ प्रमाणें रचना करतां प्रथम रुपमां ४ लघु अवश्य आववा जोइये, ते हिसाबे, ४ लघु अने २२ गुरु थइ कुल २६ वर्ण आवे छे. तेमांथी अकेको गुरु घटाडी बबे लघु वधारतां सर्व लघु वर्ण थतासुधी तेना २३ भेद नीचेप्रमाणे थाय छे.

सोरठाना २३ भेदनुं विस्त्र.

क्रम	नाम	गुरु	लघु	वर्ण
१	मलै	२२	४	२६
२	मल्य	२१	६	२७
३	ध्रुव	२०	८	२८
४	धीर	१९	१०	२९
५	धाम	१८	१२	३०
६	धनु	१७	१४	३१
७	काम	१६	१६	३२
८	नंद	१५	१८	३३
९	सुर	१४	२०	३४
१०	धेनु	१३	२२	३५
११	धरन	१२	२४	३६

१२	मृग	११	२६	३७
१३	मीन	१०	२८	३८
१४	सूर	९	३०	३९
१५	शशि	८	३२	४०
१६	ऋद्धि	७	३४	४१
१७	सिद्धि	६	३६	४२
१८	गुरु	५	३८	४३
१९	शंभु	४	४०	४४
२०	सौरि	३	४२	४५
२१	कुज	२	४४	४६
२२	बुध	१	४६	४७
२३	वेणु	०	४८	४८

उपदोहा—दोहाना लक्षणांतरने *गणप्रस्तार* प्रकाश (पृष्ठ ५८) मा उपदोहो मान्यो छे.

उपदोहा नाम उद्दिष्ट विधि—अमुक भेदमां लघु कह्या होय तेनु अर्द्ध करी तेमांथी एक ओछो करता रहे तेटलामो भेद ते समजवो.

उपदोहानुं लक्षणांतर एज सोरठो छे. तेना गण नीचे प्रमाणे छे.

६+२+ ताल =११ बीजामां ६+४+३= एम प्रत्येक दलना छ अने आखाना बार गण पडे छे. तेना प्रथम तथा अन्त्य रूपना न्यासनु कोष्टक नीचे प्रमाणे थशे:—

प्रथम रूप	SSS	S	SI	SSS	SS	IS	SSS	S	SI	SSS	SS	IS
अंत्य रूप	IIIIII	II	SI	IIIIII	IIII	III	IIIIII	II	SI	IIIIII	IIII	III

चरना—जे सोरठाना मध्य अने अंत्य वर्ने प्रास मळे तेने चरना केहे छे. गणप्रस्तार प्रकाशमां लक्षणांतरे **सोरठाना** बारमा भेद राजहंसनु ए नाम गण्युं छे.

आर्या प्रकरण.

रणपिंगल प्रथमभाग पृ० १००" मा आपेली जगणयुक्त गाहानां आद्यत रूप नीचेना बिम्बमा जणाव्या प्रमाणे थाय छे.

जगणयुक्त गाहा स्वरूप बिम्ब.

आद्य	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	।ऽ।	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	।	ऽऽ	ऽ
अन्त्य	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।ऽ।	।।।।	ऽ	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।	।।।।	ऽ

आद्य रूपमां २७ गुरु अने त्रण लघु मळी ३० वर्ण आवे छे, अने अन्त्य रूपमां त्रण गुरु अने ५१ लघु वर्ण आवे छे. आद्य रूपना गुरुनी संख्यामा एक घटाडता अने लघुनी संख्यामा बे वधारतां गुरु लघुनी संख्याथी उत्पन्न थता **आर्या गाहाना** नीचेना कोष्टकमा जणावेला २५ भेद थाय छे.

जगणयुक्त आर्याना भेद.

१	पद्म	२७	३	३०
२	रिद्धि	२६	५	३१
३	बुद्धि	२५	७	३२
४	लज्जा	२४	९	३३
५	विद्या	२३	११	३४
६	क्षमा	२२	१३	३५
७	नारी	२१	१५	३६
८	गौरी	२०	१७	३७

९	धात्री	१९	१९	३८
१०	रंभा	१८	२१	३९
११	मैना	१७	२३	४०
१२	भूमि	१६	२५	४१
१३	सरी	१५	२७	४२
१४	छाया	१४	२९	४३
१५	जाया	१३	३१	४४
१६	कीरत	१२	३३	४५
१७	मूर्ति	११	३५	४६
१८	औघट	१०	३७	४७
१९	विभीत	९	३९	४८
२०	तरुणी	८	४१	४९
२१	वासुता	७	४३	५०
२२	विश्वा	६	४५	५१
२३	मानव	५	४७	५२
२४	शोभा	४	४९	५३
२५	मित्रा	३	५१	५४

पृष्ठ १०० मा आपेली त्रिप्रगणयुक्त गाहाना आद्यन्त रूपनुं त्रिम्व निचे प्रमाणे छे.

त्रिप्रगण युक्त गाहानुं बिम्ब

SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	S	SS	SS	SS	SS	SS	I	SS	S	आद्यरूप
IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	S	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	I	IIII	S	अन्त्यरूप

आमां प्रथमरुपमां २६ गुरु अने पांच लघु मळी ३१ वर्ण

१९	विभीत	८	४१	४९
२०	तरुणी	७	४३	५०
२१	वासुता	६	४५	५१
२२	त्रिश्वा	५	४७	५२
२४	मानन	४	४९	५३
२४	शोभा	३	५१	५४
२५	चित्रा	२	५३	५५

रणपिंगळ पृ. १११ मां आपेल उग्गाहा (गीति) विप्रयुक्तनु रेखात्मक आद्यन्त स्वरूप नीचेना चिन्हमां जणाव्या प्रमाणे छे.

विप्रगणयुक्त उग्गाहानुं आद्यन्त रेखात्मक स्वरूप.

SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	S	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	S	आद्यरूप
IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	S	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	S	अन्त्यरूप

आदिरूपमां २६ गुरु अने आठ लघु मळी ३४ वर्ण छे, अने अन्त्यरूपमां बे गुरु अने ५६ लघु मळी ५८ वर्ण छे, तेथी गुरुमांथी एक घटाडतां अने लघुमां बे उमेरतां तेना नीचेना चिन्हमां जणावेला २८ भेद थायछे.

विप्रयुक्त उग्गाहाना भेदनुं कोष्टक.

क्रमांक.	भेदनुं नाम.	गुरु.	लघु.	कुलवर्ण.
१	पद्म	२६	८	३४
२	रिद्धि	२५	१०	३५

जयुक्त उग्गाहा रेखात्मक स्वरूप.

SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S	SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S	आद्यरूप
IIII	IIII	IIII	IIII	III	ISI	IIII	S	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	S	अन्त्यरूप

उपर जणावेला प्रथम रुपमां २८ गुरु अने चार लघु मळी ३२ वर्ण आवेछे अने अन्त्य रुपमा ४ गुरु अने ५२ लघु मळी ५६ वर्ण थायछे. आद्य रूपनी गुरुनी संख्यामांथी एक घटाडवाथी अने लघुनी संख्यामां बे लघु उमेरवाथी, तेना निचेना कोष्टकमा जणावेला २५ भेद थायछे.

जयुक्त उग्गाहाना भेदनुं विम्ब.

क्रमांक.	भेदनुं नाम.	गुरु.	लघु.	कुलवर्ण.
१	पद्म	२८	४	३२
२	रिद्धि	२७	६	३३
३	बुद्धि	२६	८	३४
४	लज्जा	२५	१०	३५
५	विद्या	२४	१२	३६
६	क्षमा	२३	१४	३७
७	नारी	२२	१६	३८
८	गौरी	२१	१८	३९
९	धात्री	२०	२०	४०
१०	रंभा	१९	२२	४१
११	मैना	१८	२४	४२
१२	भूमि	१७	२६	४३
१३	सरि	१६	२८	४४
१४	छाया	१५	३०	४५

३	बुद्धि	२४	१२	३६
४	लज्जा	२३	१४	३७
५	विद्या	२२	१६	३८
६	क्षमा	२१	१८	३९
७	नारी	२०	२०	४०
८	गौरी	१९	२२	४१
९	धात्री	१८	२४	४२
१०	रंभा	१७	२६	४३
११	मैना	१६	२८	४४
१२	भूमि	१५	३०	४५
१३	सरी	१४	३२	४६
१४	छाया	१३	३४	४७
१५	जाया	१२	३६	४८
१६	कीर्त्ति	११	३८	४९
१७	मूर्त्ति	१०	४०	५०
१८	औषट्	९	४२	५१
१९	निभीत	८	४४	५२
२०	तरुणी	७	४६	५३
२१	वासुता	६	४८	५४
२२	विश्वा	५	५०	५५
२३	मानन	४	५२	५६
२४	शोभा	३	५४	५७
२५	चित्रा	२	५६	५८

र. पिं. पृ १११ मा आपेल जगणयुक्त उग्गाहा (गीति न आद्यन्त रेखात्मक स्वरूप नीचे प्रमाणे छे.

जयुक्त उग्गाहा रेखात्मक स्वरूप.

SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S	SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S	आद्यरूप
IIII	IIII	IIII	IIII	III	ISI	IIII	S	IIII	III	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	S	अन्त्यरूप

उपर जणावेला प्रथम रुपमां २८ गुरु अने चार लघु मळी ३२ वर्ण आवेछे अने अन्त्य रुपमा ४ गुरु अने ५२ लघु मळी ५६ वर्ण थायछे. आद्य रूपनी गुरुनी संख्यामांथी एक घटाडतां जाओ अने लघुनी संख्यामां बे लघु उमेरताथी, तेना निचेना कोष्टकमां जणावेला २५ भेद थायछे.

जयुक्त उग्गाहाना भेदनुं विस्त्र.

क्रमांक.	भेदनुं नाम.	गुरु.	लघु.	कुलवर्ण.
१	पद्म	२८	४	३२
२	रिद्धि	२७	६	३३
३	बुद्धि	२६	८	३४
४	लज्जा	२५	१०	३५
५	विद्या	२४	१२	३६
६	क्षमा	२३	१४	३७
७	नारी	२२	१६	३८
८	गौरी	२१	१८	३९
९	धात्री	२०	२०	४०
१०	रंभा	१९	२२	४१
११	मैना	१८	२४	४२
१२	भूमि	१७	२६	४३
१३	सरि	१६	२८	४४
१४	छाया	१५	३०	४५

१५	जाया	१४	३२	४६
१६	कीर्त्ति	१३	३४	४७
१७	मूर्त्ति	१२	३६	४८
१८	औषद्	११	३८	४९
१९	विभीत	१०	४०	५०
२०	तरुणी	९	४२	५१
२१	वासुता	८	४४	५२
२२	विश्वा	७	४६	५३
२३	मानन	६	४८	५४
२४	शोभा	५	५०	५५
२५	चित्रा	४	५२	५६

पृष्ट ११२ मां जविप्रयुक्त गीति आपेल छे, तेनुं रेखात्मक आद्योपान्त स्वरूप नीचेना कोष्टकमां आप्या प्रमाणे होय छे:—

SS	SS	SS	SS	SS	।S।	SS	S	SS	SS	SS	SS	SS	।।।।	SS	S	आद्यरुप
।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।S।	।।।।	S	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	S	अन्त्यरुप

उपर आपेला आद्यरुपमा २७ गुरु अने ६ लघु मलीने ३३ वर्ण थायछे. अने अन्त्यरुपमा ५४ लघु अने त्रण गुरु मली ५७ वर्ण आवेछे. आद्यरुपना गुरुनी संख्यामांथी एक घटाडवाथी अने लघुनी संख्यामां बे वधारता जवाथी आना पण नीचे जणावेला २५ भेद थायछे.

जविप्रयुक्त गीति भेद बिम्ब.

क्रमांक.	भेदनुंनाम.	गुरु.	लघु.	कुलवर्ण.
१	पद्म	२७	६	३३
२	रिद्धि	२६	८	३४

३	बुद्धि	२५	१०	३५
४	लज्जा	२४	१२	३६
५	विद्या	२३	१४	३७
६	क्षमा	२२	१६	३८
७	नारि	२१	१८	३९
८	गौरी	२०	२०	४०
९	धात्री	१९	२२	४१
१०	रंभा	१८	२४	४२
११	मेना	१७	२६	४३
१२	भूमि	१६	२८	४४
१३	सती	१५	३०	४५
१४	छाया	१४	३२	४६
१५	जाया	१३	३४	४७
१६	कीर्त्ति	१२	३६	४८
१७	मूर्त्ति	११	३८	४९
१८	औपटं	१०	४०	५०
१९	विभीत	९	४२	५१
२०	तरुणी	८	४४	५२
२१	वासुता	७	४६	५३
२२	विश्वा	६	४८	५४
२३	मानन	५	५०	५५
२४	शोभा	४	५२	५६
२५	चित्रा	३	५४	५७

र. पि. पृष्ठ १२५ मां आपेल जयुक्त गाहिणी (सिंहिनी) नुं प्रस्तारोत्पन्न रेखात्मक आयन्त स्वरूप बिम्ब नीचे मुजब छे—

SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S	SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	SS	आद्यरूप
IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	S	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	SS	अन्त्यरूप

उपर जणाव्या प्रमाणे आदिरूपमा २९ गुरु अने ४ लघु मळी ३३ वर्ण आवेछे; अने अन्त्यरूपमां पांच गुरु अने ५२ लघु मळी ५७ वर्ण आवेछे आदिना गुरुमां एक घटाडवाथी अने लघुनी संख्यामां बे लघु उमेरवाथी तेना नीचे जणावेला २५ भेद थायछे. तेनां नाम अने माप इत्यादिनी विगत:—

जयुक्त सिंहिनी भेदबिम्ब.

क्रमांक.	भेदनुं नाम.	गुरु.	लघु.	कुलवर्ण.
१	पद्म	२९	४	३३
२	रिद्धि	२८	६	३४
३	बुद्धि	२७	८	३५
४	लज्जा	२६	१०	३६
५	विद्या	२५	१२	३७
६	क्षमा	२४	१४	३८
७	नारी	२३	१६	३९
८	गौरि	२२	१८	४०
९	धात्री	२१	२०	४१
१०	रंभा	२०	२२	४२
११	मेना	१९	२४	४३
१२	भूमि	१८	२६	४४
१३	सती	१७	२८	४५
१४	छाया	१६	३०	४६

१५	जाया	१५	३२	४७
१६	कीर्त्ति	१४	३४	४८
१७	मूर्त्ति	१३	३६	४९
१८	औषट	१२	३८	५०
१९	त्रिभीत	११	४०	५१
२०	तरुणी	१०	४२	५२
२१	वासुना	९	४४	५३
२२	विश्वा	८	४६	५४
२३	मांनन	७	४८	५५
२४	शोभा	६	५०	५६
२५	चित्रा	५	५२	५७

र. पिं. प्रथम भाग पृष्ट ११४ मे अंक ८८ मां उपगीति आपेल छे, तेने गण प्रस्तार प्रकाशमां गाहू केहेछे. तेनां प्रस्तार जन्य आद्यन्त रेखात्मक रूप नीचे प्रमाणे छे.–

SS	SS	SS	SS	SS	।	SS	S	SS	SS	SS	SS	SS	।	SS	S	आद्यरुप.
।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।	।।।।	S	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।।।।	।	।।।।	S	अन्त्यरुप

उपरना प्रथमरुपमां २६ गुरु अने बे लघु मळी २८ वर्ण थायछे अने अन्त्यरुपमां बे गुरु अने ५० लघु मळी ५२ वर्ण थायछे. आदि रुपना गुरु ने एक हीन करतां अने लघुने बे युक्त करता जवाथी तेना नीचेना कोष्टकमां आपेला रुपभेद थायछे:–

उपगीति भेदबिम्बः

क्रमांक.	भेद नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	पद्म	२६	२	२८
२	सिद्धि	२५	४	२९

३	बुद्धि	२४	६	३०
४	लज्जा	२३	८	३१
५	विद्या	२२	१०	३२
६	क्षमा	२१	१२	३३
७	नारी	२०	१४	३४
८	गौरी	१९	१६	३५
९	धात्री	१८	१८	३६
१०	रंभा	१७	२०	३७
११	मैना	१६	२२	३८
१२	भूमि	१५	२४	३९
१३	सरी	१४	२६	४०
१४	छाया	१३	२८	४१
१५	जाया	१२	३०	४२
१६	कीर्त्ति	११	३२	४३
१७	मूर्त्ति	१०	३४	४४
१८	औष्ट	९	३६	४५
१९	विभित	८	३८	४६
२०	तरुणी	७	४०	४७
२१	वासुता	६	४२	४८
२२	विश्वा	५	४४	४९
२३	मानन	४	४६	५०
२४	शोभा	३	४८	५१
२५	विमा	२	५०	५२

१. पिं. प्रथम भाग पृष्ठ १२५ अंक १४९ मां **गाहिनी** अने १५० मां **सिंहिनी** आपेल छे ते बन्ने जाति उलट सुलट बनती होवाथी तेना भेद पण सरखा ज थायछे. ए प्रमाणे विप्रजयुक्त गाहिनीनां रेखात्मक आद्यन्त रूप नीचे आप्या मुजब छे:—

SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	SS	आद्यरूप
IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	S	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	SS	अन्त्यरूप

उपर आपेला आद्यरूपमां २८ गुरु अने ६ लघु मळी ३४ वर्ण थायछे, अने अन्त्य रुपमां ५४ लघु अने ४ गुरु मळी ५८ वर्ण थायछे. आदिरुपना गुरुमां एक ओछो करवाथी अने लघुमां बे उमेरवाथी तेना नीचेना बिम्बमां आपेला २५ भेद बने छे.

विप्रजगणयुक्त गाहिनी भेदबिम्ब.

क्रमांक	भेदनाम	गुरु	लघु	कुलवर्ण
१	पद्म	२८	६	३४
२	रिद्धि	२७	८	३५
३	बुद्धि	२६	१०	३६
४	लज्जा	२५	१२	३७
५	विद्या	२४	१४	३८
६	क्षमा	२३	१६	३९
७	नारी	२२	१८	४०
८	गौरी	२१	२०	४१
९	धात्री	२०	२२	४२
१०	रंभा	१९	२४	४३
११	मेना	१८	२६	४४

१२	भूमि	१७	२८	४५
१३	सरी	१६	३०	४६
१४	छाया	१५	३२	४७
१५	जाया	१४	३४	४८
१६	कीर्त्ति	१३	३६	४९
१७	मूर्त्ति	१२	३८	५०
१८	औषट	११	४०	५१
१९	विर्भांत	१०	४२	५२
२०	तरुणी	९	४४	५३
२१	वासुता	८	४६	५४
२२	विश्वा	७	४८	५५
२३	मानन	६	५०	५६
२४	शोभा	५	५२	५७
२५	चित्रा	४	५४	५८

विप्रगणयुक्त गाहिनीनु प्रस्तारजन्य आद्यन्त रेखात्मक स्वरूप नीचे प्रमाणे छे—

SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	S	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	SS	आद्यरूप
IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	S	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	SS	अन्त्यरूप

उपर आपेला आद्य रुपमा २७ गुरु अने ८ लघु मळी ३५ वर्ण छे, अने अन्त्यमां ५६ लघु अने २ गुरु मळी ५९ वर्ण आवेछे. आद्यना गुरुनी संख्यामा एक घटाडता जवाथी अने लघुनी संख्यामां बे उमेरता जवाथी तेना नीचेना कोष्टकमां आपेल २६ भेद थायछे:—

विप्रगणयुक्त गाहिनी भेदविम्र.

क्रम	नाम	गुरु	लघु	वर्ण
१	पद्म	२७	८	३५
२	रिद्धि	२६	१०	३६
३	वुद्धि	२५	१२	३७
४	लज्जा	२४	१४	३८
५	विद्या	२३	१६	३९
६	क्षमा	२२	१८	४०
७	नारी	२१	२०	४१
८	गौरी	२०	२२	४२
९	धात्री	१९	२४	४३
१०	रंभा	१८	२६	४४
११	मेना	१७	२८	४५
१२	भूमि	१६	३०	४६
१३	सती	१५	३२	४७
१४	छाया	१४	३४	४८
१५	जाया	१३	३६	४९
१६	कीर्त्ति	१२	३८	५०
१७	मूर्त्ति	११	४०	५१
१८	औपट	१०	४२	५२
१९	विर्भीत	९	४४	५३
२०	तरुणी	८	४६	५४
२१	वासुता	७	४८	५५
२२	विश्वा	६	५०	५६

स्कंदकभेद चित्र.

अनुक्रम	जगणयुक्त स्कधक				विप्रयुक्त स्कधक			विप्रयुक्त स्कधक		
	भेदनाम	गुरु	लघु	कुलवर्ण	गुरु	लघु	कुलवर्ण	गुरु	लघु	कुलवर्ण
१	नद	३०	४	३४	२८	८	३६	२९	६	३५
२	सुनद	२९	६	३५	२७	१०	३७	२८	८	३६
३	आनद	२८	८	३६	२६	१२	३८	२७	१०	३७
४	सुछंद	२७	१०	३७	२५	१४	३९	२६	१२	३८
५	अमद	२६	१२	३८	२४	१६	४०	२५	१४	३९
६	गोविंद	२५	१४	३९	२३	१८	४१	२४	१६	४०
७	सुरिंद्र	२४	१६	४०	२२	२०	४२	२३	१८	४१
८	खगेंद्र	२३	१८	४१	२१	२२	४३	२२	२०	४२
९	फणींद्र	२२	२०	४२	२०	२४	४४	२१	२२	४३
१०	मृगेंद्र	२१	२२	४३	१९	२६	४५	२०	२४	४४
११	नरेंद्र	२०	२४	४४	१८	२८	४६	१९	२६	४५
१२	गजेंद्र	१९	२६	४५	१७	३०	४७	१८	२८	४६
१३	अंग	१८	२८	४६	१६	३२	४८	१७	३०	४७
१४	सुरग	१७	३०	४७	१५	३४	४९	१६	३२	४८
१५	अनग	१६	३२	४८	१४	३६	५०	१५	३४	४९
१६	सभग	१५	३४	४९	१३	३८	५१	१४	३६	५०
१७	उतग	१४	३६	५०	१२	४०	५२	१३	३८	५१
१८	तुरग	१३	३८	५१	११	४२	५३	१२	४०	५२
१९	मतग	१२	४०	५२	१०	४४	५४	११	४२	५३
२०	धनग	११	४२	५३	९	४६	५५	१०	४४	५४
२१	भुजग	१०	४४	५४	८	४८	५६	९	४६	५५
२२	विहग	९	४६	५५	७	५०	५७	८	४८	५६
२३	सुवास	८	४८	५६	६	५२	५८	७	५०	५७
२४	अवास	७	५०	५७	५	५४	५९	६	५२	५८
२५	विलास	६	५२	५८	४	५६	६०	५	५४	५९
२६	अकाश	५	५४	५९	३	५८	६१	४	५६	६०
२७	अनाश	४	५६	६०	२	६०	६२	३	५८	६१

रंगिका (मागधी पिंगल छंदो ग्रंथ)

१, ५, ९, १३ मात्रा ए ताल.

२३	मानन	५	१२	१७
२४	शोभा	४	१४	१८
२५	चित्रा	३	१६	१९

स्कंधक.

स्कंधकने गणप्रस्तारप्रकाशमां सकंध एवुं नाम आपेलुं छे. तेना प्रस्तारजन्य आद्य अने अन्त्य रूपनां रेखात्मक स्वरूप नीचे आपेला चित्रमां जणाव्या प्रमाणे थायछे.

जयुत स्कंधक.

३० गु ४ ल	SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S	S	SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S	S	आद्य रूप
४ गु ५६ ल	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	II	S	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	II	S	अन्त्य रूप

जविप्रयुक्त स्कंधक.

२९ गु ६ ल	SS	SS	SS	SS	SS	ISI	SS	S	S	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	S	S	आद्यरूप
३ गु ५८ ल	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	ISI	IIII	II	S	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	II	S	अन्त्यरूप

विप्रयुक्त स्कंधक.

२८ गु ८ ल.	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	S	S	SS	SS	SS	SS	SS	IIII	SS	S	S	आद्यरूप
२ गु ६० ल	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	II	S	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	II	S	अन्त्यरूप

स्कंदकभेद चित्र.

अनुक्रम	भेदनाम	जगणयुक्त स्कंधक			विप्रयुक्त स्कंधक			विप्रयुक्त स्कंधक		
		गुरु	लघु	कुलवर्ण	गुरु	लघु	कुलवर्ण	गुरु	लघु	कुलवर्ण
१	नंद	३०	४	३४	२८	८	३६	२९	६	३५
२	सुनंद	२९	६	३५	२७	१०	३७	२८	८	३६
३	आनंद	२८	८	३६	२६	१२	३८	२७	१०	३७
४	सुछंद	२७	१०	३७	२५	१४	३९	२६	१२	३८
५	अमंद	२६	१२	३८	२४	१६	४०	२५	१४	३९
६	गोविंद	२५	१४	३९	२३	१८	४१	२४	१६	४०
७	सुरिंद्र	२४	१६	४०	२२	२०	४२	२३	१८	४१
८	खगिंद्र	२३	१८	४१	२१	२२	४३	२२	२०	४२
९	फणींद्र	२२	२०	४२	२०	२४	४४	२१	२२	४३
१०	मृगेंद्र	२१	२२	४३	१९	२६	४५	२०	२४	४४
११	नरेंद्र	२०	२४	४४	१८	२८	४६	१९	२६	४५
१२	गजेंद्र	१९	२६	४५	१७	३०	४७	१८	२८	४६
१३	अग	१८	२८	४६	१६	३२	४८	१७	३०	४७
१४	सुरग	१७	३०	४७	१५	३४	४९	१६	३२	४८
१५	अनग	१६	३२	४८	१४	३६	५०	१५	३४	४९
१६	सभग	१५	३४	४९	१३	३८	५१	१४	३६	५०
१७	उतग	१४	३६	५०	१२	४०	५२	१३	३८	५१
१८	तुरग	१३	३८	५१	११	४२	५३	१२	४०	५२
१९	मतग	१२	४०	५२	१०	४४	५४	११	४२	५३
२०	धनग	११	४२	५३	९	४६	५५	१०	४४	५४
२१	भुजग	१०	४४	५४	८	४८	५६	९	४६	५५
२२	विहंग	९	४६	५५	७	५०	५७	८	४८	५६
२३	सुवास	८	४८	५६	६	५२	५८	७	५०	५७
२४	अवास	७	५०	५७	५	५४	५९	६	५२	५८
२५	विलास	६	५२	५८	४	५६	६०	५	५४	५९
२६	अकाश	५	५४	५९	३	५८	६१	४	५६	६०
२७	अनाग	४	५६	६०	२	६०	६२	३	५८	६१

रंगिक्का (मागधी पिंगल छंदो ग्रंथ)

१, ५, ९, १३ मात्रा ए ताल.

१, ३ पादमा १५ मात्रा.

२, ४ पादमां १२ मात्रा.

विषम पदे पदर कळ थाय, सममां बार प्रमाणो
शशि शर नवने तेरे ताळ; ए रगिका जाणो.

मात्रादंडक.

गणप्रस्तार प्रकाशकर्त्ता नीचे आपेली आठ जातिओने मात्रा दंडकमां गणे छे. अने तेमना भेद तथा थता उपभेद माटे अमे प्रथम भागमां जणाव्युं छे, ते करतां नीचे प्रमाणे विशेष लखेछे.

१ माळा २ मार्त्तण्ड. ३ चूडामणि,
४ रड्डय ५ कुंडळिया. ६ कुडलिनी.
७ अमृतध्वनी ८ षट्पदी.

माळा.

माळा जातिनुं प्रस्तारजन्य आद्यन्त रेखात्मक स्वरुप नीचे आपेला चित्रमां जणाव्या प्रमाणे थायछे:—

आद्यस्वरूप.

IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	SIS	SS	SS	SS	SS	SS	SS	I	SS	S	२८ लघु १७गुरु.

अन्त्यस्वरूप.

IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	SIS	SS	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	I	IIII	S	५ गुरु ६२लघु

आदि रुपनी संख्यामांथी एक घटाडवाथी अने लघुनी संख्यामां बे उमेरवाथी एना नीचे आपेला १३ भेद थाश्छे.

माला जातिना भेदनुं बिम्ब.

क्रम.	नाम.	गुरु.	लघु.	कुलवर्ण.
१	चित्र.	१७	३८	५५
२	विचित्र.	१६	४०	५६
३	सुचित्र.	१५	४२	५७
४	मदन.	१४	४४	५८
५	सुमदन	१३	४६	५९
६	त्रिमदन.	१२	४८	६०
७	अमदन.	११	५०	६१
८	अनंग.	१०	५२	६२
९	सुरंग	९	५४	६३
१०	अरंग.	८	५६	६४
११	विहंग.	७	५८	६५
१२	सुजात.	६	६०	६६
१३	अजात.	५	६२	६७

मार्तण्ड जाति.

मार्तण्ड जाति = ९६ मात्रा.

उपदोहा १ { ६+४+ल, ६+४+ल+ग. / ६+४+ल, ६+४+ल+ग } = ४८

१, ३ पादमां १५ मात्रा.

२, ४ पादमां १२ मात्रा.

विषम पदे पंदर कल थाय, सममां बार प्रमाणो
१।१ २।२ नवने तेरे ताल; ए रंगिका जाणो.

मात्रादंडक.

गणप्रस्तार प्रकाशकर्त्ता नीचे आपेली आठ जातिओने मात्रा दंडकमां गणे छे. अने तेमना भेद तथा थता उपभेद माटे असे प्रथम भागमां जणाव्युं छे, ते करतां नीचे प्रमाणे विशेष लखेछे.

१ माला	२ मार्त्तण्ड.	३ चूडामणि,
४ रङ्खय	५ कुंडलिया.	६ कुंडलिनी.
७ अमृतध्वनी	८ षट्पदी.	

माला.

माला जातिनुं प्रस्तारजन्य आद्यन्त रेखात्मक स्वरुप नीचे आपेला चिंत्रमा जणाव्या प्रमाणे थायछे:—

आद्यस्वरूप.

IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	SIS	SS	SS	SS	SS	SS	SS	I	SS	S	३८ लघु १७गुरु.

अन्त्यस्वरूप.

IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	SIS	SS	IIII	IIII	IIII	IIII	IIII	I	IIII	S	५ गुरु ६२लघु

आदि रुपनी संख्यामांथी एक घटाडवाथी अने लघुनी संख्यामां बे उमेरवाथी एना नीचे आपेला १३ भेद थायछे.

माला जातिना भेदनुं बिम्ब.

क्रम.	नाम.	गुरु.	लघु.	कुलवर्ण.
१	चित्र.	१७	३८	५५
२	विचित्र.	१६	४०	५६
३	सुचित्र.	१५	४२	५७
४	मदन.	१४	४४	५८
५	सुमदन	१३	४६	५९
६	त्रिमदन.	१२	४८	६०
७	अमदन.	११	५०	६१
८	अनंग.	१०	५२	६२
९	सुरंग	९	५४	६३
१०	अरंग.	८	५६	६४
११	विहंग.	७	५८	६५
१२	सुजात.	६	६०	६६
१३	अजात.	५	६२	६७

मार्तण्ड जाति.

मार्तण्ड जाति = ९६ मात्रा.

उपदोहा १ $\left\{\begin{array}{ll}६+४+ल, & ६+४+ल+ग. \\ ६+४+ल, & ६+४+ल+ग\end{array}\right\} = ४८$

२ (६+४+लग, ६+१+गा७.)

———

१६

प्रथम रचो कविराय, उपदोहा के सोरठो,
ते पर हंसा थाय, बेना नियम सरस धरी.
ए रीते कुलकल मळी, नेवुंपर षट् थाय,
मारतण्ड रचना बधी, ए रीते ज रचाय.

आ जातिनु आद्यन्त रेखात्मक स्वरुप नीचेना बिम्बमां जणाव्या प्रमाणे थायछे:--

आद्यस्वरूप.

SSS	SS	।	SSS	SS	।S	SSS	SS	।	SSS	SS	।S	४४ गुरु
SSS	SS	।S	SSS	S	S।	SSS	SS	।S	SSS	S	S।	८ लघु

अन्त्य स्वरूप.

।।।।।।	।।।।	।	।।।।।	।।।।	।।।	।।।।।	।।।।	।	।।।।।	।।।।	।।।	१ गुरु
।।।।।।	।।।।	।।।	।।।।।।	।।	S।	।।।।।।	।।।।	।।।	।।।।।।	।।	S।	९२लघु

आदि स्वरूपना गुरुनी संख्यामा एक घटाडता जइ अने लघुनी संख्यामां बे उमेरता जवाथी मार्तण्डना नीचे आपेला ४३ भेद थायछे

[illegible]

अनु.	नाव.	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१	[illegible]	४४	८	५२
२	[illegible]	४३	१०	५३
३	[illegible]	४२	१२	५४
४	[illegible]	४१	१४	५५
५	[illegible]	४०	१६	५६
६	[illegible]	३९	१८	५७
७	[illegible]	३८	२०	५८
८	[illegible]	३७	२२	५९
९	[illegible]	३६	२४	६०
१०	[illegible]	३५	२६	६१
११	[illegible]	३४	२८	६२
१२	[illegible]	३३	३०	६३
१३	[illegible]	३२	३२	६४
१४	[illegible]	३१	३४	६५
१५	[illegible]	३०	३६	६६
१६	[illegible]	२९	३८	६७
१७	[illegible]	२८	४०	६८
१८	[illegible]	२७	४२	६९
१९	[illegible]	२६	४४	७०
२०	[illegible]	२५	४६	७१
२१	[illegible]	२४	४८	७२
२२	[illegible]	२३	५०	७३

हंसादोहा २ $\left\{\begin{matrix} ६+४+लग, & ६+२+गल. \\ ६+४+लग, & ६+२+गल. \end{matrix}\right\} =४८$

——

९६

प्रथम रचो कविराय, उपदोहा के सोरठो,
ते पर हंसा थाय, बेना नियम सरस धरी.
ए रीते कुलकल मळी, नेवुपर षट् थाय,
मारतण्ड रचना बधी, ए रीते ज रचाय.

आ जातिनु आद्यन्त रेखात्मक स्वरुप नीचेना बिम्बमां जणाव्या प्रमाणे थायछेः--

आद्यस्वरूप.

SSS	SS	।	SSS	SS	।S	SSS	SS	।	SSS	SS	।S	४४ गुरु
SSS	SS	।S	SSS	S	S।	SSS	SS	।S	SSS	S	S।	८ लघु

अन्त्य स्वरूप.

।।।।।।	।।।।	।	।।।।।	।।।।	।।।	।।।।।।	।।।।	।	।।।।।	।।।।	।।।	२ गुरु
।।।।।।	।।।।	।।।	।।।।।।	।।	S।	।।।।।।	।।।।	।।।	।।।।।।	।।	S।	९२लघु

आदि स्वरूपना गुरुनी संख्यामां एक घटाडता जइ अने लघुनी संख्यामां बे उमेरता जवाथी मार्तण्डना नीचे आपेला ४३ भेद थायछे

मार्तण्ड जातिभेद कोष्टक.

क्रम.	नाम.	गुरु.	लघु.	वर्ण.
१	चक्र	४४	८	५२
२	सुचक्र	४३	१०	५३
३	विचक्र	४२	१२	५४
४	अचक्र	४१	१४	५५
५	सुधामा.	४०	१६	५६
६	विधामा.	३९	१८	५७
७	अधामा	३८	२०	५८
८	अनामा.	३७	२२	५९
९	मित्र	३६	२४	६०
१०	सुमित्र.	३५	२६	६१
११	अमित्र	३४	२८	६२
१२	चित्र.	३३	३०	६३
१३	सचित्र.	३२	३२	६४
१४	अचित्र.	३१	३४	६५
१५	विचित्र.	३०	३६	६६
१६	भंजन.	२९	३८	६७
१७	विभंजन.	२८	४०	६८
१८	सुरंजन.	२७	४२	६९
१९	निरंजन.	२६	४४	७०
२०	मंजन.	२५	४६	७१
२१	सुमंजन.	२४	४८	७२
२२	अमंजन.	२३	५०	७३

२३	त्रिरंजन.	२२	५२	७४
२४	लेखा.	२१	५४	७५
२५	अलेखा	२०	५६	७६
२६	सुलेखा	१९	५८	७७
२७	भानू.	१८	६०	७८
२८	विभानू.	१७	६२	७९
२९	सुभानू.	१६	६४	८०
३०	प्रभाकर.	१५	६६	८१
३१	मिभाकर.	१४	६८	८२
३२	दिवाकर.	१३	७०	८३
३३	तरुणी.	१२	७२	८४
३४	अतरणी.	११	७४	८५
३५	सतरणी.	१०	७६	८६
३६	सुवामी.	९	७८	८७
३७	सुनामी.	८	८०	८८
३८	सुगामी.	७	८२	८९
३९	अनामी.	६	८४	९०
४०	अकामी.	५	८६	९१
४१	हसंता.	४	८८	९२
४२	लसंता.	३	९०	९३
४३	अनंता.	२	९२	९४

चूडामणि.

प्रथम भाग पृष्ठ ४९ अंक २४ मां **चूडामणि** जाति बेगीतिनी बनेछे, एवुं असे जणावी गयाछिये. गणप्रस्तार प्रकाशकर्त्ता एनी रचना अने भेदांतरसंबंधमां नीचे प्रमाणे केहेछे.

पूर्वार्द्ध=दोहा, उपदोहा (सोरठा) अने पचा.

उत्तरार्द्ध=गाहा, विगाहा, उगाहा, गाहू, सिंहिनी अने गाहिनी.

पूर्वार्द्धनुं चोथु पद उलटावीने उत्तरार्द्धना आरंभमां कुंडली करवी.

पूर्वार्द्धना त्रण अने उत्तरार्द्धना छ प्रकार मळीने चूडामणिना १८ भेद थायछे. ते नाम वार नीचेना बिम्बपरथी जाणवामा आवशे.

चूडामणि भेदबिम्ब.

क्रम.	जातिनाम.	जाति	मात्रा	जाति	कला	कुलमात्रा
१	दोहा गाहा	दोहा	४८	गाहा	५७	१०५
२	उपदोहा गाहा	उपदोहा	४८	गाहा	५७	१०५
३	पंचा गाहा	पंचा	४६	गाहा	५७	१०३
४	दोहा विगाहा	दोहा	४८	विगाहा	५७	१०५
५	उपदोहा विगाहा	उपदोहा	४८	विगाहा	५७	१०५
६	पचा विगाहा	पंचा	४६	विगाहा	५७	१०३
७	दोहा उगाहा	दोहा	४८	उगाहा	६०	१०८
८	उपदोहा उगाहा	उपदोहा	४८	उगाहा	६०	१०८
९	पंचा उगाहा	पचा	४६	उगाहा	६०	१०६
१०	दोहा गाहू	दोहा	४८	गाहू	५४	१०२
११	उपदोहा गाहू	उपदोहा	४८	गाहू	५४	१०२
१२	पंचा गाहू	पंचा	४६	गाहू	५४	१००
१३	दोहा सिंहिनी	दोहा	४८	सिंहिनी	६२	११०
१४	उपदोहा सिंहिनी	उपदोहा	४८	सिंहिनी	६२	११०
१५	पंचा सिंहिनी	पंचा	४६	सिंहिनी	६२	१०८
१६	दोहागाहिनी	दोहा	४८	गाहिनी	६२	११०
१७	उपदोहागाहिनी	उपदोहा	४८	गाहिनी	६२	११०
१८	पंचागाहिनी	पंचा	४६	गाहिनी	६२	१०८

रड्डा (रड्डय) जातिविषे प्रथम भाग पृष्ट १३१ मां विस्तारथी लखवामां आव्यु छे, छता गणप्रस्तारप्रकाशमा तेविषे कइ मतान्तर जणाता असे नीचे मुज्ब आपिये छिये.

रड्डा

सात जातिनु विम्ब.

कम	रड्डानी साती जातीनानाम	वपम पद	सम पद	विपम पद	सम पद	विपम पद	सम पद	विषम पद	सम पद	विपम पद	कुल
१	नैमक	१३	१०	१३	१०	१३	१३	११	१३	११	१०७
२	मोहन	१३	१३	१३	११	१३	१३	११	१३	११	१११
३	भद्रा	१५	१२	१५	१२	१५	१३	११	१३	११	११७
४	रायसेन	१५	१२	१५	११	१५	१३	११	१३	११	११६
५	नंदा	१३	११	१३	११	१३	१३	११	१३	११	१०९
६	चारसेन	१५	११	१५	११	१५	१३	११	१३	११	११५
७	तालकन	१६	१२	१६	१२	१६	१३	११	१३	११	१२०

उपरना कोष्टकमा विपमपदमा तेरथी ओछी कला आवती नथी अने सममा दशथी ओछी आवती नथी; तेमज वत्तामांवत्ती विपम १६ अने सममा १२ थी वत्ती कला आवती नथी एम गणप्रस्तार प्रकाशमा कह्यु छे.

उपरनी गणप्रस्तारनी भिन्नता कया ग्रंथने आधारे आपी छे, ते जणाव्यु नथी. एटले मतांतर तरीके जणाविये छिये.

अंजनीगीत (मराठी).

S　S　I I S　S S　I I S

गा　गा　ललगा　गागा　ललगा

सोळे कळनां पे, लां पद गा

चोथा पदमां मात्रा दश गा

ऽ ऽ ऽ।। ऽ
गा गा गालल गा,

माया ममता मूके जनतो
सारुं सुखियु रेशे तन तो
दुग्धा अळगी धातां मन तो
छे सौ संपन तो.

काशी (समजाति.)

१. १२+२० = ३२
२. १२+२० = ३२
३. १२+२० = ३२
४. १२+२० = ३२

बे स्कंधकनी आ एक जाति बने छे. जुवो रण. पि. भाग १ लो पृ. १२६.

चसुगण चोकलियामां, बारे वीशे विराम तो लावेछे,
एवी चारे तूको, काशि जाति विषे सदा आवेछे.
बत्रिश कुल कळ आवी, पदे रचावी कविवर शोभवे छे,
बे स्कंधक भेगानां, सरस पदो मन सदाय लोभावे छे,

छन्दः सार नामना कर्णाटकी पिंगळमां मात्रिक जातिना द्विपदी, त्रिपदी, चतुष्पदी अने षट्पदी एवा विभागपाडी. जातिओ आपवामां आवी छे ते जातिओ नवी जणायाथी ते दाखल करवामां आवेछे.

द्विपदी त्रिपुडे.

३+४+३+४; ३+४+३+ ग = २९
ढपर डागण ढपर डागण, ढपर डागण ढपर गा
चौद पर यति द्विपदी त्रिपुडे, छव्विश कला चरण गा.

द्विपदी ५+५, ५+गग = १९. यति १० मात्राए
त्रण ठगण बे गुरू, यतिदशे आवे
ओगणीशी द्विपदी, सारी बनावे.

शाकी.

४+४+४+४; ४+४+४+ग ग = ३२.

१६ मात्रा ए यति.

चार डगणपर यतिआणीने, त्रण डापर बे गुरू आणो
एम कला बत्रिश दलमांहे, शाकी रचना माहे जाणो.

त्रिपदी.

१. ५+५, ५+५ = २०.

२. ५+३, ५+५ = १८.

३. ५+२+५ = १२.

१ प्रथम ठा चारनो, वीश वच्चे विरति
२ ठा ढ यति ठाठ, धृति[१८] बधी द्वितीये
३ ठा ढ ठा त्रिपदी तृतीये.

उत्साह.

३+३+३+३; ३+३+३+३ = २४.

१२, १२, मात्रा ए यति,

आठ ढगण आवतां ज, चोवीं, कला कुल थाय
विरति बार बार उपर, चरण चरणमां रखाय
एक उपर प्रथम ताल, ते पछी त्रेगे चडाय
आठ ताल एम थाय, उत् साह ए कथाय

षटपदी

शरषटपदी

१ = ४+४ = ८

२ = ४+४ = ८

३=४+४+४+ग = १४

४ = ४+४ = ८

५ = ४+४ = ८

६ = ४+४+४+ग = ४

१ डा डा पेले
२ डा डा बीजे
३ डा डा डा गा छे त्रीजे.
४ डा डा चोथे
५ डा डा पांचे
६ त्रीजासम षट शर षटपदी

कुसुम षटपदी.

१ = ५+५ = १०
२ = ५+५ = १०
३ = ५+५+५+गा = १७.
४ = ५+५ = १०
५ = ५+५ = १०
६ = ५+५+५+गा = १७.

१ ठा ठ पेले पदे
२ कुसुम षटपदीमा
३ ठा ठ चोथे बीजे पांचमे छे
४ ठा ठ ठा गा त्रिजे
५ ठा ठ ठा गा षट
६ एम कळ आणीने कविता रचे.

भोग षट्पदी.

१ = ३+३+३ = ९
२ = ३+३+३ = ९
३ = ३+३+३+३+३+३+गा = २०
४ = ३+३+३ = ९

५ = ३+३+३ = ९

६ = ३+३+३+३+३+३+ग = २०

१ ह गण त्रण प्रथमे

२ ह गण त्रण द्वितीये

३ छ ह गणपर गुरु त्रिजे षटे थायछे

४ ह त्रण चतुर पदे

५ ह त्रण पांच पदे

६ एम भोग षट्पदी पदो रचायछे.

भामिनी षट्पदी.

१. ३+३+३+३+ग = १४

२. ३+३+३+३+ग = १४

३. ३+३+३+३+३+३+ग = २०

४. ३+३+३+३+ग = १४

५. ३+३+३+३+ग = १४

६. ३+३+३+३+३+३+ग = २०

१ ह गण चार पर गुरु प्रथमे

२ द्वितीये चतुर वळी पांचे

३ छ हा परे गुरु त्रिज षटे पदे छे

४ भामिनी षट्पदी वदे छे

५ त्रणे छये त्रिश रहे छ

६ अवर पदे चौद कळा कवि कहे छे

परिवर्द्धिनी षट्पदी.

१ = ४+४+४+४ = १६

२ = ४+४+४+४ = १६

३ = ४+४+४+४+४+४+ग = २६

४ = ४+४+४+४ = १६

५ = ४+४+४+४ = १६

६ = ४+४+४+४+४+४+ग= १६

१ **डा** गण चार रचो प्रथमे तो

२ बीजे पण ओ रचना ले तो

३ त्रीजे छठ्ठे वे **डा**पर **गा** अत्तर पदोथी वत्ता छे

४ चोथे चार ड गण आवे छे

५ पंचम पदमा पण **डा** चारे

६ **परिवार्द्धिनी** पटपदी कर्णाटकनी जाति छे.

वार्द्धिक षट्पदी.

१ = ५+५+५+५ = २०

२ = ५+५+५+५ = २०

३ = ५+५+५+५+५+५+ग = ३२

४ = ५+५+५+५ = २०

५ = ५+५+५+५ = २०

६ = ५+५+५+५+५+५+ग = ३२

१ चार **ठा** वीश कल आणजो प्रथममां

२ चार **ठा** वीश कल छे बिजा पदमा

३ **ठा** उपर **गा** वधी त्रीजु छठु बने बत्रीश कुल कलानुं

४ चोथु **ठा** चारनुं थाय कल वीशनुं

५ पाचमुं पण बने चार ठा वीशनुं

६ अेज वार्द्धिक षट्पदी वदे कविजनो जेह कर्णाटके छे.

वर्णमेळ.

समवृत्त.

अनुष्टुप् छंद वर्ण ८.

१ पेशल त य ल ल ६

ता या ल ल थी पेशल.

निचेना वृत्तने वृत्तरत्नाकरमां विताननुं सामान्य नाम आप्युं छे.

२ सुतपा स म ग ग १२

सुतपा सा म ग गा थी

३ क्रूर त म ल ग ६९

ता मा ल गा क्रूरे करो.

४ भद्रक र स ल ग. ९१

रा स ला ग थी भद्रक.

५ मान स न ल ग १२४

स न गा ल कर मान.

बृहती छंद वर्ण ९.

६ अज स स य. ७६

स स या करजो अजे तो.

७ सगुण न न भ. ४४८

सगुण न न भ थी कर.

पंक्ति छंद वर्ण १०.

८ गुरु न म र ग. १३३

ता मा र गा छे गुरु त्रिपेतो.

९ गुरुतम　　स ज स ग.　　२३६

स ज सा ग छे गुरुतमे तो

१० सत्य　　र न भ ग.　　४४३

थाय सत्य र न भाग थकी.

११ कपिल　　म न न ग.　　५०५

मा ना ना ग कर् कपिलमां.

१२ अनंगशेखर　　र ज र ल.　　६८३

रा ज्र ला अनंगशेखरे ज.

१३ दक्ष　　त न र ग.　　८९२

ता ना र ग धर् दक्ष माहे.

त्रिष्टुप् छद वर्ण ११.

१४ राजहंसी　　न न र ल ग　　१९२

न र र ला गथी राजहंसी छे.

अंक ९६१ ललितवृत्त छे तेमा ६, ५ यति छे. आमां यति नथी.

१५ अग्रणी　　त ज र ग ग.　　१७२

ता जा र ग गाथी अग्रणी थाशे.

१६ ग्रामणी　　स र ज ग ग.　　३४०

स र जे गा ग ग्रामणी ज थशे.

१७ न्याय　　भ र न ग ग.　　४७१

न्याय करो भ रा न ग ग मूकी.

१८ हरि मर्दन　　भ त र ल ग.　　६७०

भा त र ला गा थकी करो हरि

मा त र ला गाथी मर्दने मचो.

१९ समीरण स न स ल ग. ७६४

स न सा ल ग कर समीरणे.

२० नैक त न त ल ग. ८२९

ता ना त ल ग धरी नैक रचो

२१ भूतप म न भ ल ग. ९१३

मा ना भा ल गथी भूतप करो.

२२ अनिल स म न ल ग. ९९४

स म ने ला गाथी अनिल रचो.

२३ वर्त्तका न र र ल ल. १६८८

न र र ला लथी वर्त्तका कर.

जगती छंद वर्ण १२.

२४ वन्हि म स ज म ३४९

वन्हिमा म स जा म धारजो पादे.

२५ सविता स न म य ९७२

स न मा य चरणे थाशे सविता.

२६ धरणिधर न न न य १०२४

न न न य धर धरणिधरे तुं.

२७ प्रसन्न र न र र १२११

रा न रा र कवि तो प्रसन्न करो.

२८ विभु स भ ज र १३९६

स भ जा रा विभु विषे तमे करो.

२९ कृति म न ज र १४०१

मा ना जा र कवि धरे कृति पदे.

३० साधु र न ज र १४०३

रा न जा र चरण थाय साधुमां

३१ जन्हु त ज न र १५१७

ता जा न र धर जरुर जन्हुमां.

३२ नारायण त न भ स १९८१

नारायण रच ता न भ स धरी.

३३ नर न न भ स १९८४

न न भ स चरणे रच नरमां.

३४ यज्ञपति न न भ भ ३५२०

न न भ भ धर यज्ञपति कर.

३५ त्रिशिष्ट त न न न ४०९३

त्रिशिष्ट त न न न धर चरण

अति जगती छंद वर्ण १३.

३६ शुचि स भ र य ग ६९२

स भ रा या ग वडे रचाय शुचि तो.

३७ यज्ञ न य ज र ग १३६०

धर पद यज्ञे न या ज रा ग प्रीते.

३८ सिद्धार्थ त र ज र ग १३६५

सिद्धार्थमां धरो पदे त रा ज रा गा.

३९ सिद्धिद ज र ज र ग १३६६

ज रा ज रा ग पादमांह सिद्धिदे तो.

४० वृषाही स न ज र ग १४०४

स न जा र ग चरण करो वृषाही.

४१ वृषभ र स न त ग २९१९

धारजो वृषभे र स न ता गा क्रमे.

४२ विष्णु स ज य ज ग २६६८

स ज या ज गा चरणो विष्णु नां रचो.

४३ वर्द्धमान त न र न ग २७७३

ता ना र न गथीं वर्द्धमान रचजो.

४४ महोग्र स भ स ज ग २८०४

स भ सा जा ग धर सदा महोग्रमां.

४५ वृषोदर भ न स ज ग २८१५

भा न स ज ग चरणमां वृषोदरे.

४६ वर्द्धन न ज भ ज ग २९९२

न ज भ ज गा धरो चरण वर्द्धने.

४७ विविक्त त न न न ग ४०९३

विविक्त रच त न न न ग चरणे.

शर्करी छंद वर्ण १४.

४८ श्रुतिसागर भ र ज र ग ग १३६७

भा र ज रा ग्ग पाद श्रुतिसागरे आवे.

४९ सुभुज म स ज र ग ग १३६९

आवेछे सुभुजे म सा ज रा ग गी पादे.

५० सुद्रौपदी न भ ज र ग ग १४००

न भ ज रा ग ग थकी सुद्रौपदी थाशे.

५१ पडघमी न भ ज स ग ग १९१२

न भ ज सा ग ग थकी पडघमी थाशे.

कवि दलपतरामे नवुं रच्युं छे.

५२ वाग्मी स न र ज ग ग २७४८

स न रा ज ग ग आणतां रचाय वाग्मी.

५३ दुर्धर न न र ज ग ग २७५२

न न र ज ग ग आण वृत्त दुर्धरे तो.

५४ महेन्द्र म स ज भ ग ग ३४१७

मा सा जा भ ग गे महेन्द्र वृत्त रचोजी.

५५ वसुद स भ र न ग ग ३७६४

स जा रा ना ग ग थी रचो वसुद भाई !

५६ वसु त न र न ग ग ३,७७३

ता ना र न ग ग धारजो वसु विषे तो.

५७ वनमयुर भ ज स न ग ग ३,८२३

भा ज स न गा ग धरजो वनमयुर

आ वृत्तनुं माप र. पिं. मा अंक ९५० इन्द्रवदना प्रमाणे छे.

५८ नैकरूप स न स न ग ग ३,८३७

स न सा न ग ग पद नैकरूप मांहे.

५९ गोप न भ य य ल ग ४,७२८

न भ य या ल ग करो गोप पादे तमे.

६० शिपिविष्ट न भ भ र ल ग ५,५६०

न भ भ रा ल गथी शिपिविष्ट जाणजो.

६१ मगन त न न न ग ग ८,११९

ता ना न न ग ग चरण मगन आवे.

आति शर्करी छद वर्ण १५.

६२ प्रकाश न भ र र य ९,३०४

न भ र रा य धरो प्रकाशे पदे क्रमेथी.

६३ द्युतिधर न न न ज य ७,१६८

द्युतिधर रच न न न ज या पद आणी.

६४ निर्गुण न ज ज भ य ७,१३६

न ज ज भ ये पद थाय निर्गुण तणुं तो.

६५ विचित्र ललिता न स न भ य ७,६४८

न स न भ य छे गण विचित्र ललितामां

६६ श्रीश म न ज न य ८,१९७

श्रीशे आण म न ज ना य पद गण सारा.

६७ मंत्र स भ न ज र ११,२९२

स भ ना जा र पद धर सदाय मंत्रमां.

अष्टि छंद वर्ण १६.

६८ चन्द्रांशु म न ज र य ग ९,४९७

चन्द्रांशु म न ज र या गथी करो तमे धीरा!

६९ अमृतांशु न न र ज र ग १०,९४४

न न र ज र ग धार अमृतांशु पादमांहे.

७० भानु स भ स ज र ग १०,९९६

स भ सा जा र ग पदमा धराय भानु वृत्ते.

७१ सुरेश्वर म न ज न र ग १२,१५२

मा ना जा न र ग करो चरण सुरेश्वरे तो.

७२ ओषध भ न ज न र ग १२,१५९

ओषध चरण भ ना ज न र गथी बनावो.

७३ पवन स भ ज र स ग १३,६८४

स भ जा रा स ग धराय छे पदे पवने तो.

७४ पावन स भ र ज स ग १९,०२८

रचजो पावन सा भ रे ज सा ग पद लावी.

७५ **ललितपदा**　　न न न ज स ग　　१९,३६०

न न न ज स ग ललितपदा पद विषे छे.

आ वृत्त कर्णाटकी छंदसारमाथी मळ्युं छे.

७६ **अनल**　　त न न न स ग　　१६,३८१

ता ना न न स ग अनल चरण रचवान.

७७ **कामहा**　　न न स त त ग　　१८,६८८

न न स त त ग पदमां आव्ये बने **कामहा.**

७८ **काम**　　त ज भ ज ज ग　　२३,४६९

ता जा भ ज जा ग काम रचवा पदमां करो.

७९ **अदृश्य**　　त न न न न ल.　　६५,५३३

अदृश्य त न न न न ल चरण कर कवि!

अत्यष्टि छंद वर्ण १७.

८० **चंडकील** न स य य य ल ग (५लघु+४र गण) ३७,४७२

शरे लघु वळी धरो चार रा चंडकीले तमे.

८१ **इष्ट**　　त न न न न ल ल (त+१४ल)६५,५३३

छे इष्ट चरण त न न न न ल ल कविवर!

धृति छंद वर्ण १८.

८२ **शिष्टेष्ट**　　म न ज न न य　　६९,४०१

शिष्टेष्टे म न ज न ना य चरण चरण धरोजी.

८३ **विबुधप्रिया**　　र ज ज ज भ र　　९३,०६९

पादमा र जा ज ज भा र धरी करो **विबुधप्रिया.**

कर्णाटकी छंद: सारमाथी आ वृत्त मळ्युं छे. र. पि. मा अंक

११७६ मा आ नाम छे पण तेनु माप जूदुं छे.

८४ **शिखंडी**　　स भ त य स स　　१,११,४१२

स भ ता या स स छे पाद शिखंडी रचना करवा.

८५ अशोक न न स न न स १,३०,८१६

न न स न न पर अशोक पद स धरी करजो.

८६ विहार छ ज गण १,८७,२४६

विहार छ जा रचवा पदमांह मने मन थाय.

८७ अरविन्द न न स स त भ २,१४,७८४

न न स स त भ अरविन्द पदे लावे रुडा कवि.

अतिधृति छंद वर्ण १९.

८८ तारण ज म भ भ त य ग ९३,६१४

ज मा भ भा ता या गा कर तारण वृत्ते कवि जाणीता.

८९ अम्बुरुह ४ भ+र स ग १,१०,००७

भू भ भ भू र स गा कवि! कोविद अम्बुरुह पदे तुं.

९० चन्द्रकला र स स त ज ज ग १,८६,९८७

रा से सा त ज जा ग थकी तो चन्द्रकला चरणो रचो.

कृति छंद वर्ण २०.

९१ तार स भ त य स भ ग ग २,०९,७१६

करजो तार पदे सा भ त या सा भ ग गा कोड करीने.

९२ स्कंद त+९ न+२ ग २,६२,१४१

तुं स्कंद चरण रच तगणपर शरे नगण गागे.

९३ उत्पलमाला भ र न भ भ स ल ग ३,८८,९६७

उत्पलमाल पाद भ र ना भ भ सा ल ग धरवे वने.

९४ धूर्य त+९ न+२ ल १०,४८,९७३

तुं धूर्य चरण रच तगण पर सतर लघु धरी.

प्रकृति छंद. वर्ण २१.

९५ तुरंग रनरनरनर ७,६५,६२७

मापमां रच तुरंग पाद रन रानरा नर धरी करी.

र. पिं. अं. १२६७ कनकमालिका छे तेज माप.

संस्कृति छंद. वर्ण २४.

९६ ललित (कर्णाटकी) न न भ न ज न न य. ४१,४५,०४८

ललित चरण ना न भ न ज न न या धर कवि-
वर रचनामां.

अतिकृति छंद. वर्ण २५.

९७ साध्वी. भनजनसननभग. १,४१,६३,५५१

७, ११, ७ अक्षरे यति.

भा न उपर ज न, सा न न भ ग हथे साध्वी शिवे,
करणे छे यति तो.

९८ हंसपदा. ४न+स+३भ+ग. २,४३,६८,७६८

त्रिधित्रर्दन नगण उपर सपर भा पौत्रक गा पछी हंसपदे.

उत्कृति छंद. वर्ण २६.

तैलंगी सुलक्षण ग्रंथमांथी.

९९ मंगलमहाश्री. भजसनभजसनगग. १,५६,५८,७३५

भू ज स न भा ज स न गा ग पदमा कविवरी तुं रच मंगलमहाश्री.

१०० वनलता. ८ न + २ ग. १,६७,७७,२१६

वसु नगणपर चरण चरण ग ग कवित्रर कर वनलता मां.

१०१ हयप्लुती. जसनभजसनभलग. २,१३,१७,४७०

ज सा न भ ज सा न भ ल गा पर प्रति चरणमां
कवि हयप्लुती विषे.
छंद: सार नामना कर्णाटकी पिंगलमांथी.

१०२ मानिनी. ८ जगण+ल+ग. २,८७,६०,९४२

करो कवि! आठ जनीपर लाग रचो पद मानिनीनुं
ठीक माप थकी.

१०३ प्रभुवृत्त, ३न+५ज+ल+ग. २,८७,६१,०८८
८, ६, ८ अक्षरे यति.

वसु पट वसु यति, त्रि न पाडव जा, पर लाग करी प्रभुवृत्त रचो.

वर्ण दंडक.

प्रचितक (दंडक) २ न+(य स त भ ज) मानो कोई पण
गण (७) सात वार.

रणपिंगळ पृ. ४१७ थी प्रारंभी आनी व्याख्या छे. वळी जुवो
पृ. ४३२ कामबाण दंडक.

त स ज य अने भ एमांना गमे ते ९ गण उपर २ ग
वधारवाथी पेहेलो दंडक बने छे. पछी यथेच्छ गण वधारतां बीजा
बने छे, तेम आ प्रचितकमा वृद्धिगत थता दंडकमां बे नगण उपर ७
यथेच्छ य आदि गण मूकवाथी दंडक बने छे. एटले २६ अक्षरथी
वधारे वर्ण दंडकमां ९९९ सुधी एक पादमां आवे छे ते प्रकारे अहिं
२ न=६+२१ यथेच्छ गणना थईने=२७ नो प्रथम दंडक गण्यो
छे. ते प्रकारे नीचे प्रमाणे दंडक बने छे.

जुवो पृष्ट ४२३ प्रचितक, सिंहविक्रान्त विषे.

१ य प्रचितकसातो. २ न+७ य=२७

य प्रचितक रचवा बे **न** आणी वधारो **य** साते बने छे रुडो आम सातो.

२९९ अक्षर थता सुधी अक्केको **यगण** वधारता जइये तो नवा प्रचितक बने अने तेने यथेच्छ नाम अपाय. जेम,

२ न + ८ य नु नाम **य प्रचितक आठो.**

२ न+९ य नुं नाम **य प्रचितक नवो** तेमज दशो, अगियारो, बारो, तेरो इत्यादि एज प्रमाणे नीचेना **प्रचितक** पण बने छे.

२ **सप्रचितक** सातो अथवा सत्तावीसो =२ न + ७ स =२७

सप्रचितक चरणमा कर बे नगणो धर ते पर सात **स** तुं सरखा.

३ **तप्रचितक** सातो अथवा सत्तावीसो. २ न + ७ त = २७
तप्रचितक रचो बे **न** आणी वळी आणजो सात ता पाद पादे गणी आप.

४ **भप्रचितक** सातो = २ न + ७ भ = २७
भप्रचितक पदे धर बे **नगणो** पर सात भ मात्र धरी मनमां कवि !

५ **जप्रचितक** सातो = २ न + ७ ज = २७
जप्रचितक रचवा पद बे **न** परे ठिक सात जकार जरूर कराय.

६ **लाक्षणी, लाक्षणिक प्रचितक.** भ न न न स भ न न स=२७
लाक्षणिक रच भ **न न** पर **न स** कही भा **न न** उपर **स** गण चरणे.

संकीर्ण वृत्तो.

नीचे आपेला मापना सघळां विषम वृत्तो राघवार्जुनीय नामना संस्कृत काव्यमां वपराया छे.

	माप	वर्ण	केटलामु रूप	रणपिंगलमां क्यिे अंके
१ वैकुंठ	१ म र ग ग	८	१७	२६९
	२ त त र	९	१६९	
	३ य र य	९	८२	
	४ र य ज ग	१०	३३?	४६३

१ पे'ले मा रा ग गा आवे, (श्लोकनुं पाद)
२ बीजे त ता रा पदे रचे;
३ तृतीये या र या धरे छे;
४ रा य जा ग वैकुंठ चारमां (कामदा, कर्णपालिका.)

	माप	वर्ण	केटलामु रूप
२ पुरुष	१ न म य ल	१०	९८४ मुं रूप
	२ त त र ल	१०	६७७ ,,
	३ न र न ग	१०	४७२ ,,
	४ म य ज ग	१०	३२९ ,,

१ पुरुषमां पे'ले न मा या ल,
२ बीजे त ता रा ल पाद वाळ;
३ अनल पाद ना र न ग छे.
४ चोथे मा य जा गा रचायछे.

	माप	वर्ण		
३ प्राण	१ र ज म	९	रूप	४३
	२ त त र	९	रूप	१६९
	३ र ज म	९	रूप	४३
	४ त त र	९	रूप	१६९

१ प्राणमां र जा म छे पे'ले,
२ बीजे त ता रा कराय छे;
३ रा ज मा धरो पदे त्रीजे;
४ चोथे त ता रा धराय छे.

४ प्राणद
१ न र ज ल ग	११	रूप	८५६
२ त त र	९	रूप	१६५
३ न म भ	९	रूप	१३६
४ य र र ल ग	११	रूप	६५८

१ न र ज ला ग प्राणदे प्रथमे;
२ बीजे त ता रा पदे करो;
३ न म भ त्रीजे लावो कवि !
४ य रा रा ला ग चोथे पदे धरो.

५ प्रणव
१ र न ज ल ग	११	रूप	९८१
२ त त र	९	रूप	१६५
३ न र ज ल ग	११	रूप	८५६
४ स य र ल ग	११	रूप	६५२

१ रा न जा ल ग प्रणवे प्रथमे;
२ ता ता र बीजे रचाय छे;
३ अनल पाद ना र जा ल ग थी;
४ स य रा ल गा चोथे कराय छे.

६ प्रथु
१ ज म ग ल	८	रूप	१३४
२ य र र ल ग	११	रूप	६५८
३ र त भ ल	१०	रूप	९३१
४ त त र	९	रूप	१६५

१ ज मा ग ला पे'ले थाय,

२ द्वितीये या र रा ला ग छे पदे;
३ रा त भा ला दोधे पाद प्रथु
४ ता ता र चोथे पदे करो.

७ हिरण्य-गर्भ.	१ र त भ ल	१०	रूप	९३१
	२ स य ज ग	१०	रूप	३३२
	३ र ज ग	७	चामर	४३ अ. १६९
	४ स य ज ल	१०	रूप	८४४

१ रा त्भ ला हिरण्यगर्भे विधु.
२ स य जा ग बीजे पदे रचो;
३ रा ज गा तृतीय छे;
४ स य जा ल चोथे पदे धर.

८ शत्रुघ्न	१ र ज म	९	रूप	४३
	२ त त र	९	रूप	१६१
	३ र ज ग	७	चामर	४३ अं० १६९
	४ त त र	९	रूप	१६१

१ रा ज मा शत्रुघ्नमां पे'ले,
२ ता ता र बीजे पदे करो;
३ रा ज गा तृतीयमां;
४ ता ता र चोथा पदे धरो.

९ कान	१ न त स	९	रूप	२३२
	२ न त त र	१२	रूप	१३२०
	३ र त त	९	रूप	२९९
	४ त र ल ग	८	रूप	८१ अं० २९४

१ न त स पे'ले चरण छे;
२ न त त र ग कान बीजे पदे करो;

३ रा त ता छे कान त्रीजे ज;
४ चोथे त रा ल गा धरो. (नाराचिका, आनंद)

१० काल	१ न भ स स	१२	रूप	१७८४
	२ त त र	९	रूप	१६९
	३ न र य ल	१०	रूप	६००
	४ त त र	९	रूप	१६९

१ न भ स सा धर प्रथमे चरणे;
२ ता ता र बीजे सु कालमां;
३ न र य ला धरो तृतीये ज;
४ ता ता र चोथे पदे करो.

११ उग्र	१ र य र	९	रूप	१३९
	२ त त र	९	रूप	१६९
	३ न र य	९	रूप	८८
	४ म य ज ग	१०	रूप	३२९

१ ओझमा र या रा थाय छे,
२ बीजे त ता रा रचाय छे;
३ न र य उग्रमां तृतीये,
४ चोथे मा य जा गा धराय छे.

१२ संव-त्सर	१ न र य ल	१०	रूप	६००
	२ त त स	९	रूप	२२९
	३ न र य ग	१०	रूप	८८
	४ त म स	९	रूप	१९७

१ प्रथम छे न रा य ला पाद,
२ बीजे त ता सा पद करो;

३ न र य गा करो तृतीये सो,
४ संवत्सरे चोथे त म सा.

१३ वरुण	१ न म ज ल १०	रूप	९८४
	२ स य ज ल १०	रूप	८४४
	३ र म स ९	रूप	१९९
	४ त म र ९	रूप	१३१

१ वरुणमां पे'ले न मा ज ल;
२ कवि धार बीजे स या ज ल;
३ रा म सा त्रीजे पाद करे,
४ ता मा र चोथे पादे धरे.

१४ वारुण	१ र ज म ९	रूप	४३
	२ त त र ९	रूप	१६९
	३ त र ग ग ८	रूप	२१
	४ त त र ९	रूप	१६९

१ ओझमां र जा म वारुणे,
२ ता ता र बीजे पदे धरे;
३ ता रा ग गा करे त्रीजे,
४ ता ता र चोथे पदे करे.

१५ ज्योति	१ र त भ ग=१०	रूप	४१९
	२ त ज र =९	रूप	१७३ खोन्मुखी
	३ न त ज ग=१०	रूप	७२
	४ स य स ग ग=११	रूप	६८८

१ ज्योतिमा रा ता भ गा प्रथमे;
२ बीजे त ज रा कराय छे;

३ तृतीय जा ता ज ग थाय छे,
४ स य सा ग गा थाय पदे चोथे.

१६ दारुण	१ र ज म	९	रूप	४३
	२ त त र	९	रूप	१६९
	३ र ज म	९	रूप	४३
	४ त त र	९	रूप	१६९

१ ओझेमां र जा म दारुणे,
२ ता ता र बीजे पदे करो;
३ रा ज मा धरो पदे त्रीजे;
४ ता ता र चोथे पदे धरो.

१७ शुभांग	१ र ज म =९		रूप	४३
	२ त त र =९		रूप	१६९
	३ र त स ल=१०		रूप	९३
	४ स य ज ल=९		रूप	१४४

१ रा ज मा शुभांग पे'ले छे;
२ ता ता र बीजे पदे करो,
३ आण त्रीजे रा त स ल आप;
४ स य जा ल चोथे धरो कवि.

१८ प्रेम	१ त त ज ग ग	११	इंद्रवज्रा	अंक	९७१
	२ त त त ग ग	११	ग्राही	अंक	९९९
	३ य य य य	१२	भुजगी	अक	६७९
	४ ज त ज ग ग	११	उपेन्द्रवज्रा	अंक	९७२

१ ता ता ज गा गा प्रथमे रचोजी,
२ ता ता त गा गा द्वितीये करोजी,
३ य या या य त्रीजे थशे प्रेम माहे,
४ ज ता ज गा गा श्रुति पाद ज्याहे.

नीचेनां त्रण वृत्तना नाम तन मन अने धन एवां नवां कल्प्यां छे.

१९ तन	१ न य ज ल ग	११	रूप	८५६
	२ त त र	९	रूप	१६५
	३ न र स ग	१०	रूप	२१६
	४ र र ल ग	८	हेम रूप	८३ अं. १९२

१ न य ज ल गा छे तने प्रथमे,
२ ता ता र त्रीजे पदे करो;
३ न र स गा धरो पद त्रीजे;
४ थाय चोथे र रा ल गा.

२० मन	१ र ज त	९	रूप	२९९
	२ त त र	९	रूप	१६५
	३ र ज य ल	१०	रूप	६१९
	४ त त र	९	रूप	१६५

१ रा ज ता करो मने आद्य,
२ ता ता र बीजे पदे धरो;
३ रा ज या ल लोके पदे थाय;
४ ता ता र चोथे पदे करो.

२१ धन	१ र त त ग	१०	रूप	४१९
	२ त त र	९	रूप	१६५
	३ र त म	९	रूप	३५
	४ त र स	९	रूप	२१३

१ रा त ता गा थाय पे'ले पदे,
२ ता ता र बीजे धने रचो;
३ रा त मा त्रीजे पदे आवे;
४ चोथे त रा स थाय पदे.

नीचेनां त्रण वृत्तनां नाम तन मन अने धन एवां नवां कल्प्यां छे.

१९ तन
- १ न य ज ल ग ११ रूप ८९६
- २ त त र ९ रूप ११९
- ३ न र स ग १० रूप २१८
- ४ र र ल ग ८ हेम रूप ८

१ न य ज ल गा छे तने प्रथमे,
२ ता ता र बीजे पदे करो;
३ न र स गा धरो पद त्री
४ थाय चोथे र रा ल गा.

२० मन
- १ र ज त ९
- २ त त र ९
- ३ र ज य ल १० र
- ४ त त र ९ रू

१ रा ज ता करो मने ओझ,
२ ता ता र बीजे पदे धरो;
३ रा ज या ल लोके पदे थाय;
४ ता ता र चोथे पदे करो.

२१ धन
- १ र त त ग १० रूप
- २ त त र ९ रूप
- ३ र त म ९ रूप
- ४ त र स ९ रूप

१ रा त ता गा थाय पे'ले पदे,
२ ता ता र बीजे धने रचो;
३ रा त [illegible] जे पदे आवे;
४ चो[illegible] पदे.

उदयरामे

रचीने

भूज दरबारी तथा

मुंबई

"निर्णयसागर" मुद्रायंत्रमां छपावी

संवत् १९६१ सन १९
जेष्ट. जून.

मूल्य रुपिया बे.

नीचेनां त्रण वृत्तनां नाम तन मन अने धन ऐवां नवां कल्प्यां छे.

१९ तन	१ न य ज ल ग	११		रूप	८५६
	२ त त र	९		रूप	१६५
	३ न र स ग	१०		रूप	२१६
	४ र र ल ग	८	हेम	रूप	८३ अं. २९२

१ न य ज ल गा छे तने प्रथमे,
२ ता ता र बीजे पदे करो;
३ न र स गा धरो पद त्रीजे;
४ थाय चोथे र रा ल गा.

२० मन	१ र ज त	९	रूप	२९९
	२ त त र	९	रूप	१६५
	३ र ज य ल	१०	रूप	६१९
	४ त त र	९	रूप	१६५

१ रा ज ता करो मने ओझ,
२ ता ता र बीजे पदे धरो;
३ रा ज या ल लोक³ पदे थाय;
४ ता ता र चोथे पदे करो.

२१ धन	१ र त त ग	१०	रूप	४१९
	२ त त र	९	रूप	१६५
	३ र त म	९	रूप	३५
	४ त र स	९	रूप	२१३

१ रा त ता गा थाय पे'ले पदे,
२ ता ता र बीजे धने रचो;
३ रा त मा त्रीजे पदे आवे;
४ चोथे त रा स थाय पदे.

रणपिंगल.

द्वितीय भाग

गणित विषयक

रणछोडभाइ उदयरामे

रचीने

भूज दरबारी तथा

मुंबई

"निर्णयसागर" मुद्रायंत्रमां छपावी प्रसिद्ध कर्यो.

संवत् १९६१ सन १९०५.

जेष्ठ. जून

मूल्य रुपिया बे.

प्रस्तावना.

आ भागमां पिंगळ विषयक गणितनुं विस्तारथी विवेचन कर्युं छे. जे जे ग्रंथकारोए जे जे रीति अने अभिप्राय प्रकट कर्यां छे ते सर्वे आ भागमां प्रसिद्ध कर्यां छे. परिणाम सर्वेनां सरखा आवेछे अने पुनरुक्ति जेवुं थायछे पण जेने आ विषयनो पूरो अभ्यास करवो होय तेने फरीफरीने जूदी जूदी रीतिए बतावेलुं मनन करवाथी मनमां दृढ थई जाय छे.

मात्रामेळ गणनुं गणित सरल रीतिथी बताववामां आव्युं छे, तोपण दोहरा अने गीतिना जे जे प्रकार थाय छे अने ते विषयक जे जे गणित करवामां आव्युं छे ते उदाहरणरूपे स्पष्ट बताव्युं छे तेथी अभ्यासीने ते पूरेपूरुं ठशी जवाथी कोई प्रकारनो संदेह तेना मनमां रेहेशे नहि.

पंडितोने माटे अने शिखाउओने माटे ग्रंथ रचवानी पद्धति जूदी जूदी होयछे; शिखाउने माटे रचाता ग्रंथोमां जे विषय चरचवानो होय ते विस्तारथी विविधप्रकारे रचवानी अगत्य पडे छे.

एक गृहस्थे मारा आगळ वात करी के "महाभारत अने रामायणना रचनाराए एकनाएकज विषयनुं फरीफरीने पिंजणुं करीने पुस्तकनुं कद वधारी दीधुं छे, जो संभाळथी लख्युं होत तो एना ए ग्रंथ घणा टुंकामां बनी शकत." जे जे सद्गुणोनुं कथन एक वार थई गयुं छे ते ते सद्गुणोनुं कथन प्रसंग मळतां फरीफरीने करवामां आव्युं छे ए वात खरी छे, पण महाकाव्यनी रचना करवाना जे नियम छे तेने अनुसरीने महाभारत अने रामायणनी रचना थई छे. सद्गुणो माणसना मनमां ठसाववा माटे जेम जेम प्रसंग मळता जाय तेम तेम ते फरीफरीने आवता जाय छे तेम तेम नवी रचना अने नवा प्रकारथी मन उपर असर करता अने दृढ थता जाय छे. आ वात ए भाईने केहेवामां आवी तोपण तेमनी नजरमां ते उतरी नहि एवो आ समय छे.

रणपिंगळ रचवामां मारे अनेक ग्रंथोनुं अवलोकन करवुं पड्युं छे; तेमां, भुजना शास्त्री प्रभाशंकर तथा लक्ष्मीशंकर जयशंकर, जेओ बनार-

सनी पाठशाळामां सारो अभ्यास करी उत्तम प्रकारनुं ज्ञान मेळवी आव्या छे, अने जेओ, मातुश्री न्हानी बा पाठशाळामां अध्यापक छे तेओए मने सारो आश्रय आप्यो छे. तेमज ज्योतिषविद्यानुं सारूं ज्ञान मेळवी गणित क्रियामां कुशळ थयेला रा. काहानजी मयाशंकरनो श्रम आ काममां घणो छे. गणितरचनानी शुद्धि प्रति एमणे पूर्ण लक्ष आप्युं छे. कच्छना माजी डेप्युटी एज्युकेशनल इन्स्पेकटर रा. दयाशंकर श्यामजी तथा रा. मकनजी वासुदेव एओए पण केटलीक बाबतमां मदद करी छे, माटे ए सर्वेनो आ स्थाने हुं उपकार मानुं छुं.

महुधा जेष्ठ शुदि १२ }
संवत् १९६१. }

र० उ०.

नीचे जणावेला ११ बिम्ब, पुस्तकनी समाप्ति स्थाने राखवामां आव्यां छे तेनो उपयोग जे स्थाने करवानो ते स्थाने करी लेवो.

१ नैमिकगण अनुष्टुप् छंद मेरू बिम्ब.
२ अनैमिकगण अनुष्टुप् मेरू बिम्ब. १
३ अनैमिकगण अनुष्टुप् मेरू बिम्ब. २
४ बत्रीश वर्ण मेरू बिम्ब.
५ दोहामेरू बिम्ब १ एमां आडा छठा खंडमां ४०९६ ने बदले ६०९६ वाचवा तथा आडा १४ मा खंडमां १, ३४, ६४२ ने बदले १, ३९, ६४२ वाचवा.
६ दोहामेरू बिम्ब. २ } आ बेमां आडा छठा खंडमां ४०९६
७ दोहामेरू बिम्ब. ३ } छे तेने बदले ६०९६ वाचवा.
८ आर्यामेरू बिम्ब. १
९ आर्यामेरू बिम्ब. २
१० आर्यामेरू बिम्ब. ३
११ दोहा पताका बिम्ब. एमां मध्यखानाना १५ मा खंडमां ११, ९९, ३३८ ने ठेकाणे ११, ९९, ३२८ वांचवा.

विषयक्रम.



रणपिंगल.

भाग २ जो.

संख्याप्रस्तारादिक विषय.

आ विषय काव्य रचवाना कामभां आश्रय-भूत छे, अने काव्यशास्त्र जाणवानी इच्छा राखनाराने अगत्यनो छे. कारण के अमुक वर्ण के मात्राना जुदा जुदा स्वरूप आपता केटकेटला भिन्न भिन्न वृत्त के जाति थइ शकेछे ते सर्व गणित विद्याथी नक्की थायछे अने ते वात जाणवानी कवि थनारने आवश्यकता छे आ विषयना मुख्य प्रकार आठ छे, तेओना नाम —

१ संख्या. २ प्रस्तार. ३ सूची. ४ नष्ट.
५ उद्दिष्ट. ६ मेरु ७ पताका. अने ८ मर्कटी.

मात्रा अने वर्णना एवा आठ आठ भेद थायछे. एटले बन्नेना मळीने सोळ भेद थाय तेमा वळी कोइ पाताल अने खंडमेरु एवा बे भेद वधारी अढार भेद गणेछे.

ए प्रत्यय साधनाना मुख्य—आर्ष[1] प्रकार बे छे, पिंगलमत अने अगस्त्यमत.

पिंगलमतमा अवरोहक्रम छे अने अगस्त्यमतमा आरोह क्रम छे एटले पिंगलमत प्रमाणे प्रस्तार करवामा पेहला रूपमां सर्व गुरुथी आरंभी सर्व लघु आवता लगण उतरता जवायछे; अने अगस्त्यमतना प्रस्तारमां सर्व लघुथी आरंभी सर्व गुरु आवे त्या लगण चडता जवायछे.

उपर जणावेला बे मुख्य प्रकारमांथी स्थान अने संख्या क्रमना [2]विपर्यथी तेमना नीचे प्रमाणे त्रण त्रण भेद पडेछे —

---

१ ऋषिप्रणीत २ अदलाबदलाथी

नीचेथी, सर्व लघु दर्शक चिन्हवाळु रुप मूकवामा आवेछे. ने

प उपजावी, एकपछी एक तेना उपस

ळि सर्व गुरु आवे त्या लगण क्रिया

संख्याप्रख्या क्रम नो पिंगलमत प्रमाण. मथाळे

आ विषय काव्य थी गणवामा आवेछे.

काव्यशास्त्र जाणवार्नीथानविपरीत अथवा भामहमत प्रस्तारनो

अमुक वर्ण के मात्र सामान्य विधिथी स्थान सबंधमां उलटो

भिन्न भिन्न वृत्त के वेधिमा, डावी बाजुना पेहेला गुरुतळे लघु

नक्की थायछे. अने ते म आमां न थता, जमणी बाजु भणीना

छे. आ विषयना ग

१ संख्या.

ुरु मूकवामा आवेछे, ने डावी बाजु भणीना

२ उद्दिष्ट.

खता जइ, जमणी बाजु भणीनी खूटती मात्रा

मात्रा अने

ह लघुथी अथवा गुरुवर्णचिन्हथी पूरवामा आवेछे.

मळीने मोळ यमतनोस्थानविपरीत प्रस्तारविधि तेना सामान्य

एवा के भेद छ. फेर मात्र एटलो ज छे के, तेमा प्रथमना सर्व लघु

ए प्रत्ययनी बाजुनी आदिनिकटकर उपर गुरु मूकायछे,

अने अगच्चिन्ह तो नीचे जे प्रमाणे होयछे ते प्रमाण ज चडावी

पिंगलविछे, ने डावी भणी खूटती मात्रा के वर्ण, लघु मूकी

क्रम छे. आवेछे. तेम आमा दक्षिण तरफनी पेहेली आदिनी

सर्व गुरु उपर गुरु मूकायछे अने डावी भणीना चिन्ह नीचेना

अने मा होयछे, तेज उपरना रूपमां मूकवामा आवेछे, अने

खूटती मात्रा अथवा वर्ण, जमणी बाजु भणी मूकी, ते ओळ

पूरी करवामा आवेछे. संख्याक्रमनो प्रारंभ सर्व गुरुवाळी

ओळथी गणवामा आवेछे.

५ पिंगलमत संख्याविपरीतप्रस्तार अगस्त्यमत सामान्य प्रस्तारविधि प्रमाणे करवामां आवेछे, तेमां ने आमा मात्र संख्यानो अने क्रमनो तफावत छे तेमां सर्व गुरुनुं रूप पेहेलुं गणवामा आवेछे. अने आमा, सर्व लघुनु रूप पेहेलुं गणवामां आवेछे. अने त्याथी रूपसंख्या गणायछे तेमा सर्व गुरुना रूपमांथी सर्व लघुनुं रूप शोधवामा आवेछे, तेम आमां सर्व लघुनु रूप पेहेलु मूकी सर्व गुरुनु रूप बनाववामा आवेछे.

६ अगस्त्यमत संख्याविपरीत प्रस्तार पिंगलमत सामान्य प्रस्तारविधि प्रमाणे करवामा आवेछे फेर मात्र एटलो ज छे के, तेमां सर्व लघुना रूपथी सर्व गुरुनुं रूप आववा लगण चढता जइ क्रिया करायछे. अने संख्याक्रम सर्व गुरुना रूपथी प्रारंभी गणवामां आवेछे. तेम आमा, सर्व गुरुना रूपथी आरंभी आरोहण क्रमे. सर्व लघुना रूप लाववामा आवेछे, अने संख्याक्रम सर्व लघुना रूपथी प्रारंभी गणवामा आवेछे. स्थानक्रम पूर्ववत् कायम रहेछे.

७ पिंगलमत स्थानसंख्याविपरीतप्रस्तार[1] अगस्त्यमत स्थानविपरीत प्रस्तार विधिये उतरता जवाना क्रमथी करवामां आवेछे. अने संख्या पण. सर्व लघुना रूपथी प्रारंभी, गणवामां आवेछे,

८ अगस्त्यमत स्थानसंख्याविपरीत[1] प्रस्तार पिंगलमत स्थानविपरीतनी रीतिये, सर्व गुरुना रूपथी उतरता जवाना विधिने बदले, चडता जवाना क्रमे करवामा आवेछे, ने तेनो संख्याक्रम सर्व लघुना रूपथी आरंभी गणवामा आवेछे,

[1] आने केटलाक उभयविपरीत पण केहेछे.

जे प्रस्तारमा संख्याक्रम सर्व गुरुना रूपथी गणवामां आवेछे तेने **क्रमप्रस्तार** केहेछे, अने जेमां संख्याक्रम सर्व लघुना रूपथी गणायछे तेने **उत्क्रमप्रस्तार** केहेछे. उपर जणावेला प्रथमना चार जातना प्रस्तार, **क्रमप्रस्तार**, अने बाकीना प्रस्तार, उत्क्रमप्रस्तार केहेवायछे.

उपर जणावेला सर्व प्रकारना प्रस्तारनां रूप, **संख्या, पाताल, मेरु, सूची** अने **मर्कटी** साधवानो विधि **पिंगलमत** विधि सदृश छे; पण नष्ट, उदिष्ट अने पताकाना जूदा जूदा विधि छे. ते विषयवार बताववामा आवशे.

मात्रिकप्रकरण.

संख्या.

अमुक मात्रानी वधी मळीने केटली जाति थाय ते जाणवाने माटे संख्यानो प्रकार उपयोगी छे.

रीति

एक मात्रानी मात्र एक ज जाति थाय, बे मात्रानी बे थाय, अने त्रणनी त्रण थाय. ते पछीनी कोइ पण मात्रानी जाति संख्यांक ते मात्रानी आगळनी बे मात्रानी जातिसंख्यांकना सर्वाळा तुल्य थायछे. त्रण मात्रानी जाति करवाने, नीचे प्रमाणे आंकडा मूकी पेहेली तथा बीजी जातिना अंकनो सर्वाळो करतां त्रण आवेछे तेटली जाति थाय.

१	मात्रानी	१	जाति
२	,,	२	,,
३	,,	१+२=३	,,
४	,,	२+३=५	,,

एम उपरनो अकेको अंक मूकी दइने नीचेना बब्बे अंकनो सर्वाळो करता जतां जे अंक आवे

तेटली जाति, तेनी हारमां मात्रानो जे अंक होय, तेटली मात्रानी थाय. ए प्रमाणे १ थी ४८ मात्रा लगणनी रूप संख्याओ लाव्या तो नीचेनां बिम्बमां जणाव्या प्रमाणे आवी.

जाति संख्याबिम्ब.

केटली मात्रा	केटली जाति वा छंदो बने	केटली मात्रा	केटली जाति वा छंदो बने	केटली मात्रा	केटली जाति वा छंदो बने
१	१	१७	२५८४	३३	५७०२८८७
२	२	१८	४१८१	३४	९२२७४६५
३	३	१९	६७६५	३५	१४९३०३५२
४	५	२०	१०९४६	३६	२४१५७८१७
५	८	२१	१७७११	३७	३९०८८१६९
६	१३	२२	२८६५७	३८	६३२४५९८६
७	२१	२३	४६३६८	३९	१०२३३४१५५
८	३४	२४	७५०२५	४०	१६५५८०१४१
९	५५	२५	१२१३९३	४१	२६७९१४२९६
१०	८९	२६	१९६४१८	४२	४३३४९४४३७
११	१४४	२७	३१७८११	४३	७०१४०८७३३
१२	२३३	२८	५१४२२९	४४	११३४९०३१७०
१३	३७७	२९	८३२०४०	४५	१८३६३११९०३
१४	६१०	३०	१३४६२६९	४६	२९७१२१५०७३
१५	९८७	३१	२१७८३०९	४७	४८०७५२६९७६
१६	१५९७	३२	३५२४५७८	४८	७७७८७४२०४९

बीजीरीति.

गमे ते बेकी मात्राना अंकनां रूप केटलां नीकळे, ए काहाडवुं होय तो, ते बेकी अंकना बरोबर बे अर्द्ध करवा. तेमांना एक

अर्द्धमांथी एक बाद करीने, बाकी रेहे, ते संख्यानां रूप जेटलां बनतां होय तेनो वर्ग करतां जे अंक आवे, तेमां आखा अर्द्धनी संख्यानां जे रूप थाय तेनो वर्ग करीने मेळवतां जे सर्वाळो आवे तेटलां रूप ते बेकी मात्रानां थाय एम समजवुं.

जेमके छ मात्रानां तेर रूप थायछे, ते आ संक्षेप रीतिये काहाडवां होय तो छ बेकीना अंक छे. तेनां बे अर्द्धियां त्रण त्रणनां थया, तेमांथी, एक अर्द्धमांथी एक बाद करतां बाकी बे रेहेछे. ने बे मात्रानां रूप बे थायछे तेनो वर्ग, चार, तेमां आखुं राखेलुं अर्द्ध त्रण छे तेनां रूप त्रण थाय तेनो वर्ग करतां नव आवेछे, ते मेळवतां छ मात्रानां रूप (४+९=१३) तेर थाय.

बार मात्रानां संक्षेप रीतिये रूप काहाडवां होय तो—

६ अने ६ एवा बे विभाग थाय. तेमां एक अर्द्ध ६ नु आखुं रह्युं अने बीजा अर्द्धमांथी एक बाद करतां बाकी ५ रेहेछे. एटले ६ अने ५ एवा बे भाग थया.

छ मात्रानां १३ रूप तेनो वर्ग=१६९

पांच मात्रानां ८ ,, तेनो वर्ग= ६४

∴ बार मात्रानां कुल ,, = २३३

चौद मात्रानां रूप काहाडवां होय तो ७+(७−१)=६ थाय.

सात मात्रानां रूप $२१^२$ =४४१

छ मात्रानां ,, $१३^२$ =१६९

∴ चौदमात्रानांकुल ,, =६१०

सोळ मात्रानां रूप काहाडवां होय तो ८+(८−१)=७ थाय.

आठ मात्राना रूप $३४^{२}$=११५६
सात मात्रानां „ $२१^{२}$= ४४१
∴ सोळमात्रानांकुल „ =१५९७

वीश मात्रानां रूप काहाडवां होय तो १०+(१०−१)=९थाय.

दश मात्रानां रूप $८९^{२}$=७९२१
नव मात्राना „ $५५^{२}$=३०२५
∴ वीश मात्रानां कुल „ =१०,९४६

चोवीश मात्रानां रूप काहाडवां होय तो १२+(१२−१)=११थाय.

बार मात्रामा रूप $२३३^{२}$=५४,२८९
अगियार मात्रानां „ $१४४^{२}$=२०,७३६
∴ चोवीश मात्रानाकुल „ =७५,०२५

अडतालीश मा० रूप काहाडवा होय तो २४+(२४-१)=२३थाय.

चोवीश मात्राना रूप $७५,०२५^{२}$=५,६२,८७,५०,६२५
त्रेवीश मात्रानां „ $४६,३६८^{२}$=२,१४,९९,९१,४२४.
∴ अडतालीश मा० कुल „ =७,७७,८७,४२,०४९

पण एकी संख्यानी अमुक मात्रानां केटलां रूप थाय एम काहाडवुं होय तो, जे आकडानां रूप काहाडवां होय तेनी सम संख्या करवाने एक अंक ओछो करी तेनु अर्ध करी ते अर्धमा एक उमेरता जे अक थाय; ते प्रथम भाग समजवो; अने ते अर्धमांथी बे बाद करता जे संख्या आवे ते बीजो भाग समजवो. आ प्रमाणे थयेला बने भागनो जे सर्वाळो थाय ते जे अकना रूप काहाडवां होय तेथी एक अक ओछो थवो जोइये. एटले ११ मात्राना रूप काहाडवा होय तो तेना विभाग ११−१=१० तेनु अर्ध ५+१=६ प्रथम भाग, अने (६−२)=४

बीजो भाग. एम भाग पड्या. ते बन्नेनो सर्वाळो १० थयो. (एटले अगियारथी एक ओछो थयो) तेर मात्राना रूप काहाडवाने तेना भाग पाडवा होय तो (१३-१-२)=६+१=७ प्रथम भाग, अने ७-२=५ बीजो भाग. पंदर मात्राना रूप काहाडवाने तेना भाग पाडवा होय तो १५-१-२=७+१=८ प्रथम भाग, अने ८-२=६ बीजो भाग थाय.

ए प्रमाणे जेटली एकी मात्रानी संख्याना रूप काहाडवां होय तेटली मात्राना अंकना बे भाग उपर कहेली रीते पाडी बन्ने भागोना वर्गनी बादबाकी करवी, एटले बाकीनां अंक जेटलां रूप कहेली मात्रानी संख्याना थशे.

(१) अगियार मात्रानां रूप काहाडवां छे, तो अगियार मात्राना विभाग ६ अने ५ उपरनी रीते थाय. तेथी छ मात्राना १३ रूप तेनो वर्ग १६९. चार मात्रानां रूप पांच तेनो वर्ग=२५. बन्ने वर्गनी बादबाकी करता अगियार मात्रानां रूप १४४ थायछे.

(२) तेर मात्रानां रूप काहाडवां होय तो भाग ७+५थायछे.

७ मात्रानां „ २१² =४४१

५ मात्रानां „ ८² = ६४

तेर मात्रानां „ =३७७

(३) पंदर मात्रानां „ काहाडवां होय तो १५-१-२+१=८ एक भाग ८-२=६ बीजो भाग.

८ मात्रानां रूप ३४² =११५६

६ मात्रानां „ १३² = १६९

पंदर मात्रानां „ = ९८७

(४) सत्तर मात्रानां रूप काहाडवां होय तो १७-१-२+१ =९ अने ९-२=७.

९ मात्रानां „ ५५² =३०२५

६ मात्रानां „ २१² =-४४१

सत्तर मात्रानां „ =२५८४

प्रस्तारनुं कारण.

अमुक मात्रानी केटली जाति बने, ए संख्याथी जाण्युं; पण ते बधी जाति किया किया केवा रूपनी थाय, ते जाणवानी जो इच्छा थाय तो ते प्रस्तारथी नीकळेछे.

मात्राजातिप्रस्तार.

शिलाचार्यमत.

जेटली मात्रानो प्रस्तार करवो होय तेटली मात्राना अर्द्धनी संख्या जेटलां गुरु चिन्ह राखवां अने शेष मात्रा रहे तो तेने प्रारंभमां लघु चिन्हथी दर्शाववी. एटले २, ४, ६, ८ ए बेकी एटले सम मात्रानो प्रस्तार करवो होय तो, बे मात्रानो एक गुरु; चार मात्राना बे गुरु, छ मात्राना त्रण गुरु, आठना चार गुरु, एम मूकवा अने १, ३, ५, ७ आदि विषम अथवा एकी मात्रानो प्रस्तार करवो होय तो प्रथम एक लघु मूकी पछी बाकी रहे तेटली मात्राना जेटला गुरु बनी शके एटला मूकवा. जेमके, सात मात्रानो प्रस्तार काहाडवो होय तो प्रथम एक लघु लखी पछी छ मात्राना ३ गुरु थाय ते मूकवा. ए प्रमाणे प्रस्तारनुं पेहेलुं रूप थाय ते मूकवुं. पछी बीजुं रूप काहाडवानो नियम

एवो छे के, डाबा हाथ भणीथी गणतां, उपरं जे प्रथम गुरु होय ते नीचे लघु मूकवो अने पछी, पेहेला रूपमां जे प्रमाणे होय ते प्रमाणे ज जमणी बाजु मूकी देवुं.

ए प्रमाणे प्रत्येक रूपमां डाबी बाजुथी गणतां, जे गुरु प्रथमनो होय तेनी नीचे लघु लखी, उपरनां रूप प्रमाणे बीजां चिन्ह मांडी जवां. एम छेवट सर्व लघु आवी रेहे त्यांलगी प्रस्तार करी जवो. जेटली मात्रानो प्रस्तार करवो होय तेटली मात्रा प्रत्येक रूपनी थवी जोइये. तेमां जो एक मात्रा घटे तो एक लघु, बे घटे तो गुरु, अने बेथी वधारे घटे तो जेटला गुरु करी शकाय तेटला प्रथम मूकी पछीथी वधेली मात्रानो लघु मूकी मात्रा पूरी करी देवी.

उदाहरण—सात मात्रानो प्रस्तार करवो होय तो, ए विषम अंक छे माटे, प्रथम एक लघु लखवो, अने पछी बाकी जे छ मात्रा रही तेना गुरु त्रण थया ते मूकवा, एटले प्रथम रूप आवुं ।SSS थयुं.

।	S	S	S	१
S	।	S	S	२
।।		S	S	३
S	S	।	S	४

ते उपरथी बीजुं रूप काहाडवाने, प्रारंभथी गणतां, प्रथम लघु छे ते स्थान वर्ज्य करीने बीजो गुरु छे ते नीचे लघु मांडी प्रथम ओळमां बाकीनां गुरुचिन्ह छे ते उतारी देवां, एटले बे गुरु छे माटे बे गुरु मूक्या. हवे ए नवुं रुप ।SS थयुं. तेनी मात्रा गणी तो, पांच थइ, पण प्रस्तार ७ मात्रानो छे, माटे बे मात्रा खूटी तेनो एक गुरु डाबी बाजुए प्रारंभ स्थाने

मूकी ७ मात्रा पूरी करी दीधी, एटले बीजुं रुप SISS तैयार थयुं. पछी ते उपरथी त्रीजुं रुप काहाडवाने, बीजा रुपमां सौथी प्रथम स्थाने गुरु चिन्ह छे ते तळे लघु चिन्ह करवु अने त्यार-पछीनां स्थानकोमां एक लघु अने बे गुरु छे ते चडावी देता तेनी छ मात्रा थायछे, पण प्रस्तार सात मात्रानो छे, माटे खूटती एक मात्रा डाबी बाजुए एक लघु चिन्ह उमेरी पूरी करवी एटले त्रीजु रूप IIISS पूर्ण थयुं.

चोथुं रूप काहाडवा माटे त्रीजा रूपना पेहेला, बीजा तथा त्रीजा स्थानमां लघु चिन्ह छे ते वर्ज्य करी चोथा स्थानमां गुरु छे ते नीचे लघु मूकवो. अने पछी एक गुरु चिन्ह बाकी रह्यु छे ते चडावी देवुं, एटले उपजेल रूपनी मात्रा त्रण थइ, पण सात मात्रानो प्रस्तार करवानो छे एटले चार मात्रा खूटी, तेना बे गुरु चिन्ह मूकवां एटले चोथुं रूप SSIS एवु थयुं. ए प्रमाणे सर्व लघु छेवट आवे त्यां सुधी प्रस्तार काहाडवो. गमे तेटली मात्रानो प्रस्तार एवी रीते नीकळी शकेछे. अमुक मात्रानां केटलां रूप थइ शके ते काहाडवाने संख्यानो प्रकार उपयोगमां आवेछे, अने रूप केवां केवा थायछे ते **प्रस्तारथी** नीकळेछे.

मात्राप्रस्तारनां केटलाक छूटक उदाहरणो आगळ आपवामां आव्यां छे पण एकथी सात मात्रा सुधीनां नीचे आपवामां आवेछे.

માત્રા પ્રસ્તારનાં ઉદાહરણ.

૧	૨	૩	૪	૫	માત્રા.
।	ऽ	।ऽ	ऽऽ	।ऽऽ	૧
	।।	ऽ।	।।ऽ	ऽ।ऽ	૨
		।।।	।ऽ।	।।।ऽ	૩
			ऽ।।	ऽऽ।	૪
			।।।।	।।ऽ।	૫
				।ऽ।।	૬
				ऽ।।।	૭
				।।।।।	૮

છ માત્રાનો પ્રસ્તાર.

ऽऽऽ	૧	।।।।ऽ	૫	ऽऽ।।	૯
।।ऽऽ	૨	।ऽऽ।	૬	।।ऽ।।	૧૦
।ऽ।ऽ	૩	ऽ।ऽ।	૭	।ऽ।।।	૧૧
ऽ।।ऽ	૪	।।।ऽ।	૮	ऽ।।।।	૧૨
				।।।।।।	૧૩

सात मात्रानो प्रस्तार.

ISSS १	IIIIIS ८	SISII १५
SISS २	SSSI ९	IIISII १६
IIISS ३	IISSI १०	SSIII १७
SSIS ४	ISISI ११	IISIII १८
IISIS ५	SIISI १२	ISIIII १९
ISIIS ६	IIIISI १३	SIIIII २०
SIIIS ७	ISSII १४	IIIIIII २१

२ अगस्त्यमतप्रस्तार.

प्रथम इष्ट मात्राना जेटला लघु चिह्न तळिये मूकवा; पछी डाबी बाजुनी आदि निकटकल[१] उपर गुरु चिह्न मूकवु अने तेनी जोडे जमणी बाजुए नीचेना ज बाकी रहेला चिह्न चडावी देवां; आम करतां तेमा जेटली मात्रा खूटे, तेटला लघु चिह्न डाबी बाजुए मूकी ते रूप पूरुं करवुं. चडता जवाना क्रमे, आ प्रमाणे एक रुपमांथी बीजुं रुप बनावता जइ, सर्व गुरु आवे त्यां लगण, क्रिया करते जवी. तेमा संख्याक्रम उपरथी लेवो.

प्रश्न. पाच मात्रानो प्रस्तार करो.

पांच मात्रानो प्रस्तार करवानो छे, तेना आठ रूप थायछे माटे प्रथम पांच लघु चिह्न, तळिये आठमा रूपने ठेकाणे मूक्यां. तेनी डाबी बाजुनी आदिनिकटकल ।। उपरे गुरु मूकी तेनी जोडे जमणी बाजुए बाकी रहेला त्रण लघु ।।। चिह्न चडावी दीधां. अने डाबी बाजुए मात्रा खूटती नथी माटे काइ पण लघु

१ रुपमाना पेहेला लघु अथवा गुरुथी आरमी बीजो लघु आवे त्य लगणनु रुप ते **आदिनिकटकल.**

चिह्न मूकवानुं रेहेतुं नथी एटले सातमुं रूप ऽ।।। थयुं. तेमां आदिनिकटकल ऽ। थइ, तेना पर छठुं रूप करवा माटे ऽ मूक्यो. तेनी जोडे जमणी बाजुए नीचेना सातमा रूपमां (।।) छे ते मूक्या, तो मात्रानो सर्वाळो करता चार मात्रा थइ अने प्रस्तार पाच मात्रानो छे तेथी एक मात्रा खूटी ते बदले (।) एक लघु तेनी डाबी बाजुए मूक्यो, तो त्रीजु रूप ।ऽ।। थयुं. ए प्रमाणे सर्व रूप काहाडया, तो तेनुं प्रस्तारबिम्ब नीचे प्रमाणे थयुं.

पांच मात्रानाप्रस्तारनुं बिम्ब.

संख्या.		प्रस्तारनारूप.	आदिनिकटकल. *
१	=	। ऽ ऽ	
२	=	ऽ । ऽ	ऽ ।, ऽ
३	=	। । । ऽ	। ।, । ऽ
४	=	ऽ ऽ ।	ऽ ऽ ।,
५	=	। । ऽ ।	। ।, ऽ ।
६	=	। ऽ । ।	। ऽ ।, ।
७	=	ऽ । । ।	ऽ ।, । ।
८	=	। । । । ।	। ।, । । ।

३ पिंगलमत स्थानविपरीत अथवा भामहमत.

प्रथम गुरु चिह्न मूकी पिंगलमतना सामान्य प्रस्तार विधिये स्थानमां विपर्य करी आ प्रस्तार करवो. अर्थात् जमणी बाजुना पेहेला गुरुतळे लघु मुकवो, डाबी भणीना बाकीनां उपरनांज चिह्न डाबी बाजुए मूकवां, अने जमणी भणी खूटती मात्रा

* नीचेना रूपमा डाबी सर्णाथी विरामचिह्न पर्यन्तना चिह्न आदिनिकटकल छे.

गुरु लघुथी पूरी करतां भइ सर्व लघु आवे त्यां लगण उत्तरोत्तर रूप काढते जवां.

प्रश्न. चार मात्रानो प्रस्तार करो.

चार मात्रानो प्रस्तार करवानो छे माटे पेहेला रूपमां चार मात्राना सर्व गुरुनुं रूप SS थायछे ते मूक्युं तेमांथी बीजुं रूप काहाडवुं छे, ते माटे जमणी भणीना पेहेला गुरु तळे लघु मूक्यो, ने डावी बाजुनुं S चिह्न कायम राखतां एक मात्रा खूटी, माटे जमणी भणी । उमेर्यो, तो बीजुं रूप S।। थयु तेमाथी त्रीजुं रूप ।S। थयुं. त्रीजामांथी चोथुं रूप ।। S थयु अने चोथामांथी पांचमुं रूप ।।।। थयुं. सर्व लघुनुं रूप आवी गयुं माटे प्रस्तार पूरो थयो. जुओ नीचेनुं प्रस्तारबिम्ब.

चार मात्रानो प्रस्तार.

संख्या.	रूप.
१	SS
२	S।।
३	।S।
४	।।S
५	।।।।

४ अगस्त्यमत स्थानविपरीत.

इष्ट मात्रा जेटलां सर्व लघुनां चिह्न प्रथम मूकी चडतां जवानां क्रमे, जमणी भणीनी आदिनिकटकल उपर गुरु चिह्न मूकवुं, डावी भणीनां बाकीना ज चिह्न डावी बाजुए मूकवां. अने जमणी भणी खूटती मात्रा माटे लघु चिह्न मूकी सर्व गुरु आवे त्यां लगण नीचेनां रूपपरथी उपरनुं रूप लावता जवुं.

प्रश्न. चार मात्रानो अगस्त्यमत स्थानविपरीत प्रस्तार रीतिए प्रस्तार करो.

इष्ट मात्रा चार छे, माटे पेहेलां चार लघु चिह्न ।।।। मूक्यां. एमांथी बीजुं रूप लाववु छे, तेमां जमणी भणी आदिनिकटकल ।। छे, तेनापर गुरु मूक्यो अने डाबी भणीनां बाकीनां चिह्न ।। मूक्या, तो बीजुं रूप ।।ऽ थयुं तेमा आदिनिकटकल ।ऽ थइ, तेनापर गुरु मूकी, डाबी बाजुनुं चिह्न । डाबी तरफ अने जमणी भणी एक मात्रा खूटी माटे एक लघु चिह्न मूक्यु; तो ते रूप ।ऽ। थयु. ते पछीनुं रूप ऽ।। थयुं. अने छेल्लुं रूप ऽऽ थयुं. तेनी संख्यानो क्रम सर्व गुरुथी गणाशे, माटे ते क्रमे ए प्रस्तार नीचे प्रमाणे थयो:—

संख्या.		रूप.	चार मात्रानो प्रस्तार.
१	=	ऽ ऽ	
२	=	ऽ । ।	
३	=	। ऽ ।	
४	=	। । ऽ	
५	=	। । । ।	

५ पिंगलमतसंख्याविपरीतप्रस्तार.

इष्ट मात्रा जेटलां लघुचिह्न पेहेलां मूकी अगस्त्यमतना सामान्य प्रस्तारना विधिए अवरोहक्रमे सर्व गुरु आवे त्यां-लगण प्रस्तार करवो अने रूपसंख्या सर्व लघुनां रूपथी आरंभी गणवी.

प्रश्न. पिंगलमत संख्याविपरीत प्रस्तार विधिए चार मात्रा-नो प्रस्तार करो.

चार मात्रानो प्रस्तार करवानो छे, माटे चार लघुनुं पेहेलुं रूप ।।।। (४ लघुनुं) मूक्यु. तेमां डाबी भणी आदिनिकटकल ।। छे तेना तळे गुरु मूकी. जमणी भणी बाकीनां रूप मूकी अने

डाबी बाजुए खूटती मात्राने माटे लघु चिह्न मूक्यां, तो बीजुं रूप ऽ ।। थयुं. बीजामाथी त्रीजुं रूप ।ऽ। थयुं. त्रीजामांथी चोथुं रूप ।।ऽ थयु अने तेमाथी पाचमुं रूप ऽऽ आव्युं. तेनी संख्यानो क्रम सर्व लघुथी गणता ते प्रस्तार नीचे प्रमाणे आव्यो.

रूप.		संख्या.
।।।।	=	१
ऽ ।।	=	२
।ऽ।	=	३
।। ऽ	=	४
ऽ ऽ	=	५

६ अगस्त्यमत संख्याविपरीत.

इष्टमात्रानुं सर्व गुरुनुं रूप पेहेलु मूकी आरोहक्रमे एटले नीचेथी उपर चढता जवाना क्रमे पिंगलमत सामान्यप्रस्तार विधिए सर्व लघुनुं रूप आवे त्यांलगण प्रस्तार करवो. संख्या-क्रम सर्व लघुथी आरभवो.

प्रश्न. चार मात्रानो अगस्त्यमत संख्याविपरीत प्रस्तारनी रीतिए प्रस्तार करो.

चार मात्रानो प्रस्तार करवानो छे माटे पेहेलां, तेनुं सर्व गुरुनुं रूप ऽऽ थाय छे ते मूक्युं, पछी चढता जवाना क्रमे डाबी भणीना पेहेला गुरु उपर लघु मूक्यो, जमणी भणीनु चिह्न ऽ कायम राख्युं अने डाबी भणी एक मात्रा खूटी, माटे एक लघु उमेर्यो, तो ते उपरनुं रूप ।।ऽ थयु. तेमाथी ते उपरनु रूप एज रीते काहाड्युं तो ।ऽ। आव्युं. तेमांथी ते उपरनुं रूप काहाड्युं, तो ऽ।। आव्युं; ने तेमांथी तेना उपरनुं रूप काहाड्यु

तो ते ।।।। आव्युं. सर्व लघुनां रूपने पेहेलुं रूप गणी प्रस्तार-क्रम गोठव्यो तो ते नीचे प्रमाणे आव्यो.

१ ।।।।

२ ऽ।।

३ ।ऽ।

४ ।।ऽ

५ ऽऽ

७ पिंगलमत संख्यास्थानविपरीत अथवा उभय विपरीत प्रस्तार.

इष्ट मात्रा जेटलां लघु चिह्न पेहेला मूकी, उतरता जवाना क्रमे, अगस्त्यमतस्थानविपरीत प्रस्तार विधिए सर्व गुरुनुं रूप आवे त्यां लगण उपरनां रूपपरथी बीजां रूप काहाडवां. संख्यानो क्रम सर्व लघुना रूपथी गणवो.

प्रश्न. चार मात्रानो पिंगलमत उभयविपरीतप्रस्तार विधिए प्रस्तार करो.

चार मात्रानो प्रस्तार करवानो छे, माटे पेहेलां चार लघु चिह्न ।।।। मूक्यां. बीजुं रूप काहाडवा माटे जमणी भणीनी आदि-निकटकल ।। तळे गुरु मूक्यो. अने तेनी जोडे पेहेला रूपनां बाकीना बे लघु चिह्न डावी भणी मूक्यां, अने जमणी बाजुए खूटती मात्रा पूरी करी, तो ते पछीनुं बीजुं रूप ।।ऽ थयुं. तेमाथी त्रीजुं रूप ।ऽ। आ आव्युं. एमांथी चोथुं ऽ।। रूप आव्युं अने तेनी आदि निकटकल ।। तळे गुरु मूकी जमणी भणी खूटती मात्रानुं चिह्न मूक्युं ने डावी तरफनुं चिह्न एज उतार्युं तो ते रूप ऽऽ थयुं. ए रूप कह्या प्रमाणे क्रममां गोठव्यां, तो ते निम्न नीचे प्रमाणे थयुं.

संख्या.		प्रस्ताररूप.
१	=	||||
२	=	||ऽ
३	=	|ऽ|
४	=	ऽ||
५	=	ऽऽ

८ अगस्त्यमत संख्यास्थानविपरीत अथवा उभय विपरीतप्रस्तार.

इष्ट मात्रानुं सर्व गुरुनुं रूप उत्क्रमे पेहेलुं मूकवुं; बाद भामहमत प्रस्तार विधिए नीचे उतरवाने बदले चढते जवाना क्रमे प्रस्तार करवो. संख्या सर्व लघुना रूपथी गणवी.

प्रश्न. अगस्त्यमत संख्या अने स्थान विपरीत प्रस्तार विधिये चार मात्रानो प्रस्तार करो.

इष्ट मात्रा चार छे तेनुं सर्व गुरुनुं रूपऽऽ छे ते प्रथम लख्युं. ते उपरथी भामहमत प्रमाणे जमणी बाजुना पेहेला गुरु उपर लघु मूकी डाबी बाजुनां रूप एज मूक्या ने जमणी तरफ खूटती मात्रा गुरुलघुथी पूरी करी, तो ते रूप ऽ|| आव्युं. तेमांथी ते उपरनुं रूप |ऽ| आव्युं अने छेल्ले सर्व लघुनुं रूप |||| आव्युं. बधां रूप कथित क्रमे गोठव्या तो प्रस्तारबिंब नीचे प्रमाणे आव्युं.

संख्या.		प्रस्ताररूप.
१	=	||||
२	=	||ऽ
३	=	|ऽ|
४	=	ऽ||
५	=	ऽऽ

चार मात्रानो अष्टविध प्रस्तार.

	क्रमप्रस्तार.				उत्क्रमप्रस्तार.			
रूप सख्या क्रम.	पिंगलमत.	अगस्त्यमत.	भामहमत-पिंगलमत स्थानविपरीत	अगस्त्यमत स्थानविपरीत	पिंगलमत सख्याविपरीत	अगस्त्यमत. सख्याविपरीत	पिंगलमत संख्यास्थान-विपरीत.	अगस्त्यमत सख्यास्थान विपरीत.
१	S S	S S	S S	S S	II II	II II	II II	II II
२	I I S	I I S	S II	S II	S II	S II	II S	II S
३	I S I	I S I	I S I	I S I	I S I	I S I	I S I	I S I
४	S I I	S I I	II S	II S	II S	II S	S II	S II
५	I I I I	I I I I	II II	II II	S S	S S	S S	S S

मात्राप्रस्तारसूची.

मात्राप्रस्तार करतां तेमां नीचे लखेला प्र-
रूप थायछे, ते बतावबा माटे सूची करवामां आवेछे:—

जेमके, आदि लघु एटले लादि. (ल आदि.)
अन्त लघु एटले लान्त. (ल अन्त)
आदि गुरु एटले गादि. (ग आदि.)
अंत गुरु एटले गान्त. (ग अन्त.)
आदि अने अन्त लघु एटले लादिलान्त.
आदि लघु अने अन्त गुरु एटले लादिगान्त.
आदि गुरु अने अन्त लघु एटले गादिलान्त.
आदि अने अन्त गुरु एटले गादिगान्त.

जेटली मात्राना प्रस्तारनी सूची करवी होय तटली मात्रा सुधीना एक* आदि जेटला भेद थता होय ते संख्या क्रमवार खाना पाडी माडी जवी, पछी छेल्ला खंडमां कुल रूप-संख्या, तेथी डाबा बीजा खंडमा लादि अने लान्त. त्रीजामां गादि अने गान्त तथा लादिलान्त; चोथामा गादिलान्त अने लादिगान्त; पाचमामा गादिगान्त, ए प्रमाणे रूपसंख्या जाणी लेवी. जेमके, सात मात्राना प्रस्तारमा सूची काहाडवा माटे तेनी रूपसंख्या करी, तो १, २, ३, ५, ८, १३, २१ थायछे. तेमा कुल रूप संख्या २१ थायछे, ते छेल्ला खानामां मूकवामां आवी. (जुवो सातमात्रानु सूचीबिम्ब पृ. २४)

१३ भेद लादिना अने तेटलाज लान्तना छे; माटे तेनाथी डाबी बाजुना खानामा १३ नो अंक छे.

---

* १, २, ३, ५ इत्यादि.

८ भेद गादिना अने तेटलाज गान्तना छे, माटे ते आंकडो त्रीजा खंडमां आव्यो छे.

८ भेद लादिलान्तना थायछे माटे ते पण त्रीजा खंडमां जणाववामां आव्या छे.

५ भेद लादिगान्तना अने तेटलाज गादिलान्तना छे. ते बताववाने चोथा खंडमा मूकवामा आव्या छे.

सूचीस्वरूप.

	लादि लान्त.	भेद संख्या
२ मात्रानी सूची.	१	२

(१) S
(२) ||

	गादि गान्त. लादिलान्त.	लादि लान्त	भेद संख्या
३ मात्रानी सूची.	१	२	३

(१) | S
(२) S |
(३) |||

	लादिगान्त. गादिलान्त	गादि. गान्त लादि लान्त	लादि लान्त	भेद संख्या
४ मात्रानी सूची.	१	२	३	५

१ S S
२ || S
३ |S|
४ S ||
५ || ||

	गादिगान्त.	लादिगान्त गादिलान्त.	गादि गान्त लादिलान्त	लादि लान्त	भेद संख्या.
५ मात्रानी सूची	१	२	३	१	८

संख्या.	१	२	३	४	५	६	७	८
छंद	ISS	SIS	IIIS	SSI	IISI	ISII	SIII	IIIII

		गादि-गान्त	लादिगान्त. गादिलान्त	गादि गान्त लादिलान्त	लादि. लान्त	भेद. संख्या
६ मात्रानी सूची.	१	२	३	५	८	१३

संख्या.	१	२	३	४	५	६	७	८
रूप.	SSS	IISS	ISIS	SIIS	IIIIS	ISSI	SISI	IIISI

९	१०	११	१२	१३
SSII	IISII	ISIII	SIIII	IIIIII

			गादि-गान्त.	लादिगान्त गादिलान्त.	गादि गान्त. लादिलान्त	लादि. लान्त.	भेद. संख्या
७ मात्रानी सूची	१	२	३	५	८	१३	२१

सात मात्रानो प्रस्तार.

१ I S S S ८ II II I S १५ S I S II
२ S I S S ९ S S S I १६ II I S II
३ II I S S १० II S S I १७ S S II I
४ S S I S ११ I S I S I १८ II S II I
५ II S I S १२ S II S I १९ I S II II
६ I S II S १३ II II S I २० S I II II
७ S II I S १४ I S S II २१ I II II II

१६ IIISIIS　१७ SSIIIS　१८ IISIIIS
१९ ISIIIIS　२० SIIIIIS　२१ IIIIIIIS
२२ SSSSI　२३ IISSSI　२४ ISISSI
२५ SIISSI　२६ IIIISSI　२७ ISSISI
२८ SISISI　२९ IIISISI　३० SSIISI
३१ IISIISI　३२ ISIIISI　३३ SIIIISI
३४ IIIIIISI　३५ ISSSII　३६ SISSII
३७ IIISSII　३८ SSISII　३९ IISISII
४० ISIISII　४१ SIIISII　४२ IIIIISII
४३ SSSIII　४४ IISSIII　४५ ISISIII
४६ SIISIII　४७ IIIISIII　४८ ISSIIII
४९ SISIIII　५० IIISIIII　५१ SSIIIII
५२ IISIIIII　५३ ISIIIIII　५४ SIIIIIII
५५ IIIIIIIII

सूचीनी बीजी सुगम रीति.

जेटली मात्राना प्रस्तारनी सूची काहाडवी होय तेटली मात्राना अकमांथी क्रमे ०, १, २, ३, ४ अंक बाद करवा; ने जे बाकी रेहे ते अंक जूदा जूदा मांडवा. शून्य बाद करतां जे शेष रेहे तेटली मात्रानी भेदसंख्या ते इष्ट मात्रानी भेद-संख्या थायछे. एक बाद करतां जे शेष रेहे तेटली मात्राना भेदाङ्क जेटला लादिनां अने लान्तनां रूप थायछे. बे बाद करतां शेष रेहे तेटली मात्राना भेदाङ्क जेटला गादि, गान्त अने लादिलान्त एवां त्रण प्रकारना रूप थायछे. त्रण बाद करना जे शेष रेहे नेटली मात्राना भेदाङ्क जेटलां गादिलान्त

अने लादिगान्तनां रूप थायछे. चार बाद करतां जे शेष रहे, तेटली मात्राना भेदाङ्क जेटलां गादिगान्तनां रूप थायछे. जेमके, ९ मात्राना प्रस्तारनी सूची काहाडवानी छे तो—

९–०=९ शेषाङ्कनी भेदसंख्या ५५ थायछे, माटे इष्ट मात्रा ९ नी भेद संख्या ५५ थइ.

९–१=८ शेषाङ्कनी भेदसंख्या ३४ थायछे, माटे तेमां तेटलां रूप लादि अने लान्तनां छे.

९–२=७ तेनी रूप संख्या २१ छे माटे तेटलां रूप गादि अने गान्त तथा लादिलान्तनां आवेछे.

९–३=६ तेनी रूप संख्या १३ आवी, माटे गादिलान्त अने लादिगान्तनां रूप १३ थायछे

९–४=५ तेनी रूप संख्या ८ छे, माटे गादिगान्तनां रूप ८ छे.

पाताल[1] प्रक्रिया

मात्रा मेळनी जातिना भेद अर्थात् तेना केटलां रूप थायछे तथा तेमां लघु गुरु केटला आवेछे अने सर्वे मात्रा केटली थायछे अथवा सर्ववर्ण (पिंड) केटला थायछे ते जाणवानी क्रियाने पाताल केहेछे.

जेटली मात्रा सुधीनुं पाताल बिम्ब करवु होय तेटी एक धवार, एम उभी लीटियो खेचवी, अने चार लीटी आडी खेंचवी; के जेथी उभा खंड त्रण थाय. पछी डाबा हाथ भणीथी चालता, पेहेली पंक्तिना प्रथम खडमां एक, बीजामां बे, त्रीजा-

[1] मर्कटीमां आनो समावेश थइ जायछे, छता पूर्वाचार्योए ते क्रिया जूदी लीधल होवा असे पण आमा केवळ तन्त्र रुपे दाखल करेला छे

मां त्रण आदि चउना अंक अनुक्रमे लखवा. तेनी नीचेनी बीजी पंक्तिना खंडमां भेद संख्याना अंक मूकी देवा. अने ते तळेनी त्रीजी पंक्तिना खंडमां पेहेलामां एक अने बीजामां बे मूकवा. पछीना घर भरवा माटे आ नियम छे. के जे घर भरवानुं होय, तेनी डाबी बाजूए पासेना बे घरमा जे अंक होय, ते तथा जे घर भरवानुं होय तेनो डाबो कोणाक बीजी पंक्तिमा होय ते, ए त्रण घरना अंकनो जे सरवाळो आवे ते अंक खाली खंडमां भरवो. जेमके, त्रीजी पंक्तिनुं त्रीजुं घर भरवा माटे ते पेहेलांना डाबी बाजुना बीजा बे घरमां १, तथा २, छे ते अने खाली घरनी बीजी पंक्तिमा डाबो कोणाक बे छे, ए त्रण घरनो सरवाळो (२+१+२) = ५ थयो ते त्रीजा घरमा मूकवो

चोथा घरमां (५+२+३) = १०.

पांचमा घरमा (१०+५+५) = २०

छठ्ठा घरमा (२०+१०+८) = ३८.

सातमा घरमा (३८+२०+१३) = ७१.

आठमा घरमा (७१+३८+२१) = १३०.

नवमा घरमां (१३०+७१+३४+)=२३५.

दशमा घरमां (२३५+१३०+५५)=४२०-

अगियारमा घरमा (४२०+२३५+८९)=७४४.

बारमा घरमा (७४४+४२०+१४४)= १३०८.

ए प्रमाणे त्रीजी पंक्ति भरवी आवल संख्याने पंक्तिमां भरतां बार मात्रानुं पाताळबिम्ब नीचे प्रमाणे आव्युं.

पातालबिम्ब.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९	१४४	२३३
१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४२०	७४४	१३०८

आ बिम्ब उपरथी नीचेनी बाबतो जाणवामां आवेछे पेहेली पंक्ति मात्राना अंक बतावेछे, बीजी पंक्ति प्रत्येक मात्रानी मळ्याना कुल केटला रूप थायछे ते बतावेछे, अने त्रीजी पंक्ति तेना प्रस्तारमां केटला लघु, केटला गुरु. बधी मात्रा केटली तथा बधा वर्ण केटला अने तेनो पिंड केटलो होयछे ते बतावेछे. जेमके, छ मात्रानी जाति संबंधी उपर लखी हकीकत काहाडवी होय तो, पेहेली पंक्तिना छठ्ठा खंड तळे बीजी पंक्तिमां १३नो अंक छे, तो छ मात्रानी बधी मळीने १३ जाति थायछे, अने १३ना खंडनी नीचे त्रीजी पंक्तिमा ३८ नो अंक छे तो छ मात्रानी बधी जातिमां ३८ लघु आवे एम समजवुं.

आडत्रीशनी पूर्वे डाबी बाजुए वीशनो अंक छे, तो छ मात्रानी जातिमां २० गुरु छे, एटले ३८ लघुनी ३८ मात्रा तथा वीश गुरुनी ४० मात्रा थइ ते बधी मात्रा ७८ छे.

३८ लघु अने २० गुरु ए बन्नेनो सर्वाळो गणतां ५८, थायछे तेटला छ मात्रानी जातिमां एकंदर वर्ण छे.

बधी मात्रानुं जे अर्द्ध आवे ते पिंड केहेवायछे. अहिं ७८ कुल मात्रा छे तेना अर्द्धनी ३९ मात्रा थइ तेटलानो पिंड केहेवाय. ए प्रकारे पातालमां बीजी मात्राओ विषे समजी लेवुं.

नष्ट.

पिंगलमत.

अमुक मात्राना प्रस्तारमां अमुक रूप केवुं छे, एटले तेमां लघु गुरु केवा क्रमे आवेछे, ते बताववानी रीतिने नष्ट केहेछे.

रीति.

जेटली मात्रानो नष्ट करवो होय तेटलां लघु चिह्न प्रथम लखी जवां. पछी ते (लघु चिह्नो) उपर डाबी बाजुएथी आरंभ करीने १, २, ३, ५, ८, १३ इत्यादि सख्याना अंको प्रत्येक लघु चिह्न उपर लखी जवा. सख्यानो जे छेल्लो अंक होय तेमांथी पूछेला भेदनों अंक बाद करवो. शेष वधे तेमांथी (जमणीथी डाबी बाजुए जतां) सख्याना जे जे अंक क्रमे बाद थइ शके, ते करते जवा, जे अंक बाद थइ न शके, ते मूकी, ते पछीनो बाद करवो. जे जे अंक बाद थइ शके ते तळनी लघु मात्रा तेनी अकेकी पर मात्रा (जमणी बाजुनी जोडेनी) साथे मेळववी अने ते बन्ने लघु मात्रानो एक गुरु थाय ते तेमनी नीचे मूकवो अने तेम करतां जे रेषा खाली रेहे ते प्रत्येक नीचे एकेक लघु चिह्न मूकी देवां. एम करतां जे रूप तैयार थाय ते इछित रूप जाणवुं.

उदाहरण.

प्रश्न. छ मात्रानी जातिनुं सातमु रूप केवुं थायछे?

छ मात्राना प्रस्तारनुं अमुक रूप पूछ्यु छे; माटे छ लघु चिह्न कर्यां. ते उपर छ मात्राना रूप सख्यांक मुक्या. हवे अंतनो

१ २ ३ ५ ८ १३
| | | | | |
S | S |

अंक १३ छे, तेमांथी सातमुं रूप पूछयुं छे तो, ते सात बाद कर्या तो, ६ शेष रह्या. ते छमांथी आठनो अंक बाद नहि जाय, माटे ते पछीनो अंक पांच बाद कर्यो तो, बाकी १ रह्यो. माटे ५ तळेनो एक लघु अने आठ तळेनो एक लघु मळी गुरु थयो. ते ते हेठळ कौंस करी मूकी दीधो. हवे शेष एक रह्यो छे तेमांथी ३ अने २, बाद नहि थाय, पण एक थशे, माटे त्रण तळेनुं लघु चिह्न कायम रह्युं, अने एक तथा बे नीचेनो लघु मळी एक गुरु थयो तेने ते तळे मूकी दीधो एटले छ मात्राना प्रस्तारमां सातमा भेदनुं रूप SIS। थयुं

उदाहरण बीजुं.

सात मात्राना प्रस्तारमां ९ मा भेदनुं रूप केवुं छे?.

सात मात्राना प्रस्तारमानुं रूप जाणवुं छे, माटे सात लघु चिह्न मूकी प्रत्येक उपर संख्याक कह्या प्रमाणे मूकी गया. तो ते नीचे प्रमाणे आव्या.

१ २ ३ ५ ८ १३ २१
| | | | | | |
S S S |

आमांनो छेल्लो अंक २१ छे तेमांथी ९ प्रश्नांक बाद कर्यो, त्यारे बार बाकी रह्या. हवे ए बारमांथी तेर बाद थइ शकता नथी, पण आठ बाद थइ शकेछे, माटे आठ नीचेनी एक मात्रा अने १३ नीचेनी एक मात्रा (एम बे मात्रा) साथे मळीने बन्ने गुरु चिह्न मूकाइ. १२ मांथी ८ जतां ४ रहेछे. ते चारमांथी पांच बाद थता नथी. त्रण बाद थायछे; माटे त्रणनी नीचेनी अने पांचनी नीचेनी लघु मात्रा एकठी मेळवीने तेने बदले

गुरु चिह्न मूक्यु. ४ मांथी ३ जतां १ शेष रह्यो छे. ते एकमांथी बे बाद थता नथी; एक बाद थायछे; माटे, एकनी नीचेनी अने बेनी नीचेनी मात्रा एकठी मेळवीने तेने बदले गुरु चिह्न मूक्युं. आ प्रमाणे करता ९ मा भेदनुं (ऽ ऽ ऽ।) रूप आव्यु.

उदाहरण त्रीजुं.

प्रश्न. सात मात्राना १७मा भेदनुं रूप केवुं थायछे?

१	२	३	५	८	१३	२१
।	।	।	।	।	।	।
ऽ		ऽ		।	।	।

सात मात्रानां कुल रूप २१–१७=४. ४मांथी १३, ८ के ५ बाद थइ शकता नथी, तेथी १३, २१ अने ८नी नीचे लघु चिह्न मूकी दीधा. पण त्रण बाद थइ शकेछे, वास्ते ३ अने ५नी तळेनी लघु मात्राने बदले ते मेळवी एक गुरु चिह्न मूक्युं, बाकी एक रह्यो, तेमांथी २ जता नथी, पण एक जायछे, माटे, एक अने बे तळेनी लघु मात्राने बदले गुरु चिह्न मूक्युं त्यारे सत्तरमा भेदनुं (ऽऽ ।।।) रूप आव्युं.

अगस्त्यमत सामान्य प्रस्तार नष्ट.

मागेली संख्यानुं रूप आ प्रस्तारमानुं जाणवानुं होय तो पिंगलमत प्रस्तारनष्ट विधिये नष्ट जाणवु.

प्रश्न. अगस्त्यमत सामान्य प्रस्तारमा छ मात्राना प्रस्तारमां दशमुं रूप केवुं हशे?

छ मात्राना प्रस्तारमानुं रूप माग्युं छे. माटे पेहेलां छ लघु मूकी ते पर कथित क्रमे सङ्ख्याङ्क मूक्या तो, ते नीचे प्रमाणे

१	२	३	५	८	१३
।	।	।	।	।	।

आव्या मागेल सङ्ख्या १० नी छे. माटे छेल्ली संख्या १३ मांथी १०

बाद कर्या तो ३ शेष रह्या, ए त्रणमांथी पांचनी डाबी भणीना त्रण बाद थायछे, ते बाद कर्या तो शेष ० रह्युं. शेषमांथी मात्र त्रण बाद थइ शकेछे माटे ए त्रण तळेनो लघु तेनी जमणी बाजु ना १ तळेना लघुनी साथे मळी गुरु थतां मागेल संख्यानुं रूप ।। ऽ । । थयु.

भामहमत प्रस्तार नष्ट.

मागेल संख्यानु रूप आ प्रस्तारने लगतुं जाणवानुं होय तो संख्याक उत्क्रमे एटले अवळे क्रमे मांडी इष्ट संख्याने छेल्ली संख्यामांथी बाद करवी. जे शेष रहे तेमांथी ते आगळनी जे जे संख्या बाद थइ शके, ते ते तळेनो लघु तेनी पूर्वना अंक तळे ना लघु साथे मळी गुरु थतां, जे रूप बने ते मागेली संख्यानुं रूप जाणवुं.

प्रश्न. भामहमत प्रस्तारमां चार मात्राना प्रस्तारमांनु चोथुं रूप केवुं हशे?

उपर कह्या प्रमाणे लघु चिह्न मूकी संख्या भरता पासेना चित्र प्रमाणे अंक आव्या. एमां ए क्रम प्रमाणे छेल्ली संख्या

५ ३ २ १ } ५ छे, तेमांथी इष्ट संख्या ४ छे, ते बाद
। । । । } करी तो, शेष १ रह्यो; ए जमणी तरफना

पेहला लघु उपरनो छे माटे ते ते पेहलांना २ तळेना लघु साथे मळी गुरु थयो तो ते रूप ।।ऽ थयुं.

अगस्त्यमत स्थानविपरीत नष्ट.

मागेलु रूप आ जातना प्रस्तारने लगतुं जाणवुं होय तो ए विधि पिंगलमत स्थानविपरीतनष्ट विधि प्रमाणे करवो.

उदाहरण.

प्रश्न. पांच मात्राना प्रस्तारमां सातमुं रूप **अगस्त्यमत स्थानविपरीत** प्रस्तार प्रमाणे करवामां आवेल प्रस्तारमां केवुं हशे?

लघुचिह्न मूकी अंक स्थापन करवुं तो बिम्ब प्रमाणे अंक आव्या. एमा छेल्ली संख्या ८ छे. तेमाथी मागेली संख्या ७ छे ते बाद करी तो, शेष १ रह्यो, ते जमणी बाजुना पेहेला लघु अक्षरनी संख्या समान छे माटे ते तेनी पेहेलाना लघुनी साथे मळीने गुरु थयो तो मागेलुं रूप । । । ऽ आव्युं.

८	५	३	२	१
।	।	।	।	।

पिंगलमत संख्या विपरीत नष्ट.

आ प्रस्तारमानुं इष्ट संख्यानुं रूप जाणवानुं होय तो, सामान्य कथन प्रमाणे लघु चिह्न मूकी, तेमना पर क्रमे एकादि मात्राना संख्यांक मूकी जवा. बाद मागेली संख्या होय तेमांथी एक बाद करवो. जे शेप रेहे ते जे संख्याना सर्वाळा तुल्य होय अर्थात् तेमांथी जे जे संख्या बाद थती होय ते ते संख्या तळेना लघु तेमनी जमणी भणीना लघुनी साथे मळीने गुरु थता जे रूप बने ते मागेलु रूप समजवु.

प्रश्न. पिंगलमतसंख्या विपरीत छ मात्राना प्रस्तारमांनु सातमुं रूप केवुं थाय?

लघु चिह्न मूकी संख्याङ्क मूक्या तो बिम्ब अहिं आप्या प्रमाणे आव्युं. मागेलुं रूप ७ मुं छे, माटे तेमांथी एक बाद कर्यो तो, शेष ६ रह्या. ए मूकेल संख्यामांनी ५+१ नी बरोबर छे; माटे ए बे संख्या

१	२	३	५	८	१
।	।	।	।	।	।

तळेना लघुने तेमनी जमणी बाजुना लघुमा मेळवी गुरु बनाव्या तो ते रूप ऽ।ऽ। आवुं थयुं.

अगस्त्यमतसंख्याविपरीत नष्ट.

आ जातना प्रस्तारने लगतुं कोइ पण रूप जाणवानुं होय तो ते पिंगलमतसंख्याविपरीतनष्ट विधिये जाणवुं.

प्रश्न. अगस्त्यमतसंख्याविपरीत प्रस्तारविधिए करवामां आवेला छ मात्राना प्रस्तारमा बारमुं रूप केवुं थाय?

लघु चिह्न मूकी संख्या भरता बिम्ब { १ २ ३ ५ ८ १३
आहिं आप्या प्रमाणे थयुं. बारमुं रूप (। । । । । ।

मागुं छे माटे बारमांथी, १ बाद करतां शेष ११ रह्या. ए ८+३ ना बरोबर छे, माटे ८ अने ३ तळेना लघु मात्रा, तेमनी जमणी बाजुनी लघुमात्रा साथे मळी, गुरु थइ, तो मागेलुं रूप ।।ऽऽ थयुं.

पिंगलमत संख्यास्थानविपरीत नष्ट.

आ विधिए करायला प्रस्तारमांनुं कोइपण रूप जाणवानुं होय तो, भामहमत प्रमाणे लघु चिह्नपर अवळा क्रमथी संख्याङ्क मूकी जवा, बाद जेटलामुं रूप जाणवानुं होय ते संख्याङ्कमांथी एक बाद करतां जे शेष रेहे, ते मांडेली जे संख्याना योगथी थयेली होय, ते ते संख्या तळेना लघु, तेमनी आगळना लघुनी साथे मळी गुरु बनी जता, जे रूप बने, ते मागेलुं रूप जाणवुं.

प्रश्न. छ मात्राना प्रस्तारमां बारमुं रूप केवुं थाय? कथित क्रमे लघु मूकी संख्यांक भर्या तो बिम्ब { १३ ८ ५ ३ २ १
आहिं आप्या प्रमाणे थयुं. इष्ट संख्या बार (। । । । । ।

छे, तेमाथी बादएक कर्यो तो, शेष ११ रह्या. ए (८+३) आठ त्रणनी बरोबर छे माटे ८ अने ३ तळेना लघुने तेमनी डावी तरफना लघु साथे मळवी गुरु कर्या तो मागेलुं रूप ऽऽ।। थयुं.

अगस्त्यमत उभयविपरीतनष्ट.

आ शोधननी रीति पिंगलमत उभय विपरीतनष्ट प्रमाणे छे.

प्रश्न. दश मात्राना प्रस्तारमा ८६ मुं रूप केवुं थाय?

कह्या प्रमाणे संख्यांक भरतां बिम्ब पासे आव्या प्रमाणे

८९ ५५ ३४ २१ १३ ८ ५ ३ २ १
। । । । । । । । । ।
ऽ ऽ ऽ । । ऽ

आव्युं. इष्ट संख्या ८६ छे, तेमाथी एक बाद कर्यो तो, शेष ८५ रह्या.

ए ५५+२१+८+१=८५ छे, माटे ए संख्या तळेना लघुने तेमनी डावी बाजुना लघुमां भेळवी त्यां गुरु मूक्या तो ते रूप ऽऽऽ।।ऽ आव्युं.

दइने अंक शोधिये अर्थात् बाद करिये तो ५+३=८ अथवा ५+२+१=८ बाद करी शकायछे; परंतु नियम प्रमाणे, छेल्ली संख्यामांथी ते आगळना क्रमवार संख्यांक बाद करवाना छे, माटे ए प्रमाणे थाय नहि, पण ८ जे छेल्ली संख्या १३ थी आगळनो पेहेलोज अंक छे, ते बाद करवो जोइये. आ नियम संख्याशोधन संबंधमां सर्वत्र एक सरखी रीते लागु पाडवो. क्रमनो त्याग करी कोइ पण प्रकारनी शोधन क्रिया करवी नहि तेमज सामान्य प्रस्तारमां जमणी बाजुथी डाबी बाजु जवानो अने स्थानविपरीत प्रस्तारमां डाबी भणीथी जमणी भणी जवानो क्रम सदा लक्षमां राखवो. सामान्य प्रस्तारमां छेल्ले मोटो संख्यांक जमणी भणीना छेल्ला लघुपर अने स्थान-विपरीत प्रस्तारना नष्टमां डाबी भणीना पेहेला लघुपर, खचित्त आविछे ए भूलवुं नहि. वळी कह्या प्रमाणे इष्ट संख्यामांथी लघुपरनो संख्यांक शोधाइ जाय, अर्थात् बाद करी शकाय, अने नियम प्रमाणे ते तळेनी लघु मात्राने गुरु बनाववा माटे तेथी पूर्वापरमां कह्या प्रमाणे कोइ लघु मात्रा न होय, तो मागेलुं रूप मांडेला सर्व लघुनुं समजवुं.

उद्दिष्ट.

आपेलुं रूप प्रस्तारमां केटलामुं छे ते केहेवानी रीतिने उद्दिष्ट केहेछे.

कोइ अमुक मात्राना प्रस्तारनुं अमुक रूप देखाडीने पूछे जे आ केटलामुं छे? ते काहाडवाने डाबा हाथ भणीथी आरंभ करी, आपेला रूपमां जे जे ठेकाणे गुरु चिह्नो होय, तेनी उपर अने हेठळ, बन्ने ठेकाणे संख्याना अंक क्रमे लखवा. अने

लघु चिह्नो होय तो, मात्र उपरज अंक लखवा. पछी छेला अंकमांथी, पूछेला रूपमां जेटलां गुरु चिह्नो होय, ते उपर आवेला आंकडाओनो सर्वाळो लेइ बाद करवो. जे शेष रहे तेटलामुं इष्ट रूप समजवुं. अत्यांक हमेशां कंइ उपरजे आवे एम न समजवुं. अंते गुरुवाळुं रूप होय तो अंत्यांक तेनी तळे पण आवेछे.

उदाहरण १ लुं. ऽ ऽ ।।। आ रूप सात मात्राना प्रस्तारमां केटलामुं छे. ते काहाडवा माटे आमां प्रथम बे गुरु छे तेनी उपर तथा तळे बन्ने जग्गोए क्रमे भेदसंख्याङ्क मूक्या. अने बाकीना त्रण लघु छे तेनी उपरज संख्याङ्क मूक्या.

१ ३ ८ १३ २१
ऽ ऽ । । ।
२ ५

एटले छेवटनो संख्याङ्क २१ नो छे (७ मात्रानां २१ रूप थाय माटे) तेमांथी गुरु चिह्नो उपरना अंक (१+३)=४ बाद करता बाकी १७ रहेछे; तो ते सत्तरमो भेद अथवा १७ मुं प्रस्तारनुं रूप थयुं.

उदाहरण २ जुं. ऽ ऽ ऽ । आ रूप सात मात्राना प्रस्तारमां केटलामुं छे?

१ ३ ८ २१
ऽ ऽ ऽ ।
२ ५ १३

२१−(१+३+८=)१२=९ मो भेद.

उदाहरण त्रीजुं. ऽ।।।ऽऽ।।ऽ तेर मात्राना प्रस्तारमां आ रूप केटलमुं छे?

१ ३ ५ ८ १३ ३४ ८९ १४४ २३३
ऽ । । । ऽ ऽ । । ऽ
२ २१ ५५ ३७७

१+१३+३४+२३३=२८१, ३७७−२८१=९६ मुं रूप थयुं.

अगस्त्यमत सामान्य प्रस्तार उद्दिष्ट.

आ मतना प्रस्तारमां उद्दिष्टनी रीति पिंगलमत उद्दिष्ट प्रमाणे छे माटे तेम करवुं.

उदाहरण

प्रश्न. अगियार मात्राना अगस्त्यमत प्रस्तारमां आ । S । । । S S । रूप केटलामुं हशे ?

कह्या प्रमाणे क्रमे सङ्ख्याङ्क चडावता बिम्ब अहिं आप्या

१	२	५	८	१३	२१	५५	१४४
।	S	।	।	।	S	S	।
	३				३४	८९	

प्रमाणे थयुं. तेना गुरु चिह्नना मथाळाना अंक २+२१+५५=७८ ने छेल्ली संख्या १४४ मांथी बाद कर्या तो, आपेला रूपनी संख्या =६६ आवी.

भामहमत प्रस्तार उद्दिष्ट.

आपेलुं रूप आ प्रस्तारमां केटलामुं छे, ते जाणवुं होय तो, आपेला रूपपर पिंगलमत प्रमाणे जमणी भणीथी क्रमवार अथवा डाबी भणीथी मूळ प्रथाथी उत्क्रमे संख्याङ्क मूकी जवा अने शेष विधि पिंगलमत प्रमाणे करवो.

उदाहरण.

प्रश्न.—११ मात्राना भामहमत प्रस्तारमां । S S । । । S । रूप केटलामुं हशे ?

कथित क्रमे संख्या मूकतां नीचे प्रमाणे बिम्ब तैयार थयुं

१४४	५५	२१	१३	५	५	२	१
।	S	S	।	।	।	S	।
	८९	३४				३	

तेमा गुरुना मथाळाना अंक १३+२१+३४ना सर्वाळा ६८ ने छेल्ली संख्या १४४ मांथी बाद करतां मागेली रूपनी संख्या १४४–७८=६६ आवी.

अगस्त्यमत स्थानविपरीत उद्दिष्ट.

आ प्रकारना उद्दिष्टनी रीति भामहमत उद्दिष्ट प्रमाणे छे.

उदाहरण.

दश मात्राना अगस्त्यमतस्थानविपरीत प्रस्तारमां ।।।।।।।।ऽ नुं रूप केटलामुं हशे वारु ?

कह्या प्रमाणे उत्क्रमे संख्यांक मूक्या तो अहिं आप्या प्रमाणे

८९ ५५ ३४ २१ १३ ८ ५ ३ १
। । । । । । । । ऽ } बिम्ब थयुं.
२.

तेमां गुरु शिरना अंक एकने छेल्ली संख्या ८९मांथी बाद कर्यो तो आपेला रूपनी संख्या ८९–१=८८ थइ.

पिंगलमत संख्याविपरीत उद्दिष्ट.

आपेला रूपपर क्रमवार संख्या भरवी. पछी गुरु चिह्नना मथाळानी संख्याना सर्वाळामां एक उमेरता जे आवे ते मागेला रूपनी संख्या समजवी.

प्रश्न. चार मात्राना पिंगळमत संख्याविपरीत प्रस्तारमां आ ।।।।।।ऽ।।।। रूप केटलामु हशे?

१ २ ३ ५ ८ १३ २१ ५५ ८९ १४४ २३३

आपेला रूपमां संख्या भरी तो बिम्ब स्वरूप उपर प्रमाणे थयुं. एमां गुरु चिह्न परना अंक २१ मा १ उमेरता २२ थायछे माटे आपेला रूपनी संख्या=२२.

अगस्त्यमत संख्याविपरीत उद्दिष्ट.

आ उद्दिष्ट शोधननी रीति, उपरनी रीति मुजब छे.

उदाहरण.

प्रश्न. अगस्त्यमत संख्याविपरीत बार मात्राना प्रस्तारमां आ । । । । । । । । । । ऽ रूप केटलामुं छे?

कह्या प्रमाणे संख्या भरता बिम्ब स्वरूप नीचे प्रमाणे:—

१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९	१४४
।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	ऽ
										२३३

तैयार थयुं. एमां गुरु शिरनो अंक १४४ छे. तेमां १ उमेरवाथी १४५ थायछे, माटे आपेला रूपनी संख्या १४५ आवी.

पिंगलमत उभयविपरीत उद्दिष्ट.

आपेला रूप पर संख्यांक अवळा क्रमे मांडी बाकीनी क्रिया संख्याविपरीत उद्दिष्ट रीति प्रमाणे करवी. अर्थात् गुरुना शिरो अंकना जोगमां एक उमेरवो एटले आपेला रूपनी संख्या आवशे.

उदाहरण.

प्रश्न. छ मात्राना उभयविपरीत प्रस्तारमां आ रूप । । । । ऽ केटलामुं हशे?

कह्या प्रमाणे संख्यांक भरवा तो बिम्बस्वरूप अहिं आप्या प्रमाणे थयुं. एमा गुरु शिरांक १ छे तेमां एक उमेरतां बे थायछे; माटे आपेला रूपनी संख्या=२.

१३	८	५	३	२	१
।	।	।	।		ऽ
					२

અગસ્ત્યમત ઉભયવિપરીત ઉદ્દિષ્ટ.

આ ઉદ્દિષ્ટની રીતિ ઉપરની રીતિ પ્રમાણે છે.

પ્રશ્ન. છ માત્રાના અગસ્ત્યમતઉભયવિપરીત પ્રસ્તારમાં આ ऽ।।।। રૂપ કેટલામું હશે?

આપેલા રૂપપર સંખ્યાંક કહ્યા પ્રમાણે ઉત્ક્રમે ભર્યા તો

૮	૫	૩	૨	૧	આવું રૂપ બન્યું. તેમાં ગુરુના મથાળાનો
ऽ	।	।	।	।	અંક ૮ છે તેમાં ૧ ઉમેરતાં ૯ થાયછે
૧૩					માટે આપેલા રૂપની સંખ્યા= ૯ થઇ.

મેરુ.

કોઇ પૂછે કે, પ્રસ્તારમાં સઘળા ગુરુ અક્ષરના કેટલા ભેદ છે. વેળી અક્કેકો ગુરુ ઓછો કરતા જતાં શેષ ગુરુવાળા કેટલા ભેદ થાયછે? તેમ સઘળા લઘુના કેટલા અને તેમાં અક્કેકા ઓછા લઘુના કેટલા કેટલા ભેદ થાયછે? એ સઘળું બતાવનારા બિમ્બને મેરુ[૧] કહેછે.

રીતિ.

જેટલી માત્રાનો મેરુ કરવો હોય તેટલી આડી પંક્તિયો કરવી. આ પંક્તિમાં ખંડ પાડવાનો વિધિ એવો છે કે, જેટલી માત્રાની પંક્તિમાં ખંડ પાડવા હોય તે માત્રાની સંખ્યાને બેયે ભાગતાં જેટલા પૂર્ણાંક આવે તેમાં એક ઉમેરતાં જેટલા અંક આવે, તટલા ખંડ તે પંક્તિમાં પાડવા; કારણ કે બેથી ભાગતાં જેટલા પૂર્ણાંક આવે તેટલાં ગુરુ સ્થાન થાયછે, તે ઉપરાંત, મેરુમાં શૂન્ય ગુરુ અથવા સર્વ લઘુનું સ્થાન પણ બતાવવાનું આવેછે માટે ગુરુની

---

૧ મેરુના સ્વરુપ અને ગુણ પરત્વે મેરુ, ખંડમેરુ, પતાકાવલીમેરુ ઇત્યાદિ જુદા જુદા ભેદ પડેછે તેમનું વર્ણન યથાસ્થાન આપવામાં આવ્યું.

संख्याना खंड उपरांत एक खंड वधारवानी अगत्य पडेछे.

पंक्तियोना खंडमां अंक भरवानी रीति.

एक मात्रानुं एक रूप थायछे माटे प्रथम पंक्ति एक खंडनी थतां तेमां १ भरवो. बे मात्रानां बे रूप थायछे. माटे तेना बे खंडमां अकेको एकडो भरवो; कारण के तेना बे रूपमां एक रूप शून्य गुरुनुं छे अने एक. एक गुरुनुं छे. हवे त्रण अने ते पछी नी मात्रानी पंक्तिना खंड भरवानी रीति एवी छे के, तेना उपरनी बे पंक्तिना खंडमांथी नवी पंक्ति नीचे प्रमाणे भरवी.

जेटली मात्रानी पंक्तिना खंड भरवा होय तेना उपरनी बे पंक्तिमांथी प्रथमनी पंक्तिना खंडना सर्व गुरुआदि दर्शक आंकडा होय. ते क्रमवार मांडी जवा, पछी तेना सर्व गुरु दर्शक खंडना आंकडा वर्ज्य करीने बाकीना आंकडा नीचे क्रमवार बीजी पंक्तिना खंडना आंकडा मांडी जवा. एटले पछवाडेनो एक अंक खाली रेहेशे; तेने बदले अगाडीनो एक अंक आगळ वधशे; मतलब के, तेनी उपर कोइ पण अंक हशे नहि. पछी ते आंकडानी पंक्तिनो खंडवार प्रथक् प्रथक् सर्वाळो करतां जे अंक आवे ते डाबी बाजुथी अनुक्रमे खाली खानामां भरी देवा. जेम के त्रण मात्रानी त्रीजी पंक्तिना बे खंड भरवाना छे तोः—

पेहेली पंक्तिना एक खंडनो आंकडो—१ ते केवळ शून्य गुरु एटले सर्व लघुदर्शक छे अने तेमां सर्व गुरुदर्शक अंक एके छे नहि, माटे ते वर्ज्य कर्या विना तेनी नीचे बीजी पंक्तिना अंक मूकी सर्वाळो करतां तेना खंडमां मूकवाना अंक २, १ आ॰या ते तेमां भरी दीधा. हवे ४ मात्रानी पंक्तिना त्रण खंड भरवाना छे तो तेनी

१	
१	१
२	१

उपरनी बीजी पंक्तिना खंडना अंक १ १ छे तेमांथी पेहेलो सर्वगुरु दर्शक छे ते वर्ज्य करी बाकीना बीजा खंडना अंक तळे त्रीजी पंक्तिना खंडना अंक २, १ मूकी

१	१	
	२	१
१	३	१

सर्वाळो देतां आ प्रमाणे १, ३, १ आंकडा आवछे तेमने चोथी पंक्तिना खंडमां क्रमवार भरी दीधा.

आ प्रमाणे सर्व पंक्तिना खंड भरवानी रीति समजी लेवी.

(अथवा)

प्रथम शिखरनो एक खंड करवो. तेनी नीचे अनुक्रमे अकेको खंड वधतो जाय एवा जोड पंक्तिवाळा खंड करवा. एम जेटली मात्रानो मेरु रचवो होय तेटली पंक्तिओ थवी जोइए.

बेकी मात्रानो मेरु रचवो होय तो छेल्लो जोडपंक्ति पण एकज आवे.

प्रथम पंक्तिना पेहेला खंडमां १ ए अंक लखवो; पछी जमणा हाथ भणीना प्रत्येक पंक्तिनां जे छेल्ला खानां छे ते सघळामां एकडा लखी जवा. डाबी बाजुनी पंक्तिओना छेल्ला खडमां १, २, १, ३, १, ४, १, ५ एम अनुक्रमे अंक लखवा. हवे मध्यनां खानां भरवां रह्यां ते विषे एवो नियम छे के, जे खानुं भरवानुं होय तेना शीर्षकने वक्र गतिये एटले ईशानकोणना उपरना खंडना अंक साथे सर्वाळो करीने तेमां लखता जवुं. अर्थात् भरनाना खानाने लगतुं माथे उत्तर दिशाए एटले खानानी उपरना भागमां बराबर खानुं होय तो तेमांनो अंक अथवा तेम न होय तो भरवाना खानाना वायव्य दिशाना खानानो अंक तथा ए उत्तर अथवा ए

बाकीनां खानानी ईशान दिशाए जे खानुं छे, तेमांनो अंक ए बन्नेनो सर्वाळो लइने भरवानु खाली खानुं भरवुं. एम मध्यखानां भरी मेरू संपूर्ण करवो. पछी तेनी बाहार डावा हाथ भणी प्रत्येक खाना आगळ १. २, ३. इत्यादि अनुक्रमे अंक लखी जवा, जेथी मात्रानी सङ्ख्या जणाशे. अने जमणी बाजुए बाहार प्रत्येक खानाना अंकनो सर्वाळो लखवो. ते प्रस्तार रूप संख्यांक बतावशे.

मेरूबिम्ब प्रस्तापथी अमुक मानानी पंक्तिमां अमुक लघु तथा गुरु दर्शक केटलां रूप छे ते जाणवा माटे जमणा हाथ भणीथी आरंभीने प्रथम खानुं जेमां एकनो अंक पूरेलो होयछे ते उपर जेटली मात्रानी पंक्ति होय तटला अंक मूकीने जोडे लघु चिह्न मूकवुं. अने तेथी एम समजवुं के, तेटला लघु अथवा सर्व लघुनुं एक रूप एवा प्रस्तारनां थायछे. पछी डाबा हाथ भणी चालतां प्रत्येक खानामां अनुक्रमे बबे लघु घटाडी अंकने गुरु वधारी जे अंक आवे ते लखी तेनी जोडे लघु अने गुरु चिह्न मूकवां. एम डाबा हाथ भणीनुं सौथी छेल्लुं खानु जो ते पंक्ति समभागनी हशे, तो तमाम गुरु चिह्न अने बहार लघु चिह्न दर्शक आवशे; पण जो पंक्ति विषम मात्रानी हशे, तो तमाम गुरु साथे एक लघु चिह्न बधानुं आवशे. जेमके नीचेना चित्रमां सौथी छेल्ली पंक्ति दश मात्रानी छे तो जमणा हाथ भणीना प्रथम खंडमां १० लघु चिह्न मूकवां. एटले १० लघु अथवा सर्व लघुनुं एक रूप समजवुं. पछी डाबा हाथ भणी बीजा खानामां एक गुरु अने आठ लघुवाळां ९ रूप समजवां. ए प्रमाणे तमाम खानां भरवां.

दशमात्रा सूधीनो मेरु यंत्र

१	१						१
२	१	१					२
३	२	१					३
४	१	३	१				५
५	३	४	१				८
६	१	६	५	१			१३
७	४	१०	६	१			२१
८	१	१०	१५	७	१		३४
९	५	२०	२१	८	१		५५
१०	१	१५	३५	२८	९	१	८९
	SSSSS	SSSSII	SSSIIII	SSIIIIII	SIIIIIIII	IIIIIIIIII	

एकावळी मात्रामेरु.

रीति.

पेहेलो एक खंड करवो, पछी अनुक्रमे, अकेको वधे एम बबे खंडनी जोड पंक्तियो वधारतां जवी, एटले के, बीजी त्रीजी पंक्तिमां बबे खंड, चोथी पांचमीमां त्रण त्रण खंड, छठ्ठी सातमीमां चच्चार खंड, एम जेटली मात्रानो मेरु रचवो होय तेटली पंक्ति जमणी तरफ विस्तार पामता खंडवाळी करवी. बाद तेमां नीचे प्रमाणे अंक भरवा.

सर्व पंक्तिनी डाबी बाजुना सर्व प्रथम खंडमां एकडा मूकवा; तेमज सर्व पंक्तिना जमणा हाथ भणीना छेल्ला खंडमां अनुक्रमे १, २, १, ३. १. ४. १, ५ इत्यादि अंक भरी जवा. पछी पूर्ण मेरुमां बतावेली रीति प्रमाणे बाकीनी पंक्तिना खंड सर्वाळा करीने भरता जवा.

एटले के, पाछळ कहेला मेरुमां शून्यथी मांडीने क्रमे एक पछी चडता एक गुरु दर्शक स्थानो जमणी बाजुथी सूचववामां

आवेछे तेने बदले तेज स्थानो तेज क्रमे डावी बाजुथी प्रारंभी आ मेरुमां माडवामां आवेछे. जुओ नीचे आपेलुं एकावली मेरुबिम्ब.

९ मात्रानो एकावली मेरु.

मात्रा	शून्य गुरुना रूप, सर्व लघु रूप	१ गुरुना रूप	२ गुरुना रूप	३ गुरुना रूप	४ गुरुना रूप	कुल	
१	१। १					१	एक लघुनु एक रूप
२	२। १	१ऽ १				२	वे लघुनु एक रूप, १ गुरुनु एक रूप.
३	३। १	१ऽ१। २				३	त्रण लघुनु एक रूप, एक गुरुने एक लघुना वे रूप-
४	४। १	१ऽ२। ३	२ऽ १			५	४ लघुनु १, एक गुरु २ लघुना ३, बे गुरुनु १.
५	५। १	१ऽ३। ४	२ऽ१। ३			८	५ लघुनु १, १ गुरु ३ लघुना ४, २ गुरु १ लघुना ३
६	६। १	१ऽ४। ५	२ऽ२। ६	३ऽ १		१३	६ लघुनु १, १ गुरुने चार लघुना ५, बे गुरुने २ लघुना ६, त्रण गुरुनु एक.
७	७। १	१ऽ५। ६	२ऽ३। १०	३ऽ१। ४		२१	७ लघुनु १, एक गुरुने पाच लघुना ६, बे गुरुने त्रण लघुना १०, ३ गुरु १ ल ४.
८	८। १	१ऽ६। ७	२ऽ४। १५	३ऽ२। १०	४ऽ १	३४	८ लघुनु १, १ गुरु ६ लघुनां ७, २गुरुने ४ लघुना १५, ३ गुरुने २ लघुना १० चार गुरुनु १
९	९। १	१ऽ७। ८	२ऽ५। २१	३ऽ३। २०	४ऽ१। ५	५५	९ लघुनु १, १ गुरुने ७ लघुना ८, २गु. ने ५ लघुना २१, ३ गुरुने ३ लघुना २० ४ गुरुने १ लघुना ५.

उपरना एकावळी मेरुथी मालूम पडे छे, के, दश मात्रानी जातियो अथवा रूपो सर्व लघुनुं एक रूप छे; अने एक गुरु तथा सात लघु आवे एवां आठ रूप छे. बे गुरु अने पांच लघु आवे एवां २१ रूप छे. त्रण गुरु अने ३ लघुवाळां २० रूप छे. चार गुरु अने एक लघुवाळां ५ रूप छे.

ए प्रमाणे गमे तेटली मात्रानो एकावळी मेरु थाय.

खंडमेरु वर्णन.

मेरु बनाव्या विना जेनाथी मेळवी गरज सरे तेने खंड मेरु कहेछे.

रीति.

जेटली मात्रानो खंडमेरु करवो होय तेथी एक वधारे खंडनी प्रथम पंक्ति बनाववी तेनी नीचे बीजी पंक्तिमां पेहेली पंक्तिथी बे खंड ओछा करवा. तेनी नीचे त्रीजी पंक्तिमां बीजी पंक्तिथी बे खंड ओछा करवा. एम प्रत्येक पंक्ति बबे ओछा खंडनी करी जवी.

प्रथम पंक्तिना प्रत्येक खंडमां एकडा भरी जवा. पछी बीजी पंक्तिना प्रथम खंडमां १ लखवो, पछी वक्र गतिथी अंक मेळवीने लखवा, एटले बीजी पंक्तिनुं बीजुं घर भरवाने द्वितीय पंक्तिना प्रथम घरनो अंक १+ प्रथम पंक्तिना द्वितीय घरनो अंक १=२.

त्रीजुं घर भरवाने—

द्वितीय पंक्तिना द्वितीय खंडनो अंक २+ प्रथम पंक्तिना

चोथो खंड भरवाने ३+१=४.
पांचमो खंड भरवाने ४+१=५.
छट्ठो खंड भरवाने ५+१=६.
सातमो खंड भरवाने ६+१=७.
आठमो खंड भरवाने ७+१=८.
नवमो खंड भरवाने ८+१=९.

त्रीजी पंक्तिमां प्रथम खंडमां एक अंक भरवो. पछी त्रीजी पंक्तिनी पेठे ज वक्र गतिथी अंक मेळवीने लखवा.

चोथी पंक्तिना प्रथम खंडमा एक अंक भरवो. पछी त्रीजी पंक्तिनी पेठे ज वक्र गतिथी अंक मेळवीने लखवा.

एज प्रमाणे जेटली पंक्ति होय तेटलीमा प्रथम एक लखी वक्र गतिथी अंक मेळवीने लखवा. ए प्रमाणे जेटली पंक्ति होय तेटली भरी जवी. पछी बधी पंक्तिओना जमणी भणीना छेल्ला खंडमा जे अंक होय ते आपणो उत्तर समजवो.

दश मात्राना खंडमेरुनुं बिम्ब.

एकावली मेरु उभो छे तेने नीचे प्रमाणे आडो मूकवाथी खंड मेरु थायछे.

१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	२	३	४	५	६	७	८	९		
१	३	६	१०	१५	२१	२८				
१	४	१०	२०	३५						
१	५	१५								
१										

ते नीचेना दंडांकने अनुक्रमे बाद करता जइ बीजी लेहेर भरवी. एम उपरनी भरायली लेहेरनी अनुक्रम संख्यामांथी दंडांकने अनुक्रमे बाद करता जइ जे संख्या आवे ते नीचेनी लेहेरोमां भरता जवी.

२. पेहेली[1] लेहेरमां दंडांकनो छेल्लो अंक भरवो. पछी दंडना अकेक, बब्बे, त्रण त्रण, चच्चार एम अनुक्रमे अकेक वधती संख्याना सर्वाळाने तेमांथी बाद करी क्रमवार लेहेरो भरवी, एटले के, अकेक संख्या बाद करीने बीजी लेहेर, बब्बे बाद करीने त्रीजी, त्रण त्रण बाद करीने चोथी, चार चार बाद करीने पांचमी. ए प्रमाणे जेटली लेहेरो भरवानी होय ते प्रमाणे तेटली भरवी.

३. पताकानी छेल्ली लेहेरना प्रथम खंडमां[2] दंडनो छेल्लो अंक १ होयछे ते भरी देवो. पछी दंडनी क्रमवार संख्याने ए भरायली लेहेरना अंकमा उमेरता जइ उत्तरोत्तर लेहेरो भरवी. एटले पेहेली लेहेरना अंकमां क्रमवार भेळवी बीजी लेहेर भरवी. तेमज बीजीमां एज दंडांक मेळवी त्रीजी लेहेर भरवी. एम जेटली लेहेरो भरवानी होय तेटली भरी देवी. शून्य गुरुनी लेहेरमां दंडनो छेल्लो अंक ए प्रमाणे आवशे.

---

१ आ लेहेर मात्र एकज खंडनी होयछे कारण के, प्रस्तारमां शून्यगुरु दर्शक रूप मात्र एकज होयछे

२ वर्णमेळमां तो एकज खंड होयछे, पण मात्रामेळमां एकथी वधारे खंड एज पंक्तिना आवेछे

पूर्वनी ल्हेरमां भराइ गयेली तेनी ते संख्या फरीने आवे, अथवा सर्व मेरांक जेटली संख्या आवे, अथवा तेथी वधारे संख्या आवे, तो ते उपयोगमां लेवी नहि.

उत्क्रमप्रस्तार पताकाविधि.

पूर्वनी क्रमपताका भरवानी रीतिए ल्हेरवार जे अंक आवे, तेमने उत्क्रमे ल्हेरो गोठवी. तेमा भरवा, एटले उत्क्रम-पताका तैयार थशे.

मात्राप्रस्तार पताका.

जेटली मात्रानी पताका करवी होय, तेनुं [1]अर्द्ध करी, तेमां एक उमेरी जे अंक आवे, तेटला खंडवाळी आडी पंक्ति करवी. त्यारपछी तेनी नीचे इष्ट मात्रानो जे अंक होय, तेटला खंडनी त्रीजी पंक्ति करवी. आ पंक्ति पताकानो दंड थशे; माटे ते मध्यमां शोभती आवे एवी रीते गोठवाय तो ठीक लागशे.

(अंकानाम् वामतो गतिः) अंक मांडवानो क्रम जमणी बाजुथी आरंभी डावी बाजु भणी जवानो छे; माटे पंक्तिना खंडमां अंक भरवानी क्रिया ते प्रमाणे करवी.

प्रथम पंक्तिना खंडमां शून्य आदि चडता गुरुनी संख्या भरी जवी. त्यार पछीनी बीजी पंक्तिमां, इष्ट मात्राना मेरुनी

---

१ कारण के, पताकामां इष्ट मात्राना जेटला गुरु वर्ण थता होय तेनाथी एक वधारे संख्यानी ल्हेरो करवानी होयछे. विषम अंकमां अर्द्ध करता शेष वधे ते छोडी देवा

छेल्ली पंक्तिना खंडोमां जे जे अंक होय, तेने अनुक्रमे भरी जवा. त्रीजी पंक्तिना खंडोमा इष्ट मात्राना आरंभथी ते एक मात्रा सुधीना जेटला जेटला रूपाङ्क थता होय, ते ते कथित क्रमवार भरी देवा.

ए प्रमाणे पताकानो दंड तैयार थतां, ते उपर वावटा रूप लेहेरो (पंक्ति), बीजी पंक्तिना खंडमां जे अंक मांड्या होय तेटला खंडवाळी ते ते खडनी नीचे विस्तारवी.

प्रश्न. दश मात्राना क्रमप्रस्तारनी पताका तैयार करो.

मेरुमां इष्टमात्रा दशनी पंक्तिमां छ खंड छे, माटे तेनी पताकामां छ लेहेर करी छे, अने तेनापर शून्यादि गुरु सूचक संख्या भरेल छे. शून्य गुरुनी पेहेली लेहेरमा शून्य गुरुनुं रूप १ थतुं होवाथी एक खड करेल छे, बीजीमा १ गुरुनां ९ रूप थायछे, माटे ९ खड करेल छे, त्रीजामां बे गुरुना २८ रूप थायछे माटे २८ खंड करेल छे. चोथी लेहेर त्रण गुरुनी छे तेनां रूप ३५ थायछे, माटे ते लेहेरमां ३५ खंड पाडेला छे. पाचमी लेहेर चार गुरुनी छे तेटला गुरुनां रूप १५ थायछे, माटे तेमा १५ खंड पाडेला छे. अने छेल्ली लेहेर सर्व गुरुनी एटले पाच गुरुनी छे तेनुं ए प्रस्तारमां मात्र एकज रूप थायछे; माटे तेमा मात्र एकज खंड पाडेल छे. (जुओ पासेना चित्रमां.

દશ માત્રાના પ્રસ્તારની પતાકાનું ચિત્ર.

		૫	૪	૩	૨	૧	૦			
		૧	૧૫	૩૫	૨૮	૯	૧			
૧	૨	૩	૫	૮	૧૩	૨૧	૩૪	૫૫	૮૯	દટ
		૧	૨	૫	૧૩	૩૪	૮૯			
			૩	૮	૨૧	૫૫				
			૪	૧૦	૨૬	૬૮				
			૬	૧૧	૨૯	૭૬				
			૭	૧૨	૩૧	૮૧				
			૯	૧૬	૩૨	૮૪				
			૧૪	૧૮	૩૩	૮૬				
			૧૫	૧૯	૪૨	૮૭				
			૧૭	૨૦	૪૭	૮૮				
			૨૨	૨૩	૫૦					
			૨૫	૨૪	૫૨					
			૩૬	૨૫	૫૩					
			૩૮	૨૭	૫૪					
			૪૩	૨૮	૬૦					
			૫૬	૩૦	૬૩					
				૩૭	૬૫					
				૩૯	૬૬					
				૪૦	૬૭					
				૪૧	૭૧					
				૪૪	૭૩					
				૪૫	૭૪					
				[illegible]	[illegible]					
				[illegible]	[illegible]					
				[illegible]	[illegible]					
				[illegible]	[illegible]					
				[illegible]	[illegible]					
				[illegible]	[illegible]					
૯ ૯	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]				

मात्रा पताकादंडमां इष्ट मात्रा सुधीनी एकादि मात्राना संख्यां
ए तेना दंडांक थायछे; माटे तेमने पताकामां ए स्थानामां मूक्या छे

त्रीजी पंक्तिमा दंडांकमांनो सर्वलघु जणावतो, छेह
अंक ८९ छे, माटे शून्य गुरुनी लेहेरमां खंड भरवा अर्थे.

८९–०=८९.

एक गुरुवाळी लेहेरना खंड भरवा माटे—

८९–५५=३४	प्रथम खंडमां भरवा.		
८९–३४=५५	बीजा	„	„
८९–२१=६८	त्रीजा	„	„
८९–१३=७६	चोथा	„	„
८९– ८=८१	पांचमा	„	„
८९– ५=८४	छट्ठा	„	„
८९– ३=८६	सातमा	„	„
८९– २=८७	आठमा	„	„
८९– १=८८	नवमा	„	„

बे गुरुवाळी लेहेरना २८ खंड भरवा माटे—

५५ अंक साथेनी क्रिया थइ रहेतां बाकी खड २१ भरवाना रह्या माटे ३४ अंक साथ क्रिया चलावतां—

८९–(३४+२१)=१५=३४ भराइ गया छे माटे वर्ज्य.

८९–(३४+१३)=४७=४२ आठमा खंडमां ३३ नीचे.

८९–(३४+ ८)=४२=४७ नवमा खडमां.

८९–)३४+ ५)=३९=५० दशमा खंडमां.

८९–(३४+ ३)=३७=५२ अगियारमा खंडमां.

८९–(३४+ २)=३६=५३ बारमा खंडमां.

८९–(३४+ १)=३५=५४ तेरमा खंडमा.

३४ साथेनी क्रिया पूरी थतां बाकी खड १५ भरवाना रह्या तेमां ३४ पछीना अंक २१ साथे क्रिया करतां—

८९–(२१+१३)=३४=५५ प्रथम छे माटे वर्ज्य.

८९–(२१+८)=२९=६० चौदमा खडमां.

८९–(२१+५)=२६=६३ पंदरमा खंडमां.

८९–(२१+३)=२४=६५ सोळमा खडमा

८९–(२१+२)=२३=६६ सत्तरमा खडमां

८९–(२१+१)=२२=६७ अढारमा खडमा.

२१ साथेनी क्रिया थइ रही ने १० खंड भरवाना खाली रह्या छे. २१ पछीना अंक १३ नी साथे क्रिया करतां—

८९–(१३+८)=२१=६८ आवी गयाछे.

८९–(१३+५)=१८=७१ ओगणीशमा खंडमां भरवा.

८९–(१३+३)=१६=७३ वीशमा खंडमां

८९–(१३+२)=१५=७४ एकवीशनामा

८९–(१३+१)=१४=७५ बावीशमामा.

१३ साथेनी क्रिया थइ रही पण ६ खंड भरवाना रह्या, माटे आठ अंक साथे क्रिया करतां—

८९-(८+५)=१३=७६ आवी गया छे.

८९-(८+३)=११=७८ त्रेवीशामामां.

८९-(८+२)=१०=७९ चोवीशामामां.

८९-(८+१)=९ =८० पचीशमामां.

८ साथेनी क्रिया थइ रही ने ३ खंड भरवाना रह्या, माटे ते पछीना ५, अंक साथे क्रिया करता—

८९-(५+३)=८=८१ आवी गया छे.

८९-(५+२)=७=८२ छत्रीशामामां.

८९-(५+१)=६=८३ सत्तावीशमामां.

हवे त्रण साथेनी क्रिया करतां—

८९-(३+२)=५=८४ आवी गया छे.

८९-(३+१)=४=८५ अट्ठावीसमामां.

त्रण गुरुवाळी लेहेरनां ३५ रूप भरवा माटे.

८९-(५५+३४+२१)=११०

८९-(५५+३४+१३)=१०२

दश मात्रानां रूप बधां मळीने ८९ थायछे ते उपरांतनी संख्या थइ जाय, तो ते उपयोगमां लेवाती नथी; माटे ५५+३४+२१ ए संख्यानी क्रिया करवी उपयोगनी नथी; माटे ते छोडी दइ तेनी पछीना अंकोनी क्रिया करतां एटले तेनी पछी २१ अंक छे ते साथे ५५ नी क्रिया करता—

८९-(५५+२१+१३)=८९=० निरुपयोगी छे.

८९-(५५+२१+ ८)=८४=५ प्रथम खंडमा.

૮૯-(૫૫+૨૧+ ૫)=૮૧=૮ બીજા ,,

૮૯-(૫૫+૨૧+ ૩)=૭૯=૧૦ ત્રીજા ,,

૮૯-(૫૫+૨૧+ ૨)=૭૮=૧૧ ચોથા ,,

૮૯-(૫૫+૨૧+ ૧)=૭૭=૧૨ પાંચમા ,,

૨૧ અંકની ક્રિયા ૫૫ સાથે થઇ રેહેતાં ભગ્વાના ખંડ ૩૦ બાકી રહ્યા માટે ૧૩ સાથે કરતાં—

૮૯-(૫૫+૧૩+૮)=૭૬=૧૩ આવી ગયાછે.

૮૯-(૫૫+૧૩+૫)=૭૩=૧૬ છઠ્ઠા ખાનામાં.

૮૯-(૫૫+૧૩+૩)=૭૧=૧૮ સાતમામાં.

૮૯-(૫૫+૧૩+૨)=૭૦=૧૯ આઠમામાં.

૮૯-(૫૫+૧૩+૧)=૬૯=૨૦ નવમામા.

૧૩ સાથેની ક્રિયા ૫૫ સાથે થઇ રેહેતાં ખંડ ૨૬ બાકી રહ્યા, માટે ૫૫ સાથે ૮ ની ક્રિયા કરતાં—

૮૯-(૫૫+૮+૫)=૬૮=૨૧ આવી ગયાછે.

૮૯-(૫૫+૮+૩)=૬૬=૨૩ દશમા ખંડમાં.

૮૯-(૫૫+૮+૨)=૬૫=૨૪ અગિયારમામા.

૮૯-(૫૫+૮+૧)=૬૪=૨૫ બારમામા

આઠ સાથેની ક્રિયા થઇ રેહેતા ખંડ ૨૩ બાકી રહ્યા, માટે ૫૫ સાથે ૫ ની ક્રિયા કરતાં,

૮૯-(૫૫+૫+૩)=૬૩=૨૬ આવીગયા છે.

૮૯-(૫૫+૫+૨)=૬૨=૨૭ તેરમામા.

૮૯-(૫૫+૫+૧)=૬૧=૨૭ ચૌદમામા.

૫, સાથેની ક્રિયા થઇ રેહેતા બાકી ખંડ ૨૧ રહ્યા, તે ભરવા ૫૫ સાથે ૩ ની ક્રિયા કરતા—

८९-(५५+३+२)=६०=२९ आवी गया छे.

८९-(५५+३+१)=५९=३० पंदरमामां भरवा.

३ साथेनी क्रिया थइ रेहेतां बाकी खंड २० रह्या, ते भरवा २ साथे क्रिया करतां-

८९-(५५+२+१)=५८=३१ आवी गया.

उपर प्रमाणे ५५ साथेनी सर्व अंकनी क्रिया थइ रही अने २० खंड बाकी रह्या, तेथी ५५ पछीना अंक ३४ साथे तेनी आगळना अंकोनी क्रिया करतां-

८९-(३४+२१+१३)=६८=२१ आवी गया छे.

८९-(३४+२१+ ८)=६३=२६ आवी गया छे.

८९-(३४+२१+ ५)=६०=२९ ,,

८९-(३४+२१+ ३)=५८=२९ ,,

८९-(३४+२१+ २)=५७=३१ ,,

८९-(३४+२१+ १)=५६=३३ ,,

३४ साथे २१ नी क्रिया थइ रेहेतां पण २० खंड बाकी रह्या, माटे ३४ साथे १३ नी क्रिया करतां—

८९-(३४+१३+ ८)=५५=३४ आवी गया छे.

८९-(३४+१३+ ५)=५२=३७ सोळमामां.

८९-(३४+१३+ ३)=५०=३९ सत्तरमामां.

८९-(३४+१३+ २)=४९=४० अढारमामां.

८९-(३४+१३+ १)=४८=४१ ओगणीशमामां.

३४ साथे १३ नी क्रिया थइ रेहेता बाकी खंड १६ भरवाना रह्या, माटे ३४ साथे ८ नी क्रिया करतां

८९-(३४+८+५)=४७=४२ आवी गया छे

८९-(३४+८+३)=४५=४४ वीशमां.

८९−(३४+८+२)=४४=४५ एकवीशमामां.

८९−(३४+८+१)=४३=४६ बावीशमामां.

३४ साथे ८ नी क्रिया थइ रेहेता बाकी खंड १२ रह्या ते भरवा ३४ साथे ५ नी क्रिया करता—

८९−(३४+५+३)=४२=४७ आवी गया छे.

८९−(३४+५+२)=४१=४८ त्रेवीशमामा.

८९−(३४+५+१)=४०=४९ चोवीशमामा.

३४ साथे ५ नी क्रिया थइ रही पण ११ खंड बाकी रह्या, माटे ३४ साथे पाच पछीना ३ अकनी क्रिया करतां—

८९−(३४+३+२)=३९=५० आवी गया छे.

८९−(३४+३+१)=३८=५१ पचीशमामां.

३४ नी ३ नी साथेनी क्रिया थइ रही, पण १० खंड बाकी रह्या, माटे ३४ साथे २ नी क्रिया करता—

८९−(३४+२+१)=३७=५२ आवी गया छे.

३४ साथेनी बधी क्रिया थइ रेहेतां पण १० खंड भरवा बाकी रह्या, माटे ते पछीना २१ अंक साथे क्रिया करता—

८९−(२१+१३+८)=४२=४७ आवी गया छे.

८९−(२१+१३+५)=३९=५० आवी गया छे.

८९−(२१+१३+३)=३७=५२ ,,

८९−(२१+१३+२)=३६=५३ ,,

८९−(२१+१३+१)=३५=५४ ,,

२१ साथे १३ पछीना आठ अंकनी क्रिया करतां—

८९−(२१+८+५)=३४=५५ आवी गया छे.

८९−(२१+८+३)=३२=५७ छवीशमामां.

८९-(२१+८+२)=३१=५८ सत्तावीशमामां
८९-(२१+८+१)=३०=५९ अठ्ठावीशमामां.

२१ साथेनी ८ नी क्रिया थइ रेहेतां पण ७ खंड भरवाना बाकी रह्या, माटे ते साथे ५ नी क्रिया करतां—

८९-(२१+५+३)=२९=६० आवी गया छे.
८९-(२१+५+२)=२८=६१ ओगणत्रीशमामां.
८९-(२१+५+१)=२७=६२ त्रीशमामां.

२१ साथे ५ नी क्रिया थइ रेहेतां ५ खंड भरवना रह्या माटे ते साथे ३ नी क्रिया करता—

८९-(२१+३+२)=२६=६३ आवी गया छे.
८९-(२१+३+१)=२५=६४एकत्रीशमामां.

२१ साथे ३ नी क्रिया थइ रेहेता २ नी करवानी माटे—

८९-(२१+२+१)=२४=६५ आवी गया छे.

२१ नी सर्व क्रिया थइ रेहेता ते पछीना १३ अकनी साथे क्रिया करतां—

८९-(१३+८+५)=२६=६२ आवी गया छे.
८९-(१३+८+३)=२४=६५ ,,
८९-(१३+८+२)=२३=६६ ,,
८९-(१३+८+१)=२२=६७ ,,

१३ नी आठनी साथेनी क्रिया थइ रेहेता ५ नी करवाम आवी तो—

८९-(१३+५+३)=२१=६८ आवी गया छे.
८९-(१३+५+२)=२०=६९ बत्रीशमामा.
८९-(१३+५+१)=१९=७० तेत्रीशमामां.

१३ नी साथे ५ नी क्रिया थइ रेहेतां ३ नी करवानी रही ते करतां—

८९–(१३+३+२)=७१ आवी गया छे.

८९–(१३+३+१)=१७=७२ चोत्रीशमामां

१३ नी साथे त्रण ५ नी क्रिया थइ जतां, २ साथे क्रिया करवानी माटे—

८९–(१३+२+१)=१६=७३ आवी गया छे.

१३ साथे सर्व क्रिया थइ रेहेतां, ८ साथे करवानी रही ते करतां—

८९–(८+५+३)=१६=७३ आवी गया छे.

८९–(८+५+२)=१५=७४ ,,

८९–(८+५+१)=१४=७५ ,,

८ साथे ५ नी क्रिया थइ रेहेतां ३ साथे करवानी रही ते करतां—

८९–(८+३+२)=१३=७६ आवी गया छे.

८९–(८+३+१)=१२=७७ पांत्रीशमामा.

चार गुरु सामेनो लेहेर भरवा माटे नियम प्रमाणे तेथी पूर्वना दंडमांना चच्चारनो सर्वालो लइ मात्रानी रूप संख्यामांथी बाद करवो जोइये; माटे तेम करतां—

८९–(५५+३४+२१+१३)=१२३ बाद जता नथी

५५ नी साथे ३४ ना योगनी कोइ पण संख्या ८९ उपरांत थइ जतां निरुपयोगी छे, माटे २१ नी साथे मिश्रण करतां—

८९–(५५+२१+१३+८)=९७ बाद जता नथी.

८९–(५५+२१+१३+५)=९४ ,,

८९-(५५+२१+१३×३)=९२ बाद जता नथी.

८९-(५५+२१+१३+२)=९१ ,,

८९-(५५+२१+१३+१)=९० ,,

५५,२१, नी साथे १३ नी क्रिया थइ रही, माटे आठ साथे करता—

८९-(५५+२१+८+५)=८९=०

८९-(५५+२१+८+३)=८७=२ पेहेला खंडमां.

८९-(५५+२१+८+२)=८६=३ बीजा खंडमां.

८९-(५५+२१+८+१)=८५=४ त्रीजा खंडमां.

५५, २१नी साथे ८ नी क्रिया थइ रही, माटे ५ नी करतां—

८९-(५५+२१+५+३)=८४=५ आवी गया छे.

८९-(५५+२१+५+२)=८३=६ चोथा खंडमां.

८९-(५५+२१+५+१)=८२=७ पांचमा खंडमां.

५५, २१ साथे ५ नी क्रिया थइ रेहेतां, हवे ३ नी करवी रही ते करतां—

८९-(५५+२१+३+२)=८१=८ आवी गया छे.

८९-(५५+२१+३+१)=८०=९ छठ्ठा खंडमां

३ साथे क्रिया थइ रेहेतां २ साथे करवी रही ते करता—

८९-(५५+२१+२+१)=७९=१० आवी गया छे.

५५ साथे २१ नी क्रिया थइ रही, माटे ते पछीना १३ साथेनी क्रिया करवानी रही ते करतां—

८९-(५५+१३+८+५)=८१=८ आवी गया छे.

८९-(५५+१३+८+३)=७९=१० ,,

८९-(५५+१३+८+२)=७८=११ ,,

८९-(५५+१३+८+१)=७७=१२ ,,

५५, १३, साथे ८ नी क्रिया थइ रही, माटे ते पछी-ना ५ नी क्रिया करवी रही ते करतां—

८९-(५५+१३+५+३)=७६=१३ आवी गया छे.

८९-(५५+१३+५+२)=७५=१४ सातमा खंडमां.

८९-(५५+१३+५+१)=७४=१५ आठमा खंडमां.

५५, १३ नी ५ साथेनी क्रिया थइ रेहेतां ३ नी कर-वानी रही ते करतां—

८९-(५५+१३+३+२)=७३=१६ आवी गया छे.

८९-(५५+१३+३+१)=७२=१७ नवमा खंडमां.

त्रण पछी बेनी साथेनी क्रिया करवानी रही ते करता-

८९-(५५+१३+२+१)=७१=१८ आवी गया छे.

५५ साथे १३ नी क्रिया थइ रेहेता ते पछीना ८ नी करवी रही ते करतां—

८९-(५५+८+५+३)=७१=१८ आवी गया छे.

८९-(५५+८+५+२)=७०=१९ „

८९-(५५+८+३+१)=६९=२० „

५५ तथा ८ नी साथे ५ नी क्रिया थइ रही माटे ते पछीना ३ अने २ छे ते साथे क्रिया करी तो—

८९-(५५+८+३+२)=६८=२१ आवी गया छे.

८९-(५५+८+३+१)=६७=२२ दशमा खंडमां.

८९-(५५+८+२+१)=६६=२३ आवी गया छे.

५५ साथे ८ नी सर्व क्रिया थइ रही माटे ते पछीना ५ नी साथे करतां.

८९-(५५+५+३+२)=६५=२४ आवी गया छे.

८९-(५५+५+३+१)=६४=२५ „

८९-(५५+२१+१३×३)=९२ बाद जता नथी.

८९-(५५+२१+१३+२)=९१ ,,

८९-(५५+२१+१३+१)=९० ,,

५५,२१, नी साथे १३ नी क्रिया थइ रही, माटे आठ साथे करतां—

८९-(५५+२१+८+५)=८९=०

८९-(५५+२१+८+३)=८७=२ पेहेला खंडमां.

८९-(५५+२१+८+२)=८६=३ बीजा खंडमां.

८९-(५५+२१+८+१)=८५=३ त्रीजा खंडमां.

५५, २१नी साथे ८ नी क्रिया थइ रही, माटे ५ नी करतां—

८९-(५५+२१+५+३)=८४=५ आवी गया छे.

८९-(५५+२१+५+२)=८३=६ चोथा खंडमां.

८९-(५५+२१+५+१)=८२=७ पांचमा खंडमां.

५५, २१ साथे ५ नी क्रिया थइ रेहेतां, हवे ३ नी करवी रही ते करतां—

८९-(५५+२१+३+२)=८१=८ आवी गया छे.

८९-(५५+२१+३+१)=८०=९ छठ्ठा खंडमां

३ साथे क्रिया थइ रेहेता २ साथे करवी रही ते करतां—

८९-(५५+२१+२+१)=७९=१० आवी गया छे.

५५ साथे २१ नी क्रिया थइ रही, माटे ते पछीना १३ साथेनी क्रिया करवानी रही ते करतां—

८९-(५५+१३+८+५)=८१=८ आवी गया छे.

८९-(५५+१३+८+३)=७९=१० ,,

८९-(५५+१३+८+२)=७८=११ ,,

८९-(५५+१३+८+१)=७७=१२ ,,

५५, ५, अने त्रणनी साथे क्रिया थइ रही, माटे २, नो करतां—

८९–(५५+५+२+१)=६३=२६ आवी गया छे.

५५, साथेनी सर्व क्रिया थइ रही, माटे ते पछीना ३४ साथे करी तो—

८९–(३४+२१+१३+८)=७६=१३ आवी गया छे.

८९–(३४+२१+१३+५)=७३=१६ ,,

८९–(३४+२१+१३+३)=७१=१८ ,,

८९–(३४+२१+१३+२)=७०=१९ ,,

८९–(३४+२१+१३+१)=६९=२० ,,

३४, साथे २१,नी क्रिया थइ रही माटे १३ नी करी तो—

८९–(३४+१३+८+५)=६०=२९ आवी गया छे.

८९–(३४+१३+८+३)=५८=३१ ,,

८९–(३४+१३+८+२)=५७=३२ ,,

८९–(३४+१३+८+१)=५६=३३ ,,

३४, ने १३, नी साथेनी क्रिया थइ रही, माटे ५ साथे करवानी रही ते करतां—

८९–(३४+१३+५+३)=५५=३४ आवी गया छे.

८९–(३४+१३+५+२)=५४=३५ अगियारमामां.

८९–(३४+१३+५+१)=५३=३६ बारमामां.

३४ १३, ने ५ नी क्रिया थइ रही, माटे ३ नी करवानी रही ते करतां—

८९–(३४+१३+३+२)=५२=३७ आवी गया.

८९–(३४+१३+३+१)=५१=३८ तेरमामां.

३४, १३ ने ३ नी क्रिया थइ रही, माटे २ साथे करवानी रही ते करतां—

८९–(३४+१३+२+१)=५०=३९ आवी गया छे.

३४ साथे १३ नी क्रिया थइ रही, माटे ८ नी करवी रही ते करतां—

८९–(३४+८+५+३)=५०=३९ आवी गया छे.

८९–(३४+८+५+२)=४९=४० "

८९–(३४+८+५+१)=४८=४१ "

३४ ने ८ नी क्रिया थइ रही, हवे ३नी करवी रही, ते करतां—

८९–(३४+८+३+२)=४७=४२ आवी गया छे.

८९–(३४+८+३+१)=४६=४३ चौदमा खंडमां.

३४ ने ८ साथे ३ पत्या, माटे, २ साथे क्रिया करतां-

८९–(३४+८+२+१)=४५=४४ आवी गया छे.

३४ साथे ८ नी क्रिया थइ रही, माटे ५ साथे करतां.

८९–(३४+५+३+२)=४४=४५ आवी गया छे.

८९–(३४+५+३+१)=४३=४६ "

३४, ने ५, साथे ३, पती गया, माटे २ नी क्रिया करतां—

८९–(३४+५+२+१)=४२=४७ आवी गया छे.

३४ साथे ५ नी क्रिया थइ रही, माटे त्रण साथे करतां—

८९–(३४+३+२+१)=४०=४९ आवी गया छे.

३४ साथेनी बधी क्रिया थइ रही, माटे २१ साथे करतां—

८९–(२१+१३+८+५=४७=४२ आवी गया छे.

८९–(२१+१३+८+३)=४५=४४ "

८९–(२१+१३+८+२)=४४=४५ "

८९–(२१+१३+८+१ =४३=४६ "

२१, १३ ने ८ नी साथेनी क्रिया थइ रही, माटे ५नी साथे करतां—

८९–(२१+१३+५+३)=४२=४७ आवी गया छे.

८९–(२१+१३+५+२)=४१=४८ ,,

८९–(२१+१३+५+१)=४०=४९ ,,

५ नी साथेनी क्रिया थइ रही ने ३ नी करवानी रही माटे–

८९–(२१+१३+३+२=३९=५० आवी गया छे.

८९–(२१+१३+३+१)=३८=५१ ,,

३ नी क्रिया थइ रही ने २ नी करवानी रही माटे—

८९–(२१+१३+२+१)=३७=५२ आवी गया छे.

२१ साथे १३, नी क्रिया थइ रही माटे ८ नी करतां—

८९–(२१+८+५+३)=३७=५२ आवी गया छे.

८९–(२१+८+५+२)=३६=५३ ,,

८९–(२१+८+५+१)=२५=५४ ,,

२१, ने ८, साथे ५ नी क्रिया थइ रही, माटे ३ साथे करतां—

८९–(२१+८+३+२)=३४=५५ आवी गया छे.

८९–(२१+८+३+१)=३३=५६ पंदरमामां.

५, गुरुनो १, खंड भरवा माटे पांच पांच खंडनो सर्वाळो करवो तो—

८९–(५५+३४+२१+१३+८)=१३१,बाद थता नथी.

तेमज ५५, साथे ३४, नो सर्वाळो ८९,थइ जवाथी ते साथेनी क्रिया निरर्थक छे, माटे ५५, ने २१, नी साथे बीजा अंकनी क्रियामा छेवट नीचेनुं रूप आव्युं; तेने पेहेला खंडमां मूक्युं तो छेवट पताका बिम्ब पृष्ट ५५ मां आप्या प्रमाणे तैयार थयुं.

८९-(११+११+८+२+१)=८८=१

उपर आपेली रीति प्रमाणे एकथी आरंभी आठ मात्रा पर्यन्तना प्रस्तारनी पताका तैयार करी आ नीचेना बिम्बमां आपेली छे, तेथी ए नियमो वांचनारने वधारे व्यक्त थशे.

एक मात्रानी पतकानुं बिम्ब.

१ । | १ | १ शून्य गुरुनु रूप.

बे मात्रानी पताकानुं बिम्ब.

२ । सर्व लघुनुं स्थान.	२	१ शून्य गुरुनु रूप.
१ ऽ एक गुरुनुं स्थान.	१	१ एक गुरुनु रूप.

त्रण मात्रानी पताकानुं बिम्ब.

३ ।	३		१ शून्य गुरुनुं रूप.
	२		
१ ऽ ने १ ल.	१	२	२ एक गुरुनुं पेहेलुं अने बीजुं रूप.

चार मात्रानी पताकानुं बिम्ब.

४ । लघु	५			शून्य गुरुनुं पाचमुं रूप,
	३			
१ ऽ, २ ।	२	३	४	एक गुरुनां ३ रूप.
२ ऽ	१			बे गुरुनुं पेहेलुं रूप.

पांच मात्रानी पताकानुं बिम्ब.

५ ।	८				१ शून्य गुरु अथवा पांच लघुनुं
	५				आठमु रूप.
१ ऽ, ३. ।	३	५	६	७	एक गुरुनां ४ रूप.
	२				
२ ऽ, १. ।	१	२	४		बे गुरुनां ३ रूप.

छ मात्रानी पताकानुं बिम्ब.

६ । ० गुरु	१३		१ शून्य गुरुदर्शक रूपाङ्क.
	८		
१ ऽ, ४ ।	५	८ | १० | ११ | १२	एक गुरुदर्शक रूपाङ्क ५.
	३		
२ ऽ, २ ।	२	३ | ४ | ६ | ७ | ९	बे गुरुदर्शक
३ ऽ	१		रूपाङ्क ६.

सात मात्रानी पताकानुं बिम्ब.

७ ।	२१		१ शून्य गुरुदर्शक रूपाङ्क.
	१३		
१ ऽ, ५ ।	८	१३ | १६ | १८ | १९ | २०	६ रूप एक गुरुदर्शक.
	५		
२ ऽ, ३ ।	३	५ | ६ | ७ | १० | ११ | १२ | १४ | १५ | १७	
	२		उपरना १० रूप बे गुरुदर्शक,
३ ऽ, १ ।	१	२ | ४ | ९	४ रूप त्रण गुरुदर्शक.

आठ मात्रानी पताकानुं बिम्ब.

८।	३४		१ शून्य गुरु दर्शक रूपाङ्क.
	२१		
१ऽ,६।	१३	२१ | २६ | २९ | ३१ | ३२ | ३३	७ एक गुरु दर्शक रूपाङ्क
	८		
२ऽ,४।	५	८ | १० | ११ | १२ | १६ | १८ | १९ | २० | २३ | २४ २५ | २७ | २८ | ३०	
	३		उपरना १५ बे गुरु दर्शक रूपाक.
३ऽ,२।	२	३ | ४ | ६ | ७ | ९ | १४ | १५ | १७ | २२	३ गुरु द० रूपांक १०
४ऽ	१		चार गुरुदर्शक रूपाङ्क.

आठ मात्रानी पताका भरवानी कृति.

पेहेली लेहेर एक गुरुदर्शक रूपांक भरवानी छे, एमां दंड शीर्षाङ्क ३४ छे, तेमांथी २१ बाद करतां १३ शेष रेहे छे, ते अंक तो दंडमां प्रथमथीज अंक भरतां आवी गयो छे, माटे ते वर्ज्य करी पृष्ट ५१ मां आपेला पताका तैयार करवाना नियम १

प्रमाणे तेथी आगळना २१, १३, ८, ५, ३, २, अने १ अंक तेमांथी शोध्या, तो एक गुरुनी लेहेरना खंडवार अंक नीचे प्रमाणे आव्या—

३४−२१=१३ प्रथम खंडनो अंक.

३४−१३=२१ द्वितीय खंडनो अंक.

३४−८=२६ त्रीजा खंडनो अंक.

३४−५=२९ चोथा खंडनो अंक.

३४−३=३१ पांचमा खंडनो अंक.

३४−२=३२ छठ्ठा खंडनो अंक.

३४−१=३३ सातमा खंडनो अंक.

बे गुरु स्थाननी लेहेर भरवाने पेहेली लेहेरनो दंडाङ्क १३, छे तेमाथी तेनी पछीना दंडाङ्क बाद थतां—

१३−५= ८ बीजा खंडनो अंक.

१३−३=१० त्रीजा खंडनो अंक.

१३−२=११ चोथा खंडनो अंक.

१३−१=१२ पाचमा खंडनो अंक.

पांचमा खंडनो अंक भरतां १० खंड बाकी रह्या, ते भरवाने पेहेली लेहेरना १३ दंडाङ्कनी पछीनी लेहेरनो प्रथम अंक २१ छे तेमांथी १३ नीचेनो ८ बाद करतां शेष १३ रेहेछे. ते अंक तो पूर्वे भराइ गयो छे माटे ते वर्ज्य करी ८ नी नीचेना ५ इ० दंडाङ्क बाद करतां—

२१−५=१६ छठ्ठा खंडनो अंक.

२१−३=१८ सातमा खंडनो अंक.

२१−२=१९ आठमा खंडनो ,,

२१−१=२० नवमा ,, ,,

२१ साथे कृति थइ रही; एटले तेनी पछीनो लेहेराङ्क २६ छे तेमांथी दंडाङ्क १३नी नीचेना ८ अंक बाद करतां १८ आवे छे ते पूर्वे भराइ गयो छे माटे ते वर्ज्य करी आगळ क्रिया चलावतां—

२६—५=२१ आवी गयो छे माटे नहि.

२६—३=२३ दशमा खंड माटे.

२६—२=२४ अगियारमा खंडनो.

२६—१=२५ बारमा खंडनो.

२९—५=२४ आवी गयो छे माटे नहि.

२९—३=२६ ,, ,,

२९—२=२७ तेरमा खंड माटे.

२९—१=२८ चौदमा खंड माटे.

३१—१=३० पंदरमा खंड माटे.

ए प्रमाणे ए बे गुरूनां रूप बतावनारा आंकडानी लेहेर पूरी थइ.

त्रण गुरुना स्थाननी लेहेर भरवा माटे बे गुरुनी लेहेरना दंडाङ्क पांचमांथी ते नीचेना ३ बाद करतां २ शेष रेहेछे ते दंडाङ्कमां ज पूर्वे आवी गयेल छे माटे ते वर्ज्य करीने तेनी नीचेना २ इ० बाद करवा तो—

५—२=३ बीजा खंड माटे.

५—१=४ त्रीजा खंड माटे.

बाकीना खंड ७ खाली रह्या ते भरवाने ५ दंडाङ्कनी लेहेरनी पासेनो अंक तेमांथी बाद करवो तो—

८—२=६ चोथा खंड माटे.

८—१=७ पांचमा खंड माटे.

आठपांचनी नीचेनो दंडाङ्क ३ बाद करतां बाकी शेष ५ रेहेछे ते भराई गएल छे माटे आठनी साथेनी क्रिया पूरी थतां तेनी पासेना खंडना दश अंक साथे क्रिया करवानी छे, तो. तेमांथी दंडाङ्क ३, २ बाद करतां जे शेष आवेछे ते अंक प्रथम भराइ गया छे ते वर्ज्य कर्या. तेमज १० पछीना खंडांक ११ तथा १२ मांथी दंडाङ्क ३, २, १ अनुक्रमे बाद करतां जे शेष रेहेछे ते अंक पूराइ गया छे माटे १६ अंकमांथी ३ दंडाङ्क बाद कर्या तो १३ आवेछे ते पण भराइ गएल छे माटे वर्ज्य. हवे १८ साथेनी क्रिया करतां तेमांथी ३, २ बाद करतां १५ अने १६ आवेछे, ते प्रथम आवी गया छे माटे वर्ज्य. १८, पछीना १९ तथा २० मा खंड साथे क्रिया करी तेमां जे परिणामाङ्क आवेछे ते बधा प्रथम भराइ गयाछे माटे २३ मा खंड साथे क्रिया करवा ३,२ बाद करतां २० अने २१ अंक आवेछे, ते प्रथम मंडाइ गया छे; माटे २३ मांथी तेमने बाद कर्या, तो ए लेहेरना बाकीना खंडवार अंक नीचे प्रमाणे आव्या:—

१०–१= ९ छठ्ठा खंड माट.

१६–२=१४ सातमा ,,

१६–१=१५ आठमा ,,

१८–१=१७ नवमा ,,

२३–१=२२ दशमा ,,

केटलाक उपरनी रीतिथी उलटी रीते आ प्रमाणे बिम्ब बनावेछे.

आ रीतिमां खंड भरवानी रीति प्रथमना जेवीज छे, पण पेहेली रीतिना बिम्बथी आ बिम्ब उलटु छे; एटले प्रथमनी रीतिमां सर्वलघुनुं स्थान टोंच उपर आवेछे, तेम आ रीतिमां सर्वथी हेठळ आवेछे. अने पछी ते उपर अकेक खडने अंतरे जे लेहेरो चालेछे, ते प्रत्येक, अकेक गुरु वधता तथा बबे लघु घटनानी थायछे; अने तेमां मेरूमां कह्या प्रमाणे खड करवामां आवेछे.

पेहेली रीतिमां दंडमा संख्यांक हेठळथी आरंभी मूकाय-छे अने आ रीतिमां टोचथी आरभी नीचे उतरायछे. पछी प्रत्येक लेहेरना खड भरवानी रीति एवी छे के, दडमां जे संख्यांक भराया होय, तेमा छेल्लो आंकडो होय तेमाथी तेना उपरनो आकडो [1] छोडीने बीजा आकडा अनुक्रमे बाद करीने पताकानी लेहेरोना खडमा नग्वा ए प्रमाणे एक लेहेर पूरी थया पछी, ते लेहेरना अंकमांथी उपरनी रीते नवीन लेहेरो बनाववी. तेना खंड भरवानो नियम पेहेली रीति जेवोज छे.

प्रत्येक लेहेर केटला केटला गुरु लघु दर्शक छे[2] ते रूपांक बतावे-छे. ते तेनी डाबी बाजुए लखाय छे. तमा पेहेली रीतिथी एटलोज फेर छे के, पेहेली रीतिमा शून्यगुरु, एटले सर्व लघुनु स्थान टोंच उपर होयछे तेने बदले आ रीतिमा ते सौथी नीचे आवेछे. अर्थात् ए रीति पेहेली रीतिथी एकदर उलटी छे ते उपरनी आकृतिथी झट समजाशे एटले विशेष विवेचन करवानी अगत्य

---

१ जे दडाकनी साथे लेहेरो विस्तारायछे ते बिनाना तेमाना सख्याक खाली रेहेछे ते बाद करता जे शेष रेहेछे, ते अक तो दडमा सख्याक प्रथम भरेला होयछे, तेमा आवी गएला होयछे अने एक वार आवेलो अक फरीने पताकामा दाखल करातो नथी, माटे ते वर्ज्य करवामा आवेछे

रेहेती नथी. आ बीजी रीतिये कोइक पिंगलकार पताका बनावेछे; परंतु सामान्य रीति प्रथमनी ज छे, अने बीजी रीति-वाळा पण लेहेरो भरवानो आरभ नीचेथी करी उंच- चडता जायछे; तो पछी ए रीतिमां उलटा बिम्ब सिवाय कांइ विशेषता जणाती नथी. तो पण ते अन्य अभिप्राय तरीके दाखल करवामां आवी छे.

उत्क्रमप्रस्तार पताकानी रीति.

क्रम पताकामां आवेला अंकने जमणी तरफनी अथवा आडी पताकामां उपरनी लेहेरमां भरवाना अक आवता जाय तेने छेल्ली लेहेरथी अथवा डाबी भणीनी प्रथम लेहेरथी क्रमवार भरवा.

छ मात्रानी उत्क्रम प्रस्तार पताका.

गुरु सूचक		३	२	१	०	
छ मात्रानी मेरु पंक्ति		१	६	५	१	
छ मात्राना दडाक	१	२	३	५	८	१३
पताका		१३	५	२	१	
			७	३		
			८	४		
			१०	६		
			११	९		
			२१			

समजण.

क्रम पताका प्रमाणे १३ नो अक शून्य गुरुनी लेहेरमां मूकवो जोइये तेने आमां सर्व गुरुनी लेहेरमा मूक्यो. ते पछीना उत्तरोत्तर मळेला अंक तेथी एक ओछा गुरुनी लेहेरमां अने छेल्लो एक १ सर्व लघुनी लेहेरना भरेल छे.

मर्कटी.

अमुक मात्राना प्रस्तारमां लघु, गुरु अने सर्ववर्ण तथा कळा केटली होयछे ते जेथी जाणी शकायछे तेने मर्कटी केहेछे.

रीति.

उभी पंक्तिओ छ बनाववी अने जेटली मात्रा सुधीनी मर्कटी रचवी होय तेटली आडी करवी.

पेहेली पंक्तिमां १, २, ३, ४, इत्यादि चडता अंक लखी जवा एटले ए खंडमां जेटली मात्रानी मर्कटी करवी हशे तेटला अंक आवशे.

बीजी हारमां १, २, ३, ५ इत्यादि संख्याना अंक (छेल्ला बे अंकनो सर्वाळो करी) अथवा पृष्ट ६ मां आपेला कोटकमांथी क्रमवार लइ लखता जवा. ते पंक्ति रूपसंख्या-कनी समजवी.

त्रीजी पंक्तिना खंड पूरवाने माटे प्रत्येक उभा खंडना उपरनी पेहेली तथा बीजी पंक्तिना अंकनो गुणाकार करी तेमा लखवो. ते पंक्ति सर्व कळा अथवा मात्राओनी समजवी.

चोथी तथा पांचमीने पडती मूकीने, छट्टी भरवा मांडवी. ते पंक्तिना प्रथम खंडमां १ लखवो. पछी तेनु बमणु करीने

त्रीजी हारना बीजा खंडना अंकमांथी बाद करीने शेष अंक रेहे ते छठ्ठी हारना बीजा खंडमां लखवो. पछी तेज अंकनुं बमणुं करीने, त्रीजी हारना त्रीजा खंडना आंकडामांथी बाद करवो, ने जे अंक आवे, ते छठ्ठी हारना त्रीजा खंडमां पूरवो. ए प्रमाणे खाली खंड भरवानो होय ते खंडनी डाबी बाजुए जे अंक छठ्ठी पक्तिमां भरी गया होइये, तेने बमणो करी त्रीजी पंक्तिमा छठ्ठी पंक्तिना खाली खंड भरवाना स्थान उपर जे अंक होय तेमांथी बाद करी, नवा स्थानमां भरता जवा. ए प्रमाणे सर्व पक्ति भरवी. ए छठ्ठी पंक्ति लघु अक्षरो जणावनारी समजवी.

पांचमी हारना खंड भरवा माटे तेना पेहेला खानामां शून्य मूकवुं, अने पछी छठ्ठी हारना आंकडा बीजा खानाथी प्रारंभी अनुक्रमे भरी जवा; एटले गुरु अक्षर जणावनारी पांचमी पक्ति थशे.

चोथी हारना खंड भरवा माटे पांचमी अने छठ्ठी पंक्तिना खडांकोनो अनुक्रमे सर्वाळो मूकवो. ते पंक्ति अमुक मात्रानी जातिमां लघुगुरु मळीने कुल केटला अक्षरो आवेछे ते जणावशे.

दशमात्रानुं मर्कटी विम्ब.

१	मात्रा सख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
२	रूप ,,	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९
३	सर्व मात्रा ,,	१	४	९	२०	४०	७८	१४७	२७२	४९५	८९०
४	वर्ण ,,	१	३	७	१५	३०	५८	१०९	२०१	३६५	६५५
५	गुरू ,,	०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५
६	लघु ,,	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४२०

बीजी रीति.

केटलाक मर्कटीमा छ उभी पंक्तिने बदले सात बनाववा केहेछे अने ते क्रममां नीचे प्रमाणे फेरफार करेछे.

पेहेली त्रण पंक्तिओ तो तेओ उपरनी रीते ज कळा. संख्या तथा सर्व मात्रानी करेछे. पण चोथी पंक्ति गुरुनी करेछे. ते पेहेली रीतिमां पांचमी थायछे.

पांचमी पंक्ति लघुनी मूकेछे, जे पेहेली रीतिमां सौथी छेल्ली एटले छट्ठे स्थाने छे.

छट्ठी पंक्ति सर्ववर्ण केटला छे ए दर्शावेछे. ते पेहेली रीतिमां ४थी पंक्तिमां आवेछे.

सातमी पंक्ति पिंड बतावेछे, तेमां त्रीजी पंक्ति जे सर्व-कळा दर्शावनारी छे, तेनुं अर्द्ध करीने भरवुं. पण ए पंक्तिना प्रथम घरमा शून्य ज मूकवु.

एक मात्राथी दश मात्रा सुधीनु मर्कटी बिम्ब.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कला.
१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९	मत्स्याक के रूप
१	४	९	२०	४०	७८	१४७	२७६	४९५	८९०	सर्व कला.
०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	गुरु
१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४२०	लघु.
१	३	७	१५	३०	५८	१०९	२०१	३६५	६५५	वर्ण.
०	२	४॥	१०	२०	३९	७३॥	१३६	२४७॥	४४५	पिंड.

समजुती.

वर्ण प्रस्तारादि प्राक्रिया.

जात्यन्तर्गत लघु गुरु मात्राना स्थान फेरथी थतां तेमनां स्वरूपान्तरो, जेम मात्रिक प्रस्तारादि क्रियाथी जाणी शकाय छे; तेम वृत्त अर्थात् अक्षरमेळ छंदोन्तर्गत गुरु लघु वर्णनां स्थान फेरफारथी थतां वृत्त स्वरूपान्तरो, वर्ण प्रस्तारादि प्राक्रियाथी जाणी शकायछे. मात्रिक प्राक्रियानी पेठे आ अष्टविध वर्ण प्रस्तारादि साधन पण अष्ट प्रकारे करवामां आवेछे. आ विषे पूर्वना प्रकरणमां घणा विस्तारथी लखवामां आव्युं छे, एनी अहिं पुनरुक्ति न करतां कथित प्रक्रिया साधन करवा माटे जे कंइ खास नियमो छे, ते तथा मात्रिकप्रकरणमां जणावेला नियमोथी आमां जे कांइ नवुं छे तेज मात्र आ प्रकरणमां अमे क्रमवार आपीशुं.

अक्षरवृत्तसंख्या काहाडवानी रीति.

एक १ अंक प्रथम लखी तेनुं बमणुं करोने, जे अंक आवे ते तेनी सामे मांडवो, पछी तेने बेए गुणीने त्रीजो अंक आवे ते प्रथम मांडेला अंकनी नीचे मांडवो, अने ए रीते आगळ पण बमणा बमणा करता जवुं. अथवा जेटला वर्णनी वृत्त संख्या काहाडवी होय तेटलामो घात बेना अंकनो करवो, एटले जे उत्तर आवे तेटलां वृत्त तेटला अक्षरनां थशे.

एक वर्णथी आरभी २६ वर्ण सुधीना छंदनां अनुक्रमे केटकेटलां वृत्त गुरुलघुना फेरफारथी थायछे, ते नीचेना कोष्टक उपरथी जणाशे.

वर्ण संख्यांक न्यास.

छंदनुं नाम.	वर्ण संख्या	बेना घात.	वृत्त संख्या.
उक्ता	१	$२^{१}$	२
अत्युक्ता	२	$२^{२}=२\times२$	४
मध्या	३	$२^{३}=२\times२\times२$	८
प्रतिष्ठा	४	$२^{४}=२\times२\times२\times२$	१६
सुप्रतिष्ठा	५	$२^{५}=२\times२\times२\times२\times२$	३२
गायत्री	६	$२^{६}=२\times२\times२\times२\times२\times२$	६४
उष्णिक	७	$२^{७}=२\times२\times२\times२\times२\times२\times२$	१२८
अनुष्टुप	८	$२^{८}=२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२$	२५६
बृहती	९	$२^{९}=२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२$	५१२
पंक्ति	१०	$२^{१०}=२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२$	१,०२४
त्रिष्टुप	११	$२^{११}=२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२$	२,०४८
जगती	१२	$२^{१२}=२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२\times२$	४,०९६

वर्ण संख्या जाणवानी टुंकी रीति एवी छे के, जेटला वर्णनी संख्या जाणवी होय ते वर्णांकने चारे भागतां जे लब्धि आवे, ते अंक १६ नो घात गणायछे; माटे ते हिसाबे १६ नो तेटलामो घात करतां जे संख्या आवे तेने, शेष रहेली संख्याना रूपांके गुणवाथी जे लब्धि आवे ते इष्ट संख्या जाणवी.

एक वर्णनां बे रूप थायछे, बेनां चार थायछे, अने त्रणना आठ थायछे, माटे उपर कह्या प्रमाणे घात कर्या पछी आवेली संख्याने, जो एक शेष होय तो बे गुणवाथी बे शेष होय तो चारे गुणवाथी अने त्रण शेष होय तो आठे गुणवाथी इष्ट संख्या आवेछे. अने शून्य शेष होय तो सोळनो उपर प्रमाणे घात करवाथी आवेछे.

४ वर्णनी संख्या काहाडवा ४÷४=१ लब्धि, शेष, ० = १६

५ वर्णनी संख्या काहाडवा ५÷४=१ लब्धि, १ शेष रहेछे तेनी रूप संख्या २ थी गुणतां १६×२= ३२

६ वर्ण माटे ६—४= १ लब्धि, २ शेष, तेनो रूपांक; ४ माटे १६×४=६४

७ वर्ण माटे ७—४=१ लब्धि, ३ शेष माटे १६ ने त्रणनो रूपांक ८ छे, तेथी गुणता १६×८=१२८

ए प्रमाणे अनुक्रमे करता जतां, जो १५ वर्णना छंदनी वृत्तसंख्या जाणवी होय तो,

१५÷४=३ लब्धि, ३ शेष रह्या. त्रण लब्धि छे माटे—

१६३=१६×१६×१६=४०९६

३ शेषनो रूपांक ८ छे, माटे ४०९६×८=३२,७६८.

१४ वर्णना छंदनी वृत्त संख्या माटे,

२४÷४=६ लब्धि, शेष ०. लब्धि छ छे, माटे—

$१६^६$=१६×१६×१६×१६×१६×१६=१,६७,७७,२१६.

२४ वर्णनी संख्या=तीन सतां, दो आगळां; आगळ पाछळ सोळ= त्रण वार सात=७७७.

तेनी आगळ बे=७७७२.

तेनी आगळ पाछळ सोळ=१६७७७२१६.

२६ वर्णनी वृत्तसंख्या काहाडवाने २६÷४=६ लब्धि, २ शेष. छ लब्धि छे, माटे—

१६ नो (षड्) घात छ वार घात करतां उपर संख्या—१,६७,७७,२१६ आवी छे, तेने २ शेषना ४ रूपांके गुणतां १,६७,७७,२१६×४=६,७१,०८,८६४.

वर्णप्रस्तार.

पिंगलमत.

अमुक वर्णनां सर्व मळी आटलां वृत्त थइ शकेछे, एम जाण्या पछी ते कयां कयां अथवा केवे केवे रूपे थायछे, ते बतावावानी रीतिने अथवा रूपभेद कथन विधिने प्रस्तार केहेछे.

रीति.

जेटला वर्णनो प्रस्तार करवो होय, तेटला वर्णनां गुरु चिह्न प्रथम लखवां, ते सर्व गुरुनुं प्रथम रूप समजवुं. ते उपरथी बीजां रूप उपजाववाने, पेहेला गुरुनी नीचे लघु चिह्न लखवुं; अने तेना जमणा हाथ भणी उपरना रूपमां होय तेवां अने तेटलां चिह्न मांडी जवां, अने पूर्वे एटले डाबा हाथ भणी, खूटे तेटला वर्ण प्रमाणे गुरु चिह्न ज मूकवां. आ रीते ज्यां-सुधी सर्व लघु चिह्नो आवे, त्यां सुधी करयाजवुं.

आ रीति प्रमाणे एकथी चारवर्णना प्रस्तार नीचे प्रमाणे थाय छे.

एक वर्ण प्रस्तार.	बे वर्ण प्रस्तार.
ऽ पेहेलो भेद.	ऽ ऽ १ लो भेद.
। बीजो भेद.	। ऽ २ जो भेद.
	ऽ । ३ जो भेद.
	। । ४ थो भेद.

त्रण वर्ण प्रस्तार.	चार वर्ण प्रस्तार.
ऽऽऽ १ लो भेद.	ऽऽऽऽ १ लो भेद.
।ऽऽ २ जो भेद.	।ऽऽऽ २ जो भेद.
ऽ।ऽ ३ जो भेद.	ऽ।ऽऽ ३ जो भेद.
।।ऽ ४ थो भेद.	।।ऽऽ ४ थो भेद.
ऽऽ। ५ मो भेद.	ऽऽ।ऽ ५ मो भेद.
।ऽ। ६ ठो भेद.	।ऽ।ऽ ६ ठो भेद.
ऽ।। ७ मो भेद.	ऽ।।ऽ ७ मो भेद.
।।। ८ मो भेद.	।।।ऽ ८ मो भेद.
	ऽऽऽ। ९ मो भेद.
	।ऽऽ। १० मो भेद.
	ऽ।ऽ। ११ मो भेद.
	।।ऽ। १२ मो भेद.
	ऽऽ।। १३ मो भेद.
	।ऽ।। १४ मो भेद.
	ऽ।।। १५ मो भेद.
	।।।। १६ मो भेद.

अगस्त्यमत सामान्य प्रस्तार.

जेटला वर्णनो प्रस्तार करवानो होय तेटलां प्रथम लघु चिह्न मूकवां. बाद चढता जवाना क्रमे प्रथम रूपमांना डाबी बाजुना पेहेला लघु उपर गुरु चिह्न मूकवुं. जमणी भणीनां चिह्न, नीचेना रूपमां जेवां ने जेटलां बाकी होय, तेटलां तेनी जमणी भणी मूकवां अने डाबी बाजुए रूपमां जेटली वर्णसंख्या खूटे तेटलां लघु चिह्न मूकी, सर्व गुरुनुं रूप आवे त्यांलगण नीचेना रूपमांथी उपरनुं रूप लाववानी क्रिया करते जवी; अने छेवट संख्या, सर्व गुरूनां रूपथी आरंभी गणवी.

प्रश्न. अगस्त्यमत सामान्य प्रस्तार विधिये बे वर्णनो प्रस्तार खेंचो.

बे वर्णनो प्रस्तार करवानो छे, माटे पेहेलुं रूप॥ नुं मांड्युं. तेमां डाबी बाजुए लघु छे तेनापर गुरु मूक्यो. जमणी बाजुए एक लघु बाकी छे तेने तेनी जमणी बाजुए मूकसो अने डाबी भणी खूटता वर्णनी जरुर नथी, माटे कंइ पण न मूक्युं; तो तेना उपरनुं रूप ऽ। थयुं. ए रूपमांना प्रथम लघुपर गुरु मूक्यो. जमणी भणी कंइ चिह्न नथी माटे कंइ न मक्युं, ने तेनी डाबी बाजुए, रूपमा एक वर्ण खूटेछे, माटे लघु चिह्न मूक्युं, तो त्रीजुं रूप ।ऽ थयुं. आ रूपमा प्रथम लघु छे, तेनापर गुरु मूक्यो. तेनी जमणी भणी एक गुरु छे, तेने मूकायला गुरुनी जमणी भणी मूक्यो. सर्वाळो करतां वर्ण खूटता नथी माटे डाबी बाजुए कंइपण न उमेर्युं, तो ते रूप ऽऽ थयुं. बे वर्णनो प्रस्तार छ ने बेउ गुरु चिह्न आवी गयां, माटे प्रस्तार पूरो थयो. तेमने संख्याक्रममां मूक्यां, तो ऽऽ, ।ऽ, ऽ।, ॥, आवां रूप थयां.

पिंगलमत स्थानविपरीत अथवा भामहमत प्रस्तार.

प्रथम गुरु अमुक बाजुथी गणी तेनी नीचे लघु चिह्न मूकवां इत्यादि स्थान विपर्य सिवाय सघळो विधि पिंगलमत सदृश छे. पिंगलमतमां डावी भणीना पेहेला गुरु चिह्न तळे लघु मूकायछे, तेम आमां जमणी भणीना पेहेला गुरु तळे मूकायछे. तेमां डावी बाजुए खूटता वर्ण माटे गुरु चिह्न मूकायछे, तेम आमा जमणी भणी खूटतां वर्णचिह्न गुरु चिह्नथी पूरवामा आवेछे अने तेमां जेम जमणी भणीना उपरनां रूपनां ज चिह्न नीचेना रूपमा मूकायछे, तेम आमां डाबी भणीनां रूप चिह्न डाबी तरफ मूकायछे, आ प्रमाणे करवाथी पिंगळमतथी उलटां रूप आवशे. जेमके त्रण अक्षरनो त्रीजो भेद । ऽ ऽ (य) थाय तेने बदले आ मत प्रमाणे ऽऽ । (त) थशे.

प्रश्न. त्रण वर्णनो भामहमत प्रमाणे प्रस्तार करो.

त्रण वर्णनो प्रस्तार करवानो छे, माटे पेहेला त्रण गुरु चिह्न मूक्यां. बीजुं रूप लाववा माटे ए मूकायलां रूपमांना जमणी भणीना गुरु तळे लघु मूक्यो. डावी बाजुनां चिह्न उपरनां ज मूक्यां, तो बीजुं रूप ऽ ऽ । थयुं, जमणी तरफना पेहेला गुरु तळे लघु मूक्यो. तेनी डाबी भणीनुं चिह्न ऽ कायम राख्युं ने जमणी भणी एक वर्ण खूट्यो; माटे गुरु चिह्न उमेर्युं; तो त्रीजुं रूप ऽ । ऽ आव्युं. त्रीजामाथी चोथुं ऽ । । चोथामांथी पांचमुं । ऽ ऽ, पांचमाथी छठ्ठुं । ऽ ।, छठ्ठामांथी सातमुं । । ऽ, अने सातमामांथी आठमुं रूप । । । आव्युं. तेमने संख्याक्रमे गोठव्या, तो प्रस्तार रूप ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ ।, ऽ । ऽ, ऽ । ।, । ऽ ऽ, । ऽ ।, । । ऽ, । । । थयां.

अगस्त्यमत स्थानविपरीत प्रस्तार.

आमां स्थानान्तर सिवाय बाकीनी रीति, सामान्य अगस्त्य मत प्रस्तार प्रमाणे छे; अर्थात् प्रथम इष्टवर्ण जेटला लघु चिह्न मूकवां. जमणी भणीना पेहेला लघु उपर गुरु मूकवो, तेनी डाबी बाजुनां जेवां चिह्न, नीचेना रूपमां होय तेवाज अने तेटलां ज मूकवां. अने जमणी भणी खूटता वर्ण माटे लघु चिह्न मूकता जइ नीचेनां रूपमाथी तेनी उपरनुं रूप काहाडवुं संख्याक्रम सर्व गुरुना रूपथी गणवो.

प्रश्न. अगस्त्यमत स्थानविपरीत मते बे वर्णनो प्रस्तार करो.

इष्टवर्ण बे छे, माटे पेहेला बे लघु मूक्या. तेनी जमणी बाजुना पेहेला लघु उपर गुरु मूकी, डाबी तरफनो लघु तेनी डाबी बाजुए मूक्यो, तो बीजुं रूप ।ऽ थयुं. तेमांथी तेज प्रमाणे त्रीजुं रूप ऽ। थयुं. अने त्रीजामाथी चोथुं रूप ऽऽ आव्युं माटे ए प्रस्तारनां क्रमवार रूप ऽऽ, ऽ।, ।ऽ, ।। आव्यां.

पिंगलमत संख्याविपरीत प्रस्तार.

इष्टवर्ण जेटलां लघु चिह्न मूकी अगस्त्यमत सामान्य. प्रस्तार प्रमाणे उपर चडवाने बदले नीचे उतरवाना क्रमे प्रस्तार करवाथी आ मतनो प्रस्तार थायछे. एमा संख्याक्रम सर्व लघुना रूपथी शिरु करवामां आवेछे.

प्रश्न. बे वर्णनो प्रस्तार, उपर जणावेली रीतिए करो.

बे वर्णनो प्रस्तार करवानो छे, माटे पेहेलां बे लघु चिह्न मूक्यां, बाद अगस्त्य सामान्य मत प्रमाणे प्रस्तार खेंच्यो, तो ते रूप क्रमवार ।।, ऽ।, ऽऽ आव्यां.

अगस्त्यमत संख्याविपरीत प्रस्तार.

प्रथम इष्ट वर्ण जेटलां गुरु चिह्न मूकी, उतरता जवाने बदले चडता जवाना क्रमे सामान्य पिंगलमत प्रस्तार विधिये प्रस्तार करवाथी आ प्रस्तार थाय छे. तेमां ने आमां मात्र संख्यानो उलटो क्रम छे. तेनां सर्व गुरुथी आरंभी रूप संख्या गणायछे, तेम आमां सर्व लघुथी आरंभी रूप संख्या गणवामां आवेछे.

प्रश्न. त्रण वर्णनो अगस्त्यमत संख्याविपरीत विधिये प्रस्तार खेंचो.

त्रण वर्णनो प्रस्तार खेंचवानो छे, माटे पेहेलां त्रण गुरु चिह्न मूक्यां. पछी चढता जवाना क्रमे बाकीना रूप काहाड्यां तो. ।।।, ऽ।।, ।ऽ।, ऽऽ।, ।।ऽ, ऽ।ऽ, ।ऽऽ, ऽऽऽ रूप आव्यां.

पिंगलमत उभयविपरीत प्रस्तार.

प्रथम इष्ट वर्ण जेटलां लघु चिह्न मांडी, अगस्त्यमत स्थान विपरीत प्रस्तार प्रमाणे उपर चढता जवाने बदले उतरता जवाना क्रमे प्रस्तार करवो, अने संख्याक्रम सर्व लघुनां रूपथी गणवो.

प्रश्न. त्रण वर्णनो पिंगलमत उभय विपरीत प्रस्तार विधिये प्रस्तार खेंचो.

त्रण वर्णनो प्रस्तार करवानो छे, माटे पेहेलां त्रण लघुनां चिह्न मूक्यां, ने कह्या प्रमाणे प्रस्तार कर्यो, तो तेनां रूप संख्याक्रमवार ।।।, ।।ऽ, ।ऽ।, ।ऽऽ, ऽ।।, ऽ।ऽ, ऽऽ।, ऽऽऽ आव्यां.

अगस्त्यमत उभय विपरीत प्रस्तार.

इष्ट वर्ण जेटलां गुरु चिह्न मूकी, चढता जवाना क्रमे पिंगलमत स्थानविपरीत प्रस्तार विधिये प्रस्तार करवाथी आ प्रस्तार थायछे. आमां एम करतां संख्या क्रम सर्व गुरुनां रूपथी न गणतां सर्व लघुनां रूपथी गणवो.

प्रश्न. बे वर्णनो अगस्त्यमत उभयविपरीत प्रस्तार विधिये प्रस्तार करो.

बे वर्णनो प्रस्तार करवानो छे, माटे पेहेलां बे गुरु चिह्न मूक्यां, ने बाकीनां रूप क्रमवार कहाडी तेने संख्याक्रमे गोठव्यां तो । ।, । ऽ, ऽ ।, ऽ ऽ रूप आव्यां.

वर्णप्रस्तार सूची.

जेटला वर्णना प्रस्तारनी सूची करवा इच्छा होय तेटला वर्ण सुधीना वर्णना एकादि भेदांक [1] थता होय ते संख्या क्रमवार खंड पाडी मांडी जवी एटले एक बे, चार इत्यादि वृत्त भेद संख्यांक आगळ केहेवाइ गया छे, ते मांडी जवा. तेमा जे छेल्ली संख्या हशे, ते इष्ट वर्ण प्रस्तारनी भेद संख्या बतावशे. तेथी डाबी बाजुनो प्रथमनो खंड गादि, गान्त, लादि अने लान्तनां रूप बतावशे. अने द्वितिय खंडनो अंक लादिगान्त, गादिलान्त, लादिलान्त अने गादिगान्तना रूप बतावशे.

बेथी आरंभी चार वर्ण सुधीनी सूचीनां बिम्ब हेठळ आपवामां आवेछे.

एक वर्णना प्रस्तारनी सूची थती नथी.

---

1. एटले पृष्ठ ८१ ८२. मा जे रूपसंख्यांक आप्या छे, तेना आरंभमा एक मूकता जे संख्यांक अथवा भेदांक क्रमवार आवे छे ते.

बे वर्णनी सूचीमां प्रथम खंडमां वर्ण संख्या लखी, तेनी जोडे एक खंड वधारी तेमां १ मूक्यो; पछी त्रीजा खंडमां २, अने चोथामां ४ मूक्या. छेल्ली संख्या ४ आवी, माटे बे वर्णनी वृत्त भेदसंख्या चार. छेल्लाथी बीजो अक क्रमे बे अने एक छे, माटे तेना प्रस्तारमां क्रमे लादि अने लान्त तथा गादि अने गान्तनां रूप बे तथा लादिलान्त, गादिगान्त, गादिलान्त अने लादिगान्तनां रूप एक छे एम समजवुं.

बे वर्णनी सूची.

	लादिगान्त अने गादिलान्त.	लादि अने लान्त.	
२ वर्णनी सूची.	१	२	४ वृत्तभेद सख्या.
	गादिगान्त अने लादिलान्त.	गादि अने गान्त.	

त्रण वर्णसूची विस्तर.

	लादिलान्त तथा गादिगान्त.	लादि अने लान्त.	
३ वर्णनी सूची.	२	४	८ वृत्तभेद सख्या.
	लादिगान्त तथा गादिलान्त.	गादि अने गान्त	

चार वर्णसूची बिम्ब.

		लादिलान्त अने गादिगान्त.	लादि तथा लान्त.	
४ वर्णनी सूची.	२	४	८	१६ वृत्त भेद संख्या.
		लादिगान्त अने गादिलान्त.	गादि तथा गान्त.	

चार वर्णनी सूचीथी एम जणाय छे, के ४ वर्णनां बधां मळीने १६ वृत्त थइ शके छे, अने तेमां ८ वृत्त एवां थशे, के जेमां आदिमां अने अंतमां लघु आवशे, अने तेटलाज वृत्त आदि गुरु अने अन्त्य गुरुनां थशे. चार वृत्त एवां थशे, के जेना आदि अने अंतमां लघु आवशे, अने तेटलांज आद्यंत गुरुनां, तथा लघुआदि अने अन्तगुरुनां, तेमज गुरुआदि तथा अन्त्यलघुनां थशे.

चार वर्णनुं उपर प्रमाणे समजाव्युं ते प्रमाणे बे अने त्रण वर्णनुं पण समजी लेवुं.

सात वर्ण प्रस्तारमां १२८ सर्व भेद थायछे. तेमां ६४ नो अंक लादि तथा लान्तना अने गादि तथा गान्तना भेद बतावे छे, अने ३२ नो अंक बाकी उपर जणावेला प्रकारना तमाम भेद बतावेछे.

उपरना विस्तारनो सार ए छे के वर्ण प्रस्तारमां इष्ट वर्णनी

वृत्तभेदसंख्यानुं अर्ध करिये तेटलां रूप लादि, लान्त, गादि अने गान्तनां आवेछे, अने चतुर्थांश करिये तेटलां रूप लादि-लान्त, गादिगान्त, लादिगान्त अने गादिलान्तनां होयछे.

जेमके ६ वर्णना प्रस्तारमां ए रूप जाणवां होय तो, तेनी वृत्तभेदसंख्या ६४ थायछे, तेनुं अर्ध एटले ३२ रूप लादि, लान्त, गादि, अने गान्तनां थायछे; अने ६४ नो चोथो भाग १६ आवेछे, तेटलां रूप लादिलान्त, गादिगान्त, लादिगान्त, अने गादिलान्तना थायछे.

वर्णपाताल.

प्रत्येक वर्णना छंदोना भेद अर्थात् संपूर्ण संख्यानुं ज्ञान अने लघुआदि, लघुअंत, तथा गुरुआदि, गुरुअंत, अने सर्वगुरु तथा सर्व लघु वर्ण जाणवानी कृतिने पाताल केहेछे.

रीति.

जेटला वर्णनुं पाताल रचवुं होय तेटलां उभां खानां करवां, अने चार पंक्ति आडी करवी. पेहेली पंक्तिमां एक, बे, त्रण, चार, एम क्रमवार इष्ट संख्या सुधी अंक लखवा. बीजी पंक्तिमां वृत्तभेद रूप अंक लखी जवा. त्रीजी पंक्तिमां बीजी पंक्तिना अंकनुं अर्ध लखवुं. चोथी पंक्तिमां पेहेली अने त्रीजी पंक्तिना अंकनो गुणाकार लखवो. ए प्रकारे इच्छित वर्ण सुधीनुं पाताल रचवुं.

पेहेली पंक्ति वर्णसंख्या, बीजी पंक्ति वृत्तभेदसंख्या, त्रीजी पंक्ति तेमां लादिलान्त, गादि अने गान्तमां रूप अने चोथी पंक्ति, प्रस्तारान्तर्गत लघुगुरु वर्णनी संख्या बतावशे.

९ वर्णनुं पाताल बिम्ब.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	वर्ण संख्या.
२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२	वृतभेद-रूपसंख्या.
१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	लादि,लान्त तथा गादि,गान्त,
१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४	२३०४	सर्वगुरु, सर्वलघु.

आ पातल बनाववाथी एम जणायुं के ९ वर्णना ५१२ वृत्त भेद थइ शकेछे, अने एमां २५६ लघु आदि अने लघुअंत तथा तेटलाज गुरु आदि अने लघुअंत आवेछे. नव वर्णना आखा प्रस्तारमां बधा मळीने २३०४ गुरु अने तेटलाज लघु छे. एज प्रमाणे आठ, सात, छ, पांच, चार, त्रण, बे, ने एक वर्णना वृत्तविषे पण जाणी लेवुं.

वर्णप्रस्तार नष्ट.

प्रश्न कर्त्ता पूछे, के अमूक वर्णना प्रस्तारमां अमूक भेद केवो थाय ? तो ए जाणवानी रीतिने वर्ण नष्ट केहेछे.

पिंगलमत नष्ट.

जेटला वर्णना प्रस्तारने लगतुं रूप जाणवानुं होय, तेटलो लघु चिह्न मांडी मइ, तेना पर डाबी भणीथी एकादि वर्ण वृत्तभेद संख्यांक मांडी जवा. बाद जेटला वर्णना प्रस्तारमानुं रूप जाणवानुं होय तेटला वर्णना जे वृत्त भेदांक होय तेमांथी पूछेल संख्या बाद करवी. शेष जे रेहे, तेमांथी जमणी भणीना लघु चिह्नथी आरंभी लघु चिह्न परना संख्यांक तेमांथी बाद करी शकाता होय ते क्रमवार बाद करी नाखवा अने जे जे बाद थाय, ते ते तळेना लघुने गुरु बनाववो एटले मागेलुं रूप तैयार थशे.

प्रश्न. दश वर्णना प्रस्तारमांनुं ५०० मुं रूप केवुं हशे ते जाणवो.

दश वर्णना प्रस्तारमांनुं रूप जाणवानुं छे, माटे दश लघु चिह्न मूकी तेना पर कह्या प्रमाणे एकादि संख्यांक माडी गया, तो ते बिम्ब नीचे प्रमाणे तैयार थयु.

१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२
।	।	।	।	।	।	।	।	।	।
	ऽ	ऽ							ऽ

दश वर्णना प्रस्तारमांनु रूप जाणवानु छे माटे दश वर्णनी वृत्तभेद संख्या १०२४ छे तेमांथी ५०० बाद करच्या तो शेष ५२४ रह्या. आपाथी जमणी भगीना छेआ लघुथी तेमना परना संख्यांक क्रम ५१२, ८, अने ४ बाद करचा तो, ५२४−(५१२+८+४)=० आव्या. ५१२, ८, अने ४ बाद थया, माटे तेमना तळेना लघुने गुरु बनाव्या तो, मागलुं रूप ।।ऽऽ।।।।।ऽ थयुं.

रीति.

प्रश्ननो अंक एकी (विषम) होय तो प्रथम गुरु लखवो, अने बेकी (सम) होय तो प्रथम लघु लखवो, पछी तेना अर्द्ध करता जवुं. ज्या एकी संख्या होवाथी अर्द्ध न थइ शके तेवुं होय, त्या एक उमेरी अर्द्ध करवुं; ते अर्द्धनो अंक जो बेकी आवे तो लघु चिह्न, अने एकी आवे तो गुरु चिह्न लखवुं. एम जेटला वर्णनुं नष्ट काहाडवुं होय तेटला वर्ण चिह्न आवता लगी करवुं. पण जो लब्धि १ आवे, तो त्यारपछीना खूटता वर्णने ठेकाणे तेटलां ऽ गुरु चिह्न मूकी देवा. एम करतां जे रूप तैयार थाय ते मागेलुं रूप जाणवुं.

प्रश्न. १ लो. चार वर्णना प्रस्तारमां नवमो भेद केवो छे?

९, (९+१) ÷ २=५, (५+१) ÷ २=३,

(३+१) ÷ २=२, २÷२=१ { ९ ५ ३ २ / ऽ ऽ ऽ ।

नव, पांच, त्रण ए एकीना अंक छे माटे ते प्रत्येकना त्रण गुरु चिह्नो ते ते अंकनी नीचे (ऽ ऽ ऽ) लखवां, अने २ बेकीनो अंक छे, माटे तेनी नीचे लघु चिह्न (।) लखवुं. तेथी चार अक्षरना प्रस्तारमां नवमुं रूप (ऽ ऽ ऽ ।) आवुं छे, एम नष्टथी सिद्ध थयुं.

प्रश्न. २ जो. चार अक्षरना प्रस्तारमां बारमो भेद केवो थाय?

१२, १२ ÷ २=६, ६ ÷ २=३. ३+१ ÷ २=२, १२ ६ ३ २

। । ऽ ।

बार, छ, अने बे बेकी अंक छे, माटे ते नीचे लघु अने त्रण एकी छे माटे ते तळे गुरु मूकवाथी बारमो भेद (॥ ऽ ।) आवो थयो.

प्रश्न. ३ जो—पांच वर्णना प्रस्तारमां त्रीजो भेद केवो थाय?

३, ३+१÷२=२, २÷२=१, १+१ ÷ २=२ १, १+१÷२=१

३ २ १ १ १

ऽ । ऽ ऽ ऽ

त्रण अने एक, एकी अंक छे माटे ते तळे गुरु, अने बे, ए बेकी अंक छे ते तळे लघु मूकतां (ऽ।ऽ) आवुं रूप थयुं. एटले त्रण चिह्नो थयां, पण पांच वर्णना प्रस्तारनुं रूप पूछयुं छे एटले बे चिह्न खूटे छे ते बे गुरु चिह्न वडे पूरां करयां, तेथी आवुं रूप त्रीजुं (ऽ।ऽऽऽ) थयुं. कारण माटे जुओ उपरनो न्यास.

प्रश्न ४थो. सात अक्षरना प्रस्तारमां २३ मो भेद केवो थाय?

२३, २३+१÷२=१२, १२÷२=६, ६÷२=३, ३+१÷२=२, २÷२=१. २३ १२ ६ ३ २ खूटच्या ते.

S । । S । S S त्रेवीशमो भेद थयो.

१ वर्णनुं नष्ट		२ वर्णनुं नष्ट		३ वर्णनुं नष्ट	
१	S	१	S S	१	S S S
२	।	२	। S	२	। S S
		३	S ।	३	S । S
		४	। ।	४	। । S
				५	S S ।
				६	। S ।
				७	S । ।
				८	। । ।

अगस्त्यमत प्रस्तार नष्ट.

इच्छेल संख्यानुं रूप आ प्रस्तारने लगतु जाणवानुं होय तो पिंगलमतनष्टविधि प्रमाणे जाणवुं.

प्रश्न. पांच वर्णना प्रस्तारमां २४ मुं रूप केवुं हशे ते जणावो.

सामान्य रीति प्रमाणे पांच लघु चिह्न मूकी तेनापर एकादि वर्णवृत्तसंख्याक मूक्या तो पासेना चिन्ह { १ २ ४ ८ १६ प्रमाणे अंक आव्या. चोवीशमुं रूप { । । । । । जाणवानुं छे माटे पांच वर्णना भेदांक ३२ माथी तेने बाद कर्या, तो शेष ८ रह्या, एमांथी क्रमवार भेदांक बाद करता गया, तो ८–८=० आव्युं. ८ शोधायो, माटे ए नीचेनो लघु, गुरु थयो. माटे मागेली संख्यानुं रूप । । । S । आव्युं.

पिंगलमत स्थानविपरीत नष्ट.

पूर्व रीतिमां कह्या प्रमाणे लघु चिह्नो मूको. तेनापर संख्याकने डावी बाजुएथी न मूकतां जमणी बाजुथी एटले उत्क्रमे मूकवा. बाकीनो विधि पिंगलमत प्रमाणे करवो; एटले आपेली संख्यानुं नष्ट रूप जणाशे.

प्रश्न. दश वर्णना प्रस्तारमां १००० मुं रूप केवुं हशे ते जणावो.

दश वर्णनो प्रस्तार छे. माटे दश लघु चिह्न मूक्यां, ने तेनापर जमणी बाजुथी संख्यांक मूक्या; तो तेनुं स्वरूप नीचे प्रमाणे आव्युं—५१२ २५६ १२८ ६४ ३२ १६ ८ ४ २ १

। । । । । । । । । ।

दश वर्णभेदांक १०२४ छे तेमांथी इष्ट संख्या १००० बाद करी, तो शेष २४ रह्या; तेमांथी डाबी भणीथी बाद जनारी संख्या १६+८=२४ छे, माटे ए १६ ने ८ तळेना लघुने गुरु कर्या, तो मागेलुं रूप ।।।।।ऽऽ।।। थयुं.

अगस्त्यमत स्थानविपरीत नष्ट.

आ मतना प्रस्तारनुं नष्ट पिंगलमत स्थान विपरीतना नष्ट प्रमाणे जाणी शकाय छे.

प्रश्न. चार वर्णना प्रस्तारमां दशमुं रूप केवा प्रकारनुं हशे ते जणावो.

चार वर्णना प्रस्तार छे माटे चार लघु मूकी तेनापर उलटा क्रमथी एकादि द्विगुणोत्तर वधता संख्यांक मूक्या. तो तेनुं चिह्न नीचे प्रमाणे आव्युं ८ ४ २ १

। । । ।

आमां वर्ण ४ ना भेदाव १६ छे, तेमांथी इष्ट सख्या १० बाद करी, तो शेष ६ रह्या. एमांथी बाकी वर्णोंथी ४ अने २ बाद थायछे माटे बाद कर्या. तो शेष ० रह्यु ४ अने २ बाद थया, माटे ते तळना लघु, गुरु थता ते मागेलुं रूप ।ऽऽ। आव्युं

पिंगळमत संख्याविपरीत नष्ट.

जेटला वर्णना प्रस्तारमानु रूप जाणवानुं होय तेटलां गुरु चिह्न मूकी जवा बाद तेमना पर बाबी बाजुथी पेहेला गुरु पर १, बीजा पर २ इत्यादि आगळथी बमणी बमणी सख्या एटले वर्णवृत्तभेदसंख्या मूकी जवी. बाद जेटलामु रूप जाणवानी इच्छा होय, ते सख्याने दृष्टवर्ण प्रस्तारभेदसंख्या-मांथी बाद करवी, जे शेष रहे ते संख्या, गुरु चिह्नपर मूकायली जे संख्या अथवा संख्याओना सर्वाळा जेटली थती होय, ते ते सख्या तळनो गुरु, लघु करतां जे रूप आवे, ते आपेली सख्यानुं रूप जाणवुं.

प्रश्न. चार वर्णना प्रस्तारमा दशमु रूप आ प्रस्तारने लगतु केवु हशे?

चार वर्णनो प्र स्तार छे, माटे चार गुरु मूकी तेना पर क्रमवार सख्यांक मूकी जवा. तो चिन्ह पासे आप्या प्रमाणे आव्यु.

१ २ ४ ८ }
ऽ ऽ ऽ ऽ } चार वर्णनी भेद सख्या १६ छे. तेमांथी इष्ट संख्या १० बाद करी, तो शेष ६ रह्या ए ४+२ नी बराबर छे, माटे ते तळना गुरुने लघु बनावता रूप ऽ।।ऽ थयु. ते दशमु

अगस्त्यमत संख्याविपरीत नष्ट.

आ मतना प्रस्तारनो नष्टविधि पिंगलमत संख्याविपरीत प्रस्तारनष्ट प्रमाण छे.

प्रश्न पांच वर्णना प्रस्तारमां वीसमुं रूप केवुं हशे ते जणावो.

पांच वर्णनो प्रस्तार छे माटे पांच गुरु मूकी ते पर क्रमवार संख्यांक मूक्या, ते नीचेना बिम्ब प्रमाणे अंक आव्या.

१	२	४	८	१६
S	S	S	S	S

पांच वर्णनी भेदसंख्या ३२ छे तेमांथी इष्ट संख्या २० बाद करतां शेष १२ रहे छे. ते मूकेला संख्यांक ८+४ नी बरोबर छे, माटे एमां ८ अने ४ नकोना गुरुने लघु बनाव्या, तो मागेलुं रूप S S । । S आव्युं.

पिंगलमतभगणविपरीतनष्ट.

पिंगलमत संख्याविपरीत नष्टविधिमां जणाव्या प्रमाणे गुरु चिह्न मूकी संख्यांकने डावी भणीथी न मूकतां जमणी भणीथी क्रमवार मूकवा. शेष विधि संख्याविपरीत नष्ट प्रमाणे करवो.

प्रश्न छ वर्णना प्रस्तारमां २० मुं रूप केवुं हशे ते जणावो.

छ वर्णनो प्रस्तार छे, माटे छ गुरु मूकी ते पर संख्यांकने अवळे क्रमे माड्या तो नीचे प्रमाणे रूप थयुं.

छ वर्ण भेदसंख्या ६४ थायछे. माटे इष्ट संख्याने तेमांथी बाद करी तो शेष १४ रह्या ए ८+४+२ नी बरोबर छे, माटे तेमनी नीचेना गुरुने लघु बनावतां मागेलुं रूप SS।।।S थयुं.

अगस्त्यमत उभयविपरीत नष्टविधि

आ नष्ट रीति नीचे प्रमाणे छे.

प्रश्न. त्रण वर्णना प्रस्तारमां बीजुं रूप केवुं हशे.

त्रण वर्णनो प्रस्तार छे, माटे त्रण गुरु चिह्न मूकी तेपर अवळे क्रमे संख्यांक चडाव्या, तो $\begin{Bmatrix} ४ & २ & १ \\ S & S & S \end{Bmatrix}$ आव्या.

भेदसंख्या ८ छे तेमांथी बे बाद करता शेष ६ रह्या. ते ४+२=६ थायछे, माटे ४ ने २ नळेना गुरु ने लघु बनावता मागेलुं रूप ।।S थयु.

पिंगलमत नष्ट काहाडवानी बीजी रीति

जेटला वर्णना प्रस्तारमा जेटलामुं रूप काहाडवुं होय तेटलां लघु चिह्न लखीने तेपर एकादि वर्ण रूप संख्यांक माडी जवा. पछी अन्तना संख्यांकने बमणा करीने तेमांथी पूछेलां रूपनी इष्ट संख्या बाद करवी जे शेष रहे ते अंक जे रूपसंख्यांकना योगथी बनेल होय, ते ते संख्या नळेना लघुने गुरु बनाववाथी मागेलु रूप तैयार थायछे.

प्रश्न आठ वर्णना प्रस्तारमा २९ मुं रूप केवुं हशे?

आठ वर्णना प्रस्तारमांनु २९ मु रूप जाणवानुं छे, माटे नीचे जणाव्या प्रमाणे आठ लघु चिह्नपर एकादि वर्णसंख्यांक माडया. तो नीचे प्रमाणे अंक अने चिह्न आव्यां.

૧ ૨ ૪ ૮ ૧૬ ૩૨ ૬૪ ૧૨૮
| | | | | | | |

છેલ્લો અંક ૧૨૮ છે, તેને બમણો કર્યો તો ૨૫૬ આવ્યા. તેમાંથી ઇષ્ટ સંખ્યા ૨૫ છે તે બાદ કરી, તો શેષ ૨૫૬—૨૫=૨૩૧ રહ્યા. એ શેષ સંખ્યા ૨૩૧ ઉપર માંડેલા રૂપાંક ૧૨૮+૬૪+૩૨+૪+૨+૧ ના યોગથી બનેલી છે. માટે તે તે સંખ્યા તળેના લઘુ ચિહ્નને ગુરુ ચિહ્નમાં પલટાવ્યાં તો નષ્ટરૂપ SSS||SSS આવ્યું. એ પ્રમાણે સર્વત્ર સમજવું.

પિંગલમત નષ્ટ કાહાડવાની ચોથી રીતિ.

માત્રા નષ્ટના વિધિ પ્રમાણે લઘુપર વર્ણના સંખ્યાંક શિરપર જ મુકી જવા, પછી ઇષ્ટ સંખ્યાને સર્વ ભેદ સંખ્યામાંથી બાદ કરતાં જે શેષ રહે, તેમાંથી જમણી બાજુથી જે જે સંખ્યાંક બાદ થતા હોય, તે બાદ કરતે જવા, જે સંખ્યાંક બાદ થાય તે તળેનું લઘુ ચિહ્ન ગુરુ કરતાં જે આવે તે માગેલું રૂપ સમજવું.

પ્રશ્ન. આઠ વર્ણના પ્રસ્તારમાં ૨૩૧ મું રૂપ કેવું હશે, તે જણાવો.

આઠ વર્ણના પ્રસ્તારમાં ૨૩૧ મું રૂપ કાહાડવું છે, માટે આઠ લઘુના ઉપર એકાદિ સંખ્યાંક મૂક્યા તો અંક નીચેનાં બિમ્બ પ્રમાણે આવ્યા.

૧ ૨ ૪ ૮ ૧૬ ૩૨ ૬૪ ૧૨૮
| | | | | | | |

છેલ્લો સંખ્યાની બમણી = ૨૫૬, આઠ વર્ણના કુલ ભેદની સંખ્યા છે, માટે તેમાંથી ૨૩૧ બાદ કર્યા, તો શેષ ૨૫ રહ્યા. એમાંથી ૧૨૮, ૬૪ કે ૩૨ બાદ નહિ થાય, પણ ૧૬ બાદ

थशे, माटे ते बाद कर्या, ने तेना लघुने गुरुमा पलटाव्या. शेष २५–१६=९ रह्या, तेमांथी ते पछीनो अंक ८ बाद थायछे, ते बाद कर्यो तो शेष ९–८=१ आव्यो माटे ८ तळेनु लघु चिह्न पलटाववे गुरु थयु शेष १ रह्यो छे, तेमाथी ४ के २ बाद नहि थाय पण १ थशे, ते बाद कर्यो, तो शेष शून्य रह्यो, ने तेना लघुने गुरुमा पलटाव्यो तो मागेल संख्यानु रूप ऽ।।ऽऽ।।। आव्यु.

वर्णउद्दिष्ट.

अमुक वर्णना प्रस्तारमा अमुक रूप केटलामु छे ए काहाडवानी रीतिने उद्दिष्ट केहेछे.

पिंगलमत उद्दिष्टनी रीति

आपेलु स्वरूप मांडी जइ तेना प्रत्येक चिह्न उपर डाबा हाथ भणीथी आरंभ करीने १, २, ४, ८ रूप संख्यांक अनुक्रमे मांडी जवा. पछी लघु चिह्न उपरना संख्यांकनो सर्वाळो लइ तेमां एक उमेरता. जे सर्वाळो आवे तेटलामुं रूप प्रश्ननुं समजवुं, अथवा गुरु चिह्न उपरना अंकना सर्वाळाने छेल्ला वर्ण उपरनी संख्या (वर्ण संख्यांक) ने बमणी करीने बाद करवाथी जे शेष अंक आवशे ते इष्ट रूपनी संख्या थशे.

प्रश्न. चार वर्णना प्रस्तारमा (।।ऽ।) आवु रूप केटलामु छे?

आपेल ।।ऽ। पर डाबा हाथ भणीथी प्रत्येक चिह्न उपर संख्यांक मांडी गया अने लघु चिह्न उपरना संख्यांकनो सर्वाळो लइ, एक उमेरता (१+२+८)+१=१२ सर्वाळो थयो. एटले चार वर्णना प्रस्तारनुं बारमु रूप

ए थयु. बीजी रीतिए त्रीजे स्थाने मात्र एकज गुरु छे, अने ने उपरनी संख्या ४ छे ने छेल्लो अंक ८ छे तेने बमणा करतां १६ आवेछे, तेमाथी एने बाद करतां १६-४=१२ रहेछे माटे इष्ट रूप संख्यांक १२ थयो.

प्रश्न. सात वर्णना प्रस्तारमा (।।ऽ।।ऽऽ) आवु रूप केटलामु छे?

१ २ ४ ८ १६ ३२ ६४ | आपेलां रूप ।।ऽ।।ऽऽ
। । ऽ । । ऽ ऽ | पर डाबा हाथ वर्णथी

प्रत्येक चिह्न उपर संख्यांक मांडी गया, तो पासेनां त्रिन्ह प्रमाणे अंकादि आव्या. एमांना लघु चिह्न उपरना संख्यांकोनो सर्वाळो लेइ एक उमेरतां (१+२+८+१६+१)=२८ सर्वाळो थयो, एटले सात वर्णना प्रस्तारमां २८ मुं रूप ए थयु.

प्रश्न. आज ग्रंथना प्रथम भागना पृ. ३६७मे रणशूर नामनुं १८ वर्णनुं वृत्त छे, तेनुं "आशा ए रणशूर रचेछे मसासाररामा आणी" चरण छे, ते तेना प्रस्तारमा केटलामो भेद हशे ते जणावो.

કળા પ્રમાણે લઘુ ગુરુ પરના અંકનો સરવાળો કરતા આવેલા રૂપની સંખ્યા નીચેના ન્યાસ પ્રમાણે ૯૪૩૨ આવી.

લઘુનો સરવાળો.		ગુરુનો સરવાળો.
૮		૧
૧૬		૨
૬૪		૪
૧૨૮		૩૨
૧૦૨૪		૨૫૬
૮૧૯૨		૫૧૨
———		૨૦૪૮
૯૪૩૨		૪૦૯૬
૧	એક મેળવવાનો માટે	૧૬૩૮૪
———		૩૨૭૬૮
૯,૪૩૩	ઇષ્ટવૃત્તરૂપ	૬૫૫૩૬
		૧૩૧૦૭૨
		———
		૨,૫૨,૭૧૧

૨૬૨૧૪૪ છેલ્લા રૂપાંકની ગમણી સંખ્યા

૨૫૨૭૧૧ ગુરુ ચિહ્ન પરની સંખ્યાનો સરવાળો.

———

૯,૪૩૩=ઇષ્ટ રૂપ સંખ્યા.

વિદ્યાર્થીઓને વિશેષ જ્ઞાન થવાના હેતુથી ૧ વર્ણથી ૪ વર્ણના ઉદ્દિષ્ટનાં ચિહ્ન નીચે આપવામાં આવેછે.

[illegible] प्रस्तार उद्दिष्ट

जे रूपनी संख्या जाणवानी होय, ते रूपपर डाबी बाजुथी पिंगळमत उद्दिष्ट प्रमाणे संख्या [illegible], लघुना शिरोअंकना सर्वाळामां एक उमेरवाथी अथवा गुरु चिह्नना उपरना अंकना सर्वाळाने सर्व भेद संख्यामांथी बाद करवाथी इष्ट रूपनी संख्या आवे छे

प्रश्न त्रण वर्णना प्रस्तारमां । ऽ । रूप केटलामुं हशे, ते जणावो

आपेला रूप । ऽ । उपर संख्याक क्रमे मांड्या तो $\begin{Bmatrix} १ & २ & ४ \\ । & ऽ & । \end{Bmatrix}$

रूप थयुं. सर्व भेद संख्या = ८ छे लघुपरना अंक १+४=५+१=६ छे माटे मागेल रूपनी संख्या ६. अथवा गुरुपरनो अंक २ छे तेने सर्व भेद संख्या ८ मांथी बाद करता शेष ६ रहे छे माटे इष्ट रूपनी संख्या ६.

मात्रासमक प्रस्तार उद्दिष्ट

आपेला रूपपर संख्याक जमणी तरफथी मरी उपर प्रमाणे क्रिया करतां जे संख्या आवे ते आपेला रूपनी मागेल संख्या जाणवी.

[illegible] ।। ऽ रूप केटलामुं छे?

[illegible] प्रमाणे [illegible] $\begin{Bmatrix} ४ & २ & १ \\ । & । & ऽ \end{Bmatrix}$

थयुं, माटे इष्ट रूप संख्या ४+२=६+१=७ अथवा सर्व भेद=८ -१=७.

अगस्त्यमत स्थानविपरीत उद्दिष्ट.

मामहमत उद्दिष्ट रीतिये आ मतना प्रस्तारनुं उद्दिष्ट थछे.

प्रश्न. त्रण वर्णना प्रस्तारमां ऽ।। रूप केटलामुं छे, ते जणावो?

क्रमथी प्रमाण संख्या भरतां त्रिम्ब { ४ २ १ / ऽ । । } आव्युं तेमां लघु शिरो अंक १+२=३ छे, तेमां १ उमेरवाथी ४ थया; माटे मागेल रूप संख्या ४ अथवा भेदांक ८—गुरु शिर अंक ४=४.

पिंगलमत संख्याविपरीत उद्दिष्ट.

आपेला रूपपर संख्यांक क्रमे भरवा गुरु चिह्नपरना संख्याना १ नाळामां एक उमेरतां जे संख्या आवे ते, अथवा लघु चिह्नपरना अंकना सर्वाळाने जेटला वर्णना प्रस्तारमांनुं आपेल रूप होय, तेनी भेद संख्यामांथी बाद करतां जे संख्या आवे ते, आपेला रूपनी संख्या थायछे.

प्रश्न. त्रण वर्णना प्रस्तारमा । ऽ । केटलामुं छे?

संख्यांक भरता रूप { १ २ ४ / । ऽ । } आव्युं. एमां लघुना शिरो अंक ४+१=५ छे तेने भेद संख्या ८ मांथी बाद कर्या तो शेष ३ रह्या, माटे रूपनी संख्या ३. अथवा गुरु शिर अंक २+१=३.

अगस्त्यमत संख्याविपरीतप्रस्तार उद्दिष्ट.

आ जाणवानो विधि पिंगलमत संख्याविपरीत उद्दिष्टना जेवोज छे.

पिंगलमत उभयविपरीत प्रस्तार उद्दिष्ट.

आपेला रूपमां अवळा क्रमथी संख्याक भरी पिंगलमत संख्याविपरीत प्रमाणे उद्दिष्ट विधि करवो.

प्रश्न. त्रण वर्णना प्रस्तारमां ।।ऽ रूप केटलामुं हशे?

अंक मूकनां स्वरूप $\left\{\begin{matrix} ४ & २ & १ \\ । & । & ऽ \end{matrix}\right\}$ थयुं. गुरु शिरो अंक १ छे तेमा १ उमेर्यो तो २ थया. माटे आपेला रूपनी संख्या २. अथवा लघु शिरो अंक ४+२=६ ने आठमाथी बाद करता बे रहे छे माटे संख्या= २

अगस्त्यमत उभय विपरीतउद्दिष्ट.

आनो विधि पिंगलमत विधि प्रमाणे छे.

वर्णकद्ध्याद्लिगक्रिया.

जेटला वर्णनी लग क्रिया करवी होय तेटला एकडा एक पछी एक उभी अने आडी बन्ने बाजुमां समाइ शके एवो काटखूण त्रिकोण करवो, अने तेनी उभी अने आडी लीटिये तेटला एकडा एक पछी एक मूकी जवा, पछी कर्ण लीटीने अडाडीने काटखूणाना पायानी आडी लीटीपर तेटलाज एकडा एक पछी एक समाइ रहे तेवी उभी लीटी एक बीजाने समांतर दोरवी आवी समातर लीटियो आम्वा त्रिकोणमा बधी मळीने जेटला वर्णनी लगक्रिया करवी होय तेटली थशे अने तेमा तेटला एकडा आवी जशे. आ प्रमाणे त्रिकोण तैयार थया पछी

पेहेली उभी लीटीने जग वधारीने तेने मथाळे कर्ण लीटी उपर एकडो मूकवो, अने त्यांथी कर्ण लीटीने समांतर एवो एक बीजो कर्ण दोरवो. आ प्रमाणे आकृति तैयार थया पछी आडी लीटी उपर प्रत्येक खानामां एकडा पूराइ गया छे ते उपर नीचेथी अनुक्रमे उपर चडतां, उभी लीटीना एकडानी हारनां समांतर खानां पूरवा माटे एवी रीति छे के, जे खानुं पूरवानुं होय, तेनी नीचेनो अंक तथा तेनी डाबी बाजुनो जे अंक होय, ते बेनो सरवाळो करीने भरी देवो. आवा अंक बे कर्ण लीटियोनी वच्चेना खानामां पण पूरवा. आ प्रमाणे सर्वे हारो पूराइ गया पछी एम नीकळशे के, बे कर्ण लीटियो वच्चे प्रथम एकनो अंक छे तो एक गुरुनां रूप, जेटला वर्णनी लगक्रिया आपणे तैयार करी, तेमां तेटलां थशे, माटे ते एकडानी सामे आडी बाजुए बीजा कर्ण उपर तेटलो अंक मूकीने त्यां गुरुनुं चिह्न करवुं. बीजुं, त्रीजुं, चोथुं एम अनुक्रमे रूप मांडवा माटे एक गुरु घटाडीने एक लघु वधारतां जवुं. अने ते प्रमाणे तेटला गुरु अने तेटला लघु एम समजवा माटे तेवा अंक मूकी, ते साथे तेवां चिह्न मूकतां जवुं. आवा प्रकारनी लगक्रिया छे, ते मेरुक्रियानी उत्पत्ति समजवानुं मूळ छे. एटले बे कर्ण वच्चे जे अंक आवे छे ते तेटला वर्णना मेरुना खानामां पूरवामां आवे छे.

छवर्णनुं लगक्रियाबिम्ब.

१	६					
१	५	१५				
१	४	१०	२०			
१	३	६	१०	१५		
१	२	३	४	५	६	
१	१	१	१	१	१	१

६ऽ
५ऽ।
४ऽ।।
३ऽ।।।
२ऽ।।।।
१ऽ।।।।।
६।

वर्ण मेरु.

अमुक वर्णना प्रस्तारमां शून्यादि गुरुनां जेटजेटलां रूप थतां होय, ते जे कोठापरथी मालूम पडे अथवा ते जेमां लखवामां आव्या होय तेने वर्णमेरु बिम्ब कहेछे

रीति.

प्रथम बे खंडनी पहेली पंक्ति करवी, ते नीचे त्रण, ते नीचे चार, एम अकेका वधारे खंडवाळी जेटला वर्णनो मेरु रचवो होय तेटली पंक्ति करवी. बाद प्रत्येक पंक्तिना पहेला अने छल्ला खडमां एकडा भरी जवा; अने इष्ट पंक्ति उपरनी पंक्तिना पूर्वापर खडमां आवेला अंकोनो सर्वाळो लेइ तेना बाकीना खाली खंड भरवा. आ प्रमाणे बधा खंड भराइ गया पछी, मेरु बिम्बनी डावी बाजुना प्रत्येक पंक्तिना खूणामां १, २.

केटला वर्णनी पंक्ति छे ते बतावशे; अने जमणी बाजुना प्रत्येक खूणामा भेद संख्यांक मांडी जवा. आ अंक प्रत्येक पंक्तिना खंडना अंकोनो सर्वाळो बतावशे. प्रत्येक पंक्तिना पेहेला खंडना एकडा उपर जेटला वर्ण विषेनी ते पंक्ति होय, ते अंक मूकी ते साथे गुरु चिह्न करवुं अने त्यारपछीना आसनना अंको उपर अनुक्रमे अकेको गुरु घटाडी, अने अकेको लघु वधारी लघु चिह्न मूकतां जवु. एटले प्रत्येक आसनमां मूकेला गुरुवाळां रूपनी इष्ट वर्णना प्रस्तारमां केटली संख्या थायछे ते तेथी जणाइ आवशे.

समजण माटे जुओ नीचे आपेलुं आठ वर्णना मेरुनुं बिम्ब

आठ वर्णना मेरुनुं बिम्ब.

ॐ										
१ वर्ण रूप	१ऽ १	१। १								२
२ वर्ण रूप	२ऽ १	१ऽ१। २	२। १							४
३ वर्ण रूप	३ऽ १	२ऽ१। ३	१ऽ२। ३	३। १						८
४	४ऽ १	३ऽ१। ४	२ऽ२। ६	१ऽ३। ४	४। १					१६
५	५ऽ १	४ऽ१। ५	३ऽ२। १०	२ऽ३। १०	१ऽ४। ५	५। १				३२
६	६ऽ १	५ऽ१। ६	४ऽ२। १५	३ऽ३। २०	२ऽ४। १५	१ऽ५। ६	६। १			६४
७	७ऽ १	६ऽ१। ७	५ऽ२। २१	४ऽ३। ३५	३ऽ४। ३५	२ऽ५। २१	१ऽ६। ७	७। १		१२८
८	८ऽ १	७ऽ१। ८	६ऽ२। २८	५ऽ३। ५६	४ऽ४। ७०	३ऽ५। ५६	२ऽ६। २८	१ऽ७। ८	८। १	२५६

आ उपरथी एम समजवानुं छे के, पेहेली पंक्तिना खूणामां एकडो छे, तो एक वर्णनी पंक्तिमां एक गुरुनुं एक रूप, अने एक लघुनु एक रूप छे. एम पेहेला तथा बीजा खंडमा जणाव्या प्रमाणे बे रूप (जमणा खूणाना संख्याक) तुल्य थशे. ए प्रमाणे आठे पंक्तिनुं समजवुं. एटले आठ वर्णनी पंक्तिमा पेहेला खडमा एकडा उपर ८ ऽ, आठ गुरु एम मांडेलु छे, तो आठ (अहि सर्व) गुरुनुं एक रूप. तेमज बीजा आसनमां ७ऽ१। सात गुरु अने एक लघुना आठ रूप थायछे एम बताने छे. त्रीजा आसनमां ६ गुरु ने २ लघुनां २८ रूप थायछे एम बतावेछे. चोथा आसनमा ५ गुरु अने ३ लघुनां ५६ रूप थायछे एम बतावेछे. पांचमा आसनमां ४ गुरु अने ४ लघुना ७० रूप थायछे एम बतावेछे. छठ्ठा आसनमा ३ गुरु अने ५ लघुना ५६ रूप थायछे, एम बतावेछे. सातमा आसनमां २ गुरु अने ६ लघुनां २८ रूप थायछे एम बतावेछे. आठमा आसनमां १ गुरु अने सात लघुनां ८ रूप थायछे एम बतावेछे. अने नवमुं आसन ८ लघु अर्थात् सर्व लघुनुं एक रूप थायछे एम बतावेछे. ए रीते एकंदर आठ वर्णनां २५६ रूप थायछे, ते मेरुत्रिम्बनी जमणी बाजुए मूकेलो अक बतावेछे.

वर्णनो एकावली मेरु.

उपर कहेला मेरुमां जे जाणवानुं छे तेज आ एकावली मेरुथी जाणी शकायछे, पण फेर मात्र एटलोज छे के, पेहेला प्रकारमा डाबी भणीथी सर्व गुरुथी आरंभ करी अकेको गुरु

घटाडवामा आवेछे, अने आमां सर्व लघुथी आरंभ करी, अके-क्रो गुरु अनुक्रमे वधारवामां आवेछे.

रीति.

जेटला वर्णनो एकावली मेरु होय, तेटली पंक्ति करवी; ते-मां पेहेली पंक्तिमां बे घर, तेनी नीचेनी बीजीमा त्रण, त्रीजीमां चार, एम अनुक्रमे अकेक घर, प्रत्येक पंक्तिमां वधारे करतां जवां. पछी आदि अने अंतना कोठामां अथवा प्रत्येक पंक्तिना डाबा अने जमणा हाथ भणीना छेल्ला कोठामा एकडा पूरी जवा. बाकीना कोठा, जे खाली कोठो भरवानो होय, तेनो मथाळानो अंक तथा ते अंकनी डाबी बाजुनो अंक, एम बे अंकनो सर्वाळो करी तेमां मूकीने भरवा. पछी ते प्रत्येक आडी पंक्तिना बधा खंडनो सर्वाळो तेना कोणमां भरवो. अने डाबीभणी प्रथम पंक्तिथी आरंभी एकादि चडतो अंक मूकी जवो. एटले **एकावलीवर्ण मेरुबिम्ब** तैयार थशे.

छवर्णना एकावली मेरुनुं बिम्ब.

१	१ । १	१ S १	२				
२	२ । १	१ । १ S २	२ S १	४			
३	३ । १	२ । १ S ३	१ । २ S ३	३ S १	८		
४	४ । १	३ । १ S ४	२ । २ S ६	१ । ३ S ४	४ S १	१६	
५	५ । १	४ । १ S ५	३ । २ S १०	२ । ३ S १०	१ । ४ S ५	५ S १	३२
६	६ । १	५ । १ S ६	४ । २ S १५	३ । ३ S २०	२ । ४ S १५	१ । ५ S ६	६ S १
	।।।।।।	।।।।S	।।।।SS	।।।SSS	।।SSSS	।SSSSS	SSSSSS

आ मेरुथी पण उपरना मेरुनी माफक छ वर्णना थता बधां वृत्तमां शून्यादि गुरुवाळां केटलां केटलां रूप थायछे ते, नीचे प्रमाणे जाणी शकायछे.

१ वृत्त एवुं छे, के जेमां ६ लघु आवेछे.

६ वृत्त एवां छे, के जे जेमां ५ लघु अने १ गुरु आवेछे.

१५ वृत्त एवां छे, के जेमां ४ लघु अने २ गुरु आवेछे.

२० वृत्त एवां छे, के जेमां ३ लघु अने ३ गुरु आवेछे.

१५ वृत्त एवां छे, के जेमां २ लघु अने ४ गुरु आवेछे.

६ वृत्त एवां छे, के जेमां १ लघु अने ५ गुरु आवेछे.

१ वृत्त एवुं छे, के जेमां ६ गुरु आवेछे.

ए रीते छ वर्णनां एकंदर ६४ वृत्त थायछे, ते जमणी बाजुए त्रिम्बनी बहार मूकेलो आंकडो दर्शावेछे. त्रिम्बनी डाबी बाजुए एक बे त्रण इत्यादि चडता अंक मूकला छे, ते ते वर्णनां वृत्त ते अंकनी आडी पंक्तिमां बताव्या प्रमाणे थायछे, एम सूचवेछे.

खंडमेरु.

मेरु बनाव्या विना जेथी मेरुनु काम सरे तेने खंडमेरु केहेछे.

रीति.

जेटला वर्णनो खंड मेरु करवो होय तेटला आडा अने उभा कोठा करवा, अने एक कोठो तेथी वधारे करवो, पछी ते आडा उभा कोठामां एकडा भरी देवा, पछी आडी हारमां जमणी बाजुए अकेको कोठो ओछो थतो जाय, एम कोठा वधारवा. बीजी आडी हारमा जेटला वर्णनो खंड मेरु करवो होय, त्यां सुधी एक बे त्रण आदि चडता अंक मांडवा.

त्यार पछी त्रीजी, चोथी, पांचमी आदि हारो भरवाने जे आसन भरवुं होय, तेनी डाबी बाजुनो अंक अने उपरनी पक्तिनो तेनाज उपरना कोठानो अंक लइने, बेनो सर्वाळो करवो अने तेने खाली आसनमां भरवो. आ प्रमाणे बिम्ब भराइ रह्या पछी, प्रत्येक हारमां जमणी बाजुए जे अत्य खानामां अंक आवे, तेटलां रूप, ते खंड ए पंक्तिमां उपरथी प्रथम खंड मूकी गणनां जेटलामो होय तेटलां गुरुवाळां समजवां.

आठ वर्णना खंडमेरुनुं बिम्ब.

१	१	१	१	१	१	१	१	८। १
१	२	३	४	५	६	७	१ऽ७। ८	
१	३	६	१०	१५	२१	२ऽ६। २८		
१	४	१०	२०	३५	३ऽ५। ५६			
१	५	१५	३५	४ऽ४। ७०				
१	६	२१	५ऽ३। ५६					
१	७	६ऽ२। २८						
१	७ऽ१। ८							
८ऽ १								

आ त्रिम्बना अन्त्य कोणना १, ८, २८, ५६, ७०, ५६, २८, ८ ने १ अंक छे ते आठ वर्णना प्रस्तारमां शून्यादि गुरुवाळा क्रमवार केटलां रूप आवे छे ते बतावे छे.

खंडमेरुनी बीजी रीति.

जेटला वर्णनो खंडमेरु करवो होय तेटली उभी पंक्ति बनाववी, अने तेनी नीचे बीजी बे आडी करवी. त्रीजी पंक्ति जे सौथी नीचेनी छे, तेमा जेटला वर्णनो मेरु करवो होय तेटला १, २, ३ इ० चडता अंक डाबी बाजुएथी आरंभी भरी जवा. पछी बीजी पंक्तिमां जमणी बाजुथी अंक भरवानो आरंभ करी, १, २, ३, इत्यादि अंक भरी जवा. हवे प्रथम पंक्ति भरवानी रही तेनी डाबी बाजुना खंड जोडे एक खंड वधारीने तेमां एकडो भरवो. बीजो खंड भरवा माटे ते खंडनी नीचे बीजी हारना पेहला आसनमां जे अंक होय तेनो अने उपरनी पेहेली हारना पेहेला आसनमां जे अंक होय तेनो गुणाकार करी, त्रीजी हारना पेहेला आसनमां जे अंक होय, तेथी भागतां जे भागाकार आवे ते पेहेली हारना बीजा खंडमां भरी देवो. अर्थात् इष्ट पंक्तिनुं जे खाली घर भरवुं होय तेनी डाबी बाजुना अंकने तेनी सामे अग्निकोणमा बीजी पंक्तिमा जे अंक आव्यो होय तेणे गुणी, त्रीजी पंक्तिमा तेज खंड नीचे जे अंक होय तेणे भागतां जे भागाकार आवे ते खाली घरमां लखवो. जेमके –१×८=८–१=८.

पेहेली हारनु त्रीजु आसन भरवा माटे, तेनी नीचेनुं बीजी पंक्तिनुं आसन छे तेमा ७ अंक छे, अने तेमा भरवाना आसननी डाबी बाजुए उपान्त्य अंक ८ छे तेनो गुणाकार

करतां ५६ आवेछे; तेने त्रीजी पंक्तिना भरवाना आसननी उभी हारना आसनमा २ अंक छे, ते वडे भागवाथी २८ अंक आवेछे, ते भरी देवो. ए प्रमाणे बधां खानांना अंक लाव्या तो नीचे प्रमाणे आव्या.

चोथुं खानुं भरवुं छे तो २८×६=१६८-३=५६.

पांचमुं खानुं भरवु छे तो ५६×५=२८०÷४=७०.

छठु खानुं भरवुं छे तो ७०×४=२८०÷५=५६.

सातमुं खानुं भरवुं छे तो ५६×३=१६८÷६=२८.

आठमु खानुं भरवु छे तो २८×२=५६÷७=८.

नवमुं खानुं भरवुं छे तो ८×१=८÷८=१.

आठ वर्णना खंड मेरुनुं उपर जणाव्या प्रमाणे बीजी रीतिनुं बिम्ब.

८ऽ १	७ऽ१। ८	६ऽ२। २८	५ऽ३। ५६	४ऽ४। ७०	३ऽ५। ५६	२ऽ६। २८	१ऽ७। ८	८। १	पेहेली
	८	७	६	५	४	३	२	१	बीजी.
	१	३	३	४	५	६	७	८	त्रीजी.

आ उपरथी एम समजवानु छे के, पेहेली पंक्तिना पेहेला खंडमां १ अंक छे, तो (आठ) गुरुनुं एक रूप थायछे; पछी अकेको गुरु ओछो करी अकेको लघु वधारता बीजा आसनमां ८ छे तो सात गुरु अने एक लघुनां आठ रुप थायछे एम समजवुं, तेमज त्रीजा आसनमां २८ अकछे, तो ६ गुरु अने बे लघुनां तेटलां (२८) रूप थायछे एम जाणवुं. चोथा आसनमां ५६ अंक छे तो ५ गुरु अने त्रण लघुनां तेटलां (५६) रूप थायछे. ए रीतिये बधां आसननुं जाणवुं.

वर्णप्रस्तार पताका.

मात्रा प्रकरणमाना ९०मा पानामा पताका बनाववानो जे विधि आप्यो छे, ते अत्रे लागु पाडवो, अने त्यां आपेल नियम प्रमाणे वर्ण-उद्दंड लावी, पताका भरवी

प्रश्न पांच वर्णना प्रस्तारनो पताका तैयार करो.

पांच वर्णनी पताका रचवी छे, तो छ छ खडवाळी बे उभी पंक्तिओ दोरी, तेमांनी पहेलीमां शून्यादि गुरुसंज्ञादर्शक मूकवा अंक. अने बीजीमां त्रिकोण क्रमे वृत्तभेद संख्या भरी दोवी, एटले नीचेना चित्रमा जणाव्या प्रमाणे बे उभी पंक्ति तैयार थइ. पहेली पंक्ति लघुनी जातिद्योतक अने बीजी उद्दंड छे.

पांचवर्णनी पताकानुं दंड साथेनुं खाली बिम्ब.

	मेरुअंक	वृत्तभेदांक
IIIII	१	३२
IIIIS	५	१६
IIISS	१०	८
IISSS	१०	४
ISSSS	५	२
SSSSS	१	१
	दण्ड	

अंकभरणविधिन्यास.

दंडना अंको प्रत्येक पंक्तिना पेहेला खंडना अंक थायछे, माटे पेहेली ल्हेरनो प्रथमाङ्क ३२, बीजी ल्हेरनो १६ त्रीजी ल्हेरनो ८, चोथी ल्हेरनो ४, पांचमीनो २ अने छठ्ठीनो १ थया.

प्रत्येक ल्हेरनो उपरना आद्यांकमांथी ते अंक तळेना दण्डाङ्कोने अनुक्रमे बादे करता जवाथी ल्हेरना शेष खंडोना अंक आवेछे; माटे ए प्रमाणे विधि कर्यो तो नीचे जणावेला अंक दर्शन प्रमाणे ल्हेरवार अंक आव्या.

खाली खंड भरवानी कृति.

बीजा खंड भरवा माटे—

३२—१६=१६ आवीगया छे माटे वर्ज्य | ३२—२=३
३२— ८=२४
३२— ४=२८ | ३२—१=३

त्रीजी ल्हेरना खाली खंड भरवा माटेः—

१६–८= ८ आवी गयां माटे वर्ज्य.

१६–४=१२

१६–२=१४

१६–१=१५

२४–८=१६ आवी गयां माटे वर्ज्य.

२४–४=२०

२४–२=२२

२४–१=२३

२८–८=२० आवी गयां माटे वर्ज्य.

२८–४=२४ ”

२८–२=२६

२८–१=२७

३०–८=२२
३०–४=२६ } आवी गया माटे वर्ज्य.
३०–२=२८

३०–१=२९

३१–८=२३
३१–४=२७ } आवी गया माटे वर्ज्य.
३१–२=२९
३१–१=३०

चोथी ल्हेरना खाली खंड भरवा माटे—

८–४= ४ आवी गयां माटे वर्ज्य.

८–२= ६

८–१= ७

१२–४= ८ आवी गयां माटे वर्ज्य.

१२–२=१०

१२—१=११

२०—४=१६ आवी गयो माटे वर्ज्य.

२०—२=१८

२०—१=१९

१४—४=१०
१४—२=१२ } आवी गया माटे वर्ज्य.

१४—१=१३

२२—४=१८
२२—२=२० } आवी गया माटे वर्ज्य.

२२—१=२१

२६—४=२२
२६—२=२४ } आवी गया माटे वर्ज्यः

२६—१=२५

पाचमी लेहेरना खाली खानां भरवा माटेः-

४—२= २ आवी गयो माटे वर्ज्य.

४—१= ३

६—२= ४ आवी गयो माटे वर्ज्यः

६—१= ५

७—२= ५
७—१= ६
१०—२= ८ } आवी गया माटे वर्ज्य.

१०—१= ९

११—२= ९
११—१=१०
१३—२=११
१३—१=१२
१८—२=१६ } आवी गया माटे वर्ज्य.

१८−१=१७

छट्ठी लेहेर भरवा माटे−

२−१= १ आवी गयो माटे वर्ज्य.

उपर प्रमाणे गणित करतां लेहेरवार आवेल अंकने तैयार करेल पताका चिन्हमां भरी आप्या, तो पांच वर्णना प्रस्तारनी पताका नीचे आप्या प्रमाणे आवी.

पांच वर्णना प्रस्तारनी पताका.

	दंड.									
शून्य गुरु.	३२									
एक गुरु.	१६	२४	२८	३०	३१					
बे गुरु.	८	१२	१४	१५	२०	२२	२३	२६	२७	२९
त्रण गुरु.	४	६	७	१०	११	१३	१८	१९	२१	२५
चार गुरु.	२	३	५	९	१७					
पांच गुरु.	१									

आपेल रीति मुजब एकथी आरभी चार वर्ण पर्यन्तना जूदा जूदा वर्णनी पताका तैयार करी, तो ते नीचे प्रमाणे आवी:—

एक वर्णनी पताका.

।	शून्यगुरु १	२
S	सर्वगुरु १	१

बे वर्णनी पताका.

संज्ञा	दंड	
१ ।।	४	
२ ।S	२	३
१ SS	१	

त्रण वर्णनी पताका.

संज्ञा	मेरु	दंड		
|||	१	८		
||ऽ	३	४	६	७
|ऽऽ	३	२	३	५
ऽऽऽ	१	१		

चार वर्णनी पताका.

संज्ञा	मेरु	दंड					
||||	१	१६					
|||ऽ	४	८	१२	१४	१५		
||ऽऽ	६	४	६	७	१०	११	१३
|ऽऽऽ	४	२	३	५	९		
ऽऽऽऽ	१	१					

वर्णप्रस्तार उत्क्रमपताकानी रीति.

क्रमपताकाना अंकने उलटावीने, एटले पहेली लेहेरना अंकने क्रमवार छेल्ली लेहेरमा, बीजी लेहेरना अंकने छेल्लीथी बीजी लेहेरमां, ए क्रम प्रमाणे छेल्लीथी क्रमवार भरवा, एटले उत्क्रम पताका तैयार थशे. अथवा क्रमपताकामा जे शून्यादि सूचक अक्षरो अथवा चिन्हो मूकेलां होय, तेमने ज मात्र उलटावीने एमज लखवाथी पण उत्क्रम प्रस्तार पताका तैयार थशे.

उदाहरण.

पांच वर्णना प्रस्तारनी उत्क्रम पताका तैयार करो.

क्रम पताकामा शून्य गुरुनी लेहेरमा ३२नो अंक छे तेने आ पताकामा सर्वगुरु, अर्थात् पांच गुरुनी लेहेरमा मूक्यो. बीजी लेहेर एक गुरुनी छे ने तेमां १६, २४, २८, ३० अने ३१ अंक छे, तेने छेल्ली लेहेरथी बीजी लेहेर जे आ पताकामां चार गुरुनी छे तेमां मूक्या. ए प्रमाणे सर्व अंकने क्रमवार भरी दीधा, तो उत्क्रम प्रस्तार पताका नीचे प्रमाणे तैयार थइ.

उत्क्रमप्रस्तार पताकाबिम्ब.

संज्ञा	मेरु	दंड										
SSSSS	१	३२										
SSSSI	५	१६	२४	२८	३०	३१						
SSSII	१०	८	१२	१४	१५	२०	२२	२३	२६	२७	२९	
SSIII	१०	४	६	७	१०	११	१३	१८	१९	२१	२५	
SIIII	५	२	३	५	९	१७						
IIIII	१	१										

केवळ शून्यादि गुरुनां स्थाननो क्रम फेरववाथी पण क्रम पताकामांथी आ पताका तैयार थइ शकेछे, ए उपरनुं बिम्ब जोतां स्पष्ट समजाइ आवशे.

क्रम पताकामां ३२ नो अंक जे लेहरमां छे ते स्थळे शून्यगुरु संज्ञाना चिन्ह छे, ते आमां छेवटना सर्वगुरु स्थळे छेल्ले मूकवामा आवेल छे तेथी बीजुं जे चिन्ह एक गुरुनु छे ते छेलेथी बीजे मूकेल छे. त्रीजु छे ते त्रीजु, मूक्युं छे, जे छेल्लुं ने जे सर्वगुरुनुं छे ते पेहेलुं मूक्यु छे.

वर्णप्रस्तार मर्कटी

प्रस्तारजन्य छंदसंख्या, तदन्तर्गत लघुगुरु वर्णसंख्या, लघुगुर्वन्त रूपसंख्या, गर्व कळा अने पिंड. इत्यादि मर्कटी बिम्बथी जाणी शकायछे एम मात्रा प्रस्तार प्रकरणमा जणावाइ गयु छे, एटले ते संबधनी व्याख्या अत्र फरीने न आपतां आ प्रस्तारने लगती मर्कटी शी रीते तैयार करवी तेज मात्र जणाविये छिये.

छन्दःशास्त्रकारो आ मर्कटी नीचे जणावेली त्रण रीतिये बनावेछे.

प्रथम रीति. जेटला वर्ण पर्यन्तनी मर्कटी रचवी होय तेटला उभा कोठा करवा अने ते प्रत्येक उभा कोठाना छ विभागो

त्रण वर्णनी पताका. चार वर्णनी पताका.

संज्ञा	मेरु	दंड		
				१	८		
||S	३	४	६	७
|SS	३	२	३	५
SSS	१	१		

संज्ञा	मेरु	दंड					
					१	१६					
|||S	४	८	१२	१४	१५		
||SS	६	४	६	७	१०	११	१३
|SSS	४	२	३	५	९		
SSSS	१	१					

वर्णप्रस्तार उत्क्रमपताकानी रीति.

क्रमपताकाना अंकने उलटावीने, एटले पेहेलो लेहेरना अंकने क्रमवार छेल्ले लेहेरमा, बीजी लेहेरना अंकने छेल्लीथी बीजी लेहेरमां, ए क्रम प्रमाणे छेल्लीथी क्रमवार भरवा; एटले उत्क्रम पताका तैयार थशे. अथवा क्रमपताकामा जे शून्यादि सूचक अक्षरो अथवा चिन्हो मूकेलां होय, तेमने ज मात्र उलटावीने एमाज लखवाथी पण उत्क्रम प्रस्तार पताका तैयार थशे.

उदाहरण.

पांच वर्णना प्रस्तारनी उत्क्रम पताका तैयार करो.

क्रम पताकामां शून्य गुरुनी लेहेरमा ३२नो अंक छे तेने आ पताकामा सर्वगुरु, अर्थात् पांच गुरुनी लेहेरमां मूक्यो. बीजी लेहेर एक गुरुनी छे ने तेमा १६, २४, २८, ३० अने ३१ अंक छे, तेने छेल्ली लेहेरथी बीजी लेहेर जे आ पताकामां चार गुरुनी छे तेमां मूक्या. ए प्रमाणे सर्व अंकने क्रमवार भरी दीधा तो उत्क्रम प्रस्तार पताका नीचे प्रमाणे तैयार थइ.

बिम्बमां दर्शाव्या प्रमाणे करवा. एटले आखा बिम्बमां खंडनी संख्या, वर्णसंख्या× ६ बरोबर थशे ए प्रमाणे बिम्ब तैयार करी तेना प्रत्येक उभा कोठाना आद्य खंडमां एकादि चडतो अंक लखी जवो. बीजा खडमां उपर लखेली वर्ण संख्यानी जे रूप संख्या थती होय ते लखी जवी. ते तळेना त्रीजा कोठामां उपरना प्रथम अने द्वितीय खंडनी संख्यानो गुणाकार भरी देवो. चोथा अने पांचमा खडमां त्रीजा खंडमां लखेल-संख्यानुं अर्ध करी देतां जे संख्या आवे ते भरी देवी. अने छेवट छठ्ठा अथवा छठ्ठा खंडमां पांचमा खडमा भरायली संख्याने त्रणथी गुणतां जे गुणाकार आवे ते भरी देवो. बाद ए छए पंक्तिने नीचे प्रमाणे सञ्ज्ञा देवी. प्रथम खंड. वर्ण, बीजो रूपसंख्या; त्रीजो वर्ण संख्या, चोथो अने पांचमेगुरु अने लघु वर्णसंख्याः अने छठ्ठो खड मात्रासंख्या सूचवनारा छे, माटे ते ते संज्ञा डाबी भणी भरी जवी; एटले मर्कटी बिम्ब तैयार थशे.

प्रश्न. छ वर्णनी मर्कटी तैयार करो.

उपर जणाव्या प्रमाणे कोठा पाडी अंक भरी, ए बिम्ब तैयार कर्युं तो ते नीचे जणाव्या प्रमाणे आव्युं—:

छ वर्णनुं मर्कटी बिम्ब.

वर्ण	१	२	३	४	५	६
रूपसंख्या.	२	४	८	१६	३२	६४
वर्णसंख्या	२	८	२४	६४	१६०	३८४
गुरु वर्णसंख्या	१	४	१२	३२	८०	१९२
लघु वर्णसंख्या	१	४	१२	३२	८०	१९२
मात्रासंख्या.	३	१२	३६	९६	२४०	५७६

बीजी रीति.

उपर प्रमाणे बिम्ब तैयार करो. उभा कोठाना पेहेला तथा बीजा खंड तेमां कहेली रीतिये भरी जवा. त्रीजो खंड तेमां आपेली रीतिथी न भरतां, तेनो छठ्ठो खंड. जे रीतिये भरायछे, ते रीतिये भरवो, अने चोथो, पाचमो तथा छठ्ठो खंड तेना त्रीजा, चोथा अने पाचमा खंड भरवानी रीतिये भरवा. अने सन्ना स्थळे डाबी भणी क्रमे वर्ण, रूपसंख्या, मात्रा-संख्या, गुरुवर्णसंख्या ने लघुवर्ण संख्या, ए नाम भरी जवां एटले आ प्रकारनी मर्कटीनुं बिम्ब तैयार थशे.

प्रश्न. उपर आपेली बीजी रीतिथी छ वर्णनी मर्कटीनुं बिम्ब तैयार करो.

छ वर्ण मर्कटीबिम्ब.

वर्ण.	१	२	३	४	५	६
रूपसंख्या.	२	४	८	१६	३२	६४
मात्रासंख्या	३	१२	३६	९६	२४०	५७६
वर्णसंख्या	२	८	२४	६४	१६०	३८४
गुरु वर्णसंख्या	१	४	१२	३२	८०	१९२
लघु वर्णसंख्या	१	४	१२	३२	८०	१९२

त्रीजी रीति.

जेटला वर्णनी मर्कटी तैयार करवानी होय, ते संख्याथी एक वधारे जेटली उभी अने सात आडी पंक्तिवाळुं एक बिम्ब तैयार करवुं. एटले ए बिम्बमां ए रीते सर्व खंड संख्या ७ × इष्टवर्णसंख्या + १ बरोबर थशे. ए प्रमाणे बिम्ब तैयार करी नीचे जणाव्या प्रमाणे अंक भरवा :—

डाबी भणीनी प्रथम उभी पंक्ति संज्ञा द्योतक छे, माटे तेना सात खंडमां क्रमे वर्ण संख्या, छन्दोरूप संख्या, लघुगुर्वाद्यन्तरूपसंख्या, सर्ववर्ण, लघुगुरुवर्ण, सर्वकळा अने पिंड ए नाम लखी जवां. बीजीथी आरंभी जेटली उभी पंक्तिओ होय तेमां एकादि चडता अंक भरी जवा. ते तळे उपर भरादेला अंक तुल्य वर्णनी जे रूप सख्या थती होय, ते भरी जवी. प्रत्येक पंक्तिना त्रीजा खंडमां बीजा खंडमां भरायली संख्याने बेथी भागतां जे संख्या आवे ते भरी जवी. चोथा खंडमां, पेहेला अने बीजा खंडमां भरायली संख्यानो गुणाकार भरवो. पाचमामां चोथा खंडनी संख्याने बेथी भागतां जे अंक आवे ते भरवा. छठ्ठा खंडमां चोथा अने पांचमा खंडमां भरायली संख्यानो सर्वाळो भरवो, अने छेल्ला, एटले सातमा खडमां छठ्ठा खंडमां भरायली सख्याने बेथी भागतां जे संख्या आवे ते भरवी, एटले मर्कटी तैयार थशे.

प्रश्न. उपर जणावेली रीतिये छ वर्णनी मर्कटीनुं बिम्ब तैयार करो.

छवर्णनी मरकटीनुं बिम्ब.

१ वर्ण सख्या.	१	२	३	४	५	६
२ छन्दोरूप सख्या	२	४	८	१६	३२	६४
३ लघु गुर्वाद्यन्तरूप संख्या	१	२	४	८	१६	३२
४ सर्ववर्ण सख्या.	२	८	१४	६४	१६०	३८४
५ लघुगुरु सख्या.	१	४	१२	३२	८०	१९२
६ सर्व कळा	३	१२	३६	९६	२४०	५७६
७ पिंड	१॥	६	१८	४८	१२०	२८८

प्रथम उभी पंक्तिमां संज्ञाद्योतक नाम भर्‍यां छे. ते पछीनी प्रत्येक पंक्तिना प्रथम खंडमां एकादि चढतो अंक लख्यो छे. बीजा खंडमां उपर लखायला अंकनी रूपसंख्या लखी छे. त्रीजामां तेनी अर्ध संख्या लखी छे. चोथामा बीजा अने त्रीजा खंडना अंकनो गुणाकार भर्‍यो छे. पांचमामां ए गुणाकारनुं अर्ध भर्‍युं छे. छठ्ठामां चोथा अने पांचमा खंडना अंकनो सर्वाळो भर्‍यो छे. अने सातमा खंडमां ए सर्वाळानुं अर्ध भर्‍युं छे. दाखला तरीके ए सातमी उभी पक्तिमा चडतो अंक ६ आवेछे ते भर्‍यो छे. बीजा खडमां छ वर्णनी रूप संख्या ६४ थायछे ते अंक भर्‍यो छे. त्रीजा खंडमा ६४÷२=३२ थायछे ते भर्‍या छे. चोथामां ६×६४=३८४ थायछे ते भर्‍या छे. पाचमामां ३८४ ÷२=१९२ थायछे ते भर्‍या छे. छठ्ठामां ३८४+१९२=५७६ थायछे ते भर्‍या छे, अने सातमा खंडमां ५७६÷२=२८८ थायछे ते भर्‍या छे. जे अंक जे संज्ञानी सामे आवेल होय ते ते सूचवनार होयछे माटे छ वर्णना प्रस्तार संबंधी आ मर्कटी विम्बमाथी विगत जाणवी छे तो वर्णसंख्या सामे छ वर्णनी तळेना अंकथी ने जाणी शकाशे; माटे ६, रूपवर्णसंख्या ६४, लघु गुर्वाद्यन्त रूपसंख्या ३२. सर्व वर्णसंख्या ३८४, गुरु लघु वर्णसंख्या १९२, सर्वकळसंख्या ५७६, अने पिंडसंख्या २८८.

गणप्रस्तारविधि.

मात्रा अने **वर्ण** प्रस्तारादिक प्रत्यय विधि विस्तार पूर्वक केहेवायो, हवे वर्ण अने मात्रिक गणजन्य प्रस्तारादि प्रत्यय सिद्ध करवानो विधि कहिये छिये.

प्रस्तारभेदांक मात्राना संख्यांक जेम तेनी पेहेलांनी बे मात्राना संख्यांकना योगथी अने वर्णना भेदांक बेना गुणोत्तरथी नीकळेछे तेम **गणप्रस्तारना** भेदांक नीकळता नथी परंतु ते जाणवाने नीचे प्रमाणे गणित करवुं पडेछे.

आरंभना गणथी इष्टगण पर्यंतना गणना जेटला जेटला भेद थता होय तेनो गुणाकार ते इष्टगणना भेदांक थायछे माटे जे गणमेळ छंदना भेदांक (कुलरूप संख्या) जाणवानी इच्छा होय तेना यथोक्तरीते गण पाडी तेना भेद क्रमवार मांडीजवा. पछी तेमनो एकत्र गुणाकार करवो, जे जवाब आवे तेने **भेदांक** केहेवा.

१. दुहानो पेहेलो गण टगण छे, अने बीजो गण डगणछे ते बे गणना भेदांक केटला थशे?

टगणना भेद १३ थाय छे, अने डगणना भेद ५ थाय, परंतु दुहामां पाचने बदले मात्र चार काम आवेछे, माटे त्यां तेना चार भेद गणाशे, माटे टगण अने डगणना भेदांक दोहा प्रस्तारमां १३×४=५२ थया. पण डगणना पांच भेद मानिये तो टगण तथा डगणना १३×५=६५ भेद थाय.

२. नीचेना मात्रिक गणना परस्परना मेळनना केटला भेदांक थशे; ए प्रथक् प्रथक् कोहो.

टगण अने टगणना भेदांक=१३×१३=१६९.

टगण अने ठगणना भेदांक=१३× ८=१०४.

टगण अने डगणना भेदांक=१३× ५= ६५.

टगण अने ढगणना भेदांक=१३× ३= ३९.

टगण अने णगणना भेदांक=१३× २= २६.

एज प्रमाणे—

ठगण अने ठगणना भेदांक=८×८=६४.

ठगण अने डगणना भेदांक=८×५=४०.

ठगण अने ढगणना भेदांक=८×३=२४.

ठगण अने णगणना भेदांक=८×२=१६.

एज प्रमाणे—

डगण अने डगणना भेदांक=५×५=२५.

डगण अने ढगणना भेदांक=५×३=१५.

डगण अने णगणना भेदांक=५×२=१०.

एज प्रमाणे—

ढगण अने ढगणना भेदांक=३×३=९.

ढगण अने णगणना भेदांक=३×२=६.

एज प्रमाणे—

णगण अने णगणना भेदांक=२×२=४ थाय.

एम जे जे छंदना जेटला जेटला गण पाडवामां आव्या होय तेमना जेटला जेटला भेद तेमां उपयोगमां आवता होय, तेमनो गुणाकार करवाथी छंदनी भेदसंख्या मळी आवेछे. पांचे गणनी भेदसंख्या जाणवानी होय तो ते १३×८×५×३×२=३१२०

एज नियम प्रमाणे दोहाना चौद गणना भेदपरथी तेनी रूप संख्या=१३×४×१×२×१३×२×१×१३×४×१×२×१३×२×१=७३,११,६१६ थाय.

अने आर्याना सोळ गणनां रूपनी संख्या तेमनां गणनां रूपपरथी नीचे प्रमाणे आवे.

आर्या रूप संख्या=४×५×४×५×४×२×४×१×४×५×४×५×४×१×४×१=८,१९,२०,०००

अने अनैमिक अनुष्टुप्नां रूप एज नियम प्रमाणे:—
४×८×४×८×८×४×८×८×४×८×८×४=४,२९,४९,६७,२९६ थाय.

अने नैमिकगण अनुष्टुप्ना रूपनी संख्या:—
८×२×१×२×८×२×१×२×८×२×१×२×८×२×१×२=१०,४८,५७६ थाय.

प्रस्तार. अगाउ जणावी गयेला मात्रा अने वर्ण प्रस्तारना विधिथी गणप्रस्तारनो विधि जूदा प्रकारनो छे. मात्रा तथा वर्णना प्रस्तारमां जेम लघु नीचे गुरु अने गुरु नीचे लघु एम मूकायछे, तेम अकेका गुरु लघुनुं स्थान बदलवाथी आ प्रस्तार थतो नथी, पण आमां तो गणना आखा रूपने बदले तेनुं बीजु रूप क्रमवार मूकायछे, अने पूर्वना एक गणनां आवर्त्तन पर्यन्त पाछळना सर्व गणोनां तेनां तेज रूप लखवामां आवेछे ते एवी रीते के—

जेटला गणनो प्रस्तार करवानो होय तेटला गणना प्रथम रूप क्रमवार पेहेला लखी जवां. बाद प्रथम गणना रूप तळे ते गणनां बीजां जेटलां जेटलां रूप थतां होय ते क्रमवार लखी जवां बाकीनां गणना पेहेलां रूप ज लाववां ज्यारे पेहेला गणनां

सर्व रूप लखाइ रेहे, त्यारे पेहेलां गणना रूपोनुं फरी आवर्त्तन करवुं; एटले के, ते फरी क्रमवार लखवां अने बीजा गणनुं बीजुं रूप लखवुं अने बाकीना गणनां पेहेलां रूप ज लखतां जवां. एम प्रथम गणना एक आवर्त्तने बीजा गणनुं अकेकुं रूप लखतां, ज्यारे सघळां रूप लखाइ जाय, त्यारे पेहेला अने बीजा गणना समुदाये एक आवर्त्तन दीठ त्रीजा गणनां रूप लखतां जवां. एम त्रीजा गणनां सघळां रूप प्रस्तारमां आवी गया बाद त्रणे गणमां आवेला रूपना आवर्त्तन दीठ चोथा गणनां रूप क्रमवार लखवां. एम छेल्ला गणनां सघळां रूप तेथी पेहेलाना गणनां थयेला रूपना आवर्त्तन दीठ लखवां; ज्यारे सर्व गणना एकीवारे छेल्लां रूप प्रस्तारमां आवी जाय त्यारे प्रस्तार पूरो थयो समजवो.

१. ढगण अने णगणनो भेगो प्रस्तार करो

आ उदाहरणमां ढगण ।ऽ नां त्रण रूप अने णगणनां बे रूप थायछे ते कह्या प्रमाणे लख्या तो तेनो प्रस्तार नीचे प्रमाणे आव्यो.

१. ढगण णगण प्रस्तार.

(३×२=६ रूप).

१.	।ऽ,	ऽ,
२.	ऽ।,	ऽ,
३.	।।।,	ऽ,
४.	।ऽ,	।।
५.	ऽ।,	।।.
६.	।।।,	।।.

२. ढगण ढगण प्रस्तार.

(३×३=९ रूप)

१	।ऽ	।ऽ
२	ऽ।	।ऽ
३	।।।	।ऽ
४	।ऽ	ऽ।
५	ऽ।	ऽ।
६	।।।	ऽ।
७	।ऽ	।।।
८	ऽ।	।।।

३. डहणगणप्रस्तार.

	ड	ह	ण		ड	ह	ण
१	SS	IS	S	१६	SS	IS	II
२	IIS	IS	S	१७	IIS	IS	II
३	ISI	IS	S	१८	ISI	IS	II
४	SII	IS	S	१९	SII	IS	II
५	IIII	IS	S	२०	IIII	IS	II
६	SS	SI	S	२१	SS	SI	II
७	IIS	SI	S	२२	IIS	SI	II
८	ISI	SI	S	२३	ISI	SI	II
९	SII	SI	S	२४	SII	SI	II
१०	IIII	SI	S	२५	IIII	SI	II
११	SS	III	S	२६	SS	III	II
१२	IIS	III	S	२७	IIS	III	II
१३	ISI	III	S	२८	ISI	III	II
१४	SII	III	S	२९	SII	III	II
१५	IIII	III	S	३०	IIII	III	II

समजण.

पेहेला उदाहरणमां हगण अने णगणनो प्रस्तार करवो छे, माटे तेमनां पेहेलां रूप IS, S प्रस्तारमां अनुक्रमे पेहेलां मूक्यां. एमां पेहेलो गण हगण छे तेनां त्रण रूप IS, SI, III थायछे तेमां पेहेलुं लखाइ गयुं, माटे बीजां बे रह्यां ते तेनी नीचे क्रमवार मूक्यां अने बाकीना गण णगणनुं पेहेलुं रूप तेना पेहेला रूपनी नीचे मूक्युं.

त्रणनी संख्या मामेना प्रस्तार सुधीमा पेहेला गणनां त्रण रूप लखाइ रह्यां, माटे चोथी संख्याथी पेहेला गणनां क्रमवार रूप लख्यां ने बीजा गणनुं बीजुं रूप ॥ छे ते लख्यु एम ज्यारे पेहेला गणनुं बीजु आवर्त्तन पूरुं थयुं ने छनी मामे तेनुं छेल्लु रूप ।।। आव्युं अने बीजा गणनु पण छेल्लु रूप आवी गयु माटे प्रस्तार पूरो थयो.

बीजा उदाहरणमा ढगण अने ढगणनो प्रस्तार कर्यो छे. तेमां प्रथम गणना अकेक आवर्त्तने ते पछीना बीजा गणना रूपमांनुं अकेकुं रूप लीधुं छे, ते स्पष्ट समजाय एवुं छे माटे विगतवार लखता नथी.

त्रीजा उदाहरणमां ढ ढ अने ण गणनो प्रस्तार कर्यो छे तेमा प्रथम गणनां पांच रूप थायछे ते प्रथम लखी, तेमनी हारमाज ते पछीना गणनां पेहेलां रूप लख्यां छे. पेहेला गणना पेहेला आवर्त्तने बीजा गणनुं पेहेलुं रूप लख्युं छे अने त्रीजानु पेहेलुंज रूप कायम राख्युं छे. त्रीजा आवर्त्तने बीजा गणनु त्रीजुं रूप लख्युं छे ने त्रीजानु प्रथम रूप कायम राख्यु छे एम एटला सुधी १५ रूप तैयार थयां. तेना एक आवर्त्तन सुधी त्रीजा गणनुं पेहेलु रूप आवी गयु छे माटे बीजा आवर्त्तनमां बीजु रूप ॥ लीधुं छे. छेवट २० मा भेदमां ए त्रण गणनां छेल्लां रूप ।।।।, ।।।, ॥ आवी गयां छे एटले प्रस्तार पूरो थयो.

टगणादि गणनां प्रस्तारबिम्ब आ नीचे आप्या छे, एथी

ट ड गणप्रस्तार.

१ SSSSS	२ ||SSSS	३ |S|SSS
४ S||SSS	५ ||||SSS	६ |SS|SS
७ S|S|SS	८ |||S|SS	९ SS||SS
१० ||S||SS	११ |S|||SS	१२ S||||SS
१३ ||||||SS	१४ SSS||S	१५ ||SS||S
१६ |S|S||S	१७ S||S||S	१८ ||||S||S
१९ |SS|||S	२० S|S|||S	२१ |||S|||S
२२ SS||||S	२३ ||S||||S	२४ |S|||||S
२५ S||||||S	२६ ||||||||S	२७ SSS|S|
२८ ||SS|S|	२९ |S|S|S|	३० S||S|S|
३१ ||||S|S|	३२ |SS||S|	३३ S|S||S|
३४ |||S||S|	३५ SS|||S|	३६ ||S|||S|
३७ |S||||S|	३८ S|||||S|	३९ |||||||S|
४० SSSS||	४१ ||SSS||	४२ |S|SS||
४३ S||SS||	४४ ||||SS||	४५ |SS|S||
४६ S|S|S||	४७ |||S|S||	४८ SS||S||
४९ |S||S||	५० |S|||S||	५१ S||||S||
५२ ||||||S||	५३ SSS||||	५४ ||SS||||
५५ |S|S||||	५६ S||S||||	५७ ||||S||||
५८ |SS|||||	५९ S|S|||||	६० |||S|||||
६१ SS||||||	६२ ||S||||||	६३ |S|||||||
६४ S||||||||	६५ ||||||||||	

ठ ड गणप्रस्तार.

१ |SSSS	२ S|SSS	३ |||SSS
४ SS|SS	५ ||S|SS	६ |S||SS
७ S|||SS	८ |||||SS	९ |SS||S
१० S|S||S	११ |||S||S	१२ SS|||S

१३ ||S||S   १४ |S|||S   १५ S||||S

१६ ||||||S   १७ |SS|S| १८ S|S|S|

१९ |||S|S| २० SS||S| २१ ||S||S|

२२ |S|||S| २३ S|||S| २४ ||||||S|

२५ |SSS|| २६ S|SS|| २७ |||SS||

२८ SS|S|| २९ ||S|S|| ३० |S||S||

३१ S|||S|| ३२ |||||S|| ३३ |SS||||

३४ S|S|||| ३५ |||S|||| ३६ SS|||||

३७ ||SS|||| ३८ |S|||||| ३९ S||||||

४० ||||||||

ड ड गणप्रस्तार.

१ SSSS   २ ||SSS   ३ |S|SS

४ S||SS   ५ ||||SS   ६ SS||S

७ ||S||S   ८ |S|||S   ९ S||||S

१० ||||||S   ११ SS|S| १२ ||S|S|

१३ |S||S| १४ S|||S| १५ |||||S|

१६ SSS|| १७ ||SS|| १८ |S|S||

१९ S||S|| २० ||||S|| २१ SS||||

२२ ||S|||| २३ |S||||| २४ S||||||

२५ |||||||

ट ठ गणप्रस्तार.

१ SSS|SS   २ ||SS|SS   ३ |S|S|SS

४ S||S|SS   ५ ||||S|SS   ६ |SS||SS

७ S|S||SS   ८ |||S||SS   ९ SS|||SS

१० ||S|||SS   ११ |S||||SS   १२ S||||SS

१३ |||||||SS   १४ SSSS|S   १५ ||SSS|S

१६ |S|SS|S   १७ S||SS|S   १८ ||||SS|S

१९ |SS|S|S   २० S|S|S|S   २१ |||S|S|S

२२ SSIISIS	२३ IISIISIS	२४ ISIISIS
२५ SIIISIS	२६ IIIIISIS	२७ SSSIIIS
२८ IISSIIIS	२९ ISISIIIS	३० SIISIIIS
३१ IIIISIIIS	३२ ISSIIIS	३३ SISIIIS
३४ IIISIIIS	३५ SSIIIIS	३६ IISIIIIS
३७ ISIIIIIS	३८ SIIIIIIS	३९ IIIIIIIS
४० SSSSSI	४१ IISSSSI	४२ ISISSSI
४३ SIISSSI	४४ IIIISSSI	४५ ISSISSI
४६ SISISSI	४७ IIISISSI	४८ SSIISSI
४९ IISIISSI	५० ISIIISSI	५१ SIIIISSI
५२ IIIIIISSI	५३ SSSIISI	५४ IISSIISI
५५ ISISIISI	५६ SIISIISI	५७ IIIISIISI
५८ ISSIIISI	५९ SISIIISI	६० IIISIIISI
६१ SSIIIISI	६२ IISIIIISI	६३ ISIIIIISI
६४ SIIIIIISI	६५ IIIIIIISI	६६ SSSISII
६७ IISSISII	६८ ISISISII	६९ SIISISII
७० IIIISISII	७१ ISSIISII	७२ SISIISII
७३ IIISIISII	७४ SSIIISII	७५ IISIIISII
७६ ISIIIISII	७७ SIIIIISII	७८ IIIIIIISII
७९ SSSSIII	८० IISSSIII	८१ ISISSIII
८२ SIISSIII	८३ IIIISSIII	८४ ISSISIII
८५ SISISIII	८६ IIISISIII	८७ SSIISIII
८८ IISIISIII	८९ ISIIISIII	९० SIIIISIII
९१ IIIIIISIII	९२ SSSIIIII	९३ IISSIIIII
९४ ISISIIIII	९५ SIISIIIII	९६ IIIISIIIII
९७ ISSIIIIII	९८ SISIIIIII	९९ IIISIIIIII
१०० SSIIIIIII	१०१ IISIIIIIII	१०२ ISIIIIIIII
१०३ SIIIIIIIII	१०४ IIIIIIIIIII	

छिगण प्रस्तार.

	ट ण	ठ ण	ड ण	ढ ण	ण ण
१	SSSS	ISSS	SSS	SIS	SS
२	IISSS	SISS	IISS	IIIS	IIS
३	ISISS	IIISS	SIIS	SSI	SII
४	SIISS	SSIS	IIIS	IISI	IIII
५	IIIISS	IISIS	SISI	SIII	४
६	ISSIS	ISIIS	IIISI	IIIII	
७	SISIS	SIIIS	SSII	६	
८	IIISIS	IIIIIS	IISII		
९	SSIIS	ISSII	SIIII		
१०	IISIIS	SISII	IIIIII		
११	ISIIIS	IIISII	१०		
१२	SIIIIS	SSIII			
१३	IIIIIIS	IISIII			
१४	SSSII	ISIIII			
१५	IISSII	SIIIII			
१६	ISISII	IIIIIII			
१७	SIISII	१६			
१८	IIIISII				
१९	ISSIII				
२०	SISIII				
२१	IIISIII				
२२	SSIIII				
२३	IISIIII				
२४	ISIIIII				
२५	SIIIIII				
२६	IIIIIIII				
	२६				

द्विगण प्रस्तार.

	ट ढ	ठ ढ	ड ढ	ढ ढ
१	SSSISIS	ISSIS	SSIS	ISIS
२	IISSSIS	SISIS	IISIS	SIIS
३	ISISIS	IIISIS	ISIIS	IIIIS
४	SIISIS	SSIIS	SIIIS	ISSI
५	IIIISIS	IISIIS	IIIIS	SISI
६	ISSIIS	ISIIIS	SSSI	IIISI
७	SISIIS	SIIIIS	IISSI	ISIII
८	IIISIIS	IIIIIS	ISISI	SIIII
९	SSIIIS	ISSSI	SIISI	IIIIII
१०	IISIIIS	SISSI	IIIISI	९
११	ISIIIIS	IIISSI	SSIII	
१२	SIIIIS	SSISI	IISIII	
१३	IIIIIIIS	IISISI	ISIIII	
१४	SSSSI	ISIISI	SIIII	
१५	IISSSI	SIIISI	IIIIII	
१६	ISISSI	IIIIISI	१५	
१७	SIISSI	ISSIII		
१८	IIIISSI	SISIII		
१९	ISSISI	IIISIII		
२०	SISISI	SSIIII		
२१	IIISISI	IISIIII		
२२	SSIISI	ISIIIII		
२३	IISIISI	SIIIIII		
२४	ISIIISI	IIIIIIII		
२५	SIIIISI	२४		
२६	IIIIIISI			
२७	SSSIII			
२८	IISSIII			
२९	ISISIII			
३०	SIISIII			
३१	IIIISIII			
३२	ISSIIII			
३३	SISIIII			
३४	IIISIIII			
३५	SSIIIII			
३६	IISIIIII			
३७	ISIIIIII			
३८	SIIIIIII			
३९	IIIIIIIII			
	३९			

ठ ठ गणप्रस्तार.

१ ISSISS　२ SISISS　३ IIISISS
४ SSIISS　५ IISIISS　६ ISIIISS
७ SIIIISS　८ IIIIIISS　९ ISSSIS
१० SISSIS　११ IIISSIS　१२ SSISIS
१३ IISISIS　१४ ISIISIS　१५ SIIISIS
१६ IIIIISIS　१७ ISSIIIS　१८ SISIIIS
१९ IIISIIIS　२० SSIIIIS　२१ IISIIIIS
२२ ISIIIIIS　२३ SIIIIIIS　२४ IIIIIIIIS
२५ ISSSSI　२६ SISSSI　२७ IIISSSI
२८ SSISSI　२९ IISISSI　३० ISIISSI
३१ SIIISSI　३२ IIIIISSI　३३ ISSIISI
३४ SISIISI　३५ IIISIISI　३६ SSIIISI
३७ IISIIISI　३८ ISIIIISI　३९ SIIIIISI
४० IIIIIIISI　४१ ISSISII　४२ SISISII
४३ IIISISII　४४ SSIISII　४५ IISIISII
४६ ISIIISII　४७ SIIIISII　४८ IIIIIISII
४९ ISSSIII　५० SISSIII　५१ IIISSIII
५२ SSISIII　५३ IISISIII　५४ ISIISIII
५५ SIIISIII　५६ IIIIISIII　५७ ISSIIIII
५८ SISIIIII　५९ IIISIIIII　६० SSIIIIII
६१ IISIIIIII　६२ ISIIIIIII　६३ SIIIIIIII
६४ IIIIIIIIII

ट ट गणप्रस्तार.

१ SSSSSS　　२ ||SSSSS　　३ |S|SSSS

४ S||SSSS　　५ ||||SSSS　　६ |SS|SSS

७ S|S|SSS　　८ |||S|SSS　　९ SS||SSS

१० ||S||SSS　　११ |S|||SSS　　१२ S||||SSS

१३ ||||||SSS　　१४ SSS||SS　　१५ ||SS||SS

१६ |S|S||SS　　१७ S||S||SS　　१८ ||||S||SS

९ |SS|||SS　　२० S|S|||SS　　२१ |||S|||SS

२ SS||||SS　　२३ ||S||||SS　　२४ |S|||||SS

९ S||||||SS　　२६ ||||||||SS　　२७ SSS|S|S

१८ ||SS|S|S　　२९ |S|S|S|S　　३० S||S|S|S

३१ ||||S|S|S　　३२ |SS||S|S　　३३ S|S||S|S

१४ |||S||S|S　　३५ SS|||S|S　　३६ ||S|||S|S

३७ |S||||S|S　　३८ S|||||S|S　　३९ ||||||S|S

४० SSSS||S　　४१ ||SSS||S　　४२ |S|SS||S

४३ S||SS||S　　४४ ||||S|S||S　　४५ |SS|S||S

४६ S|S|S||S　　४७ |||S|S||S　　४८ SS||S||S

४९ ||S||S||S　　५० |S|||S||S　　५१ S||||S||S

५२ ||||||S||S　　५३ SSS||||S　　५४ ||SS||||S

५५ |S|S||||S　　५६ S||S||||S　　५७ ||||S||||S

५८ |SS|||||S　　५९ S|S|||||S　　६० |||S|||||S

६१ SS||||||S　　६२ ||S||||||S　　६३ |S|||||||S

६४ S||||||||S　　६५ ||||||||||S　　६६ SSS|SS|

६७ ||SS|SS|　　६८ |S|S|SS|　　६९ S||S|SS|

૭૦ ||||S|SS|	૭૧ |SS||SS|	૭૨ S|S||SS|
૭૩ |||S||SS|	૭૪ SS|||SS|	૭૫ ||S|||SS|
૭૬ |S||||SS|	૭૭ S||||SS|	૭૮ ||||||SS|
૭૯ SSSS|S|	૮૦ ||SSS|S|	૮૧ |S|SS|S|
૮૨ S||SS|S|	૮૩ ||||SS|S|	૮૪ |SS|S|S|
૮૫ S|S|S|S|	૮૬ |||S|S|S|	૮૭ SS||S|S|
૮૮ ||S||S|S|	૮૯ |S|||S|S|	૯૦ S||||S|S|
૯૧ ||||||S|S|	૯૨ SSS|||S|	૯૩ ||SS|||S|
૯૪ |S|S|||S|	૯૫ S||S|||S|	૯૬ ||||S|||S|
૯૭ |SS||||S|	૯૮ S|S||||S|	૯૯ |||S||||S|
૧૦૦ SS|||||S|	૧૦૧ ||S|||||S|	૧૦૨ |S||||||S|
૧૦૩ S|||||||S|	૧૦૪ |||||||||S|	૧૦૫ SSSSS||
૧૦૬ ||SSSS||	૧૦૭ |S|SSS||	૧૦૮ S||SSS||
૧૦૯ ||||SSS||	૧૧૦ |SS|SS||	૧૧૧ S|S|SS||
૧૧૨ |||S|SS||	૧૧૩ SS||SS||	૧૧૪ ||S||SS||
૧૧૫ |S|||SS||	૧૧૬ S||||SS||	૧૧૭ ||||||SS||
૧૧૮ SSS||S||	૧૧૯ ||SS||S||	૧૨૦ |S|S||S||
૧૨૧ S||S||S||	૧૨૨ ||||S||S||	૧૨૩ |SS|||S||
૧૨૪ S|S|||S||	૧૨૫ |||S|||S||	૧૨૬ SS||||S||
૧૨૭ ||S||||S||	૧૨૮ |S|||||S||	૧૨૯ S||||||S||
૧૩૦ ||||||||S||	૧૩૧ SSS|S|||	૧૩૨ ||SS|S|||
૧૩૩ |S||||S|||	૧૩૪ S||S|S|||	૧૩૫ ||||S|S|||
૧૩૬ |SS||S|||	૧૩૭ S|S||S|||	૧૩૮ |||S||S|||
૧૩૯ SS|||S|||	૧૪૦ ||S||S|||	૧૪૧ |S||||S|||
૧૪૨ S|||||S|||	૧૪૩ |||||||S|||	૧૪૪ SSSS||||

१४५ IISSSIIII   १४६ ISISSIIII   १४७ SIISSIIII

१४८ IIIISSIIII   १४९ ISSISIIII   १५० SISISIIII

१५१ IIISISIIII   १५२ SSIISIIII   १५३ IISIISIIII

१५४ ISIIISIIII   १५५ SIIIISIIII   १५६ IIIIIISIIII

१५७ SSSIIIIII   १५८ IISSIIIIII   १५९ ISISIIIIII

१६० SIISIIIIII   १६१ IIIISIIIIII   १६२ ISSIIIIIII

१६३ SISIIIIIII   १६४ IIISIIIIIII   १६५ SSIIIIIIII

१६६ IISIIIIIIII   १६७ ISIIIIIIIII   १६८ SIIIIIIIIII

१६९ IIIIIIIIIIII

अपवाद.

उपर कह्या प्रमाणे प्रस्तार करवामां जे गणनुं जे रूप वर्ज्य एटले मूकी देवानुं कह्युं होय, ते मूकी देवुं, अने जे गणनुं रूप **नियत** ठराव्युं होय, ते प्रस्तारना प्रत्येक भेदमां एनु एज कायम राखवुं.

दाखला तरिके, दुहाना बीजा गणमां जगण (ISI) रूप वर्ज्य गण्यु छे माटे तेना प्रस्तारमां तेनां रूप पाच न गणतां चार गणवां. तेमज तेना प्रथम पादमां अगिआरमी मात्रा एक लघुनी **नियत** लाववानी छे, माटे तेनो प्रस्तार करती वखते दुहाना प्रस्तारना जेटला भेद थता होय, तेटला भेदमां ए मात्राना गण-नी जगोए हमेशां लघु ज कायम राखवो. तेमज **आर्याना** उभयदलना अवसानमां गुरु अक्षर कायम राखवो अने तेना **चौदमा** गणमां लघु अक्षर तेना प्रस्तारमां कायम राखवो. एम वर्णगण मेळमां पण ज्यां, जे गण नियत होय, त्यां ते नियत मूकी बाकीनो प्रस्तार करवो.

दाखला तरिके, नैमिकगणअनुष्टुप्मां त्रीजो गण यगण अने सातमो गण जगण नियत छे माटे तेमने तेना उभयदलमां कह्या प्रमाणे तेनो प्रस्तार करती वेळा कायम राखवा.

प्रस्तारनी बीजी रीति.

जे गणमेळ छंदनो प्रस्तार करवो होय, ते छंदना जेटला गण थता होय, ते ते गणना स्वरूपमां जे जे पेहलुं रूप होय, ते प्रस्तारना आरंभमां मांडी जवुं पछी पिंगळगतमात्राप्रस्तारनी सामान्य रीतिए डाबी बाजुनी प्रथम गुरु मात्राथी प्रस्तारनो आरंभ करवो ज्यारे बीजा गणनो गुरु अक्षर डाबी बाजुनो पेहलो गुरु थाय, अर्थात् पेहला गणनुं अन्तिम रूप आवी जाय, त्यारे ते ज्यांना गुरु अक्षर बनावी ते रूप तळे मूकवा अने बीजा गणना गुरुनी नीचे एक लघु मूकतां ते गणनी मात्रामां एक मात्रा खूटे ते ते लघुनी डाबी बाजुए मूकी देवी अर्थात् गुरु नीचे लघु मूक्या पछी तेनी पूर्वनी मात्राना गुरु अक्षर बनावी खूटती मात्रा डाबी तरफ पेहला मूकवा रिवाज छे तेम न करवुं; पण जे गणनी मात्रा एम करतां खूटती होय, ते गणमां ज ते मात्रा डाबी बाजुए तेना रूपना आरंभमां मूकवी. एम डाबी तरफना प्रथम गुरुनी नीचे लघु मूकता जइ, अने जमणी तरफनां चिन्ह कायम राखता जइ, सर्व गणना रूपमां सर्वलघुनुं अंतिम रूप आवी जाय, त्यांलगण प्रस्तार करवो जवो जे गणमां जे रूप नियत होय ते कायम राखता जवुं ने जेमां जे रूप त्याज्य गणायुं होय ते रूप आवे त्यारे ते काहाडी नाखीने ते पछीनुं रूप होय ते गणमां लखवुं. जुओ आ पासेना पृष्ठपर आपेलो दोहानो ९२, रूप सुधीनो प्रस्तार तेमां तेरमुं रूप ||||||, SS, |,

ऽ; ऽऽऽ, ऽऽ, ।. ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽ; ऽऽऽ, ऽऽ, । आवुं छे. हवे चौदमुं रूप काहाडवुं छे तो, प्रथम गुरु बीजा गणमां छे ते तळे एक लघु मूक्यो अने बाकीनी ७ मात्राना गुरु ऽऽऽ अने एक लघु थाय ते ।ऽऽऽ आवां चिन्हथी मात्रा प्रस्तारना नियम प्रमाणे लखावां जोइये; परंतु प्रथम गण छ मात्रानो छे, माटे ते सात मात्रानो थाय नहि, तेथी वधारानालघुने डाबी बाजुए प्रथम गणना प्रारंभमां न मूकतां ते बीजा गणमां एक मात्रा घटेछे त्यां डाबी बाजुए ज्यां । ऽ रूप थयुं छे तेनी पेहेलां मूकी तो ते रूप ऽऽऽ, ।।ऽ, ।ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।; ऽऽऽ, ऽऽ, ।ऽ,ऽऽऽ, ऽऽ, । आवुं थयुं. एम आगळ चालतां सतावीशमुं रूप ऽऽऽ, ।ऽ।, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।. ऽऽऽ, ऽऽ, ।ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, । आवुं आव्युं. पण बीजा गणमां जगण "।ऽ।" न लेवो एवो नियम छे, माटे ते काहाडीनांखी ते पछीनुं रूप ऽ।। मूकतां, ए रूप ऽऽऽ, ऽ।।, ।, ऽ; ऽऽऽ, ऽऽ, ।. ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽ; ऽऽऽ, ऽऽ, । आवु थयुं. ४०मुं रूप ऽऽऽ, ।।।।, ।ऽ; ऽऽऽ, ऽऽ, ।. ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, । अने ५२ मु रूप ।।।।।।, ।।।।, ।, ऽ; ऽऽऽ, ऽऽ, ।. ऽऽऽ, ऽऽ, ।ऽ; ऽऽऽ, ऽऽ, । आव्युं.

दोहाना प्रस्तारनां प्रथम "५२" रूप.

१=ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।. ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।
२=।।ऽऽ, ऽऽ, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।.
३=।ऽ।ऽ, ऽऽ, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।
४=ऽ।।ऽ, ऽऽ, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽऽऽ, ऽऽ, । ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।
५=।।।।ऽ, ऽऽ, ।, ऽ ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।.
६=।ऽऽ।, ऽऽ, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।; ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।.
७=ऽ।ऽ।, ऽऽ, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽऽऽ, ऽऽ, ।, ऽ, ऽऽऽ, ऽऽ, ।.

८=IISI, SS, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

९=SSII, SS, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

१०=IISII, SS, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

११=ISIII, SS, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I

१२=SIIII, SS, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

१३=IIIII, SS I, S, SSS, SS I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

१४=SSS, IIS, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

१५=IISS, IIS, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

१६=ISIS, IIS, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS I, S, SSS, SS, I

१७=SIIS, IIS, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

१८=IIIIS, IIS, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

१९=ISSI, IIS, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

२०=SISI, IIS, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I

२१=IIISI, IIS, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

२२=SSII, IIS, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

२३=IISII, IIS, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

२४=ISIII, IIS, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

२५=SIIII, IIS, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I

२६=IIIIII, IIS. I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

२७=SSS, SII, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I

२८=IISS, SII, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

२९=ISIS, SII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

३०=ISIS, SII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

३१=IIIIS, SII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

३२=ISSI, SII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

३३=SISI, SII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

३४=IIISI, SII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

३५=SSII, SII, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

३६=IISII, SII, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

३७=ISIII, SII, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

३८=SIIII, SII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS I.

३९=IIIIII; SII I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

४०=SSS, IIII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I S, SSS, SS, I.

४१=IISS, IIII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

४२=ISIS, IIII, I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

४३=SIIS, IIII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

४४=IIIIS, IIII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

४५=ISSI, IIII, I, S, SSS, SS, I, SSS SS, I, S, SSS, SS, I.

४६=SISI, IIII I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

४७=IIISI, IIII I, S, SSS, SS, I; SSS, SS, I S, SSS, SS, I.

४८=SSII, IIII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

४९=IISII, IIII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

५०=ISIII, IIII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

५१=SIIII, IIII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I.

५२=IIIIII, IIII, I, S, SSS, SS, I, SSS, SS, I, S, SSS, SS, I

गणप्रस्तारनी त्रीजी रीति.

इष्टगणने गुणक केहेवो, अने तेना पूर्वना गण अथवा गण समूहना रूपने गुण्य केहेवो. गुण्य अने गुणकनो प्रस्तार करवामां आवेछे ते एवी रीते के गुण्यनां रूपने गुणकना भेद जेटली वार अने गुणकनां रूपने गुण्यनां भेदांक जेटली वार लखी जवां. एम पूर्वना गणरूपने गुण्य अने पछीना गणने गुणक करता जइ, जेटला गण होय तेमनो प्रस्तार करवो. प्रस्तारना

छेल्ला रूपमा सघळा गणोनां अन्तिम सर्वलघुनां रूप आवी जवां जोइये; अन्यथा प्रस्तारमां भूल समजवी.

उदाहरण.

१. आर्याना प्रथम त्रण गणनो प्रस्तार करो.

आर्याना त्रण गण चच्चार मात्राना छे, माटे तेमनो प्रस्तार डगण, डगण अने डगणना प्रस्तार शहश थशे, फेर मात्र एटलोज रेहेशे के, पेहेलाने त्रीजा गणनां पांच रूपने बदले जगण वर्जित होता, चार रूप काममां लेवाशे, एटले ते गणमां उपयोगमां लेवाना रूप गणवार क्रमे नीचे प्रमाणे थशे.

गण	१	२	३
	डगण.	डगण.	डगण
रूप	SS IIS SII IIII	SS IIS ISI SII IIII	SS IIS SII IIII
भेद.	४	५	४

एक पछी एक, एम अकेक गण उमेरता जइने अनुक्रमे प्रस्तार करवानो नियम छे, माटे प्रथमनो डगण गुण्य थयो, अने द्वितीय डगण गुणक थयो कारण के प्रथमना डगण साथे बीजा इष्ट डगणने मेळवीने प्रस्तार करवानो छे.

गुणांक डगणना भेद ५ छे, माटे आरंभमां गुण्यने पांचवार मांड्यो अने गुण्यना भेद ४ छे, माटे तेना प्रत्येक रूपनी हारमां गुणकनुं एक रूप चच्चारवार अनुक्रमे मांड्युं; तो पेहेला तथा बीजा गणनो प्रस्तार नीचे प्रमाणे थयो:—

	पेहेलो गुण्य गण.	बीजो गण गुणक.	
१ पहेलीवार.	१. ऽऽ	ऽऽ	पहेलुंरूप
	२. ।।ऽ	ऽऽ	
	३. ऽ।।	ऽऽ	
	४. ।।।।	ऽऽ	
२ बीजीवार.	५. ऽऽ	।।ऽ	बीजुंरूप
	६. ।।ऽ	।।ऽ	
	७. ऽ।।	।।ऽ	
	८. ।।।।	।।ऽ	
३ त्रीजीवार.	९ ऽऽ	।ऽ।	त्रीजुंरूप
	१० ।।ऽ	।ऽ।	
	११ ऽ।।	।ऽ।	
	१२ ।।।।	।ऽ।	
४ चोथीवार.	१३ ऽऽ	ऽ।।	चोथुंरूप
	१४ ।।ऽ	ऽ।।	
	१५ ऽ।।	ऽ।।	
	१६ ।।।।	ऽ।।	
५ पांचमीवार.	१७ ऽऽ	।।।।	पांचमुंरूप
	१८ ।।ऽ	।।।।	
	१९ ऽ।।	।।।।	
	२० ।।।।	।।।।	

उपर प्रमाणे बे गणनो प्रस्तार थतां तेना सवळां रूप वीश थयां; तेसने पूर्व गणनां रूप मानी लइने, तेने गुण्य गण्यो. हवे पछी तेनी साथे त्रीजा गणनो प्रस्तार वधारवानो छे, एटले ए गणने गुणक गण्यो. गुण्यना सवळा वीश भेद थयाछे ने गुणकना भेद ४ छे, माटे गुण्यने चार वार अने गुणकने पूर्व

गणना भेदांक जेटली वार लख्या तो ए त्रण गणनो प्रस्तार नीचे प्रमाणे तैयार थयो.

आर्यात्रिगण प्रस्तार.

		गुण्य		गुणक	
पेहेलीवार	१	SS	SS	SS	पेहेलुंरूप
	२	IIS	SS	SS	
	३	SII	SS	SS	
	४	IIII	SS	SS	
	५	SS	IIS	SS	
	६	IIS	IIS	SS	
	७	SII	IIS	SS	
	८	IIII	IIS	SS	
	९	SS	ISI	SS	
	१०	IIS	ISI	SS	
	११	SII	ISI	SS	
	१२	IIII	ISI	SS	
	१३	SS	SII	SS	
	१४	IIS	SII	SS	
	१५	SII	SII	SS	
	१६	IIII	SII	SS	
	१७	SS	IIII	SS	
	१८	IIS	IIII	SS	
	१९	SII	IIII	SS	
	२०	IIII	IIII	SS	

बीजीवार	२१	SS	SS	IIS	बीजुंरूप
	२२	IIS	SS	IIS	
	२३	SII	SS	IIS	
	२४	IIII	SS	IIS	
	२५	SS	IIS	IIS	
	२६	IIS	IIS	IIS	
	२७	SII	IIS	IIS	
	२८	IIII	IIS	IIS	
	२९	SS	ISI	IIS	
	३०	IIS	ISI	IIS	
	३१	SII	ISI	IIS	
	३२	IIII	ISI	IIS	
	३३	SS	SII	IIS	
	३४	IIS	SII	IIS	
	३५	SII	SII	IIS	
	३६	IIII	SII	IIS	
	३७	SS	IIII	IIS	
	३८	IIS	IIII	IIS	
	३९	SII	IIII	IIS	
	४०	IIII	IIII	IIS	
त्रीजीवार	४१	SS	SS	SII	त्रीजुंरूप
	४२	IIS	SS	SII	
	४३	SII	SS	SII	
	४४	IIII	SS	SII	

४५	SS	IIS	SII	
४६	IIS	IIS	SII	
४७	SII	IIS	SII	
४८	IIII	IIS	SII	
४९	SS	ISI	SII	
५०	IIS	ISI	SII	
५१	SII	ISI	SII	
५२	IIII	ISI	SII	
५३	SS	SII	SII	
५४	IIS	SII	SII	
५५	SII	SII	SII	
५६	IIII	SII	SII	
५७	SS	IIII	SII	
५८	IIS	IIII	SII	
५९	SII	IIII	SII	
६०	IIII	IIII	SII	
थीवार ६१	SS	SS	IIII	चोथुंरूप
६२	IIS	SS	IIII	
६३	SII	SS	IIII	
६४	IIII	SS	IIII	
६५	SS	IIS	IIII	
६६	IIS	IIS	IIII	
६७	SII	IIS	IIII	
६८	IIII	IIS	IIII	

६९	SS	।S।	।।।।
७०	।।S	।S।	।।।।
७१	S।।	।S।	।।।।
७२	।।।।	S।।	।।।।
७३	SS	S।।	।।।।
७४	।।S	S।।	।।।।
७५	S।।	S।।	।।।।
७६	।।।।	S।।	।।।।
७७	SS	।।।।	।।।।
७८	।।S	।।।।	।।।।
७९	S।।	।।।।	।।।।
८०	।।।।	।।।।	।।।।

वर्णगणप्रस्तार रीति.

वर्णप्रस्तारनी रीतिये प्रस्तार करवो, नियतगण रूपने नियतगण स्थळे कायम मूकतां जवां एटले ए प्रस्तार तैयार थशे.

गुण्य अने **गुणक**ना हिसाबे पण आ प्रस्तार थइ शकेछे.

१. **अनैमिकगण अनुष्टुप्**ना प्रथम पदनो प्रस्तार करो. आ वृत्तना प्रथम पदमां आठ अक्षर छे ने त्रण अक्षरनो गण पडेछे तो तेना गण नीचे प्रमाणे त्रण पडेछे.

	१ गण.	२ गण.	३ गण.
१.	SSS.	SSS.	SS.

प्रत्येक गणना भेद अने तेनां स्वरूप नीचेना बिम्बम दर्शाव्या प्रमाणे तैयार कर्यां अने तेना परथी एनो व प्रस्तार रीतिये प्रस्तार कर्यो तो ते नीचेना बिम्बमा जणाव्‍ प्रमाणे आव्यो.

अनैमिक गण अनुष्टुप् गणभेद स्वरूप चिम्ब.

पद	पेहेलुं			बीजुं			त्रीजुं			चोथुं		
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
वर्णसंख्या	३	३	२	३	३	२	३	३	२	३	३	२
भेदांक	८	८	४	८	८	४	८	८	४	८	८	४
भेदरूप १	SSS	SSS	SS	SSS	SSS	SS	SSS	SSS	SS	SSS	SSS	SS
२	ISS	ISS	IS	ISS	ISS	IS	ISS	ISS	IS	ISS	ISS	IS
३	SIS	SIS	SI	SIS	SIS	SI	SIS	SIS	SI	SIS	SIS	SI
४	IIS	IIS	II	IIS	IIS	II	IIS	IIS	II	IIS	IIS	II
५	SSI	SSI		SSI	SSI		SSI	SSI		SSI	SSI	
६	ISI	ISI		ISI	ISI		ISI	ISI		ISI	ISI	
७	SII	SII		SII	SII		SII	SII		SII	SII	
८	III	III		III	III		III	III		III	III	

अनैमिकगण अनुष्टुप्.

प्रथमपद गणप्रस्तार.

	१ प्र ग.	२ द्वि ग.	३ तृ ग.
१	SSS	SSS	SS
२	ISS	SSS	SS

३	ऽ।ऽ	ऽऽऽ	ऽऽ
४	।।ऽ	ऽऽऽ	ऽऽ
५	ऽऽ।	ऽऽऽ	ऽऽ
६	।ऽ।	ऽऽऽ	ऽऽ
७	ऽ।।	ऽऽऽ	ऽऽ
८	।।।	ऽऽऽ	ऽऽ
९	ऽऽऽ	।ऽऽ	ऽऽ
१०	।ऽऽ	।ऽऽ	ऽऽ
११	ऽ।ऽ	।ऽऽ	ऽऽ
१२	।।ऽ	।ऽऽ	ऽऽ
१३	ऽऽ।	।ऽऽ	ऽऽ
१४	।ऽ।	।ऽऽ	ऽऽ
१५	ऽ।।	।ऽऽ	ऽऽ
१६	।।।	।ऽऽ	ऽऽ
१७	ऽऽऽ	ऽ।ऽ	ऽऽ
१८	।ऽऽ	ऽ।ऽ	ऽऽ
१९	ऽ।ऽ	ऽ।ऽ	ऽऽ
२०	।।ऽ	ऽ।ऽ	ऽऽ
२१	ऽऽ।	ऽ।ऽ	ऽऽ
२२	।ऽ।	ऽ।ऽ	ऽऽ
२३	ऽ।।	ऽ।ऽ	ऽऽ
२४	।।।	ऽ।ऽ	ऽऽ
२५	ऽऽऽ	।।ऽ	ऽऽ
२६	।ऽऽ	।।ऽ	ऽऽ

२७	ऽ।ऽ	।।ऽ	ऽऽ
२८	।।ऽ	।।ऽ	ऽऽ
२९	ऽऽ।	।।ऽ	ऽऽ
३०	।ऽ।	।।ऽ	ऽऽ
३१	ऽ।।	।।ऽ	ऽऽ
३२	।।।	।।ऽ	ऽऽ
३३	ऽऽऽ	ऽऽ।	ऽऽ
३४	।ऽऽ	ऽऽ।	ऽऽ
३५	ऽ।ऽ	ऽऽ।	ऽऽ
३६	।।ऽ	ऽऽ।	ऽऽ
३७	ऽऽ।	ऽऽ।	ऽऽ
३८	।ऽ।	ऽऽ।	ऽऽ
३९	ऽ।।	ऽऽ।	ऽऽ
४०	।।।	ऽऽ।	ऽऽ
४१	ऽऽऽ	।ऽ।	ऽऽ
४२	।ऽऽ	।ऽ।	ऽऽ
४३	ऽ।ऽ	।ऽ।	ऽऽ
४४	।।ऽ	।ऽ।	ऽऽ
४५	ऽऽ।	।ऽ।	ऽऽ
४६	।ऽ।	।ऽ।	ऽऽ
४७	ऽ।।	।ऽ।	ऽऽ
४८	।।।	।ऽ।	ऽऽ
४९	ऽऽऽ	ऽ।।	ऽऽ
५०	।ऽऽ	ऽ।।	ऽऽ
५१	ऽ।ऽ	ऽ।।	ऽऽ

५२	IIS	SII	SS
५३	SSI	SII	SS
५४	ISI	SII	SS
५५	SII	SII	SS
५६	III	SII	SS
५७	SSS	III	SS
५८	ISS	III	SS
५९	SIS	III	SS
६०	IIS	III	SS
६१	SSI	III	SS
६२	ISI	III	SS
६३	SII	III	SS
६४	III	III	SS
६५	SSS	SSS	IS
६६	ISS	SSS	IS
६७	SIS	SSS	IS
६८	IIS	SSS	IS
६९	SSI	SSS	IS
७०	ISI	SSS	IS
७१	SII	SSS	IS
७२	III	SSS	IS
७३	SSS	ISS	IS
७४	ISS	ISS	IS
७५	SIS	ISS	IS
७६	IIS	ISS	IS

७७	SSI	ISS	IS
७८	ISI	ISS	IS
७९	SII	ISS	IS
८०	III	ISS	IS
८१	SSS	SIS	IS
८२	ISS	SIS	IS
८३	SIS	SIS	IS
८४	IIS	SIS	IS
८५	SSI	SIS	IS
८६	ISI	SIS	IS
८७	SII	SIS	IS
८८	III	SIS	IS
८९	SSS	IIS	IS
९०	ISS	IIS	IS
९१	SIS	IIS	IS
९२	IIS	IIS	IS
९३	SSI	IIS	IS
९४	ISI	IIS	IS
९५	SII	IIS	IS
९६	III	IIS	IS
९७	SSS	SSI	IS
९८	ISS	SSI	IS
९९	SIS	SSI	IS
१००	IIS	SSI	IS
१०१	SSI	SSI	IS

१०२	ISI	SSI	IS
१०३	SII	SSI	IS
१०४	III	SSI	IS
१०५	SSS	ISI	IS
१०६	ISS	ISI	IS
१०७	SIS	ISI	IS
१०८	IIS	ISI	IS
१०९	SSI	ISI	IS
११०	ISI	ISI	IS
१११	SII	ISI	IS
११२	III	ISI	IS
११३	SSS	SII	IS
११४	ISS	SII	IS
११५	SIS	SII	IS
११६	IIS	SII	IS
११७	SSI	SII	IS
११८	ISI	SII	IS
११९	SII	SII	IS
१२०	III	SII	IS
१२१	SSS	III	IS
१२२	ISS	III	IS
१२३	SIS	III	IS
१२४	IIS	III	IS
१२५	SSI	III	IS
१२६	ISI	III	IS

१२७   S|| ||| |S
१२८ ||| ||| |S
१२९   SSS   SSS   S|
१३० |SS   SSS   S|
१३१   S|S   SSS   S|
१३२ ||S   SSS   S|
१३३   SS| SSS   S|
१३४ |S| SSS   S|
१३५   S|| SSS   S|
१३६ ||| SSS   S|
१३७   SSS |SS   S|
१३८ |SS |SS   S|
१३९   S|S |SS   S|
१४० ||S |SS   S|
१४१   SS| |SS   S|
१४२ |S| |SS   S|
१४३   S|| |SS   S|
१४४ ||| |SS   S|
१४५   SSS   S|S |S
१४६ |SS   S|S   S|
१४७   S|S   S|S   S|
१४८ ||S   S|S   S|
१४९   SS| S|S   S|
१५० |S| S|S   S|
१५१   S|| S|S   S|

१५२	।।।	ऽ।ऽ	ऽ।
१५३	ऽऽऽ	।।ऽ	ऽ।
१५४	।ऽऽ	।।ऽ	ऽ।
१५५	ऽ।ऽ	।।ऽ	ऽ।
१५६	।।ऽ	।।ऽ	ऽ।
१५७	ऽऽ।	।।ऽ	ऽ।
१५८	।ऽ।	।।ऽ	ऽ।
१५९	ऽ।।	।।ऽ	ऽ।
१६०	।।।	।।ऽ	ऽ।
१६१	ऽऽऽ	ऽऽ।	ऽ।
१६२	।ऽऽ	ऽऽ।	ऽ।
१६३	ऽ।ऽ	ऽऽ।	ऽ।
१६४	।।ऽ	ऽऽ।	ऽ।
१६५	ऽऽ।	ऽऽ।	ऽ।
१६६	।ऽ।	ऽऽ।	ऽ।
१६७	ऽ।।	ऽऽ।	ऽ।
१६८	।।।	ऽऽ।	ऽ।
१६९	ऽऽऽ	।ऽ।	ऽ।
१७०	।ऽऽ	।ऽ।	ऽ।
१७१	ऽ।ऽ	।ऽ।	ऽ।
१७२	।।ऽ	।ऽ।	ऽ।
१७३	ऽऽ।	।ऽ।	ऽ।
१७४	।ऽ।	।ऽ।	ऽ।
१७५	ऽ।।	।ऽ।	ऽ।
१७६	।।।	।ऽ।	ऽ।

२०१	SSS	ISS	II
२०२	ISS	ISS	II
२०३	SIS	ISS	II
२०४	IIS	ISS	II
२०५	SSI	ISS	II
२०६	ISI	ISS	II
२०७	SII	ISS	II
२०८	III	ISS	II
२०९	SSS	SIS	II
२१०	ISS	SIS	II
२११	SIS	SIS	II
२१२	IIS	SIS	II
२१३	SSI	SIS	II
२१४	ISI	SIS	II
२१५	SII	SIS	II
२१६	III	SIS	II
२१७	SSS	IIS	II
२१८	ISS	IIS	II
२१९	SIS	IIS	II
२२०	IIS	IIS	II
२२१	SSI	IIS	II
२२२	ISI	IIS	II
२२३	SII	IIS	II
२२४	III	IIS	II

२२५	SSS	SSI	II
२२६	ISS	SSI	II
२२७	SIS	SSI	II
२२८	IIS	SSI	II
२२९	SSI	SSI	II
२३०	ISI	SSI	II
२३१	SII	SSI	II
२३२	III	SSI	II
२३३	SSS	ISI	II
२३४	ISS	ISI	II
२३५	SIS	ISI	II
२३६	IIS	ISI	II
२३७	SSI	ISI	II
२३८	ISI	ISI	II
२३९	SII	ISI	II
२४०	III	ISI	II
२४१	SSS	SII	II
२४२	ISS	SII	II
२४३	SIS	SII	II
२४४	IIS	SII	II
२४५	SSI	SII	II
२४६	ISI	SII	II
२४७	SII	SII	II
२४८	III	SII	II

२४९	SSS	।।।	।।
२५०	।SS	।।।	।।
२५१	S।S	।।।	।।
२५२	S।।	।।।	।।
२५३	SS।	।।।	।।
२५४	।S।	।।।	।।
२५५	S।।	।।।	।।
२५६	।।।	।।।	।।

उपरना उदाहरणमां एक पण नियत गण नथी माटे कोइ पण गणनुं रूप नियत नथी लखायुं.

२. नैमिक गण अनुष्टुप्ना प्रथम चरणनो प्रस्तार करो.

आपेला वृत्तनुं एक चरण ८ वर्णनुं थायछे तेना गण नीचे प्रमाणे पडेछे. जुवो प्रथम भाग पृ. ५२८.

पांचमा लघु चारेमां, छ साते गुरु तो करो;
समे साते लघु लावो, श्लोके आठज अक्षरो.

पेहेलो गण त्रण वर्णनो. SSS; बीजो गण एक वर्णनो. S
त्रीजो गण त्रण वर्ण ।SS नो नियत. चोथो गण एक वर्णनो. S

एने नीचेना त्रिम्बमां गोठवी गणवार प्रथम वर्णना रूपमां गुरुवर्ण अने नियत गणमां नियत रूप ।SS लखी, वर्ण प्रस्तार प्रमाणे प्रस्तार कर्यो, तो ए प्रस्तार नीचे आपेला त्रिम्बमां जणाव्या प्रमाणे आव्यो:—

नैमिकगणअनुष्टुप्भेदचिन्ह.

गण क्रमांक	वर्ण संख्या	भेद संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८
१	३	८	SSS	ISS	SIS	IIS	SSI	ISI	SII	III
२	१	२	S	I						
३	३	१	ISS							
४	१	२	S	I						
५	३	८	SSS	ISS	SIS	IIS	SSI	ISI	SII	III
६	१	२	S	I						
७	३	१	ISI							
८	१	२	S	I						
९	३	८	SSS	ISS	SIS	IIS	SSI	ISI	SII	III
१०	१	२	S	I						
११	३	१	ISS							
१२	१	२	S	I						
१३	३	८	SSS	ISS	SIS	IIS	SSI	ISI	SII	III
१४	१	२	S	I						
१५	३	१	ISI							
१६	१	२	S	I						

नैमिकगण अनुष्टुप्.

प्रथमपदगणप्रस्तारः

क्रमांक.	प्र. १.	द्वि. २.	तृ. ३.	च.
१	SSS	S	ISS	S
२	ISS	S	ISS	S

३	ऽ।ऽ	ऽ	।ऽऽ	ऽ
४	।।ऽ	ऽ	।ऽऽ	ऽ
५	ऽऽ।	ऽ	।ऽऽ	ऽ
६	।ऽ।	ऽ	।ऽऽ	ऽ
७	ऽ।।	ऽ	।ऽऽ	ऽ
८	।।।	ऽ	।ऽऽ	ऽ
९	ऽऽऽ	।	।ऽऽ	ऽ
१०	।ऽऽ	।	।ऽऽ	ऽ
११	ऽ।ऽ	।	।ऽऽ	ऽ
१२	।।ऽ	।	।ऽऽ	ऽ
१३	ऽऽ।	।	।ऽऽ	ऽ
१४	।ऽ।	।	।ऽऽ	ऽ
१५	ऽ।।	।	।ऽऽ	ऽ
१६	।।।	।	।ऽऽ	ऽ
१७	ऽऽऽ	ऽ	।ऽऽ	।
१८	।ऽऽ	ऽ	।ऽऽ	।
१९	ऽ।ऽ	ऽ	।ऽऽ	।
२०	।।ऽ	ऽ	।ऽऽ	।
२१	ऽऽ।	ऽ	।ऽऽ	।
२२	।ऽ।	ऽ	।ऽऽ	।
२३	ऽ।।	ऽ	।ऽऽ	।
२४	।।।	ऽ	।ऽऽ	।
२५	ऽऽऽ	।	।ऽऽ	।
२६	।ऽऽ	।	।ऽऽ	।
२७	ऽ।ऽ	।	।ऽऽ	।

२८	IIS	I	ISS	I
२९	SSI	I	ISS	I
३०	ISI	I	ISS	I
३१	SII	I	ISS	I
३२	III	I	ISS	I

गणप्रस्तार सूची.

सूची एटले शुं ए मात्राप्रस्तारप्रकरणमां पृष्ठ २३मे लख्वाइ गयुं छे एटले ते विषे पुनः न वदतां ते जाणवानो विधि मात्र अत्र दर्शाविये छिये.

जे गणना प्रस्तारनी सूची जाणवानी होय तेना प्रस्तार विधिये सघळा मळीने केटला भेद (भेदांक) थायछे ते प्रथम जाणी लेवुं. बाद लादि रूप काढवां होय तो प्रथम गणना रूपमां लादिनां जेटलां रूप होय ते संख्याथी अने गादि रूप काहाडवां होय तो गादिनी संख्याथी ए भेदांकने गुणी प्रथम गणनी भेद संख्याए भागवाथी इष्ट प्रस्तारना लादि अने गादिनां रूपनी संख्या आवेछे. एज प्रमाणे अन्त्य गणना रूपनां लान्त अने गान्त रूपनी संख्याथी प्रस्तार भेद संख्याने गुणी अन्त्य गणना भेद वडे भागवाथी लान्त अने गान्त रूपनी संख्या मळेछे.

प्रस्तारना इष्टगान्त रूपने प्रथम गणना गादि रूपथी गुणी तेना भेदथी भाग देवाथी प्रस्तारना गादिगान्त रूपनी संख्या आवेछे. अने लान्त रूपनी संख्याने प्रथम गणना लादि रूपनी संख्याथी गुणी प्रथम गणना भेदथी भाग देवाथी लादिलान्त रूपनी संख्या आवेछे.

गान्त रूपनी संख्याने आद्य गणना लान्त रूपथी गुणी अने

लान्त रूपनी संख्याने गादिनी संख्याथी गुणी तेनी भेद सं-ख्याथी भाग देवाथी क्रमे लादिलान्त अने गादिगान्त रूपनी संख्या आवेछे.

ट ठ ड ढ अने ण गणना प्रस्तारनां कुल ३,१२० रूप थायछे तेमां लादि, लान्त, गादि, गान्त अने लादिलान्त अने गादिगान्तनां रूप केटलां केटलां छे ते प्रथक् प्रथक् कहो.

प्रस्तारनां कुल रूपनी संख्या ३,१२० छे. अने प्रथम गण टयणमां लादि रूप ८ अने गादि रूप ५ छे माटे

$$\text{इष्टलादि रूप}=\frac{३,१२०\times८}{\text{प्र.ग.भेद }१३}=१९२०.$$

$$\text{गादि}=\frac{३१२०\times५}{१३}=१२००.$$

अन्त्यगण जगण छे तेना बे रूपमां एक लान्त अने एक गान्त रूप छे माटे इष्टप्रस्तारमां

$$\text{गान्त}=\frac{३१२०\times१}{२}=१५६०\quad\text{अने}$$

$$\text{लान्त}=\frac{३१२०\times१}{२}=१५६०.$$

प्रथम गणमां लादि ८ छे ने गादि ५ छे माटे गादि गान्त अने लादि लान्तनी संख्या=

$$\text{गादि गान्त}=\frac{१५६०\times५}{१३}=६००$$

$$\text{लादि लान्त}=\frac{१५६०\times८}{१३}=९६०$$

प्रथम गणमां लादि रूप ८ छे तेथी प्रस्तारनां गान्त रूप १५६० ने गुणी प्रथम गणना भेद १३ थी भाग आप्यो तो लादि गान्तना रूपनी संख्या:—

$$\frac{१५६० \times ८}{१३} = ९६०$$ थइ.

तेज प्रमाणे प्रथम गणना गादिलान्तनां रूपनी संख्या:—

$$\frac{१५६० \times ५}{१३} = ६००$$ आवी.

नैमिक अने अनैमिक गण अनुष्टुप्‌ना प्रस्तारनी सूची करो.

नैमिक गण.

$$\text{गादिरूप} = \frac{१०,४८,५७६ \text{ सर्वरूप} \times \text{आद्यगण गादिरूप } ४}{\text{प्रथम गण भेद संख्या.} = ८}$$

$$= ५,२४,२८८. \text{ गादिरूप.}$$

$$\text{लादिरूप} = \frac{१०,४८,५७६ \times \text{लादिरूप } ४}{८} = ५,२४,२८८$$

$$\text{लान्तरूप} = \frac{१०,४८,५७६ \times \text{लान्त } १}{\text{अन्तिमगणभेद} = २} = ५,२४,२८८$$

$$\text{गान्तरूप} = \frac{१०,४८,५७६ \times \text{गान्तरूप} = १}{\text{अन्त्यगणभेद} = २} = ५,२४,२८८$$

$$\text{गादिगान्त} = \frac{५,२४.२८८ \times \text{गादिरूप} = ४}{\text{भेद} = ८} = २,६२,१४४$$

$$\text{लादिलान्त} = \frac{५,२४,२८८ \times \text{लादि} = ४}{\text{भेद} = ८} = २,६२,१४४$$

$$\text{लादिगान्त रूप}=\frac{\text{गान्त ९,२,४२८८×लादि ४}}{\text{भेद=८}}=\text{२,१२,१४४.}$$

$$\text{गादिलान्त रूप}=\frac{\text{लान्त ९,२४,२८८×गादि ४}}{\text{भेद=८}}=\text{२,१२,१४४.}$$

एज प्रमाणे अनैमिकगण अनुष्टुप्ना प्रस्तारान्तर्गत लादि विगेरे रूपनी संख्या नीचे प्रमाणे आवी.

गादि, लादि रूप गान्त, लान्त;	२,१४,७४,८३,६४,८.
गादिगान्त, लादिलान्त लादिगान्त, गादिलान्त	१,०७,३७,४१,८२४.

नष्टप्रक्रिया.

मात्रा अने वर्ण प्रस्तारना नष्ट विधिथी गण प्रस्तारनुं नष्ट शोधन जूदा प्रकारनुं होतां ते अत्र आपिये छिये. नष्टनी व्याख्या पूर्वे पृष्ट ३० मे अपाइ गइ छे. एनो विधि नीचे प्रमाणे छे.

प्रस्तारमांनु जेटलामु रूप जाणवानी इच्छा होय ते संख्या लखवी; बाद इष्ट छंदमां जेटला गण पाडेला होय तेमना भेदनी संख्या क्रमवार मांडी जवी. बाद आपेल संख्याने पेहेला गणनी भेद संख्याथी भाग देवो, भागतां जे लब्धि आवे तेमां शेष जो शून्य न होय तो एक १ मेळववो; अने ते पछीना गणना भेदनी संख्याथी एने भागतां जे लब्धि आवे, तेमां पण उपर कह्या प्रमाणे १ मेळववो अने ते पछीना गणना भेदनी संख्याथी भाग देवो. एम लब्धिमां १ उमेरतां जेटला गण होय तेटला गणनी भेद संख्याथी उत्तरोतर मळेल लब्धिने भागता जवुं. ज्यारे सर्व गणनी भेद संख्या वडे

भागवानुं थइ रहे त्यारे गणवार जे जे शेष रह्या होय तटलामु ते पूछेली संख्याना प्रस्तारमां ते ते गणनुं रूप थायछे. जे गणनो शेष शून्य होय ते गणनु छेलुं रूप इष्टरूप समजवु.

उदाहरण.

१. टगण अने टगणना मिश्रण प्रस्तारमां १६० मुं रूप केवुं हशे?

इष्ट संख्या १६० छे अने प्रस्तारमांना गण बेनी भेद संख्या क्रमवार १३ अने १३ छे. इष्ट संख्या १६० ने १३ थी भाग्या तो लब्धि १२ आवी अने शेष ४ आव्या. शेष शून्य नथी माटे लब्धि १२ मां १ मेळव्यो अने तेने बीजा गणनी भेद संख्या १३ थी भाग आप्यो तो लब्धि १ अने शेष ० रह्यो वे गण छे, माटे हवे भागवानुं रह्यु नहि. एटले गणवार शेष ४ अने ० रह्या.

प्रथम गणनो शेष ४ छे माटे ते गणनुं चोथु रूप ऽ।।ऽ थयुं अने बीजा गणनो शेष शून्य छे माटे ते गणना रूपमा तेनुं छेलुं रूप ।।।।।। आव्युं. माटे पूछेला प्रश्नमा इष्ट संख्यानुं बन्ने गणने लगतुं रूप ऽ।।ऽ[१], ।।।।।।[२] आव्युं,

२. ट ठ ड ढ अने ण गणना प्रस्तारमां ३१००मुं रूप केवुं हशे?

इष्ट संख्या ३१०० छे अने गणना भेदनी संख्या क्रमवार १३, ८, ५, ३ अने २ छे. कह्या प्रमाणे इष्ट संख्या अने ते मांथी मळती लब्धिने भाग्या तो गणवार शेष नीचे प्रमाणे आव्या.

ग.१ इष्टसंख्या. ३१००-१३=ल. २३८ शेष=६ प्र. ग. भे.

ग.२ ल. २३८+१-८=ल. २९ ,, =७

ग.३ ल. २९+१÷५=ल. ६ ,, =०

ग.४ ल. ६+०÷३=ल. २ ,, =०

ग.५ ल. २+०÷२=ल. १ ,, =०

ए प्रमाणे गणवार शेष ६, ७, ०, ०, ० आव्या; तेमना पोतपोताना गणने लगतां तेटलामां रूप ।ऽऽ।, ऽ।।।, ।।।।, ।।।, ।। छे ते पूछेली संख्यानुं नष्ट थयुं.

३. आर्यांना प्रस्तारमां ८,१९,२०,००० मुं रूप केवुं हशे.?

इष्ट संख्या ८,१९,२०,००० छे. अने आर्यांना सोळ गणनी क्रमवार भेद संख्या क्रमे ४, ५, ४, ५, ४; २, ४, १, ४, ५, ४, ५, ४, १, ४, १ छे. तेमना प्रमाणमां लब्धि-जन्य शेष नीचे प्रमाणे आव्याः—

	इष्ट. संख्या	लब्धि	शेष	रूप.
ग.१.	८,१९,२०,०००÷४=	२०४८००००	०	।।।।.
२	लब्धि=२,०४,८०,०००÷५=	४०९६०००	०	।।।।.
३	लब्धि= ४०,९६,०००÷४=	१०२४०००	०	।।।।.
४	लब्धि= १०,२४,०००÷५=	२०४८००	०	।।।।.
५	लब्धि= २,०४,८००÷४=	५१२००	०	।।।।.
६	लब्धि= ५१,२००÷२=	२५६००	०	।।।।.
७	लब्धि= २५,६००÷४=	६४००	०	।।।।.
८	लब्धि= ६,४००÷१=	६४००	०	ऽ
९	लब्धि= ६,४००÷४=	१६००	०	।।।।.
१०	लब्धि= १,६००÷५=	३२०	०	।।।।.
११	लब्धि=	३२०÷४=	८०	०	।।।।.

१२ लब्धि= ८०-५= १६ ० ||||.

१३ लब्धि= १६÷४= ४ ० ||||.

१४ लब्धि= ४-१= ४ ० |.

१५ लब्धि= ४÷४= १ ० ||||.

१६ लब्धि= १÷१= १ ० S.

माटे पूछेली संख्यानुं आर्या प्रस्तारनुं रूप

||||, ||||, ||||, ||||, ||||, ||||, ||||, S. पूर्वदल.

||||, ||||, ||||, ||||, ||||, |, ||||, S. परदल.

उदाहरण बीजुं.

नैमिकगण अनुष्टुप् प्रस्तारमां १०,४८,५६८मुं रूप कयुं थाय?

	ल.	शे	ग.	रूप.
इष्टसंख्या =१०४८५६८÷प्र ग. भेदांक=८=	१३१०७१=	०	१	|||
शून्यशेषमाटेलब्धि १३१०७१-(२ग. भे)=२=	६५५३५=	१	२	S
एकशेषमाटेलब्धि ६५५३५+१-(३ग. भे)=१=	६५५३६=	०	३	|SS
शून्यशेषमाटेलब्धि ६५५३६-(ग ४ भे)=२=	३२७६८=	०	४		
ल. = ३२७६८-(ग ५ भे)=८=	४०९६=	०	५	|||
ल. = ४०९६-(ग.६ भे)=२=	२०४८=	०	६		
ल. = २०४८-(ग ७ भे)=१=	२०४८=	०	७	|S|
ल. = २०४८-(ग.८ भे)=२=	१०२४=	०	८		
ल = १०२४-(ग.९ भे)=८=	१२८=	०	९	|||
ल. = १२८-(ग.१०भे)=२=	६४=	०	१०		
ल = ६४-(ग ११भे)=१=	६४=	०	११	|SS
ल = ६४-(ग.१२भे)=२=	३२=	०	१२		
ल. = ३२-(ग.१३भे)=८=	४=	०	१३	|||
ल. = ४-(ग,१४भे)=२=	२=	०	१४		

ल. = २ – (ग.१५मे)=१= २= ० १५ ।ऽ।

ल. = २ – (ग.१६मे)=२= १= ० १६ ।

माटे पूछेली संख्यानुं नैमिक गण अनुष्टुप् रूप

।।।, ऽ, ।ऽऽ, ।; ।।।, ।, ।ऽ।, ।;

।।।, ।, ।ऽऽ, ।; ।।।, ।, ।ऽ।, ।. थयुं.

एज संख्यानुं अनैमिकगण अनुष्टुप् रूप केवुं थशे ?

		ल.	शे.	ग.	रूप
संख्या	१०,४८,५६८ ÷८=	१,३१,०७१	–०=	१	।।।.
लब्धि	१,३१,०७१+०÷८=	१६,३८३	–०=	२	ऽ।।
लब्धि	१६,३८३+१÷४=	४,०९६	–०=	३	।।.
लब्धि	४०९६÷८=	५१२	–०=	४	।।।.
लब्धि	५१२÷८=	६४	–०=	५	।।।.
,,	६४÷४=	१६	–०=	६	।।
,,	१६÷८=	२	–०=	७	।।।.
,,	२÷८=	०	–२=	८	।ऽऽ.
,,	०+१÷४=	०	–१=	९	ऽऽ.
,,	०+१÷८=	०	–१=	१०	ऽऽऽ
,,	०+१÷८=	०	–१=	११	ऽऽऽ.
,,	०+१÷४=	०	–१=	१२	ऽऽ.

माटे मागेली संख्यानुं रूप नीचे जणाव्या प्रमाणे थयुं.

१ (।।।, ऽ।।, ।।,) २ (।।।, ।।।, ।।).

३ (।।।, ।ऽऽ, ऽऽ,) ४ (ऽऽऽ, ऽऽऽ, ऽऽ).

गणप्रस्तारउद्दिष्ट.

मात्रा अने वर्णना प्रस्तारनी सामान्य उद्दिष्ट रीतिथी ग

प्रस्तारना उद्दिष्टनी रीति जूदी छे. ते नीचे बतावावामां आवेछे.

इष्ट छंदमां जेटला गण थता होय, अर्थात् इष्ट छंद जेटला गणनो बनेलो होय तेटली उभी पंक्ति दोरवी; ते पछी आडी छ पंक्ति करी बिम्ब तैयार करवुं. प्रथमनी आडी पक्तिमां १, २, ३ इत्यादि क्रमवार संख्या मांडी जवी. बीजी पक्तिमां गणवार भेद संख्या मूकवी. त्रीजीमां प्रत्येक गणनी मात्रा जेटला इष्ट जातिना पदना अक्षर ते ते गण नीचे मांडी जवा. चोथीमां उपर मांडेला अक्षर जे जातना होय अर्थात् गुरु लघु होय तेवां चिन्ह मूकवां. पांचमीमां चोथी पंक्तिमां बतावेलुं रूप, ते गणना कुल थता रूपमां जेटलामुं थतुं होय, ते संख्यानो आंकडो मूकी दर्शाववी. छट्ठी पंक्ति शोधितांकनी छे, तेमां पांचमी पंक्तिनी रूप संख्याने बीजी पंक्तिमां मांडेली भेद संख्यामांथी बाद करतां जे शेष रेहे ते संख्या मांडवी. ए प्रमाणे बिम्ब तैयार थाय एटले गणित क्रम नीचे प्रमाणे चलाववो.

अन्त्यगणना रूपनी संख्याने उपान्त्य गणनी भेद संख्याथी गुणतां जे अंक आवे, तेमांथी उपान्त्य गणनो शोधितांक बाद करवो, अने जे शेष रेहे, तेने उपान्त्य गणनी भेद संख्या मानवी. बाद ए उपान्त्य गणने अन्त्यगण अने तेथी पेहेलाना गणने तेनो उपान्त्य गण मानी लइ उपर प्रमाणे उत्तरोत्तर क्रिया चालु राखवाथी छेल्ले जे संख्या आवे ते पूछेलां प्रश्ननी उद्दिष्ट संख्या थायछे.

उदाहरण.

१ रणछोडे रचना करी रणपिंगळनी जेम,
रणशूरे रचना करी रणपिंगळनी तेम.

आ दुहो तेना प्रस्तारमां केटलामा रूपनो छे ते जणावो.

इष्ट दुहाना गण पाडी उद्दिष्ट करवा माटे तेनुं नीचे प्रमाणे बिम्ब तैयार थयुं.

इष्ट दोहानुं उद्दिष्टार्थे तैयार करेलुं बिम्ब.

१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गणनो चडतो अंक.
२	१३	४	१	२	१३	२	१	१३	४	१	२	१३	२	१	गणना भेदनी संख्या
३	रणछोडे	रचनां	क	री	रणपिंगल	नीजे	म	रणशूरे	रचना	क	री	रणपिंगल	नी	तेम	आपेलु पद गणवार
४	IISS	IIS	I	S	IISII	SS	I	IISS	IIS	I	S	IISII	SS	I	पदनु गणवार रूप.
५	२	२	१	१	१०	१	१	२	२	१	१	१०	१	२	गणना रूपमा ए स्वरूप केटलामुछेतेदर्शावनाररु.
६	११	२	०	१	११	१	०	११	२	०	१	३	१	०	शोधिताक

अन्त्य गण १४मो छे तेनो रूपांक १ छे तेने तेना उपान्त्य गणनी भेद संख्या २थी गुण्या तो बे आव्या. तेमांथी ए उपान्त्य गणनो शोधितांक १ बाद कर्यो तो शेष १ रह्यो, ते तेनो रूपांक थयो, तेने तेना उपान्त्य बारमा गणनी भेद संख्या १३थी गुण्या, तो १३ आव्या, तेमांथी तेनो शोधितांक ३ बाद कर्या तो शेष १० रह्या, ते बारमा गणनो रूपांक थयो. हवे बारमो गण अन्त्य गण ने अगिआरमो गण उपान्त्य गण थयो; माटे अन्त्य गणना रूपांक १० ने उपान्त्य गणना भेदनी संख्या बेथी गुण्या तो २० आव्या, तेमांथी तेनो शोधितांक १ बाद कर्यो तो शेष १९ रह्या, ते तेनो रूपांक थयो; तेनापरथी इष्ट संख्या जाणवा माटे गणित कर्युं तो नीचे प्रमाणे आव्युं.

१४	रूपांक=१		
१३	१× २=	२− १=	१.
१२	१×१३=	१३− ३=	१०.
११	१०× २=	२०− १=	१९.
१०	१९× १=	१९− ०=	१९.
९	१९× ४=	७६− २=	७४.
८	७४×१३=	९६२−११=	९५१.
७	९५१× १=	९५१− ०=	९५१.
६	९५१× २=	१९०२− १=	१,९०१.
५	१९०१×१३=	२४७१३− ३=	२४,७१०.

४ २४७१०× २= ४९४२०− १= ४९,४१९.

३ ४९४१९× १= ४९४१९− ०= ४९,४१९.

२ ४९४१९× ४= १९७६७६− २= १,९७,६७४.

१ १९७६७४×१३=२५६९७६२−११= २५,६९,७५१.

छेल्ली संख्या २५,६९,७५१नी आवी, माटे आपेल जाति दुहाना प्रस्तारमां एटलामुं रूप छे.

नैमिकगण अनुष्टुप्नुं पेहेलुं रूप अनैमिकगण अनुष्टुप्ना प्रस्तारनुं केटलामुं छे?

नैमिकगणअनुष्टुप्नुं प्रथमरूप.

गण.	१	२	३	४	५	६
रूप	SSS	SIS	SS,	SSS	SIS	IS,
गणभेदाक्षरोमा थता भेदमांनु केटलामु छे.	१	३	१	१	३	२
भेदाक.	८	८	५	८	८	४

गण	७	८	९	१०	११	१२
रूप	SSS	SIS	SS	SSS	SIS	IS
गणभेदाक्षरोमा थता भेदमानु केटलामु छे	१	३	१	१	८	२
भेदाक	८	८	४	८	८	४

प्रश्नमां पूछेल छंद नीचे प्रमाणे छे–

"धाओ धाओ प्रभु वेला, भक्तोनी भीड भांगवा,"
व्हाला मारा चडी वारे, प्रीतेथी पाश कापवा.

आ एक अनुष्टुप छंद छे. जे नैगिकगण अनुष्टुपनुं प्रथम रूप छे तेने कह्या प्रमाणे बिम्बमां गोठवी शोधिताक आदि कह्या प्रमाणे तैयार कर्या तो ते नीचे आपेला बिम्बमां जणाव्या प्रमाणे आव्या.

उद्दिष्टार्थ बिम्ब.

१	२	३	४	५	६	गण
८	८	८	८	८	४	भेदसंख्या
धाओध	ओप्रभु	वेला	भक्तोनी	भीडभा	गवा	आपेलु गणवार पद
SSS	SIS	SS	SSS	SIS	IS	पदस्वरूप
१	३	१	१	३	२	गणना रूपमां एकेट-लामु छे ते संख्या
७	५	३	७	५	२	शोधिताक

७	८	९	१०	११	१२	गण
८	८	८	८	८	४	भेदसंख्या
व्हालामा	राचडी	वा'रे	प्रीतेथी	पाशका	पवा	आपेलु गणवार पद.
SSS	SIS	SS	SSS	SIS	IS	पदस्वरूप
१	३	१	१	३	२	गणना रूपमां एकेट-लामु छे ते संख्या
७	५	३	७	५	२	शोधिताक.

अन्त्य गणना रूपांकने उपान्त्य गणनी भेद संख्याथी गुणी तेमांथी शोधिताक बाद कर्या, अने आवेली संख्याने रूपांक-

मानी उत्तरोत्तर गणवार गणितक्रम चलाव्यो तो नीचे प्रमाणे बिम्ब थयुं.:—

ग. रू. भे. गु. शो. रू.

११=२×८=१६–५=११

१०=११×८=८८–७=८१

९=८१×४=३२४–३=३२१

८=३२१×८=२५६८–५=२५६३

७=२५६३×८=२०५०४–७=२०४९७

६=२०४९७×४=८१९८८–२=८१९८६

५=८१९८६×८=६५५८८८–५=६५५८८३

४=६५५८८३×८=५२४७०६४–७=५२४७०५७

३=५२४७०५७×४=२०९८८२२८–३=२०९८८२२५

२=२०९८८२२५×८=१६७९०५८००–५=१६७९०५७९५

१=१६७९०५७९५×८=१३४३२४६३६०–७=१३४३२४६३५३

माटे मागेल संख्या=१,३४,३२,४६,३५३

उद्दिष्टनी बीजी रीति.

प्रथम रीतिमां बताव्या प्रमाणे आपेला पदना गण पाडी तेमना रूपांक नक्की करवा. अंत्यगण विना जेना रूपांक अने भेद संख्या समान होय तेना रूपांक स्थळे शून्य मूकवुं. बाद अन्त्य गणना रूपांकने, उपान्त्य गण सरूप[1] होय तो एक हीन करीने अने नीरूप[2] होय तो एमना एम कायम राखीने उपान्त्य गणनी भेद संख्याथी गुणवा. जे गुणाकार आवे तेमां उपान्त्य गणनो रूपांक मेळवतां जे सर्वाळो आवे तेने ए गणनो रूपांक मानवो. पछीथी उपान्त्य गणने अन्त्य गण गणवो अने

---

१ रूप सहवर्त्तमान, एटले रूपदर्शक एकादि आकडो जेमां होय ते; अंकवाळो.

२ रूप नहि ते, एटले, रूपदर्शक कोइ पण अंक न होतां, केवळ शून्य होय ते; शुन्यवाळो.

तेथी पेहेलाना गणने तेनो उपान्त्य गण गणवो अने ए रूपांकने कह्या प्रमाणे एक हीन करी उपान्त्य गणना भेद संख्याथी गुणी तेमां तेनो मूळ रूपांक मेळववा जवु. एम करतां जे छेवट संख्या आवे ते पूछेला रूपनी प्रस्तार संख्या जाणवी.

उदाहरण.

१. "रणपिंगलनी रचना" आ आर्यानुं एक चरण छे ते ए त्रण गणना प्रस्तारमां केटलामुं रूप हशे?

पूर्वे कहेली रीति प्रमाणे तेमना गणवार पद, पाद्य, रूपांक आदि नक्की कर्या तो नीचे प्रमाणे आव्या.

उद्दिष्टार्थ बिम्ब.

१	२	३	पद.
४	८	४	भेद.
रणपि	गलनी	रचना	पद.
IIS	IIS	IIS	स्वरूप
२	२	२	रूपांक

तो ७-१=६ आव्या, तेने उपान्त्य गण पेहेलानी भेद संख्या ४ थी गुण्या तो ६×४=२४ आव्या. तेमां तेनो रूपांक २ छे ते उमेर्यो तो पूछेल रूपनी संख्या प्रस्तारमां २४+२=२६ आवी. जुवो प्रस्तार त्रिम्ब पृष्ट १९२ मां.

प्रश्न. नीचे आपेलो अनुष्टुप् छंद अनैमिक अनुष्टुप्छंदः प्रस्तारमां केटलामुं रूप छे ते कहो.

"धाओ धाओ प्रभु वे'ला, भक्तोनी भीड भांगवा,"
वा'ला मारा वडी व्हारे, प्रीतेशी पाश कापवा.

आ छंद आगळ पृष्ट १८१ मां उदाहरणमां लीधेलो छे त्यां तेनां चदवार उद्दिष्टार्थं त्रिम्ब तैयार करवामां आव्युं छे. एना केवळ रूपांकने उपयोगमां लई आ बीजी रीते गणित कर्युं तो ते नीचे प्रमाणे आव्युं–:

२-१=१
१×८=८+३ =११-१=१०
१०×८=८०+१=८१-१=८०
८०×४=३२०+१=३२१-१=३२०
३२०×८=२५६०+३=२५६३-१=२५६२
२५६२×८=२०४९६+१=२०४९७-१=२०४९६
२०४९६×४=८१९८४+२=८१९८६-१=८१९८५
८१९८५×८=६५५८८०+३=६५५८८३-१=६५५८८२
६५५८८२×८=५२४७०५६+१=५२४७०५७-१=५२४
२४७०५६×४=२०९८८२२४+१=२०९८८२२५-१=२०९८८२२४
९८८२२४×८=१६७९०५७९२+३=१६७९०५७९५-१=१६७९०५७९४
९०५७९४×८=१३४३२४६३५२+१=१३४३२४६३५३.

माटे मागेल संख्या=१,३४,३२,४६,३५३.

गणमेरु.

मात्रा मेरुनी रीतिथी आ मेरुनी रीति भिन्न छे. तेमां जेम पूर्वना बे मात्राना योग (सरवाळा)थी इष्टमात्रानो मेरु भरायछे तेम आमां भरातो नथी, परंतु, जेम गणना भेदांक तेना पक्तिना एटले आगलना गणना भेदांकना गुणोत्तरे वधेछे तेम प्रत्येक गणनी पंक्तिना खंडमां भरायला अंक पण इष्ट गणना शून्यादि गुरुना गुणोत्तरे वधेछे. गणना शून्यादि गुरुदर्शक गुणक नीचे प्रमाणे छे.

मात्रिकगणगुणकाबिम्ब.

संज्ञा	टगण	ठगण	डगण	ढगण	णगण	गुरु
शून्यगुरु.	१	१	१	१	१	०
एकगुरु	५	४	३	२	१	१
बेगुरु	६	३	१	थतानथी	थतानथी	२
त्रणगुरु.	१	थतानथी	थतानथी	थतानथी	थतानथी	३

जे गणना जेटलां रूप थतां होय तमांथी जेटलां ओछां रूप उपयोगमां आवतां होय तो तेटलां तेना गुणकमांथी वर्ज्य करतां जे शेष रहे तेने ते गणनो गुणक गणवो.

जेमके, दोहाना प्रकरणमां प्रत्येक पदना बीजा गणमां जगण वर्ज्य छे, माटे ते गण ४ मात्रानो डगण होतां तेनो तेनो गुणक नीचे प्रमाणे थशे.

शून्य गुरुनुं १ रूप=१

एक गुरुनां रूप=३−१ जगणनो = २

बे गुरुनुं १ रूप = १

एमज, आर्याना विषम गणोमां पण एज प्रमाणे गुणक आवशे, कमके तेमां पण जगण वर्ज्य छे.

आर्याना उभय दलनो अन्त्य गण मात्र एकज गुरु अक्षरनो छे, माटे तेनो गुणक नीचे प्रमाणे कल्पाशे.

शून्य गुरुनुं ० रूप.

एक गुरुनुं १ रूप.

एज प्रमाणे चार मात्राना छठ्ठा गणमां जगण अने विप्रगण एवां मात्र बेज रूप काम आवेछे माटे ते गणनो गणक—

शून्य गुरुनुं १ रूप = १

एक गुरुनां रूप ३–२ = १

बे गुरुनुं रूप १–१ = ० थशे. तेज प्रमाणे ज्यां एक लघु नियत हशे त्यां गुणक शून्य गुरु=१ अने एक गुरु = ० रेहेशे.

ए प्रमाणे जे जाति अथवा छंदना मात्रिक गणना रूपमां न्यूनता थइ होय तो तेमना गणना गुणक प्रथम नक्की करवा.

वर्णजन्य गणना गुणक नीचे जणावेला बिम्ब प्रमाणे छे.

वर्णजन्य गणना गुणक.

संज्ञा.	त्रणवर्ण	बे वर्ण	एकवर्ण
शून्यगुरु	१	१	१
एक गुरु	३	२	१
बे गुरु	३	१	
त्रण गुरु	१	थाय नहि	

गुणक

इष्टछंदमां जेटला गण होयछे तेटलीज आडी पंक्ति ते छंदना समग्र मेरुमां करवामां आवेछे. अने प्रारंभना गणना गुरु अक्षरनी संख्यामां ते पछीना गणनी गुरु अक्षर संख्या उमेरतां जतां इष्टगण सुधी, जेटला गुरु अक्षरनी संख्या थाय

तेमा एकनो वधारो करता जे आवे एटला खंड ते ते गणनी पंक्तिमां करवामां आवेछे.

जेमके, ट. ठ, ड, ढ, ण ए गणनो मेरु करवो होय तो ते पांच गण छे माटे ते मेरु पाच पंक्तिवाळो थशे. हवे टगण त्रण गुरुनो छे, माटे तेनी पंक्तिमा तेथी एक वधारे एटले चार खंड थशे. त्यार पछी बीजो गण ठगण छे तेमा बे गुरु छे अने पूर्वना टगणमा ३ गुरु छे तो ३+२=५+१=६, माटे तेनी पंक्तिमां छ खंड थशे. त्रीजो गण डगण छे त्या सुधी आरंभथी गणतां टना३, ठना२, अने डना२=७+१=८ थायछे माटे तेनी त्रीजी पंक्तिमां आठ खंड कराशे. चोथो ढगण छे ते तेनी मेरुनी पंक्तिमां पूर्वथी एक वधारे एटले टना ३, ठना २ डना२ मळीने ७+ढनो १=८+१=९ खंड करवामां आवशे. पाचमो ण गणनो छे त्या सुधी ३+२+२+१=८+१=९+१=१० थायछे माटे दश खंड करवामा आवशे (जुओ पासेना पृष्ठ१९९ मां आपेलु टगणादि मेरुबिम्ब)

ए प्रमाणे जेटला गण होय अने तेमा जेटला जेटला गुरु अक्षर होय तेटला तेटला वधारे खंडवाळी ते ते गणनी पंक्तिओ करवी. ए प्रमाणे ज्यारे तैयार थाय, त्यारे तेमना गुणक परथी नीचे प्रमाणे गणित करी तेमां अंक भरवा.

जे पंक्ति जे गणनी होय, ते गणनो अंक ते पंक्तिनी डावी बाजुना खांचामा मांडवो अने जमणी बाजुना खाचामां प्रत्येक गणना भेदांक मूकवा. पेहेला गणनी पंक्ति सौथी उपर मूकवी. ते तळे बीजा गणनी, ते तळे त्रीजा गणनी एम एक उत्तरोत्तर गणानुक्रमे पंक्तिओ मेरुना आकारमां गोठववी.

पछी छेल्ला गणनी पंक्तिना खंडनी नीचे जमणी तरफथी क्रमवार शून्यादि गुरु दर्शक संख्या भरी जवी.

दुहाना चौद गण छे, तो तेना मेरुनी चौद पंक्ति थशे. तेमज आर्याना सोळ गण छे तो तेमना मेरुनी सोळ पंक्ति थशे. अनैमिक अनुष्टप्‌ना बार गण छे तो तेनो मेरु बार पंक्ति वाळो अने नैमिकगण अनुष्टप्‌ना सोळ गण छे तो तेनो मेरु सोळ पंक्तिनो थशे.

पेहेला गणनी पंक्तिमां जे खंड होय तेमां ते गणनो गुणक क्रमवार जमणी बाजुथी भरी देवो. बीजा गणनी पंक्ति भरवी होय तो पेहेला गणना अंकने बीजा गणना गुणकथी गुणी गुणाकारनी रकमोनी माफक जमणी तरफथी अंकक दर सघळी रकमो मूकते जवी, बाद प्रथक् प्रथक् सरवाळा लेवा जे सरवाळो आवे ते बीजा गणना मेरुना अंक थाशे. त्रीजा गणना मेरुना अंकने त्रीजा गणना शून्यादि गुरुगुणके गुणवाथी त्रीजा गणना मेरुना अंक आवशे, ए प्रमाण कोइ पण गणना मेरुनी पंक्ति ते गणथी आगळना गणना मेरुना अंकने ते गणना शून्यादि गुरु गुणके गुणवाथी इष्ट गणना मेरुनी पंक्तिना अंक तैयार थावशे.

ण गण अने **ह** गणनो मेरु भरवो होय तो **ण** गण खंडमां जमणी तरफथी क्रमे (२,१) भराशे. अने **ह** गणना खंडमां—

```
  २ १  (गुण्य)
  १ १  (गुणक)
 ------
  २ १
२ १
------
२,३,१ = भराशे
```

डगण, ढगण अने णगणमेरु.

डगण=१	१	३	१		५	
ढगण=२	२	७	६	१		१६
णगण=३	२	९	१२	६	१	३०

४, ३, २, १, ०

ढगण णगण मेरु.

ढगण=	२	१	३	
णगण१	२	३	१	६

२ १ ०

धारो के, आर्याना मेरुमां बीजा गणनी पंक्ति भरवानी छे, तो एमां, तेथी आगळना पहेला गणनी पंक्तिमां अंक १, २, १ छे. तेने बीजा गणना गुणक १, ३, १ थी गुण्या तो इष्टगण बीजा गणनी पंक्तिनी संड्वार संख्या नीचे प्रमाणे आवी.

प्रथम गण अंक, =			१,	२,	१,
इष्टगण गुणक. =			१,	३,	१.
एकथी गुणता=			१	२	१
त्रणथी „ =		३	६	३	
एकथी „ =	१	२	१		
इ० ग० प० =	१,	५,	८,	५,	१.

मेरु अंक

एज प्रमाणे ढगणादि मेरुमां बीजा गण ढगणनी पंक्ति भरवी छे, तो ढगण मेरु पंक्ति अंक १, ६, ९, १, ने ढगण गुणक १, ४, ३, गुण्या तो इष्ट गण ढगणनी पंक्तिना संड्वार अंक नीचे प्रमाणे आव्या —

१, ६, ९, १.
१, ४, ३.

३, १८, १५, ३
४. २४, २०, ४
१, ६, ९, १

१, १०, ३२, ३९, १९, ३.

मेरु अंक भरवानी बीजी रीति.

प्रथम गणनी पंक्तिमां ते गणना गुणकना अंक भरवामां आवेछे. त्यार पछीनी पंक्तिओ नीचे प्रमाणे भरायछे.

ते उपरथी इष्टगण दगण होय अने तेनी पंक्ति भरवानी होय तो तेथी उपरना गणनी पंक्तिना खंडमां जे क्रमे अंक भर्या होय तेज क्रमे प्रति अंकने ते अंकथी जमणी बाजुना पेहेला खंडना अंकने ९ थी, बीजा खंडना अंकने ६थी अने त्रीजा खंडना अंकने एकथी गुणतां जे गुणाकार आवे तेमां ते उमेरी देवाथी ते गणनी पंक्तिना खंडवार अंक तैयार थायछे.

इष्टगण ढगण होय तो उपरनी पंक्तिना खंडमांना प्रत्येक अंकमां तेमनाथी दक्षिण तरफना पेहेला अंकने ४ थी अने बीजा अंकने त्रणथी गुणतां जे संख्या आवे ते तेमां उमेरी देवाथी इष्टगणनी पंक्तिना क्रमवार अंक आवेछे.

इष्टगण डगण होय तो. ते उपरनी पंक्तिना प्रत्येक खंडना अंकमां ते ते खंडथी दक्षिण तरफना पेहेला खंडना अंकने त्रणथी अने बीजा खंडने एकथी गुणवाथी जे संख्या आवे ते उमेरी देवाथी जे संख्या आवे ते ते गणनी पंक्तिना अंक थायछे.

इष्टगण ठगण होय तो, ते उपरना गणनी पंक्तिना खंडमां जे संख्या होय ते प्रत्येकने तेमनाथी दक्षिण तरफना खंडनी संख्याने बमणी करी ते साथे मेळववाथी जे अंक आवे ते ते पंक्तिना अंक थायछे.

इष्टगण णगण होय तो उपरना गणनी पंक्तिना खंडनी प्रत्येक संख्याने तेथी दक्षिण तरफना खंडनी संख्या साथे मेळववाथी इष्टगणनी पंक्तिना अंक आवेछे.

इष्ट पंक्तिना खंड भरावा खाली होय अने उपरना गणना स्थान तथा अंक साथेनी क्रिया थइ रही होय तो ते पछी अथवा पेहलां स्थान छे एम मानी लइ ते स्थानना अंकने ठेकाणे शून्य गणीने अन्य क्रिया करवी.

अपवाद.

आर्या अने दोहामां ठगणना पांच रूपने बदले चार रूप काम आवेछे माटे त्यां पूर्वना गणनी पंक्तिना अंकमां तेथी दक्षिणना पेहेला खंडना अंकने अने बीजा खंडना अंकने एकथी गुणनां, जे आवे, ते उमेरीने इष्ट गणनी पंक्तिना खंड भरवा.

इष्ट गण एकज गुरु अक्षरनो होय तो तेथी उपरना गणना मेरुनी पंक्तिना अंकने शून्यथी गुणी तेथी दक्षिण तरफना खंडना अंक तेमां मेळवी देवाथी जे अंक आवे ते ते गणनी पंक्तिना खंडमां क्रमवार भरवा.

इष्ट गण शून्य गुरुनो होय तो तेथी आगळना गणनी मेरुनी पंक्तिना अंक जेमना तेम ए गणनी मेरु पंक्तिना खंडमां क्रमवार भरवा.

बीजी रीतिनुं उदाहरण.

दोहाना मेरुमां पेहेला गणना अंक तेनी पंक्तिमां |१|६|५|१| भरायला छे. ते परथी तेना बीजा इष्टगण डगणनी पंक्ति भरवा माटे ते अंक साथे, उपर बता प्रमाणे गणित करवानुं छे.

हवे डगणनी पंक्ति भरवानी छे माटे ते दूहा मा उदाहरणमां बीजो गण होता उपरना टगणनी पंक्तिना खडना अंकने तेथे नेगन तनी साथे डगण होय तो तेथी त्रीजी पंक्ति भरवा माटे बीजी पंक्तिना अंक २, ३, १ ने डगणना गुणक १, ३, १ थी गुण्या तो ए त्रीजा गणना मेरुना अंकः

मेरुना अंक २ ३ १

१ ३ १

---

२ ३ १

६ ९ ३

२ ३ १

२, ९, १२, ६, १ आव्या.

ए अंक ए गणनी पंक्तिमां भर्या तो ए त्रण गणनो मेरु नीचे प्रमाणे आव्यो.

ण ठ ड गण मेरु.

णगण=१		१	१		
टगण=२		२	३	१	
डगण=३	२	९	१२	६	१

टगण, ठगण, डगण, ढगण अने णगणनो मेरु तयार करवानो छे. तेमां पेहेलो गण टगण छे, माटे तेनी पंक्तिमां तेनो

गुणक १, ६, ९, १ क्रमे भर्या; हवे बीजा ढगणनी पंक्ति भरवानी छे ते भरवा माटे तेथी उपरना टगणनी पंक्तिना अंक १, ६, ९, १ने ठगणना गुणकथी गुणवा जोइये अने त्रीजा गण डगणनी पंक्तिना अंक लाववा माटे तेथी उपरना ठगणनी पंक्तिना अंकने डगणना गुणकथी गुणवा जोइये अने चोथा गण ढगणनी पंक्तिना अंक लाववा माटे तेनी पंक्तिना अंकने ढगणना गुणकथी गुणवा जोइये अने पांचमा णगणनी पंक्तिना अंक, तेथी उपरना ढगणनी पंक्तिना अंकने णगणना गुणकथी गुणतां आवे, माटे ते प्रमाणे उपरना गणनी पंक्तिना अंकने नीचेना गणना गुणकथी गुण्या तो ठ, ड, ढ अने ण गणनी पंक्तिना अंक नीचेना अंकदर्शन प्रमाणे तैयार थया.

इष्ट गणनी उपरना गणनी पंक्तिना अंक=	१, ६, ९, १.
इष्टगण ढगण गुणक	३, ४, १
(एकथी गुणता)	१, ६, ९, १.
(चारथी गुणता.)	४, २४, २०, ४,
(त्रणथी गुणतां.)	३, १८, १५, ३,
इष्टगण पंक्तिना अंक=	३, २२, ४०, २९, ९, १.

त्रीजो गण डगण छे तेनी पंक्ति भरवी छे, माटे तेथी पेहेलाना ठगणनी पंक्तिना अंक ३, २२, ४०, २९, ९, १, छे तेने डगणना गुणक १, ३, १ थी गुण्या, तो तेनी पंक्तिना अंक नीचे प्रमाणे आव्या.

ठगण पंक्तिना अंक, ३, २२, ४०, २९, ९, १
इष्ट ढगणनो गुणक: १, ३, १

एकथी गुणतां. = ३, २२, ४०, २९, ९, १
त्रणथी गुणतां. = ९, ६६, १२०, ८७, २७ ३
एकथी गुणतां= ३, २२, ४०, २९ ९ १

ढ० पं० अंक= ३, ३१, १०९, १७१, १३६, ५७, १२, १

हवे चोथा ढगणनी पंक्ति भरवी छे, माटे तेथी उपरना गण ढगणनी पंक्तिना खंडवार अंकने ठगणना गुणकथी गुण्या. तो ठगणनी पंक्तिना अंक नीचे प्रमाणे आव्या.

ढगण पंक्तिना अंक =३, ३१, १०९, १७१, १३६, ५७, १२, १,
इष्ट ढगण गुणक २, १.

एकथी गुणतां= ३, ३१, १०९, १७१, १३६, ५७, १२, १.
बेथी गुणतां=६, ६२, २१८, ३४२, २७२, ११४, २४, २,

ढ पंक्तिना अंक=६, ६५, २४९, ४५१, ४४३, २५०, ८१, १४, १.

हवे पांचमा गण णगणनी पंक्तिना अंक लाववा छे, माटे तेनी उपरना ढगणनी पंक्तिना अंकने णगणना गुणक १, १थी गुण्या तो ते नीचे प्रमाणे आव्या.—

ढगण पंक्ति अंक=६, ६५, २४९, ४५१, ४४३, २५०, ८१, १४, १
णगण गुणक= १, १

एकथीगुणतां= ६, ६५, २४९, ४५१, ४४३, २५०, ८१, १४, १
एकथीगुणतां= ६, ६५, २४९, ४५१, ४४३, २५०, ८१, १४, १

णगणपंक्तिअंक ६, ७१, ३१४, ७००, ८९४, ६९३, ३३१, ९५, १५, १

टगणादि मेरुबिम्ब.

	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	
टगणगणनोअङ्क			१	६	५	१	१३				
ठगण=		३	१२	४०	२९	९	१	१०८			
डगण=	२	३१	१०९	१७१	१३६	५७	१२	१	५२०		
हगण=	६	६५	२८९	४५१	४४३	२५०	८१	१४	१	१५६०	
णगण=	६	७१	३१४	७००	८९४	६९३	३३१	९५	१५	१	३१२०

ठगण, डगण मेरु.

	४	३	२	१	०	
ठगण=१		२	४	१	८	
डगण=२	२	१३	१६	७	१	४०

ठगण, डगण, ढगण अने णगण मेरु.

	६	५	४	३	२	१	०	
ठगण=१		३	४	१	८			
डगण=२	३	१३	१६	७	१	४०		
ढगण=३	६	२९	४५	३०	९	१	१२०	
णगण=४	६	३५	७४	७५	३२	१०	१	२४०

बीजी रीतिनुं उदाहरण.

प्रश्न. दोहाना मेरुमां तेनो बीजो गण डगण छे ते मेरुनी पंक्तिना अंक लावो.

दोहाना मेरुमां प्रथम गण टगणनी पंक्तिना अंक १, ६ ५, १ छे. बीजो गण डगण छे तेनी पंक्तिना अंक लाववान छे; माटे रीतिमां कह्या प्रमाणे दक्षिण तरफना पहेला खंडने संख्याने बेथी अने बीजा खंडनी संख्याने एकथी गुणी देत न संख्या आवे ते मेळववी जोइये माटे प्रथम संख्या=१ छे

तेथी दक्षिण तरफ एक पण खंड नथी माटे इष्ट गणनी पंक्तिना प्रथम खंडनो अंक=१+(०×२)+(०×१)=१ थयो.

बीजा खंडनी संख्या ५ छे, तेथी दक्षिणमां पेहेलुं घर छे तेमां १ छे ने बीजुं घर नथी माटे इष्ट गणनी पंक्तिना बीजा खंडनो अंक= ५+(१×२)+(०×१)=७ थयो.

उपरना गणनी पंक्तिना तृतीय खंडमां संख्या ६ छे. तेथी जमणी तरफना पेहेला खंडमां ५ ने बीजा खंडमां १ छे माटे इष्ट गणनी पंक्तिना त्रीजा खंडनी संख्या=६+(२×५)+(१×१)=१७ थइ.

उपरना गणनी चोथी संख्या १ छे; तेथी दक्षिण तरफना पेहेला घरमां छ छे अने बीजा घरमां पांच छे, माटे इष्टगणनी पंक्तिना चोथा खंडनी संख्या.

= १+(६×२)+(५×१)= १८ थइ.

पांचमा घरमां संख्या कोइ नथी पण तेथी दक्षिणमणीना पेहेला घरमां १ अने बीजा घरमां ६ छे माटे इष्टगणनी पंक्तिना पांचमा खंडनी

संख्या= ० + (१×२) +(६×१)= ८ थइ.

हवे छठ्ठा घरमां संख्या नथी, परंतु तेथी दक्षिण तरफना पेहेला घरमां शून्य अने बीजा घरमां १ छे माटे इष्टगणनी पंक्तिना छठ्ठा खंडनी संख्या=

० + (०×२)+(१×१) = १ थइ. ए प्रमाणे इष्टगणनी पंक्तिनी खंडवार संख्या, क्रमे १, ८, १८, १७, ७, १ आवी, जुओ उहाना मेरुना बिम्बमां ए गणनी पंक्ति.

प्रश्न. अनुष्टुप्छंदनो मेरु तैयार करो.

मेरु बनाववा माटे शून्यादि गुरुदर्शक गुणकनी जरुर होय छे माटे ते कह्या प्रमाणे तैयार कर्या तो तेमना बिम्ब नीचे प्रमाणे आव्यां:—

नैमिकगण अनुष्टुप्.

मेरु रचनार्थे गणवार शून्यादि गुरुदर्शक गुणक.

गण.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
० गुरुदर्शक	१	१	०	१	१	१	०	१	१	१	०	१	१	१	०	१
१ गुरुदर्शक	३	१	०	१	२	१	१	१	३	१	०	१	३	१	१	१
२ गुरुदर्शक	३		१		३				३		१		३			
३ गुरुदर्शक	१				१				१				१			

अनैमिकगण अनुष्टुप्.

शून्यादि गुरुदर्शक गुणक.

शून्यादिगुरु	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
१	३	३	२	३	३	२	३	३	२	२	३	२
२	३	३	१	३	३	१	३	३	१	३	३	१
३	१	१		१	१		१	१		१	१	

मेरु बनाववानी रीतिये आ गुणकना आधारे मेरु बिम्ब तैयार कर्यां ते पासेना पृष्ठमां जणाव्या प्रमाणे आव्यां.

पूर्वे, मात्रा अने वर्ण प्रत्ययना वर्णनमां जेटला प्रकारना मेरु जणाव्या छे तेटलाज प्रकारना मेरु गणप्रस्तार प्रकरणमां बनी शकेछे. अमुक प्रकारनुं मेरुबिम्ब ग्राह्य छे अने अमुक

नथी एवुं कोइपण छन्दःशास्त्रकार जणावी नथी गया, एटले जेने जे बिम्ब रुचेछे ते ते जातनुं बिम्ब वापरेछे.

आ प्रकरणमां जे गणपंक्ति खंडवार संख्यासाधन करी देखाड्युछे ते सामान्य मेरुनी पंक्ति संबंधनुं छे; एने इतर मेरुमा योजवा जेनी इच्छा होय तेणे प्रत्यय वर्णनान्तर्गत मेरु रचनाना विधि प्रमाणे योजवुं. (जुवो पाछळ पृष्ठ ४२ थी ५०)

गणप्रस्तार पताका.

जे जे गणना प्रस्तारनी **पताका** करवानी होय ते ते गणने तेमना प्रथम स्वरूपवार प्रथम मांडी जवा. पछी तेमनी नीचे प्रत्येक स्वरूपनी एकादि मात्राना जेटला जेटला भेद थता होय ते संख्या तेनी तळे मांडवी, अने ते प्रत्येकनी नीचे तेथी पेहेलाना गणना भेदांक लखी जवा. एम कोष्टक तैयार करी भेदांक अने भेद संख्यानो गुणाकार करी ते तळे मूकवो. जे गुणाकार आवे ते क्रमवार मांडी जवो. पण तेमां जे संख्या एक करतां वधारे वार आवती होय तो ते वधाराना अंक उपयोगमां लेवा नहि आ प्रमाणे क्रमवार मंडायला अंक इष्ट गणना प्रस्तारनो दंड केहेवायछे.

पताका भरवानी रीति.

जेटला गणनी पताका भरवानी होय तेमांना छेल्ला गणना मेरुना अंक तेमनी संज्ञा साथे (एटले ते जेटला गुरु दर्शक होय ते सूचवे एम) प्रथम पंक्तिमां मांडी जवा. तेनी नीचे उपरनी विधिये तैयार करेल दंड मांडी जवो. मेरुनी पंक्तिमां जेटला खंड होय तेटली उभी पंक्ति करवी. ते पंक्तिमां जेटली संख्या होय तेटलां तेमां खंड करवा. पछी सामान्य पताकाना विधिये पताका भरवी. (जुओ पृष्ठ ६१ मा)

उदाहरण.

१. डगण अने णगणना प्रस्तारनी पताका तैयार करो.

डगण अने णगणनो मेरु छे तेमां छेल्ली पंक्तिमां शून्यादि गुरुना अंक १, ४, ४, १ छे. ने उपरथी तेमनो दंड नीचे प्रमाणे आवेछे.

गणनुनाम	डगण	णगण
गणनुस्वरुप	SS	S
भेदे	१,२,३,५	१, ७ ५ ५, पेहेला गणनो भेदांक.
दंडाक	१,२,३,५	५ १०

आमां ५ बे वार आवेछे; माटे ते वर्ज्य कर्यो, तो तेना दंडांक क्रमवार १, २, ३, ५, १० आव्या. तेने मेरुवार पंक्तिनी नीचे मांडी पताका माटे लेहेरो दोरी खंड पाडया तो तेनुं चित्र नीचे प्रमाणे थयुं.

डगण णगण पताका.

		त्रणगुरु	बेगुरु.	एकगुरु	शून्यगुरु
डणमेरुमानी णनी पंक्ति		१	४	४	१
दडाक.	१	२	३	५	१० भेदांक,
		१	२	५	१०
			३	७	
			४	८	
			६	९	

आमां भेदांक १० छे माटे ते शून्यगुरुनी लेहेरमां मूक्या, तेमांथी तेनीं पछीना अंक ५-३-२-१ छे ते क्रमवार बाद कर्या तो क्रमे ५, ७, ८ अने ९ आव्या; ए एक गुरुनी लेहेरना थया, तेने तेमां भर्या. हवे एज अंकनां जोडलां ५+३=८, ५+२=७, ५+१=६, ३+१=४ दश भेदांक छे तेमांथी बाद कर्यां तो शेष क्रमवार २, ३, ४ अने ६ रह्या; ए बे गुरुनी लेहेरना अंक थया तेमने तेमां भर्या. पुनः त्रण त्रणनो सरवाळो ५+३+१=९ ने सर्व भेदांक (१०)मांथी बाद कर्या तो शेष १ रह्यो, तेने त्रण गुरुनी पंक्तिमां मूक्यो, एटले उपरनां बिम्ब प्रमाणे डगण णगणनी पताका तैयार थइ गइ.

ए प्रमाणे गमे ते गणनी पताका भरवी होय ते भराय. योगांक (सरवाळानो अंक) शोधतां शेषांक जो आवी गयेल जणाय तो ते उपयोगमां लेवामां आवतो नथी ए मुख्यत्वे करीने ध्यानमां राखवुं.

प्रश्न. ट ठ ड ढ णगणनी पताका तैयार करो तथा तेमां बे के वधारे गणनी जूदी जूदी पताकाओ तैयार करो.

टगणादि पंचगण पताका.

आदिगुरुसूचकअंक	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	
गुरुआन्तिय पंक्ति	६	७१	३१४	७००	८९४	६९३	३३१	९५	१५	१	
१ | २ | ३ | ५ | ८	१३	२६	३९	६५	१०४	२०८	३१२	५२०	१०४०	१५६०	३१२०
विस्तारभयथी आ पताकाना लिखवनी रचनाज अत्र बतावी छे	आ ९ गुरुनी लेहेरछे तेमा मेरुअंक ६ होता छ खड थशे	आ ८ गुरुनी लेहेरछे ते तळे मेरु अंक ७१छे माटे खड ७१थशे	आ ७गुरुनी लेहेरछे तेमां ३१४मेरु अंकछेमाटे खड ३१४ थशे	आ ६ गुरुनी लेहेरछे तेना ७००रूप छे माटे खड ७००करवाना छे	आ ५गुरुनी लेहेरछे तेनां ८९४रूपछे माटे तेना खड८९४करवानाछे	आ ४गुरुनी लेहेर छे तेना रूप६९३छे माटे तेना ६९३खड करवानाछे	आ ३गुरुनी लेहेर छे तेनां रूप३३१छे माटे तेमा खड३३१करवानाछे	आ २गुरुनी लेहेर छे तेना रूप ९५ छे माटे तेना खड ९५पाडवाना छे	आ १गुरुनी लेहेर छे तेनां रूप १५ छे माटे तेना खड १५ थशे		

ठगण, डगण पताका.

गुरुसूचक अंक=			४	३	२	१	०	
गणमां डगणनी छेल्ली पंक्ति			३	१३	१६	७	१	
भेदांक=	१	२	३	५	८	१६	२४	४० इत्व
			२	१७	८	१६	४०	
			४	१८	११	२४		
			१	२०	१३	३२		
				२५	१४	३५		
				२६	१५	३७		
				२८	१९	३८		
				३	२१	३९		
					५	२२		
					६	२३		
					७	२७		
					१२	२९		
					९	३०		
					१०	३१		
						३३		
						३४		
						३६		

रीतिनुं स्पष्टीकरण.

कुल भेद संख्या=४०
४०−२४=१६
४०−१६=२४
४०− ८=३२
४०− ५=३५
४०− ३=३७
४०− २=३८
४०− १=३९
} एक गुरुनी संख्या.

एज प्रमाणे बेना सरवाळा परथी बे गुरुनी लेहेर ने त्रणना सरवाळाथी त्रण गुरुनी ने चारना सरवाळाथी चार गुरुनी लेहेर भरेल छे.

ट ड अने ढ णगण पताका.

शून्यादि गुरुसूचक संख्या.					६	५	४	३	२	१	०
मेरुमां छेल्ली पंक्ति संख्या.					६	३५	७४	७५	३९	१०	१
दष्टांक.	१	२	३	५	८	१६	२४	४०	८०	१२०	२४०
										१२०	१४०
										१६०	
										२००	
										२१६	
										२२४	
										२३२	
										२३९	
										२३७	
										२३८	
										२३९	

ढ ढ णगणादि पताका.

		४	३	२	१	०	
णगणपंक्ति=		२	९	१२	६	१	
अंकांक=	१	२	३	५	१०	१५	३०
		१	२	५	१५	३०	
		६	३	१०	२०		
			४	१२	२५		
			७	१३	२७		
			८	१४	२८		
			९	१७	२९		
			११	१८			
			१६	१९			
			२१	२२			
				२३			
				२४			
				२६			

रीतिनुं स्पष्टीकरण.

शून्य गुरुनुं १ रूप छे माटे तेनी लेहेरमां १ खंड कर्यो छे.
एक गुरुनां ६ रूप छे ,, ,, ६ ,,
बे गुरुनां १२ ,, ,, ,, १२ ,,
त्रण गुरुनां ९ ,, ,, ,, ९ ,,
चार गुरुनां २ ,, ,, ,, २ ,, छे
सर्व भेदांक= ३० छे. ते शून्य गुरुनी लेहेरमां भर्या छे.

एक गुरुनी लेहेरना खंडना अंक नीचे प्रमाणे आव्या छे.

३०−१५=१५
३०−१०=२०
३०− ५=२५
३०− ३=२७
३०− २=२८
३०− १=२९
} एक गुरुनी लेहेरना अंक.

बे गुरुनी लेहेरना अंक नीचे प्रमाणे आव्या छे.
सर्व रूप संख्या ३०

३०−(१५+१०)= ५
३०−(१५+ ५)=१०
३०−(१५+ ३)=१२
३०−(१५+ २)=१३
३०−(१५+ १)=१४
३०−(१०+ ३)=१७
३०−(१०+ २)=१८
} बे गुरुनी लेहेरना अंक.

३०−(१०+ १)=१९
३०−(९+ ३)=२२
३०−(९+ २)=२३
३०−(९+ १)=२४
३०−(३+ १)=२६

त्रण गुरुनी लेहेरना नव खंडना अंक नीचे प्रमाणे आव्याः—

सर्व संख्या=३०−(१९+१०+३)= २
=३०−(१९+१०+२)= ३
=३०−(१९+१०+१)= ४
=३०−(१९+ ९+३)= ७
=३०−(१९+ ९+२)= ८
=३०−(१९+ ९+१)= ९
=३०−(१९+ ३+१)=११
=३०−(१०+ ३+१)=१६
=३०−(९+ ३+१)=२१

} त्रण गुरुनी लेहेरनां अंक.

चार गुरुनी लेहेरना अंक लाववा छे तो—

सर्व संख्या=३०−(१९+१०+३+१)=१.
=३०−(१९+ ९+३+१)=६.

उपर आवेला अंक पृष्ट २०३ नी पताकामां भरेला छे.

ढगण अने णगण पताका.

शून्यादि गुरु सूचक संख्या= २ १ ०

णगण मेरुपंक्तिना अंक =|२|३|१| क

मेदांक =|१|२|३|६| ख

|१|३|६|

|२|४| ग

ट |५|

घ

क पेहेली पंक्ति छे ते ढगण अने णगणना मेरुमां छेल्ले स्थाने णगणनी पंक्ति छे. जुवो पृ. १८९.

ख पंक्तिमां मात्रावार भेदांकनी संख्या परथी तैयार करेल दंड मूक्यो छे.

ग शून्य गुरुनी लेहेर छे, तेमां मेरु संख्या १ छे माटे एक खंड.

घ एक गुरुनी लेहेर छे, तेमां मेरु संख्या ३ छे माटे त्रण खंड.

ङ बे गुरुनी लेहेर छे, तेमां मेरु संख्या २ छे माटे बे खंड.

कुल संख्या=६ शून्य गुरुनी लेहेरमां भरवाना.

संख्या=६−३=३
६−२=४
६−१=५
} एक गुरुनी लेहेरमां भरवाना अंक.

संख्या=६−(३+२)=१.
६−(३+१)=२.
} बे गुरुनी लेहेरना अंक.

तेना जेटला गण थता होय तेटली उभी पंक्तिओ अने अगि-यार आडी पंक्तिओ दोरवी. अने तेमां नीचे आपेला नियम प्रमाणे नीचे जणावेला अगियार प्रकारना अंक भरवा.

१. प्रत्येक गणना पेहेला खंडमां गणनो चडतो अंक भरवो.

२. बीजा खंडमां गणना प्रथम स्वरूपनां चिन्ह मांडवां.

३. त्रीजा खंडमां तेनी मात्राना जेटला भेद थता होय अने तेमांथी जेटला काम आवता होय ते संख्या भरवी.

४. चोथा खंडमां भेदांकनी संख्या मूकवी.

५. पांचमा खंडमां अन्त गुरुनी अथवा गान्त रूपनी संख्या मूकवी.

६. छठ्ठा खंडमां लान्त रूप जेटलां थतां होय तेनी संख्या भरवी.

७. सातमा खंडमां गुरु अक्षरनी संख्या भरवी.

८. आठमा खंडमां लघु अक्षरनी संख्या भरवी.

९. नवमा खंडमां कुल वर्णनी संख्या मूकवी.

१०. दशमा खंडमां कुल मात्रानी संख्या भरवी.

११. अगिआरमा खंडमां पिंडनी संख्या भरवी.

मर्कटी अंकभरणविधि.

१. पेहेली आडी पंक्तिमां गणना क्रमवार अंक भरी जवा.

२. बीजीमां गणनी मात्रानां प्रथम स्वरूप चिन्ह मूकी देवां.

३. गणनी मात्राना प्रस्तार संख्याक्रमांथी जेटला भेद काममां आवता होय ते संख्या भरवी.

४. भेदांक भरवा तेनो नियम —

लान्त रूप छे माटे तेथी पेहेलाना गतपेहेला गणना भेदांक ने इष्टनी गान्त संख्या २ थी गुण्या तो इष्ट गणनी गान्त ख्या ८ अने लान्त संख्या ३ थी गुण्या तो इष्ट गणनां ान्त रूपनी संख्या १२ आवी तेमने तेमना खंडमां भरेल छे.

गत गण १ ना गुरु अक्षर ४ ने इष्ट गण २ नी भेद संख्या ५ थी गुण्या तो २० आव्या. तेमां गतगणना भेदांक ४ ने इष्ट गणना भेदमां आवती गुरु संख्या ५ अने लघु संख्या १० गुणतां आवेला गुणाकार २० अने ४० ने प्रथक् प्रथक् उमेर्या तो बीजा गणना गुरु अक्षरनी संख्या ४० अने लघु अक्षरनी संख्या ८० आवी. तेमने तेमना खंडमां भरेल छे.

इष्ट गणना गुरुनी संख्या ४०मां तेनी लघुनी संख्या ८० उमेरी तो इष्ट गणना वर्णनी संख्या १२० आवी.

इष्ट गण बीजो छे त्यां सुधीनी मात्रानो सरवाळो ८ थाय छे; माटे ए गणनी कळा (८×भेदांक) २०=१६० थाय अने कळानुं अर्द्ध ते पिंड थायछे; माटे ते गणनी पिंड संख्या ८० थाय.

एज प्रमाणे दाखला तरीके पंदरमा गणना अंक परथी सोळमा गणना अंक लाव्या छिये तेनुं उदाहरण.

गणनी संख्या सोळ छे माटे ते खंडमां सोळ मूक्या छे; ते बे मात्रानो नियत गुरुनो गण छे माटे त्यां ऽ चिन्ह मूक्युं छे तेनो भेद एकज काम आवेछे माटे ते खंडमा एकडो मूक्यो छे.

गतगणना भेदांकने इष्टगणना भेद गुणवाथी इष्ट गणना भेदांक आवेछे माटे ते खंडमां ८,१९,२०,०००×१=८,१९,२०,००० मूक्या छे.

जेनां सघळां चरण असमान होय ते विषम केहेवायछे.

सम जाति अने वृत्तना भेदनी संख्या जाणवानो विधि अगाउ आपी गया छिये. जुओ पृष्ठ ६.

अर्द्ध समजातिसंख्या जाणवानी रीति.

प्रथम चरणनी मात्रानी भेद संख्याने द्वितीय चरणनी मात्रानी भेद संख्याथी गुणवाथी अर्द्ध समजाति संख्या आवेछे

सोरठानी अर्द्ध सम संख्या केटली थशे?

सोरठाना प्रथम चरणनी मात्रा ११ छे तेना भेद २६ छे तेने बीजा चरणनी १३ मात्रा छे तेना भेद १०४थी गुण्या तो २७०४ आव्या. माटे अर्द्ध सम संख्या= २७०४ एज प्रमाणे

दोहानी अर्द्धसम जाति संख्या:—

=१०४×२६=२७०४ आवी.

एज प्रमाणे बर्वरा जातिनी अर्द्धसम संख्या.—

=१२९×५ = ६२५ आवी.

अर्द्धसमवृत्तसंख्या जाणवानी रीतिः—

इष्टवृत्तना प्रथम चरणनी भेदसंख्याने द्वितीय चरणनी भेदसंख्याए गुणवाथी अर्द्धसमवृत्त संख्या आवेछे. प्रत्येक पद सम अक्षरवाळु होय तो उपर प्रमाणे आवेल संख्याने तेना वर्गमूळ हीन करवाथी अर्द्धसम संख्या आवेछे.

जे वृत्तना विषम चरणमां ८ वर्ण छे अने समचरणमां १० वर्ण छे तेवा वृत्तनी अर्द्धसम संख्या केटली थशे?

प्रथम चरण वर्ण ८ संख्या= २५६.

द्वितीय चरण वर्ण १० संख्या=१०२४.

२५६×१०२४=२,६२,१४४

प्रत्येक चरणमां चच्चार वर्णवाळा वृत्तनी अर्द्धसम संख्या केटली थशे ?

प्रथम चरण वर्ण ४ तेनी भेद संख्या=१६. }
द्वितीय ,, ,, ४ ,, ,, =१६. } १६×१६=२५६

$२५६-\sqrt{२५६}=१६=२४०$

विषमजाति तथा वृत्तसंख्या जाणवानी रीतिः—

समजातिनी पेठे इष्ट जातिनां चारे चरणनी मात्रानी भेद संख्यानो गुणाकार करवाथी **विषमजाति** वृत्तसंख्या आवे छे.

१. एक एवी जाति छे के जेनुं पेहेलुं चरण चार मात्रानुं, बीजुं त्रण मात्रानुं, त्रीजुं पांच मात्रानुं, अने चोथुं छ मात्रानुं छे तेनी भेदसंख्या केटली थशे ?

१. प्रथम चरणनी मात्रा ४ तेनी भेदसंख्या =५
२. द्वितीय चरणनी मात्रा ३ तेनी भेदसंख्या =३
३. तृतीय चरणनी मात्रा ५ तेनी भेदसंख्या =८
४. चतुर्थ चरणनी मात्रा ६ तेनी भेदसंख्या =१३

माटे भेदसंख्या =५×३×८×१३=१,५६०.

२. जे वृत्तना प्रथम चरणमां बे, बीजामां त्रण, त्रीजामां चार, अने चोथामां ५ वर्ण छे, तेनी भेदसंख्या केटली थशे ?

१. चरणना वर्ण २ तेना भेद =४
२. चरणना वर्ण ३ तेना भेद =८
३. चरणना वर्ण ४ तेना भेद =१६
४. चरणना वर्ण ५ तेना भेद =३२

माटे भेदसंख्या =४×८×१६×३२=१६,३८४.

विद्यार्थीनी सगवड माटे एक वर्णथी आरंभी ३२ वर्ण पर्यंतना समाक्षरीवृत्तनी **अर्द्धसमादि संख्या** पासेना कोष्टकमां अगाउ आपेला नियम प्रमाणे गणीने मूकेली छे.

वर्णवृत्तोनी सम, अर्द्धसम अने विषमनी रूपसंख्यानुं बिम्ब.

अंक	छदनुं नाम	समसंख्या.	अर्द्धसमसंख्या.	विषमसंख्या.
१	उक्ता	२	४	१६
२	अत्युकता	४	१६	२५६
३	मध्या	८	६४	४,०९६
४	प्रतिष्ठा	१६	२५६	६५,५३६
५	सुप्रतिष्ठा	३२	१,०२४	१०,४८,५७६
६	गायत्री	६४	४,०९६	१,६७,७७,२१६
७	उष्णिक	१२८	१६,३८४	२६,८४,३५,४५६
८	अनुष्टुप	२५६	६५,५३६	४,२९,४९,६७,२९६
९	बृहति	५१२	२,६२,१४४	६,८,७१,९४,७६,७३६
१०	पंक्ति	१,०२४	१०,४८,५७६	१०९९५११६२७७७६
११	त्रिष्टुप	२,०४८	४१,९४,३०४	१७५९२१८६०४४४१६
१२	जगती	४,०९६	१,६७,७७,२१६	२८१४७४९७६७१०६५६
१३	अतिजगती	८,१९२	६,७१,०८,८६४	४५०३५९९६२७३७०४९६
१४	शर्करी	१६,३८४	२६,८४,३५,४५६	७२०५७५९४०३७९२७९३६

१५	अतिशर्करी	३२,७६८	१,०७,३७,४१,८२४	११५२९२१५०४६०६८४६९७६
१६	अष्टी	६५,५३६	४,२९,४९,६७,२९६	१८४४६७४४०७३७०९५५१६१६
१७	अत्यष्टी	१,३१,०७२	१,७,१७,९८,६९,१८४	२९५१४७९०५१७९३५२८२५८५६
१८	धृति	२,६२,१४४	६८७१९४७६७३६	४७२२३६६४८२८६९६४५२१३६९६
१९	अतिधृति	५,२४,२८८	२७४८७७९०६९४४	७५५५७८६३७२५९१४३२३४१९१३६
२०	कृति	१०,४८,५७६	१०९९५११६२७७७६	१२०८९२५८१९६१४६२९१७४७०६१७६
२१	प्रकृति	२०,९७,१५२	४६९८०४६५१११०४	१९३४२८१३११३८३४०६६७९५२९८८१६
२२	आकृति	४१,९४,३०४	१७५९२१८६०४४४१६	३०९४८५००९८२१३४५०६८७२४७८१०५६
२३	विकृति	८३,८८,६०८	७०३६८७४४१७७६६४	४९५१७६०१५७१४१५२१०९९५९६४९६८९६
२४	सङ्कृति	१,६७,७७,२१६	२८१४७४९७६७१०६५६	७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६
२५	अतिकृति	३,३५,५४,४३२	११२५८९९०६८४२६२४	१२६७६५०६००२२८२२९४०१४९६७०३२०५३७६
२६	उत्कृति	६,७१,०८,८६४	४५०३५९९६२७३७०४९६	२०२८२४०९६०३६५१६७०४२३९४७२५१२८६०१६
सर्व	वृत्तसंख्या	१३,४२,१७,७२८		

दोहाप्रस्तारादि.

गणप्रस्तार प्रकरणमां आ विषे प्रत्ययवार छूट छूट लखवामां आव्युं छे, ने उदाहरणो पण आपवामां आव्यां छे. पण ए सघळुं श्रृंखलाबंध न होवाथी तथा पूर्वाचार्योए पण ए विषे विवरण सहित न लखेलुं होवाथी पूर्वना नियमोनुं दृढीकरण थवामाटे आ जातिना ए सघळा प्रत्ययोविषे पुनः विवेचनवार विस्तारवामां आवे छे.

दोहानी रचना शी रीते करवी तेना नियमविषे आ पुस्तकना प्रथम भागनां पृष्ठ ७५ थी ७८ सुधीमां केहेवामां आव्युं छे.

दोहानी ४८ मात्राना सघळा मळीने १४ गण थाय छे; पूर्व दलना ७ अने उत्तर दलना ७. उभय दलनो प्रथम गण छ मात्रानो ट गण छे; बीजो चार मात्रानो ड गण छे; त्रीजो गण एक मात्रानो एटले नियत लघुनो छे; चोथो बे मात्रानो **ण** गण छे; पांचमो छ मात्रानो ट गण छे; छठ्ठो चार मात्रानो ड गण छे अने सातमो एक मात्रानो नियत लघुनो छे.

उभय दलमां प्रथम गण ट गण छे माटे तेनां तेर रूप थाय छे, ते ते गणना रूपनी भेदसंख्या थशे. बीजो गण ड गण छे तेनां पांच रूप थाय छे; पण दुहामां तेमांनो ।ऽ। ज गण उपयोगमां न आवतां मात्र चार रूप काममां आवे छे. त्रीजो गण नियत लघुनो होतां तेनुं एक ज रूप गणाय छे. चोथो गण **ण** गण छे तेनां बे रूप थाय छे. पांचमो गण ट गण छे; माटे तनां तेर रूप थशे. छठ्ठो गण ड गण छे तेनां पांच रूप थाय; परंतु दोहाना उभय दलमां उपान्त्य गुरुवर्ण नियत छे; माटे तेनां रूपमांथी ऽ।।, ।ऽ।, ।।।। रूप जतां बाकीनां बे रूप ऽऽ, ।।ऽ रेहेछे. ते उपयोगमां आवे छे; अने सातमो गण एक

લઘુનો હોતાં તેનું એકજ રૂપ તેમાં વપરાય છે. એ પ્રમાણે દોહાના ચૌદ ગણની માત્રા અને તેના ભેદ અને તજ્જન્ય સ્વરૂપ થાય છે તે નીચેના બિમ્બમાં દર્શાવ્યાં છે તે પરથી વાંચનારને સ્પષ્ટ સમજાશે.

દોહાના સર્વ ગણના ભેદના સ્વરૂપનું બિમ્બ.

	પૂર્વાર્દ્ધ.							પરાર્દ્ધ.						
ગણક્રમાંક	૧	૨	૩	૪	૫	૬	૭	૮	૯	૧૦	૧૧	૧૨	૧૩	૧૪
ગણ દલવાર	૧	૨	૩	૪	૫	૬	૭	૧	૨	૩	૪	૫	૬	૭
માત્રા	૬	૪	૧	૨	૬	૪	૧	૬	૪	૧	૨	૬	૪	૧
ભેદ	૧૩	૪	૧	૨	૧૩	૨	૧	૧૩	૪	૧	૨	૧૩	૨	૧
ભેદ સ્વરૂપ ૧	SSS	SS	I	S	SSS	SS	I	SSS	SS	I	S	SSS	SS	I
૨	IISS	IIS		II	IISS	IIS		IISS	IIS		II	IISS	IIS	
૩	ISIS	SII			ISIS			ISIS	SII			ISIS		
૪	SIIS	IIII			SIIS			SIIS	IIII			SIIS		
૫	IIIIS				IIIIS			IIIIS				IIIIS		
૬	ISSI				ISSI			ISSI				ISSI		
૭	SISI				SISI			SISI				SISI		
૮	IIISI				IIISI			IIISI				IIISI		
૯	SSII				SSII			SSII				SSII		
૧૦	IISII				IISII			IISII				IISII		
૧૧	ISIII				ISIII			ISIII				ISIII		
૧૨	SIIII				SIIII			SIIII				SIIII		
૧૩	IIIIII				IIIIII			IIIIII				IIIIII		

દોહાના ગણનું વિવેચન.

કેટલાક ચૌદ ગણને બદલે દોહાના બાર ગણ પાડે છે. અને તેમ કરવામાં ત્રીજા અને ચોથા ગણને સાથે મેળવે છે ને તેની

त्रण मात्रामां आद्य लघुनां जे बे रूप थाय छे, तेने तेनां रूप गणे छे; अने पांचमो गण एक गुरुनो अर्थात् ण गण माने छे, अने छेल्लो एटले उभय दलनो छठ्ठो गण "ऽ।" त्रण मात्रानो ढ गण नियत गणी तेनो एकज भेद तेना प्रस्तारना उपयोगमां ले छे.

वळी केटलाक, आना सोल गण पाडे छे. उभय दलमां पेहेलो गण ड गण चार मात्रानो, बीजो गण ण गण बे मात्रानो, त्रीजो गण ड गण चार मात्रानो, चोथो गण ढ गण त्रण मात्रानो, पाचमो गण ड गण चार मात्रानो, छठ्ठो गण ण गण बे मात्रानो, सातमो गण ण गण बे मात्रानो अने आठमो एटले उभय दलनो छेल्लो गण ढ गण त्रण मात्रानो गणे छे; तेमां छेल्लो गण नियत गणे छे, अने त्रीजो गण ड गण छे; तेनां पांच रूप पैकी ज गण मूकी दइने शुद्ध चार रूप उपयोगमां ले छे.

गणप्रस्तार प्रकरणमां जणाव्या प्रमाणे गणमेळ छंदनी भेदांक संख्या ते छंदनी भेद संख्याना गुणाकार समान थाय छे; माटे दोहाना भेदनी संख्या नीचे जणावेला गणवार भेद परथी काहाडी तो नीचेनी विगत प्रमाणे ७३,११,६१६ आवी.

गण. १,२,३,४, ५,६,७, ८,९,१०,११, १२,१३,१४.
भेद. १३,४,१,२,१३,२,१,१३,४, १, २, १३,२, १.

१३×४×१×२×१३×२×१×१३×४×१×२×१३×२×१ =दोहानी भेदांक संख्या ७३,११,६१६.

जेओ आना बार गण पाडे छे तेमना मते पण ए संख्या=
१३×४×२×१३×२×१×१३×४×२×१३×२×१=
७३,११, ६१६ थाय छे.

अने जेओ सोळ गण पाडे छे तेमना मत प्रमाणे दोहानी

प्रस्तारसंख्या=५×२×४×२×५×२×२×१×५×२×४×२×५×२×२×१=भेदसंख्या=२५,६०,००० थाय छे.

आ रीतिथी अन्यथा गण पाडी केटलाक छंदःशास्त्रकारोए दोहानी भिन्न भिन्न प्रस्तारसंख्या जणावी छे, ते उत्तम अने तालशुद्ध दोहाने माटे असत् छे, एम कह्याविना चालतुं नथी.

दोहा प्रस्तार.

दोहाजाति मात्रिक गणबद्ध होतां तेनो प्रस्तार गणप्रस्तार पृष्ठ १३० थी १४८ सुधीमां बताव्या प्रमाणे थइ शके. तेम ज नीचे आपेली टुंकी रीतिथी पण ते बनी शके.

जेटला गणनो प्रस्तार करवा इच्छा होय तेटली उभी पंक्तिओ पाडी तेना पर गणनां नाम अने संख्या मूकी जवी. पछी नीचेना कोष्टकमां जणाव्या प्रमाणे जे गणनां भेदजन्य रूपनां जेटली जेटली संख्याए जेटलां जेटलां आवर्त्तन थवानुं तेमां जणाव्युं होय, तेटली तेटली वार ते ते गणनां रूपने मांडी जवां, एटले प्रस्तार तैयार थशे.

दोहा प्रस्तारार्थे आवर्त्तन अने अंकान्तर सूचक अंक विम्ब.

गणक्रमांक.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
गणभेद संख्या रूप संख्या	१३	४	१	२	१३	२	१	१३	४	१	२	१३	२	१
केटला केटला अंकान्तरे एकठुं रूप मूकवु.	१	१३	१	५२	१०४	१,३५२	१	२,७०४	३५,१५२	१	१,४०,६०८	२,८१,२१६	३६,५५,८०८	१
सरवाळे केटलां केटलां आवर्त्तन करवां.	५,६२,४३२	१,४०,६०८	+७३,११,६१६	७०,३०४	५,४०८	२,७०४	*७३,११,६१६	२०८	५२	+७३,११,६१६	२६	२	१	७३,११,६१६

* थोडा गणना रूपनोज प्रस्तार करवा इच्छा होय तो आवां चिह्न जेटलां ते गणनां रूपनां आवर्त्तन न करतां प्रस्तार करवा धारेला गणना जेटला भेदांक होय तेटलां तेनां आवर्त्तन करवां.

दुहा सूची.

दुहामां छेल्लो लघु आणवानो छे, एटले तेमां अन्त्य गुरुवाळुं एक पण स्वरूप थइ शके नहि; तेमज आदि लघु अने अन्त्य गुरु, तथा आद्यन्त गुरुवाळुं एक पण रूप थइ शके नहि. बाकी आदि गुरु, आदि लघु, आदि गुरु अने अन्त्य लघु, आद्यन्त लघु, अने अन्त्य लघुवाळां रूप बनी शके छे, माटे एवा रूपनी संख्या दुहाना समग्र प्रस्तारमां केटली केटली थाय छे, ए जाणवानो विधि नीचे आपिये छिये.

दुहाना भेद ७३,११,६१६ ने १३ थी भागतां जेटला पूर्णांक आवे तेने ५ थी गुणवाथी आदि गुरुवाळां रूपनी संख्या नीकळे छे. कारण के कुल भेदमां पूर्णांक जेटली वार आवे छे तेटली वार छ मात्राना १३ रूपनुं पुनरावर्त्तन थाय छे; अने प्रत्येक आवर्त्तनमां आदि गुरुवाळां पांच रूप आवे छे. तेमज रूपभेदनी संख्याने १३ थी भागतां जे लब्धि (भागाकार) आवे तेथी आठगणां आदिलघुनां रूप थाय छे; कारण के अकेका आवर्त्तनमां ते आठ वार आवे छे.

जेटलां रूप आदिगुरुनां होय तेटलां ज रूप आदिगुरु अने अन्त्य लघुवाळां जाणवां. अने जेटलां आदि लघुनां रूप होय तेटलां ज आद्यन्त लघुवाळां रूप जाणवां. दुहाना रूप भेदनी संख्यातुल्य तेनां अन्त्य लघुवाळां रूप होय छे.

उपरना नियम प्रमाणे दुहाना समग्र प्रस्तारमां आदि गुरुनां रूप २८,१२,१६०. आदि लघुनां रूप ४४,९९,४५६. आदि गुरु अने अन्त्य लघुनां रूप २८,१२,१६०. आद्यन्त लघुनां रूप ४४,९९,४५६ अने केवळ अन्त्य लघुनां रूप ७३,११,६१६ थाय. विशेष समजण माटे जुवो पाछळ (पृष्ठ १६९ थी १७१ सुधी गणप्रस्तार सूची.)

नष्ट प्रक्रिया.

आनी रीति गणप्रस्तार प्रकरणमां पृष्ठ १७२ में छे ते अहिं योजवी.

दोहाना प्रस्तारमां ७३,११,६१६ मुं रूप केवुं थाय ?

आपेली संख्या ७३,११,६१६ छे माटे तेने तथा लब्धिने दोहाना गणना भेदनी संख्याथी भागवानी क्रिया करी तो शेषवार मागेल स्वरूप नीचे प्रमाणे आव्युं:—

गण १=संख्या= $\frac{७३,११,६१६}{\text{ग. भे. } १३}$ =लब्धि=५,६२,४३२ शेष=०.

गण. २=लब्धि= $\frac{५,६२,४३२}{४}$ = ,, १,४०,६०८ ,,=०.

गण. ३= ,,= $\frac{१,४०,६०८}{१}$ = ,, १,४०,६०८ ,,=०.

गण. ४= ,, = $\frac{१,४०,६०८}{२}$ = ,, ७०,३०४ ,,=०.

गण. ५= ,, = $\frac{७०,३०४}{१३}$ =,, ५,४०८ ,,=०.

गण. ६= ,, = $\frac{५,४०८}{२}$ =,, २,७०४ ,,=०.

गण. ७= ,, = $\frac{२,७०४}{१}$ =,, २,७०४ ,,=०.

गण. ८= ,, = $\frac{२,७०४}{१३}$ =,, २०८ ,,=०.

गण. ९= ,, = $\frac{२०८}{४}$ =,, ५२ ,,=०.

गण. १०=लब्धि= $\frac{५२}{१}$=लधि= ५२ शेष=०.

गण. ११=लब्धि= $\frac{५२}{२}$=,, =२६ ,,=०.

गण. १२= ,, = $\frac{२६}{१३}$= ,, =२ ,,=०.

गण. १३= ,, = $\frac{२}{२}$= ,, =१ ,,=०.

गण. १४= ,, = $\frac{१}{१}$= ,, =१ ,,=०.

प्रथम गणनो शेष शून्य छे माटे ते गणनुं छेल्लुं रूप. ||||||

बीजा गणनो शेष शून्य छे माटे ते गणनुं छेल्लुं रूप. ||||

त्रीजा गणनो शेष शून्य छे माटे ते गणनुं छेल्लुं रूप. |

चोथा	,,	,,	,,	,,	||.
पांचमा	,,	,,	,,	,,	||||||
छठ्ठा	,,	,,	,,	,,	||S
सातमा	,,	,,	,,	,,	|
आठमा	,,	,,	,,	,,	||||||
नवमा	,,	,,	,,	,,	||||
दशमा	,,	,,	,,	,,	|
अगियारमा	,,	,,	,,	,,	||
बारमा	,,	,,	,,	,,	||||||
तेरमा	,,	,,	,,	,,	||S
चौदमा	,,	,,	,,	,,	|

ए प्रमाणे आपेली संख्यानुं रूप=

||||||, ||||, |, ||, ||||||, ||S, | पूर्वदल.

||||||, ||||, |, ||, ||||||, ||S, | परदल.

दोहाना प्रस्तारनुं पेहेलुं रूप केवुं हशे?

इष्ट संख्या १ छे तेने गण भेदांकथी भाग्या तो प्रत्येक गणनुं शेषवार स्वरूप नीचे प्रमाणे आव्युं:—

गण	संख्या	लब्धि	शेष	मागेलुं रूप
गण १	संख्या. १ / भेदांक=१३	=०	१ =	SSS
गण २	ल =(०+१)/४	=०	१ =	SS
गण ३	ल =(०+१)/१	=१	० =	|
गण ४	ल =(१+०)/२	=०	१ =	S
गण ५	ल =(०+१)/१३	=०	१ =	SSS
गण ६	ल =(०+१)/२	=०	१ =	SS
गण ७	ल =(०+१)/१	=१	० =	|
गण ८	ल =(१+०)/१३	=०	१ =	SSS
गण ९	ल =(०+१)/४	=०	१ =	SS

गण १० ल $= \frac{०+१}{१} = १$ ० = ।

गण ११ ल $= \frac{१+०}{२} = ०$ १ = ऽ

गण १२ ल $= \frac{०+१}{१३} = ०$ १ = ऽऽऽ

गण १३ ल $= \frac{०+१}{२} = ०$ १ = ऽऽ

गण १४ ल $= \frac{०+१}{१} = १$ ० = ।

आ उदाहरणमां त्रीजा, सातमा, दशमा, अने चौदमा गणमां लब्धिने भागतां शेष शून्य रहेल छे माटे ते पछीना गणमां तेमनी लब्धिमां एक उमेरयो नथी ने बाकीना गणमा शून्यथी वधारे शेष छे माटे तेमां एक उमेरयो छे.

दोहा प्रस्तारनुं ३३,७१,३०३ मुं रूप केवुं थाय?

आपेली सख्या=३३,७१,३०३ छे.

प्रथम भेदनां तेर रूप थाय छे तेथी भागतां. $\frac{३३,७१,३०३}{१३}$ =२,५९,३३१.०शेष.

बीजा भेदनां रूप चार तेथी ते भेदांकथी भागतां. $\frac{२,५९,३३१}{४}$ =६४,८३२. ३शे.

त्रीजा गणनो भेदांक १ छे तेथी भागतां. ६४,८३२+$\frac{१=६४,८३३}{१}$ =६४,८३३.०

चोथा गणना भेदांक वेथी भागतां $\frac{६४,८३३}{२}$ =३२,४१६. १शेष.

पांचमा गणना भेदांक १३थी भागतां ३२,४१६+१=३२,४१७

$$\frac{३२.४१७}{१३}=२,४९३. \quad ८शे.$$

छट्ठा गणना भेदांक वेथी भागता $\frac{२,४९३+१}{२}=१,२४७.$ ०शेष.

सातमा गणना भेदांक १थी भागतां $\frac{१,२४७}{१}=१,२४७.$ ०शेष.

आठमा गणना भेदांक१३थी भा. $\frac{१,२४७}{१३}=९५.$ १२शेष.

नवमा गणना भेदांक ४ थी भा० $\frac{९५+१}{४}=२४.$ ०शेष.

दशमा गणनो भेदांक १ थी भा० $\frac{२४}{१}=२४.$ ०शेष.

अगियारमा गणना भेदांक२थी भागतां. $\frac{२४}{२}=१२.$ ०शेष.

बारमा गणना भेदांक १३ थी भागतां $\frac{१२}{१३}=०.$ १२शेष.

तेरमा गणना भेदांक २ थी भागतां $\frac{०+१}{२}=०.$ १शेष.

चौदमा गणना भेदांक १ थी भागतां $\frac{०+१}{१}=०.$ १शेष.

उपरना अंकदर्शन प्रमाणे गणवार शेषाक अने ते उपरथी तेनां रूप नीचे प्रमाणे आवे छे.

गण	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
शेषाक	०	३	०	१	८	०	०	१२	०	०	०	१२	१	१
रूप	।।।।।	S।।	।	S	।।।S।	।।S	।	S।।।।	।।।।	।	।।	S।।।।	SS	।

उपरना विम्बनी समजुती.

पेहेला गणनो शेषाङ्क शून्य छे माटे ते गणनु छेल्लुं रूप ।।।।।
वीजा गणनो शेषाङ्क ३ छे माटे ते गणनु त्रीजुं रूप S।।
त्रीजा गणनो शेषाङ्क शून्य छे माटे ते गणनुं छेल्लु रूप ।
चोथा गणनो शेषाङ्क १ छे माटे ते गणनुं पेहेलु रूप S
पांचमा गणनो शेषाङ्क ८ छे माटे ते गणनुं आठमुं रूप ।।।S।
छठ्ठा गणनो शेषाङ्क शून्य छे माटे ते गणनु छेल्लु रूप ।।S
सातमा गणनो शेषाङ्क शून्य छे माटे ते गणनुं छेल्लुं रूप।
आठमा गणनो शेषाङ्क १२ छे माटे ते गणनु बारमुं रूप S।।।।
नवमा गणनो शेषाङ्क शून्य छे माटे ते गणनुं छेल्लु रूप ।।।।
दशमा गणनो शेषाङ्क शून्य छे माटे ते गणनुं छेल्लु रूप ।
अगियारमा गणनो शेषाङ्क शून्य छे माटे ते गणनु छेल्लुं रूप।।
बारमा गणनो शेषाङ्क १२ छे माटे ते गणनुं बारमु रूप S।।।।
तेरमा गणणो शेषाङ्क १ छे माटे ते गणनुं पेहेलुं रूप SS
चौदमा गणनो शेषाङ्क १ छे माटे ते गणनुं पेहेलुं रूप ।

उपरना रूपनो दुहो नीचे प्रमाणेः—

क र क स र क र्‍या व ण क दि, ध न ब चा व न व था य
। । । । । । ऽ । । । ऽ, । । । ऽ । । । ऽ ।;
। । । । । । । । । । ।, ऽ । । । । ऽ ऽ ।
ो य क दि अ ढ ल क ध न प ण, ख र्च थ कीं खु टी जा य.

दुहा उद्दिष्ट प्रक्रिया.

आपेलो दुहो प्रस्तार विधिथी कइ संख्यानो थाय छे; ए शोधी काहाडवानी रीतिने दोहा उद्दिष्ट प्रक्रिया केहे छे.

आ रीति गणप्रस्तार प्रकरण पृष्ठ १७६ मां अपाइ गइ छे एटले अत्र फरी न आपतां तेनां जूदां जूदां उदाहरण आपी तेनुं दृढीकरण करिये छिये.

१ प्रश्न. कर कसर करच्यावण कदि, धन बचाव नव थाय,
होय कदि अढलक धन पण, खर्चथकीं खुटी जाय.

आ दुहो प्रस्तारमां केटलामा रूपनो छे?

कह्या प्रमाणे दुहाना गण अने मात्रावार पद पाडी बिम्बमां गोठव्या तो तेनुं बिम्ब निचे प्रमाणे तैयार थयुं.

गण	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
नाम	टगण ॥॥।	डगण ऽ॥	ल ।	णगण ऽ	टगण ॥ऽ।	डगण ॥ऽ	ल ।	टगण ऽ॥॥	डगण ॥॥	ल ।	णगण ॥	टगण ऽ॥॥	डगण ऽऽ	ल ।
गणभेद	१३	४	१	२	१३	२	१	१३	४	१	२	१३	२	१
आपेलपद	करकसरक	रयावण	क	दि	वनबचाव	नचया	य	होयकदि अ	ढलक ध	न	पण	खर्चथकी खु	टी जा	य
गणना भेदमा केटलामु रूप.	०	३	०	१	८	०	०	१२	०	०	०	१२	१	१

१,२,६,७,९,१०,११ मा गणमां आपेलु रूप छेल्लुं छे, माटे तेमांथी तेना भेदांक शोधीने एटले बाद करीने जे शेष रहेल छे ते तेमना रूपांक तरीके तेमां मूकेल छे. छेल्लागणनुं रूप पण छेल्लुं छे पण त्यां ते नियम अपवादरूप होतां लागु पाड्यो नथी.

अन्त्य गणना रूपांकने उपान्त्य गण शून्यथी वधारे रूपांक-वाळो होय तो एक हीन करी तेने उपान्त्य गणना भेदांकथी गुणवा ने रूपांकथी युत करवा ए नियम प्रमाणे छेल्ला गणथी ते प्रमाणे कर्युं तो तेनुं अंकदर्शन नीचे प्रमाणे आव्युं.

अन्त्य गण १४ रूपांक=१

उपान्त्य गण १३ रूपनी संख्यावाळो छे माटे:—

१−१=०×उपान्त्य गण भेद संख्या २=०+उ.ग.रू.१=१

हवे रूपांक १ अन्त्य गण १३ मो अने उपान्त्य गण १२ मो थयो उपान्त्य गण रूपवाळो छे माटे रूपांक =१−१=०× उपान्त्य भेद संख्या १३=०+१२=१२

अन्त्यगण	रूपांक		उपान्त्यगणभेद	उपान्त्य	रूपांक
१२	,,	१२ − ० =	१२ × २ =	२४ + ० =	२४
११	,,	२४ − ० =	२४ × १ =	२४ + ० =	२४
१०	,,	२४ − ० =	२४ × ४ =	९६ + ० =	९६
९	,,	९६ − १ =	९५ × १३ =	१२३५ + १२ =	१२४७
८	,,	१२४७ − ० =	१२४७ × १ =	१२४७ + ० =	१२४७
७	,,	१२४७ − ० =	१२४७ × २ =	२४९४ + ० =	२४९४
६	,,	२४९४ − १ =	२४९३ × १३ =	३२४०९ + ८ =	३२४१७
५	,,	३२४१७ − १ =	३२४१६ × २ =	६४८३२ + १ =	६४८३३
४	,,	६४८३३ − ० =	६४८३३ × १ =	६४८३३ + ० =	६४८३३
३	,,	६४८३३ − १ =	६४८३२ × ४ =	२५९३२८ + ३ =	२५९३३१
२	,,	२५९३३१ − ० =	२५९३३१ × १३ =	३३७१३०३ − ० =	३३७१३०३

माटे मागेली सख्या=३३,७१,३०३

आमा ३,५,६, ने ९ अन्त्य गणना रूपाकने तेमना उपान्त्य गण शून्यथी वधारे शेषवाळा छे माटे एक हीन कर्या छे ने बीजाने करचा नथी.

२ **प्रश्न.** जीव्यो तेने जाणजो, छूट्यो मायाबंध,
हारयो तेने जाणजो, जे मायाथी अंध.

आ दुहो तेना प्रस्तारमा केटलामा रूपनो छे?

दुहाना सघळा मळीने चौद गण छे माटे तेना मेरूमां चौद आडी पंक्ति थशे. पेहेलो गण टगण छे माटे तेनी पंक्तिमां ३+१=४ खंड थशे. बीजो डगण छे माटे तेनी पंक्तिमां ४+२=६ खंड थशे.

त्रीजो गण एक लघुनो छे माटे तेनी पंक्तिमां तेनाथी उपरना बीजा डगणनी पंक्ति जेटला ज छ खंड थशे. चोथो गण ण गण छे तेमां एक गुरू छे माटे तेनी पंक्तिमां ६+१=७ खंड थशे. पांचमो गण टगण छे तेमां त्रण गुरू छे माटे तेनी पंक्तिमां ७+३=१० खंड थशे. एम छठ्ठागणनी पंक्ति १२ खंडवाळी, सातमा गणनी पंक्ति १२ खंड वाळी, आठमा गणनी पंक्ति १५ खंड वाळी, नवमा गणनी पंक्ति १७ खंडवाळी, दशमा गणनी पंक्ति १७ खंडवाळी, अगीआरमा गणनी पंक्ति १८ खंडवाळी, बारमा गणनी पंक्ति २१ खंडवाळी, तेरमा गणनी पंक्ति २३ खंडवाळी अने चौदमा गणनी पंक्ति २३ खंडवाळी थशे. ए प्रमाणे पंक्ति पाडी दुहानो मेरू गोठव्यो छे. जुओ आ साथे आपेलु बिम्ब.

पेहेलो गण टगण छे माटे तेनी पंक्तिमां तेनो गुणक जमणी बाजुना क्रमे तेमा भरेलो छे. बीजा गणनी पंक्तिना खंडवार अंक ते ते गणनी पेहेलानी पंक्तिना अंकने ते ते गणना शून्यादि गुरूसूचक गुणकथी गुणतां आवे छे माटे ते प्रमाणे करवुं तो—

प्रथम गण पंक्ति संख्या = १,६,५,१
बीजो गण डगण गुणक = ×१,२,१

१, ६,५ १
२, १२,१०,२
१, ६, ५, १

बीजा गणनी पंक्तिना अंक= १, ८, १८, १७, ७, १

बीजा गण पंक्ति अंक = १,८,१८,१७,७,१
त्रीजा गणनो गुणक = १

१,८,१८,१७,७,१

तृतीय गण पंक्ति अंक = १,८,१८,१७,७,१
चोथा गण णगण गुणक= × १, १

१, ८,१८,१७,७,१
१,८,१८,१७, ७,१

चोथा गण पंक्ति अंक=१,९,२६,३५,२४,८,१

चोथा गण पंक्ति अंक= १,९,२६,३५,२४,८,१
पांचमा गण टगण गुणक = १, ६,५,१

१, ९, २६, ३५, २४, ८, १
५, ४५,१३०,१७५,१२०, ४०, ५
६,५४,१५६,२१०,१४४, ४८, ६
१, ९,२६, ३५, २४, ८, १,

१,१५,८५,२३७,३७३,३५३,२०४, ७०,१३, १

उपरप्रमाणें पांचमा गणनी पंक्तिना अंक थया.

पांचमा गण पंक्ति अंक= १, १५, ८५, २३७, ३७३, ३५३, २०४, ७०, १३, १
छठ्ठा गण डगण गुणक= × १, १, ०

० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
१ १५ ८५ २३७ ३७३ ३५३ २०४ ७० १३ १
१ १५ ८५ २३७ ३७३ ३५३ २०४ ७० १३ १

छठ्ठा गणना अंक= १, १६, १००, ३२२, ६१०, ७२६, ५५७, २७८, ८३, १४, १, ०

छठ्ठा गणना अंक= १, १६, १००, ३२२, ६१०, ७२६, ५५७, २७४, ८३, १४, १, ०
सातमा गण लघुनो गुणक= × १

सातमा गणना अंक= १, १६, १००, ३२२, ६१०, ७२६, ५५७, २७४, ८३, १४, १, ०

सातमा गणना अंक= १, १६, १००, ३२२, ६१०, ७२६, ५५७, २७४, ८३, १४, १, ०
आठमा गण टगणना गुणक × १, ६, ५, १

१, १६, १००, ३२२, ६१०, ७२६, ५५७, २७४, ८३, १४, १, ०
५, ८०, ५००, १६१०, ३०५०, ३६३०, २७८५, १३७०, ४१५, ७०, ५, ०
६ ९६, ६००, १९३२, ३६६०, ४३५६, ३३४२, १६४४, ४९८, ८४, ६, ०
१, १६, १००, ३२२, ६१०, ७२६, ५५७, २७४, ८३, १४, १, ०

आठमा ग०= १, २२, २०१, १००३, ३०५८, ६०९६, ८२८५, ७८५६, ५२३८, २४३९, ७७४, १५९, १९, १, ०

गण अंक= १, २२, २०१, १००३, ३०५८, ६०९६, ८२८५, ७८५६, ५२३८, २४३९, ७७४, १५९, १९, १, ०
ड़गण गुणक= × १, २, १

१, २२, २०१, १००३, ३०५८, ६०९६, ८२८५, ७८५६, ५२३८, २४३९, ७७४, १५९, १९, १, ०
२, ४४, ४०२, २००६, ६११६, १२१९२, १६५७०, १५७१२, १०४७६, ४८७८, १५४८, ३१८, ३८, २, ०
१, २२, २०१, १००३, ३०५८, ६०९६, ८२८५, ७८५६, ५२३८, २४३९, ७७४, १५९, १९, १, ०

मा ग०= १, २४, २४६, १४२७, ५२६५, १३२१५, २३५३५, ३०५२२, २९२३५, २०७७१, १०८९०, ४१४६, ११११, १९८, २१, १, ०

मगण अंक= १, २४, २४६, १४२७, ५२६५, १३२१५, २३५३५, ३०५२२, २९२३५, २०७७१, १०८९०, ४१४६, ११११, १९८, २१, १, ०
मा गण लघुनो गुणक= × १

समगण अंक= १, २४, २४६, १४२७, ५२६५, १३२१५, २३५३५, ३०५२२, २९२३५, २०७७१, १०८९०, ४१४६, ११११, १९८, २१, १, ०

शमगण अंक= १, २४, २४६, १४२७, ५२६५, १३२१५, २३५३५, ३०५२२, २९२३५, २०७७१, १०८९०, ४१४६, ११११, १९८, २१, १, ०
गियारमा गण या गणनो गुणक= × १, १

का गण.= १, २४, २४६, १४२७, ५२६५, १३२१५, २३५३५, ३०५२२, २९२३५, २०७७१, १०८९०, ४१४६, ११११, १९८, २१, १, ०
१, २४, २४६, १४२७, ५२६५, १३२१५, २३५३५, ३०५२२, २९२३५, २०७७१, १०८९०, ४१४६, ११११, १९८, २१, १, ०

,,= १, २५, २७०, १६७३, ६६९२, १८४८०, ३६७५०, ५४०५७, ५९७५७, ५०००६, ३१६६१, १५०३६, ५२५७, १३०९, २१९, २२, १, ०

एकादश गणअंक नीचे प्रमाणे आव्या छे:—

१,२५, २७०, १६७३, ६६९२, १८४८०, ३६७५०, ५४०५७, ५९७५७, ५०००७, ३१६६१, १५०३६, ५२५७, १३०९, २१९, २२, १, ०

उपरना अकने, द्वादश (१२) गण ट गण गुणक

१, ६, ५, १ छे ते चारे आंकडाथी जूदा जूदा गुण्या तो पेहेला एकडानो गुणाकारः—

१, २५, २७०, १६७३, ६६९२, १८४८०, ३६७५०, ५४०५७, ५९७५७, ५०००७, ३१६६१, १५०३६, ५२५७, १३०९, २१९, २२, १, ० आवे छे.

बीजो अंक ५ छे तेथी गुणवाथी

५, १२५, १३५०, ८३६५, ३३४६०, ९२४००, १८३७५०, २७०२८५, २९८७८५, २५००३५, १५८३०५, ७५१८०, २६३८५, ६५४५, १०९५, ११०, ५, ०.

त्रीजो अंक ६ छे तेथी गुणवाथी

६, १५०, १६२०, १००३८, ४०१५२, ११०८८०, २२०५००, ३२४३४२, ३५८५४२, ३०००४२, १८९९६६, ९०२१६, ३१५४२, ७८५४, १३१४, १३२, ६, ० आवे छे.

चोथो अंक १ छे तेथी गुणवाथी

१, २५, २७०, १६७३, ६६९२, १८४८०, ३६७५०, ५४०५७, ५९७५७, ५०००७, ३१६६१, १५०३६, ५२५७, १३०९, २१९, २२, १, ० आवे छे.

ए चारे आंकडानो सरवाळो द्वादश गणपंक्ति अंक नीचे-प्रमाणे आवे छे:—

१, ३१, ४२५, ३४१९, १८१०५, ६७२६७, १८२७६३, ३७३६४९, ५८६३२९, ७१५५८३, ६८४५३९, ५१४७८९, ३०३७८४, १३९६९२, ४९३९४, १३१३८, २५३७, ३२५, २७, १, ०.

उपरना अंकने तेरमा डगणनो गुणक १, १, ० छे ते त्रणे आंकडाथी जूदा जूदा गुण्या तो पेहेला मीडानो गुणाकार:—

०००००००००००००००००००००० आवे छे.

बीजो अंक १ छे तेथी गुण्या तो

१, ३१, ४२५, ३४१९, १८१०५, ६७२६७, १८२७६३, ३७३६४९, ५८६३२९, ७१५५८३, ६८४५३९, ५१४७८९, ३०३७८४, १३९६९२, ४९३९४, १३१३८, २५३७, ३२५, २७, १, ० आवे छे.

त्रीजो अंक १ छे तेथी गुण्या तो

१, ३१, ४२५, ३४१९, १८१०५, ६७२६७, १८२७६३, ३७३६४९, ५८६३२९, ७१५५८३, ६८४५३९, ५१४७८९, ३०३७८४, १३९६९२, ४९३९४, १३१३८, २५३७, ३२५, २७, १, ० आवे छे.

ए त्रणे आंकडानो सरवाळो तेरमा गणपंक्ति अंकनो नीचे प्रमाणे आवे छे:—

१, ३२, ४५६, ३८४४, २१५२४, ८५३७२, २५००३०, ५५६४१२, ९५९९७८, १३०१९१२, १४००१२२, ११९९३३८, ८१८५७३, ४४३४७६, १८९०८६, ६२५३२, १५६७५, २८७२, ३६२, २८, १, ०, ० आवे छे.

उपरना अंकने, चौदमा गणना लघु गुणक एके गुणवाथी तेनो गुणाकार

१, ३२, ४५६, ३८४४, २१५२४, ८५३७२, २५००३०, ५५६४१२, ९५९०७८, १३०१९१२, १४००१२२, ११९९३२८, ८१८५७३, ४४३४७६, १८९०८६, ६२५३२, १५६७५, २८७२, ३६२, २८, १,०,० आवे छे.

ए प्रमाणे चौदमा गणना पंक्तिना अंक आव्या तेमने पूर्वे तैयार करेला **मेरुबिम्बमां** भरी दीधा तो दुहानो मेरु आ साथेना पट प्रमाणे तैयार थयो.

दुहा पताका प्रकरण.

पताकानी रचना करवामाटे दंड बनाववानी अगत्य छे, ते तैयार करवानो विधि **गणप्रस्तार** प्रकरणमां पृष्ठ १९८ थी २०६ सुधीमां आपवामां आव्यो छे, ए प्रमाणे, तेनो दंड साथेना २४८,२४९ पृष्ठमां तैयार करी आपवामां आवेल छे.

दुहाना चौद गण छे माटे तेना दंडमां चार आडी पंक्ति पाडी छे अने चौद गणनी चौद ऊभी पंक्ति करेली छे. प्रथम आडी पंक्तिमां गण अने तेनां नाम भरेलां छे. बीजी आडी पंक्तिमां ते ते गणनी मात्राना एकादि मात्राजन्य भेदसंख्यांक मूक्या छे. त्रीजीमां दरेक गणनी पेहेलाना गणना भेदाकनी संख्या मूकी छे. चोथी आडी पंक्तिमां दरेक गणनी मात्रा भेदसंख्या अने ते तळेनो भेद संख्यानो जे गुणाकार थाय छे ते मूक्यो छे; अने ते गुणाकारनी जे संख्या एक करतां वधारे वार आवी छे ते तळे × आवुं चिह्न मूक्युं छे.

पेहेलो गण टगण छे ते छ मात्रानो छे तेनी पेहेली मात्रानो १ बीजीना २, त्रीजीना ३; चोथीना ५, पांचमीना ८, अने छट्ठीना १३ थाय छे; माटे ते गणनी तळेनी पंक्तिमां क्रमवार

मूक्या छे. बीजा गणनी चार मात्रा छे तेना चार भेद थाय छे. तेमां पेहेली मात्रानो १, बीजीना २, त्रीजी चोथी सूधी ४ भेद थाय छे, माटे ते तळेना खंडमां १, २, ४ अंक भरेला छे. त्रीजो गण एक मात्रानो छे. तेनो एक भेद थाय छे माटे ते तळे १ मूकेल छे. चोथो गण ण गण छे तेनी बे मात्रामां एकनो एक भेद ने बेना बे भेद थाय छे, माटे ते तळेनी पंक्तिमां १, २, अंक भरेला छे. एम तेरमो गण डगण छे तेना चार भेद पैकी २ भेद काम लागे छे माटे तेनी संख्या २ त्यां भरी छे अने चौदमो गण एक लघुनो छे तेनो एक भेद थतो होवाथी १ अंक तेनी पंक्तिमां भर्यो छे.

पेहेला गणथी आगळ कोई गण नथी माटे तेनी मात्रानी भेद-संख्या तळे कोई गणना भेदांकनी संख्या मूकी नथी. बीजाथी पेहेलो गण १ छे तेना १३ भेद थाय छे, तेनी संख्या तळे १३ नो अक मूक्यो छे. त्रीजा गणथी पेहेलो गण बीजो छे तेनी भेदांक संख्या ५२ छे ते त्यां भरेल छे. पांचमो टगण छे तेनी पेहेलां चोथो गण छे माटे तेनी भेदांक संख्या १०४ थाय छे तेने पांचमा गणनी मात्राना भेदसंख्या तळेना खंडमां १०४ नो अंक भरेल छे. एम तेरमो गण डगण छे तेथी पेहेलाना बारमा गणना भेदाक ३६,५५,८०८ थाय छे. तेने ए डगणनी भेदसंख्या तळे मूक्या छे; अने चौदमा गणमां तेरमा गणना भेदाक ७३,११,६१६ भर्या छे.

पेहेला गणनी पंक्तिमां त्रीजा खंडमां अंक नथी माटे गुणा-कारना खंडमां बीजा खंडनी संख्या मूकी छे. बीजा गणमां प्रथम पंक्तिमां १ छे तेने ते तळेना खडमां १३ छे तेथी गुणतां गुणाकार १३ आवेल छे ते तेनी त्रीजी पंक्तिमां मूकेल छे.

बीजी पंक्तिमां २ छे तेने १३ थी गुणतां २६ आवे छे ते त्यां मूकेल छे. त्रीजी पंक्तिमां ४ छे तेने १३ थी गुणतां ५२ आवे छे ते त्यां मूकेल छे. एम तेरमा गणमां चोथी पंक्तिना अंक तेनी बीजी अने त्रीजी पंक्तिना अंकनो गुणाकार २६५५८०८×२ करीने मूकेलो छे. एम कथित रीति प्रमाणे गणित करवुं तो दंडांकनुं बिम्ब साथेना २४८,२४९ पृष्ठमां जणाव्या प्रमाणे आव्युं.

मूक्या छे. बीजा गणनी चार मात्रा छे तेना चार भेद थाय छे. तेमां पेहेली मात्रानो १, बीजीना २, त्रीजी चोथी सूधी ४ भेद थाय छे, माटे ते तळेना खंडमां १, २, ४ अंक भरेला छे. त्रीजो गण एक मात्रानो छे. तेनो एक भेद थाय छे माटे ते तळे १ मूकेल छे. चोथो गण ण गण छे तेनी बे मात्रामां एकनो एक भेद ने बेना बे भेद थाय छे, माटे ते तळेनी पंक्तिमां १, २, अंक भरेला छे. एम तेरमो गण डगण छे तेना चार भेद पैकी २ भेद काम लागे छे माटे तेनी संख्या २ त्यां भरी छे अने चौदमो गण एक लघुनो छे तेनो एक भेद थतो होवाथी १ अंक तेनी पंक्तिमां भर्यो छे.

बीजी पंक्तिमां २ छे तेने १३ थी गुणतां २६ आवे छे ते त्यां मूकेल छे. त्रीजी पंक्तिमां ४ छे तेने १३ थी गुणता ५२ आवे छे ते त्यां मूकेल छे. एम तरमा गणमां चोथी पंक्तिना अंक तेनी बीजी अने त्रीजी पंक्तिना अंकनो गुणाकार ३६५५८०८४२ करीने मूकेलो छे. एम कथित रीति प्रमाणे गणित करवुं तो दंडांकनुं बिम्ब साथेना २४८,२४९ पृष्ठमां जणाव्या प्रमाणे आवशे.

सूक्या छे. बीजा गणनी चार मात्रा छे तेना चार भेद थाय छे. तेमां पेहेली मात्रानो १, बीजीना २, त्रीजी चोथी सूधी ४ भेद थाय छे; माटे ते तळेना खंडमां १, २, ४ अंक भरेला छे. त्रीजो गण एक मात्रानो छे. तेनो एक भेद थाय छे माटे ते तळे १ मूकेल छे. चोथो गण ण गण छे तेनी बे मात्रामां एकनो एक भेद ने बेना बे भेद थाय छे, माटे ते तळेनी पंक्तिमां १, २, अंक भरेला छे. एम तेरमो गण डगण छे तेना चार भेद पैकी २ भेद काम लागे छे माटे तेनी संख्या २ त्यां भरी छे अने चौदमो गण एक लघुनो छे तेनो एक भेद थतो होवाथी १ अंक तेनी पंक्तिमां भर्यो छे.

पेहेला गणथी आगळ कोई गण नथी माटे तेनी मात्रानी भेद-संख्या तळे कोई गणना भेदांकनी संख्या मूकी नथी. बीजाथी पेहेलो गण १ छे तेना १३ भेद थाय छे, तेनी संख्या तळे १३ नो अंक मूक्यो छे. त्रीजा गणथी पेहेलो गण बीजो छे तेनी भेदांक संख्या ५२ छे ते त्यां भरेल छे. पांचमो टगण छे तेनी पेहेलां चोथो गण छे माटे तेनी भेदांक संख्या १०४ थाय छे तेने पांचमा गणनी मात्राना भेदसंख्या तळेना खंडमां १०४ नो अंक भरेल छे. एम तेरमो गण डगण छे तेथी ३६,५५,८०८ थाय छे. तेने चौदमा गणमां तेरमा

खंड १	गणनुं नाम	गण १ टगण			
२	मात्रावार भेद	१	२	३	५
३	पूर्वगण भेदांक	०	०	०	
४	बीजा खंड × ३ जा खंड गुणाकार				

आ विम्बमां जे अंक तळे ४ निशानी मूकी छे ते अंकनुं पुनरावर्त्तन थाय छे. ते माटे दंडमां निरूपयोगी होतां बाकीना अंकपरथी दंड विम्ब नक्की करवुं तो नीचेप्रमाणे आव्युं:—

१, २, ३, ५, ८, १३, २६, ५२, १०४, २०८, ३१२, ५२०, ८३२, १३५२, २७०४, ५४०८, ८११२, १३५२०, २१६३२, ३५१५२, ७०३०४, १४०६०८, २८१२१६, ५६२४३२, ८४३६४८, १४०६०८०, २२४९७२८, ३६५५८०८, ७३११६१६.

आ दंडांकनी पताकाविधि प्रमाणे योजना करी तो ते विम्बनुं पूर्वरूप साथे जोडेला विम्बपटमां भर्या प्रमाणे आव्युं:—

आवा दुहानी पताका भरी बताववामां आवे तो एक पुस्तक भराय माटे तेना विम्बनुं दर्शन करावी तेना आरंभना त्रण गणनी पताका पूर्वना नियम प्रमाणे नीचे आपिये छिये.

दुहा प्रथम त्रणगण पताका.

मेरुना अंक= गण ३ नी पंक्तिना			पांचगुरु	चारगुरु	त्रणगुरु	बेगुरु	एकगुरु	शून्य गुरु
			१	८	१८	१७	७	१
दडांक	१	२	३	५	८	१३	२६	५२
			१	२	५	१३	२६	५२
				३	८	१८	३९	
				४	१०	२१	४४	
				६	११	२३	४७	
				७	१२	२४	४९	
				९	१५	२५	५०	
				१४	१६	३१	५१	
				२७	१७	३४		
					१९	३६		
					२०	३७		
					२२	३८		
					२८	४१		
					२९	४२		
					३०	४३		
					३२	४५		
					३३	४६		
					३५	४८		
					४०			

समजूती.

पताकानी पेहेली पंक्तिना उपर शून्यादि गुरुनी संज्ञा लखी छे. पेहेली पंक्तिमां **दुहाना** मेरुमां त्रीजा गणनी पंक्तिना जे अंक छे ते क्रमवार लख्या छे तेमनी तळे ए त्रण गण सूधीना दंडांक पूर्वे तैयार करेला समग्र दंडमांथी लइने मूक्या छे. सर्व भेद संख्या ५२ आवी छे.

मेरुमां जेटलां अंकस्थान छे ते ते स्थाननी अकेकी लेहेर ते तळे दोरेली छे. जमणी बाजुथी प्रारंभ करतां पेहेली लेहेरमां शून्य गुरुनो एक अंक छे माटे (दंडांकनी पंक्तिनीचे) एक खंड कर्यो छे. बीजी लेहेर एक गुरुनी छे तेनो अंक ७ छे माटे तेमां ७ खंड कर्या छे. त्रीजी लेहेर बे गुरुनी छे तेना अंक १७ छे माटे तेमां १७ खंड कर्या छे. चोथी लेहेर त्रण गुरुनी छे तेना अंक १८ छे माटे तेमां १८ खंड कर्या छे. पांचमी लेहेर चार गुरुनी छे तेना अंक ८ छे माटे तेमां ८ खंड कर्या छे. छठ्ठी लेहेर पांच गुरुनी छे तेनो अंक १ छे माटे एकज खंड करेलो छे.

पेहेली लेहेरमां सर्व भेदसंख्या मूकाय छे माटे ते मूकी छे. बीजी लेहेरमां सर्व भेदसंख्यामांथी तेथी पेहेलाना भेदांक शोधतां (बाद करतां) जे शेष रेहे ते मूकाय छे माटे सर्व भेदसंख्या ५२ मांथी ते अंक नीचे प्रमाणे शोधी शेष रहेलो अंक तेमां मूक्यो छे.

सर्वभेदसंख्या		भेदांक		बीजी लेहेरना अंक
५२	–	२६	=	२६
५२	–	१३	=	३९
५२	–	८	=	४४
५२	–	५	=	४७
५२	–	३	=	४९

५२ − २ = ५०

५२ − १ = ५१

त्रीजी लैहेरना अंक एज संख्यामांथी तेना पैहेलांनी संख्यानां जोडलां बाद करवां छे माटे ते संख्या ते प्रमाणे तीनेना विधिथी लावी तमां भरी छे.

सर्वभेदसंख्या		जोडलां	त्रीजी लैहेरना अंक
५२	−	(२६+१३)=	१३
५२	−	(२६+ ८)=	१८
५२	−	(२६+ ५)=	२१
५२	−	(२६+ ३)=	२३
५२	−	(२६+ २)=	२४
५२	−	(२६+ १)=	२५
५२	−	(१३+ ८)=	३१
५२	−	(१३+ ५)=	३४
५२	−	(१३+ ३)=	३६
५२	−	(१३+ २)=	३७
५२	−	(१३+ १)=	३८

सर्वभेद संख्या. जोडलां. त्रीजी लैहेरना अंक

५२ − (८+५)= ३९ आ संख्या आवी गई छे माटे रद.

५२ − (८+३)= ४१

५२ − (८+२)= ४२

५२ − (८+१)= ४३

५२ − (५+३)= ४४ आ संख्या आवी गई छे माटे रद.

५२ − (५+२)= ४५

५२ − (५+१)= ४६

५२ − (३+२)= ४७ आ संख्या आवी गई छे माटे रद.

५२ − (३+१)= ४८

५२ − (२+१)= ४९ आ संख्या आवी गई छे माटे रद

चोथी लेहेर त्रण गुरुनी छे, तेना अढार खंड छे त्रण त्रण दंडांक संख्या साथे उमेरी सर्वभेदसंख्यामांथी बाद करी, तो ते अंक नीचे प्रमाणे आव्या.

सर्वभेदसंख्या. त्रणत्रणनो योग. त्रण गुरुनी लेहेरना अंक.

५२ − (२१+१३+८)= ५

५२ − (२१+१३+५)= ८

५२ − (२१+१३+३)= १०

५२ − (२१+१३+२)= ११

५२ − (२१+१३+१)= १२

५२ − (२१+ ८+५)= १३ आवी गया.

५२ − (२१+ ८+३)= १५

५२ − (२१+ ८+२)= १६

५२ − (२१+ ८+१)= १७

५२ − (२१+ ५+३)= १८ आवी गया.

५२ − (२१+ ५+२)= १९

५२ − (२१+ ५+१)= २०

५२ − (२१+ ३+२)= २१ आवी गया

५२ − (२१+ ३+१)= २२

सर्वभेदसंख्या. त्रणत्रणनो योग. त्रण गुरुनी लेहेरना अंक.

५२ − (२१+२+१) = २३ आवी गया.

५२ − (१३+८+५) = २६ ,,

५२ − (१३+८+३) = २८

५२ − (१३+८+२) = २९
५२ − (१३+८+१) = ३०
५२ − (१३+५+३) = ३१ आवी गया.
५२ − (१३+५+२) = ३२
५२ − (१३+५+१) = ३३
५२ − (१३+३+२) = ३४ आवी गया.
५२ − (१३+३+१) = ३५
५२ − (१३+२+१) = ३६ आवी गया.
५२ − (८+३+१) = ४०

चार गुरुनी आठ खंडवाळी लेहेर भरवामाटे भेदांकमांथी तेनी आगळना दंडांकने चार चारनां जोडलां करी वाद करचा तो तेना अंक नीचे प्रमाणे आव्या छे:—

सर्वभेदसंख्या. चच्यारनां जोडलां. पांचमी लेहेरना अंक.

५२ − (२६+१३+८+३) = २
५२ − (२६+१३+८+२) = ३
५२ − (२६+१३+८+१) = ४
५२ − (२६+१३+५+३) = ५ आवी गया.
५२ − (२६+१३+५+२) = ६
५२ − (२६+१३+५+१) = ७
५२ − (२६+१३+३+२) = ८ आवी गया.
५२ − (२६+१३+३+१) = ९
५२ − (२६+१३+२+१) =१० आवी गया.
५२ − (२६+८+३+१) =१४
५२ − (१३+८+३+१) =२७

छठ्ठी लेहेर पांच पांच योगने वाद करीने भराय छे माटे तेनो एक खंड भरवा माटे तेनी संख्या नीचे प्रमाणे लाव्या:—

सर्वभेदांक. पांच पांचनो योग. छठ्ठी लेहेरनी संख्या.

५२– (२६+१३+८+३+१) = १

दुहा मर्कटी.

आ पासेना पृष्ठमां जे मर्कटी बिम्ब छे ते दुहानी मर्कटी छे. तेमां दुहाना चौद गण होतां १४ उभी पक्तिओ दोरवामां आवी छे अने आगियार आडीपंक्तिओ पाडी प्रत्येक गणना पेहेला खंडमां गणनुं नाम छे, बीजा खंडमां तेनुं प्रथम रूप छे जेम के प्रथम गण ठगण छे तेनुं पेहेलुं रुप "ऽऽऽ" थाय छे माटे ते त्यां मूक्युं छे. बीजो गण डगण छे तेनुं पेहेलुं रूप "ऽऽ" छे ते ते गणना खंडमां मूक्युं छे. एम तेरमो गण ड-गण छे तेना खंडमां तेनुं पेहेलुं रूप "ऽऽ" थाय छे, ते मूक्युं छे. अने चौदमो गण एक लघु मात्रानो छे माटे त्यां तेनुं रूप "।" आवुं मूक्युं छे. त्रीजो खंड गणनी मात्राना भेद दर्शावनारो छे तेमां ते नीचे प्रमाणे भरी छे:—

पेहेला गणना १३ भेद थाय छे माटे तेना खंडमां १३, बीजाना चार भेद थाय छे माटे ४, त्रीजानो एक भेद थाय छे माटे १, चोथाना बे भेद थाय छे माटे २, पांचमाना तेर भेद थाय छे माटे १३, छठ्ठाना बे भेद थाय छे माटे २, सातमानो एक भेद थाय छे माटे १, आठमाना तेर भेद थाय छे माटे १३, नवमाना चार भेद थाय छे माटे ४, दशमो एक लघुनो छे माटे १, अगियारमाना बे भेद थाय छे माटे २, बारमाना तेर भेद थाय छे माटे १३, तेरमा गणना बे भेद थाय छे माटे २, अने चौदमो गण एक लघुनो होतां तेना खंडमां १ मूक्यो छे.

पोताथी पेहेला गणनी भेदांक संख्याने पोताना भेदथी गुणवाथी इष्ट गणना भेदांक थाय छे माटे ते नीचे प्रमाणे गणीने चोथा खडमां भरच्या छे:—

गण	पूर्वगणभेदांक		सर्वभेदसंख्या		इष्टगणभेदांक
१	१	×	१३	=	१३
२	१३	×	४	=	५२
३	५२	×	१	=	५२
४	५२	×	२	=	१०४
५	१०४	×	१३	=	१३५२
६	१३५२	×	२	=	२७०४
७	२७०४	×	१	=	२७०४
८	२७०४	×	१३	=	३५१५२
९	३५१५२	×	४	=	१४०६०८
१०	१४०६०८	×	१	=	१४०६०८
११	१४०६०८	×	२	=	२८१२१६
१२	२८१२१६	×	१३	=	३६५५८०८
१३	३६५५८०८	×	२	=	७३११६१६
१४	७३११६१६	×	१	=	७३११६१६

प्रत्येक गणनी पंक्तिना पांचमा खंडमां **गान्त** रूपनी संख्या अने छठ्ठा खंडमां **लान्त** रूपनी संख्या मूकवामां आवेछे माटे ते त्यां मूकी छे. पेहेला गणनी पंक्तिमां ते गणना गान्त रूप ५ अने लान्त रूप ८ थाय छे ते मूक्या छे, ते परथी बीजा गणनां गान्त, लान्त रूप नीचेना प्रमाणसर काहाडी तेमां भर्यां छेः—

गान्त रूप = गत गण भेदांक × इष्ट गण गान्त रूप संख्या.

लान्त रूप = गत गण भेदांक × इष्ट गण लान्त रूप संख्या.

गत गण भेदांक = गान्त रूप संख्या × लान्त रूप संख्या.

गण	पूर्वगण भेदांक		इष्ट गण गान्त रूप	गान्त रूप
१		×	५	५
	पूर्वगण भेदांक		इष्ट गण लान्त रूप	लान्त रूप
१		×	८	८
				१३

गण २	गतगण भेदांक	१३	×	स्वगान्त रूप	२	=	२६ गान्त रूप
	”	१३	×	स्वलान्त रूप	२	=	२६ लान्त रूप
							५२
गण ३	गतगण भेदांक	५२	×	स्वगान्त रूप	१	=	५२ गान्त रूप
	”	५२	×	स्वलान्त रूप	०	=	० लान्त रूप
							५२
गण ४	गतगण भेदांक	५२	×	स्वगान्त रूप	१	=	५२ गान्त रूप
	”	५२	×	स्वलान्त रूप	१	=	५२ लान्त रूप
							१०४
गण ५	गतगण भेदांक	१०४	×	स्वगान्त रूप	५	=	५२० गान्त रूप
	”	१०४	×	स्वलान्त रूप	८	=	८३२ लान्त रूप
							१३५२
गण ६	गतगण भेदांक	१३५२	×	स्वगान्त रूप	२	=	२७०४ गान्त रूप
	”	१३५२	×	स्वलान्त रूप	०	=	० लान्त रूप
							२७०४.

गण ७	गतगण भेदांक	२७०४	×	स्वगान्त रूप	०	=	० गान्त रूप
	,,	२७०४	×	स्वलान्त रूप	१	=	२७०४ लान्त रूप
							२७०४
गण ८	गतगण भेदांक	२७०४	×	स्वगान्त रूप	५	=	१३५२० गान्त रूप
	,,	२७०४	×	स्वलान्त रूप	८	=	२१६३२ लान्त रूप
							३५१५२
गण ९	गतगण भेदांक	३५१५२	×	स्वगान्त रूप	२	=	७०३०४ गान्त रूप
	,,	३५१५२	×	स्वलान्त रूप	२	=	७०३०४ लान्त रूप
							१४०६०८
गण १०	गतगण भेदांक	१४०६०८	×	स्वगान्त रूप	०	=	० गान्त रूप
	,,	१४०६०८	×	स्वलान्त रूप	१	=	१४०६०८ लान्त रूप
							१४०६०८

गण		भेदांक					=	रूप	
गण ११	गतगण भेदांक	१४०६०८	×	स्वगान्त रूप	१	=	१४०६०८	गान्त रूप
	,,	१४०६०८	×	स्वलान्त रूप	१	=	१४०६०८	लान्त रूप
							२८१२१६	
गण १२	गतगण भेदांक	२८१२१६	×	स्वगान्त रूप	५	=	१४०६०८०	गान्त रूप
	,,	२८१२१६	×	स्वलान्त रूप	८	=	२२४९७२८	लान्त रूप
							३६५५८०८	
गण १३	गतगण भेदांक	३६५५८०८.	×	स्वगान्त रूप	२	=	७३११६१६	गान्त रूप
	,,	३६५५८०८	×	स्वलान्त रूप	०	=	०	लान्त रूप
							७३११६१६	
गण १४	गतगण भेदांक	७३११६१६	×	स्वगान्त रूप	०	=	०	गान्त रूप
	,,	७३११६१६	×	स्वलान्त रूप	१	=	७३११६१६	लान्त रूप
							७३११६१६	

प्रत्येक गणनी पंक्तिना सातमा खंडमां गुरु अक्षर अने आठमा खंडमां लघु अक्षरनी संख्या गतगण गुरुसंख्या × इष्ट गणभेद + गतगण भेदांक × ईष्टगणरुपस्थ गुरु लघु संख्या नीचे प्रमाणे काहाडीने भरी छे.

प्रत्येक गणमां गुरु लघु संख्या.

११	३[illegible]	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
गुरु	२०	४	०	१	२०	३	०	२०	४	०	१	२०	३	०
लघु	३८	८	१	२	३८	२	१	३८	८	१	२	३८	२	१

प्रत्येक गणना प्रस्तारमां आवती गुरुलघु संख्या नीचे मुजब—

गण १ = आमां तेनाज गुरु अने लघु भराय छे माटे ते मूक्या छे. २० गुरु ३८ लघु.

गण २ = गत गुरुसंख्या २० × ईष्ट गणभेद ४ + ग. भेदांक १३ × ४ = १३२.

गत लघुसंख्या ३८ × इष्टगणभेद ४ + ग. भेदांक १३ × ८ = २५६.

गण ३ = ग. गु. १३२ × ई. भे. १ + ग. भे. ५२ × ० = १३२.

ग. ल. २५६ × इ. भे. १ + ग. भे. ५२ ×१ = ३०८.

गण ४ = ग. गु. १३२ × इ. भे. २ + ग. भे. ५२ × १ = ३१६.

ग. ल. ३०८ × इ. भे. २ + ग. भे. ५२× २ = ७२०.

गण ५ = ग. गु. ३१६ × इ. भे. १३ + ग. भे. १०४ × २० = ६१८८.

ग. ल. ७२० × इ. मे. १३ + ग. मे १०४ × ३८ =

१३३१२.

गण ६ = ग. गु. ६१८८ × इ. मे. २ + ग. मे.

१३५२ × ३ = १६४३२.

ग. ल १३३१२ × इ. मे. २ + ग. मे. १३५२ × २

= २९३२८

गण ७ = ग. गु. १६४३२ × इ. मे.

२७०४ × ० = १६४३२.

ग. ल. २९३२८ × इ. मे. १ + ग० मे० २७०४ × १

= ३२०३२.

गण ८ = ग. गु. १६४३२ × इ. मे. १३ + ग. मे.

२७०४ × २० = २६७६९६.

ग. ल. ३२०३२ × इ. मे. १३ + ग. मे. २७०४ ×

३८ = ५१९१६८.

गण ९ = ग. गु. २६७६९६ × इ. मे. ४ + ग. मे.

३५१५२ × ४ = १२११३९२.

ग. ल. ५१९१६८ × इ. मे. ४ + ग. मे. ३५१५२

× ८ = २३५७८८८.

गण १२ = ग. गु. २५६३३९२ × इ. मे. १३ + ग. मे. २८१२१६ × २० = ३८९४८४१६.

ग. ल. ५२७८२०८ × इ. मे. १३ + ग. मे. २८१२१६ × ३८ = ७९३०२९१२.

गण १३ = ग. गु. ३८९४८४१६ × इ. मे. २ + ग. [illegible] ३६५५८०८. × ३=८८८६४२५६.

[illegible] ०२९१२ × इ. मे. २+ ग. मे ३६५५८०८ × २ = १६५९१७४४०.

गण १४ = ग. गु. ८८८६४२५६ × इ. मे. १ + ग. मे. ७३११६१६ × ० = ८८८६४२५६.

ग. ल. १६५९१७४४० × इ. मे. १ + ग. मे. ७३११६१६ ×१ १७३२२९०५६.

मर्कटीमां प्रत्येक गणनी पंक्तिना नवमा खंडमां ते ते गणना प्रस्तारमां आवतां रूपोमां केटला केटला गुरु अने लघु आवे छे ते भरवाना होतां सातमा अने आठमा खंडना अंकनो सर्वाळो करी तेमां मूक्यो छे.

गण १ = गुरु संख्या २० + लघु संख्या ३८ = ५८ वर्ण.

गण २ = गुरु संख्या १३२ + लघु संख्या २५६ = ३८८ वर्ण.

गण ३ = गुरु संख्या १३२ + लघु संख्या ३०८ = ४४० वर्ण.

गण ४ = गुरु संख्या ३१६ + लघु ७२० = १०३६ वर्ण.

गण ५ = गुरु ६१८८ + लघु १३३१२ = १९५०० वर्ण.

गण ६ = गुरु १६४३२ + लघु २९३२८ = ४५७६० वर्ण.

गण ७ = गुरु १६४३२ + लघु ३२०३२ = ४८४६४ वर्ण.

गण ८ = गुरु २६७६९६ + लघु ५१९१६८ = ७८६८६४ वर्ण.

गण ९ = गुरु १२११३९२ + लघु २३५७८८८ = ३५६९२८० वर्ण.

गण १० = गुरु १२११३९२ + लघु २४९८४ = ३७०९८८८ वर्ण.

गण ११ = गुरु २५६३३९२ + लघु = ७८४१६०० वर्ण.

गण १२ = गुरु ३८९४८४१६ + लघु ७९३०२९१२ = ११८२५१३२८ वर्ण.

गण १३ = गुरु ८८८६४२५६ + लघु १६५९१७४४० = २५४७८१६९६ वर्ण.

गण १४ = गुरु ८८८६४२५६ + लघु १७३२२९०५६ = २६२०९३३१२ वर्ण.

प्रत्येक गणनी पंक्तिना **दशमा** खंडमां तेना प्रस्तार पर्यंतनी मात्रानो सर्वाळो ते गण सुधीनी मात्राने तेना भेदांकथी गुणीने नीचे प्रमाणे मूकेल छे अने अगियारमा खंडमां ते मात्रानी संख्यानुं अर्ध ते पिंड गणाय छे ते प्रमाणे गणतां नीचे प्रमाणे अंक आवेल छेः—

गण	मात्रा ×	भेदांक कला	= दशमाखंडनाअंक	÷२=	अगियारसाखंडनाअंक पिंड.
१	६ ×	१३ =	७८	÷२=	३९
२	१० ×	५२ =	५२०	÷२=	२६०
३	११ ×	५२ =	५७२	÷२=	२८६
४	१३ ×	१०४ =	१३५२	÷२=	६७६

५ १९ × १३५२ = २५६८८ −२= १२८४४

६ २३ × २७०४ = ६२१९२ ÷२= ३१०९६

७ २४ × २७०४ = ६४८९६ −२= ३२४४८

८ ३० × ३५१५२ = १०५४५६० −२=५२७२८०

९ ३४ × १४०६०८=४७८०६७२÷२=२३९०३३६

१० ३५ × १४०६०८=४९२१२८०÷२ =२४६०६४०

११ ३७×२८१२१६=१०४०४९९२−२= ५२०२४९६

१२ ४३ × ३६५५८०८ = १५७१९९७४४÷२=
७८५९९८७२

१३ ४७ × ७३११६१६ = ३४३६४५९५२÷२=
१७१८२२९७६

१४ ४८ × ७३११६१६ = ३५०९५७५६८÷२=
१७५४७८७८४

गण, आंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९
गणरूप	SSS	SS	I	S	SSS	SS	I	SSS	SS
गण भेद	१३	४	१	२	१३	२	१	१३	४
गण भेदांक	१३	५२	५२	१०४	१,३५२	२,७०४	२,७०४	३५,१५२	१,४०,६०८
गान्तरूप	५	२६	०	५२	५२०	२,७०४	०	१३,५२०	७०,३०४
लान्तरूप	८	२६	५२	५२	८३२	०	२,७०४	२१,६३२	७०,३०४
गुरु वर्ण	२०	१३२	१३२	३१६	६,१८८	१६,४३२	१६,४३२	२,६७,६९६	१२,११,३९२
लघु वर्ण	३८	२५६	३०८	७२०	१३,३१२	२९,३२८	३२,०३२	५,१९,१६८	२३,५७,८८८
वर्णयुति	५८	३८८	४४०	१,०३६	१९,५००	४५,७६०	४८,४६४	७,८६,८६४	३५,६९,२८०
(कला)मात्रायोग	७८	५२०	५७२	१,३५२	२५,६८८	६२,१९२	६४,८९६	१०,५४,५६०	४७,८०,६७२
पिंड	३९	२६०	२८६	६७६	१२,८४४	३१,०९६	३२,४४८	५,२७,२८०	२३,९०,३३६

१०	११	१२	१३	१४
|	S	SSS	SS	|
१	२	१३	२	१
१,४०,६०८	२,८१,२१६	३६,५५,८०८	७३,११,६१६	७३,११,६१६
०	१,४०,६०८	१४,०६,०८०	७३,११,६१६	०
१,४०,६०८	१,४०,६०८	२२,४९,७२८	०	७३,११,६१६
१२,११,३९२	२५,६३,३९२	३,८९,४८,४१६	८,८८,६४,२५६	८,८८,६४,२५६
२४,९८,४९६	५२,७८,२०८	७,९३,०२,९१२	१६,५९,१७,४४०	१७,३२,२९,०५६
३७,०९,८८८	७८,४१,६००	११,८२,५१,३२८	२५,४७,८१,६९६	२६,२०,९३,३१२
४९,२१,२८०	१,०४,०४,९९२	१५,७१,९९,७४३	३४,३६,४५,९५२	३५,०९,५७,५६८
२४,६०,६३०	५२,०२,४९६	७,८५,९९,८७२	१७,१८,२२,९७६	१७,५४,७८,७८४

आर्या प्रस्तारादि.

गणप्रस्तार प्रकरणमां गणमेळ छंदना प्रस्तारादिनो विधि केहेवाइ गयो छे अने त्यां आ विषे केटलांक उदाहरणो पण अपायलां छे तो पण वांचनारने ए सघळो विषय समजवानुं

गण, आंक	१	२	३	४	५	६	७	८	९
गणरूप	SSS	SS	।	S	SSS	SS	।	SSS	SS
गण भेद	१३	४	१	२	१३	२	१	१३	४
गण भेदांक	१३	५२	५२	१०४	१,३५२	२,७०४	२,७०४	३५,१५२	१,४०,६०८
गान्तरूप	५	२६	०	५२	५२०	२,७०४	०	१३,५२०	७०,३०४
लान्तरूप	८	२६	५२	५२	८३२	०	२,७०४	२१,६३२	७०,३०४
गुरु वर्ण	२०	१३२	१३२	३१६	६,१८८	१६,४३२	१६,४३२	२,६७,६९६	१२,११,३९२
लघु वर्ण	३८	२५६	३०८	७२०	१३,३१२	२९,३२८	३२,०३२	५,१९,१६८	२३,५७,८८८
वर्णयुति	५८	३८८	४४०	१,०३६	१९,५००	४५,७६०	४८,४६४	७,८६,८६४	३५,६९,२८०
(कला)मात्रायोग	७८	५२०	५७२	१,३५२	२५,६८८	६२,१९२	६४,८९६	१०,५४,५६०	४७,८०,६७२
पिंड	३९	२६०	२८६	६७६	१२,८४४	३१,०९६	३२,४४८	५,२७,२८०	२३,९०,३३६

१०	११	१२	१३	१४
|	S	SSS	SS	|
१	२	१३	२	१
१,४०,६०८	२,८१,२१६	३६,५५,८०८	७३,११,६१६	७३,११,६१६
०	१,४०,६०८	१४,०६,०८०	७३,११,६१६	०
१,४०,६०८	१,४०,६०८	२२,४९,७२८	०	७३,११,६१६
१२,११,३९२	२५,६३,३९२	३,८९,४८,४१६	८,८८,६४,२५६	८,८८,६४,२५६
२४,९८,४९६	५२,७८,२०८	७,९३,०२,९१२	१६,५९,१७,४४०	१७,३२,२९,०५६
३७,०९,८८८	७८,४१,६००	११,८२,५१,३२८	२५,४७,८१,६९६	२६,२०,९३,३१२
४९,२१,२८०	१,०४,०४,९९२	१५,७१,९९,७४३	३४,३६,४५,९५२	३५,०९,५७,५६८
२४,६०,६४०	५२,०२,४९६	७,८५,९९,८७२	१७,१८,२२,९७६	१७,५४,७८,७८४

आर्या प्रस्तारादि.

गणप्रस्तार प्रकरणमां गणमेळ छंदना प्रस्तारादिनो विधि केहेवाइ गयो छे अने त्यां आ विषे केटलांक उदाहरणो पण अपायलां छे तो पण वांचनारने ए सघळो विषय समजवानुं

थाय, ए बेनो गुणाकार करतां १२८००×६४००=८,१९,२०,००० आर्यानां बधां मळीने आठ करोड ओगणीश लाख अने वीश हजार रूप थाय छे.

गणप्रस्तार प्रकरण पृष्ठ १३० ना प्रारंभथी जणाव्या प्रमाणे **आर्यानां** प्रथम वीश रूपनो **प्रस्तार** खेंच्यो तो ते नीचे प्रमाणे आव्योः—

१=SS.SS.SS,SS.SS.|S|.SS,S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
२=||S.SS.SS,SS.SS.|S|;SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
३=S||.SS.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS.SS.SS.|.SS.S;
४=||||.SS.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
५=SS.||S.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
६=||S.||S.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
७=S||.||S.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
८=||||.||S.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS-SS.|.SS.S;
९=SS.|S.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
१०=||S.|S.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
११=S||.|S|.SS,SS.SS.|S|.SS.S,SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
१२=||||.|S|.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
१३=SS.S||.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
१४=||S.S||.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
१५=S||.S||.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
१६=||||.S||.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
१७=SS.||||.SS,SS.SS.|S|.SS.S,SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
१८=||S.||||.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
१९=S||.||||.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS.SS.|.SS.S;
२०=||||.||||.SS,SS.SS.|S|.SS.S;SS.SS.SS,SS'SS.|.SS.S;

एज नियम प्रमाणे प्रथमना चार गणनो प्रस्तार कर्यो तो ते नीचे जणाव्या प्रमाणे आव्योः—

	४ ५ ४ ५		
१	SS. SS. SS. SS.	२६	||S. ||S. ||S' SS.
२	||S. SS. SS. SS.	२७	S||. ||S. ||S. SS.
३	S||. SS. SS. SS.	२८	||||. ||S. ||S. SS.
४	||||. SS. SS. SS.	२९	SS. |S|. ||S. SS.
५	SS. ||S. SS. SS.	३०	||S. |S|. ||S. SS.
६	||S. ||S. SS. SS.	३१	S||. |S|. ||S. SS.
७	S||. ||S. SS. SS.	३२	||||. |S|. ||S. SS.
८	||||. ||S. SS. SS.	३३	SS. S||. ||S. SS.
९	SS. |S|. SS. SS.	३४	||S. S||. ||S. SS.
१०	||S. |S|. SS. SS.	३५	S||. S||. ||S. SS.
११	S||. |S|. SS. SS.	३६	||||. S||. ||S. SS.
१२	||||. |S|. SS. SS.	३७	SS. ||||. ||S. SS.
१३	SS. S||. SS. SS.	३८	||S. ||||. ||S. SS.
१४	||S. S||. SS. SS.	३९	S||. ||||. ||S. SS.
१५	S||. S||. SS. SS.	४०	||||. ||||. ||S. SS.
१६	||||. S||. SS. SS.	४१	SS. SS. S||. SS.
१७	SS. ||||. SS. SS.	४२	||S. SS. S||. SS.
१८	||S. ||||. SS. SS.	४३	S||. SS. S||. SS.
१९	S|S. ||||. SS. SS.	४४	||||. SS. S||. SS.
२०	||||. ||||. SS. SS.	४५	SS. ||S. S||. SS.
२१	SS. SS. ||S. SS.	४६	||S. ||S. S||. SS.
२२	||S. SS. ||S. SS.	४७	S||. ||S. S||. SS.
२३	S||. SS. ||S. SS.	४८	||||. ||S. S||. SS.
२४	||||. SS. ||S. SS.	४९	SS. |S|. S||. SS.
२५	SS. ||S. ||S. SS.	५०	||S. |S|. S||. SS.

૫૧	SII. ISI. SII. SS.	૮૦	IIII. IIII. IIII. SS.
૫૨	IIII. ISI. SII. SS.	૮૧	SS. SS. SS. IIS.
૫૩	SS. SII. SII. SS.	૮૨	IIS. SS. SS. IIS.
૫૪	IIS. SII. SII. SS.	૮૩	SII. SS. SS. IIS.
૫૫	SII. SII. SII. SS.	૮૪	IIII. SS. SS. IIS.
૫૬	IIII. SII. SII. SS.	૮૫	SS. IIS. SS. IIS.
૫૭	SS. IIII. SII. SS.	૮૬	IIS. IIS. SS. IIS.
૫૮	IIS. IIII. SII. SS.	૮૭	SII. IIS. SS. IIS.
૫૯	SII. IIII. SII. SS.	૮૮	IIII. IIS. SS. IIS.
૬૦	IIII. IIII. SII. SS.	૮૯	SS. ISI. SS. IIS.
૬૧	SS. SS. IIII. SS.	૯૦	IIS. ISI. SS. IIS.
૬૨	IIS. SS. IIII. SS.	૯૧	SII. ISI. SS. IIS.
૬૩	SII. SS. IIII. SS.	૯૨	IIII. ISI. SS. IIS.
૬૪	IIII. SS. IIII. SS.	૯૩	SS. SII. SS. IIS.
૬૫	SS. IIS. IIII. SS.	૯૪	IIS. SII. SS. IIS.
૬૬	IIS. IIS. IIII. SS.	૯૫	SII. SII. SS. IIS.
૬૭	SII. IIS. IIII. SS.	૯૬	IIII. SII. SS. IIS.
૬૮	IIII. IIS. IIII. SS.	૯૭	SS. IIII. SS. IIS.
૬૯	SS. ISI. IIII. SS.	૯૮	IIS. IIII. SS. IIS.
૭૦	IIS. ISI. IIII. SS.	૯૯	SII. IIII. SS. IIS.
૭૧	SII. ISI. IIII. SS.	૧૦૦	IIII. IIII. SS. IIS.
૭૨	IIII. ISI. IIII. SS.	૧૦૧	SS. SS. IIS. IIS.
૭૩	SS. SII. IIII. SS.	૧૦૨	IIS. SS. IIS. IIS.
૭૪	IIS. SII. IIII. SS.	૧૦૩	SII. SS IIS. IIS.
૭૫	SII. SII. IIII. SS.	૧૦૪	IIII. SS. IIS. IIS.
૭૬	IIII. SII. IIII. SS.	૧૦૫	SS. IIS. IIS. IIS.
૭૭	SS. IIII. IIII. SS.	૧૦૬	IIS. IIS. IIS. IIS.
૭૮	IIS. IIII. IIII. SS.	૧૦૭	SII. IIS. IIS. IIS.
૭૯	SII. IIII. IIII. SS.	૧૦૮	IIII. IIS. IIS. IIS.

१०९ SS. |S|. ||S. ||S.

११० ||S. |S|. ||S. ||S.

१११ S||. |S|. ||S. ||S.

११२ ||||. |S|. ||S. ||S.

११३ SS. S||. ||S. ||S.

११४ ||S. S||. ||S. ||S.

११५ S||. S||. ||S. ||S.

११६ ||||. S||. ||S. ||S.

११७ SS. ||||. ||S. ||S.

११८ ||S. ||||. ||S. ||S.

११९ S||. ||||. ||S. ||S.

१२० ||||. ||||. ||S. ||S.

१२१ SS. SS. S||. ||S.

१२२ ||S. SS. S||. ||S.

१२३ S||. SS. S||. ||S.

१२४ ||||. SS. S||. ||S.

१२५ SS. ||S. S||. ||S.

१२६ ||S. ||S. S||. ||S.

१२७ S||. ||S. S||. ||S.

१२८ ||||. ||S S||. ||S.

१२९ SS |S|. S||. ||S.

१३० ||S. |S|. S||. ||S.

१३१ S||. |S|. S||. ||S.

१३२ ||||. |S| S||. ||S.

१३३ SS. S||. S||. ||S.

१३४ ||S. S||. S||. ||S.

१३५ S||. S|| S||. ||S.

१३६ ||||. S||. S||. ||S.

१३७ SS. ||||. S||. ||S.

१३८ ||S. ||||. S||. ||S.

१३९ S||. ||||. S||. ||S.

१४० ||||. ||||. S||. ||S.

१४१ SS. SS. ||||. ||S.

१४२ ||S SS. ||||. ||S.

१४३ S||. SS. ||||. ||S.

१४४ ||||. SS. ||||. ||S.

१४५ SS. ||S. ||||. ||S.

१४६ ||S. ||S. ||||. ||S.

१४७ S||. ||S. ||||. ||S.

१४८ ||||. ||S. ||||. ||S.

१४९ SS. |S|. ||||. ||S.

१५० ||S. |S|. ||||. ||S

१५१ S||. |S|. ||||. ||S.

१५२ ||||. |S|. ||||. ||S.

१५३ SS. S||. ||||. ||S.

१५४ ||S. S||. ||||. ||S.

१५५ S||. S||. ||||. ||S.

१५६ ||||. S||. ||||. ||S.

१५७ SS. ||||. ||||. ||S.

१५८ ||S. ||||. ||||. ||S.

१५९ S||. ||||. ||||. ||S.

१६० ||||. ||||. ||||. ||S.

१६१ SS. SS SS. |S|.

१६२ ||S. SS. SS. |S|.

१६३ S||. SS. SS. |S|.

१६४ ||||. SS. SS. |S|.

१६५ SS. ||S. SS. |S|.

१६६ ||S. ||S. SS. |S|.

૧૬૭	SII. IIS. SS. ISI.	૧૯૬	IIII. SII. IIS. ISI.
૧૬૮	IIII. IIS. SS. ISI.	૧૯૭	SS. IIII. IIS. ISI.
૧૬૯	SS. ISI. SS. ISI.	૧૯૮	IIS. IIII. IIS. ISI.
૧૭૦	IIS. ISI. SS. ISI.	૧૯૯	SII. IIII. IIS. ISI.
૧૭૧	SII. ISI. SS. ISI.	૨૦૦	IIII. IIII. IIS. ISI.
૧૭૨	IIII. ISI. SS. ISI.	૨૦૧	SS. SS SII. ISI.
૧૭૩	SS. SII. SS. ISI.	૨૦૨	IIS. SS. SII. ISI.
૧૭૪	IIS. SII. SS. ISI.	૨૦૩	SII. SS. SII. ISI.
૧૭૫	SII. SII. SS. ISI.	૨૦૪	IIII. SS. SII. ISI.
૧૭૬	IIII. SII. SS. ISI.	૨૦૫	SS. IIS. SII. ISI.
૧૭૭	SS. IIII. SS. ISI.	૨૦૬	IIS. IIS. SII. ISI.
૧૭૮	IIS. IIII. SS. ISI.	૨૦૭	SII. IIS. SII. ISI.
૧૭૯	SII. IIII. SS. ISI.	૨૦૮	IIS. IIS. SII. ISI.
૧૮૦	IIII. IIII. SS. ISI.	૨૦૯	SS. ISI. SII. ISI.
૧૮૧	SS. SS. IIS. ISI.	૨૧૦	IIS. ISI. SII. ISI.
૧૮૨	IIS. SS. IIS. ISI.	૨૧૧	SII. ISI. SII. ISI.
૧૮૩	SII. SS. IIS. ISI.	૨૧૨	IIII. ISI. SII. ISI.
૧૮૪	IIII. SS. IIS. ISI.	૨૧૩	SS. SII. SII. ISI.
૧૮૫	SS. IIS. IIS. ISI.	૨૧૪	IIS. SII. SII. ISI.
૧૮૬	IIS. IIS. IIS. ISI.	૨૧૫	SII. SII. SII. ISI.
૧૮૭	SII. IIS. IIS. ISI.	૨૧૬	IIII. SII. SII. ISI.
૧૮૮	IIII. IIS. IIS. ISI.	૨૧૭	SS. IIII. SII. ISI.
૧૮૯	SS. ISI. IIS. ISI.	૨૧૮	IIS. IIII. SII. ISI.
૧૯૦	IIS. ISI. IIS ISI.	૨૧૯	SII. IIII. SII. ISI.
૧૯૧	SII. ISI. IIS. ISI.	૨૨૦	IIII. IIII. SII. ISI.
૧૯૨	IIII. ISI. IIS. ISI.	૨૨૧	SS SS. IIII. ISI.
૧૯૩	SS. SII. IIS. ISI.	૨૨૨	IIS. SS. IIII. ISI.
૧૯૪	IIS. SII. IIS. ISI.	૨૨૩	SII. SS. IIII. ISI.
૧૯૫	SII. SII. IIS. ISI.	૨૨૪	IIII. SS. IIII. ISI.

२२५	SS. IIS. IIII. ISI.	२५४	IIS. SII. SS. SII.
२२६	IIS. IIS. IIII. ISI.	२५५	SII. SII. SS. SII.
२२७	SII. IIS. IIII. ISI.	२५६	IIII. SII. SS. SII.
२२८	IIII. IIS. IIII. ISI.	२५७	SS. IIII. SS. SII.
२२९	SS. ISI. IIII. ISI.	२५८	IIS. IIII. SS. SII.
२३०	IIS. ISI. IIII. ISI.	२५९	SII. IIII. SS. SII.
२३१	SII. ISI. IIII. ISI	२६०	IIII. IIII. SS SII.
२३२	IIII. ISI. IIII. ISI.	२६१	SS. SS. IIS. SII.
२३३	SS. SII. IIII. ISI.	२६२	IIS. SS. IIS. SII.
२३४	IIS. SII. IIII. ISI.	२६३	SII. SS. IIS. SII.
२३५	SII. SII. IIII. ISI.	२६४	IIII. SS. IIS. SII.
२३६	IIII. SII. IIII. ISI.	२६५	SS. IIS. IIS. SII.
२३७	SS. IIII. IIII. ISI.	२६६	IIS. IIS. IIS. SII.
२३८	IIS. IIII. IIII. ISI.	२६७	SII. IIS. IIS. SII.
२३९	SII. IIII. IIII. ISI.	२६८	IIII. IIS. IIS. SII.
२४०	IIII. IIII. IIII. ISI.	२६९	SS. ISI. IIS. SII.
२४१	SS. SS. SS. SII.	२७०	IIS. ISI. IIS. SII.
२४२	IIS. SS. SS. SII.	२७१	SII. ISI. IIS. SII.
२४३	SII. SS. SS. SII.	२७२	IIII. ISI. IIS. SII.
२४४	IIII. SS. SS. SII.	२७३	SS. SII. IIS. SII.
२४५	SS. IIS. SS. SII.	२७४	IIS. SII. IIS. SII.
२४६	IIS. IIS. SS. SII.	२७५	SII. SII. IIS. SII.
२४७	SII. IIS. SS. SII.	२७६	IIII. SII. IIS. SII.
२४८	IIII. IIS. SS. SII.	२७७	SS. IIII. IIS. SII.
२४९	SS. ISI. SS. SII.	२७८	IIS. IIII. IIS. SII.
२५०	IIS. ISI. SS. SII.	२७९	SII. IIII. IIS. SII.
२५१	SII. ISI. SS. SII.	२८०	IIII. IIII. IIS. SII.
२५२	IIII. ISI. SS. SII.	२८१	SS. SS. SII. SII.
२५३	SS. SII. SS. SII.	२८२	IIS. SS. SII. SII.

२८३	SII. SS. SII. SII.	३१२	IIII. ISI. IIII. SII.
२८४	IIII. SS. SII. SII.	३१३	SS. SII. IIII. SII.
२८५	SS. IIS. SII. SII.	३१४	IIS. SII. IIII. SII.
२८६	IIS. IIS. SII. SII.	३१५	SII. SII. IIII. SII.
२८७	SII. IIS. SII. SII.	३१६	IIII. SII. IIII. SII.
२८८	IIII. IIS. SII. SII.	३१७	SS. IIII. IIII. SII.
२८९	SS. ISI. SII. SII.	३१८	IIS. IIII. IIII. SII.
२९०	IIS. ISI. SII. SII.	३१९	SII. IIII. IIII. SII.
२९१	SII. ISI. SII. SII.	३२०	IIII. IIII. IIII. SII.
२९२	IIII. ISI. SII. SII.	३२१	SS. SS. SS. IIII.
२९३	SS. SII. SII. SII.	३२२	IIS. SS. SS. IIII.
२९४	IIS. SII. SII. SII.	३२३	SII. SS. SS. IIII.
२९५	SII. SII. SII. SII.	३२४	IIII. SS. SS. IIII.
२९६	IIII. SII. SII. SII.	३२५	SS. IIS. SS. IIII.
२९७	SS. IIII. SII. SII.	३२६	IIS. IIS. SS. IIII.
२९८	IIS. IIII. SII. SII.	३२७	SII. IIS. SS. IIII.
२९९	SII. IIII. SII. SII.	३२८	IIII. IIS. SS. II[illegible]
३००	IIII. IIII. SII. SII.	३२९	SS. ISI. SS. II[illegible]
३०१	SS. SS. IIII. SII.	३३०	IIS. ISI. SS. II[illegible]
३०२	IIS. SS. IIII. SII.	३३१	SII. ISI. SS. II[illegible]
३०३	SII. SS. IIII. SII.	३३२	IIII. ISI. SS. IIII.
३०४	IIII. SS. IIII. SII.	३३३	SS. SII. SS. IIII.
३०५	SS. IIS. IIII. SII.	३३४	IIS. SII. SS. IIII.
३०६	IIS. IIS. IIII. SII.	३३५	SII. SII. SS. IIII
३०७	SII. IIS. IIII. SII.	३३६	IIII. SII. SS. IIII.
३०८	IIII. IIS. IIII. SII.	३३७	SS. IIII. SS. IIII.
३०९	SS. ISI. IIII. SII.	३३८	IIS. IIII. SS. IIII.
३१०	IIS. ISI. IIII. SII.	३३९	SII. IIII. SS. IIII.
३११	SII. ISI. IIII. SII.	३४०	IIII. IIII. SS. IIII.

३४१	SS. SS. IIS. IIII.	३७०	IIS. ISI. SII. IIII.
३४२	IIS. SS. IIS. IIII.	३७१	SII. ISI. SII. IIII.
३४३	SII. SS. IIS. IIII.	३७२	IIII. ISI. SII. IIII.
३४४	IIII. SS. IIS. IIII.	३७३	SS. SII. SII. IIII.
३४५	SS. IIS. IIS. IIII.	३७४	IIS. SII. SII. IIII.
३४६	IIS. IIS. IIS. IIII.	३७५	SII. SII. SII. IIII.
३४७	SII. IIS. IIS. IIII.	३७६	IIII. SII. SII. IIII.
३४८	IIII. IIS. IIS. IIII.	३७७	SS. IIII. SII. IIII.
३४९	SS. ISI. IIS. IIII.	३७८	IIS. IIII. SII. IIII.
३५०	IIS. ISI. IIS. IIII.	३७९	SII. IIII. SII. IIII.
३५१	SII. ISI. IIS. IIII.	३८०	IIII. IIII. SII. IIII.
३५२	IIII. ISI. IIS. IIII.	३८१	SS. SS. IIII. IIII.
३५३	SS. SII. IIS. IIII.	३८२	IIS. SS. IIII. IIII.
३५४	IIS. SII. IIS. IIII.	३८३	SII. SS. IIII. IIII.
३५५	SII. SII. IIS. IIII.	३८४	IIII. SS. IIII. IIII.
३५६	IIII. SII. IIS. IIII.	३८५	SS. IIS. IIII. IIII.
३५७	SS. IIII. IIS. IIII.	३८६	IIS. IIS. IIII. IIII.
३५८	IIS. IIII. IIS. IIII.	३८७	SII. IIS. IIII. IIII.
३५९	SII. IIII. IIS. IIII.	३८८	IIII. IIS. IIII. IIII.
३६०	IIII. IIII. IIS. IIII.	३८९	SS. ISI. IIII. IIII.
३६१	SS. SS. SII. IIII.	३९०	IIS. ISI. IIII. IIII.
३६२	IIS. SS. SII. IIII.	३९१	SII. ISI. IIII. IIII.
३६३	SII. SS. SII. IIII.	३९२	IIII. ISI. IIII. IIII.
३६४	IIII. SS. SII. IIII.	३९३	SS. SII. IIII. IIII.
३६५	SS. IIS. SII. IIII.	३९४	IIS. SII. IIII. IIII.
३६६	IIS. IIS. SII. IIII.	३९५	SII. SII. IIII. IIII.
३६७	SII. IIS. SII. IIII.	३९६	IIII. SII. IIII. IIII.
३६८	IIII. IIS. SII. IIII.	३९७	SS. IIII. IIII. IIII.
३६९	SS. ISI. SII. IIII.	३९८	IIS. IIII. IIII. IIII.

२८३	ऽ।।. ऽऽ. ऽ।।. ऽ।।.	३१२	।।।।. ।ऽ।. ।।।।. ऽ।।.
२८४	।।।।. ऽऽ. ऽ।।. ऽ।।.	३१३	ऽऽ. ऽ।।. ।।।।. ऽ।।.
२८५	ऽऽ. ।।ऽ. ऽ।।. ऽ।।.	३१४	।।ऽ. ऽ।।. ।।।।. ऽ।।.
२८६	।।ऽ. ।।ऽ. ऽ।।. ऽ।।.	३१५	ऽ।।. ऽ।।. ।।।।. ऽ।।.
[illegible]८७	ऽ।।. ।।ऽ. ऽ।।. ऽ।।.	३१६	।।।।. ऽ।।. ।।।।. ऽ।।.
२८८	।।।।. ।।ऽ. ऽ।।. ऽ।।.	३१७	ऽऽ. ।।।।. ।।।।. ऽ।।.
२८९	ऽऽ. ।ऽ।. ऽ।।. ऽ।।.	३१८	।।ऽ. ।।।।. ।।।।. ऽ।।.
२९०	।।ऽ. ।ऽ।. ऽ।।. ऽ।।.	३१९	ऽ।।. ।।।।. ।।।।. ऽ।।.
२९१	ऽ।।. ।ऽ।. ऽ।।. ऽ।।.	३२०	।।।।. ।।।।. ।।।।. ऽ।।.
२९२	।।।।. ।ऽ।. ऽ।।. ऽ।।.	३२१	ऽऽ. ऽऽ. ऽऽ. ।।।।.
२९३	ऽऽ. ऽ।।. ऽ।।. ऽ।।.	३२२	।।ऽ. ऽऽ. ऽऽ. ।।।।.
२९४	।।ऽ. ऽ।।. ऽ।।. ऽ।।.	३२३	ऽ।।. ऽऽ. ऽऽ. ।।।।.
२९५	ऽ।।. ऽ।।. ऽ।।. ऽ।।.	३२४	।।।।. ऽऽ. ऽऽ. ।।।।.
२९६	।।।।. ऽ।।. ऽ।।. ऽ।।.	३२५	ऽऽ. ।।ऽ. ऽऽ. ।।।।.
२९७	ऽऽ. ।।।।. ऽ।।. ऽ।।.	३२६	।।ऽ. ।।ऽ. ऽऽ. ।।।।.
२९८	।।ऽ. ।।।।. ऽ।।. ऽ।।.	३२७	ऽ।।. ।।ऽ. ऽऽ. ।।।।.
२९९	ऽ।।. ।।।।. ऽ।।. ऽ।।.	३२८	।।।।. ।।ऽ. ऽऽ. ।।[illegible]
३००	।।।।. ।।।।. ऽ।।. ऽ।।.	३२९	ऽऽ. ।ऽ।. ऽऽ. ।।[illegible]
३०१	ऽऽ. ऽऽ. ।।।।. ऽ।।.	३३०	।।ऽ. ।ऽ।. ऽऽ. ।।[illegible]
३०२	।।ऽ. ऽऽ. ।।।।. ऽ।।.	३३१	ऽ।।. ।ऽ।. ऽऽ. ।।[illegible]
३०३	ऽ।।. ऽऽ. ।।।।. ऽ।।.	३३२	।।।।. ।ऽ।. ऽऽ. ।।।।.
३०४	।।।।. ऽऽ. ।।।।. ऽ।।.	३३३	ऽऽ. ऽ।।. ऽऽ. ।।।।.
३०५	ऽऽ. ।।ऽ. ।।।।. ऽ।।.	३३४	।।ऽ. ऽ।।. ऽऽ. ।।।।.
३०६	।।ऽ. ।।ऽ. ।।।।. ऽ।।.	३३५	ऽ।।. ऽ।।. ऽऽ. ।।।।.
३०७	ऽ।।. ।।ऽ. ।।।।. ऽ।।.	३३६	।।।।. ऽ।।. ऽऽ. ।।।।.
३०८	।।।।. ।।ऽ. ।।।।. ऽ।।.	३३७	ऽऽ. ।।।।. ऽऽ. ।।।।.
३०९	ऽऽ. ।ऽ।. ।।।।. ऽ।।.	३३८	।।ऽ. ।।।।. ऽऽ. ।।।।.
३१०	।।ऽ. ।ऽ।. ।।।।. ऽ।।.	३३९	ऽ।।. ।।।।. ऽऽ. ।।।।.
३११	[illegible] ।।।।. ऽ।।.	३४०	।।।।. ।।।।. ऽऽ. ।।।।.

३४१	SS. SS. IIS. IIII.	३७०	IIS. ISI. SII. IIII.
३४२	IIS. SS. IIS. IIII.	३७१	SII. ISI. SII. IIII.
३४३	SII. SS. IIS. IIII.	३७२	IIII. ISI. SII. IIII.
३४४	IIII. SS. IIS. IIII.	३७३	SS. SII. SII. IIII.
३४५	SS. IIS. IIS. IIII.	३७४	IIS. SII. SII. IIII.
३४६	IIS. IIS. IIS. IIII.	३७५	SII. SII. SII. IIII.
३४७	SII. IIS. IIS. IIII.	३७६	IIII. SII. SII. IIII.
३४८	IIII. IIS. IIS. IIII.	३७७	SS. IIII. SII. IIII.
३४९	SS. ISI. IIS. IIII.	३७८	IIS. IIII. SII. IIII.
३५०	IIS. ISI. IIS. IIII.	३७९	SII. IIII. SII. IIII.
३५१	SII. ISI. IIS. IIII.	३८०	IIII. IIII. SII. IIII.
३५२	IIII. ISI. IIS. IIII.	३८१	SS. SS. IIII. IIII.
३५३	SS. SII. IIS. IIII.	३८२	IIS. SS. IIII. IIII.
३५४	IIS. SII. IIS. IIII.	३८३	SII. SS. IIII. IIII.
३५५	SII. SII. IIS. IIII.	३८४	IIII. SS. IIII. IIII.
३५६	IIII. SII. IIS. IIII.	३८५	SS. IIS. IIII. IIII.
३५७	SS. IIII. IIS. IIII.	३८६	IIS. IIS. IIII. IIII.
३५८	IIS. IIII. IIS. IIII.	३८७	SII. IIS. IIII. IIII.
३५९	SII. IIII. IIS. IIII.	३८८	IIII. IIS. IIII. IIII.
३६०	IIII. IIII. IIS. IIII.	३८९	SS. ISI. IIII. IIII.
३६१	SS. SS. SII. IIII.	३९०	IIS. ISI. IIII. IIII.
३६२	IIS. SS. SII. IIII.	३९१	SII. ISI. IIII. IIII.
३६३	SII. SS. SII. IIII.	३९२	IIII. ISI. IIII. IIII.
३६४	IIII. SS. SII. IIII.	३९३	SS. SII. IIII IIII.
३६५	SS. IIS. SII. IIII.	३९४	IIS. SII. IIII. IIII.
३६६	IIS. IIS. SII. IIII.	३९५	SII. SII. IIII. IIII.
३६७	SII. IIS. SII. IIII.	३९६	IIII. SII. IIII. IIII.
३६८	IIII. IIS. SII. IIII.	३९७	SS. IIII. IIII. IIII.
३६९	SS. ISI. SII. IIII.	३९८	IIS. IIII. IIII. IIII.

$$\text{लादिरूप} = \frac{\text{सर्वभेदसंख्या} \times \text{लादिरूप}}{\text{प्रथमगणभेदसंख्या}} = \frac{\text{८१९२००००} \times \text{२}}{\text{४}} = \text{४०९६००००}$$

$$\text{गादिरूप} = \frac{\text{स. भे. सं.} \times \text{गादिरूप}}{\text{प्रथमगणभेदसंख्या}} = \frac{\text{८१९२००००} \times \text{२}}{\text{४}} = \text{४०९६००००}$$

$$\text{लान्तरूप} = \frac{\text{स. भे. सं.} \times \text{लान्तरूप}}{\text{अन्त्यगणभेद}} = \frac{\text{८१९२००००} \times \text{०}}{\text{१}} = \text{०}$$

$$\text{गान्तरूप} = \frac{\text{स. भे. सं.} \times \text{गान्तरूप}}{\text{अन्त्यगणभेद}} = \frac{\text{८१९२००००} \times \text{१}}{\text{१}} = \text{८१९२००००}$$

$$\text{लादिलान्तरूप} = \frac{\text{प्रस्तार लान्तरूप} \times \text{प्रथमगणलादि}}{\text{प्रथम गणभेद}} = \frac{\text{०} \times \text{२}}{\text{४}} = \text{०}$$

$$\text{गादिगान्तरूप} = \frac{\text{प्रस्तार गान्तरूप} \times \text{प्रथमगणगादि}}{\text{प्रथम गणभेद}} = \frac{४०९६००० \times २}{४} = २०४८०००$$

$$\text{लादिगान्तरूप} = \frac{\text{प्रस्तार गान्तरूप} \times \text{प्रथमगणलादि}}{\text{प्रथम गणभेद}} = \frac{८१९२०००० \times २}{४} = ४०९६०००$$

$$\text{गादिलान्तरूप} = \frac{\text{प्रस्तार लान्तरूप} \times \text{प्रथमगणगादि}}{\text{प्रथम गणभेद}} = \frac{० \times २}{४} = ०$$

आर्या नष्ट प्रक्रिया.

प्रश्न–प्रस्तारमां ८,१६,२०,००० मुं रूप केवुं हशे ते जणावो ?

उत्तर–इष्ट संख्या ८,१६,२०,००० छे तेने क्रमवार गण भेदाङ्क ४,५,४,५,४,२,४,१,४,५,४,५,४,१,४,१ थी गण-प्रस्तार प्रकरण पृ. १७२ मां नष्ट विधि बताव्यो छे ते प्रमाणे उत्तरोत्तर भाग आप्या तो तेनुं अंकदर्शन नीचे प्रमाणे आव्युंः–

		लब्धि	शेष	रूप
१	इष्ट संख्या	$=\frac{८१६२००००}{४}=$२०४०५०००	०	||||
२	,,	$=\frac{२०४०५०००}{५}=$४०८१०००	०	||||
३	,,	$=\frac{४०८१०००}{४}=$१०२०२५०	०	||||
४	,,	$=\frac{१०२०२५०}{५}=$२०४०५०	०	||||
५	,,	$=\frac{२०४०५०}{४}=$५१०१२	२	||S
६	,,	$=\frac{५१०१२+१}{२}=$२५५०६	१	|S|
७	,,	$=\frac{२५५०६+१}{४}=$६३७६	३	S||
८	,,	$=\frac{६३७६+१}{१}=$६३७७	०	S
९	,,	$=\frac{६३७७}{४}=$१५९४	१	SS

१०	,,	$=\frac{१५९४+१}{५}=३१९$	०	IIII
११	,,	$=\frac{३१९}{४}=७९$	३	SII
१२	,,	$=\frac{७९+१}{५}=१६$	०	IIII
१३	,,	$=\frac{१६}{४}=४$	०	IIII
१४	,,	$=\frac{४}{१}=४$	०	I
१५	,,	$=\frac{४}{४}=१$	०	IIII
१६	,,	$=\frac{१}{१}=१$	०	S

माटे मागेलुं रूप नीचे प्रमाणे आव्युं:—

IIII,IIII,IIII,IIII,IIS,ISISII,S,SS,IIII,SII,IIII,IIII,I,IIII,S.

प्र.—प्रथम चार गणना प्रस्तारमां १८८ मुं रूप केवुं हशे ?

उ.— १८८ मुं रूप काहाडवानुं छे माटे तेने गणना क्रमवार भेदाङ्कथी भागवानी क्रिया करी तो तेनुं अंकदर्शन नीचे प्रमाणे आव्युं:—

	लब्धि	शेष	रूप
इष्ट संख्या	$\frac{१८८}{४}=४७$	०	IIII
,,	$\frac{४७}{५}=९$	२	IIS

,,	$\frac{९+१}{४}=२$	२	॥ऽ
,,	$\frac{२+१}{५}=०$	३	।ऽ।

माटे मागेलुं रूप ॥॥ ॥ऽ ॥ऽ ।ऽ। आव्युं.

प्र.– आर्याना प्रथम चार गणना प्रस्तारमां १४१ मुं रूप केवुं हशे?

उ.– १४१ मुं रूप काहाडवानुं छे माटे तेने भेदांकथी भागवानी क्रिया करी तो तेनुं अंकदर्शन नीचे प्रमाणे आव्युं:–

	लब्धि	शेष	रूप
इष्ट संख्या	$\frac{१४१}{४}=३५$	१	ऽऽ
,,	$\frac{३५+१}{५}=७$	१	ऽऽ
,,	$\frac{७+१}{४}=२$	०	॥॥
,,	$\frac{२}{५}=०$	२	॥ऽ

माटे मागेलुं रूप ऽऽ ऽऽ ॥॥ ॥ऽ आव्युं.

आर्या प्रस्तारोदिष्ट.

रीति गणप्रस्तार प्रकरण पृष्ठ १७६ थी आपेल छे ते प्रमाणे छे. विशेष समजण माटे उदाहरण नीचे प्रमाणे छे.

प्र. उ. "भजतां रामारामनुँ" आ **आर्याना** त्रण गणनुं पद छे ते तेटला ज गणना प्रस्तारमां केटलामुं रूप छे?

आमां **"भजतां"** ए पेहेला गणनुं रूप छे तेमां पेहेला बे

लघु अने त्रीजो गुरु छे अने ते ते गणना चार रूपमां बीजुं रूप छे, माटे ते प्रमाणे बिम्बमां मूकेल छे; "रामा" ए बीजो गण छे तेमां बेउ गुरु छे ते ते गणनुं पेहेलुं रूप छे माटे बिम्बमां ते प्रमाणे मूक्युं छे. त्रीजो गण "रामनुँ" छे तेमां पेहेलो गुरु अने छेल्ला बे लघु छे ते ते गणना रूपमां त्रीजुं रूप छे माटे ते प्रमाणे बिम्बमां दाखल करेल छे.

पेहेला गणना चार भेद थाय छे माटे ४, बीजाना ५ भेद थाय छे माटे ५, अने त्रीजाना ४ भेद थाय छे माटे४, तेना भेदना खंडमां मूकेल छे. भेदांकमांथी आपेलां पदजन्य रूपनी संख्या बाद करीने जे शेष रह्या छे तेने शोधितांकना खंडमां भर्या छे तेथी ए बिम्ब नीचे प्रमाणे तैयार थयुं छे:—

गणनुं स्थान	विषम १	सम २	विषम ३
गण संख्यांक भेदांक.	४	५	४
आपेलुं गणस्वरूप	।।ऽ	ऽऽ	ऽ।।
गण स्वरूप केटालमुं रूप	२	१	३
शोधितांक	२	४	१

उपर प्रमाणे बिम्ब तैयार करी जमणा हाथथी आरंभ करतां जे प्रथमगणसंख्याङ्क चार छे तेमांथी ते तळेनो शोधिताङ्क १ बाद कर्यो पछी वळी डावी बाजुना शीर्ष संख्याङ्के गुणी ते तळेनो शोधिताङ्क ४ बाद कर्यो एम प्रथमना गण सुधी करी गया तो छेवट मागेली संख्या ४२ नीचे प्रमाणे आवी.

उपरना कोठामां जमणा हाथथी प्रारंभ करतां तृतीय गण

संख्याङ्क ४ छे तेमांथी तेना शोधिताङ्क १ बाद करतां बाकी त्रण रेहे छे तेने ५ थी गुणी तेनी नीचेनो शोधिताङ्क ४ बाद कर्यो तो ३×५=१५−४=११ रह्या तेने प्रथम गणना शीर्षाङ्क चारे गुणी तेमांथी तेनी नीचेनो शोधिताङ्क २ बाद कर्यो तो ११×४=४४−२=४२ मुं रूप त्रण गणना प्रस्तारमां ए छे एम नीकळयुं.

प्रश्न २ जो.

त्रण गणना प्रस्तारमां नीचेनुं रूप केटलामुं छे एम काहाडवुं होय तो |||| |S| S||

उत्तर. नीचे प्रमाणे बिम्ब थशे.

गणनुं स्थान	विषम १	सम २	विषम ३
गण संख्यांक	४	५	४
गण स्वरूप	||||	|S|	S||
गणस्वरूपनुं केटलामुं रूप	४	३	३
शोधितांक	०	२	१

४ (अंत्य गणनो शीर्षांक)−१ भरवुं (शोधिताङ्क)=३

३×५ (उप्रांत्य गणनो शीर्षांक)=१५−२ (शोधिताङ्क)=१३

३×४ (प्रथम गणनो शीर्षांक)=५२−० (शोधिताङ्क)=५२

टले त्रण गणना प्रस्तारमां ए रूप बावनमुं थयुं.

प्रश्न ३ जो.

नीचेनुं रूप त्रण गणना प्रस्तारमां केटलामुं छे ?

उ. |||| |||| S||

एनुं बिम्ब नीचे प्रमाणे थशे.

गणनुं स्थान	विषम १	सम २	विषम ३
गण संख्यांक	४	५	४
गण स्वरूप	IIII	IIII	SII
केटलामुं गण स्वरूप छे ते	४	५	३
शोधितांक	०	०	१

४ (अंत्य गणनो शीर्ष संख्याङ्क)−१ भ (शोधिताङ्क)=३

३×५ (उपांत्य गणनो शीर्ष संख्याङ्क)=१५−०=१५

१५×४ (प्रथम गणनो शीर्ष संख्याङ्क)=६०−०=६०

एटले त्रण गणना प्रस्तारमां पूछेलुं रूप साठमुं थयुं.

आर्या उद्दिष्टनुं विशेष स्पष्टीकरण थवा माटे हेठळ एक नवी **आर्या** गोठवी तेनो उद्दिष्ट करी बतावयामां आवे छे. ते उपरथी ए विषे संपूर्ण ज्ञान थशे.

आर्या.

श्री कच्छाधिप केरा, अमात्य रणछोडभाइए भुजमां;

आ रणपिंगल रचियुं, ओगणि खुडतालि संवतमां.

उपली **आर्या**ना गण पाडीशुं तो नीचे प्रमाणे पडशे.

पूर्वार्ध.

गणस्थान.

१ श्री क = (क थडकाय छे तेथी) सर्व गुरु माटे कर्ण (

२ च्छाधिप = आदि गुरु माटे भगण (SII)

३ केरा = सर्व गुरु माटे कर्ण (SS)

४ अमात्य = मध्य गुरु माटे जगण (ISI)

५ रणछो = अंत्य गुरु माटे सगण (IIS)

६ इभाइ = मध्य गुरु माटे जगण (।ऽ।)
७ ए भुज = प्रथम गुरु माटे भगण (ऽ।।)
८ मां = गुरु (ऽ)

उत्तरार्ध.

१ आ रण = आदि गुरु माटे भगण (ऽ।।)
२ पिंगल = आदि गुरु माटे भगण (ऽ।।)
३ रचियुं = अंत्य गुरु माटे सगण (।।ऽ)
४ ओगणि = आदि गुरु माटे भगण (ऽ।।)
५ सुडता = अंत्य गुरु माटे सगण (।।ऽ)
६ लि = छठ्ठे स्थाने लघु ज आवे एम खास नियम छे माटे (।)
७ संवत = आदि गुरु माटे भगण (ऽ।।)
८ मां = आठमा स्थाननो नियत गुरु (ऽ)

पूर्वार्द्धना शोधिताङ्कनुं कोष्टक बनाववा विषे.

१ प्रथम स्थानमां "कर्ण" छे पेहेलुं स्थान विषम होवाथी तेनां एकंदरे चार रूप थाय छे तेमां कर्ण ए प्रथमरूप छे माटे ४—१=३ ए शोधितांक थयो ते कर्ण तळे मूकवो.

बीजा स्थानमां भगण छे ए समस्थानमां कुल रूप पांच थाय छे तेमां भगण ए चोथो छे माटे ५—४=१ शोधितांक ते बीजा स्थानना भगण नीचे मूकवो.

३ त्रीजे स्थाने कर्ण छे ए विषम स्थानमां ४ रूप पैकी पेहेलुं रूप छे माटे ४—१=३ शोधितांक थयो ते कर्ण तळे मूकवो.

४ चोथे स्थाने जगण छे ए समस्थाननां ५ रूप थाय छे तेमांनुं त्रीजु रूप छे माटे ५—३=२ शोधितांक थयो ते जगण नीचे मूकवो.

६ डभाइ = मध्य गुरु माटे जगण (|S|)
७ ए भुज = प्रथम गुरु माटे भगण (S||)
८ मां = गुरु (S)

उत्तरार्ध.

१ आ रण = आदि गुरु माटे भगण (S||)
२ पिंगल = आदि गुरु माटे भगण (S||)
३ रचियुं = अंत्य गुरु माटे सगण (||S)
४ ओगणि = आदि गुरु माटे भगण (S||)
५ सुडता = अंत्य गुरु माटे सगण (||S)
६ लि = छट्ठे स्थाने लघु ज आवे एम खास नियम छे माटे (|)
७ संवत = आदि गुरु माटे भगण (S||)
८ मां = आठमा स्थाननो नियत गुरु (S)

पूर्वार्द्धना शोधिताङ्कनुं कोष्टक बनाववा विषे.

प्रथम स्थानमां "कर्ण" छे पेहेलुं स्थान विषम होवाथी तेनां एकंदरे चार रूप थाय छे तेमां कर्ण ए प्रथमरूप छे माटे ४—१=३ ए शोधितांक थयो ते कर्ण तळे मूकवो.

बीजा स्थानमां भगण छे ए समस्थानमां कुल रूप पांच थाय छे तेमां भगण ए चोथो छे माटे ५—४=१ शोधितांक ते बीजा स्थानना भगण नीचे मूकवो.

त्रीजे स्थाने कर्ण छे ए विषम स्थानमां ४ रूप पैकी पेहेलुं रूप छे माटे ४—१=३ शोधितांक थयो ते कर्ण तळे मूकवो.

चोथे स्थाने जगण छे ए समस्थानमां ५ रूप थाय छे तेमांनुं त्रीजुं रूप छे माटे ५—३=२ शोधितांक थयो ते जगण नीचे मूकवो.

उत्तरार्द्धना शोधितांकनुं बिम्ब.

गणस्थानानुक्रम	१	२	३	४	५	६	७	८
गणस्थान सम के विषम	विषम	सम	विपम	सम	विपम	सम	विपम	सम
गण संख्याङ्क	४	५	४	५	४	१	४	१
मूळ आर्या उत्तरार्द्ध	आ रण	पिगल	रचियुं	ओगणि	सुडता	लि	सवत	मां
गणस्वरूप	ऽ।।	ऽ।।	।।ऽ	ऽ।।	।।ऽ	।	ऽ।।	ऽ
प्रस्तारमां केटलामु स्थान	३	४	२	४	२	१	३	१
शोधितांक	१	१	२	१	२	०	१	०

२. १५,४९९ ने पूर्वार्द्धना छठ्ठा स्थानना शीर्षाङ्क २ ए गुणी ते स्थाननो शोधिताङ्क १ बाद कस्यो तो १५,४९९×२= ३०,९९८–१=३०,९९७ थया.

३. ३०,९९७ ने पूर्वार्द्धना पांचमा स्थानना शीर्षाङ्क ४ रे गुणी ते स्थाननो शोधिताङ्क २ बाद कस्यो तो ३०,९९७×४= १,२३,९८८–२=१,२३,९८६ थया.

४. १,२३,९८६ ने पूर्वार्द्धना चोथा स्थानना शीर्षाङ्क ५ चे गुणी ते तळेनो शोधिताङ्क २ बाद कस्यो तो १,२३,९८६× ५=६,१९,९३०–२=६,१९,९२८ थया.

५. ६,१९,९२८ ने पूर्वार्द्धना त्रीजा स्थानना शीर्षाङ्क ४ रे गुणी ते तळेनो शोधिताङ्क ३ बाद कस्यो तो ६,१९,९२८× ४=२४,७९,७१२–३=२४,७९,७०९ थया.

६. २४,७९.७०९ ने पूर्वार्द्धना बीजा स्थानना शीर्षाङ्क ५ चे गुणी ते तळेनो शोधिताङ्क १ बाद कस्यो तो ते २४,७९, ७०९×५=१,२३,९८,५४५–१=१,२३,९८,५४४ थया.

७. १,२३,९८,५४४ ने पूर्वार्द्धना प्रथम स्थानना शीर्षाङ्क ४ रे गुणी ते तळेनो शोधिताङ्क ३ बाद कस्यो तो ते १,२३,९८,५४४×४=४,९५,९४,१७६–३=४,९५,९ ४,१७३ थया एटले ४,९५,९४,१७३ मुं रूप ए आपेली आर्यानुं उद्दिष्ट रीतिए सिद्ध थयुं.

एज प्रमाणे नीचेना गणनी आर्या केटलामी छे ते काहाडवुं ाय तो.

पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

SS.SS.||S,SS.S||.|S|.||S.S;SS.S||SS,||S.S||.|.SS.S.

गणाङ्क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
शून्य गुरु दर्शक संख्या	१	१	१	१	१	१	१	०	१	१	१	१	१	१	१	०
एक गुरु दर्शक सख्या	२	३	२	३	२	१	२	१	२	३	२	३	२	०	२	१
बे गुरु दर्शक सख्या	१	१	१	१	१	०	१	०	१	१	१	१	१	०	१	०

आ बिम्ब उपरथी समजाय छे के,

पेहेला गणमां शून्य गुरु एक गुरु अने बे गुरुनां रूप.

आ प्रमाणे छे १ २ १

बीजा गणमां १ ३ १

पेहेला अने बीजा गणना ए अंकोनो गुणाकार करतां,

पेहेला गणनी पंक्तिना अंक १ २ १ × १ × ३ × १

```
            १
      ─────────
      १ २ १
    ३ ६ ३
  १ २ १
  ─────────
```

बीजा गणनी पंक्तिना अंक १ ५ ८ ५ १

त्रीजा गणनी पंक्तिना अंक लाववा माटे ते गणना गुणाङ्क २ १ थी गुण्या तो.

```
      १  ५  ८   ५  १  × १ × २ × १
                   १
   ──────────────────────
      १  ५  ८   ५  १
   २ १० १६ १०  २
   १  ५  ८   ५  १
─────────────────────────
१  ७ १९ २६ १९  ७  १
```

ए प्रमाणे त्रीजा गणनी पंक्तिना अंको आव्या, हवे चोथा गणनी पंक्तिना अंक लाववा माटे ते गणना गुणाङ्क १ ३ १ थी गुण्या तो.

```
        १  ७  १९  २६  १९  ७       १ ×१×३×१
                                   १
      ─────────────────────────────────
          १  ७  १९  २६  १९  ७    १
       ३ २१  ५७  ७८  ५७ २१  ३
   १   ७ १९  २६  १९  ७   १
   ─────────────────────────────────
   १ १० ४१ ९० ११६ ९० ४१ १०  १
```

ए प्रमाणे चोथा गणनी पंक्तिना अंक आव्या. हवे पांचमा गणनी पंक्तिना अंक लाववा माटे ते गणना गुणाङ्क १ २ १ थी गुण्या तो १ १२ ६२ १८२ ३३७ ४१२ ३३७ १८२ ६२ १२ १ आव्या.

हवे उपर जणावेली रीति मुजब छट्ठा गणनी पंक्तिना अंक लाववा माटे गुणाङ्क ०, १, १ छे तेथी गुण्या तो.

१, १३, ७४, २४४, ५१९, ७४९, ७४९, ५१९, २४४, ७४, १३, १ आव्या तेमने सातमा गणना गुणाङ्क १, २, १ थी गुणतां सातमा गणनी पंक्तिना अंक आवशे, तेने आठमा गणना गुणाङ्क ०, १, ० थी गुणतां आठमा गणनी पंक्तिना अंक आवशे, तेने नवमा गणना गुणाङ्क १, २, १ थी गुणतां नवमा गणनी पंक्तिना अंक आवशे, तेने दशमा गणना गुणाङ्क १, ३ १ थी गुणतां दशमा गणनी पक्तिना अंक आवशे, तेने अगियारमा गणना गुणाङ्क १, २, १ थी गुणतां अगियारमा गणनी पंक्तिना अक आवशे, तेने बारमा गणना गुणाङ्क १, ३, १ थी गुणतां बारमा गणनी पंक्तिना अंक थशे, तेने तेरमा गणना गुणांङ्क १, २, १ थी गुणतां तेरमा गणनी

दंडांक बिम्ब.

पूर्वार्द्ध.

गणनु नाम	मात्रावार भेद	पूर्व गणभेदांक	दंडांक
गण ८	१		१२८००
गण ७	४	३२००	१२८००
	२	३२००	६४००
गण ६	२	१६००	३२००
गण ५	४	४००	१६००
	२	४००	८००
गण ४	५	८०	४००
	३	८०	२४०
	२	८०	१६०
	१	८०	८०
गण ३	४	२०	८०
	२	२०	४०
गण २	५	४	२०
	३	४	१२
	२	४	८
	१	४	४
गण १	४	०	४
	२	०	२
	१	१	१

१० SS	११ SS	१२ SS	१३ SS	१४ ।	१५ SS	१६ S
५	४	५	४	१	४	१
२,५६०००	१०,२४०००	५१,२००००	२,०४८००००	२,०४८००००	८,९९२००००	८,९९२००००
१,०२४००	५,१२०००	२०,४८०००	१,०२४००००	०	४,०९६००००	८,९९२००
१,५३६००	५,१२०००	३०,७२०००	१,०२४००००	२,०४८००००	४,०९६००००	०
२४,३२०००	१,०७५२०००	५,८८८००००	२५,६००००००	२५,६००००००	१,१०५९२००००	१,१८७८४००००
४८,६४०००	२,१५०४०००	११,७७६००००	५१,२००००००	५३,२४८००००	२,२९३७६००००	२,२९३७६००००
७२,९६०००	३,२२५६०००	१७,६६४००००	७६,८००००००	७८,८४८००००	३,३९९६८००००	३,४८१६०००००
९७,२८०००	४,३००८०००	२३,५५२००००	१,०२४००००००	१,०४४४८००००	४,५०५६०००००	४,६९९४४००००
४८,६४०००	२,१५०४०००	११,७७६००००	५१,२००००००	५२,२२४००००	२,२५२८०००००	२,३३४७२००००